

P15, Cx1, 1, 6:9
152146

P15, Cx1, 46:9 5145
152K6

Pandey, Radha Raman
Arthaprakashika.

5145

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

[illegible]

2112

721KE
M72CXP1019

सिद्धान्तकौमुदी—

अर्थप्रकाशिका

अर्थात्

(सिद्धान्तकौमुदी गत उदाहरणों के अर्थ एवं विशिष्ट शब्दों का परिचय)

लेखक—

आचार्य राधारमण पाण्डेय

उप-प्रधानाचार्य (अवकाश प्राप्त)

कीन्स कालेज, वाराणसी

मोतीलाल बनारसीदास

दिल्ली : वाराणसी : पटना

प्रकाशक—

सुन्दरलाल जैन

© मोतीलाल बनारसीदास

पो० बा० ७५, नेपाली खपरा, वाराणसी

मुद्रक



P15, C24, 4, 6:8
152K6

प्रथम संस्करण

१९६६

MLBD

पया

SRI JAGADGURU VISHWARADH

JNANA SIMHASAN JNANAMAN

LIBRARY

Jangamawadi Math, Varanasi

Acc. No. 5145

सर्वविध पुस्तक प्राप्तिस्थान—

- मोतीलाल बनारसीदास : बँगलो रोड, जवाहरनगर, दिल्ली-७
- मोतीलाल बनारसीदास : पो० बा० ७५, नेपाली खपरा, वाराणसी
- मोतीलाल बनारसीदास : माहेश्वरी मार्केट, बाँकीपुर, पटना

देश का नामकरण

प्रत्येक द्वीप, वर्ष, वन, पर्वत, नदी, नद, नगर तथा स्थानों के नामकरण का कुछ न कुछ आधार अवश्य होता है। किसी वस्तु की अभिव्यक्ति के पश्चात् ही उसका नामकरण होता है क्योंकि उस वस्तु को अभिव्यक्त करने के लिए कोई संज्ञा अवश्य होनी चाहिये। ऐसा भी होता है कि विद्वान् किसी किसी नाम का काल्पनिक हेतु कल्पित भी कर लेते हैं। उदाहरणार्थ कनखल को ही लीजिये। उत्तराखण्ड का यह एक प्रसिद्ध तीर्थ है। स्कन्द पुराणके गंगा-माहात्म्य खण्ड में लिखा है—खलः को नाम मुक्ति वै भजते तत्र मज्जनात्। अतः कनखलं तीर्थं नाम्ना चक्रुर्मुनी-श्वराः। अन्य विद्वान् कथासरित्सागर ३।४ के आधार पर इसको कनकखल (सुवर्ण का खलिहान) का अपभ्रंश मानते हैं। परन्तु यह सब कल्पना ही है क्योंकि अग्निपुराण १०६।१७ में कणखल शब्द का उल्लेख है। कण=अन्न का खलिहान। इससे निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि वह उत्तम तथा प्रचुर अन्न का विस्तृत स्थान रहा होगा। अतः उसका यह नामकरण हुआ।

वर्धमान ने गणरत्नमहोदधि में वाराणसी की व्युत्पत्ति में लिखा है कि वराणसी देशः, तत्र भवा नगरी वाराणसी। अर्थात् वराणस जनपद में स्थित होने के कारण नगरी का नाम वाराणसी पड़ा। इसी प्रकार हिमाधिक्य के कारण हिमालय नाम पड़ा। कलिन्द पर्वत से निकलने के कारण यमुना का नाम कालिन्दी हुआ। दरद जनपद में बहने के कारण सिन्धु का एक नाम दारदी भी है। इस प्रकार प्रत्येक वस्तु के नाम पर विचार करने से यही निष्कर्ष निकलता है कि सभी नामकरण का कुछ न कुछ आधार अवश्य होता है। अब यह विचारणीय है कि हिन्दुस्तान का प्राचीनतम नाम क्या है तथा वह नामकरण क्यों हुआ।

हिन्दुस्तान का प्रागैतिहासिक काल का एक नाम अजनाभवर्ष श्रीमद्भागवत में मिलता है—अजनाभं नामैतद्वर्षं भारतमिति यत आरभ्य व्यपदिशन्ति। श्रीमद्भागवत

६-७-३। परन्तु यह नाम इस पुस्तक के अतिरिक्त अन्य किसी प्राचीन साहित्य में नहीं मिलता। कुछ विद्वानों की धारणा है कि यही नाम प्राचीनतम है। इसका दूसरा प्राचीन नाम भारतवर्ष है। प्रायः समस्त भारतीय वाङ्मय में यह नाम उपलब्ध है। इस नामकरण के तीन दृष्टिकोण कहे जाते हैं—

(१) ऋग्वेद में अग्नि का एक पर्याय भारत मिलता है—तस्मा अग्निभारतः शर्म संयत् ऋ ० ४-२५-४। अग्निर्वै भरतः सर्वदेवेभ्यो हव्यं भरति—कौषीतकी ३।२। एष (अग्निः) हि देवेभ्यो हव्यं भरति तस्माद् भरतोऽग्निरित्याहुः। शतपथ १।४।२।२। महाभारत में भी अग्नि का पर्याय भरत मिलता है—भरत्येव प्रजाः सर्वास्ततो भरत उच्यते—महाभारत वनपर्व २११-१। अर्थात् अग्नि का नाम भरत है क्योंकि वह समस्त प्रजा का पालन-पोषण करता है। अग्नि के साथ ही प्रजा का भी क्षेत्र विस्तृत होता गया अर्थात् जहाँ जहाँ आर्यजन यज्ञादि करते तथा बसते गये उस समस्त प्रदेश का नाम भारतवर्ष पड़ गया।

(२) सृष्टि के आदि मानव मनु का नाम भी भरत मिलता है क्योंकि उन्होंने सब प्रजाओं को उत्पन्न करके उनका पालन-पोषण भी किया—प्रजानां भरणान्चैव मनुर्भरत उच्यते। निरुक्तवचनैश्चैव वर्षं तद् भारतं स्मृतम्—मत्स्य पुराण-१।४-५। मनु ने इस देश में मानव को जन्म देकर उनके वंश का अभिवर्द्धन किया अतः इस देश का नामकरण भी उन्हीं के आधार पर भारतवर्ष हुआ।

ऋग्वेद काल में आर्यों की एक प्रतापी शाखा का भी नाम भरत था। व्यास तथा सतलज नदियों को पार कर वे जन जिस देश में बसे, वह देश भारत कहलाया—यदं भूधा भरताः संतरेयुर्गव्यन् ग्राम इषित इन्द्रजितः—ऋग्वेद ३-३३-११। स्थूल रूप से यह किहा जा सकता है कि उस समय केवल कुरु जनपद प्रदेश का नाम भारत रहा होगा।

(३) दुष्यन्त के पुत्र शाकुन्तलेय भरत महाप्रतापी चक्रवर्ती राजा हुए हैं—ऐतरेय ८।२३ तथा शतपथ १३। ५।४।११ के अनुसार उन्होंने यमुना तट पर अठहत्तर तथा गंगा तट पर पचपन यज्ञ किये थे। शतपथ ब्राह्मण में तो यहाँ तक लिखा है कि उन्होंने समस्त भूमण्डल को जीत कर एक हजार से भी अधिक यज्ञ के घोड़ों को इन्द्र को अर्पित किया—शकुन्तला नाऽपित्यत्तरा भरतं दधे परः सहस्रानिन्द्रायाश्वान्मेघ्यान् य अहरद्विजित्य पृथिवीं सर्वांमिति—शतपथ १३।५।४।१३। अतः उनके नाम पर देश का नाम भारतवर्ष पड़ा।

बौद्ध साहित्य में इसका नाम जम्बूद्वीप भी मिलता है। पुराणों में इसी को कुमारीद्वीप भी कहते हैं। परन्तु ये नाम अधिक प्रचलित न हो सके।

वर्तमान काल में समस्त विश्व में इस देश का प्रचलित नाम हिन्दुस्तान अथवा इण्डिया है। कुछ लोगों की धारणा है कि यह नाम विदेशियों द्वारा रक्खा गया है परन्तु यह उनका भ्रम है। यह नाम भी भारतीय ही है। ऋग्वेद में महान् नद सिन्धु का नाम आया है। सिन्धु के इस पार का पञ्चनद अथवा बाहीक जनपद भारतीय सीमा के अन्तर्गत था ही, उसके उस पार का भी प्रदेश, जहाँ तक का जल सिमटकर सिन्धु में आता है और जिसमें कुमा (काबुल), सुवास्तु (स्वात), गौरी (पंजकोरा), गोमती (गोमल), क्रमु (कुरम) आदि नदियाँ हैं—सिन्धु अथवा सप्त-सिन्धु कहलाता था। आर्य जन इस नाम से पूर्णतया परिचित थे।

सीमा—प्रत्येक देश की सीमा समय-समय पर बदलती रहती है। प्राचीन काल में हमारा देश बड़ा विस्तृत था अर्थात् समस्त पूर्वी अफगानिस्तान, कपिश, हिन्दुकुश का प्रदेश या काफिरिस्तान, कम्बोज, गल्चाभाषी प्रदेश आदि भारत के अन्तर्गत थे। भारत की सीमा का उल्लेख अनेक पुराणों में मिलता है—उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमवदक्षिणं च यत्। वर्षं तद् भारतं नाम यत्रेयं भारती प्रजा। वायु पुराण ४५।७५। उत्तरं यत्समुद्रस्य हिमाद्रेश्चैव दक्षिणम्। वायु पुराण २।३।१। आयतो ह्यकुमारीक्यादागङ्गाप्रभवाच्चैव। वायु पुराण ४५।८१। आयतस्त्रु कुमारीतो गङ्गायाः प्रभवावधिः।

मत्स्य पुराण ११४।१०। भारतमहासागर के उत्तर तथा गंगा के उद्गम के दक्षिण के देश का नाम भारतवर्ष है। गंगा के सबसे ऊपरी स्रोत जाह्नवी का उद्गम जंस्कर शृङ्खला में है। भारत महासागर के पूर्वी भाग का प्राचीन नाम महोदधि (बंगाल की खाड़ी) था—प्राप तालीवनश्याममुपकण्ठं महोदधेः—रघुवंश ४-३४, तथा पश्चिमी भाग का नाम रत्नाकर (अरबसागर) था—रत्नाकरं वीक्ष्य मिथः स जायां रामाभिधानो हरिरित्युवाच। रघुवंश १३।१।

विभाग—प्राचीन काल में भारतवर्ष के मुख्य दो भाग थे, प्राच्य तथा उदीच्य। अमरसिंह ने लिखा है—देशोऽयं भारतं वर्षम् शरावत्यास्तु योज्यधेः। देशः प्राग्दक्षिणः प्राच्य उदीच्यः पश्चिमोत्तरः। इसकी विभाजक नदी का नाम शरावती था। शरावती के विषय में विद्वानों में बड़ा मतभेद है। विल्फोर्ड ने वाणगंगा को, जो रूहेल्खण्ड के बदायूँ जिले से होकर बहती है, शरावती माना है। उन्होंने वाण तथा शर के अर्थ को ध्यान में रखकर ऐसा निश्चय कर लिया होगा। आर० एल० मित्र के ललितविस्तर के अनुसार अवध के फैजाबाद के समीपस्थ सरयू नदी का प्राचीन नाम शरावती प्रतीत होता है। नन्दलाल दे श्रावस्ती का त्रिकृत रूप शरावती मानते हैं। उनका अनुमान है कि इस नदी के तट पर स्थित होने के कारण नगरी का नाम श्रावस्ती पड़ गया। आजकल श्रावस्ती को सहेत-महेत कहते हैं। अब श्रावस्ती नदी को राप्ती कहते हैं। कुछ विद्वान् पंजाब की राबी नदी को शरावती मानते हैं परन्तु उपर्युक्त स्थापनाओं में से कोई भी समुचित नहीं जान पड़ती क्योंकि पाणिनि की अष्टाध्यायी के अनेक सूत्रों तथा उनके भाष्य में अनेक प्राच्य तथा उदीच्य स्थानों का उल्लेख है। उनमें से अनेक स्थानों का निर्णय हो चुका है। यदि इनमें से किसी भी नदी को शरावती मान लिया जाय तो उनकी संगति नहीं बैठती। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का मत है कि शरावती का दूसरा नाम शरदण्डा हो सकता है। दोनों में अर्थसाम्य तथा प्रथम के दो अक्षरों की समानता है। वाल्मीकि रामायण में वर्णन है कि जब अयोध्या का दूत भरत को उनके मामा के यहाँ से बुलाने के लिए केकय की राजधानी गिरिव्रज (शाहपुर) गया था तो उसको शरदण्डा नदी पार करनी पड़ी थी। अतः शरदण्डा दृषद्वती

श्री अपना उद्देश्य



एक जनश्रुति है कि किसी वैयाकरण और नैयायिक में विद्या-विवाद हो रहा था। नैयायिक ने अपशब्द का प्रयोग कर दिया। वैयाकरण ने आपत्ति की। इस पर नैयायिक ने कहा “अस्माकूनां नैयायिकानाम् अर्थैरि तात्पर्यम् नतु शब्दरि”।

इसी प्रकार की एक दूसरी जनश्रुति है कि महावैयाकरण महर्षि पाणिनि किसी जंगली मार्ग, से एकाकी यात्रा कर रहे थे। मध्य में एक व्यक्ति ने उनसे कहा “महाशय, इस मार्ग में व्याघ्र रहता है आप इधर से न जाइये।” यह सुनकर महर्षि ने सोचा कि “विशेषेण आसमन्तात् जिघ्रतीति व्याघ्रः; अर्थात् जो अच्छी तरह चारों ओर सूँघे वह व्याघ्र है। व्याघ्र से क्या हानि है जो मैं इधर से न जाऊँ” और उसी मार्ग से चलते गये। मार्ग में व्याघ्र मिला और उनको मार डाला। इस जनश्रुति का पोषक एक श्लोक पञ्चतन्त्र में उपलब्ध है—सिंहो व्याकरणस्य कर्तुरहरत् प्राणान् प्रियान् पाणिनेः..... ॥ इस जनश्रुति का तात्पर्य यह नहीं है कि महर्षि को व्याघ्र शब्द का अर्थ ज्ञात नहीं था। उनको तो संस्कृत वाङ्मय के प्रत्येक शब्द का यथार्थ ज्ञान था। इस जनश्रुति के उद्धरण का अभिप्राय केवल यह है कि परवर्ती वैयाकरण केवल रूपसाधनिका पर विशेष ध्यान देते थे, किसी शब्द में अनुस्वार, विसर्ग, ह्रस्व, दीर्घ, णत्व, तालव्य शकार तथा मूर्धन्य षकार किस प्रकार हो गया केवल इसकी छानबीन अच्छी तरह करने लगे, शब्दों के अर्थ पर विशेष ध्यान देना छूट गया। इसका परिणाम यह हुआ कि भाष्यान्त व्याकरण पढ़ा हुआ विद्वान् श्रीमद्भागवत आदि क्लिष्ट ग्रन्थों का अर्थ नहीं कर सकता था। हमारे गुरुजन ने भी इसी प्रकार हमको पढ़ाया। कोई भी सुबुद्ध वैयाकरण किसी शब्द की सिद्धि किस घातु तथा प्रत्यय से हुई, ठीक ठीक बतला देगा, परन्तु प्रत्येक शब्द का अर्थ नहीं बतला सकता।

एक बार ब्रह्मीभूत आचार्य केशव प्रसाद मिश्र ने मुझसे कहा कि हम लोग सिद्धान्तकौमुदी पढ़ जाते हैं, सभी शब्दों की सिद्धि कर लेते हैं परन्तु उन सबका अर्थ-ज्ञान नहीं कर पाते। तुम सिद्धान्तकौमुदी के सूत्रों के उदाहरणों के अर्थ लिखो। उन्होंने दो चार उदाहरणों के अर्थ पर प्रकाश भी डाला। मुझको यह कार्य महत्त्वपूर्ण तथा आवश्यक जान पड़ा। मैंने इसका श्रीगणेश भी कर दिया। परन्तु खेद है कि थोड़े ही दिनों के बाद आचार्य जी चल बसे और मैं उनके निर्देशन से वञ्चित रह गया। मैं कुछ हतोत्साह हो गया। कार्य में शैथिल्य ही नहीं अवरोध हो गया। कुछ दिनों बाद उनको आज्ञा का पालन करना कर्तव्य समझकर येन केन प्रकारेण इसको करने लगा और चिर काल के बाद अब सम्पन्न हो सका।

इसके लिखने का लक्ष्य केवल यह है कि वैयाकरण शब्दसिद्धि मात्र पर ध्यान न देकर उनके अर्थों पर भी ध्यान दिया करें। यदि वे लोग अर्थ-ज्ञान के लिये थोड़ा सा भी सचेष्ट रहेंगे तो वे अत्यधिक लाभान्वित हो सकेंगे। कौमुदी के बहुत उदाहरण सुपरिचित हैं उनके अर्थ लिखने की कोई आवश्यकता न थी, फिर भी उनका छोड़ना समुचित न जान पड़ा, इसलिए राम, कृष्ण, हरि, नर वानर आदि का भी अर्थ लिख दिया गया। कौमुदी में संस्कृत वाङ्मय वेद, उपनिषद्, पुराण, इतिहास, काव्य आदि से तथा भूगोल, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिदा, राजनीति, धर्म तथा दर्शन आदि से शब्द लिये गये हैं। इनमें कुछ शब्द तो ऐसे हैं जो अभी तक कहीं मिल ही न सके।

यदि किसी कोश में मिले भी तो कोशकार ने अर्थ लिखने के स्थान पर वहाँ लिख दिया है कि पाणिनि के अमुक सूत्र का उदाहरण ।

पाणिनि ने अनेकों वन, नदी, पर्वत, ग्राम नगर आदि के नामों की सिद्धि के लिए नियम बनाये हैं । इनकी पहचान असम्भव नहीं तो कठिन तो है ही । इनमें से अनेक ग्राम तथा नगर नष्ट-भ्रष्ट हो गये हैं । जो वचे भी हैं उनमें से अधिकांश के नामों में इतना परिवर्तन हो गया कि उनका पहचानना असंभव न भी हो तो दुष्कर अवश्य है । फिर भी जिनकी पहचान विद्वानों ने अब तक की है उनका विवरण अलग से दिया गया है । कारण उनका केवल आधुनिक नाम लिख देने से काम न चलता । उदाहरणों के सामने उनका नाम लिख दिया गया है । इसी प्रकार पाणिनि काल में प्रचलित मुद्राएँ तथा परिमाण भी अलग से लिखे गये हैं । उदाहरणों के जो अर्थ लिखे गये हैं वे किसी न किसी आधार पर लिखे गये हैं केवल अनुमान से नहीं । हाँ कहीं कहीं अनुमान का आश्रय भी वाध्य होकर लेना पड़ा है ।

उदाहरणार्थ-अयस्कुशा शब्द का अधिकांश कोशों में संग्रह ही नहीं है । सर मानियर विलियम ने इसका अर्थ लिखा है “एक रस्सी, जिसमें लोहा लगा हो” सम्भवतः उनका तात्पर्य उस रस्सी से है जिसमें लोहे के तार भी बटे हों । परन्तु यह अर्थ जँचता नहीं क्यों कि पुरातन काल में ऐसे सूक्ष्म तार अधिक मात्रा में मिलते ही न होंगे जो रस्सी में बटे जायँ, अतः यह अर्थ समुचित नहीं जान पड़ता ।

सिद्धान्तकौमुदी के स्त्रीप्रत्यय प्रकरण में जानपद ४-१-४२ सूत्र का उदाहरण कुशी तथा कुशा दिया गया है । काशिकाकार तथा कौमुदीकार दोनों ने लोहे के छड़ के अर्थ में कुशी तथा काष्ठदण्ड के अर्थ में कुशा उदाहरण दिये हैं । तत्त्वबोधिनीकार ने लिखा है—“छन्दोगाः स्तोत्रीया गणनार्थानौदुम्बरान् शङ्कुन् कुशा इति व्यवहरन्ति” इससे प्रतीत होता है कि कुशा काष्ठदण्ड के लिए प्रयुक्त होता था । कौमुदीकारने अयस्कुशा का विग्रह “अय सहिता कुशा अयस्कुशा” लिखा है । इसका अर्थ हुआ कि अयस्कुशा ऐसी लकड़ी के खण्डको कहते थे जिसमें लोहा लगा हो । किसी लकड़ी में लोहा लगा देने मात्र से उसको अयस्कुशा नहीं कहेंगे । लोहा तो अनेक प्रकार की लकड़ियों में लगा होता है जैसे बल्लम, फावड़ा, कुल्हाड़ी, हँसिया आदि इन सबके भिन्न भिन्न नाम भी प्रचलित हैं ।

हल में एक वह भाग होता है जिसमें फाल लगा रहता है उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में उसको कृषक चौबी कहते हैं । मेरा अनुमान है कि उसी के लिए यह शब्द प्रचलित रहा होगा । चौबी हल का मुख्य भाग है उसके लिए कोई शब्द मिला भी नहीं है । यह केवल मेरा अनुमान है साधिकार में नहीं कहता कि अयस्कुशा चौबी को ही कहते हैं । इसी प्रकार कुछ शब्दों का आनुमानिक अर्थ भी लिखा गया है ।

इस पुस्तक को लिखने के लिए कुछ मेरे मित्रों की सम्मति थी कि यह संस्कृत में ही लिखा जाय, परन्तु मुझको यह समुचित नहीं जान पड़ा । पहला कारण तो यह कि संस्कृत में लिखने से केवल संस्कृतज्ञ ही लाभ उठा सकते थे अब राष्ट्रभाषा जानने वाले भी समानरूप से लाभ उठा सकते हैं । दूसरा तथा प्रधान कारण यह था कि संस्कृत में लिखने से मधवा का अर्थ बिडोड़ा हो जाता जिससे उद्देश्य की पूर्ति न हो पाती । उदाहरणार्थ भस्त्रफला रसभरी इसमें आये हैं उनका अर्थ यदि संस्कृत में ही लिखा जाता तो कोई लाभ न हो पाता । और भी अनेक प्रकार के शब्द हैं जिनके अर्थ राष्ट्रभाषा में लिख देने से अधिक स्पष्ट हो गये हैं ।

शब्दानुक्रमणी प्रस्तुत करने में श्री शम्भुनाथ राय एम० ए० तथा श्री कृष्णकुमार पाण्डेय बी० एस सी० ने बड़ी सहायता की है । अतः उनके प्रति आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

स्वर तथा वैदिक प्रकरण के कुछ उदाहरणों का अर्थ ठीक ठीक नहीं ज्ञात हो सका । केवल उनका उल्लेख

दिया गया है। वैदिक उदाहरणों का अर्थ सायण भाष्य के आधार पर लिखा गया है क्योंकि आज कल अनेक व्युत्पन्न तथा प्रतिभाशाली विद्वान् अपनी अपनी बुद्धि के अनुसार वैदिक मन्त्रों का भिन्न भिन्न अर्थ करते हैं। उनमें से किस का अनुसरण किया जाय। इस असमञ्जस के कारण प्राचीनतम भाष्यकार का ही अनुसरण करना पड़ा। उदाहरणों के अर्थ लिखने में जिन पुस्तकों की सहायता ली गयी है उनका उल्लेख प्रारम्भ में कर दिया गया है तथा उनके विद्वान् लेखकों का आभार भी हृदय से स्वीकार करता हूँ। यदि वे पुस्तकें प्रकाशित न होती तो इस कार्य के सम्पन्न होने में और भी अधिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता।

इस कार्य की सम्पन्नता के लिए मैं भारत के परम प्रसिद्ध कला मर्मज्ञ तथा पुरातत्त्वकोविद राय श्री कृष्ण दास जी का चिरञ्जुणी रहूँगा, जिन्होंने केवल मुझको प्रोत्साहित ही नहीं किया प्रत्युत सतत व्यस्त रहते हुए भी इसके अधिकांश के देखने का कष्ट भी किया। अपने परम सुहृद् पं० अनन्तशास्त्री फड़के का भी मैं आभारो हूँ जिन्होंने इसको आदि से अन्त तक देखा तथा अनेक सुझाव दिये। इस कार्य में और भी अनेक सज्जनों का सहयोग मुझको प्राप्त हुआ उन सबका नाम न लिख कर मैं उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। यदि इस कार्य से छात्रों का लेश मात्र भी लाभ हुआ तो मैं अपना श्रम सार्थक समझूँगा।

राधारमण पाण्डेय

विषयानुक्रमणी

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
देशों का नामकरण	१	ठजधिकारे कालाधिकार प्रकरणम्	१
मुद्राओं का परिचय	६१	ठजधिकार प्रक०, भावकर्मार्थ प्रक०	६१
परिमाण वाचक शब्दों का परिचय	६१	पाञ्चमिक प्रकरणम्	६२
आयाम वाचक " "	१	मरचर्योय " "	१०
संज्ञा प्रकरणम्	१	प्राग्दशीय " "	१०
अचसन्धि प्रकरणम्	४	प्रागिवीय " "	१०
हलसन्धि प्रकरणम्	५	स्वार्थिक " "	११
विरुगं सन्धि प्रक०	६	द्विरुक्त " "	११
स्वादि सन्धि प्रक०	९	तिङन्ते भ्वादि " "	११
अजन्त पुंलिङ्ग प्रक०	१०	अदादि " "	१२
अजन्त स्त्रीलिङ्ग प्रक०	११	शुहोत्यादि-दिवादि प्रकरणम्	१२
अजन्त नपुंसक लिङ्ग प्रक०	११	स्वादि " "	१३
हलन्त पुंलिङ्ग प्रक०	१४	तुधादि " "	१३
हलन्त स्त्रीलिङ्ग प्रक०	१४	रुदादि " "	१३
हलन्त नपुंसक लिङ्ग प्रक०	१५	तनादि, क्रययादि " "	१३
अव्यय प्रक०	१६	चुरादि " "	१३
स्त्री प्रत्यय प्रक०	२३	णिच् " "	१४
कारक प्रकरणम्	३१	सन्नन्त प्रक्रिया " "	१४
अव्ययीभाव समास प्रकरणम्	४१	यङन्त " "	१४
तत्पुरुष " "	४६	यङ्लुगन्त प्रक०, नामधातु प्रकरणम्	१४
बहुव्रीहि " "	४८	कण्ठ्वादि प्रकरणम्	१४
द्वन्द्व " "	४९	प्रत्ययमाला " "	१५
एकशेष " "	५१	आत्मनेपद " "	१५
सर्वसमास शेष " "	५३	परस्मैपद " "	१५
समासान्त " "	६०	भावकर्मतिङ् " "	१५
अलुक्समास " "	६०	कर्मकर्तृतिङ् " "	१५
समासाश्रय विधि " "	६७	लकारार्थ " "	१५
उद्धित साधारण " "	७१	कृदन्त (कृत्यप्रक्रिया) प्रकरणम्	१६
अपत्याधिकार " "	७३	कृत्यप्रक्रिया प्रकरणम्	१६
रक्ताद्यर्थक " "	८२	उत्तर कृदन्त " "	१८
चातुर्थ " "	८५	वैदिक " "	१९
तृतीय " "	८८	स्वर " "	२१
धिकार " "	८९	शब्दानुक्रमणी	२१-३३
परीय " "	९१	शुद्धिपत्रम्	१-१०
प " "			१०

नदी है जिसको आजकल चितांग कहते हैं। यही प्राचीन शरावती है। शरावती को पुनीत नदी भी होना चाहिये। क्षीरस्वामी ने लिखा है—प्रागुदञ्चौ विभजते हंसः क्षीरोदके यथा। विदुषां शब्दसिद्धयर्थं सा नः पातु शरावती। अतः चितांग नदी के पूर्व तथा दक्षिण का भाग प्राच्य तथा पश्चिमोत्तर भाग उदीच्य कहा जाता था।

ब्रह्मावर्त्त—प्राच्य तथा उदीच्य भारत के और भी अनेक अवान्तर भाग थे। सरस्वती तथा दृषद्वती नदियों के मध्यवर्ती प्रदेश को ब्रह्मावर्त्त कहते थे—सरस्वती दृषद्वत्योर्देवनद्योर्धन्तरम्। तं देवनिमित्तं देशं ब्रह्मावर्त्तं प्रचक्षते। मनु २।१७।

आर्यावर्त्त—भारत के एक विस्तृत भाग का नाम आर्यावर्त्त था। ऊपर कहा जा चुका है कि देश की सीमा में परिवर्तन हुआ करता है तदनुसार इसकी सीमा भी परिवर्तित होती रही है—आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्। तथोरवान्तरं गिर्योरायवर्त्तं विदुर्बुधाः। मनु २।२२। पूर्व सागर से पश्चिम सागर तक तथा हिमालय से विन्ध्य तक के भाग को आर्यावर्त्त कहते थे। महाभाष्यकार पतञ्जलि की आर्यावर्त्त की सीमा इससे भिन्न है। उन्होंने लिखा है—प्रागादशात् प्रत्यक्कालकवनादक्षिणेन हिमवन्तमुत्तरेण पारियात्रमार्यावर्त्तः। अर्थात् आदर्श (सरस्वती के लुप्त होने का प्रदेश राजस्थान के रेगिस्तान में स्थित सिरसा के आगे का विनशन) से पूर्व कालक वन (संथाल परगना) से पश्चिम, हिमालय के दक्षिण तथा पारियात्र (भूपाल से पश्चिम विन्ध्य पर्वतके पश्चिमी भाग से लेकर राजपूताने के अड़ावला पहाड़ तक का सिलसिला) से उत्तर तक का प्रदेश आर्यावर्त्त है। हेमचन्द्र ने इसी का नाम उत्तर भारत, आर्य भूमि, जिनचक्रि की जन्मभूमि, ज्यभूमि तथा आचारवेदी लिखा है। आर्यावर्त्तों जन्मभूमि जिनचक्रयर्द्धचक्रिणाम्। पुण्यभूराचारवेदी मध्ये विन्ध्य-हिमालयोः॥

मध्यभारत—प्रयाग के पश्चिम, विनशन के पूर्व तथा हिमालय और विन्ध्य के मध्य भाग को मध्यभारत अथवा मध्य देश कहते थे। आगे चलकर, मगध भी इसी में सम्मिलित हो गया था।

अन्तर्वेदी—गंगा तथा यमुना के मध्यवर्ती भाग को अन्तर्वेदी कहते थे। इसका एक पर्याय समस्थली भी था—गंगायमुनयोर्मध्यमन्तर्वेदिः समस्थली।

हिमालय—जम्बूद्वीप के भारतादि वर्षों के विभाजक सात वर्षपर्वत हैं। हिमवान् हेमकूटश्च निषधो मेरुश्च च। चैत्रः कर्पू च शृङ्गी च सप्तैते वर्षपर्वताः॥ हारावली। हिमवान् अर्थात् हिमालय हमारे भारत का वर्षपर्वत है। सिन्धु तथा ब्रह्मपुत्र नदियाँ हिमालय के उत्तर के समीपवर्ती स्थानों से निकलकर सिन्धु पश्चिम की ओर तथा ब्रह्मपुत्र पूर्व की ओर चलकर हिमालय की उत्तरी सीमा बनाती हैं। इस प्रकार बहुत दूर जाकर दोनों दक्षिण की ओर मुड़ जाती हैं। वे ही स्थान हिमालय की पश्चिमी तथा पूर्वी सीमाएँ हैं। हिमालय की चौड़ाई १५० मील से २०० मील तक है। भूगोलवेत्ताओं ने इस चौड़ाई को तीन भागों में विभक्त किया है। १—बाहरी शृंखला अथवा बाह्य हिमालय या उपगिरि। २—भीतरी शृंखला अथवा लघु-हिमालय या बहिर्गिरि। ३—गर्मशृंखला अथवा बृहत् हिमालय या अन्तर्गिरि।

बाहरी शृंखला—प्राचीन काल में इसको बाह्य हिमालय या उपगिरि कहते थे। सिन्ध तथा गंगा के मैदान का उत्तरी किनारा समुद्र की सतह से १००० से ५००० फीट तक ऊँचा तथा २५ से ५० मील तक चौड़ा है। इस भाग में छोटी-छोटी पहाड़ियाँ हैं। इस उपत्यका में हरिद्वार से देहरादून तक की पहाड़ियाँ, व्यास तथा सतलज के बीच सोलासिगी शृंखला, व्याससे राप्ती तक की सुप्रसिद्ध शिवालिक शृंखलाएँ (मैनाक), राप्ती घाटी की डुँडवा शृंखला तथा नेपाल तराई की चूड़िया चौकी शृंखलाएँ हैं। इन शृंखलाओं के नीचे दक्षिण की ओर के मैदान को भाभर, तराई अथवा दून (संस्कृत द्रोणी) कहते हैं।

भीतरी शृंखला—प्राचीन जन इसको लघुहिमालय अथवा बहिर्गिरि कहते थे। यह शृंखला बाहरी शृंखला के उत्तर प्रारम्भ हो जाती है। इन दोनों शृंखलाओं की सन्धि स्पष्टतया दृष्टिगोचर होती है। इसमें काश्मीर की पीरपंजाल शृंखला, कांगड़ा-कुल्लू-कन्नौर की घौलाधार शृंखला, जौनसार तथा गढ़वाल की नागा टिब्बा शृंखला तथा नेपाल

की महाभारत श्रृंखलाएँ हैं। इसकी चौड़ाई ५० से ७० मील तक है। हजारा, कारमीर, चम्पा, काँगड़ा, शिमला, गढ़वाल, कुमाऊँ, नेपाल, सिक्किम आदि प्रसिद्ध नगर इसी में हैं। ये नगर चार पाँच हजार फीट से लेकर आठ नौ हजार फीट तक की ऊँचाई पर स्थित हैं।

गर्भ श्रृंखला—प्राचीनकाल में इसको बृहत् हिमालय अथवा अन्तर्गिरि कहते थे। भीतरी श्रृंखला के उत्तर यह श्रृंखला प्रारम्भ होती है। इस पर सदा हिमपात होता रहता है। इसमें नंगा पर्वत, बन्दर पूँछ, केदारनाथ, नन्दादेवी, धौलागिरि, गोसाईं थान, गौरीशंकर, कांचनजंघा आदि शिखर हैं। इस श्रृंखला से चेनाव, यमुना, तीस्ता आदि नदियाँ निकलती हैं। सतलज, गंगा, घाघरा, गंडकी कोसी आदि इस श्रृंखला के और उत्तर से इसको काटकर दक्षिण की ओर नीचे उतरती हैं। इसके शिखरों पर बस्तियाँ नहीं हैं। इसकी ऊँचाई नौ दस हजार फीट से लेकर बारह तेरह हजार फीट तक है। गंगा के सबसे ऊपरी स्रोत जाह्नवी का उद्गम जंस्कर श्रृंखला में है। वही श्रृंखला भारतवर्ष की उत्तरी सीमा है।

भूगोल के आधुनिक विद्वानों ने गर्भ श्रृंखला अथवा बृहत् हिमालय को चार भागों में विभक्त किया है। पंजाब हिमालय, कुमायूँ हिमालय, नेपाल हिमालय तथा आसाम हिमालय।

पंजाब हिमालय—यह गर्भ श्रृंखला का विलकुल पश्चिमी भाग है। यह सिन्धु नदी से सतलज नदी तक लगभग ३५० मील फैला हुआ है। इस श्रृंखला का उच्चतम शिखर नंगा पर्वत है। यह २६००० फीट ऊँचा है। यह शिखर अपने नाम को पूर्णतया सार्थक किये हुए है। इस श्रृंखला के मध्य में नुमकुम नाम का एक विशाल शिखर लगभग २३४१ फीट ऊँचा है। मुख्य श्रृंखला नुमकुम से दक्षिण की ओर नीची होती गयी है। उत्तरी ढाल पर नंगा शिखर तथा स्थान स्थान पर झीलें हैं। यह भाग घने जंगलों से ढका हुआ है। इस भाग को तोड़कर कोई नदी दक्षिण की ओर नहीं जा सकती है। परन्तु सौभाग्य से इस भाग में अनेक दरें हैं। उनमें जोजि ला ११५७८ फीट सबसे मुख्य है। एक मार्ग इसी दरें से लद्दाख को काश्मीर की घाटी से जोड़ता है। पंजाब हिमालय के पूर्वादि भाग में घान के खेत तथा चट्टानें अधिक

हैं तथा पश्चिमादि में नंगा पर्वत के आस पास केवल बर्फ से ढकी चट्टानों का आधिक्य है।

कुमायूँ हिमालय—यह सतलज से काली नदी तक फैला हुआ है। इस भाग का उच्चतम शिखर नन्दा देवी २५६४५ फीट ऊँचा है। २०००० फीट से उँचे अन्य अनेक शिखर हैं। उदाहरणार्थ त्रिशूल २३३६० फीट, नन्दकोट २२५१० फीट। दूनगिरि २३१८४ फीट, बद्रीनाथ २३१६० फीट, केदारनाथ २२७२० फीट तथा बन्दर पूँछ २०७२० फीट ऊँचे हैं। कुमायूँ हिमालय के उत्तर से गंगा के स्रोत जाह्नवी तथा अलकनन्दा ने उसको तोड़कर हिमालय की गर्भ श्रृंखला के पार अपना मार्ग बनाया है। हिमालय के इस भाग में बहुत बड़ी बड़ी हिमानी (Glaciers) पायी जाती हैं। उनमें केदारनाथ गंगोत्री तथा सरस्वती की हिमानियाँ मुख्य हैं।

नेपाल हिमालय—यह कुमायूँ हिमालय की सीमा से लेकर तीस्ता नदी तक फैला हुआ है। इस भाग में गौरीशंकर २६००० फीट, कांचन जंघा २८१४६ फीट, मकवू २२७६०, धौला गिरि २६७६५ तथा गोसाईं थान २६२६१ फीट ऊँचे शिखर हैं। कुमायूँ हिमालय की तरह इस भाग को भी अनेक नदियों ने पार किया है। उन सभी नदियों का उद्गम इन शिखरों के उत्तर की ओर ही है। कर्नली, काली गंडक, बूढी गण्डक, त्रिशूली गण्डक तथा अरुणा कोसी नाम की नदियाँ मुख्य श्रृंखला को काट कर दक्षिण की ओर बहती हैं तथा भारत और तिब्बत के मध्य यातायात के लिए मार्ग बनाती हैं।

आसाम हिमालय—इस भाग का पर्यवेक्षण भारत के प्राचीन भूगोल के विद्वानों ने नहीं किया था। यह भाग तीस्ता नदी से लेकर भारत की पूर्वी सीमा तक फैला हुआ है। इस भाग में केवल नमचा बड़वा नामक २५४४५ फीट ऊँचा एक ऐसा शिखर है जिसकी समानता नेपाल हिमालय के शिखरों से की जा सकती है। इसी शिखर के दक्षिणी मोड़ के समीप ब्रह्मपुत्र हिमालय से नीचे उतर कर मैदान में आती है।

हिमालय से निकलने वाली नदियाँ—हिमालय भारत की अनेक प्रसिद्ध तथा बड़ी नदियों का जन्मदाता भी है। ऋग्वेद के अनुसार निम्नलिखित नदियाँ इससे निकलती हैं—गंगा, यमुना, शुतुद्र (सतलज),

परुष्णी (रावी), सरस्वती, असिकनी (चेनाब), वितस्ता (व्यास), मरुद्गुडा (सिन्धु) सुपोमा, त्रिष्टामा, रसा, सुसर्तु, श्वेत्या, कुमा (काबुल), मेहत्नु, क्रमु (कुर्रम) तथा गोमती (गौरी) । बाराह तथा पद्म पुराणों में भी कुछ परिवर्तन के साथ प्रायः इन्हीं नदियों का उल्लेख मिलता है ।

सिन्धु—यह नदी हिमालय में १०३८०० वर्ग मील तक फैली है । इसकी सहायक नदियाँ भी ५१५१० वर्ग मील हैं । यह नदी दक्षिणी तिब्बत में सिंगोक्तल नाम के शिखर से निकलती है । इसके उद्गम के समीपवर्ती जन वहाँ इसको सिंगीकम्पा कहते हैं । वहाँ से निकल कर यह लद्दाख शृंखला के समानान्तर उत्तर-पश्चिम की ओर बहती है । इसमें अनेक बड़ी-बड़ी हिमानियों का भी जल आता है । दिव्यगंगा की सात धाराओं में इसकी गणना की जाती है । इन सात धाराओं अथवा नदियों के भिन्न-भिन्न नाम महाभारत तथा मत्स्य पुराण में मिलते हैं । दिव्य गंगा को त्रिपथगा भी कहते हैं । मत्स्यपुराण में नलिनी, ह्लादिनी तथा पावनी पूर्ववाहिनी, सीता, यारकन्द, वंदा तथा सिन्धु पश्चिमवाहिनी और सातवीं भागीरथी दक्षिणवाहिनी कही गयी हैं । महाभारत में कुछ परिवर्तन के साथ उनके नाम नलिनी, पावनी, सरस्वती, जम्बू, सीता, गंगा तथा सिन्धु उल्लिखित हैं । उसमें इन सभी का उद्गम बिन्दुसर लिखा है जो कि कैलाश, मैनाक तथा हिरण्यशृंग नामक हिमालय के तीन शिखरों के मध्य में स्थित है ।

इन सातों नदियों में सिन्धु प्रसिद्ध सिन्ध (Indus) नदी है । गंगा के विष्णुपदी, जाह्नवी, मन्दाकिनी, भागीरथी आदि अनेक नाम हैं । सरस्वती पूर्वी पंजाब की प्रसिद्ध नदी है । सीता को कुछ लोग जैक्सर्तस, कुछ लोग सीरदरिया तथा कुछ लोग यारकन्द कहते हैं परन्तु अधिक प्रसिद्ध यारकन्द ही मालूम पड़ता है क्योंकि इसी के तट पर यारकन्द बसा हुआ है । आधुनिक आक्सस नदी का प्राचीन नाम वंक्षु है । यह मेरु पर्वत से निकलती है । नलिनी अथवा वस्वोकसा का आधुनिक नाम पथा है । नन्दलाल दे कुक्षेत्र के घग्घर (दृषद्वती) को पावनी मानते हैं परन्तु यह समुचित नहीं जान पड़ता ।

मत्स्यपुराण के अनुसार ये सातों नदियाँ उस प्रदेश से होकर बहती हैं जहाँ अधिकांश म्लेच्छ जन रहते हैं । हिमालय पर्वत के निचले भाग में स्थित शैलोद पर्वत से शैलोदका नदी निकलती है । शैलोद पर्वत कैलाश के पश्चिम स्थित है । शैलोदा नदी सीता (चाइकन्द) तथा वंक्षु (आक्सस) के मध्य बहती है । वंक्षु नदी जिस प्रदेश से होकर बहती है उसमें चिनमर, कालक, चुलक, तुषार, बर्वर, कार, पृहलव, पारद (पादिअन) और शक (सीदियन) जन रहते हैं । सिन्ध वरद, कुटज गान्धार, औरस (औरग) तथा सौवीर जनों के प्रदेश में होकर बहती है । गंगा नदी यक्ष, गन्धर्व, किन्नर, विद्याधर, कलाप, ग्रामक, किम्पुरुष, किरात पुलिन्द, कुरु पञ्चाल, कौशिक, मत्स्य, मागध, अङ्ग, वंग, ब्रह्मोत्तर तथा ताम्रलिप्त जनों के निवास स्थान से होकर बहती है । ह्लादिनी (ब्रह्मपुत्र) से सिकत प्रदेश में आपकनिपाद, धीवर, ऋषीक, किरात, स्वर्णभूमिक (भोटिया) जन रहते हैं । पावनी की पहिचान अभी तक नहीं हो सकी है । सम्भवतः यह भारत के पूर्व तथा चीन के पश्चिम बहने वाली कोई नदी होगी ।

सिन्ध की सहायक नदियों में मुख्य इरावती (रावी) है । इसका उद्गम कपिष्ठल (कैथल) है । असिकनी (चेनाब) तथा विपाशा (व्यास) नदियाँ कैकय जनपद में बहती हैं । शुतुद्रु (सतलज) तथा कुमा (काबुल) नदियाँ पुष्कलावती (चारसड्डा) से निकल कर सिन्ध में मिली हैं । सुवास्तु (स्वात) तथा गौरी (पंजकोरा) भी सिन्ध में ही मिली हैं ।

वैदिक साहित्य में चौदह नदियों की चर्चा है उनमें त्रिष्टामा, रसा, सुसर्तु तथा श्वेत्या आदि कुमा के ऊपर की सिन्ध की सहायक नदियाँ हैं । सीलमावती तथा ऊर्णावती भी सिन्ध की सहायक हैं । ये दोनों उस प्रदेश की नदियाँ हैं जो ऊन तथा बहुमूल्य पत्थर के लिये प्रसिद्ध था । ऋग्वेद की आपगा जिसका पर्याय ओघवती है सरस्वती की एक छोटी सहायक नदी है । वहाँ के जन उसको इन्दुमती कहते हैं । यह यानेश्वर के ऊपर सरस्वती तथा दृषद्वती के मध्य में बहती थी ।

सिन्ध उत्तर भारत की सबसे प्रसिद्ध नदी है । गंगा को छोड़ कर बड़ाई में कोई नदी इसकी समानता नहीं कर

सकती। ऋग्वेद में इसका बड़ा ही मनोहर वर्णन मिलता है। इसकी बहने की शक्ति अतुलनीय कही गयी है।

जम्बुदीवपण्णत्ति नामक एक जैन ग्रन्थ में गंगा, रोहिता—लौहित्य (ब्रह्मपुत्र), सिन्ध तथा हरिकान्त नदियों का उद्गम दो पद्मह्रदों से लिखा है। इनमें एक ह्रद भीतरी शृंखला तथा दूसरा गर्म शृंखला में है। जैनियों का पद्मह्रद महाभारत का बिन्दु सर पाली साहित्य का अनोत्तत तथा संस्कृत साहित्य का मानसरोवर है। महाभारत में गंगा का उद्गम मानसरोवर लिखा है। सिन्ध की प्रधान धारा का सम्बन्ध पश्चिमी मानसरोवर से है ही। शुतुद्रु का उद्गम भी वहीं है।

सिन्ध नदी प्रारम्भ में दो नदियों की सम्मिलित धारा के रूप में चलती है। एक धारा कैलाश के उत्तर-पश्चिम से निकल कर उत्तर-पश्चिम की ओर तथा दूसरी कैलाश के उत्तर-पूर्व में स्थित एक झील से निकल कर उत्तर-पश्चिम की ओर बहती है। दूसरी धारा कुछ दूर चल कर दक्षिण पश्चिम की ओर बहने लगती है। जहाँ दोनों धाराओं का संगम हुआ है वहाँ से बहुत दूर तक उत्तर पश्चिम की ओर बहकर काराकोरम शृंखला के नीचे वह दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। यही मोड़ हिमालय की पश्चिमी सीमा है। फिर वहाँ से सिन्ध सर्पाकार होकर दक्षिण पश्चिमी मार्ग का अनुसरण करती हुई अरब सागर में गिरती है। उसने अपने मुहाने पर कराची के समीप दो प्रसिद्ध डेल्टा (delta) बनाये हैं। आर्य जन सबसे बड़े को प्रसिन्न तथा दूसरे को पतल (प्रस्थल) कहते थे।

वितस्ता (झेलम)—इस नदी का उद्गम पीर पंजाल शृंखला है। वहाँ से निकल कर यह पूँछ के नीचे वक्राकार मार्ग से पश्चिम की ओर बहकर दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। फिर कुछ पश्चिम तथा दक्षिण को जाकर झेलम नगर के पूर्व तथा मीरपुर के पश्चिम होती हुई अंग तथा भंग मगिअन के मध्य में चेनाब से मिल जाती है।

चन्द्रमागा—इस नदी का आधुनिक नाम चेनाब है। यह नदी दो धाराओं के मिलने से बनी है। बारलाच दर्रे (१६०००) के दक्षिण-पश्चिमी भाग से चन्द्रा तथा उसी दर्रे के उत्तर-पश्चिमी भाग से भागा नाम की धाराएँ निकलती

हैं। समुद्र से ७५०० की ऊँचाई पर स्थित टण्डी नामक स्थान पर दोनों धाराएँ परस्पर मिल जाती हैं। यह नदी गर्म शृंखला के १८० मील के प्रदेश को सींचती है। इस में अनेक हिमानियों का जल आता है। इसका एक वैदिक नाम असिक्नी भी है।

इरावती—वैदिक साहित्य में इसको परुष्णी कहते हैं। इसका आधुनिक नाम रावी है। यह बंगटल के चट्टानी प्रदेश से निकल कर पीर पंजाल के दक्षिणी ढालों तथा धौला धार के उत्तरी ढालों को सींचती हुई काश्मीर में चम्बा के दक्षिण पश्चिम की ओर बह कर लाहौर के आगे अहमदपुर तथा सराय सिन्ध के मध्य में झेलम में गिर जाती है।

विपाशा—आजकल इसको व्यास कहते हैं। यह रावी के उद्गम के पास हीरोत्तंग में पीर पंजाल शृंखला से निकली है। इसमें भी अनेक हिमानियों का जल आता है। यह चम्बा से दक्षिण-पश्चिम की ओर बह कर कपूरथला के दक्षिण-पश्चिम कोण पर सतलज से मिल जाती है।

शुतुद्रु—इसका आधुनिक नाम सतलज है। यह हिमालय के उत्तर से आने वाली नदी है। इसका उद्गम मानसरोवर के पश्चिमी भाग में है। यह वहाँ से पश्चिम की ओर बह कर कामता तथा शिमला की पहाड़ियों पर कुछ दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़कर वक्राकार होती हुई ऊपर से पश्चिम चलकर कपूरथला के दक्षिण-पश्चिम कोण पर व्यास से मिल जाती है। यहाँ से इसका नाम लुप्त हो जाता है तथा व्यास के ही नाम से फीरोजपुर तथा बहावलपुर के आगे चलकर चेनाब से मिली है। इसके आगे अलीपुर तथा ऊँच के मध्य में तीनों धाराएँ मिलकर बहती हैं। कुछ आगे चलकर सिन्ध में मिल जाती हैं। मानसरोवर में कामता पर्वत तक सतलज में तीन सहायक नदियाँ मिली हैं। १—कुमा (काबुल), २—क्रमु (कुर्रम) ३—गोमती (गोमल)।

कुमा—सिन्धु की पश्चिमी सहायक नदियों में कुमा नाम की वैदिक नदी सबसे मुख्य है। आजकल इसको काबुल नदी कहते हैं। संस्कृत साहित्य के आधार पर कुछ विद्वान् इसको भारत की पश्चिमी सीमा मानते हैं। इसी नदी को एरिअन कोफस तथा प्लिनी कोफेन कहते थे। पुराणों की कुहू नदी भी यही है। टालेमी ने इसका नाम कोआ लिखा है। यह भी हिमालय से निकल कर

(हाटक) के कुछ ऊपर सिन्धु से मिली है। इसकी दो सहायक नदियाँ सुवास्तु (स्वात) तथा गौरी (पंजकोरा) प्राग में इसमें मिली हैं।

क्रम—इसका आधुनिक नाम कुरम नदी है। वन्नु के समीप इसकी एक सहायक नदी तच्ची इसमें मिली है। इसाखेद के दक्षिण क्रमु सिन्ध से मिली है।

गोमती—आजकल यह गोमल नाम से प्रसिद्ध है। यह डेरा इस्माइलखाँ तथा चन्दवान के मध्य में पश्चिम से पूर्व की ओर बहती है और कुछ दूर जाकर सिन्ध में मिल जाती है।

सरस्वती—सरस्वती तथा दृषद्वती नाम की उत्तरापथ की दोनों नदियाँ ऐतिहासिक हैं। सरस्वती का उद्गम शिमला के ऊपर हिमालय शृंखला में है। इसके उद्गम स्थान को प्लक्षप्रास्रवण कहते हैं। वहाँसे निकल कर यह दक्षिण की ओर शिमला तथा सिरमूर राज्य में होकर बहती है। पटियाला के आगे चल कर सिरस से कुछ दूर राजस्थान के मरुस्थल के उत्तरी भाग में लुप्त हो जाती है। मनु ने उस स्थान का नाम विनशन लिखा है। उसी को अदर्श अथवा आदर्श भी कहते हैं। सिद्धान्तशिरोमणि के गोलाध्याय के भुवनकोश में इसको कहीं दृश्य कहीं अदृश्य नदी लिखा है—दृश्यादृश्या च भवति तत्र तत्र सरस्वती। सर्वप्रथम यह चलौर ग्राम के समीप बालू में लुप्त हुई है तथा भवानीपुर में फिर प्रकट हो जाती है। आगे जा कर बालछापर में फिर लुप्त हो गयी है और बड़ाखेरा में फिर प्रकट हो जाती है। पृथूदक (पेहोआ) के समीप उर्नई में इसमें मार्कण्डा नदी मिलती है। आगे चलकर दृषद्वती (घरघर या घर्घर) इसमें मिली है। इस नदी ने तीन तीर्थस्थानों का निर्माण किया है—चमसोद्भेद, शिरोद्भेद तथा नादोद्भेद। ऋग्वेद में लिखा है कि यह नदी बड़ी वेगवती है तथा यह समुद्र में मिली है। सम्भव है वैदिक काल में जब कि राजस्थान में समुद्र था, यह समुद्र में गिरती रही हो।

दृषद्वती—यमुना नदी के समीप बहने वाली इस नदी का उद्गम सिरमूर की पहाड़ियाँ हैं। श्री जयचन्द विद्यालंकार इसको घग्घर कहते हैं। रैक्सन इसको चौतंग या चितांग अथवा चित्रान्त कहते हैं। गजेटियर में इसका नाम रची लिखा है। श्रीमद्भागवत के आधार पर भी इसका

नाम रची प्रतीत होता है क्योंकि श्रीकृष्ण ने द्वारका से हस्तिनापुर जाते समय दृषद्वती को पार कर सरस्वती को पार किया था। यह सिरमूर से पश्चिम की ओर चल कर अम्बाला तथा शाहाबाद जिलों से होकर बहती है। यह पृथूदक (पेहोआ) के समीप सरस्वती से मिली है।

गङ्गा—गंगा का उद्गम महाभारत में विन्दुसर, जम्बू-दीवपण्णत्ति में पचह्रद पालि ग्रन्थों में अनोत्तत तथा अन्य संस्कृत ग्रन्थों में मानसरोवर लिखा है। कनखल के ऊपर इस नदी के अनेक नाम हैं। हिमालय पर्वत पर इसकी भिन्न भिन्न धाराओं के नाम गंगा, अलकनन्दा, भागीरथी, मन्दाकिनी तथा जाह्नवी हैं। ये सभी नाम संस्कृत साहित्य में इसके पर्याय मान लिये गये। बदरीनाथ शिखर के समीप अलका नाम के हिमानी प्रदेश से अलकनन्दा नाम की धारा निकली है। मूल धारा यही मालूम पड़ती है। अन्य सभी धाराएँ इसमें मिलती गयी हैं। इस मूलधारा में कहीं कहीं कोई अन्य धारा मिली है वहाँ सर्वत्र एक प्रयाग भी प्रतिष्ठित होता गया है। केदारनाथ शिखर से निकलने वाली मन्दाकिनी नाम की धारा रुद्रप्रयाग के समीप अलकनन्दा में मिली है वहाँ देवप्रयाग है। भागीरथी का उद्गम गोमुखी नाम की हिमानी है। गंगोत्तरी पहुँचने पर उत्तर से आने वाली जाह्नवी उसमें मिलती है। जाह्नवी का उद्गम स्थान स्कीदिअन (Skithian mt.) पर्वत है उसके उत्तर तिब्बत (त्रिविष्टप) है। बहुधा यह लोकोक्ति सुनी जाती है कि जहाँ तक जाह्नवी वहाँ तक भारतवर्ष। इस प्रकार मन्दाकिनी, भागीरथी तथा जाह्नवी की सम्मिलित धाराओं से मिली हुई अलकनन्दा देवप्रयाग के ऊपर गंगा कही जाती है तथा हृषीकेश के नीचे जनता में इसी नाम से प्रसिद्ध है।

यह हरिद्वार के समीप पर्वत को छोड़कर मैदान में आती है। हरिद्वार से बुलन्दशहर तक यह दक्षिणाभिमुख, बुलन्दशहर से प्रयाग तक दक्षिण-पूर्व की ओर बहती है। प्रयाग से राजमहल तक पूर्व की ओर बह कर बंगाल में गंगासागर के समीप समुद्र में मिल जाती है। इसके तट पर भारत के अनेक प्रसिद्ध नगर तथा तीर्थस्थान हैं। यह संसार की सर्वश्रेष्ठ पुनीत तथा स्वास्थ्यवर्द्धक जल वाली नदी कही जाती है।

यमुना—यह बन्दर पूँछ की ढालों से निकलती है। इसके उद्गम स्थान पर यमुनोत्री का प्रसिद्ध मन्दिर है। इससे

अधिकृत हिमालय प्रदेश का क्षेत्रफल ४५०० वर्गमील है। यह गंगा की सबसे बड़ी पश्चिमी सहायक नदी है। गंगा तथा सिन्ध के समान ही इसका भी वैदिक नाम आज तक प्रचलित है। सेवालिक शृंखला तथा गढ़वाल शृंखला को काट कर यह उत्तर भारत के मैदानों में प्रवेश कर गंगा के समानान्तर दक्षिण की ओर बहती है तथा प्रयाग पहुँच कर गंगा में मिल जाती है। देहरादून जिले में पश्चिम से आकर इसमें दो नदियाँ मिली हैं उनमें एक का नाम उत्तरी टोंस है। आगरा तथा प्रयाग के मध्य में दाहिनी ओर से इसमें चार सहायक नदियाँ मिली हैं। जिनके नाम क्रमशः चर्मण्वती (चम्बल), काली सिन्ध (सन्ध्या), वेत्रवती (वेतवा) तथा शुक्तिमती (केन) हैं।

रामगंगा—इक्षुमती—इसका उद्गम अल्मोड़ा के कुमायूँ उत्तर शृंखला है। वरेली के नीचे इसमें एक छोटी नदी मिली है यह फर्रुखाबाद तथा हरदोई के मध्य में गंगा से मिल जाती है। कुछ लोग इसको बाहुदा तथा इक्षुमती (ईखन) भी कहते हैं। अयोध्याकाण्ड ६८ अ० में इसकी चर्चा मिलती है।

गोमती—यह गंगा की एक सहायक नदी है। पीलीभीत के समीप हिमालय से निकल कर बनारस, वाराणसी तथा गाजीपुर (गाधपुर) के मध्य में यह गंगा में मिली है। इसकी सहायक नदी सई है। सई का प्राचीन नाम स्पन्दिका मिलता है। कनिष्क के अनुसार गोमती की सहायक नदी धूतपापा यही है क्योंकि आजकल धूतपापा नाम का एक तीर्थ फैजाबाद के समीप इसी नदी के तट पर स्थित है।

सरयू—इसका उद्गम मानसरोवर है। इसकी मुख्य धारा को घाघरा कहते हैं। यह एक ऐतिहासिक नदी है। अयोध्या का प्राचीन नगर इसी के तट पर स्थित है। यह छपरा जिले में गंगा से मिली है। बहराइच जिले के उत्तर-पश्चिम कोने पर एक सहायक नदी इसमें मिली है। वहीं से इसका नाम सरयू हो जाता है। इसके दाहिने तट पर स्थित बहरामघाट में एक अन्य सहायक नदी (चौकी) इसमें मिली है। बहराइच जिले से निकलने वाली पाँच अन्य नदियाँ इसमें गोंडा जिले में मिलती हैं। गोरखपुर जिले में बरहलगंज के समीप कुर्ना नदी इसमें मिली है।

सारन जिले की पश्चिमी सीमा पर छोटी गण्डक भी इसमें मिलती है।

अचिरवती—सरयू की सहायक नदियों में सबसे बड़ी नदी अचिरवती हिमालय शृंखला से निकल कर गोंडा, बहराइच तथा बस्ती जिलों से होकर गोरखपुर जिले में बरहज के पश्चिम सरयू में मिलती है। आजकल इसको राप्ती कहते हैं। इसी के तट पर श्रावस्ती (आधुनिक सहेत महेत) स्थित थी। इसका एक नाम इरावती भी था। इसीको अजिरवती भी कहते थे। इतिहास के अनुसार अजिरवती का अर्थ अजगर वाली नदी (अजिर-अजगर) होता है। कपिल जी नदी में सोने की मछली के रूप में उत्पन्न हुये थे। डा० वामुदेवशरण अग्रवाल का मत है कि इसी नदी का एक नाम सदानीरा भी है क्योंकि महाभारत के अनुसार गण्डक तथा सरयू के मध्य में सदानीरा नदी थी अतः राप्ती का ही एक नाम सदानीरा भी था।

रोहिणी—यह एक छोटी नदी थी जो शाक्य तथा कोलिय राज्यों को विभक्त करती थी। कनिष्क ने आधुनिक रोहई अथवा रोहवैनी को रोहिणी माना है। यह गोरखपुर में राप्ती से मिली है।

गण्डक—गंगा की दूसरी सहायक नदी गण्डकी अथवा गण्डक है। इसका उद्गम दक्षिणी तिब्बत की पहाड़ियाँ हैं। नेपाल में बाईं ओर से चार तथा दाहिनी ओर से दो सहायक नदियाँ इसमें मिलती हैं। बाँयीं ओर से इसमें मिलने वाली नदियाँ बुढ़िया गण्डक, मादी, सेनी तथा काली हैं। नेपाल में अपनी सहायक नदियों के कारण इसका आकार मानचित्र में बारहसिंगे के सींग के समान दिखाई देता है। गोरखपुर तथा चम्पारन जिले के मध्य में यह भारत में प्रवेश करती है। वहाँ से आगे चल कर यह सारन तथा मुजफ्फरपुर जिलों की प्राकृतिक सीमा का काम करती है। इसकी प्रधान धारा भारत तथा मुजफ्फरपुर के मध्य में गंगा से मिलती है। इसकी एक छोटी धारा बसाढ़ में इससे अलग होकर चम्पारन जिले में अरगज के समीप निकलने वाली एक नदी से मिलकर मुँगेर जिले में सोनरिया घाट के समीप गंगा से मिलती है।

ब्रह्मपुत्र—ब्रह्मपुत्र तथा सूरमा असम की दो मुख्य नदियाँ हैं। ब्रह्मपुत्र का उद्गम मानसरोवर का पूर्वी

भाग हैं। समचा जाकर यह दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। फिर सदिया जिले की उत्तर-पूर्वी सीमा से होकर असम की घाटी में घुसती है। सदिया से दक्षिण-पश्चिम की ओर गैरो पर्वत के ऊपर तक बहती है, फिर दक्षिण की ओर मुड़कर गोआलुन्दो घाट के ऊपर गंगा में मिल जाती है। तिब्बती प्रदेश में इसका नाम सुनपा है। पूर्वी बंगाल में इसको यमुना कहते हैं। मानसरोवर से दो सौ मील चलने पर इसमें एक सहायक नदी मिली है। यह ज्यों-ज्यों पूर्व की ओर जाती है इसमें अनेक सहायक नदियाँ मिलती जाती हैं। इसकी सबसे बड़ी सहायक नदी लोहित अथवा लौहित्य है। इसी के कारण इसका एक नाम लौहित्य भी मिलता है। लौहित्य सदिया जिले में ब्रह्मपुत्र से मिली है।

सुलेमान—प्राचीन भूगोल-शास्त्री इस पर्वत को अञ्जन गिरि कहते थे। पाणिनि ने (त्रिकुत् पर्वते ५।४।१४७ में) इसका उल्लेख किया है। अथर्ववेद में भी तीन चोटियोंवाले इस पर्वत का उल्लेख मिलता है। कीथ ने इसकी पहिचान त्रिकोट से की है जो उत्तरी पंजाब तथा काश्मीर के मध्य की कोई चोटी थी। अथर्ववेद में लिखा है कि यहाँ एक प्रकार का सुरमा (त्रैककुद अञ्जन) उत्पन्न होता था। अतः लोगों का अनुमान है कि सुलेमान का ही प्राचीन नाम त्रिकुत् था जो कि आज भी उत्तम प्रकार के सुरमे का उत्पत्ति-स्थान है। सुलेमान के समानान्तर शीनगर की पर्वत-शृंखला है जो कि ओब नदी के पूर्व है और इन दोनों शृंखलाओं के पीछे टोबा तथा काकड़ की शृंखलाएँ हैं। पर्वतों की यही तीनों शृंखलाएँ त्रिकुत् कहलाती थीं। यहाँ उत्तम श्रेणी का अञ्जन प्राप्त होता था। महाभारत में लिखा है कि वाहीक (पंजाब) की गौरवर्ण की स्त्रियाँ मैनसिल के समान चमकीले कोणवाले नेत्रों में त्रैककुद अञ्जन लगाती थीं (कर्णपर्व ४४।१८)। आजकल भी सुलेमानी सुरमा पंजाब तथा सिन्ध के दूर-दूर के प्रदेशों में जाता है। सिन्ध में इसी अञ्जन को सौवीराजन भी कहते थे। इस पर्वत का सबसे ऊँचा शिखर तस्त-ए-सुलेमान (सालो-मन का सिंहासन) ११२६५ फीट ऊँचा है। इसी शृंखला में भारत से बलूचिस्तान जाने के लिए अनेक संकुचित मार्ग हैं।

भारतवर्ष में हिमालय शृंखला के अतिरिक्त सात अन्य पर्वतों की मुख्य शृंखलाएँ हैं। इनको कुलपर्वत कहते हैं। "महेन्द्रो मलयः सह्यः शुक्तिमान् ऋक्षपर्वतः। विन्ध्यश्च पारियात्रश्च सप्तैते कुलपर्वताः" ॥ मत्स्य पु० ६५। महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्षवान्, विन्ध्य तथा पारियात्र ये सात कुलपर्वत हैं।

महेन्द्र—जेनरल कनिंघम ने अपने भारत के प्राचीन भूगोल में महेन्द्र मलै को महेन्द्र पर्वत निश्चित किया है। यह शृंखला गंजाम को महानदी की घाटी से पृथक् करती है। इस शृंखला में समस्त पूर्वी घाट सम्मिलित हैं। पूर्वी घाट महानदी तथा गोदावरी नदी के मध्य में स्थित है। कालिदास ने रघुवंश ४।३८-४३ में कलिङ्ग के राजा को महेन्द्रनाथ लिखा है—“उत्कलादर्शितपथः कलिङ्गाभिमुखे ययौ। श्रियं महेन्द्रनाथस्य जहार न तु मेदिनीम्” ॥ मल्लिनाथ ने इसकी टीका में “महेन्द्रनाथस्य” की व्याख्या “कलिङ्गस्य” की है। कलिङ्ग जनपद गंजाम के आस-पास तक ही सीमित था प्रत्युत गोदावरी तक विस्तृत था। कथासरित्सागर १६।६२ में गोदावरी नदी के तट पर राजा माहेन्द्र की राजधानी की स्थिति का स्पष्ट उल्लेख है। इस पर्वत से निम्नलिखित नदियों के निकलने का उल्लेख भिन्न-भिन्न पुराणों में मिलता है—१ त्रिभागा या त्रिसामा विष्णु-पुराण, २ ऋषिकुल्या, इक्षुदा मार्कण्डेय पुराण। ३ त्रिविदा मा० पु०। ४ लाङ्गूलीनी। ५ मूली मा० पु०, ६ शरवा। ७ विमला मत्स्यपुराण। आधुनिक भूगोल से इन नदियों का ठीक-ठीक परिचय प्राप्त करना कठिन है, फिर भी विद्वानों ने इनमें से कुछ का निर्णय करने का प्रयत्न किया है।

त्रिभागा—त्रिभागा तथा ऋषिकुल्या एक ही नदी का नाम जान पड़ता है। यह गंजाम जिले की बिल्कुल उत्तरी नदी है। यह गंजाम नगर के आगे खाड़ी में गिरती है। इसी के तट पर गंजाम नगर स्थित है। आजकल इसको ऋषिकुल्या कहते हैं।

लाङ्गूलीनी—यह कालाहांडी के पर्वत से निकलकर दक्षिण की ओर बहकर गंजाम के नीचे चन्द्रपुर में बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसका वर्तमान नाम लाङ्गू-लिया है।

इक्षुदा—इक्षुदा वह नदी हो सकती है जिसके तट पर आधुनिक इच्छापुर नगर स्थित है।

अन्य नदियों के विषय में कुछ नहीं कहा जा सकता, या तो वे अब नष्ट हो गयीं या अब छोटे-मोटे नालों के रूप में रह गयी हैं और उनका नाम भी लोग भूल गये।

मलय—यह पाण्ड्य देश का मुख्य पर्वत है। वीर-चरित में इसके ढाल की चर्चा मिलती है। यह शृङ्खला कावेरी नदी से घिरी हुई है। रघुवंश ५-३ में इसका उल्लेख है—“कावेरीवलयितमेखलस्य सानावेकस्मिन्मलयगिरेर्दिवः पतामि” ॥ बाल रामायण में लिखा है कि इस पर्वत पर इलायची, मिर्च, चन्दन तथा सोपारी के वृक्ष प्रचुरता से पाये जाते हैं। दक्षिण भारत में ये सभी वृक्ष आज-कल भी उपलब्ध हैं। अतः यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि घाटों का दक्षिणी भाग, जो कि मैसूर के दक्षिण से लेकर द्रावकोर की पूर्वी सीमा बनाता है, वही मलय शृङ्खला (Cordamasm Hills = इलायची की पहाड़ियाँ) है। कालिदास ने रघुवंश ४।५१ में मलय तथा ददुर को दक्षिण भारत के स्तनों के समान कहा है। मार्कण्डेय पुराण में भी मलय तथा ददुर का साथ-साथ उल्लेख मिलता है—“महेन्द्र-मलयाद्रौ च ददुरे च वसन्ति ये”। मा० पु० ५८-२१। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि ददुर दक्षिणी घाट का वह भाग है जो मैसूर की दक्षिण-पूर्वी सीमा बनाता है। इस शृङ्खला में चार नदियों का उल्लेख मिलता है—१. कृतमाला, २. ताम्रपर्णी, ३. पुष्पजा, ४. उत्पलावली।

ताम्रपर्णी—इनमें ताम्रपर्णी प्रसिद्ध नदी है। यह प्राचीन पाण्ड्य जनपद में होकर बहती है। राजशेखर ने इसका विशद वर्णन किया है। इसका आधुनिक नाम तम्बरवरी है। यह पश्चिमी घाट के ढाल से निकलकर तिन्नेवली जिले से होती हुई पूनकली नाम के एक छोटे नगर के समीप मेनर की खाड़ी में गिरती है। शेष नदियों का निश्चय करना कठिन है। आधुनिक मानचित्र में मलय शृङ्खला से निकलकर आठ नदियाँ पूर्व की ओर तथा म्यारह पश्चिम की ओर बहती हैं। इन नदियों का नाम प्राचीन काल की किसी भी नदी के नाम से नहीं मिलते। इस-शृङ्खला से निकलनेवाली कुछ अन्य नदियों के नाम पश्चिम

पुराण के भूमिखंड में अवश्य हैं जिनमें चित्रा अथवा चित्र-लोपा आधुनिक चिन्दिनूरा हो सकती है। कुछ विद्वान् वेगा अथवा वैपई को प्राचीन कृतमाला कहते हैं।

द्रविड़ भाषा में मलय का शब्दार्थ पर्वत है। पाजिटर ने नीलगिरि से लेकर कुमारी अन्तरीप तक के पश्चिमी घाट को मलय माना है। इस पर्वत के एक शिखर पर अगस्त्य ऋषि का आश्रम है। मलय शृङ्खला का दूसरा नाम श्रीखण्डाद्रि अथवा चन्दनाद्रि भी है। पाजिटर की धारणा है कि आधुनिक नीलगिरि का ही प्राचीन नाम ददुर है।

सह्य—यह अपरान्त अथवा पश्चिम भारत का मुख्य पर्वत है। कालिदास ने इसको पृथ्वी का नितम्ब कहा है—“नितम्ब इव मेदिन्याः”—रघुवंश। यह पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग है। पुराणों में वर्णित इससे निकलनेवाली नदियों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह शृङ्खला ताप्ती से लेकर नीलगिरि तक चली गयी है। इससे मिला हुआ एक छोटा सा पर्वत विदूर है जो कि गुजरात में है। विदूर पर्वत पर वैदूर्य (नीलम) मिलता है। पाणिनि ने अष्टाध्यायी के ४।३।८४ सूत्र में वैदूर्य मणि का उत्पत्ति-स्थान विदूर का स्पष्ट उल्लेख किया है। पाजिटर ने विदूर की पहिचान सतपुड़ा से की है। पतञ्जलि के मत से वैदूर्य की काने वालबाय पर्वत में थीं। विदूर के वैकटिक (रत्नतराश) वहाँ से लाकर उन्हें सुचारु बनाते थे अतः उनको वैदूर्य कहने लगे। बहुत सम्भव है कि दक्षिण का बीदर प्राचीन विदूर हो।

‘महाभारत’ से ज्ञात होता है कि सह्य शृङ्खला में दक्षिणी विन्ध्य तथा सतपुड़ा शृङ्खला का कुछ भाग सम्मिलित है। त्रिकूट पर्वत भी सह्य का एक भाग है। इसीसे वहाँ के निवासी त्रिकूटक कहलाते थे। ऋष्यमूक तथा गोमन्त भी सह्य के ही भाग हैं। पाजिटर का मत है कि अहमदनगर से नीलदुर्ग तथा कल्याणी तक विस्तृत शृङ्खला ऋष्यमूक है। ऋष्यमूक पर्वत तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित अनगन्दी से आठ मील की दूरी पर स्थित है। पम्पा नदी इसी पर्वत से निकलकर पश्चिम की ओर बहकर तुंगभद्रा नदी में मिली है। हनुमान् तथा सुग्रीव इसी पर्वत पर सर्वप्रथम रामचन्द्र से मिले थे। ऋष्यमूक पर्वत जिला बिलारी में पड़ता है। पाजिटर के अनुसार नासिक के

दक्षिण-पूर्व का पर्वत गोमन्त है। राय चौधरी के मत से गोमन्त के उत्तर वनवासी था, अतः गोमन्त को मैसूर राज्य में होना चाहिये।

भारतीय जन आजकल सहायक पर्वत को सियद्री कहते हैं। इस शृंखला से निम्नलिखित नदियाँ निकलती हैं— गोदावरी, भीमरथा, कृष्णा अथवा कृष्णवेणा, वञ्जुला या मञ्जुला, तुङ्गभद्रा, सुप्रयोगा, वाह्या तथा कावेरी।

गोदावरी—सहाय से निकलनेवाली नदियों में गोदावरी बड़ी प्रसिद्ध नदी है। आजकल लोग इसको गोदा भी कहते हैं। यह पश्चिमी घाट के पूर्वी भाग से नासिक के समीप निकली है तथा राजमहेन्द्री के नीचे अनेक शाखाओं में विभक्त हो जाती है। वहाँ उसको सप्तगोदावरी कहते हैं। इस स्थान पर शिवजी का एक प्राचीन विशाल मन्दिर है। यह गोदावरी जिले में बंगाल की खाड़ी में गिरती है। इसने अपने मोहाने पर एक विशाल डेल्टा बना दिया है। मद्रास तथा हैदराबाद से होकर बहने में इसमें बायीं ओर से दस तथा दाहिनी ओर से ग्यारह सहायक नदियाँ मिलती हैं।

भीमरथा—आजकल लोग इसको भीमा कहते हैं। यह पूना जिले से निकलकर हैदराबाद के रायचूर जिले के उत्तर गुण्डलूर के समीप कृष्णा में मिली है।

कृष्णा—दक्षिण भारत की यह प्रसिद्ध नदी पुराणों की कृष्णवेणा, जातकों की कण्ठवेणा तथा खारवेल के अभिलेख की कण्ठपेमं गा है। यह पश्चिमी घाट के महा-बलेश्वर से निकलकर दक्षिण पठार से होती हुई पूर्व की ओर बहकर पूर्वी घाट को तोड़कर बंगाल की खाड़ी में गिरती है। यह मद्रास प्रेसिडेन्सी, हैदराबाद राज्य तथा बम्बई प्रेसिडेन्सी से होकर बहती है। आलमपुर के उत्तर जगयपेट के नीचे के एक स्थान तक यह हैदराबाद राज्य की प्राकृतिक सीमा का कार्य करती है इसमें बायीं ओर से पन्द्रह तथा दाहिनी ओर से चार सहायक नदियाँ मिलती हैं जिनमें भीमा, तुङ्गभद्रा, पल्लर तथा मुनेर प्रसिद्ध नदियाँ हैं। महाभारत के वनपर्व का देवहूद इसी के जल से निर्मित हुआ है। यह हैदराबाद के पूर्व-दक्षिण के एक प्रसिद्ध तथा विशाल जिला देवरकोंड में है।

वञ्जुला अथवा मञ्जुला—भीष्मपर्व में इस नदी का उल्लेख मिलता है। आजकल इसको मंजिरा कहते हैं। यह वालाघाट से निकलकर हैदराबाद में कन्दलवाडी के पूर्व गोदावरी में मिलती है। इसमें बायीं ओर से तीन तथा दाहिनी ओर से पाँच नदियाँ मिलती हैं। उनमें तीर्णा तथा करञ्जा उल्लेखनीय हैं। हरिवंश पुराण में उल्लिखित खट्वाङ्गी इसी का नाम मालूम पड़ता है।

तुङ्गभद्रा—कृष्णा की निचली सहायक नदियों में यह सबसे मुख्य नदी है। मैसूर की पश्चिमी सीमा पर पश्चिमी घाट से निकलनेवाली तुङ्गवेला तथा भद्रा नाम की दो नदियाँ मिलकर इस नाम को धारण कर लेती हैं। यह मद्रास प्रेसिडेन्सी के कर्नूल जिले में नन्दिकोटपुर के उत्तर आलमपुर के कुछ आगे कृष्णा में गिरती है। आजकल इसको तुम्वरदा कहते हैं। इसमें बायीं ओर से सात तथा दाहिनी ओर से छह नदियाँ मिली हैं जिनमें वरदा, हगरी तथा हिन्दरी प्रसिद्ध हैं।

सुप्रयोगा—सम्भवतः हिगरी नदी यही है जो कि मैसूर के दक्षिण-पश्चिम से निकलकर वेल्लरी जिले में तुङ्ग-भद्रा से मिली है। इसका एक नाम वेदवती भी है। महा-भारत के भीष्म पर्व में तथा अन्य पुराणों में भी इसकी चर्चा मिलती है। वाह्या नदी की पहिचान नहीं हो सकी है।

कावेरी—दक्षिण भारत की एक दूसरी प्रसिद्ध कावेरी कुर्ग के पश्चिमी घाट से निकलकर दक्षिण की ओर बहकर मैसूर होती हुई मद्रास प्रेसिडेन्सी तञ्जोर जिले में बंगाल की खाड़ी में गिरती है। यह मोहाने पर एक विस्तृत डेल्टा बनाती है। इसमें दस तथा दाहिनी ओर से आठ नदियाँ मिली हैं जिनमें भवानी तथा अमरावती प्रसिद्ध हैं। प्राचीन काल में कावेरी मोतीके लिए प्रसिद्ध थी।

शुक्तिमान्—इस पर्वत की पहिचान में बड़ा मतभेद है। महाभारत के सभा पर्व में लिखा है कि भीम ने हिमालय के ढाल के समीप के दलदल के प्रदेश को अल्प काल में अपने अधीन कर लिया, फिर अन्य देशों को,

जिनमें भल्लात तथा शुक्तिमान् पर्वत भी थे जीता—सभापर्व ३०-४, ६। यदि यह वर्णन सत्य है तो शुक्तिमान् को हिमालय तथा काशी के मध्य में होना चाहिये। परन्तु उपर्युक्त प्रसङ्ग में शुक्तिमान् का उल्लेख प्रमादवश किया गया जान पड़ता है जैसे अर्जुन के उत्तर दिग्विजय में सुहृ चोल, तथा प्राग्व्योत्तिषकी चर्चा अथवा नकुल के पश्चिम दिग्विजय में उत्सव संकेतों की चर्चा भ्रामक है। मर्यादा पर्वत तथा कुल-पर्वत भिन्न-भिन्न हैं, अतः हिमालय की कोई शृंखला शुक्तिमान् नहीं हो सकती।

जेनरल कनिंघम ने शुक्तिमती (केन) नदी का जन्मदाता छतीसगढ़ तथा वस्तर के मध्य में स्थित पर्वतशृंखला को शुक्तिमान् माना है। बेगलूर हजारीबाग जिले के उत्तर में स्थित पर्वत को शुक्तिमान् मानते हैं। पार्जिटर गैरो, खासी तथा त्रिपुरा की पहाड़ियों को शुक्तिमान् मानते हैं। सी. बी. वैद्य पश्चिम भारत में इसका निर्णय करते हैं, उनकी धारणा है कि काठियावाड़ की शृंखला शुक्तिमान् है। डा० रमेशचन्द्र मजूमदार सुलेमान शृंखला को शुक्तिमान् कहते हैं। राय चौधरी मध्यप्रदेश के रायगढ़ जिले में सक्ति से लेकर मानभूम की डाल्मा पहाड़ी तक विस्तृत शृंखला को शुक्तिमान् समझते हैं। परन्तु केन नदी का सम्बन्ध शुक्तिमान् से नहीं हो सकता, क्योंकि मार्कण्डेयपुराण में शुक्तिमती का जन्मदाता विन्ध्य पर्वत लिखा है। शुक्तिमान् से निकलनेवाली नदियों में शुक्तिमती का नाम किसी भी पुराण में नहीं मिलता। वा० पु० में लिखा है कि “ऋषिका सुकुमारी च मन्दगा मन्दवाहिनी। कूपा पलाशिनी चैव शुक्तिमत्प्रभवाः स्मृताः ॥” मा० पु० में लिखा है—“ऋषिकुल्या कुमारी च मन्दगा मन्दवाहिनी। कूपा पलाशिनी”। मत्स्य पुराण में ऋषिका तथा पलाशिनी के स्थान पर काशिका तथा पाशिनी नाम मिलते हैं। मजूमदार की धारणा है कि कूपा (कुमा) कावुल नदी, पाशिनी (पञ्जशीर), कुमारी (कुनार), मन्दगा मन्दवाहिनी (हेलमन्द) तथा ऋषिकुल्या (इसिकला) हैं। उनका मत है कि शुक्तिमान् हिन्दूकुश से दक्षिण भारत के पश्चिमी सीमान्त की समूची शृंखला का नाम है।

परन्तु उनकी धारणा भ्रान्त है; क्योंकि कुलपर्वतों का परिगणन दक्षिणावर्त क्रम से ही किया गया जान पड़ता है। महेन्द्र पर्वत दक्षिण भारत के उत्तरी छोर पर है, वहाँ से पूर्वी तट के साथ दक्षिण चलते हैं तब नालमलइ से एलामलइ तक की शृंखला मलय है। फिर पश्चिमी तट के साथ उत्तर घूमकर सह्य पर आते हैं। अब इसी के आगे शुक्तिमान् की स्थिति होनी चाहिये, अतः अनुमान किया जाता है कि हैदराबाद के गोलकुण्डावाले पठार का नाम शुक्तिमान् रहा होगा, क्योंकि वह पठार पूर्वी घाट (महेन्द्र-मलय) तथा पश्चिमी घाट (सह्य) के मध्य में स्थित होता हुआ भी दोनों से पृथक् है। ऋक्ष पर्वत सह्याद्रि के उत्तरी छोर से पश्चिम से पूरव की ओर भारत के आर-पार चला गया है। उसके पूरवी छोर से उत्तर घूमकर विन्ध्य तथा विन्ध्य के आगे पारियात्र है। इस पठार की सबसे प्रसिद्ध नदी मूसी का प्राचीन नाम मूषिका अथवा ऋषिका हो सकता है। मन्दगा आधुनिक मनेर, मन्दवाहिनी मुनेर तथा पलाशिनी अथवा पाशिनी पालेर नदियाँ हैं। अतः सह्याद्रि के उत्तरी किनारे से पूर्व की ओर बढ़ती हुई बाहियाँ शुक्तिमान् हो सकती हैं। इस शृंखला में खान देशकी पहाड़ियाँ, अजन्ता तथा भीतर घुसा हुआ हैदराबाद-गोलकुंडा पठार सम्मिलित हैं।

ऋक्ष—हरिवंश पुराण में लिखा है कि माहिष्मती नगरी (जबलपुर के पास आधुनिक मेड़ाघाट) ऋक्ष तथा विन्ध्य पर्वत के मध्य में नर्मदा नदी के तट पर स्थित थी। ऋक्ष पर्वत की उत्तरी शृंखला विन्ध्य है जो नर्मदा घाटी को घेरे हुए है अतः ऋक्ष पर्वत विन्ध्य की दक्षिणी शृंखला अथवा सतपुड़ा पहाड़ हो सकता है। विष्णु पुराण में इससे निकलनेवाली नदियाँ तापी, पयोष्णी, निर्विन्ध्या तथा दशार्णा उल्लिखित हैं। तापी ताप्ती है। इसी को तापनी भी कहते थे। इसका एक नाम तपनात्मजा भी मिलता है। पयोष्णी सम्भवतः ताप्ती की सहायक पूर्ण हो सकती है, परन्तु बी. सी. लाह का मत है कि पूर्ण सह्याद्रि से निकलकर हैदराबाद के नन्देर जिले की ठीक पश्चिमी सीमा पर गोदावरी से मिली है। अस्तु, महाभारत के वनपर्व में दोनों नदियों, तापी तथा पयोष्णी का मान

साथ-साथ आया है। दूसरे स्थल पर उत्तर-यात्रा के वर्णन में यह नदी नर्मदा के दक्षिण विदर्भ (वरार) में स्थित कही गई है। प्राचीन काल में पयोष्णी भारत की पवित्रतम नदी समझी जाती थी। “एकतः सरितः सर्वा गङ्गाद्याः सलिलोच्चयाः। पयोष्णी चैकतः पुण्या तीर्थेभ्यो हि मता मम” ॥ महाभारत ३।८८-८९। निविन्ध्या नामक नदी की चर्चा कालिदास ने मेघदूत में की है। यह विदिशा (भेलसा) तथा उज्जयिनी के मध्य में अर्थात् दशार्णा तथा शिप्रा के मध्य में स्थित है। आजकल इसको काली सिन्ध कहते हैं। यह चर्मण्वती (चम्बल) की सहायक नदी है। दशार्णा का आधुनिक नाम घसान है यह वेत्रवती (वेतवा) की सहायक है।

डा० वासुदेवशरण का मत है कि ब्राह्मणी तथा गैतरणी (उड़ीसा) नदियों का उद्गम भी इसी पर्वत में है अतः छोटा नागपुर की पहाड़ियों का राँची तक विस्तृत सिलसिला भी ऋक्ष के ही अन्तर्गत है।

विन्ध्य—यह पर्वत आज भी अपने इसी नाम से प्रसिद्ध है। यह नर्मदा की घाटी के उत्तर की ओर है। आधुनिक भूगोल के विद्वान् इसको उत्तर भारत की दक्षिणी सीमा मानते हैं। यह पर्वत पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में बिहार तक लगभग सात सौ मील लम्बा है। इसके भिन्न-भिन्न भागों के भिन्न-भिन्न स्थानीय नाम पड़ते गये हैं। उदाहरणार्थ, कैमूर, भरनेर आदि। इस पर्वत की ऊँचाई १५०० फीट से लेकर २००० फीट तक है। इसका एकाग्र शिखर ५००० फीट ऊँचा है। विद्वानों की धारणा है कि यह पर्वत अरावली के तलछट से बना है। विन्ध्य तथा सतपुड़ा की शृंखलाएँ नर्मदा के उद्गम के समीप अमरकण्टक में परस्पर मिल गई हैं।

मार्कण्डेय पुराण में ऋक्ष से निकलनेवाली नदियों के नाम शोण, महानद, नर्मदा, सुरथा, अद्रिजा, मन्दाकिनी, दशार्णा, चित्रकूटा, चित्रोत्पला, तमसा, करमोदा, पिशाचिका, पिप्पली, श्रोणी, विपाशा, वञ्जुला, सुमेरुजा, शुक्तिमती, शकुली तथा त्रिदिवा हैं। वाराह पुराण में महानद के स्थान पर ज्योतिरथा का उल्लेख है। उसमें अद्रिजा का नाम नहीं है। ब्रह्माण्ड तथा वायु पुराणों में भी इन

नदियों का उद्गम ऋक्ष में ही लिखा है। इसके विपरीत विष्णु पुराण तथा ब्रह्म पुराण उपर्युक्त नदियों का उद्गम विन्ध्य में मानते हैं। मा० पु० के अनुसार विन्ध्य से निकलनेवाली नदियाँ शिप्रा, पयोष्णी, निविन्ध्या, तापी, निषावती, वेण्वा, गैतरणी, सिनिवाली, कुमुद्वती, करतोया, महागौरी, दुर्गा और अन्तःशिरा हैं।

वाराहपुराण की सूची में अन्तःशिरा के स्थान पर अन्त्यागिरा, करतोया के स्थान पर तोया तथा वेण्वा के स्थान पर वेण्या का उल्लेख है। इसमें मणिजाल, शुमा, शीघ्रोदा तथा पाला नाम की चार अधिक नदियों का उल्लेख है। मार्कण्डेय पुराण में इनसे मिलती-जुलती तीन नदियों का उल्लेख नहीं है। मा० पु० की कुछ नदियों का उल्लेख वाराह पुराण में नहीं है। इससे यह स्पष्ट है कि मा० पु०, वाराह पुराण तथा अन्य पुराणों में विन्ध्य से निकलनेवाली जिन नदियों का उल्लेख है उनका उद्गम विष्णु तथा ब्रह्म पुराणों में ऋक्ष में लिखा गया है। दशार्णा नदी के उद्गम के वर्णन में टालेमी मार्कण्डेय तथा उससे मिलते-जुलते पुराणों से सहमत प्रतीत होता है। परन्तु जब वह नर्मदा को विन्ध्य से निकलनेवाली नदी लिखता है तो यह मालूम पड़ता है कि वह उनसे पूर्णतया सहमत नहीं था। उसके इस भ्रम का कारण यह प्रतीत होता है कि उसने रेवा को विन्ध्य से तथा नर्मदा को ऋक्ष से निकलनेवाली मान लिया है। भागवत तथा वामन पुराणों में ये दोनों नदियाँ भिन्न-भिन्न मानी गई हैं, परन्तु स्कन्द पुराण के रेवा खण्ड में दोनों को एक ही नदी माना गया है। तथ्य तो यह है कि नर्मदा नदी का प्रधान स्रोत ऋक्ष से निकलकर विन्ध्य से निकलनेवाली तथा उत्तर-पश्चिम की ओर बहनेवाली रेवा के स्रोत से मिला है। यहाँ से दोनों का मार्ग एक ही हो गया है। मा० पु० की परम्परा के अनुसार ऋक्ष से नर्मदा के सम्बन्ध के विषय में हम ऋक्ष तथा पारियात्र को मध्यभारत तथा पश्चिमी भारत में विन्ध्य के ही दो ऊपरी शृंग समझते हैं अर्थात् ऋक्ष पूर्वी तथा पारियात्र पश्चिमी शृंग हैं। मध्यभारत में ऋक्ष तथा विन्ध्य से निकलनेवाली नदियाँ या तो गङ्गा, यमुना तथा सोन की सहायक हैं या चम्बल, ताप्ती या नर्मदा की।

परन्तु अभी तक इनमें से अनेक नदियों की पहिचान नहीं हो सकी।

शोण—इसको आजकल सोन कहते हैं। यह गंगा की निचली सहायक नदियों में सबसे बड़ी नदी है। प्राचीन काल में इसको शोण तथा हिरण्यवाह कहते थे। यह जबलपुर के आगे अमरकण्टक के समीप मेकल शृंखला से निकल कर उत्तर-पश्चिम की ओर वघेलखण्ड, मिर्जापुर तथा शाहाबाद जिलों में होकर बहती हुई पटना के पास गङ्गा से मिली है। मगध (दक्षिणी विहार) में राजगृह (राजगिरि) के नीचे इसका नाम सुमागधा या सुमागवी भी था। वघेलखण्ड में इसमें दो बायीं ओर से तथा तीन दाहिनी ओर से सहायक नदियाँ मिली हैं तथा मिर्जापुर में एक बायीं ओर से और तीन दाहिनी ओर से। इसमें पलामू में एक तथा शाहाबाद में भी एक नदी मिली है। वघेलखण्ड की नदियों में जोहिला, मिर्जापुर की नदी रेंड तथा कन्हर प्रसिद्ध हैं। पलामू की नदी का नाम कोयल है। महाभारत के वनपर्व में वर्णित सोन की सहायक यतिरथा नदी की पहिचान अभी तक नहीं हो सकी है।

नर्मदा—मध्य भारत तथा पश्चिम भारत की प्रसिद्ध नदी नर्मदा मेकल शृंखला से निकल कर कुछ दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती हुई भोपाल तथा मध्यप्रदेश की प्राकृतिक सीमा का कार्य करती है। यह इन्दौर होती हुई बम्बई के रेवा काँठे के आगे चलकर भड़ोच के समीप समुद्र में गिरती है। जब यह नदी दो बड़ी-बड़ी पर्वत-शृंखलाओं (विन्ध्य तथा सतपुड़ा) के मध्य से बहती है तब इन शृंखलाओं से निकलनेवाली अनेक छोटी-छोटी नदियाँ इसमें मिलती हैं। इन्दौर में धुसने के पूर्व बायीं ओर से तेरह तथा दाहिनी ओर से तीन नदियाँ इसमें मिली हैं। इसके आगे इसमें कोई नदी नहीं मिली। भारतीय साहित्य में इसके अनेक पर्याय मिलते हैं जैसे रेवा, सोमोद्भवा, मेकलसुता आदि। अन्तिम नाम इसके उद्गम की ओर संकेत करता है। मेकल शृंखला ऋक्ष के एक भाग का ही नाम है। विन्ध्य से मिली हुई अमरकण्टक की पहाड़ी रेवा का उद्गम है। मौडला के कुछ ऊपर रेवा नर्मदा में मिल गई है। उसके आगे दोनों का नाम नर्मदा हो जाता है।

महाभारत के अनुसार नर्मदा अवन्ति राज्य की दक्षिणी सीमा का काम करती थी।

पारियात्र—पारियात्र अथवा पारिपात्र निषादों का मुख्य पर्वत है। बौधायन धर्मसूत्र १-१-२५ तथा पतञ्जलि के महाभाष्य ६-३-१०६ के अनुसार यह पर्वत आर्यावर्त की दक्षिणी सीमा है। स्कन्द पुराण कुमारी खण्ड के अनुसार यह मध्यभारत की दक्षिणी सीमा है। पार्जितर ने भोपाल के पश्चिम विन्ध्य शृंखला के एक भाग को पारियात्र निर्णीत किया है। शाकटायन व्याकरण सूत्र २।२।७५ में लिखा है कि 'उत्तरो विन्ध्यात्पारियात्रः।' पार्जितर ने भोपाल से पश्चिम विन्ध्य शृंखला के पश्चिमी भाग से लेकर राजपूताने के अड़ावला पर्वत तक की शृंखला को पारियात्र निश्चित किया है। पार्वती तथा पर्णाशि (वनास) से लेकर वेत्रवती (वेतवा) तक की कुल नदियों का उद्गम जिस भाग से हुआ है उसको पारियात्र कहते हैं।

चर्मण्वती—आधुनिक चम्बल का प्राचीन नाम चर्मण्वती था। यह अड़ावला शृंखला से निकलकर पूर्वी राजस्थान में से उत्तर-पूर्व की ओर बहती हुई आगरा के नीचे यमुना से मिली है। इसमें अनेक छोटी-मोटी नदियाँ मिली हैं जिनमें काली सिन्ध तथा वेरच उल्लेखनीय हैं। वेरच धुन्ध नदी में मिली है। धुन्ध के संगम के आगे दोनों सम्मिलित नदियों का नाम पर्णाशि हो जाता है। आजकल इसे वनास कहते हैं।

ऋक्ष, विन्ध्य तथा पारियात्र से सम्बद्ध अनेक छोटी-छोटी शृंखलाएँ हैं जैसे ऊर्जयन्त, रैवतक, अबुद, कोलाहल, चित्रकूट, अमरकण्टक, वैभ्राज तथा वात्सवन आदि।

ऊर्जयन्त—गुजरात में जूनागढ़ के समीप स्थित आधुनिक गिरनार का प्राचीन नाम ऊर्जयन्त था। गिरनार की दूसरी ओर की शृंखला का नाम रैवतक है। राजस्थान के सिरोही राज्य में अड़ावला शृंखला का आवू पर्वत अबुद है। इसी पर वसिष्ठ का आश्रम था। बुन्देलखण्ड की एक छोटी पहाड़ी का नाम कोलाहल था। बाँदा जिले में चित्रकूट पर्वत है। मेकल शृंखला के एक भाग का नाम अमरकण्टक है। यह नागपुर जिले के गोंडवाने में स्थित है। इसी पर्वत से सोन तथा नर्मदा नदियाँ निकली हैं। अमर-

कण्टक का ही एक नाम सोम पर्वत तथा दूसरा सुरथाद्रि भी था। बिहार में राजगृह के समीप का वैभार पर्वत प्राचीन वैभ्राज है।

उपर्युक्त पर्वतों के अतिरिक्त कुछ प्रसिद्ध पर्वतों के नाम पाणिनि की अष्टाध्यायी में आये हैं जिनमें से कुछ का निर्णय हो चुका है, जैसे—किशुलकागिरि, शाल्वकागिरि, अञ्जनागिरि, भञ्जनागिरि,, लोहितागिरि, कुक्कुटागिरि, उदक पर्वत इत्यादि।

किशुलकागिरि—भारत के उत्तर-पश्चिम किनारे अफगानिस्तान से बलूचिस्तान तक उत्तर-दक्षिण लम्बी पर्वतों की जो दीवार है उसी की बड़ी-बड़ी चोटियों के ये नाम जान पड़ते हैं। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल की धारणा है कि सिन्ध-बलूचिस्तान की सीमा पर उत्तर-दक्षिण विस्तृत हाला नामक पर्वत ही प्राचीन काल का शाल्वकागिरि है। उसके पश्चिम बलूचिस्तान की मकरान शृंखला सम्भवतः किशुलकागिरि है। उस प्रदेश को आजकल भी हिगुलाज देश तथा वहाँ की एक नदी को हिगुला कहते हैं। हिगुला किशुलका का विकृत रूप जान पड़ता है। इस देश का प्राचीन नाम पारद भी था। यूनानी लेखकों ने इसे पारदीनी लिखा है, जो कि पाणिनि के पादायन तथा पादायनी से सम्बद्ध जान पड़ता है। मध्यकालीन साहित्य में पारद के अर्थ में हिगुल शब्द का प्रयोग भी मिलता है। सम्भवतः लाल हिगुल के उत्पत्ति-स्थान होने के कारण यह स्थान किशुलक कहलाने लगा। किशुक तथा किशुलक एक ही शब्द के दो रूप हैं। हिगुला देवी भी लाल रंग की मानी जाती है।

अञ्जनागिरि—सुलेमान पर्वत शृंखला का प्राचीन नाम अञ्जनागिरि था—यह ऊपर कहा जा चुका है।

लोहितागिरि—अफगानिस्तान में दो अन्य ऊँचे-ऊँचे पहाड़ हैं। एक मध्य अफगानिस्तान में काबुल के दक्षिण-पश्चिम कोह बाबा का पहाड़ और दूसरा उसके आगे उत्तर-पूर्व की ओर हिन्दूकुश पहाड़। इनमें हिन्दूकुश का प्राचीन नाम लोहितागिरि था। अर्जुन के दिग्विजय के प्रसङ्ग में काश्मीरविजय के पश्चात् लोहित जीतने का उल्लेख है। लोहितागिरि का ही दूसरा नाम रोहितगिरि था। पा० सू० ४।३।११ की व्याख्या में काशिकाकारने रोहितगिरि की

पर्वतीय आयुधजीवी जातियों की चर्चा की है। यह लड़ाकू जाति थी। इस प्रकार लोहितगिरि हिन्दूकुश हो सकता है। आजकल भी वहाँ के जन लड़ाकू स्वभाव के ही होते हैं। समस्त अफगानिस्तान का भी प्राचीन नाम रोह कहा जाता है और वहाँ के निवासी रोहेला अथवा रूहेला कहलाते थे।

भञ्जनागिरि—सुलेमान (अञ्जनागिरि तथा हिन्दू कुश (लोहितागिरि) के मध्य में स्थित कोह बाबा पहाड़ अफगानिस्तान का केन्द्रीय जल-विभाजक है। यहीं से बिखरकर जलधाराएँ अफगानिस्तान की चारों दिशाओं में जाती हैं, अतः इस पर्वत का प्राचीन नाम भञ्जनागिरि हो सकता है; क्योंकि यह जलधाराओं को तोड़कर चारों ओर प्रवाहित होने के लिए बाध्य करता है।

कुक्कुटागिरि—यह पर्वत भी सम्भवतः इसी प्रदेश का कोई पर्वत हो सकता है। एक शृंखला कोह बाबा से पश्चिम की ओर हेरात तथा हरिरूद (सरयू) नदी के समानान्तर गयी है। वह कुछ नीची है। इस कारण ईरानी जन उसको उपरिश्येन (उपरिश्येन—बाज पक्षी के बैठने का अड़्डा) कहते थे। यूनानियों ने उसका नाम परोयमिस लिखा है। यह बाह्लीक (बल्ख) के दक्षिण की पर्वतमाला है। इसी का भारतीय नाम कुक्कुटागिरि प्रतीत होता है।

उदक पर्वत—इस पर्वत का निर्णय अभी तक नहीं हो सका है।

सिन्धु—सिन्धु जनपद प्राचीन काल में सिन्ध नदी के पूर्वी किनारे की तरफ फैला हुआ अर्थात् सिन्ध-सागर दोआब समझा जाता था। यह जनपद सिन्ध तथा झेलम नदियों के मध्य में स्थित है। पाणिनि ने सिन्धु शब्द से सिन्धुक (सिन्ध का निवासी), सिन्धव (जिसके पूर्वज सिन्ध जनपद में रहे हों, नमक, घोड़ा) सक्तु सिन्धु (जिनको सत्तू प्रिय हो) तथा पानसिन्धु (जिनको पेय पदार्थ प्रिय हों) आदि बने हुए शब्दों का उल्लेख किया है, जिनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि सिन्धु जनपद प्राचीन काल में दो भागों में विभक्त था, एक का नाम था सक्तुसिन्धु तथा दूसरे का पानसिन्धु।

सक्तुसिन्धु सम्भवतः उत्तरी सिन्ध के लिए प्रयुक्त होता था। डेरा इस्माईल खान की ओर आजकल भी वहाँ के

निवासियों का प्रिय भोजन सत्तू है, वह सौगात में भी भेजा जाता है।

पानसिन्धु दक्षिणी सिन्ध का नाम हो सकता है; क्यों कि वहाँ के निवासी पानप्रिय होते थे। महाभारत द्रोण पर्ण ७६।१८ में जयद्रथ को क्षीरान्नभोजो कहा गया है। जयद्रथ सौवीर (आधुनिक सिन्ध) के उत्तरी भाग का तथा उसके ऊपर दक्षिणी सिन्ध का राजा था। वहाँ के जन का प्रधान भोजन क्षीर था। पा० सू० ८।४।६ का उदाहरण है 'क्षीरपाणा उशीनराः।' उशीनर जनों में क्षीरपान का पर्याप्त प्रचार था। चेनाव के पश्चिम सिन्ध तथा पूरव उशीनर जनपद (आधुनिक भंगमधियाना) थे। आजकल भी मान्टेगुमरी से लैयादेराजात तक का प्रदेश उत्तम जाति की गायों के लिए प्रसिद्ध है। चरक, चिकित्सास्थान ३०।११७ से भी यहाँ की क्षीरपान-प्रथा की पुष्टि होती है।

सौवीर—आधुनिक सिन्ध प्रान्त अथवा सिन्ध नदी के निचले काँठ का प्राचीन नाम सौवीर था। इस जनपद की राजधानी रोख (रौख) वर्तमान रोड़ी थी। यहाँ बसने-वाले जन सौवीर कहलाते थे। महाभारत के आदि पर्ण से ज्ञात होता है कि सौवीर गन्धर्वों की एक उप-जाति के जन थे। इस देश में अनेक प्रकार की उत्तम वस्तुएँ पायी जाती थीं, जैसे सौवीरा। अमरसिंह ने अपने कोश में इसका एक पर्याय काञ्ची लिखा है। यह एक प्रकार का पेय पदार्थ है, परन्तु भावमिश्र भावप्रकाश, सन्धानवर्ग द्वितीय भाग में लिखते हैं कि 'सौवीरन्तु यवैरामैः पक्वैर्वा निस्तुषैः कृतम्। गोधूमैरपि सौवीरमाचार्याः केचिदूचिरे।' अमर सिंह ने २।६।१००३३ गन्धक से बनाये गये सुरमे को (सौवीर) लिखा है। अञ्जन बनाने के काम में आनेवाले सीसे को भी (सौवीर) कहते हैं। वर्तमान काल में डेरा इस्माईल खाँ में सुरमे का निर्माण प्रचुर मात्रा में होता है। आगे चलकर उन्होंने ही लिखा है कि 'सौवीरं बदरं घोष्टा कोलं कुबल-फेनिले' २।४।३६। अर्थात् उन्नाव को भी सौवीर कहते हैं। महाभारत में सिन्धु तथा सौवीर की चर्चा साथ-साथ की गई है। इससे यह प्रतीत होता है कि ये दोनों जनपद आस-पास ही थे। पाणिनि ने कुछ सौवीर गोत्रों का उल्लेख भी (४।१।१५०) में किया है जिनसे पाण्डाहतायनि, भैमृतायनि आदि शब्द बनाये हैं। आजकल भी सिन्धी जन के नामों

के अन्त में जो आनी देखा जाता है उसका मूल प्रत्यय पाणिनि का आयनि प्रत्यय ही प्रतीत होता है, जैसे बस्वानी, असरानी, कृपलानी आदि। इससे भी सौवीर के निर्णय की पुष्टि होती है। एक गोत्र का नाम भागवित्ति था जिनकी पहिचान वृगतियों से की जाती है। ये लोग आजकल सिन्ध के उत्तरी भाग में पाये जाते हैं।

अपकर—पाणिनि सूत्र ४।३।३२ के अनुसार अपकर एक जनपद का नाम जान पड़ता है। यह सिन्धु के समीप ही रहा होगा; क्योंकि उक्त सूत्र में दोनों का प्रयोग एक साथ किया गया है। वहाँ का निवासी अपकरक तथा वहाँ उत्पन्न होनेवाला पदार्थ अपकरक कहलाता था। सम्भवतः जिला मियाँवाली के भक्खर का प्राचीन नाम अपकर रहा हो, क्योंकि इसकी स्थिति को एक विशेषता है। यहीं सिन्ध नदी को पार कर गोमती (आधुनिक गोमल) के किनारे गोमल दर्रे से होकर गजनी मार्ग जाता था। महमूद गजनवी इसी मार्ग से भारत आता-जाता था।

पारस्कर—पाणिनि सूत्र ६।१।१५७ में एक प्रदेश-विशेषबोधक (पारस्कर) शब्द का प्रयोग मिलता है। शब्द-साम्य से यह सिन्ध जनपद के पूर्वी एक जिला थरपारकर का प्राचीन नाम जान पड़ता है। सिन्धी भाषा में 'थर' शब्द मरुस्थल का वाचक है। कच्छ के इरिण (रन्न) प्रदेश के उत्तर का समस्त भाग पारस्कर में सम्मिलित प्रतीत होता है।

शर्करा—वर्तमान रोड़ी के उस पार सिन्ध नदी के दाहिने किनारे का प्रसिद्ध स्थान सक्कर प्राचीन काल का शर्करा है। पाणिनि ने ४।२।८३ सूत्र से शर्करा, शर्कर, शर्करिक, शार्करिक, शार्कर तथा शार्करीय रूपों को बनाया है।

दात्तामित्री—सौवीर जनपद में काशिकाकारने दात्तामित्री नाम की एक नगरी का उल्लेख किया है। एक यूनानी राजा डिमिट्रिअस था। उसने भारत पर शासन किया था। उसको भारतीय जन दत्तामित्र कहते थे। प्राकृत में इसका नाम दिमित्र अथवा दिमित था। उससे बसाई गई नगरी का नाम दात्तामित्री रहा होगा, परन्तु उसकी स्थिति का निर्णय अभी तक नहीं हो

सका है। नासिक गुफा के लेखों में दातामित्रा नगरी के निवासी दानदाता का उल्लेख दातामितीयक नाम से हुआ है।

ब्राह्मणक—अष्टाध्यायी ५।२।७१ के आधार पर ब्राह्मणक एक देश का नाम प्रतीत होता है। यूनानी लेखकों ने इसका नाम ब्राखमनोई लिखा है। यह सिन्ध प्रदेश के मध्य में मीरपुरखास से लगभग पचीस मील उत्तर वर्तमान ब्राह्मणवादा हो सकता है। राजशेखर की काव्य-मीमांसा में प्रयुक्त ब्राह्मणवह भी इसी का नाम है। अंरव भूगोल लेखक अवृरिहाने इसका नाम वमनहवा (ब्राह्मण-वह का ही विकृत रूप) लिखा है।

शौद्रायण—ब्राह्मणक जनपद से मिला हुआ शूद्रों का भी एक जनपद था। पाणिनि के ऐषुकारिण्य में शौद्रायण का उल्लेख मिलता है। इस गण के सभी नाम निवासिजन के ही नाम पर रखे गये हैं। पतञ्जलि ने अब्राह्मणक तथा अवृषलक देशों का उल्लेख किया है। सम्भवतः अब्राह्मणक संज्ञा शौद्रायण की तथा अवृषलक ब्राह्मणक जनपद की रही हो। ब्राह्मणक जनों के समान शौद्रायण जनों ने भी सिकन्दर से युद्ध किया था। यूनानी लेखकों ने शौद्रायण जनों को सोडराई लिखा है। डायडोरस ने सोडराइयों को सिन्ध नदी के पूर्वी तट के प्रदेश में तथा मस्सनइयों को पश्चिम तट के प्रदेश में रहनेवाले लिखा है। टालेमी ने मस्सनई का शुद्ध रूप मसूरनई दिया है जो कि पाणिनि का मसुर अथवा मसूरकर्ण है। मिठनकोट से नीचे सिन्ध नदी के पश्चिम मुजरक का जिला प्राचीन मसूरकर्ण प्रदेश था।

मुचकर्ण—यूनानी लेखकों के अनुसार सिकन्दर ने शौद्रायण तथा मसूरकर्णों से सन्धि करने के पश्चात् सिंध देश के मुसकर्ण नामक प्रदेश में प्रवेश किया था; जो कि उस समय भारत का सबसे समृद्धिशाली प्रदेश कहा जाता था। पाणिनि का मुचकर्ण यही हो सकता है। ये लोग उपरले सौवीर जनपद में शौद्रायण के दक्षिण रहते थे। कनिंथम के अनुसार इनकी राजधानी अलोर (आधुनिक रोहक) नगर थी।

वर्णु—अष्टाध्यायी ४।२।१०३ में वर्णु शब्द का उल्लेख है। उपरिलिखित सूत्र की व्याख्या में काशिकाकार ने 'वर्णु'

शब्द को देशवाचक तथा नदवाचक लिखा है—“वर्णुर्नाम नदस्तत्समीपो देशो वर्णुः”। इस व्याख्या से मालूम पड़ता है कि कुर्रम राज्य के अन्तर्गत कुर्रम कहलानेवाली नदी ही प्राचीन काल में वन्नू की घाटी में प्रवेश करने पर वर्णु कहलाती थी। वर्णु नदी का समीपस्थ प्रदेश पा० सू० ४।२।७७ के अनुसार वार्णव कहलाता था। आधुनिक वन्नू का प्राचीन नाम वर्णु था। वन्नू घाटी में कुर्रम नदी (वैदिक क्रमु) तथा गम्ब्रिल अथवा तोची नदियाँ बहती हैं। ये दोनों सम्मिलित होकर सिन्ध में मिली हैं। यद्यपि आधुनिक वन्नू (एडवर्डसवाद) सन् १८४८ ई० में बसाया गया तथापि वन्नू घाटी—जिसके कारण नगर का नाम वन्नू पड़ा—का नाम प्राचीन ग्रंथों में उपलब्ध होता ही है।

उदमाण्ड—अटक के उत्तर कुछ मील की दूरी पर ओहिन्द नाम का नगर है। इसी का प्राचीन नाम उदमाण्ड था। यह काबुल नदी (कुमा) के तट पर स्थित है। प्राचीन काल में यह व्यापार का बड़ा भारी केन्द्र था। प्राचीन काल में पूर्व भारत से गान्धार जनपद तक जाने-वाला मार्ग उत्तर पथ कहलाता था, सम्भवतः उसी के स्थान पर आजकल शाही सड़क (Grand trunk Road) बनायी गयी है। पा० सू० ५।१।७७ में उत्तर पथ का उल्लेख है। यह उत्तरपथ यूनानी लेखकों को भी ज्ञात था। उदमाण्ड इसी मार्ग पर स्थित था। सिन्ध नदी को पार करके बाहर जानेवाली व्यापारिक वस्तुएँ उदमाण्ड में एकत्र होती थीं और वहाँ से व्यापार के लिए इधर-उधर जाती थीं। पाणिनि का जन्म-स्थान सलातुर (लहुर) उदमाण्ड से केवल चार मील की दूरी पर कुमा-सिन्धु (काबुल-सिन्ध) के सङ्गम के कोण में स्थित है। उदमाण्ड से साठ मील पूर्व गन्धार की पूर्वी राजधानी तक्षशिला थी तथा उसकी पश्चिमी राजधानी पुष्कलावती (चारसड्डा) साठ ही मील पश्चिम की ओर थी।

बाहीक—बाहीक एक विशिष्ट जाति के जन थे। इनका निवासस्थान भी बाहीक कहलाता था। बाहीक जन सिन्ध तथा सतलज के मध्यवर्ती प्रदेशमें रहते थे। कर्ण पर्व (महामारत) में उल्लेख है कि बाहीक जन पवित्र भारत के बाहर पञ्जाब की पाँच नदियों तथा

सिन्ध से सिक्त प्रदेश में निवास करते थे। इससे यह भी विदित होता है कि पंजाब की पाँच नदियों शुतुद्र (सतलज), विपाशा (व्यास), इरावती (रावी), चन्द्रभागा (चनाब) तथा वितस्ता (झेलम) में सिन्ध की गणना नहीं की जाती थी। "बहिष्कृता हिमवता गङ्गा च बहिष्कृता। सरस्वत्या यमुनया कुक्षेत्रेण चापि ये ॥ पञ्चानां सिन्धुषष्ठानां नदीनां येऽन्तरे स्थिताः। तान् धर्मबाह्यानशुचीन् वाहीकानपि वर्जयेत् ॥ पञ्चनद्यो वहन्त्येता यत्र पीलुवनान्युत। शुतद्रुश्च विपाशा च तृतीयैरावती तथा। चन्द्रभागा वितस्ता च सिन्धुषष्ठो बहिर्गिरेः। आरट्टा नाम ते देशा नष्टर्मा न तान् व्रजेत्। पञ्चनद्यो वहन्त्येता यत्र निःसृत्य पर्वतात्। आरट्टा नाम वाहीका न तेष्वार्यो द्व्यहं वसेत् ॥" उपर्युक्त नदियों के पाँचों सम्मिलित स्रोत सिन्ध में मिलने से पहिले पञ्चनद कहलाता है जैसा कि पा० सू० ५।४। ७५ से भी स्पष्ट होता है।

वाहीक जनपद की सीमा का ठीक-ठीक निर्णय करना असम्भव है। व्याकरण साहित्य में अनेक वाहीक ग्रामों के नाम आये हैं। उनमें से कुछ का निर्णय हो चुका है परन्तु अभी अनेक ग्रामों का निश्चय करना शेष है। इतना तो निश्चय ही है कि वाहीक जनपद में मद्र, केकय तथा शिवि अथवा उशीनर अवश्य सम्मिलित थे। उशीनर प्राचीन काल के भारत की एक विशिष्ट जाति के जन थे। शिवि नाम के एक प्रसिद्ध राजा के नाम पर उस जाति के जन शिवि भी कहलाने लगे। जनपद के कारण उशीनर तो कहलाते ही थे। पा० सू० ४।२। ११८ के आधार पर ज्ञात होता है, कि उशीनर वाहीक जनपद में सम्मिलित था। पाणिनि ने उशीनरों के लिए एक विशेष सूत्र २।४।२० लिखा है जिससे ज्ञात होता है कि ये लोग पर्याप्त प्रसिद्ध तथा प्रभावशाली जन थे। ऊपर उद्धृत सूत्रों पर वामन की व्याख्या से यह ज्ञात होता है कि वाहीक जनपद में निम्नलिखित प्रदेश भी सम्मिलित थे—सुशमि, अह्वर, अह्व-जाल तथा सुदर्शन। परन्तु इनमें से अभी किसी की पहिचान न हो सकी। केवल अह्वर को कुछ विद्वान् पुराण-मीर मानते हैं जैसा कि जनरल कनिंघम ने लिखा है कि उनको वहाँ पर कुछ भग्नावशेष प्राप्त हुए थे। यूनानी लेखकों के आधार पर यह तो निश्चय है कि शिवि जन

झेलम-चनाब दोआब में रहते थे। महाभारत में उल्लेख है कि सौवीर शिवियों से भिन्न जन थे। वामन ने पा० सू० ८।४।१ की व्याख्या में लिखा है कि उशीनर दूध पीनेवाले तथा वाहीक सौवीर पीनेवाले होते हैं। पा० सू० २।४।२० से ज्ञात होता है कि सौवीर एक पेय पदार्थ होता है। उशीनर देश मोटे सूती कपड़ों के लिए प्रसिद्ध था।

पाणिनि ने उशीनर जनपद के ऐसे स्थानों का उल्लेख किया है जिनके अन्त में कन्था शब्द जुड़ा रहता था, जैसे—सौशमिकन्थ, चिह्णकन्थ, आह्वरकन्थ आदि। कन्था शब्द का शक भाषा में नगर अर्थ होता है। महाभारत में उशीनर जनपद के एक राजा का नाम शिवि लिखा है—वनपर्व १९४।२। शिवियों की राजधानी शिविपुर थी जो कि आधुनिक शेरकोट (भंग जिले की एक तहसील) है। शेरकोट में प्रचुर मात्रा में अवशेष पाये गये हैं। कावेरी नदी के तट पर रहनेवाले शिवि इनसे भिन्न थे।

पाणिनि ने वाहीक जनपद के ग्राम तथा नगरों में कोई भेद नहीं किया है। दोनों को पर्याय के रूप लिखा में है। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि वाहीक जनपद के ग्राम भी नगर के समान ही समृद्धिशाली थे। यूनानी लेखकों ने लिखा है कि वाहीक जनपद में लगभग पाँच सौ समृद्धिशाली नगर थे।

संकल—पाणिनि सूत्र ४।२।७५ में नगरवाचक संकल शब्द का उल्लेख मिलता है। सम्भवतः भंग जिले के संगल-वाला टीवा का प्राचीन नाम संकल रहा हो। यह कठ क्षत्रियों का निवासस्थान था।

कत्रि—पा० सू० ४।२।१५ में 'कत्रि' शब्द प्रयुक्त हुआ है। अनुमान किया जाता है कि अल्मोड़ा जिले का 'कस्यूर' प्राचीन काल का कत्रि रहा होगा।

फलकपुर—पा० सू० ४।२।१०१ में इसकी चर्चा है। जालन्धर जिले का वर्तमान फिल्लौर प्राचीन काल का फलक-पुर हो सकता है।

मादेंयपुर—उपरिलिखित पा० सू० में ही इसकी भी चर्चा है। विजनौर जिले का आधुनिक मडावर प्राचीन काल का मादेंयपुर प्रतीत होता है; क्योंकि यह स्थान अति प्राचीन जान पड़ता है।

चक्रवाल—पा०सू०४।२।८० में इसका नाम आया है ।
सम्भवतः यह जिला झेलम का वर्तमान चक्रवाल है ।

भंडु-खंडु—पा०सू०४।२।७७ में इनका उल्लेख है ।
सिल्वालेवी इनको अटक के समीप आधुनिक उंड तथा खंड मानते हैं—(जर्नल एशियाटिक सोसायटी १९१५ पृ० ७३)

पशु—बराहमिहिर ने बृहत्संहिता १४।१८ में इस देश को भारत के नैऋत्य कोण में स्थित लिखा है । उसी में ८०।२ यहाँ के मोतियों की खान का भी वर्णन है । यहाँ के मोती श्वेतवर्ण, गुरु तथा महागुणकारी होते हैं । बराहमिहिर के वर्णन के आधार पर इस देश को सागर के तट पर स्थित होना चाहिये । ५० गिरीशचन्द्र का अनुमान है कि यह वसरा का ही प्राचीन नाम है, क्योंकि यह भारत के नैऋत्य कोण में सागर के तट पर स्थित है तथा यहाँ उत्तम प्रकार के मोती भी पाये जाते हैं ।

पाणिनि ने ५।३।११७ में इस शब्द का उल्लेख किया है । इस देश में रहनेवाली जाति पशव तथा एक व्यक्ति पार्शव कहा जाता था । डा० वासुदेवशरण अग्रवाल लुडविग तथा बेवर के आधार पर पशु को फारस मानते हैं । ऋग्वेद ८।६।४६ में भी पशु का उल्लेख मिलता है । कीथ भी फारस को ही पशु मानते हैं । शब्दसाम्य से भी फारस ही प्राचीन पशु जान पड़ता है ।

मद्र—मद्र जनपद का निर्णय पूर्णतया हो चुका है । मद्र जन रावी-झेलम दोआब में रहते थे । उक्त दोआब को मद्र जनपद कहते थे । यह जनपद बाहीक का उत्तरी भाग था । इस जनपद की राजधानी शाकल (स्यालकोट) थी जो कि आपगा (अय्यक) नदी के तट पर स्थित थी । यह छोटी नदी जम्मू की पहाड़ियों से निकलकर स्यालकोट होती हुई चेनाब से मिलती है । पतञ्जलि ने शाकल की गणना बाहीक ग्रामों में की है । महाभारत काल में इस देश का राजा शल्य था । मत्स्यपुराण के अनुसार सत्यवान् के पिता अश्वपति ने भी इस जनपद पर शासन किया था । कुछ विद्वानों की धारणा है कि मद्रदेश भी बाहीक नाम से पुकारा जाता था । सम्भव है कि मद्र जनपद बाहीक का भाग होने के कारण उस नाम से भी सम्बोधित होता रहा हो । हेमचन्द्र के अभिधानचिन्तामणि के अनुसार इस जनपद का एक नाम टक्क भी था—'बाहीकाष्टक्कनामानो बाह्लीका

बाह्लीकाह्वयाः ।" ४।२५ । जेनरल कनिंघम ने लिखा है कि टक्क नाम के जन अब भी रावी के समीपवर्ती पर्वतों पर मिलते हैं । उनका मुख्य व्यवसाय कृषि है ।

पा०सू० ४।२।१०८ से विदित होता है कि पाणिनि काल में यह जनपद दो भागों में विभक्त था—पूर्वमद्र तथा अपरमद्र । रावी तथा झेलम नदियों के मध्य में चेनाब नदी बहती है । चेनाब तथा रावी के मध्य का भाग (स्यालकोट तथा गुजरांवाला) पूर्वमद्र एवं चेनाब तथा झेलम के मध्य का भाग अपरमद्र कहलाता था । कथासरित्सागर में लिखा है—'शाकलं नाम मद्रेषु बभूव नगरं पुरा । चन्द्रप्रभाख्यस्तत्रासीद्राजाङ्गारप्रभात्मजः ।।' ४।१७। उसी के आगे लिखा है 'संगमं चन्द्रभागाया इरावत्याश्च यत्र ते । स्थिताः सूर्यप्रभस्यार्थे राजानो मित्रबान्धवाः ।।' ४।२। अर्थात् शाकल (स्यालकोट) चन्द्रभागा (चेनाब) तथा इरावती (रावी) के संगम के समीप स्थित था ।

शुआन चुआंग के समय (सातवीं शताब्दी) शाकल के अन्वेषण पाये जाते थे । पा०सू०४।३।१२८ पर वामन की व्याख्या से विदित होता है कि शाकल नाम का एक महान् गणितज्ञ वहाँ रहता था । पा०सू०४।२।११७ की व्याख्या में वामन ने शाकल के बाद मन्थु नाम के एक अन्य नगर का उल्लेख किया है जो कि सम्भवतः आधुनिक मुण्ड हो सकता है ।

मद्र जनपद में जर्तिक नाम के जन भी रहते थे । सम्भवतः ये जन जाटों के पूर्वपुरुष हो सकते हैं । वर्तमान काल में पंजाब के अधिकतर भागों में जाट पाये जाते हैं । जर्तिक जन मद्र शासकों की प्रजा थे । कुछ विद्वानों ने जर्तिक तथा आरट्ट को मद्र का पर्याय माना है, परन्तु इसका समर्थक कोई पुष्ट प्रमाण अभी तक उपलब्ध नहीं हुआ । आरट्ट देश घोड़ों के लिए प्रसिद्ध था—'आरट्टजश्चटुलनिष्ठुरपातमुच्चैश्चित्रञ्चकार पदमर्द्धपुलायितेन ।' 'माघ ५।१०। पञ्जाब के पूर्वोत्तर प्रदेश में आज भी उत्तम जाति के घोड़े पाये जाते हैं । रावलपिंडी में गुजरात के जन आज भी अपने जिले को हैरट अथवा ऐरट कहते हैं । यह आरट्ट का विकृत रूप मालूम पड़ता है । राजतरङ्गिणी ५।१५० में उल्लेख है कि टक्क देश गुर्जरराज (गुजरात का राजा) के अधीन था । पुराणों में टक्क का उल्लेख नहीं मिलता ।

वैदिककालीन भारत में मद्रजनों का उच्च स्थान था। प्राचीन ग्रंथों में उल्लेख मिलता है कि उत्तर भारत के ऋषि वेदाध्ययन के लिए मद्र जनपद जाया करते थे। वृहदारण्यक ३।७।१ में उद्दालक आरुणि ने याज्ञवल्क्य से कहा है कि मैं यज्ञाध्ययन के लिए मद्र जनपद में पतञ्जल कापेय्य के घर रहता था। ऐतरेय ब्राह्मण ८।१।४।३ में मद्र के एक भागविशेष का नाम उत्तरमद्र भी मिलता है। वह हिमालय के आगे उत्तर कुरु के समीप था।

गन्धार—पा० ने अष्टाध्यायी ४।१.६६ में इस जनपद का नाम गान्धारि लिखा है। यहाँ के राजा तथा राजकुमार गान्धार कहे जाते थे, परन्तु उन्हीं के गणपाठ में इसका नाम गन्धार मिलता है। यूनानी लेखकों ने इस जनपद को गन्दराइ तथा गन्धराइति लिखा है। वह गान्धारि शब्द के अधिक निकट जान पड़ता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल का अनुमान है प्राचीन काल में किसी व्यक्तिविशेष का नाम गान्धारि था उसी के आधार पर उसके जनपद का नाम भी गान्धारि हो गया। यह जनपद काबुल नदी की घाटी से तक्षशिला तक विस्तृत था। इस जनपद की दो राजधानियाँ थी। पश्चिमी गन्धार की राजधानी पुष्कलावती थी। वह सुवास्तु (स्वात) तथा कुभा (काबुल) नदियों के सङ्गम पर स्थित थी उसका आधुनिक नाम चारसडा है। मार्कण्डेय पुराण ५७।३६ में "पुष्कलाः" नाम के एक जनपदविशेष का उल्लेख भी मिलता है। बहुत सम्भव है गन्धार के एक अङ्ग को पुष्कल भी कहते हों, अतः एव उस भाग की राजधानी का नाम पुष्कलावती पड़ गया। इस जनपद की पूर्वी राजधानी तक्षशिला थी।

उड्डियान—सुवास्तु तथा गौरी (पञ्जकोरा) नदियों के मध्य में एक छोटे से जनपद का नाम उड्डियान था। वह भी गन्धार का ही एक भाग था। वहाँ के बने हुए कम्बल (पाण्डुकम्बल) अधिक प्रसिद्ध थे। इस कम्बल से प्राचीन काल में रथ सजाये जाते थे। यह लाल रंग का होता था और विशेषतया इससे सैनिक रथ मड़े जाते थे। वेस्सन्तरजातक ६।५०० में उल्लेख है कि ये पाण्डु कम्बल गान्धार जनपद (उड्डियान) से आते थे। जातकों में तो यहाँ तक लिखा है कि पाण्डु कम्बल राजसिंहासन

पर तथा राजगजेन्द्र पर विछाये जाते थे। वर्तमान काल में भी स्वात घाटी में उत्तम श्रेणी के कम्बल बनते हैं।

कम्बोज—यह एक प्राचीनतम जनपद है। हरिवंश पुराण १३, ७६३, ६४; ७७५।८३ में लिखा है कि राजा सगर ने यवनों के वेष-भूषा के अनुसार उनके सिरों को मुड़वा कर उनका अपमान किया था—'अर्द्धशकानां शिरसो मुण्डयित्वा व्यसर्जयत्'। यवनानां शिरः सर्वं काम्बोजानां तथैव च ॥ पारदा मुक्तकेशाश्च पल्लवाः शमश्रु-धारणैः ॥ निःस्वाध्यायावषट्काराः कृतास्तेन महत्तमना ॥ महाभारत तथा जातककथाओं तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कम्बोज के घोड़ों की बड़ी प्रशंसा मिलती है अतः जान पड़ता है कि वहाँ उत्तम जाति के घोड़े प्रचुर मात्रा में पाये जाते थे।

आयुर्वेद के ग्रंथों में माषपर्णी (बन उड़द) का एक पर्याय काम्बोजी मिलता है—'हयपुच्छी तु काम्बोजी माषपर्णी महासहा' अमर० २।४।१६८। कालिदास ने—'काम्बोजाः समरे सोढुं तस्य वीर्यमनीश्वराः। गजालानपरिक्लिष्टैरक्षोटैः सार्द्धमानताः ॥' रघुवंश ४।६६। ज्ञात होता है कि कम्बोज में अखरोट प्रचुरता से पाये जाते थे। डा० राक्सवर्ग का कहना है कि भारत के ठीक उत्तर तथा पूर्वोत्तर प्रदेश में अखरोट साधारणतया पाया जाता है। महाभारत सभापर्व २७।२२, २३ में लिखा है कि अर्जुन ने बल्ल-विजय के पश्चात् काम्बोजों के साथ दरद जनों को पराजित किया था। दरद जन वर्तमान हुंजा तथा गिलगित प्रदेश के निवासी थे। हिन्दूकुश पहाड़ ने बल्ल से इस प्रदेश को पृथक् कर दिया है, अतः यह कहा जा सकता है कि काम्बोज हिन्दूकुश के समीप-वर्ती प्रदेश के निवासी थे। एलिफन्स्टन का कहना है कि इस प्रदेश के निवासी काफिर लोग अब भी अपने को कमोह कहते हैं।

लैसन ने कम्बोज को काश्कर के दक्षिण तथा आधुनिक काफिरिस्तान के पूर्व माना है। रायस डेविड के अनुसार यह जनपद भारत के ठीक पश्चिमोत्तर प्रदेश में स्थित था। कम्बोज की राजधानी द्वारका (सौराष्ट्र की द्वारका नहीं) थी। यह मध्य एशिया के पठारों से उतरकर बंधु नदी (आक्सस) को पार कर भारत में प्रवेश करने का द्वार था,

अतः उसका नाम द्वारका पड़ा। आजकल उसको 'दरवाज' कहते हैं।

पाणिनि के आधार पर कहा जा सकता है कि यह एक राज जनपद था। पं० जयचन्द्र विद्यालंकार पुष्ट प्रमाणों के आधार पर हिन्दुकुश के उत्तर-पूर्व बदख्शा से पामीर तक विस्तृत प्रदेश को कम्बोज मानते हैं। उनका कहना है कि आजकल भी वंशु के ऊपर के प्रदेश में तथा पामीर की गल्चा भाषा में जाने के अर्थ में शब्द धातु का प्रयोग प्रचुरता से पाया जाता है, जो कि 'शब्दतिगितिकर्मा कम्बोजेष्वेव भाष्यते' से ठीक सङ्गत होता है। महाभारत में कम्बोज तथा वाल्मीकि का उल्लेख एक साथ मिलता है, अतः मालूम पड़ता है कि ये दोनों जनपद पड़ोसी थे। डा० मोतीचन्द ने भी इसी स्थापना का समर्थन किया है। उनका कहना है कि कम्बोज का ईरान से भी सम्बन्ध अवश्य था। कश्मीर के राजा मुक्तापीड ललितादित्य अवन्ति को जीतकर उत्तर की ओर गये—राजतर० ४।१६३। वहाँ कम्बोजों को पराजित कर उनके घोड़ों को छीना। तुखार के जन अपने घोड़ों को छोड़कर भाग गये। इनके बाद भौट्टों तथा दरदों का उल्लेख है। बल्किस्तान, बोलन तथा दरदिस्तान की स्थिति निश्चित हो जाने के कारण कम्बोज अब काफिरिस्तान, बल्ख, बदख्शा तथा पामीर में ही हो सकता है। बौद्ध साहित्य से भी इसी की पुष्टि होती है। पेतवत्यु की टीका परमत्थदीपिनी में कम्बोज के साथ द्वारका का नाम भी आया है। जैसा कि पहिले कहा जा चुका है कि यह काठियावाड़ की द्वारका से भिन्न द्वारका है। मध्यकालीन अरब के भूगोल लेखक इद्रिसी के वर्णन से भी कम्बोज की स्थिति पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। वह बदख्शा के सौन्दर्य, उर्वरा भूमि, घोड़े, खच्चर, रंगविरंगे बहुमूल्य पत्थर, कस्तूरी आदि का वर्णन कर चुकने पर कहता है कि बदख्शा कनोज की सीमा पर है। इसमें सन्देह नहीं कि इद्रिसी का अभिप्राय आधुनिक कन्नौज से नहीं था प्रत्युत कम्बोज से था। 'कनोज' कम्बोज का ही विकृत रूप है। यह भी स्पष्ट ही है कि उसके समय कम्बोज की सीमा संकुचित हो गई थी; क्योंकि उसने बदख्शा का उल्लेख पृथक् राज्य के रूप में किया है।

प्राचीन काल में कम्बोज तथा परमकम्बोज जनपद उस समस्त भूभाग में विस्तृत था जिसमें बरबी, शिघ्नी, सरी-

कोली, जेबकी, संलग्नी अथवा इश्कारमी, मुञ्जानी, युद्धा और याघ्नोबी आदि गल्चा भाषा की शाखायें मुख्यतः पामीर, वंशु के ऊपरी भाग तथा पश्चिम में बदख्शा तक बोली जाती हैं।

रघुवंश ४।७० से ज्ञात होता है कि कम्बोज की उपज में रत्न मुख्य थे। मार्कोपोलो नामक यात्री ने बदख्शा के नीलम तथा लाल रत्नों की प्रशंसा की है। कप्तान वुड ने वंशु के उद्गम की यात्रा में वंशु नदी के दाहिने तट पर घन जिले में इश्कारम से बीस मील की दूरी पर लाल रत्न की खानों को सुना था तथा कोक्चा नाम की घाटी में नीलम की खानों को स्वयं देखा भी था। बदख्शा की चाँदी की खानें भी प्रसिद्ध थीं।

आजकल पञ्जाब में कम्बोह नामक कृषक जाति के कुछ जन पाये जाते हैं। समझ में नहीं आता कि कम्बोजों से उनका कैसा सम्बन्ध था। उनमें अनेक अनुश्रुतियाँ प्रचलित हैं। कुछ लोग अपने को कश्मीर से आया हुआ मानते हैं। कुछ लोग गढ़ गजनी को अपना मूल निवासस्थान मानते हैं। उनका कहना है कि महाभारत के युद्ध में उनके पूर्वज कौरवों की सहायता के लिये आये थे। उनका नेता सोदक्ष था, वह अपने अधिकांश सहचरों के साथ युद्ध में मारा गया। शेष जन नाभा में बस गये। कुछ लोगों की धारणा है कि कम्बोह शब्द ईरानी 'कई' तथा 'अम्बोह' से बना हुआ समस्तपद है। अतः ये जन ईरान के 'कई' वंश के हैं। परन्तु यह विचारणीय है कि अधिकांश अनुश्रुतियों से यह मालूम पड़ता है कि इनका मूल निवास सिन्ध के पार था तथा इनका सम्बन्ध ईरानियों से अवश्य है, अतः ये जन पामीर के प्राचीन कम्बोज ही हैं। महाभारत उद्योगपर्व में लिखा भी है कि 'सुदक्षिणश्च कम्बोजो यवनैश्च शकैस्तथा १८।२१। सुदक्षिण का ही विकृत रूप सोदक्ष जान पड़ता है। उसके मारे जाने पर उसके अनुयायी पञ्जाब में ही रह गये होंगे।

कम्बोज घोड़ों तथा खच्चरों के लिये ही प्रसिद्ध न था; प्रत्युत बकरों, चूहों तथा कुत्तों के ऊन से बने दुषालों के लिए भी प्रसिद्ध था। महाभारत के उपायन पर्व में वर्णन है—“और्णान् वैलान् वार्षदंशान् जातरूपपरिष्कृतान्। प्रावाराजिनमुख्यांश्च कम्बोजः प्रददौ बहून्। अश्वान्तिस्तिर-कल्माषास्त्रिशतं शुकनासिकान्। उष्ट्रान्तिस्त्रिशतं च

पुष्टान् पीलुशमीङ्गुदैः ।” सभापर्व ५१-३-४ । ‘बैल’ शब्द केवल विशिष्ट जाति के चूहों का ही वाचक नहीं, प्रत्युत विलों में रहनेवाले अन्य जानवरों का भी वाचक है । वृषदंश साधारणतया विल्ली का पर्याय माना जाता है; परन्तु यह कुत्ते का भी पर्याय हो सकता है, क्योंकि इसका खण्डार्थ विलों को काटनेवाला भी है ।

द्वयक्ष—डा० मोतीचन्द के अनुसार वदस्था का प्राचीन नाम द्वयक्ष था । इसी का फारसी रूप वदस्था है क्योंकि दोनों का अर्थ ‘दो आँखवाला’ होता है । महाभारत में द्वयक्ष, त्रयक्ष तथा ललाटाक्ष इन तीन जनपदों के नाम साथ-साथ आये हैं ।

त्रयक्ष—मार्कण्डेयपुराण में त्रयक्ष के लिये त्रिनेत्र शब्द का प्रयोग किया गया है । सम्भवतः यह ऊपरी चित्राल का प्राचीन नाम हो; क्योंकि विड्डल्फ इसको ‘तुरिखो’ कहते हैं जो कि त्रयक्ष का ही विकृत रूप जान पड़ता है ।

ललाटाक्ष—इसके विषय में कुछ भी ज्ञात नहीं है । डा० मोतीचन्द का अनुमान है कि यह लद्दाख का प्राचीन नाम हो सकता है ।

वरणावती—पा० सू० ४।२।८२ के उदाहरणों में वरणा नाम की एक नगरी का उल्लेख मिलता है । काशिकाकारने पा० सू० ४।२।८५ की व्याख्या में वरणावती नाम की नदी का उल्लेख किया है । इसी का नाम वीरणावती भी था । अथर्ववेद ४।१।७ की वरणावती यही है । यूनानी लेखकों ने ‘ओरनोस’ नाम के एक दुर्ग का उल्लेख किया है । आर्लस्टाइन ने उसको वरणा ही निश्चित किया है । यह स्थान पर्वतों से घिरा हुआ है । यह आश्वकायनों की राजधानी थी । यहीं सिकन्दर तथा आश्वकायनों में घमासान युद्ध हुआ था । इसी स्थान के समीप वरणावती हो सकती है ।

सुवास्तु—इस नदी का नाम वैदिक काल से मिलता आ रहा है । आजकल इसको स्वात कहते हैं । इसमें पश्चिम की ओर गौरी (पञ्जकोरा) नाम की एक नदी मिलती है । इन्हीं नदियों के बीच उड्डियान नाम का जनपद था । यह जनपद गन्धार का ही भाग था । सुवास्तु

तथा गौरी नदियों के मध्य में आश्वकायन जाति के वीर जन रहते थे । इनकी राजधानी मशकावती (मस्सग) थी ।

मशकावती—मशकावती नदी का भी नाम है । प्राचीन काल में स्वात के निचले भाग को स्थानीय जन मशकावती भी कहते थे । उसके तट पर स्थित होने के कारण नगरी का नाम भी मशकावती पड़ गया । पतञ्जलि ने पा० सू० ४।२।७१ के भाष्य में मशकावती का उल्लेख नदी के रूप में किया है ।

पुष्कल—सुवास्तु तथा कुमा के सङ्गम का समीपवर्ती देश पुष्कल नाम से भी प्रसिद्ध था । इसकी राजधानी पुष्कलावती (चारसदा) थी । पुष्कलावती नाम की एक नदी भी है । पा० सू० ४।२।८५; ६।१।२१६ तथा ६।३।११६ में काशिकाकारने पुष्कलावती का उल्लेख नदी के रूप में किया है । मशकावती की भाँति स्वात नदी के ही निचले भाग को स्थानीय जन प्राचीन काल में पुष्कलावती कहते थे । यूनानी लेखकों ने लिखा है कि इस प्रदेश में अस्तेनेनोई नाम के एक लड़ाकू जाति के जन रहते थे । सम्भवतः ये जन पाणिनि के हास्तिनायन ही थे ।

अम्बष्ठ—टालेमी के अनुसार यह देश अम्बुतल जाति के लोगों का निवासस्थान था । ये लोग टाकी के पूर्ववर्ती प्रदेश में रहते थे, जो कि वर्तमान लाहौर का जिला हो सकता है । मत्स्यपुराण में अम्बष्ठा, वृषला तथा सौवीर, मद्र का साथ-साथ उल्लेख मिलता है—‘सुव्रतस्य तथाम्बष्ठा कुशस्य वृषला पुरी’ ४।८।२० । अमरकोश में अम्बष्ठ को यूथिका (जुही), पाठा, चुक्र (चुक्र, अम्बवेत) का पर्याय लिखा है । लाहौर जिले में उक्त वस्तुएँ प्रचुरता से उपलब्ध होती हैं । पा० सू० ४।१।१७०, १७१ तथा ८।३।६२ की व्याख्या में वामन ने अनेक बार अम्बष्ठ का उल्लेख किया है । महाभारत के अनुसार अम्बष्ठ जन कौरवों के पक्ष से महाभारत युद्ध में लड़े थे । इनकी गणना औदीच्यों में की गयी है । यूनानी लेखकों ने ‘संवस्तइ’ या ‘अम्बस्तनोई’ इन्हीं के लिये लिखा है । ये जन चेनाब नदी के निचले भाग में रहते थे । टाकी तथा लाहौर के मध्य में अम्बा कापा नामक गाँव आज भी वर्तमान है । बहुत सम्भव है यह प्राचीन काल में अम्बष्ठों का मुख्य नगर रहा हो ।

वार्हस्पत्य अर्थशास्त्र पृ० २१ (F.w.Thomas)

में सिन्ध के संगम के पास अम्बष्ठ देश की चर्चा है। अम्बष्ठसुत्त में अम्बष्ठ ब्राह्मण कहे गये हैं। इसके विपरीत स्मृतियों में इनको ब्राह्मण तथा वैश्य से उत्पन्न संकर जाति का कहा गया है। जातकों के अनुसार ये कृषि करते थे। मालूम पड़ता है कि इस जाति के जन प्रथमतः लड़ाकू स्वभाव के थे, उनमें से कुछ लोगों ने पौरोहित्य, कृषि तथा चिकित्सा आदि को अपना व्यवसाय बना लिया। मनुस्मृति १०।४७ में इनकी चिकित्सा के व्यवसाय की चर्चा मिलती है—‘अम्बष्ठानां चिकित्सितम्’।

पौर—मत्स्यपुराण में सौवीर, केकय तथा मद्रों के साथ पौर जनो की चर्चा की गयी है; परन्तु उनके स्थान का उल्लेख नहीं किया गया है। सिकन्दर के इतिहासलेखकों ने दो पौरों की चर्चा की है। उनमें से एक पौर झेलम के समीपवर्ती प्रदेश में रहते थे जो सम्भवतः संस्कृत साहित्य के पौरव ही थे। दूसरे चेनाव के बाहर रहते थे जो पौरों के शासक थे। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि पौर जन आरट्ट तथा अम्बष्ठ के मध्यवर्ती प्रदेश में रहते थे।

सुदास—वाल्मीकि रामायण में इस जनपद का नाम आया है। यह जनपद बाहीक सेपृथक् था, क्योंकि रामायण ही में लिखा है कि जो दूत भरत को उनके मामा के यहाँ से लेकर लौटते वे सुदास जनपद के उत्तर से बाहीक जनपद के मध्य से आये। भरत को केकय से लौटने में उतने ही दिन लगे थे जितने दिनों में दूत वहाँ पहुँचे थे। भरत की यात्रा में उन स्थानों की चर्चा नहीं की गयी है जिनकी चर्चा दूतों के जाने में की गयी थी। सम्भवतः नवीनता के ध्यान से ऐसा किया गया।

भरत ने सर्वप्रथम पञ्जाब की चार बड़ी नदियों—हादिनी—शोर मचानेवाली झेलम, दूरपारा—चौड़े पाटवाली चेनाव, तिर्यक्स्रोता—टेढ़ी-मेढ़ी बहनेवाली रावी तथा शुतुद्रु—सतलज को पार किया। तत्पश्चात् यमुना को पार कर अहिस्थल (रामनगर) के समीप हिरण्यवती नदी को पार कर तोरण के दक्षिण वारणस्थल पहुँचे। तोरण तथा वारणस्थल का निर्णय नहीं हो सका है। हिरण्यवती सम्भवतः रामगंगा हो सकती है जिसकी सहायक

नदी कोसी ‘कुमारसम्भव’ में वर्णित महाकोसी है (कु०स० ६।३३)।

वारणस्थल से चलकर भरत वरुण तथा उज्जिहान गये। अभी तक इनका भी परिचय नहीं प्राप्त हो सका है। उज्जिहान के आगे उन्होंने उत्तर से आनेवाली नदी को पार किया। वह नदी गुरा हो सकती है। इसके बाद उन्होंने कुछ और अपरिचित स्थानों से होते हुए अयोध्या के पश्चिम गोमती को पार किया। अयोध्या पहुँचने के पहिले वे कलिङ्ग नगर भी गये थे। प्लिनी ने गङ्गातट पर स्थित एक कलिङ्ग नगर की चर्चा की है। सम्भव है यह नगर कलिङ्ग शासित होने के कारण उक्त नाम से सम्बोधित होता रहा हो, परन्तु वह कहाँ था—अभी तक ज्ञात नहीं हो सका।

सुदास जनपद कहाँ था? इस विषय में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि यह मद्र जनपद के उत्तर रहा होगा। इसको सिन्ध नदी के पूर्व ही कहीं होना चाहिये। मालूम पड़ता है कि इसी का दूसरा नाम शौद्रायण था जिसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका है। यूनानी लेखकों ने इसी जनपद को सोडरोई लिखा है। इस जनपद के निवासियों ने भी सिकन्दर से युद्ध किया था।

केकय—यूनानी लेखकों ने कहीं भी इसकी चर्चा नहीं की है। उन्होंने एक जाति कैथेयी का उल्लेख अवश्य किया है जो कि चेनाव के पूर्व के निवासी थे। उनका रहन-सहन तथा वेश-भूषा सौवीरों की-सी थी। स्ट्रैबो ने लिखा है कि इस जाति के जन बड़े सुंदर होते थे। वाल्मीकि रामायण से भी ज्ञात होता है कि राजा दशरथ कैथेयी का अत्यधिक समादर इसी कारण करते थे कि वह सभी रानियों में अत्यधिक रूपवती थी। वर्तमान कत्यवर के कत्ति जन लम्बे, हृष्ट-मुष्ट तथा गौर वर्ण के होते हैं। ये लोग सिन्धु तट से निर्वासित होकर यहाँ आये थे। इससे प्रतीत होता है कि ये ही जन संस्कृत साहित्य के केकय हैं। महाभारत में भी सैन्धवों के साथ-साथ केकयों का उल्लेख कहीं नहीं मिलता। विष्णुपुराण ४-१४-१० में लिखा है कि श्रीकृष्ण की एक बूआ केकयराज से व्याही थीं।

पं० भगवद्दत्त की धारणा है कि प्राचीन वर्णु (बन्नु) केकय जनपद का एक भाग था, क्योंकि बन्नु के पास भरत

तथा कक्की नाम के दो ग्राम अब भी वर्तमान हैं। उन्हीं के पास अक्करा नाम का एक दूसरा भी ग्राम है। मालूम पड़ता है कि भरत के मामा ने इन ग्रामों को भरत को भेंट में दिया था। इसके विपरीत डा० वासुदेवशरण ने लिखा है कि केकय जनपद वर्तमान झेलम, शाहपुर तथा गुजरात प्रदेश का प्राचीन नाम था, जिसमें सैन्धव पर्वत (खिउड़ा की नमक की पहाड़ी) है। केकय जनपद एक राज जनपद था। वहाँ के निवासी केकय कहलाते थे। पाणिनि के भर्गादिगण में केकय का नाम आया है। डा० अग्रवाल के मत का समर्थन वाल्मीकि रामायण से होता है। जब भरत को बुलाने के लिए अयोध्या से दूत केकय की राजधानी गिरिव्रज गये थे तो उनकी यात्रा के वर्णन में सबसे बड़ी तथा प्रसिद्धतम नदी सिन्ध के विषय में एक शब्द भी नहीं कहा गया, अतः यह निर्विवाद है कि गिरिव्रज सिन्ध नदी के पूर्व तथा झेलम के पश्चिम ही था। —

गिरिव्रज—यह केकय जनपद की राजधानी का नाम था। गिरिव्रज का शब्दार्थ होता है पर्वत-समूह। अतः नमक की पहाड़ियों के मध्य में ही कहीं इसको ढूँढ़ना चाहिये। नमक की पहाड़ी झेलम से सिन्ध तक विस्तृत है। यदि भारत के मानचित्र में नमक की पहाड़ी की समतल भूमि में स्थित वर्तमान जलालपुर से एक सीधी रेखा सरयू तट पर स्थित अयोध्या तक खींच दी जाय तो वाल्मीकि रामायण में वर्णित दूत-यात्रा में आये हुए स्थान ठीक-ठीक उसी रेखा पर पड़ेंगे। जलालपुर के समीप एक प्राचीन किला है। आजकल लोग उसको गिरिव्रज कहते हैं। इसका भी अर्थ पर्वतसमूह ही है। कहा जाता है कि इसको भरत ने बनवाया था। सम्भवतः यही प्राचीन गिरिव्रज है, यहां प्राचीन मुद्राएँ प्रचुरता से पायी गयी हैं। जेनरल कनिंघम के अनुसार इसी गिरिव्रज को प्राचीन गिरिव्रज कह सकते हैं।

सौभूत—पाणिनि सूत्र ४।२।७५ में सौभूत नाम के एक स्थान की चर्चा है। यूनानी लेखकों ने सोफाइट नाम के एक स्थान की चर्चा की है। सम्भव है इसी का प्राचीन नाम सौभूत रहा हो। यह स्थान भयंकर कुत्तों के लिए विख्यात था। इससे मालूम पड़ता है कि यह स्थान केकय जनपद में ही खिउड़ा के आस-पास कहीं रहा होगा। वाल्मीकि रामायण से ज्ञात होता है कि यहाँ भयंकर दांत-

वाले विशालकाय कुत्ते होते थे। वे केकयराज के भवन में पाले जाते थे। इसी कारण पाणिनि ने उन कुत्तों का पर्याय कौलेयक लिखा है।

कश्मीर—आधुनिक पञ्जाब के उत्तर कश्मीर प्रदेश स्थित है। इसकी चर्चा रामायण में कहीं नहीं मिलती। कुक्षेत्र के महायुद्ध में भी यहाँ के किसी राजा के भाग लेने की चर्चा नहीं की गयी। महाभारत में इस देश की चर्चा से असम्भ्य जाति की ओर संकेत अवश्य किया गया है। इससे ज्ञान पड़ता है कि यह प्रदेश प्राचीन काल में आर्यों से शासित न था प्रत्युत यहाँ असम्भ्य जन रहा करते थे। उनका सम्य जगत् से सम्बन्ध नहीं के समान था। हरिवंशपुराण में वर्णन है कि कश्मीर के राजा गोमर्द ने मथुरा पर आक्रमण करने के समय जरासन्ध की सहायता की थी—‘कश्मीर-राजो गोमर्दो दरदाधिपतिर्नृप।’—हरिवंश ४६७१, परन्तु यह उल्लेख नहीं किया गया कि वह म्लेच्छ अथवा आर्य था। मुद्राराक्षस में पारसीक, सिन्धु मलय तथा कुलूत (कुलू) राजाओं के साथ कश्मीर के राजा पुष्कराक्ष को भी म्लेच्छ कहा गया है—‘तस्य म्लेच्छराजस्य बलस्य-मध्यात् प्रधानतमाः पञ्च राजानः परया भक्त्या राक्षसमनुवर्तन्ते, तथा हि—कौलूतश्चित्रवर्मा मलयनरपतिः सिंहनादो नृसिंहः। काश्मीरः पुष्कराक्षः क्षतरिपुमहिमा सैन्धवः सिन्धुषेणः। मेघान्नः पञ्चमोऽस्मिन् पृथुतुरगबलः पारसीकाधिराजः।’—मुद्राराक्षस १-२।

त्रिकाण्डशेष में कश्मीर का एक पर्याय कीर भी मिलता है। “अथ कश्मीरे कीराः स्युः शास्त्रशिल्पिनः” भूमिवर्ग ८। जेनरल कनिंघम ने इसकी पुष्टि में लिखा है कि ‘कश्मीरी जन कीर तथा म्लेच्छ भी कहे जाते हैं। हेमचन्द्र ने कश्मीरियों का एक पर्याय माधुमत भी दिया है—‘काश्मीरास्तु माधुमताः’ ४।२४। माधुमत शब्द मधुमती (सिन्ध) से बना हुआ है। इस प्रदेश का विस्तार भिन्न-भिन्न समय में चाहे जितना भी रहा हो परन्तु प्राचीन काल में हिमालय तथा पौर पञ्जाल की पहाड़ी का मध्यवर्ती भाग कश्मीर जनपद में अवश्य सम्मिलित था।

कश्मीर जनपद वितस्ता (व्यास) से सिक्त है। वामन ने पा० सूत्र १।४।३१ की व्याख्या में ठीक ही लिखा है कि “कश्मीरेभ्यो वितस्ता प्रभवति।” कश्मीर केशर के

विख्यात है इसीलिये केशर को कश्मीरजन्मा अथवा कश्मीरज कहते हैं। “कुचकश्मीरजचिह्नमच्युतोरः।” माघ २०।६। भावमिश्रने तीन प्रकार की केशरों की चर्चा करते हुये कश्मीर के केशर को सर्वोत्तम लिखा है—“कश्मीरदेशजे क्षेत्रे कुङ्कुमं यद्भवेद्वि तत्। सूक्ष्मकेशरमारक्तं पद्मगन्धि तदुत्तमम्। बाह्लीकदेशसञ्जातं कुङ्कुमं पाण्डुरं मतम्। केतकीगन्धयुक्तं तन् मध्यमं सूक्ष्मकेशरम्। कुङ्कुमं पारसीके यन्मधुगन्धि तदीरितम्। ईषत्पाण्डुरवर्णं तदधमं सूक्ष्म-केशरम्” ॥ भाव प्र० भा० १। अमरकोश में कमल की जड़ के लिये एक पर्याय कश्मीर लिखा है—“मूले पुष्करकश्मीर-पद्मपत्राणि पोष्करे” अमर-२-४।१४५ हेमचन्द्र ने श्रीपर्णी (खैभारी) का एक पर्याय काश्मीरी लिखा है। अतः उप-र्युक्त वस्तुएँ कश्मीर में प्रचुरता से पायी जाती हैं।

जेनरल कनिंघम ने कश्मीर के एक प्राचीन तथा प्रधान नगर का वर्णन भी नगरी के नाम से किया है जिसको सम्राट् अशोक ने बसाया था तथा वह कश्मीर की वर्तमान राजधानी श्रीनगर के समीप ही स्थित थी। वर्तमान श्रीनगर को कश्मीर के एक राजा प्रवरसेन ने बसाया था। राजतरङ्गिणी में तीन अन्य नगर हुस्कुपुर, जुस्कुपुर तथा कनिष्कपुर का भी उल्लेख मिलता है। बारामूला के दो मील दक्षिण-पूर्व स्थित वर्तमान उत्कर का प्राचीन नाम हुस्कुपुर, श्रीनगर से चार मील उत्तर आधुनिक तक्रू प्राचीन जुस्कुपुर तथा श्रीनगर से दस मील दक्षिण वर्तमान कर्णपुर का प्राचीन नाम कनिष्कपुर हो सकता है। श्री-नगर से दक्षिण-पूर्व सत्रह मील दूर वितस्ता के दक्षिण तट पर स्थित अवन्ति वर्मा का बसाया हुआ अवन्तिपुर है, राजतरङ्गिणी ५-४४ में इसका भी उल्लेख है।

श्रीनगर से दक्षिण-पूर्व ही आठ मील की दूरी पर वितस्ता के हो तट पर स्थित वर्तमान पामपुर का प्राचीन नाम पद्मपुर था। वेलूर घाटी के पश्चिम वितस्ता के दोनों तटों पर बसा हुआ सोपुर का प्राचीन नाम शूरपुर था। राजतरङ्गिणी में कश्मीर के और भी अनेक स्थानों का नाम मिलता है। बारामूला का प्राचीन नाम बराहमूल था। वेलूर घाटी के दक्षिण राबी तट पर स्थित चम्बा को प्राचीन काल में ‘चम्पा’ कहते थे। चेनाब की सहायक नदी तोही के तट पर प्राचीन राजपुर था, जिसको आजकल राजौरी

कहते हैं। बारामूला के दक्षिण आधुनिक मानचित्र का पूछ प्राचीन काल का पणोंत्स हो सकता है। राजतरङ्गिणी में कश्मीर के निवासियों को खश कहा गया है। उसी में आगे चलकर खशों को विल्ववन का निवासी भी लिखा है—“खशकान् विल्ववनजान् मध्येकृत्यनृपान्तिकम्।” इससे ज्ञात होता है कि खशजन कश्मीर के दक्षिण के वनों तथा पर्वतों पर रहते थे तथा वहाँ विल्व के वृक्षों की अधिकता थी। महापद्मसर सम्भवतः वेलूर झील का प्राचीन नाम हो।

जेनरल कनिंघम ने लिखा है कि कश्मीर प्राचीन काल में क्रम राज्य तथा मडव राज्य नाम के दो बड़े जिलों में विभक्त था जो स्थानीय बोलचाल की भाषा में कमराज तथा मिराज कहे जाते थे। रा० त० के आधार पर कहा जा सकता है कि फलपुर तथा परिहासपुर (वितस्ता तथा सिन्ध के सङ्गम पर स्थित) तथा वूलूर झील के पश्चिम का सोपुर कमराज में थे अन्य नगर मिराज में, दोनों राज्यों की विभाजक रेखा वितस्ता थी।

द्रुमती—कश्मीर में द्रुमती नाम की एक नदी की चर्चा मिलती है। महाभाष्यकार पतञ्जलि को यह नदी ज्ञात थी, सम्भवतः वह वर्तमान द्रास नदी हो सकती है।

देविका—पा० सू० ७।३।१ में देविका नदी का नाम आया है। उक्त सूत्र की व्याख्या में भाष्यकार ने उदाहरण दिया है—‘देविकाकूलाः शालयः’ अर्थात् देविका नदी के तट पर उत्पन्न होनेवाला धान। वर्तमान समय में भी इस नदी के तट पर उत्तम श्रेणी का धान उत्पन्न होता है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण खण्ड १।१६७।१८ में लिखा है कि ‘उमा देवीति मद्रेषु देविका या सरिद्वरा’, इससे ज्ञात होता है कि यह नदी मद्र देश में भी बहती थी। वामन पुराण अध्याय ८४ से ज्ञात होता है कि जम्भू की पहाड़ी से निकल कर स्यालकोट, शेखूपुरा जिलों में होती हुई राबी में मिलनेवाली देग नदी का ही प्राचीन नाम देविका था क्योंकि अब भी यह नदी प्रतिवर्ष वर्षा ऋतु में अपने दोनों तटों पर उपजाऊ मिट्टी प्रचुर मात्रा में छोड़ देती है, इस कारण उस मिट्टी में उत्तम श्रेणी के धान पैदा होते हैं। आजकल भी पञ्जाब में स्यालकोट के चावल की पर्याप्त प्रतिष्ठा है, वे ही देविकाकूल चावल हैं।

मिद्य—पा० सू० ३-१-११५ में मिद्य नाम के एक नद का उल्लेख है। यह जम्मू से निकलनेवाली बई नदी का ही प्राचीन नाम हो सकता है। गुरुदासपुर जिले में रावी से मिलती है। कालिदास के रघुवंश ११-८ से ज्ञात होता है कि मिद्य तथा उदय नाम की दोनों नदियाँ ग्रीष्म काल में सूख जाती हैं परन्तु वर्षा ऋतु में इनका वेग बड़ा प्रबल होता है। 'मिनत्तिकूलम् मिद्यो नदः। उज्जत्युदकम् उदयो नदः।' उपर्युक्त सूत्र की व्याख्या से भी यही मालूम पड़ता है।

उदय—वर्तमान उमा नदी का ही प्राचीन नाम उदय था। यह नदी जम्मू के जसरोत जिले से होकर पंजाब के गुरुदासपुर जिले में रावी से मिली है। काशिका के उदये-रावति तथा मिद्येरावति उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि ये दोनों नदियाँ रावी की सहायक हैं। जिस प्रकार गंगाशोणम् तथा गंगा-यमुने आदि उदाहरणों से प्रधान तथा सहायक नदियों के नामों को मिलाकर समास किया गया है उसी प्रकार इन दोनों को भी मिलाकर समस्त पद बनाया गया है।

दरद—कश्मीर के उत्तर-पश्चिम अर्थात् गिलगिट-हुंजा प्रदेश प्राचीन काल में दरद जनपद के नाम से प्रसिद्ध था। वर्तमानकाल में भी गिलगिट की घाटी में दरद जन पाये जाते हैं। महाभारत वन पर्व १७७-१२ में चीनियों तथा तुखारों (तातारों) के साथ हिमालय के उत्तर भी इनकी स्थिति का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। वामन ने पा० सू० ४।२।८३ की व्याख्या में सिन्ध नदी का उद्गम दरद जनपद में लिखा है—“दरदात् प्रभवति दारदी सिन्धुः।” उपर्युक्त व्याख्या से यह ज्ञात होता है कि किसी समय दरदजन कश्मीर के राजा के अधिकार में स्थित ललाटाक्ष (लद्दाख) तक फैले हुये थे।

सर्वप्रथम लिट्तर ने दरदों के निवासस्थान का नाम दरदिस्तान रक्खा था। उन्होंने दरदिस्तान में हिन्दुकुश तथा काश्गन के मध्यवर्ती समस्त प्रदेश को उसमें सम्मिलित किया है। उन्होंने दरदों में केवल शिनकी के पर्वतीय भाग में रहनेवाली जाति को ही नहीं सम्मिलित किया प्रत्युत चिलसिस, अस्तोरिअस, हुज्ज के जनों को तथा चित्राली और काफिरों को भी उनमें सम्मिलित किया है। प्राचीन

संस्कृत साहित्य में दरद जनपद संकुचित था क्योंकि उसमें चित्रालियों, काफिरों तथा हुज्जों के देशों का पृथक्-पृथक् उल्लेख मिलता है। 'दरद' शब्द का प्रयोग केवल दरद भाषा-भाषी अर्थात् शीन भाषा-भाषियों गिरगिट, गुरेज, चिलस तथा सिन्ध और स्वात के कोहिस्तान के ही लिये किया गया है। विडल्फ के अनुसार (दरदिस्तान की भाषायें तथा जातियाँ) द्वितीय भाग पृष्ठ ४५-४८) 'दरद' शब्द का फारसी रूप 'द्वएद' (बलिपशु) है। जिस प्रकार दह्यु (लुटेरा) शब्द से दहिस्तान देश तथा 'दहेइ' जाति का नामकरण हो गया। चित्राल प्रदेश में 'दरद' शब्द पूर्णतया अप्रचलित है।

महाभारत द्रोणपर्व दरदों को पर्वतीय तथा कश्मीर और कम्बोज का पड़ोसी कहता है। मनु १०।४३, ४४ के अनुसार धार्मिक कृत्यों को त्याग देने से दरदों ने अपने चरित्रयत्न को नष्ट कर दिया। इनको गणना पारदों के समान स्लेच्छों में की गयी है। वर्तमानकाल में भी दरदों तथा कम्बोजों में कुछ समान प्रथायें प्रचलित हैं। विडल्फ ने उनकी एक विलक्षण प्रथा का उल्लेख भी किया है। इस प्रथा का नाम 'कोबह' (गोबध) है। किसी के घर किसी सम्मानित अतिथि के आने पर यह प्रथा सम्पन्न की जाती है। अतिथि के आने पर उसको अतिथिशाला में ले जाकर उसके सामने एक बैल खड़ा कर दिया जाता है। अतिथि अपनी तलवार निकालकर एक ही प्रहार में उस बैल की गर्दन काट देने का प्रयत्न करता है। यदि अतिथि स्वयं ऐसा करना न चाहे तो वह अपने किसी अनुयायी को उस प्रथा को सम्पन्न करने के लिये नियुक्त कर देता है। अन्त में वह शव उसके अनुचरों में वितरित कर दिया जाता है। वर्तमानकाल में भी यह प्रथा शिघ्रान, बदल्शा, वरवान, चित्राल, यासिन, गिलगिट हुंज तथा नगर में प्रचलित पायी जाती है। अतः उक्त प्रदेश का ही प्राचीन नाम दरद जनपद होना सङ्गत प्रतीत होता है।

सलातुर—महावैयाकरण पाणिनि का जन्म स्थान सलातुर था, इसी कारण इनको सलातुरीय कहते हैं। सलातुर पेशावर के पश्चिमोत्तर सिन्ध तथा कुभा के संगम के कोण में स्थित ओहिन्द से चार मील पश्चिम स्थित है। आज-कल इसको लहूर कहते हैं। यहाँ एक कुम्भा वर्तमान

है। जिसको तत्स्थानीयजन पाणिनि-कूप कहते हैं। आर्य तथा अनार्य सभी स्थानीयजन अपने अपने छोटे बच्चों को उस कूप का जल इस दृष्टि से पिलाते हैं कि उनकी बुद्धि पाणिनि के समान प्रखर हो जाय। इस प्रचलित परम्परा से यह निश्चित किया जाता है कि इसी स्थान का प्राचीन नाम सलातुर था। भारत के पश्चिमोत्तर सीमा-प्रदेश में जन्म होने के कारण उनकी प्रधान कृति अष्टाध्यायी में उसके आस-पास के देश, नगर, ग्राम, वन, नदी पर्वत यदि के नाम प्रचुरता से मिलते हैं।

कूचवार—पा० सू० ४।३।६४ में बर्मती, कूचवार तथा तूदी का नाम आया है। बर्मती आधुनिक बीमरान का प्राचीन नाम हो सकता है। कूचवार चीनी तुकिस्तान में उत्तरी तारिम अपत्यका का प्राचीन नाम प्रतीत होता है क्योंकि आज-कल उसको कूचा कहते हैं। चीनी भाषा में उसी को कूची कहते हैं। यह प्राचीन राज्य था। चीन से पश्चिम जानेवाले रेशम के मार्ग पर यह एक प्रसिद्ध व्यापार-केन्द्र था। चीन के व्यापारी तुरफान से कूचा होकर काशगर जाते थे और वहाँ से कम्बोह (पामीर) बाह्यीक होते हुये भारत पहुँच जाते थे।

कापिशी—अष्टाध्यायी ४।२।६६ सूत्र में प्रयुक्त कापिशी अपने हरे अंगूरों के लिये प्रख्यात थी—कापिशायनी द्राक्षा। यहाँ एक विशेष प्रकार की सुरा बनती थी जो भारत में भी आती थी उसको 'कापिशायन' कहते थे। कापिशायन मधु। कापिशी नगरी में प्राप्त वहाँ के सिक्कों पर हाथी का चित्र बना हुआ है जो ऐरावत (इन्द्र का वाहन) प्रतीत होता है। श्युआन चुआंग ने इसका नाम कियापेशी लिखा है जो कि काबुल नदी के उत्तर आधुनिक ओपिआन मानी जाती है। रामकृष्ण गोपाल भण्डारकर के अनुसार अफगानिस्तान का उत्तरी भाग कपिशा नाम से प्रसिद्ध था। प्रो० लैसन के अनुसार गुर्वाद नदी की तलहटी में कपिशा थी। किसी समय यह गन्धार जनपद की राजधानी थी। उनका कहना है कि आजकल भी अफगानिस्तान के उत्तरी भाग में अंगूर प्रचुरता से पाया जाता है अतः प्राचीन कपिशा वहीं थी। डा० वासुदेवशरण की धारणा है कि कापिशी कापिशायन प्रान्त की राजधानी थी। काबुल से उत्तरपूर्व हिन्दूकुश के दक्षिण आधुनिक बेग्राम प्राचीन

कापिशी है। इस स्थान पर एक प्रस्तर अभिलेख प्राप्त हुआ है जिसमें कापिशी का उल्लेख है, अतः बेग्राम का ही प्राचीन नाम कापिशी हो सकता है।

उरसा—पा० सू० ४।२।८३ की वामन की व्याख्या में तथा महाभारत समापर्व २७।१६ में उरसा की चर्चा मिलती है। जेनरल कनिंघम तथा श्युआन् चुआंग ने इसको कश्मीर तथा तक्षशिला के मध्य में मुजफ्फराबाद के पश्चिम स्थित माना है। आजकल उसको 'रुश' कहते हैं। राजतरङ्गिणी के आधार पर इस प्रदेश को सिन्ध नदी से कुछ दूर कश्मीर की सीमा पर स्थित होना चाहिये। डा० वासुदेव शरण का मत है सिन्ध तथा कृष्णगङ्गा—फेलम के मध्य का प्रदेश जो कि पश्चिमी गन्धार तथा अभिसार (वर्तमान पूँछ रजौरी) के मध्य में है वही प्राचीन उरसा है। आजकल उसको 'हजारा' कहते हैं। अष्टाध्यायी ४।२।१२४ की व्याख्या में वामन ने अभिसारी को अभिसारक लिखा है।

अभिसार—राजतरङ्गिणी के अनुसार इस देश में दार्व जन रहते थे। "शूरं दार्वभिसारेशं शर्वया नरवाहनम्" रा० त० ५।२०८। दार्व का नाम महाभारत में भी आया है "ततस्त्रिगर्ताः कौन्तेयं दार्वः कोकनदास्तथा। क्षत्रिया बहवो राजन्नुपावर्तन्त सर्वशः ॥" २७।१८। अभिसार देश को अपेक्षा-कृत उष्ण प्रदेश भी होना चाहिये; क्योंकि कश्मीर के राजा शीत काल में निवास करने के लिये अभिसार जाया करते थे—"शीते दार्वभिसारादौ षण्मासान् पार्थिवोऽवसत्" रा० त० १-१८०। जेनरल कनिंघम के मानचित्र में यह स्थान तक्षशिला तथा उरसा के मध्य में स्थित दिखाया गया है। बहुत सम्भव है आजकल के डूंगर का प्राचीन नाम दार्व रहा हो।

कच्छ—अष्टाध्यायी ४।२।१३३ में कच्छ जनपद का उल्लेख है। यह जनपद सिन्ध के ठीक दक्षिण है। पाणिनि ने कच्छ के निवासियों को काच्छक, उनके हँसने तथा बोलने के ढंग को भी काच्छक तथा उनके सिर के बालों को काच्छिका लिखा है। कच्छी बोली में वाक्य के अन्तिम भाग को कुछ शीघ्रता से बोलते हैं, अतः उनकी बोली में विशेषता होने के कारण उसके लिये काच्छक का प्रयोग किया जाता था। कच्छ जनपद के लोहाने क्षत्रिय प्रसिद्ध हैं। पाणिनि ने नडादिगण में नाडायन, चारायण के समान

लोहायन शब्द सिद्ध किया है। यह अनुमान किया जाता है कि लोहाने का ही प्राचीन नाम लोहायन है। लोहाने क्षत्रिय आजकल भी अपने सिर के बालों को विलक्षण ढंग से बनवाते हैं। यही कारण है कि उनके बालों के लिये भी एक विशेष नाम रखना पड़ा। काशिकाकारने इसी सूत्र के प्रत्युदाहरण में कच्छी बालों को काच्छक कहा है। यहाँ के बालों का सींग पतला होता है। ये बाल आकार में तो छोटे होते हैं, परन्तु बड़े चंचल होते हैं; अतः उनका भी विशेष नाम रखना पड़ा।

पाणिनि ने एक दूसरे सूत्र ४।२।१२६ में कच्छान्त देश-वाची शब्दों का उल्लेख किया है। जैसे—दारुकच्छ, पिप्पली-कच्छ आदि। दारुकच्छ से काठियावाड़ का सागरतटवर्ती प्रदेश और पिप्पली कच्छ से रेवा काँठ का सूरत से बड़ोदा तक का किनारा, जिसमें पिपला राज्य है, अभिप्रेत है। उसी समुद्र तट पर भृगुकच्छ है जिसको आजकल भड़ौच कहते हैं। खैमात की खाड़ी के ऊपर साबरमती नदी (श्वभ्रमती) की धारा समुद्र में गिरती है। उसकी दाहिनी ओर का समुद्र तट दारुकच्छ तथा वाई ओर का पिप्पली-कच्छ कहलाता था।

उपर्युक्त सूत्र में ही अग्नि उत्तरपदवाले भी कुछ शब्द आये हैं जैसे काण्डाग्नि तथा विभुजानि। विभुजानि कच्छ प्रदेश का भुज हो सकता है तथा काण्डाग्नि काण्डाला बन्दरगाह के उत्तर-पूर्व तपता हुआ रेगिस्तान। ये दोनों स्थान कच्छ के छोटे बड़े रेगिस्तान प्रतीत होते हैं।

बाह्लीक—महाभारत सभापर्व ५१-२६ में चीन के साथ बाह्लीक का नाम आया है। यह जनपद ऊनी तथा रेशमी कपड़ों के लिये विख्यात था। सम्भवतः यह आधुनिक बल्ख का प्राचीन नाम है। भावप्रकाश में कश्मीरी केशर के वर्णन के प्रसङ्ग में बाह्लीक को केशर का भी वर्णन किया गया है। बाह्लीक हींग के वृक्ष का भी एक पर्याय है—“सहस्रवेधजतुकं बाह्लीकं हिङ्गं रामठम्” अमर २-६-४०। राक्स वर्ग का कहना है कि यह वृक्ष फारस में प्रचुरता से पाया जाता है, अतः यह अनुमान किया जाता है कि फारस के एक भाग का नाम रामठ भी था। वहाँ खोरासान वृक्ष भी बहुत पाये जाते हैं। महाभारत में हूणों के साथ रामठों की भी चर्चा की गयी है। हमारे यहाँ के साहित्य में बाह्लीक

जाति के घोड़ों का वर्णन अनेक स्थलों पर मिलता है—“तद्देशास्तु सैन्धवाः वनायुजाः पारसीकाः काम्बोजा बाह्लीकादयः।” हेमचन्द्र ४-३००।१।

महाभारत में शल्य को बाह्लीकपुङ्गव कहा गया है। सम्भवतः वह बाह्लीक का राजा था। बाह्लीकों का दरदों के साथ सम्बन्ध भी मिलता है। पाजिटर के अनुसार दो बाह्लीक जातियाँ थीं। एक पञ्जाब के मैदानों में मद्र जनपद के पड़ोस अर्थात् चेनाब तथा सतलज के मध्य में थी और दूसरी चेनाब तथा व्यास के मध्य में हिमालय के निचली ढाल पर। आगे चल कर यही नाम विकृत होकर बाहीक हो गया, क्योंकि वे लोग सरस्वती, कुरुक्षेत्र तथा मध्यदेश के स्थानों के बाहर होने के कारण बाहीक कहलाने लगे। क्योंकि ब्राह्मण लोग मध्यदेश के बाहर के लोगों को अपवित्र मानते थे। वास्तव में बाह्लीक का प्रतिनिधित्व उत्तरी अफ गानिस्तान का बल्ख ही करता है।

हाटक—महाभारत में मानसरोवर की स्थिति हाटक देश में उल्लिखित है। “सरोमानं समा साद्य हाटकानभितः प्रयुः। गन्धर्वरक्षितं देशमजयत् पाण्डुनन्दनः।” सभापर्व २८।५। इस देश में किम्पुरुष अथवा किन्नर तथा अन्य अर्द्ध दिव्य व्यक्तियों का निवास स्थान पुराणों में वर्णित है सभापर्व २८।४। हाटक देश अपने चितकबरे घोड़ों के लिये विख्यात था—“तत्र तित्तिरकल्माषान् मण्डूकास्थान् ह्योत्तमान्। लेभे स करमत्यन्तं गन्धर्वनगरात्तदा” सभापर्व २८-६। महाभारत के तङ्गण जन भी यहीं रहते थे—“मेरुमन्दरयोर्मध्ये शैलोदामभितो नदीम्। ये वै कीचकवेणूनां छाया रम्यामुपासते। खशा एकाशनाहर्हाः प्रदरा दीर्घवेणवः। पारदाश्च कुलिन्दाश्च तङ्गणाः परतङ्गणाः॥” सभापर्व ५२-२।३ वाराही संहिता में दरदों तथा अभिसारों के साथ तङ्गणों का भी उल्लेख मिलता है—“अभिसार दरद तङ्गण कुलूत सैरिन्धु वनराष्ट्राः।” १४।२९। हाटक देश के उत्तर हरिवर्ष अथवा उत्तरकुरु की स्थिति का वर्णन है। उत्तरकुरु जन चीन के तातारी हो सकते हैं।

शैलोदा—मेरु तथा मन्दर पर्वत के मध्य में बहने वाली एक नदी का नाम शैलोदा है। इसके तट पर अनेक जाति के जनों के रहने का उल्लेख मिलता है। मत्स्य पुराण के अनुसार शैलोदा अथवा शैलोदका नदी अरुणाचल से

निकलती है, अरुणाचल कैलाश पर्वत के पश्चिम है। यह नदी पश्चिमी सागर में गिरती है। माकण्डेय पुराण में इसका नाम सीतोदा लिखा है। अभी तक मेरु तथा मन्दर की स्थिति का ठीक-ठीक निर्णय नहीं हो सका है। पाजिटर ने शैलोदा को पश्चिमी तिब्बत में स्थापित किया है। डा० मोतीचन्द की धारणा है कि यारकन्द नदी ही, जिसको जर्-फशन भी कहते हैं और चीनी जन जिसको सीन्तो कहते हैं, शैलोदा है। तथा कारकोरम शृंखला का प्राचीन नाम मेरु तथा कुतलुन् शृंखला का प्राचीन नाम मन्दर है।

शक — शक जन (यूनानी सेकई) सीदिजन जाति के सोसक हो सकते हैं। विष्णु पुराण में लिखा है कि ये लोग आधा सिर वनवाते थे—“यवनान् मुण्डितशिरसः, अर्धमुण्डान् शकान् प्रलम्बकेशान् पारदान्, पल्लवाश्च श्मश्रुवरान्” वि० पु० ४।३।२१। महाभारत में लिखा है कि शक जन काम्बोज राजकुमार के साथ सुयोधन के पक्ष से युद्ध करने के लिये कुरुक्षेत्र में गये थे। द्रोणपर्व में लिखा है कि शक जन काले कलूटे, दुश्चरित्र, स्वैर्य तथा कलहप्रिय होते हैं—“काकवर्णाः दुराचाराः स्त्रीलोभाः कलहप्रियाः।” द्रोणपर्व ६३४२।

हूण—हूण जन मङ्गोलिया के रहने वाले हूंगतू हैं। इन्हीं हूणों ने ईसा पूर्व १७६ में ता-यू० ची को अपने देश से निकाल दिया था। ये अपने रहने के लिये स्थायी घरों को नहीं बनाते थे। ये जन चीन तथा रोमन अधिकृत प्रदेशों के लिये महान् उत्पात स्वरूप थे। रघुवंश से ज्ञात होता है कि उन्होंने एक बार ऊपरी सिन्ध के तटों पर अपना अधिकार कर लिया था। बाणभट्ट के हर्ष चरित से मालूम होता है कि भारत पर इनके आक्रमण की आशंका सदा बनी रहती थी।

पल्लव—दाढ़ी रखनेवाले पल्लव सम्भवतः लम्बे बाल वाले पारद ही थे इन्हीं को प्राचीन काल में परोप मिसदई भी कहते थे। हिन्दू कुश के उत्तरी ढाल पर Gedrosia में ये लोग रहते थे। किसी समय इनका सम्बन्ध ईरान से था। कालयवन के मथुरा पर आक्रमण करने के समय पल्लवों ने उसकी सहायता की थी—“शकास्तु खारा दरदाः पारदास्त-ज्जणाः क्षशाः। पल्लवाः शतशश्चान्ये म्लेच्छा हैमवतास्तथा। स वै परिवृतो राजा दस्युभिः शलभैरिव। नानावेशायुधैर्भी-

मैमथुरामभ्यवर्तत। गजवाजिखरोष्ठाणामयुतैरवैरपि। पृथिवीं कम्पयामास सैन्येन महता वृतः॥” हरिवंश ६६४१-३॥

कालयवन—इनके विषय में बड़ा मतभेद है। किसी का मत है कि ये कालयवन यूनानी थे। महाभारत में काम्बोज राजकुमार के साथ सुयोधन के पक्ष से लड़ने के लिये केवल पश्चिम के ही यवन नहीं गये, प्रत्युत पूर्व के भी यवन गये थे। पूर्व के यवन कामरूप के राजा के साथ राजसूय यज्ञ में भी गये थे—“प्राग्ज्योतिषाधिपः शूरो म्लेच्छानामधिपो बली। यवनैः सहितो राजा भगदत्तो महारथः।” सभापर्व ३१।७।७२ उसी प्रसङ्ग में दक्षिण के यवनों की भी चर्चा है। दक्षिण के यवनों को सहदेव ने परास्त किया था, पाण्डवों द्रविणांश्चैव सहितांश्चौड्केरलैः। आन्ध्रांस्तालवनांश्चैव कलिङ्गानुष्टकणिकान्॥ अटवीं च पुरीम् रम्यां यवनानां पुरं तथा। दूतैरेव वशे चक्रे करञ्चैनानदापयत्॥” सभापर्व ५१।१४ कालिदास ने प्राचीन पारसियों के लिये भी यवन शब्द का प्रयोग किया है—“पारसीकांस्ततो जेतुं प्रतस्थे स्थल-वर्त्मना॥ इन्द्रियाख्यानिव रिपूंस्तत्त्वज्ञानेन संयमी॥ यवनी-मुखपधानां सेहे मधुमदं न सः। बालातपमिवाब्जानाम-कालजलदोदयः॥” रघुवंश ४।६०।६१।

कालिदास के कुछ शतक परवर्ती दण्डी ने अरब के नाविकों के लिये भी यवन शब्द का प्रयोग किया है। “प्रत्यु-षस्यदृश्यत किमपि बहित्रम्। अमुत्रासनयवनाः” दशकुमार ६। उपयुक्त उद्धरणों से विदित होता है कि यवन शब्द केवल यूनानियों के लिये ही सीमित न था। उणादि सूत्र २।७४ में यवन शब्द की सिद्धि ‘यु’ घातु (जिसका अर्थ मिलना अथवा अलग होना होता है) से की गयी है। उसके अनुसार ‘यवन’ शब्द का शब्दार्थ मिश्रित हुआ। हमारे साहित्य में ‘म्लेच्छ’ शब्द सीमावर्ती सभी असभ्य अथवा अर्धसभ्य जाति वालों के लिये प्रयुक्त किया जाता था। किरात पुलिन्द, शबर आदि सभी असभ्य थे—“भेदाः किरात-शबरपुलिन्दा म्लेच्छजातयः” अमर २-१०।२०। अतः यवन शब्द भी समस्त म्लेच्छों का साधारण पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया जाने लगा था। परन्तु वे लोग भी आर्यों से प्रभावित होकर उनकी समानता करने के लिये शस्त्र-शास्त्र में प्रवीणता प्राप्त करने का प्रयत्न करने लगे और अन्ततो गत्वा कुछ समय के बाद सभ्य होने लगे। उनसे ज्ञान प्राप्त

करने में फिर आयों को कोई आपत्ति न थी। डा० कन ने गर्गसंहिता में एक विलक्षण श्लोक का उल्लेख किया है। स्लेच्छा हि यवनास्तेषु सम्यक् शास्त्रमिदं स्थितम्। ऋषिर्वत्सेऽपि पूज्यन्ते किं पुनर्देवविद्विजाः।” गर्ग संहिता की प्रस्तावना पृ० ३५।

मालूम पड़ता है कि पूर्वी यवनों के राजा कालयवन ने मथुरा पर आक्रमण करने के समय जरासन्ध की सहायता की थी।

हारहूर—बाराही संहिता में हारहूर नाम के एक प्रदेश का उल्लेख है जो कि उत्तरभारत में था। इस देश की अंगूरी लता को हारहूरा कहते थे—“दाक्षा तु गोस्तीनी। मृद्रीका हारहूरा च”—हेमचन्द्र ४।२२१।२२२। अंगूर की लतायें काबुल के एक भाग में प्रचुरता से उत्पन्न होती हैं अतः हारहूर को वहीं होना चाहिये। महाभारत में हारहूर देश में सिंहपुर नाम के एक नगर की भी चर्चा है जिसको अर्जुन ने अमिसार तथा उरसा विजय के पश्चात् तथा बाह्लीक जाने के पूर्व जीता था—“ततः सिंहपुरं रम्यं चित्रायुधसुरचितम्। प्राथमद् बलमास्थाय पाकशासनिराहवो॥” सभापर्व २०-२७। उपर्युक्त उद्धरण से मालूम पड़ता है कि सिंहपुर हारहूर की राजधानी का नाम था। महाभारत के आधार पर हारहूर की स्थिति उरसा (हजारा) के उत्तर अथवा पश्चिमोत्तर होनी चाहिये। श्युमान् युआंग का वर्णन इसके विपरीत है, उन्होंने लिखा है कि सिंहपुर तक्षशिला से दक्षिण-पूर्व ११७ मील पर स्थित था। परन्तु उनका दिशा तथा दूरी का उल्लेख बहुधा भ्रामक सिद्ध हो चुका है, अतः उनकी धारणा मान्य नहीं। उनके वर्णन से यह निश्चय है कि सिंहपुर नामक नगर अवश्य था।

अंगूर भारतीय फल नहीं है इसका यहाँ आयात बहुत प्राचीन नहीं है। प्राचीन काल में अफगान व्यापारी इसको काबुल से छोटे छोटे वक्कों में लाकर भारत में बेचते थे। जब भारत का खेतन के साथ व्यापारिक तथा सांस्कृतिक सम्बन्ध स्थापित हुआ तब खेतन से हिमालय के दक्षिण मुनक्के का तथा अंगूर का आयात प्रचुरता से होने लगा। वर्तमान काल में भी भारत में अंगूर की उपज नहीं के बराबर है। अब भी खेतन के अंगूर, विशेषतया केरिया के समीप स्थित बोगजलंगर के, पर्याप्त प्रसिद्ध हैं।

ग्रेनड के अनुसार ‘तुर्फन’ के अंगूर समस्त संसार में सर्वोत्तम होते हैं। महाभारत में हारहूरों की गणना पश्चिमी जाति में की गयी है तथा रामठों के साथ इनका नाम आया है। रामठ हींग का पर्याय है। रामठ उत्पन्न होने के कारण वह देश भी रामठ कहलाने लगा। हींग विशेषतया दक्षिण फारस, बलूचिस्तान अफगानिस्तान तथा दक्षिण में चेनाब घाटी तक उत्पन्न होती है, अतः रामठ देश को इन्हीं में कहीं होना चाहिये। डा० मोतीचन्द की धारणा है कि रामठ देश कलात राज्य का खरान जिला हो सकता है। यहाँ हींग भी उत्पन्न होती है और प्राचीन एरिया (हेरात), आर्कोशिया (कन्धार) से मिला हुआ भी है, अतः हेसत ही का प्राचीन नाम हारहूर हो सकता है। यहाँ उत्तम श्रेणी का अंगूर भी उत्पन्न होता है। यहाँ के फलों के बगीचे दसवीं शताब्दी तक प्रसिद्ध थे।

त्रिगर्त—कुछ विद्वानों का अनुमान है कि जालन्धर दोआब का ही प्राचीन नाम त्रिगर्त था। हेमचन्द्र जालन्धर को त्रिगर्त कहते हैं—“जालन्धरास्त्रिगर्ताः स्युः” ४।२४। इसी आधार पर जालन्धर दोआब को त्रिगर्त मान लिया गया। जालन्धर देश तथा जन दोनों का वाचक हो सकता है। जालन्धर का प्रयोग इसी अर्थ का बोध कराने के लिये किया भी गया है। कुरुक्षेत्र में राजा सुशर्मा (त्रिगर्त का राजा) था क्रेपतन के पश्चात् त्रिगर्तन जन भागकर जालन्धर के दोआब में जाकर बसे थे। बहुत सम्भव है उनके वहाँ बस जाने के कारण जालन्धर भी त्रिगर्त कहा जाने लगा हो।

अनेक स्थलों पर यह उल्लेख मिलता है कि त्रिगर्त सूखा प्रदेश था। पा० सू० १-४-८८ की व्याख्या में वामन ने उदाहरण दिया है—‘अपत्रिगर्तंभ्यो वृष्टो देवः’ अर्थात् त्रिगर्त को छोड़कर वर्षा हुई। दशकुमारचरित के षष्ठ उल्लास की एक कथा में लिखा है कि एक समय त्रिगर्त में बारह वर्ष तक अवर्षण हो गया। वहाँ के समस्त जलाशय सूख गये—“अस्ति त्रिगर्तो नाम जनपदस्तत्र नववर्षद्वादश वर्षाणि दशशताब्दः। क्षीणस्रोतसः स्रवन्त्यः, पङ्कशेषाणि प्लवलानि।” उपर्युक्त उद्धरणों से मालूम पड़ता है कि जालन्धर दोआब त्रिगर्त नहीं हो सकता, क्योंकि उक्त दोआब सतलज तथा व्यास नदियों से सिक्त है।

सम्भव है त्रिगर्त सतलज के पूर्व का मरु प्रदेश हो, क्योंकि महाभारत में लिखा है कि त्रिगर्त जन मत्स्य तथा साल्व के राजाओं से सदा सताये जाते थे—“अथ राजा त्रिगर्तानां सुशर्मा रथयूथपः । प्राप्तकालमिदं वाक्यमुवाच त्वरितो बली ॥ असकृन्निष्कृतः पूर्वं मत्स्यसाल्वेयकैः प्रभो । सूतेन चैव मत्स्यस्य कोचकेन पुनः पुनः ॥” विराटपर्व ३०।१, २। इससे यह प्रकट होता है कि त्रिगर्त मत्स्य तथा साल्व जनपदों की सीमा पर था ।

विलफोर्ड ने लुधियाना से लगभग पचीस मील पश्चिम सतलज के बायें तट पर स्थित वर्तमान तेहोरा को त्रिगर्त की राजधानी निश्चित किया है । पाणिनि ने ५-३-११६ में त्रिगर्त जनपद में आयुधजीवी संघों का उल्लेख किया है उनके अनुसार रावी, व्यास तथा सतलज नदी-द्वनों के बीच का पर्वतीय काँगड़ा प्रदेश, जिसमें उत्तर की ओर लुधियाना और पटियाला तथा दक्षिण की ओर मरु प्रदेश का कुछ भाग सम्मिलित था, त्रिगर्तपट्ट कहलाता था । इसी का प्राचीन नाम जालन्धरायण भी था, जिसका उल्लेख राजन्यादिगण ४।२।५३ में हुआ है । आज भी त्रिगर्त काँगड़ा का प्रदेश जालन्धर कहा जाता है ।

रोखी—पाणिनि ने ४।२।७८ में रोखी नाम के एक स्थान का उल्लेख किया है । यह जिला हिसार का आधुनिक रोड़ी का प्राचीन नाम जान पड़ता है । यह शैरोषक (आधुनिक सिरसा) के पास है । किसी का मत है कि बीकानेर से सत्तर मील पर आधुनिक रोखी का प्राचीन नाम रोखी हो सकता है । केवल अक्षरों की समानता को देखकर ही विद्वानों ने यह अनुमान किया है कोई पुष्ट प्रमाण नहीं मिल सका ।

ऐषुकारिभक्त—पाणिनि ने ४।२।५४ में ऐषुकारिभक्त नाम के एक नगर का उल्लेख किया है । उत्तराख्ययन सूत्र में लिखा है कि कुरु जनपद में इषुकार नाम का एक समृद्धि-शाली मनोहर तथा विशाल नगर था १४-१ । मालूम पड़ता है कि आधुनिक हिसार का प्राचीन नाम ऐषुकारि रहा होगा ।

नड्वल—पाणिनि ने ४।२।८८ में नड्वल नाम के एक नगर की चर्चा की है । यह मारवाड़ का नडौल नगर हो सकता है ।

हौषायण—पाणिनि के ४।२।८० में इसका पाठ है । सम्भवतः यह हिसार जिले की फतेहाबाद तहसील में स्थित आधुनिक दोहावे का प्राचीन नाम हो सकता है । यह स्थान बहुत प्राचीन मालूम पड़ता है यहाँ बहुत से अवशेष भी पाये जाते हैं ।

सराज्ञक—पाणिनि सू० ४।३।६३ में इसका उल्लेख है जिला लुधियाने का आधुनिक ‘सहराला’ प्राचीन सरालक प्रतीत होता है । सहरालिये वैश्य अपने पूर्व पुरुषों का निवास स्थान सहराला मानते हैं ।

प्रस्थल—महाभारत से ज्ञात होता है कि त्रिगर्त का राजा प्रस्थलाधिप भी कहलाता था—“सुशर्मा च नरव्याघ्र-स्त्रिगर्तः प्रस्थलाधिपः ।” विराट् पर्व १७-१९ । शल्य पर्व के सत्ताईसवें अध्याय से भी यही विदित होता है । नन्दलाल डे ने बरुआ के कोष के आधार पर पटियाला को ही प्रस्थल का विकृत रूप मान उसी को प्राचीन प्रस्थल निश्चित किया है । परन्तु यह समुचित नहीं जान पड़ता, क्योंकि पटियाला बहुत प्राचीन नगर नहीं है । यह आला नाम के किसी साधु की पत्ति (दान या भाग) होने के कारण पटियाला कहा जाने लगा । वस्तुतः पर्वत के समीप की समतल भूमि को प्रस्थल कहते हैं अतः मालूम पड़ता है कि समस्त त्रिगर्त का नाम किसी समय प्रस्थल भी था ।

काककूट—महाभारत सभापर्व के अनुसार कालकूट अथवा कलकूट कुलिन्द प्रदेश में था । जब अर्जुन भीम और कृष्ण जरासन्ध को परास्त करने के लिये गुप्तरूप से निकले थे तो यद्यपि उनको कुरु जनपद से पूर्व की ओर जाना चाहिये था तथापि अपने जाने की वास्तविक दिशा को छिपाने के उद्देश्य से वे लोग पहिले कुरुजंगल (वर्तमान रोहतक-हिसार) की ओर गये । वहाँ से उत्तर की ओर कुरुक्षेत्र में पयसर की तरफ मुड़े । कुरुक्षेत्र से ११२ मील तथा कौल ग्राम से दो मील पश्चिम आज भी पयसर नामक सरोवर एक प्रसिद्ध तीर्थ है । उसके बाद कालकूट जनपद पार करके तराई के सटे हुये मार्ग से सरयू तथा गण्डक को पार करते हुये मिथिला पहुँचे । वहाँ से नीचे गंगा पार करके एकदम गोरथ गिरि और राजगृह जा पहुँचे । इस मार्ग में कालकूट ठीक टोंस तथा यमुना के प्रदेश (वेहरादून कालसी) में पड़ता है । वह यमुना की

ऊपरी धारा का यामुन प्रदेश था। अथर्व वेद में हिमालय पर उत्पन्न होने वाले यामुन अञ्जन का उल्लेख मिलता है। अञ्जन के कारण यामुन पर्वत का नाम कालकूट होना उचित भी जान पड़ता है। मालूम पड़ता है कि शिमला शृंखला के कालका का प्राचीन नाम कालकूट रहा होगा और वही विकृत होकर कालका हो गया।

भारद्वाज—पाणिनि सूत्र ४।२।१४५ की व्याख्या में काशिकाकार ने भारद्वाज शब्द को देशवाचक माना है न कि गोत्रवाचक। पाणिनि ने भारद्वाजों की शाखा को आत्रेय कहा है। मुर्कण्डेय पुराण की जनपदसूची में आत्रेय तथा भारद्वाज साथ-साथ उल्लिखित है। पाजिटर का कहना है कि गढ़वाल प्रदेश को प्राचीन काल में भारद्वाज कहते थे।

सैरन्ध्र—पटियाला के उत्तर २३ मील पर स्थित वर्तमान सरहिन्द सम्भवतः बाराही संहिता का १४-२६ सिरन्ध्र अथवा सैरन्ध्र है। महाभारत में लिखा है कि द्रोपदी विराट की सभा में सैरन्ध्री नाम धारण कर दासी के रूप में रहती थी—“नास्मि देवी न गन्धर्वी न दक्षीन च राक्षसी। सैरन्ध्री तु भुजिष्यास्मि सत्यमेतद् ब्रवीमि ते ॥” विराट पर्व ६-१७। सैरन्ध्री का शब्दार्थ सिरन्ध्र देशवासिनी भी होता है। पाण्डव लोग सिरन्ध्र के समीप होकर ही विराट नगर गये भी थे। अतः यह निश्चित सा जान पड़ता है कि सरहिन्द ही प्राचीन सैरन्ध्र है।

कुलूत—जालन्धर के पूर्वोत्तर सतलज के दक्षिण तट पर कुलूत राज्य स्थित था। महाभारत सभापर्व के सत्ताईसवें अध्याय में उत्तर भारत के वर्णन में उलूक नाम के एक देश का चर्चा है सम्भवतः कुलूत ही के लिये उलूक का प्रयोग किया गया है। श्युआन् चुआंग ने भी सातवीं शताब्दी की अपनी यात्रा के विवरण में ‘क्युलूतो’ नाम के एक देश का उल्लेख किया है। मुद्राराक्षस में लिखा है (१-५) कि जब मलयकेतु ने मगधराज चन्द्रगुप्त पर आक्रमण किया था तब उसका सहायक कुलूत का राजा भी था। मालूम पड़ता है कि आधुनिक कुलू का ही प्राचीन नाम कुलूत था। कुलूत देश के उत्तर चन्द्रभागा की दून का प्रदेश ‘चम्पा’ आधुनिक (चम्बा) कहा जाता था।

कुरुक्षेत्र—वास्तव में कुरुजनपद, कुरु, कुरुक्षेत्र तथा कुरु जाङ्गल नाम के तीन अवान्तर भागों में विभक्त था। गङ्गा तथा यमुना का मध्यवर्ती प्रदेश प्रधान कुराष्ट्र था। उसकी राजधानी हस्तिनापुर थी। हरियाणा तथा हाँसी, हिसार का प्रदेश कुरुजांगल नाम से प्रसिद्ध था। उसके उत्तर की ओर कुरुक्षेत्र था। कुरुक्षेत्र में स्थाण्वीश्वर (थानेश्वर) कैथल (कपिष्ठल) तथा कनभि मुख्य नगर थे। ये तीन प्रदेश एक दूसरे से मिले हुए थे। कुरुक्षेत्र सरस्वती के दक्षिण से दृषद्वती के उत्तर तक विस्तृत था—“दक्षिणेन सरस्वत्या दृषद्वत्युत्तरेण च। ये वसन्ति कुरुक्षेत्रे ते वसन्ति त्रिविष्टपे ॥” महाभारत वन पर्व ८३।८४। कुरुक्षेत्र का एक भाग समन्तपञ्चक भी कहलाता था—“तस्मिन्तकस्मिन्तकयो-र्यदन्तरम् रामहृदानाञ्च मचक्रुकस्य। एतत् कुरुक्षेत्रसमन्त-पञ्चकं पितामहस्योत्तरवेदिरुच्यते ॥” शल्यपर्व ७-९। समन्तपञ्चक का शब्दार्थ पाँच सरोवरों का समीपवर्ती प्रदेश होता है। ये सरोवर कुरुक्षेत्र में परशुराम द्वार मारे गये क्षत्रियों के रक्त से बने थे और परम पवित्र माने जाते थे—“ततो रामहृदान् गच्छेत् तीर्थसेवी समाहितः। तत्र रामेण राजेन्द्र तरसा दीप्ततेनसा। क्षत्रमुत्साद्य वीरेण हृदाः पञ्च निवेशिताः ॥” वन पर्व ८३-२७।

भारत की अनेक प्राचीन घटनाओं से कुरुक्षेत्र का सम्बन्ध बढ़ा घनिष्ठ था। प्रागैतिहासिक काल की अनेक घटनायें वहाँ घटी थीं। पुराणों में लिखा है कि आदित्य तीर्थ अथवा सूर्यतीर्थ में तप करने के पश्चात् सूर्य को ग्रहों का आधिपत्य प्राप्त हुआ था। विष्णु ने मधु कैटभ नामक दैत्यों का वध भी वहीं किया था। शल्य पर्व ४८-१७ २२। सूर्यतीर्थ सम्भवतः थानेश्वर के दक्षिण पूर्व कुछ मील पर स्थित है। ब्रह्मयोनि नाम के स्थान पर ब्रह्मा ने सृष्टि का श्रीगणेश किया था तथा उसी स्थान पर विश्वामित्र को ब्रह्मत्व की प्राप्ति हुई थी शल्यपर्व ३९-३५, ३७। शल्यपर्व में बलभद्र की यात्रा के वर्णन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि ब्रह्मयोनि पृथूदक के समीपवर्ती था।

पृथूदक—पृथूदक थानेश्वर के पश्चिम चौदह मील पर स्थित आधुनिक पेहोवा माना जाता है। परन्तु वर्तमान पेहोवा सरस्वती के तट पर स्थित है और महाभारत के अनुसार उसकी बायें तट पर स्थित होना चाहिये—सरस्व-

त्युत्तरे तीरे यस्त्यजेदात्मनस्तनुम् । पृथूदके जप्पपरो नैनं श्वो मरुणं तपेत् ॥” शल्यपर्व ४४-३३, ३४ ।

पृथूदक स्थान का बड़ा महत्त्व माना जाता है । यहीं सरस्वती में स्नान करने से राजा वेन का कुष्ठरोग निवृत्त हुआ था । जब वेन के पुत्र पृथु का जन्म हुआ तो प्रजा को बड़ा हर्ष हुआ । वेन के मरने पर पृथु ने विधिपूर्वक अपने पिता की अन्त्येष्टि क्रिया की । क्रिया की समाप्ति के पश्चात् पृथु बारह दिन तक वहीं सरस्वती के तट पर बैठ कर प्रत्येक यात्री को जल देते रहे । इस कारण उस नगर का नाम पृथूदक पड़ गया ।

स्थायवीश्वर—कुरुक्षेत्र के स्थाणु तीर्थ में स्थाणु (शिव) ने सरस्वती की आराधना की थी तथा वहीं उनके पुत्र स्कन्द ने तारकासुर से युद्ध करने के लिये देवसेनानी निर्वाचित हुये थे -- शल्यपर्व ४२-४७। इसका आधुनिक नाम थानेश्वर है । इसके आस-पास का समस्त प्रदेश महाभारत के युद्ध के अनेक दृश्यों से सम्बद्ध है । चक्रतीर्थ वह स्थान है जहाँ श्रीकृष्ण ने अजेय भीष्म पितामह को मारने के लिये अपना प्रणभङ्ग कर रथचक्र को उठा लिया था भीष्म पर्व १०६। चक्रव्यूह नामक स्थान पर द्रोणाचार्य ने कौरव सेना की चक्रव्यूह की रचना की थी—द्रोण पर्व ३४। यहीं अभिमन्यु मारा गया था—द्रोण पर्व ४८। इसी कारण उस स्थान को आजकल ‘अभिन’ भी कहते हैं ।

शर्यणावत—ऋग्वेद १-८४-१४ में उल्लेख है कि इन्द्र ने शर्यणावत में प्राप्त दधीचि की अस्थि से वृत्र का वध किया था । कुछ विद्वानों की धारणा है कि शर्यणावत शब्द शर्यणा से बना हुआ है । शर्यणा एक प्रदेशविशेष का नाम है—और शर्यणावत एक सरोवर है । यह कुरुक्षेत्र में है । “शर्यणा नाम देशः तेषामदूरभवं सरः शर्यणावत् । शर्यणावच्च वै नाम कुरुक्षेत्रस्य जघनार्धे सरः स्पन्दते—ऋग्वेद १।८४।१३।२ सायण भाष्य । अतः यह अनुमान किया जाता है कि रामहृद का ही एक नाम शर्यणावत् भी था तथा वहाँ के निवासी शर्यणावत कहे जाते थे । महाभारत में लिखा है—“ततो गच्छेत धर्मज्ञदधीचस्य महात्मनः । तीर्थं पुण्यतमं राजन् पावनं लोकविश्रुतम् । यत्र सारस्वतो जातः सोऽङ्गिरास्तपसो निधिः॥” वन पर्व ८३-१८६।१८७ । इसी को सरस्वती तीर्थ भी कहते थे । अङ्गिरा ऋषि का जन्म स्थान

भी यही है । सोमतीर्थ की यात्रा के पश्चात् बलमद्र भी वहाँ गये थे । तारकासुर यहीं मारा गया था—शल्य पर्व ४३-४६-८ ।

महाभारत आदि पर्व २०८-७ में लिखा है कि सुन्द तथा उपसुन्द नाम के दो असुर कुरुक्षेत्र में किसी समय शासक रह चुके थे । नमुचि नामक राजस का भी सम्बन्ध कुरुक्षेत्र से था । ऋग्वेद १-५३ में भी इस ओर संकेत मिलता है । महाभारत के वर्णन से ज्ञात होता है कि कुरुक्षेत्र के मुख्य चार प्रधान द्वार थे जिनके रक्षक मङ्गण, मचक्रु, तरुन्त तथा अरुन्त नाम के चार यक्ष थे—वन पर्व ८३-६-१५।५२।२००। प्रथम द्वार का नाम सप्त सारस्वत अथवा सात नदियों का सङ्गम था —“सप्त सारस्वतं तीर्थं ततो गच्छेन्नराधिप । यत्र मङ्गणकः सिद्धो महर्षिलोकविश्रुतः” वन पर्व ८३-११६। गदा पर्व में इन सातों नदियों का नाम भी दिया गया है । परन्तु प्रयाग की त्रिवेणी के समान कुछ नदियाँ अदृश्य भी हैं । वहीं दो अन्य संगमों की चर्चा की गई है ; परन्तु वर्तमान मानचित्रों में उनका कहीं पता नहीं चलता । पश्चिमी में कौशिकी तथा दृषद्वती का तथा थानेश्वर के नीचे सरस्वती तथा अरुणा का संगम हुआ है ।

कपिष्ठल—कौशिकी तथा दृषद्वती नदियों के सङ्गम के समीप व्यास स्थली नामक तीर्थ है, आजकल उसका नाम ‘वस्थली’ हो गया है । कर्नाल जिले में सरस्वती तथा दृषद्वती के सङ्गम के समीप कपिष्ठल नाम का तीर्थ है जिसको आधुनिक समय में कैथल कहते हैं—“कपिष्ठलस्य केदारं समासाद्य सुदुर्लभम् । अन्तर्धानमवाप्नोति तपसा दग्धकिल्बिषः॥” वन पर्व ८३-७४ ।

स्रुघ्न—यह स्थान थानेश्वर के दक्षिण-पश्चिम लगभग पचास मील पर स्थित है । पाणिनि के समय यह नगर बड़ा ही प्रसिद्ध था, क्योंकि उनके सूत्र ४।३।७४, ४।३।६० तथा ४।३।९५ की व्याख्या में काशिकाकार ने स्रुघ्न से आने वाले दूत तथा मार्ग के लिये तथा स्रुघ्न की दिशा में जाने वाले मार्ग के लिये भी स्रुघ्न शब्द का उदाहरण दिया है ।

परीणव—कुरुक्षेत्र के दक्षिण रोहतक जिला है । प्राचीन काल में यह यौधेय गण की राजधानी था । इसी का प्राचीन नाम रोहितक अथवा रोहीतक था । महाभारत समापर्व

३२-२-६ में उल्लेख है कि इन्द्रप्रस्थ के पश्चिम का यह प्रथम स्थान है जिसको नकुल ने पश्चिम दिग्विजय की यात्रा में सबसे पहिले जीता था। आधुनिक मानचित्र में भी यह इन्द्र प्रस्थ के ठीक पश्चिम है। धार्टन ने लिखा है कि यह दिल्ली से पश्चिमोत्तर बयालीस मील पर है। राजतरङ्गिणी में भी इस स्थान की चर्चा मिलती है—“रोहीत-देशजातानां निवेशाय द्विजन्मनाम् । महागुणो लोएमठं प्रण्येष्टं चकार सः ॥” राज० तर० ४।१२। महाभारत काल में यह वन्य प्रदेश था। राजतरङ्गिणी में भी इसके एक भाग को रोहितक जंगल लिखा है—“तथा रोहितकारणं मरु-भूमिश्च केवला ।” ३।१६। रोहितक वृक्षों की अधिकता के कारण इस प्रदेश का रोहितक नाम पड़ना प्रतीत होता है। डा० राक्सवर्ग ने लिखा है कि यह वृक्ष बहुत बड़ा तथा कांटेदार होता है और बहुत दिनों में बढ़ता है। उत्तर प्रदेश में भी यह वृक्ष यत्र तत्र पाया जाता है यहाँ इसको रेवा अथवा जंगली बबूल कहते हैं। इसका लैटिन नाम *Andersonia Rohitak* है। इस प्रदेश के निवासी मत्त मयूरक भी कहे जाते थे। परन्तु इस नामकरण का कारण ज्ञात नहीं है। सम्भवतः वे लोग आधुनिक मेयरजनों के (जो कि मेयरवारा-मेवाड़ और मारवाड़ के मध्य में पाये जाते हैं) पूर्व पुरुष रहे होंगे।

सिरीश—रोहितक के आगे सिरीश प्रदेश है। पाणिनि ने कुमुदादिगण ४।२।८० में सिरीश का उल्लेख किया है। सम्भवतः सिरीश वृक्ष (सिरस) की प्रचुरता के कारण उस प्रदेश का यह नाम पड़ा हो। इस जनपद का राजा सैरीशक कहा जाता था। सम्भवतः यह जनपद हाँसी तथा भाटनेर के मध्य में स्थित आधुनिक सिरसा के समीप स्थित रहा होगा।

इन्द्रप्रस्थ—इन्द्रप्रस्थ को युधिष्ठिर ने वसाया था। इसको हरिप्रस्थ, शक्रप्रस्थ आदि अनेक नामों से पुकारते थे। यह प्राचीन काल में बड़ा प्रसिद्ध नगर था—“हरिर्हरिप्रस्थमथ प्रतस्थे ।” शिशुपालवध-३।१ “उवास नगरे रम्ये शक्रप्रस्थे महामना ।” आदि पर्व १-२१६-६३। यह नगर खाण्डवप्रस्थ वन के मध्य में था। यह यमुना के बायें तट पर था, क्योंकि सौराष्ट्र से राजसूय यज्ञ में युधिष्ठिर से मिलने के लिए इन्द्रप्रस्थ जाते समय श्रीकृष्ण को यमुना पार करना पड़ा

था—“यमुनामतीतवानथ शुश्रुवानमुम्” शिशु० १३-१। नई दिल्ली इन्द्रप्रस्थ के स्थान पर बसी हुई है। वहाँ प्राप्त हुये अवशेषों से उसके इन्द्रप्रस्थ के स्थान पर होने में कोई सन्देह नहीं, अन्तर केवल इतना है कि वर्तमान दिल्ली यमुना के दाहिने तट पर है और इन्द्रप्रस्थ बायें तट पर था। बहुत सम्भव है यमुना ने अपना प्राचीन मार्ग छोड़ दिया हो।

व्रज—श्रीकृष्ण का बाल्यकाल मथुरा से कुछ दूरी पर स्थित नन्द के गोकुल में व्यतीत हुआ था, इस प्रदेश को व्रज कहते हैं। इस प्रदेश का दूसरा नाम शूरसेन भी था। इसकी गणना सोलह महाजनपदों में थी। यह जनपद कुरु के दक्षिण तथा चेदि के पश्चिमोत्तर यमुना के तटपर स्थित था। व्रज की राजधानी मथुरा थी। श्रीकृष्ण ने मथुरा के समीप ही वृन्दावन में यमुना में रहने वाले कालिय सर्प का दमन किया था। मथुरा से लगभग पन्द्रह मील पश्चिम गोवर्द्धन पर्वत है।

मथुरा—रामचन्द्र के छोटे भाई शत्रुघ्न ने मथुरा को वसाया था—वन पर्व १-१२। ३-४। शूरसेन जनपद की राजधानी यहीं थी। श्री कृष्ण ने यहीं कंस का वध किया था। मथुरा यमुना नदी के दाहिने तट पर अर्ध चन्द्राकार बसी हुई है। कालयवन के आक्रमण के पश्चात् श्रीकृष्ण ने मथुरा को त्याग दिया। परन्तु उस पर उनका अधिकार बना ही रहा। क्योंकि उसके आक्रमण के बहुत पीछे सुभद्रा के विवाह के अवसर पर अर्जुन को दहेज में दस हजार उत्तम गायें दी गयी थीं—“प्रददौ कृष्णस्तस्मै गवामयुतमेव च । श्रीमान् माथुरदेश्यानां दोग्ध्रीणां पुण्यवर्चसाम् ॥” आदि पर्व २१६-४६। श्युआन चुआंग की भारत यात्रा के समय भी मथुरा अत्यन्त समृद्ध नगरी थी। भारतीय इतिहास वेत्ताओं को सन् १०१७ में महमूद गजनी की निर्दय लूट भली-भाँति विदित ही है।

पाञ्चाज (प्रत्यग्रथ)—गङ्गा तथा राम गङ्गा के मध्य में पांचाल जनपद था। इसको प्रत्यग्रथ भी कहते थे। महाभारत में प्रत्यग्रथ नाम नहीं मिलता और पाणिनि के साहित्य में पांचाल। परन्तु कोशों में दोनों नाम मिलते हैं—“प्रत्यग्रथा-स्त्वहिच्छत्रा साल्वास्तु कार कुत्तियाः” हेमचन्द्र। इस जनपद में रथस्था अथवा रथस्या (रामगंगा) नाम की नदी बहती

है। यह जनपद उत्तर पांचाल तथा दक्षिण पांचाल नाम के दो भागों में विभक्त था। उत्तर पांचाल की राजधानी का नाम अहिच्छत्रा, अहिच्छेत्र अथवा अहिस्थल था। द्रुपद के समय उत्तर पांचाल चम्बल के तट से लेकर उत्तर की ओर गंगा द्वार तक विस्तृत था। इस भाग को द्रोणाचार्य ने द्रुपद से ले लिया था—“अहिच्छत्रं च विषयं द्रोणः समभिमद्यत” महाभारत आदि पर्व १३७-७०। रामायण की अहिस्थली भी यही है। रामायण अयोध्याकाण्ड में उल्लेख है कि भरत ने केकय जनपद से लौटने के समय अहिस्थली में रामगंगा को पार किया था। रामगंगा का एक नाम हिरण्यवती भी था।

शुश्रूषा चूर्वांग ने वहाँ एक नागहृद का होना लिखा है। यहाँ राजा आदि का बनकाया हुआ एक किशो है जिसको आदिकोट कहते हैं। यह किला गांधन नदी तथा रामगंगा के मध्य में है। इतिहास के अधिकांश विद्वानों ने वरेली के समीपवर्ती रामनगर को अहिच्छत्र माना है। परन्तु इस स्थापना में कुछ आपत्तियाँ उपस्थित की जा सकती हैं। जेनरल कनिंघम तथा शुश्रूषा चूर्वांग आदि ने अहिच्छत्र में एक किले का होना अवश्य लिखा है और रामनगर के पास कोई किला नहीं है। रामनगर को अहिच्छत्र मानने में सबसे बड़ी आपत्ति यह है कि महाभारत में अहिच्छत्रा का जो वर्णन मिलता है वह इस स्थापना के विरुद्ध है। आदि पर्व तथा दम्भ पर्व १२१-१२८ के अनुसार द्रोण के पिता भरद्वाज तथा द्रुपद के पिता पृषत् की मित्रता थी, अतः द्रुपद भरद्वाज के आश्रम में नित्य आया जाता करते थे तथा द्रोण के साथ खेलते और पढ़ते थे। पृषत् के मरने पर द्रुपद पांचाल का राजा हुआ। जब द्रोण परशुराम से धनुर्वेद का अध्ययन करके आये तब द्रुपद से मिले और कहा कि हम आप के बालमित्र हैं मेरा नाम द्रोण है। इस पर द्रुपद ने उनका अपमान किया। उन्होंने कहा कि मूर्ख! कहीं दरिद्र तथा सम्पन्न व्यक्तियों में मित्रता हो सकती है। इस पर रुष्ट होकर द्रोण उनके राज्य से निकल कर हस्तिनापुर पहुँचे और कौरव तथा पाण्डवों को धनुर्विद्या की शिक्षा देने लगे। उन्होंने गुरुदक्षिणा में अर्जुन द्वारा द्रुपद को पराजित कर उनका आधा राज्य अर्थात् उत्तर पांचाल ले लिया। दक्षिण पांचाल उनको छोड़ दिया। तब द्रुपद से कहा कि

अब तो मैं आप का मित्र हो सकता हूँ न, क्योंकि अब हम दोनों बराबर हैं। द्रुपद बड़ा लज्जित हुआ।

उत्तर पाञ्चाल की राजधानी अहिच्छत्र में द्रोण के नाम पर एक वृहत् सरोवर बना, जिसका नाम द्रोण सागर पड़ा। रामनगर के आस-पास इस प्रकार का कोई सरोवर नहीं है।

महाभारत, उद्योगपर्व से ज्ञात होता है कि महाभारत युद्ध की तैयारी होने के समय दुर्योधन के मित्र राजाओं को सेनायों अहिच्छत्रा में ठहराया गया था, क्योंकि इतनी सेनाओं को हस्तिनापुर में कैसे ठहराया जा सकता था। दुर्योधन के मित्र राजा लोग प्रतिदिन उसकी सभा में उपस्थित हुआ करते थे। हस्तिनापुर से रामनगर लगभग सौ मील की दूरी पर है अतः इतनी दूर की यात्रा प्रतिदिन असम्भव है। शुश्रूषा चूर्वांग ने लिखा है कि अहिच्छत्रा अति सुरक्षित स्थान है, क्योंकि यह पहाड़ों से घिरा हुआ है। रामनगर के आस-पास कोई पहाड़ नहीं है। अतः अहिच्छत्रा की स्थिति कहीं अन्यत्र होनी चाहिये। नैनीताल जिले में काशीपुर नाम का एक स्थान है। वह अहिच्छत्र हो सकता है क्योंकि वह हस्तिनापुर से दस बारह कोस की दूरी पर है, पर्वतों के समीप है। वहाँ प्राचीन दुर्ग के अवशेष भी प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं अतः काशीपुर को अहिच्छत्र होने के अनेक पुष्ट प्रमाण मिलते हैं।

पद्मपुराण में अहिच्छत्र में एक देवी के स्थान का वर्णन मिलता है। रामनगर में देवी का कोई मन्दिर नहीं है। काशीपुर में किले के पूर्व लगभग एक मील पर देवी का एक मन्दिर भी है। काशीपुर के उत्तर पर्वतशृङ्खला का प्रारम्भ हो जाता है। वहाँ तीन वृहत् सरोवर हैं। उनमें से एक का नाम द्रोण सागर है। वह किले के प्राकार से सटा हुआ है। स्थानीय जनों का कहना है द्रोण का आश्रम वहीं था। दूसरे सरोवर का नाम गिरिताल है। यह दो मील लम्बा तथा एक मील चौड़ा है। तीसरे को खोखरे का ताल कहते हैं। यह भी पर्याप्त लम्बा चौड़ा है। अतः काशीपुर को अहिच्छत्र मानने में कोई भी आपत्ति नहीं मालूम पड़ती।

काम्पिल्य - दक्षिण पाञ्चाल की राजधानी का नाम काम्पिल्य था। यह वदायूँ तथा फर्रुखाबाद के मध्य में गङ्गा के तट पर स्थित आधुनिक काँपिल अथवा कपिलो माना जाता

है। दक्षिण पाञ्चाल के दूसरे प्रसिद्ध नगर का नाम माकन्दी था, परन्तु अभी तक इसका निश्चय नहीं हो सका। वह भी फर्रुखाबाद के समीप ही कहीं रहा होगा। कथा सरित्सागर में उसकी ज्ञर्चा मिलती है। “अस्ति माकन्दी नाम नगरी जाह्नवी तटे।” किसी समय दक्षिण पाञ्चाल में कान्यकुब्ज जनपद भी सम्मिलित था।

आसन्दीवत्—कान्यकुब्ज का प्राचीन नाम आसन्दीवत् था। पाणिनि के ८।२।१२ तथा ४।२।८६ सूत्रों में इसका उल्लेख है। यह परीक्षित के पुत्र जनमेजय की राजधानी थी। जनमेजय ने अपना राजसूय यज्ञ यहीं किया था। आसन्दीवत् का शब्दार्थ ‘राजसिंहासन का स्थान’ होता है। इसी के ठीक स्थान पर आजकल कन्नौज बसा हुआ है। काशिकाकार वामन ने इसको भी अहिस्थल का पर्याय माना है।

रथस्था—पाणिनि ने पारस्करादिगण ६।१।१५७ में रथस्था नदी का उल्लेख किया है इसी का नाम रथस्था भी है। पतञ्जलि ने इसका नाम रथस्या लिखा है। जैमिनीय ब्राह्मण की भूमिका में डा० कलान ने भी इसका नाम रथस्था ही स्वीकृत किया है। महाभारत के आदिपर्व १७२।२० में सरस्वती तथा गण्डकी के मध्य में रथस्था नाम की पवित्र नदी का उल्लेख है। ऋक् प्रातिशाख्य ४।७।५ में भी रथस्था नदी का नाम आया है, इससे ज्ञात होता है कि एक ही नदी का रथस्था, रथस्पा या रथस्या नाम है। इम्पीरियल गजेटिअर उत्तर प्रदेश से ज्ञात होता है कि पाञ्चाल जनपद की रामगंगा नदी, जिसका एक नाम रथबाहिनी भी है, का ही प्राचीन नाम रथस्था था। आजकल भी रामगंगा के ऊपरी भाग को स्थानीय जन बहुत कहते हैं। यूनानी लेखकों ने लिखा है कि गंगा से ११६ मील पूर्व ‘रहदफा’ नाम की एक नदी है। बहुत तथा रहदफा ये दोनों ही रथस्था के ही विकृत रूप जान पड़ते हैं। ऊपर लिखा जा चुका है कि पाञ्चाल का एक नाम प्रत्यग्रथ भी था तथा वहीं रथस्था नदी भी बहती है। दोनों का अर्थ भी समान है—जहाँ रथ स्थिर हो जाय। अथवा पीछे मुड़ जाय।

यद्यपि यूनानी लेखकों के अनुसार ‘रहदफ’ एक नगर ज्ञात होता है। जो कि सीमा प्रान्त से पाटलिपुत्र नाम वाले उत्तरपथ, राजमार्ग (G. T. R.) पर स्थित एक पड़ाव

था; तथापि भेलम तथा व्यास, सततज तथा यमुना के मध्य के पड़ावों के वर्णन से यह नदी का ही नाम मालूम पड़ता है। यह गंगा तथा सरयू के मध्य में बड़ी नदी भी है। गंगा तट पर स्थित हस्तिनापुर से रामगंगातट पर स्थित बरेली की दूरी तथा बरेली से कन्नौज की दूरी बराबर है, कन्नौज के पास रामगंगा गंगा से मिली है। राजमार्ग के पड़ावों के लिये दूरी समान होनी भी चाहिये अतः ‘रहदफ’ नदी का नाम प्रतीत होता है।

प्रकण्व—पाणिनि के अनुसार प्रकण्व भारत की पश्चिमी सीमा पर स्थित था। पाणिनि सू० ६।१।१५३ में ‘प्रस्कण्व’ एक ऋषि के नाम के लिये आया है। उस सूत्र के प्रत्युदाहरण के लिये ‘प्रकण्व’ देश के लिये प्रयुक्त हुआ है। हिरोदोतस ने ‘परिकनिओई’ नाम की एक जाति का उल्लेख किया है। स्टेनकोनों ने फरगना के जनों को परिकनिओई निश्चित किया है। इससे ज्ञात होता है कि फरगना का प्राचीन नाम प्रकण्व था।

गब्दिका—पाणिनि ने सिन्धवादिगण ३।३।६३ में गब्दिका का उल्लेख किया है। महाभाष्यकार गब्दिका को आर्यावर्त के बाहर मानते हैं। सम्भव है धौलाघार से ऊपर चंबा राज्य में गहियों का गहेरन प्रदेश प्राचीन गब्दिका हो।

पटञ्चर—पा० के पल्लवादिगण ४।२।११ में पटञ्चर का उल्लेख मिलता है। इस समय जहाँ पाटोदी है बहुत सम्भव है सरस्वती के दक्षिण पाटोदी के आस पास का समस्त प्रदेश पटञ्चर नाम से प्रसिद्ध रहा हो। यह आभीरों का निवास स्थान था।

वर्मती—पा० सू० ४।३।६४ में वर्मती का नाम आया है। सम्भव है यह बीमरान का प्राचीन नाम हो। यह स्थान बहुत प्राचीन मालूम पड़ता है तथा यहाँ खरोष्ठी के कुछ लेख भी प्राप्त हुये हैं।

साङ्काश्य—पा० सू० ४।२।८० से ‘साङ्काश्य’ एक स्थान का नाम प्रतीत होता है। रामायण में भी साङ्काश्य का उल्लेख मिलता है। किसी समय इस पर मिथिला के राजा जनक के भाई कुशध्वज का अधिकार था। प्रो० एच० एच० विल्सन ने अपने विष्णुपुराण में काशी को साङ्काश्य माना है परन्तु यह उनका भ्रम है क्योंकि काशी के लिये इस नाम का प्रयोग कहीं भी नहीं मिलता। श्युआन् चुआंग ने

कान्यकुब्ज जाते समय इस स्थान को देखा था। उसने इसका नाम 'सेङ्कियासे' लिखा है। आजकल इसको 'संकसिया' कहते हैं। यह फर्रुखाबाद जिले में इक्षुमती (ईखन) नदी के तट पर स्थित है। महाभारत काल में यह दक्षिण पाञ्चाल का एक भाग था।

कौशाम्बी—कुरुक्षेत्र के युद्ध में द्रुपद तथा उनके पुत्रों के मारे जाने पर दक्षिण पाञ्चाल कुरु जनपद में विलीन हुआ जान पड़ता है। क्योंकि अश्वमेध पर्व में दक्षिण पाञ्चाल की पृथक् सत्ता का उल्लेख नहीं मिलता। कुछ दिनों के बाद जब कुरु जनपद की राजधानी हस्तिनापुर गंगा में डूब गयी, तब पाण्डवों ने प्रयाग के पश्चिम लगभग तीस मील पर स्थित कौशाम्बी को अपनी राजधानी बनाया। उसको नव कौशाम्बी कहने लगे। आजकल उसका नाम कोसम है। जेनरल कनिंघम को कोसम में पत्थर का एक खम्भा मिला था जिस पर कौशाम्बी लिखा था। कथासरित्सागर में कौशाम्बी की चर्चा मिलती है। वत्स जनपद की यह राजधानी थी। वत्सराज उदयन भी यहीं रहते थे। इसका एक नाम वत्सपत्तन भी था—“कौशाम्बी वत्सपत्तनम्” हेमचन्द्र ४।४१। महाभारत में अनेक स्थलों पर इसकी चर्चा मिलती है। पाणिनि ने भी ४।२।१७ में नद्यादिगण में इसका उल्लेख किया है।

प्रतिष्ठान—यह प्राचीन काल में राजा पुरुरवा की राजधानी था। यह प्रयाग से पूर्व गंगा के बायें तट पर स्थित था। हरिवंश पुराण में इसकी स्थिति का स्पष्ट उल्लेख किया गया है १४११।१२। विक्रमोर्वशीय नाटक से भी इसकी स्थिति पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। उसमें लिखा है कि प्रतिष्ठान नगरी का प्रतिविम्ब सङ्गम के समीप गंगा के पुनीत जल में पड़ता रहता है। अतः आधुनिक भूँसी को प्रतिष्ठान मानना समुचित जान पड़ता है। यह गंगा के तट पर प्रयाग के पूर्व स्थित है तथा अतिप्राचीन भी जान पड़ता है।

अश्मक—उपरिलिखित प्रतिष्ठान के अतिरिक्त प्राचीन काल में एक और भी प्रतिष्ठान था। वह अश्मक जनपद की राजधानी था। अश्मक जनपद गोदावरी के दक्षिण सहायि पर्वत शृंखला (पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग) तक विस्तृत था। आजकल उसको पैठन कहते हैं। पाणिनि ने ४।१।१७३

में अवन्ति तथा अश्मक को साथ-साथ लिखा है। उनके आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह एक राज जनपद था।

अश्मक जनपद के सम्बन्ध में पुराणों में एक कथा मिलती है। लिखा है कि राजा कल्माषपाद की पत्नी मदयन्ती को वसिष्ठ के आशीर्वाद से पति के समागम के बिना ही गर्भ रह गया। सात वर्ष तक प्रसव नहीं हुआ। उसने किसी नुकीले पत्थर से गर्भाशय को विदीर्ण कर दिया। जो बच्चा पैदा हुआ उसका नाम अश्मक पड़ा। उसके वंशज भी अश्मक कहलाये तथा जनपद का नाम भी अश्मक पड़ गया।

अजाद—यह नाम कहीं नहीं मिलता। केवल पा० सू० ४।१।१०१ की व्याख्या से ज्ञात होता है कि यह एक जनपद था। मालूम पड़ता है कि वकरियों के चरागाह की अधिकता के कारण उस जनपद का यड़ नाम रख दिया गया। सम्भव है यह चम्बल तथा यमुना मध्यवर्ती इटावा जिले का प्रदेश हो, क्योंकि आजकल भी यहाँ वकरियों के चरने के लिये पर्याप्त चरागाह हैं तथा वहाँ वकरियाँ भी उत्तम जाति की पाई जाती हैं उनको यमुना पारी कहते हैं।

वारणावत—महाभारत में वर्णित गंगा दोआब के छोटे-छोटे स्थानों में वारण अथवा वारणावत उल्लेखनीय है। यहीं लाक्षागृह का निर्माण कराकर कौरवों ने पाण्डवों को जला देने का षड्यन्त्र किया था। यह स्थान गंगा तट पर स्थित था; क्योंकि पाण्डवों ने वारणावत से निकलकर गंगा को पार किया था। वह हस्तिनापुर के दक्षिण पूर्व स्थित था आदि पर्व १४८।१९।२१। उपर्युक्त वर्णन से ज्ञात होता है कि इलाहाबाद जिले का बराबँ—जो कि फतेहगढ़ से उत्तर पश्चिम की ओर आठ मील पर है प्राचीन वारणावत है। यह प्राचीन स्थान मालूम पड़ता है। वहाँ एक छोटे से राजा भी रहते हैं।

हरिद्वार—इसका एक नाम मायापुरी भी है। यह सिवालिक शृंखला की दक्षिणी तलहटी में गंगा तट पर स्थित है। संस्कृत साहित्य का गंगाद्वार यही है। गंगा नदी यहीं पर्वत को छोड़कर समतल भूमि में उतरी है। इसके समीप कनखल नाम का एक कस्बा है। प्राचीन काल में हरिद्वार के समीपवर्ती पर्वतों का नाम कनखल था; क्योंकि

महाभारत वन पर्व १३५-५ में कनखल का प्रयोग बहु-वचन में मिलता है—“एते कनखला राजन् ऋषीणां दयिता नगाः ।” इसके समीप ही कपिल तीर्थ था, जिसको आजकल भी कपिल स्थान कहते हैं ।

बिल्वक—पाणिनि सू ६।४।१५३ से यह एक जनपद प्रतीत होता है । यह कोई छोटा जनपद रहा होगा ; क्योंकि साहित्य में कहीं इसका नाम नहीं मिलता । हरिद्वार से थोड़ी दूर पर लगभग एक मील पश्चिमोत्तर पहाड़ी के नीचे एक तीर्थ आजकल प्रसिद्ध है । यहाँ नीम के वृक्ष के नीचे बिल्व-केश्वर नामक शिवलिङ्ग है । स्थानीय जनों का कहना है कि उस प्रदेश में पहिले बिल्व का वन था । सम्भव है उसके पार्श्ववर्ती प्रदेश का नाम बिल्वक रहा हो ।

किरात—हरिद्वार के आगे पूर्वी गढ़वाल में सुबाहु का राज्य था । उस राज्य में किरात, तञ्जण तथा पुलिन्द जाति के जन रहते थे । महाभारत में किरातों की पर्याप्त चर्चा मिलती है । सभापर्व में लिखा है कि भीमसेन ने विदेह राज्य में स्थित होकर सात किरात राजाओं को परास्त किया था । प्राचीन विदेह जनपद में दरभङ्गा जिला तथा पूर्वी नेपाल का कुछ भाग सम्मिलित था—सभापर्व ३०।१५। महाभारत में ही अन्यत्र उल्लेख है कि किरात बड़े भयङ्कर घनुर्धर होते थे, वे चमड़ा पहिनते तथा फल मूल और मांस पर जीवन-निर्वाह करते थे । सभापर्व ५२।२। अमरकोश में चिरायता का एक पर्याय ‘किराततिक्त’ २।४।११३ (किरात जनपद का कड़ुआ पौधा) लिखा है यह पौधा शिमला से लेकर पूर्वी नेपाल के मोरंग जिले तक प्रचुरता से पाया जाता है यू० सी० दत्त मेटेरिया मेडिका पृ० २००। राज निघण्टु में चिरायते का एक पर्याय नेपाल (नेपाल में उत्पन्न होने वाला) लिखा है ।

उपरिलिखित उद्धरणों से ज्ञात होता है कि किरात जन हिमालय की ढालों पर गढ़वाल से लेकर समुद्रतटवर्ती ‘वारिश’ की सीमा तक के विस्तृत प्रदेश में रहते थे । वारिश आधुनिक बङ्गाल (पूर्वी) में बाकरगंज जिले का वारी साल सब डिविजन हो सकता है । यह पूर्वी बङ्गाल में दक्षिण-पूर्वी कोण में स्थित है । इस प्रदेश में अनेक नदियाँ हैं । किरातों का एक पर्याय लौहित्य भी मिलता है । इससे ज्ञात होता है कि ये लोग ब्रह्मपुत्र के तट पर भी रहते थे । अतः

यह कहा जा सकता है कि किरात जन हिमालय पर रहने वाली पर्वतीय जाति के जन थे । सम्भवतः आजकल के भोटिया किरातों के ही वंशज कहे जा सकते हैं । भोटिया केवल भूटान में ही नहीं रहते, प्रत्युत नेपाल तथा कुमायूँ के कुछ भागों में भी पाये जाते हैं । भोटिया को प्राचीन किरात के वंशज मानने में महाभारत का भी प्रामाण्य मिल रहा है । महाभारत में लिखा है कि किरात गौरवर्ण के होते थे । राजसूय यज्ञ में किरातों ने युधिष्ठिर को जो उपहार दिये थे उनमें गौरवर्ण की किराताङ्गनायें भी थी । सभापर्व ५२।११ ।

पुलिन्द—यह शब्द पुल घातु (महत्व प्राप्त क.ता) से उणादि सूत्र ४।८५ से सिद्ध किया जाता है । उज्ज्वलदत्त ने पुलिन्दों को शबर माना है । परन्तु यह समुचित नहीं जान पड़ता, क्योंकि शबर जाति अति प्राचीन काल से उड़ीसा में रहने वाली मानी जाती है । पुलिन्दों से उनका कोई सम्बन्ध नहीं जान पड़ता । जेनरल कनिंघम ने लिखा है कि शबर जन खालियर तथा नरवर के दक्षिण तथा दक्षिणी राजपूताने में अधिकतर पाये जाते हैं । कथा—सरित्सागर में विन्ध्य के समीप एक शबर सामन्त का वर्णन मिलता है—“पृष्ठवान् प्रियावृत्तिमत्पार्त्तः श्रोतः शबराधिपम् १०-१३४। सातवें शतक के वाणभट्ट ने भी हर्ष चरित में लिखा है कि हर्षवर्धन ने विन्ध्य वन में शबर की सहायता से अपनी बहिन राज्यश्री को प्राप्त किया था । पुलिन्द शब्द का प्रयोग भिल्लों के लिये भी किया जाता था । इनको लाब्धक (लालची) भी कहते थे—“आनाययञ्च सविभुभिल्लराजं पुलिन्दकम् । मित्रं बलैर्गर्पितदिशं प्रावृत्कालमिवाम्बुदैः॥” कथासरित्सागर १९-५६। ‘तत्र वत्सेशमित्रस्य विन्ध्यप्राग्भारवासिनः । गृहं पुलिन्दकाख्यस्य पुलिन्दाधिपतेरमात् ॥’ कथास० सागर १३।४५। उक्त विवरण से ज्ञात होता है कि पुलिन्द जन विन्ध्यवन के रहने वाले कोल भिल्ल ही हैं ।

तञ्जण—तञ्जणों के दो स्थानों का पता चलता है । महाभारत में उल्लेख है कि ये मध्य हिमालय में सुबाहु के राज्य में किरातों के साथ रहते थे, वहीं यह भी लिखा है कि इनके साथ जागुड, रामठ, स्त्री राज्य तथा मुण्ड जन भी रहते थे । टालेभी ने इनको गंगा के ऊपरी भाग में

पूर्वी तट पर स्थित माना है। इनका प्रदेश सम्भवतः राम-गंगा नदी से ऊपरी सरयू नदी तक विस्तृत था। तङ्गण जन मध्य एशिया के काशगर में भी रहते थे। ये जन तब लोगों को ज्ञात हुए जब इनके विद्रोह को चीन सरकार ने दबाया। मालूम पड़ता है येही प्राचीन तङ्गणों के वंशज हैं। पर तङ्गण भी इनके सम्बन्धी थे तथा पास-पास रहते थे।

पोदन्थ—महाभारत में लिखा है कि राजा अश्रमक ने पोदन्थ बसाया था। “अश्रमको नाम राजर्षिः पोदन्थं यो न्यवेशयत्॥” आदि पर्व १७५-४७। काम्पिल्य तथा अहिच्छत्र के ठीक मध्य में स्थित वर्तमान वदायूँ प्राचीन काल का पोदन्थ जान पड़ता है। इसको अयोध्या के राजा अश्रमक ने बसाया था। वदायूँ के पूर्वोत्तर माँदापुर नाम का एक गाँव है जो कि महाभारत का मोदापुर हो सकता है—“मोदापुरं वामदेवं सुदामानं सुसंकुलम्।” सभापर्व २७।११।

गोपालकक्ष—महाभारत में भीम के पूर्वी देशों के विजय के प्रसङ्ग में मल्लभूमि के साथ ही गोपाल कक्ष के जीतने की चर्चा की गयी है—“ततो गोपालकक्षञ्च सोत्तरानपि को सलान्। मल्लानामधिपञ्चैव पाथिवाञ्चाजयत्प्रभुः॥” २।३०। ३। गोपालकक्ष सम्भवतः मल्ल भूमि तथा उत्तर कोसल का मध्यवर्ती प्रदेश था अर्थात् रूहेलखण्ड के पूर्वोत्तर-प्रदेश का नाम गोपालकक्ष था। कनिष्क ने इसी प्रदेश में ‘किन् पिश्वाङ्ना’ की स्थिति बतलायी है जो कि गोपाल कक्ष ही हो सकता है; क्योंकि किन्पिशवाङ्ना का अर्थ भी गोपालों का स्थान ही होता है।

उत्तर कोसल—यह सोलह महाजनपदों में से एक जनपद का नाम है। उत्तर में सदानीरा (राप्ती) नदी से लेकर दक्षिण में स्यन्दिका (सई) नदी तक का प्रदेश जिसके बीच से सरयू नदी लम्बे बल बहती है कोसल जनपद के नाम से प्रसिद्ध था। यदि हम पूर्व में गोरखपुर जिले के बरहज बाजार से (जहाँ सरयू-राप्ती संगम है) चलें और आजमगढ़ जिले के मऊनाथमंजन होते वाराणसी के निकट गंगा गोमती संगम तक चले आयें, वहाँ से दाहिने मुड़कर गोमती के साथ-साथ पश्चिमाभिमुख चलते-चलते गोमती सई संगम तक पहुँचे और तब सई के साथ साथ पश्चिमोत्तर चलकर हरदोई के आगे उसके (सई) निकास तक चले जायें तब हिमालय की तराई-तराई गोलागोकर्णनाथ, चन्दन

चौकी, नेपालगंज आदि देते दक्षिण पूर्वोभिमुख बढ़ते राप्ती को पकड़ कर उसके साथ-साथ फिर बरहज बाजार तक पहुँच जायें तो कोसल जनपद की पूरी परिक्रमा हो जायगी।

नैमिषारण्य—अयोध्या के पश्चिम गंगमती नदी है। इसका एक नाम वासिष्ठो भी था—‘वासिष्ठो गोमती तुल्ये’ हेमचन्द्र ४ १५१। प्रसिद्ध नैमिषारण्य तीर्थ इसी के तट पर था। नैमिषारण्य में ही प्रख्यात पौराणिक सूत रहते थे। यह शूद्र होने पर भी ब्राह्मणों के भी सम्मानास्पद प्रवक्ता थे। पुराणों में कथा है कि श्रीकृष्ण के भाई बलभद्र ने इनका वध कर दिया था, क्योंकि सूत ने ब्राह्मणों के समान बलभद्र का सत्कार नहीं किया था।

मत्स्य पुराण में लिखा है कि नैमिषारण्य गोमती तथा गङ्गा के संगम पर था—“तीर्थं तु नैमिषं नाम सर्वतीर्थफलप्रदम्। गंगोद्भेदस्तु गोमत्यां यत्रोद्भूतः सनातनः। तथा यच्चवराहस्तु देवदेवस्य शूलभृत्। यत्र तत् काञ्चनद्वारमष्टादशभुजोः हरः॥ नेमिस्तु हरिचक्रस्य शीर्ष्णं यत्रा भवत्पुरा। तदेतन्नैमिषारण्यं सर्वतीर्थनिवेदितम्। देवदेवस्य तत्रापि श्रीवराहस्यदर्शनम्॥” मत्स्य २२-१२-५ महाभारत २।८७-६।७॥ परन्तु यह वर्णन समुचित नहीं जान पड़ता, क्योंकि गोमती वाराणसी जिले में गंगा से मिलती है न कि नैमिषारण्य में। सम्भव है वहाँ गोमती में कोई दूसरी नदी मिली हो। सीतापुर जिले का नीमसार प्राचीन नैमिषारण्य माना जाता है।

कनिष्क ने लिखा है कि सुल्तानपुर के दक्षिण-पूर्व लगभग अठारह मील पर धवपापपुर नाम का एक तीर्थ है। यह भी गोमती नदी के तट पर स्थित है। प्राचीनकाल में इसी को कुसुम्भवनपुर भी कहते थे। महाभारत का रामतीर्थ सम्भवतः यही है—“रामतीर्थं नरः स्नात्वा गोमत्यां कुचनन्दन। अश्वमेधमवाप्नोति पुनाति च कुलं नरः॥” ३-८४। अयोध्या से प्रयाग जाने वाले मार्ग पर यह तीर्थ पड़ता है।

कुशावती—श्री रामचन्द्र के जीवन काल में ही लव तथा कुश दो भिन्न भिन्न प्रदेशों में राज्य करने लगे थे। दक्षिण कोसल कुश के अधिकार में था। उसकी राजधानी विन्ध्य के दर्रे में स्थित कुशावती थी। उत्तर कोसल के शासक लव थे, उन्होंने श्रावस्ती को अपनी राजधानी बनायी।

“कोसलेषु कुशं वीरमुत्तरेषु तथा लवम् । अभिषिच्य महात्माना-
बुभौरामः कुशीलवौ ॥ कुशस्य नगरी रम्या विन्ध्यपर्वत-
रोधसि । कुशावतीतिनाम्ना सा कृतारामेण धीमता ॥ श्राव-
स्तीति पुरी रम्या श्राविता चलवस्य ह ॥” बा० रा० १०७-१७
तथा १०८-४।५। परन्तु कालिदास ने रघुवंश १५-९७ में
लव की राजधानी का नाम श्रावस्ती के स्थान पर शरावती
लिखा है । सम्भव है उसका एक नाम यह भी रहा हो ।

मत्स्यपुराण में लिखा है कि श्रावस्ती गण्डदेश में थी—
“निर्मिता येन श्रावस्ती गण्डदेशे द्विजोत्तमाः ।” सम्भवतः आज-
कल गोंडा जिस प्रदेश में है उसका प्राचीन नाम गण्डदेश
रहा हो, तथा उसके अन्तर्गत श्रावस्ती भी रही हो ।
महाभारत में भी भीम के विजय के वर्णन में पाञ्चाल के
पश्चात् गण्डदेश के विजय का उल्लेख मिलता है—
“पाञ्चालान् विविधोपायैः सान्त्वयामास पाण्डवः । ततः
स गण्डकान् वीरो विदेहान् भरतर्षभः ॥” ११-२६-४ इसमें
विदेह पाठ अशुद्ध प्रतीत होता है ; क्योंकि विदेह विजय की
चर्चा अन्यत्र की गयी है । उक्त उद्धरणों से यह तो निश्चय
है कि अयोध्या के उत्तर का प्रदेश जिसमें गोंडा तथा
बहराइच जिले हैं उत्तर कोसल में सम्मिलित था ।

अयोध्या के उत्तर गोरखपुर जिले में स्थित आधुनिक
सहेत महेत को प्राचीन श्रावस्ती माना जाता है । जेनरल
कर्निघम ने लिखा है कि उनको सहेत महेत में बुद्ध की एक
विशाल मूर्ति मिली थी, जिस पर श्रावस्ती खुदा हुआ था ।
पुराणों में लिखा है कि राजा श्रावस्त (रामचन्द्र के पूर्व
पुरुष) ने उसे बसाया था । “तस्य श्रावस्तः । यः श्रावस्ती”
पुरी निवेशयामास ॥” ४।२।१२। इसका दूसरा नाम धर्मपुरी
या धर्मपत्तन भी था—“श्रावस्ती धर्मपत्तनम्” त्रिकाण्डशेष,
भूमि वर्ग ।

इस प्रदेश में होकर शरावती नदी बहती है आजकल
इसको राप्ती कहते हैं । इस नदी के अनेक प्राचीन नाम
पाये जाते हैं । इसका एक नाम सदानीरा भी था । जेनरल
कर्निघम ने बुद्ध की जन्मभूमि कपिलवास्तु को इसी नदी
के पश्चिम मानता है । कपिलवास्तु का आधुनिक नाम
भुइला है । कारलायल ने लिखा है कि यह स्थान बस्ती
जिले में है । बौद्ध साहित्य में लिखा है कि इस स्थान पर
प्राचीनकाल में कपिल नाम के एक ऋषि रहते थे उन्हीं

के नाम पर इसका नाम कपिलवास्तु पड़ गया । कपिलवास्तु
के समीप ही लुंबिनी वन में बुद्ध का जन्म हुआ था ।
उनकी मृत्यु कुशी नगर में हुई थी । कुशी नगर गोरखपुर
से पैंतीस मील पर स्थित कसया नाम के ग्राम का प्राचीन
नाम माना जाता है ।

नेपाल—नेपाल नाम बहुत प्राचीन नहीं जान पड़ता ।
महाभारत की केवल एक प्रति में एक ही बार इसका नाम
आया है—“नेपालविषये येन राजानस्तानदाययत्” वनपर्व
२५४-७ । भारतीय परम्परोक्त आधार पर प्रतीत होता है
कि प्राचीनकाल में यह एक विस्तृत घाटी थी । क्रमशः
लोग उसमें बसने लगे । उसके आकार को देखकर थार्टन
की यह धारणा थी । महाभारत के एक श्लोक से भी यही
ज्ञात होता है कि पहिले इस प्रदेश में जल ही जल था ।
इस प्रदेश के भिन्न भिन्न भागों के भिन्न भिन्न नाम पाये
जाते हैं । अमरसिंह के समय यह नाम पूर्णतया प्रचलित
हो गया था ; क्योंकि उन्होंने लाल हरताल (मनः शिला—
मैनसिर) का एक पर्याय नेपाली लिखा—“मनः शिला मनो-
गुप्ता” “नेपाली कुनटी गोला” २-९-१०८ वर्तमान काल की
अपेक्षा प्राचीन काल में इसकी सीमा संकुचित थी । इस
समय काठमांडू के समीप का ललितपत्तन नाम का नगर
प्राचीन नेपाल की राजधानी था ।

वाराणसी—प्राचीन काल में वाराणसी काशी जनपद
की राजधानी थी । वरणा तथा असी नाम की नदियों के
मध्य में स्थित होने के कारण नगरी का नाम वाराणसी पड़
गया । किसी समय इस जनपद का नाम वराणस भी था ;
क्योंकि वर्धमान ने गणरत्नमहोदधि में लिखा है कि
“वराणसी नाम देशस्तत्र भवा नगरी वाराणसी,” अर्थात्
वराणस जनपद की राजधानी । उसी का विकृत रूप बनारस
हो गया । बनारस नामकरण का एक दूसरा कारण यह
कहा जाता है कि इस जनपद के एक राजा का नाम वन्नार
था, उसी नाम के आधार पर इसका नाम बनारस पड़
गया । वाराणसी संस्कृत वाङ्मय, विशेषतया व्याकरण
तथा आयुर्वेद का पीठ समझी जाती है । यहाँ बड़े-बड़े
आचार्य हो चुके हैं । महाभाष्यकार पतञ्जलि यहाँ रहते
थे । यहाँ के राजा दिवोदास धन्वन्तरि के अवतार माने

जाते हैं—हरिवंश १५४४। चरक ने इन्हीं से आयुर्वेद शास्त्र की शिक्षा प्राप्त की थी।

इस जनपद का विस्तार समय-समय पर बदलता रहा है। यहाँ के राजाओं की चर्चा संस्कृत वाङ्मय में प्रचुरता से मिलती है। कहा जाता है कि वाराणसी दो बार नष्ट भ्रष्ट कर दी गयी थी। एक बार दिवोदास के समय राक्षसों ने इसको नष्ट कर दिया। वे राक्षस सम्भवतः किसी प्राचीन जाति के जन रहे होंगे। दूसरी बार पौण्ड्रक वासुदेव के मित्र होने के कारण यहाँ के राजा को परास्त कर श्री कृष्ण ने उसकी राजधानी वाराणसी को ध्वस्त कर दिया था। हरिवंश २६। विष्णु पुराण १।३४। यह नगरी आर्यों का पवित्र तीर्थ मानी जाती है। शास्त्रों में लिखा है कि प्रलय होने पर भी वाराणसी नष्ट नहीं होती। यहाँ से अन्य तीर्थों की दूरी का निर्णय करके उनका पुनर्निर्माण किया जाता है।

वत्स—यह जनपद प्रयाग के पश्चिम स्थित था। प्राचीन काल में राजा दिवोदास का पौत्र यहाँ का राजा बनाया गया। वह छोटा सा बच्चा ही था, अतः उसकी अवस्था के कारण इस जनपद का नाम वत्स पड़ गया। श्युआन् चुआंग के अनुसार इस जनपद का क्षेत्रफल ६००० मील अर्थात् लगभग १००० वर्गमील था। इसकी राजधानी कौशाम्बी थी। आजकल वह कोसम नाम से प्रसिद्ध है। कोसम प्रयाग से लगभग तीस मील पश्चिम यमुना तट पर स्थित है। बा० रामायण में भी कौशाम्बी की चर्चा है। महाभारत में लिखा है कि जब हस्तिनापुर को गङ्गा ने बहा दिया तब पाण्डवों के वंशज (शतानीक) इस जनपद में आकर रहने लगे तथा कौशाम्बी को ही अपनी राजधानी बनाकर उसका नाम नव कौशाम्बी रख दिया। उदयन यहीं का राजा था। जिसकी कथा कथासरित्सागर में विस्तार पूर्वक वर्णित है। तथा भास ने उसी के आधार दो नाटकों को (प्रतिज्ञायौगन्धरायण, स्वप्नवासवदत्त) लिखा है।

मगध—यह सोलह महाजनपदों में एक प्रधान जनपद था। समय-समय पर यहाँ के राजाओं का आधिपत्य समस्त भारत में रह चुका है। आधुनिक गङ्गा के दक्षिण भाग का बिहार प्राचीनकाल में मगध कहलाता था तथा गङ्गा के उत्तर का विहार विदेह। इसी जनपद के प्राचीन नाम कोकट तथा प्रमगन्द भी थे। इस जनपद में आदिवासी जन

रहते थे। इस समय भी छोटा नागपुर तथा झारखण्ड जिलों में संथाल नाम के आदिवासी पाये जाते हैं। मगध एकराज जनपद था। इस पर बृहद्रथवंश, शिशुनागवंश तथा नन्दवंश के राजाओं ने शासन किया था। बाद में मौर्यों ने शासन किया। इन राजाओं ने समय-समय पर कम्बोज तथा कपिशा से लेकर बङ्ग, कलिङ्ग पर्यन्त प्रदेशों को अपने साम्राज्य के अन्तर्गत कर लिया था। इसी जनपद में बौद्ध धर्म का पूर्ण विकास हुआ था।

गिरिव्रज—इस जनपद की राजधानी गिरिव्रज (पर्वत-समूह) थी। आजकल उसको राजगृह कहते हैं। रामायण बालकाण्ड तथा महाभारत में इसका उल्लेख मिलता है। महाभारत में लिखा है कि श्रीकृष्ण, अर्जुन तथा भीम गङ्गा तथा सोन नदियों को पार कर पूर्व की ओर चलकर गोरथ नामक पर्वत पर पहुँचे। वहाँ से उनको विपुल, बराह, वृषभ, ऋषिगिरि तथा चैत्यक नाम की पाँच पहाड़ियाँ दिखाई पड़ीं। गिरिव्रज उन पहाड़ियों से घिरा हुआ था। उन पहाड़ियों को लाँघ कर वे लोग जरासन्ध के निवास स्थान गिरिव्रज पहुँच गये। वह पहाड़ियों के मध्य में स्थित था। सोन पटना के पास गङ्गा से मिली है, अतः यह स्पष्ट है कि उन लोगों को पश्चिम से राजगृह जाने में गङ्गा तथा सोन दोनों को पार करना ही पड़ा होगा।

जेनरल कनिंघम ने अपनी भारत की प्राचीन भूगोल नाम की पुस्तक में एक मानचित्र दिया है। जिसमें उन्होंने विपुलगिरि, रत्नगिरि, उदयगिरि, सोनगिरि तथा वैभारगिरि को दिखलाया है। विपुलगिरि उत्तर की ओर है। उसके पूर्वोत्तर रत्नगिरि है। उसके आगे सैलगिरि, रत्नगिरि पालि-साहित्य का पाण्डवगिरि माना जाता है। मालूम पड़ता है कि इससे पाण्डवों का सम्बन्ध रहा होगा। सैलगिरि सम्भवतः गोरथगिरि है। महाभारत का चैत्यकगिरि रत्नगिरि हो सकता है। ऋषिगिरि पालि-साहित्य का इसिगिरि है। दक्षिणपूर्व की ओर उदयगिरि है। बराह का रूपान्तर व्याहारगिरि मालूम पड़ता है। सम्भवतः यही वैभार गिरि है। इस प्रदेश में पञ्चन नाम की नदी बहती है, इसका दूसरा नाम मागधी नदी है।

कुसुमपुर—मगध जनपद की दूसरी राजधानी का नाम कुसुमपुर, पाटलिपुत्र (पटना) था। जिसको अजात-

शत्रु के पुत्र उदयाश्व ने वसाया था। यूनानी लेखकों तथा संस्कृत साहित्य से ज्ञात होता है कि प्राचीनकाल में यह पूर्वी भारत का सबसे समृद्ध नगर तथा विद्याकेन्द्र था। राजशेखर ने लिखा है कि यहाँ भारतविख्यात पाणिनि, कालिदास आदि विद्वानों की परीक्षा हुई थी—“श्रूयते च पाटलिपुत्रे शास्त्रकारपरीक्षा।” अत्रोपवर्षवर्षाविह पाणिनि-पिङ्गलाविह व्याडिः। वररुचिपतञ्जली इह परीचिता ख्यातिमाजगमुः।” काव्यमीमांसा अध्याय ११।

पुरगावण—पा० सू० ८।४।४-५ में पुरगावण का नाम आया है। वर्धमान ने गणरत्नमहोदधि में लिखा है कि पाटलिपुत्र में पुरगा नाम की एक यची रहती थी। सम्भव है उसी के नाम पर पाटलिपुत्र के पार्श्ववर्ती वन का नाम पुरगावण पड़ गया हो।

गया—मगध जनपद के एक बड़े नगर का नाम गया था, इसकी चर्चा भारतीय साहित्य के अनेक ग्रन्थों में मिलती है। यह फल्गुनदी के पश्चिम तट पर बसा हुआ है। फल्गु का एक नाम महानदी भी है। यह बड़ी पवित्र नदी मानी जाती है। यह नीलगाम (निरंजनी) तथा मोहिनी नाम की दो बड़ी नदियों से मिल कर बनी है। इस नगर के समीप बोध गया नाम का उपनगर है। यहीं एक पीपल के वृक्ष के नीचे कठिन तप के पश्चात् बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था।

नालन्दा—मगध में बिहार नाम का एक कस्बा है। उसके समीप एक सूनसान पहाड़ी है उस पर कुछ अवशेष पड़े हुये हैं। कनिंघम की धारणा है कि यह अवलोकितेश्वर के अवशेष हैं। इस पहाड़ी के समीप ही भारतविख्यात नालन्दा विश्वविद्यालय था। श्युआन च्युआंगने यहाँ कई वर्षों तक संस्कृत का अध्ययन किया था। पुरातत्त्ववेत्ता लोग वर्तमान बड़ागाँव को प्राचीन नालन्दा मानते हैं। यह राजगृह से सात मील उत्तर की ओर है।

वररुचि के प्राकृत प्रकाश के बारहवें अध्याय में लिखा है कि मगध के नाम पर मागधी भाषा का प्रादुर्भाव हुआ था। विश्वनाथ के अनुसार मागधी मगध के राजकीय अन्तः-पुर के परिचारकों की भाषा थी। राजशेखर ने विश्वनाथ के मत की पुष्टि की है—“श्रूयते हि मगधेषु शिशुनागो नाम राजा तेन दुर्लुच्चारानष्टौ वर्णनिपात्य स्वान्तःपुर एकः

प्रवर्तितो नियमः टकारादयश्चत्वारो मूर्धन्यास्तृतीयवर्ज-मूष्माखस्त्रयः क्षकारश्चेति”—का० मी० कविचर्या। अर्थात् शिशुनाग ने अपने अन्तःपुर में ट, ठ, ड, ढ, श, ष, ह तथा क्ष वर्णों का उच्चारण करना रोक दिया था। इससे यह भी प्रतीत होता है कि भाटों के लिये मागध शब्द का प्रयोग भी इसी जनपद के आधार पर प्रचलित हुआ है।

मागधी नाम का एक पौधा भी होता है। इसको पीपर कहते हैं—“मागधी पिप्पली मता।” अमर २।९६। जूही का पर्याय भी मागधी है—“मागधी गणिका” यूथिका-अमर २।७१। यह जनपद प्राचीनकाल में व्यापार का भी बड़ा केन्द्र था। यहाँ के व्यापारियों की चर्चा संस्कृत साहित्य में प्रचुरता से मिलती है। प्राचीनकाल में मागध परिमाण समस्त भारत में सर्वश्रेष्ठ समझा जाता था—“कालिङ्गा-न्मागधं श्रेष्ठम्॥ सम्भव है पीपर यहाँ को मुख्य व्यापारिक वस्तु रही हो, तथा जूही यहाँ का प्रिय पुष्प रहा हो, अतः मगध के नाम के आधार पर उनका भी नाम मागधी पड़ गया हो।

कारुष—इसका दूसरा रूप कारुश भी मिलता है। गोमती के सङ्गम से लेकर सोन के सङ्गम तक के गङ्गा के दक्षिण तट पर स्थित प्रदेश में प्राचीनकाल में मलद अथवा मलज तथा कारुष जन रहते थे। कारुष जन बृहद्-गुह भी कहे जाते थे—“कारुषास्तु बृहद्गुहाः” हेमचन्द्र ४.२५ रामायण के अनुसार कर्मनाशा तथा सोन का मध्यवर्ती प्रदेश कारुष कहलाता था। ब्रह्माण्डपुराण के अनुसार वेदगर्भपुरी (बक्सर) कारुष देश में स्थित थी। मिथिला जाने के समय श्री रामचन्द्र सरयूसंगम पर गङ्गा को पार कर कारुष देश में गये थे। मथुरा पर आक्रमण के समय कारुषों के राजा ने जरासन्ध का साहाय्य किया था। रामायण से यह भी ज्ञात होता है कि वामन भगवान् का आश्रम कारुष देश में था। विश्वामित्र का आश्रम यहीं था। पार्जितर के अनुसार कैमूर शृङ्खला कारुष देश में है। बाद में चल कर कारुष जनपद मगध जनपद में विलीन हुआ जान पड़ता है।

इसके अतिरिक्त एक दूसरे जनपद का नाम भी कारुष था। महाभारत के अनुसार दन्तवक्त्र का राज्य, जिसको अधिराज भी कहते थे—मत्स्य तथा भोज जनपदों के मध्य

में था। पुराणों में इस जनपद को विन्ध्य शृङ्खला के पीछे बतलाया गया है। पार्जितर का कहना है कि कारुष जनपद काशी तथा वत्स जनपदों के दक्षिण था। कारुष के पश्चिम चेदि तथा पूर्व में मगध था। उपर्युक्त उद्धरणों से ज्ञात होता है कि किसी समय कारुष जनपद गंगा के दक्षिण आधुनिक रीवां राज्य तक विस्तृत था। आजकल भी दक्षिणी बिहार तथा रीवां पास ही पास है।

शिखावल—पा० सू० ४।२।८९ से यह नगर का नाम ज्ञात होता है, परन्तु दूसरे साहित्य में यह नाम अप्रचलित सा है। सम्भव है यह रीवां राज्य में सोन के बायें तट पर स्थित आधुनिक सोहावल का प्राचीन नाम रहा हो। सोहावल रीवां राज्य में छोटी सी रियासत थी, वहाँ का राजा रीवां का करद राजा होता था। छोटी रियासत होने पर भी यह प्राचीन स्थान प्रतीत होता है।

वैशाली—मगध के उत्तर वैशाली नाम का गणतन्त्र राज्य था। बुद्ध के समय इसकी राजधानी का नाम वैशाली था। इसको विशाल नाम के एक राजा ने बसाया था—रामायण १-४८-१४। यहाँ प्राप्त अवशेषों को राजा विशाल के महल का अवशेष कहते हैं। रामायण में वर्णन है कि मिथिला में जनकपुर पहुँचने के पूर्व श्रीराम गङ्गा पार कर इस नगर में एक रात रहे थे। कनिष्क तथा श्युमान् चुआंग के आघार पर आधुनिक बसाढ़ का ही प्राचीन नाम वैशाली प्रतीत होता है।

वृजि—वैशाली के आस-पास का प्रदेश सम्भवतः वृजि कहलाता था। पा० सू० ४।२।१३१ की व्याख्या में वामन ने वृजि शब्द से वहाँ के रहनेवाले जन के लिये वृजिक (वृजिषु जातः) शब्द को सिद्ध किया है। बौल ने बुद्ध चरित में लिखा है कि वजोर देश में वैशाली नाम का एक समृद्ध नगर है। वजोर वृजि का विकृत रूप प्रतीत होता है क्योंकि वजोर नाम के देश का उल्लेख अन्यत्र नहीं उपलब्ध है। सभापर्व में लिखा है कि भीम ने विदेह जनपद जाने के पूर्व शर्मकों तथा वर्मकों को जीता था। ये जन वृजि देशों में रहते थे। शर्मन् तथा वर्मन् के लिये शर्मकों तथा वर्मकों का प्रयोग प्रतीत होता है। वर्तमानकाल में वर्मन् जन बंगाल के कुछ भागों में पाये जाते हैं। शर्मन का निर्णय

अभी तक नहीं हो सका है। सम्भवतः इससे यह सूचित होता है। कि वहाँ मिले-जुले ब्राह्मण क्षत्रियों का बसाव था।

वृजि जनपद पूर्व में बागमती या भोगमती नदी से लेकर पश्चिम में गण्डकी नदी तक विस्तृत था। दूसरे शब्दों में इस प्रदेश में मुजफ्फरपुर तथा छपरा का कुछ भाग सम्मिलित था। इसकी राजधानी वैशाली ही थी। किसी समय यहाँ विदेह लिच्छवियों का राज्य था। वर्तमानकाल में कुछ तिरहुत निवासी तथा कुछ नेपाली जन वज्जी तथा वजिया कहे जाते हैं। बहुत सम्भव है इनके पूर्वज प्राचीनकाल के वृजि जन हों।

मल्ल—वृजि जनपद के ठीक पश्चिम तथा कोसल जनपद के पूर्व मल्ल नाम का जनपद था। सम्भवतः आधुनिक गोरखपुर का प्रदेश प्राचीनकाल में मल्ल जनपद रहा हो। पावा तथा कुसीनगर (कसया) इस जनपद के प्रसिद्ध नगर थे। आजकल भी इस जनपद में मल्ल जाति के जन पाये जाते हैं।

विदेह—वैशाली के पूर्वोत्तर विदेह जनपद था। इसकी राजधानी मिथिला (जनकपुर) थी। किसी-किसी कोश में विदेह तथा मिथिला को पर्याय के रूप में भी लिखा है। परन्तु यह समुचित नहीं जान पड़ता। “जनो विदेहेषु मिथिला-मभिप्रविश्यैव”—दशकुमार ३। राज्य का नाम विदेह जान पड़ता है। राजा जनक के समय भी विदेह जनपद की राजधानी मिथिला ही थी। जानकी का जन्म सीतामढ़ी में हुआ था—रामायण ३-४। मोतिहारी से बारह मील पूर्व सीता कुण्ड है। विवाह के समय सीता ने इसी कुण्ड में स्नान किया था। प्राचीनकाल में इस जनपद में कुछ भाग नेपाल का तथा कुछ वृजि का भी सम्मिलित था। वर्तमान काल में इस जनपद को स्थानीय जन मिथिला ही कहते हैं। प्राचीनकाल में यहाँ के व्यापारी समस्त भारत में प्रसिद्ध थे। अमरकोश में व्यापारी का एक पर्याय वैदेहक भी लिखा है—“वैदेहकः सार्यवाहो नैगमो वणिजो वणिक्” अमर २।१।७८।

तीरभुक्ति—इसका शब्दार्थ तट के समीप की अधिकृत भूमि होता है। इस प्रदेश में गण्डक का तटवर्ती प्रदेश सम्मिलित था। किसी समय यहाँ कोई बड़ा प्रतापी राजा हो चुका है जिसके नाम पर इस प्रदेश में एक संवत्

प्रचलित है इसी से उसका महत्त्व प्रकट होता है। त्रिकाण्ड-शेष के अनुसार तीरभुक्ति विदेह का पर्याय प्रतीत होता है—“तीरभुक्तिस्तु लिच्छविः” त्रिकाण्डशेष भूमिवर्ग ८। परन्तु अन्यत्र कहीं भी यह विदेह के पर्याय के रूप में नहीं प्रयुक्त हुआ है। आजकल मैथिल जन अपने देश को मिथिला तथा तिरहुत दोनों नाम से पुकारते हैं, तिरहुत तीरभुक्ति का ही विकृत रूप है। कुछ विद्वानों की धारणा है कि तिरहुत का दक्षिणी भाग विदेह में सम्मिलित नहीं था। बहुत सम्भव है यह प्रदेश किसी समय विदेह राजाओं के अधिकार में रहा हो इसी कारण पुरुषोत्तम ने दोनों को एक ही राज्य माना हो। जेनरल कनिंघम ने लिखा है कि तिब्बत तथा लद्दाख (ललाटाच) के राजा अपनी उत्पत्ति लिच्छविवंश से मानते हैं। नेपाल के नेवर जन भी अपना उद्गम निच्छवि (लिच्छवि) वंश से ही कहते हैं।

अङ्ग—सोलह महाजनपदों में अङ्ग नाम का एक जनपद था। दरभङ्गा के पूर्व भागलपुर के उत्तर से तथा पूर्णियाँ के पश्चिम कौशिकी (कोसी) नदी बहती है तथा पूर्णियाँ जिले में ही मानहारि के दक्षिण-पूर्व गंगा में मिली है। प्राचीनकाल में यह पूर्णियाँ नगर के विलकुल समीप बहती थी। परन्तु आजकल पश्चिम की ओर हटती जा रही है। चार नदियों की सम्मिलित धारा का नाम कौशिकी है। प्रायः सभी नदियों का उद्गम तिब्बत ही है। महाभारत में इसके तट पर कौशिकी कच्छ (कौशिकी के तट का प्रदेश) का होना लिखा है। कौशिकी कच्छ पर राजा विराट का अधिकार था। परन्तु यह विराट महाभारत काल का विराट नहीं प्रतीत होता। सम्भव है इस नाम का कोई दूसरा राजा हुआ हो। कौशिकी के तट पर ही ऋष्यशृंग का आश्रम था। कहा जाता है कि चम्पा के राजा लोमपाद प्राकृतिक उपद्रवों की शान्ति के लिये ऋष्यशृंग को अपने राज्य में ले गया था। इनका आश्रम आज भी यहाँ विद्यमान है, परन्तु कौशिकी से पर्याप्त दूरी पर है। सम्भव है नदी वहाँ से क्रमशः हटती गयी है।

उपर्युक्त कौशिकी कच्छ के दक्षिण गङ्गा के बायें तट पर अङ्ग जनपद स्थित था। इसकी राजधानी का नाम चम्पा था। इसके अनेक नाम मिलते हैं—अंगपुरी, लोमदा-पुरी, कर्णपुरी, मालिनी आदि—“चम्पा तु मालिनी, लोमपाद

कर्णयोः पूः”—हैमचन्द्र ४।४२। आजकल चम्पा के स्थान पर भागलपुर स्थित है। श्युआन् चुआंग ने लिखा है कि चम्पा गङ्गा तट पर चट्टान वाले द्वीप से चौबीस मील पश्चिम स्थित थी। जेनरल कनिंघम ने सिद्ध किया है कि पाथर धारा के सामने वाली पहाड़ी ही चट्टान वाला द्वीप है। यह भागलपुर से लगभग चौबीस मील की दूरी पर स्थित है। यहाँ चम्पापुर तथा चम्पानगर नाम का गाँव अब भी विद्यमान है। संस्कृत साहित्य के अनुसार चम्पापुरी मिथिला के पूर्व गङ्गा के तट पर स्थित थी। सम्भव है चम्पा नाम के फूल की अधिकता के कारण इसका नाम चम्पा पड़ा हो।

महाभारत में कौशिकी नदी के समीप एक चम्पक वन की चर्चा मिलती है—“कौशिकीं तत्र गच्छेत महापाप-प्रणाशिनीम्। ततो गच्छेत राजेन्द्र चम्पकारण्यमुत्तमम्—महाभारत ३।८४।१३२।१३३। रघुवंश में अंग जनपद में हाथियों की चर्चा मिलती है। परन्तु आजकल वहाँ हाथी विलकुल नहीं पाये जाते। सम्भव है प्राचीनकाल में पाये जाते रहे हों।

मोदागिरि—भागलपुर तथा पटना के मध्य में मुँगेर नाम का एक नगर है। इसी जिले में सीताकुण्ड तथा ऋषिकुण्ड नाम के दो तप्त झरने हैं। सीताकुण्ड मुँगेर से पाँच मील तथा ऋषिकुण्ड मुँगेर से ग्यारह मील पूर्व है। इस प्रदेश की चर्चा संस्कृत साहित्य में नहीं मिलती। सम्भव है यह प्रदेश अङ्ग तथा मगध के अधिकार में रहा हो। इस कारण इसका पृथक् उल्लेख नहीं हुआ। ईसवीय सन् १७८० में मुँगेर में एक ताम्रपत्र मिला था। प्रिसप तथा अन्य विद्वानों ने उसे पढ़ा था। उससे ज्ञात होता है कि मुँगेर किसी समय पाटलिपुत्र के राजा देवपाल के अधिकार में था। वहीं एक दूसरा भी ताम्रपत्र मिला था, उसमें मुद्गगिरि लिखा था। डा० वचनन हैमिल्टन ने उसे पढ़ा था। उसका शुद्ध रूप मोदागिरि समझा गया। केवल महाभारत के समापर्व में मोदागिरि की चर्चा है। उसमें उसकी स्थिति पूर्व भारत के उपर्युक्त दोनों जिलों के मध्य में बतलायी गयी है। जिस समय श्युआन् चुआंग ने उसको देखा था उस समय वहाँ की पहाड़ी से ज्वालामुखी का

धूम्रां प्रचुर मात्रा में निकल रहा था। उसने लिखा है कि उस धूप से सूर्य तथा चन्द्रमा का प्रकाश मन्द पड़ गया था।

पुण्ड्र—कौशिकी कच्छ के पूर्व पुण्ड्र देश था। उसको गौड तथा वरेन्द्र भी कहते थे। “पुण्ड्राः स्युर्वरेन्द्रो गौडनी-वृत्ति त्रीणि गौडदेशस्य”—त्रिकाण्डशेष। गौड तथा पुण्ड्र देश के सम्बन्ध में राजतरङ्गिणी में लिखा है कि पुण्ड्रवर्धन नगर पुण्ड्र देश अथवा वहाँ के राजा की राजधानी था। पुण्ड्र अथवा पौण्ड्र एक प्रकार का मोटा गन्ना होता है जिसको उत्तर प्रदेश की बोलचाल की भाषा में पौंडा कहते हैं—“इच्छुस्तद्भेदाः पुण्ड्रकान्तारादयः”—अमर २।४।१६३। पौण्ड्रको भीरुकश्चापि वंशकः शतपोरकः। इत्येता जातयस्तेषां कथयामि गुणानपि।” भावप्रकाश। उक्त प्रदेश में इस प्रकार के गन्ने की खेती प्रचुरता से की जाती है। अतः सम्भव है कि पौंडे की अधिक उपज के कारण इस देश का नाम पुण्ड्र पड़ गया हो। गौड शब्द का भी यही अर्थ होता है—जहाँ गुड़ की अधिकता हो। अतः गौड तथा पुण्ड्र दोनों ही नाम एक देश के मालूम पड़ते हैं। इसी कारण भारत के प्राचीन जनपदों की नामावली में गौड का उल्लेख नहीं मिलता—“अङ्गो बङ्गः कलिङ्गश्च पुण्ड्रः सुह्यश्च ते सुताः। तेषां देशाः समाख्याताः स्वनाम प्रथिता भुवि”॥ महाभारत १-१०२-५३।

संस्कृत साहित्य में गौड देश के लिए वरेन्द्र शब्द का प्रयोग नहीं मिलता, परन्तु उत्तरी बङ्गाल में आज भी वरेन्द्र अथवा वारेन्द्र ब्राह्मण पाये जाते हैं तथा वहाँ वरेन्द्र नाम की पहाड़ी के कुछ चिन्ह भी उपलब्ध होते हैं। यहाँ वरेन्द्र जाति के शूद्र भी मिलते हैं। ये अधिकतर मालदह जिले में रहते हैं। इससे ज्ञात होता है कि किसी समय इस प्रदेश को वरेन्द्र अवश्य कहते थे तथा वहाँ के निवासी वरेन्द्र कहे जाते थे।

पुण्ड्रवर्धन की राजधानी चिरकाल तक गौडपुरी थी जिसको लक्ष्मणावती भी कहते थे। उसके कुछ अवशेष भागीरथी के तट पर स्थित गौड नाम के स्थान पर उपलब्ध हुये हैं। गौड नाम का स्थान मालदह के समीप ही है। पाणिनि का गौडपुर भी यही है। किसी समय इसकी राजधानी का नाम पुण्ड्रवर्धन था। कथासरित्सागर १६-१६-२१ में इसकी चर्चा मिलती है। हरिवंश पुराण, विष्णुपुराण तथा श्रीमद्भागवत से ज्ञात होता है कि यहाँ के राजा का नाम

पुण्ड्रक था उसी को वासुदेव भी कहते थे। श्रीकृष्ण वनने की लालसा से उसने उनसे युद्ध किया और मारा गया। इस नगर के समीप किसी नदी की चर्चा न होने से अनुमान किया जाता है कि यह देश के मध्य में कहीं रहा होगा। आधुनिक पुण्डुआ मालदह जिले के मध्य में स्थित है। “इसका नाम भी पुण्ड्रवर्धन से मिलता जुलता है। सम्भव है प्राचीन पुण्ड्रवर्धन यही रहा हो। किसी समय बङ्गाल के बोगरे जिले का महास्थान गड़ भी पुण्ड्रवर्धन की राजधानी था। वहाँ अशोक के पूर्व का एक अभिलेख प्राप्त हुआ है। उसमें वहाँ के शासक ने पुण्ड्रवर्धन के महामात्य को कुछ आज्ञा दी है। पाणिनि के ६।२।८६ सूत्र का उदाहरण महानगर सम्भवतः यही महास्थान गड़ की ओर संकेत करता है।

सुह्य—प्राचीन काल में राठदेश सुह्य भी कहा जाता था—“राठास्तु सुह्यः” वैजयन्ती भूमि काण्ड १३०। वर्तमान हुगली, मिदनापुर तथा बर्दवान (बर्धमान) आदि जिले सुह्य जनपद में सम्मिलित थे। उस जनपद के जन सुह्य कहे जाते थे। इस समय इस प्रदेश में कुछ ऐसे जन रहते हैं जो अपने को सोम कहते हैं। सम्भवतः प्राचीन काल के सुह्य ये ही हैं। इस जनपद की राजधानी का नाम ताम्रलिप्ति (तमलुक) था। यह गंगासागर के समीप स्थित है। रघुवंश में उल्लेख है कि सुह्य जनपद के निवासियों ने रघु के सामने वेत की वृत्ति धारण करके, अर्थात् नम्र होकर बिना युद्ध किये ही उनकी अधीनता स्वीकार कर अपनी रक्षा की थी। रघुवंश ४।३५

प्राग्योतिष—पुण्ड्र जनपद के पूर्वोत्तर प्राग्योतिष अथवा कामरूप नाम का जनपद था। इसकी गणना महा-भारत में भारत के प्राच्य प्रदेश में की गयी है। यह जनपद ब्रह्मपुत्र के दोनों ओर विस्तृत है। लौहित्य नाम की ब्रह्मपुत्र की सहायक नदी पूर्व से आकर उसमें मिली है। उसके संगम पर महाभारत के तीर्थ-यात्रा-प्रकरण के वनपर्व में उल्लिखित संबेद्या (सदिया) नाम का नगर स्थित है। ब्रह्मपुत्र के बायें तट पर श्रीहट्ट (सिलहट्ट) नाम का नगर है। यहीं कामाक्षा देवी का भारतविख्यात पीठ विद्यमान है। ब्रह्मपुत्र के दाहिने तट की ओर सूरमा नदी की दून (द्रोणी) है।

सूरमस—पाणिनि ने ४११।१७० में इसका नाम सूरमस लिखा है। भारत के इतिहास में कामरूप के मध्य देश के साथ सम्बन्ध की चर्चा अनेक स्थलों पर मिलती है। कामरूप का राजा भगदत्त महाभारत का एक विशिष्ट व्यक्ति था। सभापर्व में लिखा है कि उसने किरात, चीन तथा समुद्रतटवासियों को साथ लेकर आठ दिन तक अर्जुन से युद्ध किया था। सभापर्व २६।७, उद्योग पर्व १८।१५, १६। उक्त उद्धरण से ज्ञात होता है कि उसका राज्य उत्तर की ओर हिमालय तक तथा पूर्व की ओर चीन की सीमा तक विस्तृत था। यह तथ्य राजसूय यज्ञ में युधिष्ठिर को दिये गये उसके उपहारों के वर्णन से भी पुष्ट होता है। उसमें उसने उत्तम घोड़े, रत्नजटित आभूषण, हाथी दाँत की मूठ की तलवारें आदि वस्तुएँ दी थीं, सभापर्व ५१-१३, १६। आसाम में उत्तम घोड़े नहीं होते, प्रत्युत भूटान में उत्तम जाति के टट्रू पाये जाये हैं। आसाम के निचले भाग में हाथी भी नहीं पाये जाते, बल्कि डूअर (आसाम के ऊपरी जंगलों) में पाये जाते हैं। कालिदास ने भी हाथियों की चर्चा की है—“तमीशः कामरूपाणामत्याखण्डलविक्रमम्। भेजे भिन्नकटैनर्गिर्यानुपरोध यैः॥” रघु० ४।८३।

कालिदास ने इस जनपद में कालागुरु की भी चर्चा की है—“चकम्पे तीर्णलौहित्ये तस्मिन् प्राग्ज्योतिषेश्वरः। तद्गजालानताम्प्राप्तैः सहकालागुरुदुमैः” रघुवंश ४।८१। डा० राक्सवर्ग ने लिखा है कि आसाम के पूर्वी भाग में कालागुरु के वृक्ष प्रचुरता से पाये जाते हैं। सातवें शतक के बाणभट्ट ने हर्षचरित में हर्षवर्धन के मित्र कुमार भास्कर वर्मा का उल्लेख विस्तारपूर्वक किया है। वह उस समय वहाँ का शासक था। कामरूप के एक नगर का नाम मणिपुर था। आज भी वह उसी नाम से प्रसिद्ध है। महाभारत में वहाँ की राजकुमारी उलूपी के साथ अर्जुन के विवाह की कथा उल्लिखित है। इस समय भी वहाँ के क्षत्रिय अपना सम्बन्ध अर्जुन पुत्र वध्रुवाहन से कहते हैं।

किसी समय कामरूप की राजधानी लौहित्य के तट पर स्थित प्राग्ज्योतिष थी। वर्तमान गौहाटी का प्राचीन नाम प्राग्ज्योतिष कहा जाता है। नदी के दूसरे तट पर अश्वकान्त नाम की एक पहाड़ी है। श्री कृष्ण ने यहीं नरकासुर का वध किया था। इस जनपद का दूसरा प्रसिद्ध

नगर रङ्गपुर था। कहा जाता है कि यह राजा भगदत्त का ग्राम्य निवास स्थान था। यहाँ कुछ अवशेष अब भी विद्यमान हैं, परन्तु किसी ने उनका अध्ययन नहीं किया।

त्रिपुर—मणिपुर के दक्षिण-पश्चिम त्रिपुर (तिपरा) है। इस जनपद में किसी समय चट्टग्राम (चटगाँव) सम्मिलित था। कुछ लोग इस तिपरा को शिव से जलाये गये असुरों के त्रिपुर को समझते हैं। परन्तु अधिकतर विद्वानों का मत है कि असुरों का त्रिपुर मध्यभारत में है, उसकी चर्चा आगे की जायगी।

ब्रह्मदेश—कामरूप के पूर्व ब्रह्मदेश है, जिसका दूसरा नाम सुवर्णभूमि अथवा सुवर्णद्वीप था। इस जनपद में इरावती नदी बहती है। इसको इरावदी भी कहते हैं। आजकल इस जनपद का प्रचलित नाम बर्मा है। यहाँ बौद्धधर्म का बड़ा प्रभाव था। भिन्न-भिन्न काल में इस जनपद की तीन राजधानियाँ रह चुकी हैं। उत्तरी बर्मा की राजधानी पगान का प्राचीन नाम अरिमर्दनपुर, मध्यवर्ती बर्मा की राजधानी प्रोम का नाम श्रीक्षेत्र तथा दक्षिणी बर्मा की राजधानी पीगू का नाम हंसवती था। बर्मा तथा कलिङ्ग के मध्य में स्थित भारत महासागर के भाग का नाम आजकल बंगाल की खाड़ी है। प्राचीन काल में उसको महोदधि कहते थे—“प्राप तालीवनश्याममुपकण्ठं महोदधेः” रघुवंश ४।३४।

बङ्ग—त्रिपुर के पश्चिम बङ्ग अथवा पूर्वी बङ्गाल है। कुछ लोग बङ्ग को गौड का पर्याय समझते थे, परन्तु एक प्राचीन ग्रन्थ माघवचस्पू में दोनों जनपदों का स्पष्टतया पृथक्-पृथक् उल्लेख है। उसमें लिखा है कि बङ्ग देश में पद्मा तथा ब्रह्मपुत्र नदियाँ बहती हैं—“अस्ति तावद् बङ्गनामा देशः, यस्मिन् पारावारसदृश्यः पद्मावतीप्रभृतयः तरङ्गिण्यः समुल्लसन्ति। यत्र च पावनो ब्रह्मपुत्रनामा महानदो मज्जन्जन्तून्पावयति। तस्यायमीश्वरः प्रभूतसेनात्मजो वीरसेनाह्वयः। बङ्गालक्षोणिपालस्त्रिभुवनजनतागीतकीर्तिप्ररोहः—“माघवचस्पू २६।” “अथ गौडराजमुपस्थितां कलावतीं प्रतिवाग् भारती सादरं कथयतिस्मि” ३। ब्रह्मपुत्र का प्रधान स्रोत पहिले मैमनसिंह से होकर बहता था। बङ्गाल शब्द का प्रचार सर्व प्रथम उक्त चस्पू के आधार पर ही हुआ था। बङ्ग के सम्बन्ध में कालिदास गङ्गामुख की चर्चा

करते हैं—“वङ्गानुत्खाय तरसा नेतासी साघनोद्यतान्। निच-
खानजयस्तम्भान्गङ्गास्रोतोन्तरेषु सः॥” रघुवंश ४।३६। इस
जनपद में समुद्र तट भी सम्मिलित था। भीष्मपर्व में लिखा
है कि वङ्ग का राजा हाथियों को लेकर महाभारत युद्ध में
गया था। भीष्म पर्व अ० ६०। हाथी मैदान में नहीं पाये
जाते, प्रत्युत तिपरा तथा गैरो की पहाड़ियों में पाये जाते
हैं। इससे ज्ञात होता है कि किसी समय वङ्ग जनपद वहाँ
तक विस्तृत था।

वङ्ग रांगे का एक पर्याय भी है—“रङ्गवङ्गे” अमर
६-१०६। यह वङ्गाल में कहीं नहीं पाया जाता। प्रत्युत
मलाया, पेगू तथा ईस्ट इण्डो चीन में प्रचुरता से पाया जाता
है। अतः यह अनुमान किया जाता है कि रांगे का परिचय
भारतीयों को वङ्ग अथवा पूर्वी वङ्गाल के जनों द्वारा सर्व
प्रथम हुआ था। प्राचीन काल में यह जनपद समुद्री व्यापार
का मुख्य केन्द्र भी रहा होगा; क्योंकि सुश्रुत जैसे प्राचीन
लेखकों ने रांगे के अर्थ में वङ्ग शब्द का प्रयोग किया है।

प्राचीन काल में वङ्ग का पर्याय समतट (मैदान) भी
मिलता है। वाराही संहिता १४।६ में ओड्रा (उड़ीसा) तथा
प्रागज्योतिष (कामरूप) के साथ ही वङ्ग जनपद की चर्चा
की गयी है; परन्तु उसकी स्थिति की ओर सङ्केत नहीं किया
गया है। श्युवान् चुआंग ने कामरूप के दक्षिण समतट का
उल्लेख किया है। जिस प्रकार गङ्गा दोआब के (कुत्पांचाल)
का एक नाम समस्थली भी था उसी प्रकार सम्भव है
कि वङ्ग का भी दूसरा नाम समतट रहा हो। नवनगर पा०
सू० ६।२।८६ का उदाहरण नवनगर किसी समय वङ्ग को
राजधानी था। इसका एक नाम नवद्वीप भी था। आजकल
इसको नदिया कहते हैं।

भौरिकिविध—इस जनपद का नाम प्राचीन साहित्य
में नहीं मिलता परन्तु, पाणिनिसूत्र ४।२।५४ की व्याख्या
में भौरिकि जन के देश का नाम भौरिकिविध या भौरिकि-
भक्त लिखा है। वैजयन्ती कोश पृष्ठ ३७ के आधार पर
बंगाल का समतट प्रदेश (दक्षिणी बंगाल) प्राचीनकाल में
उक्त नामों से पुकारा जाता था। समुद्रगुप्त के प्रयाग के
स्तम्भलेख में भी समतट का उल्लेख है।

रूपनारायण—ताम्रलिप्ति (तमलुक) वर्तमान कोशी-
नदी (कोशिकी) के तट पर स्थित है। वहाँ के निवासी

उक्त नदी को रूपनारायण भी कहते हैं। कालिदास के आधार
पर इसी का नाम कपिशा भी ज्ञात होता है—‘स तीर्त्वा
कपिशां सैन्यैर्वद्धद्विरदसेतुभिः। उत्कलादशितपथः कलिङ्गा-
भिमुखं ययौ॥ रघु ४।३८।’ इस नदी के तट पर कालो का
एक प्राचीन तथा प्रसिद्ध मन्दिर है। जिसकी चर्चा दण्डी
ने की है—“अमुष्मिन्नायतेन विस्मृतविन्ध्यवासरागं वसन्त्या
विन्ध्यवासिन्या” दशकुमार ४। रूपनारायण नदी हवड़ा तथा
मिदनापुर जिलों की प्राकृतिक सीमा बनाती है। यह मानभूम
के पहाड़ से निकल कर बाँकुड़ा, हुगली तथा मिदनापुर जिलों
में होती हुई तमलुक के समीप हुगली से मिली है। अति
प्राचीनकाल में तमलुक समुद्र के अति निकट था। समुद्री
व्यापार में उसका महत्त्वपूर्ण स्थान था। यहाँ के व्यापारी
ताम्रलिप्तक कहे जाते थे।

ओड्रा—ताम्रलिप्ति के दक्षिण के जनपद का प्राचीन
नाम ओड्रा था। आजकल उसको उत्कल अथवा उड़ीसा
कहते हैं। “ओड्रा उत्कलनामानः” त्रिकाण्डशेष भूमिवर्ग। यह
जनपद कालिदास के समय उत्तर की ओर कपिशा (कोसी)
तक विस्तृत था। महाभारत में विदेह तथा ताम्रलिप्ति के
साथ ओड्रा का भी उल्लेख है। मालूम पड़ता है कि किसी
समय यह कलिङ्ग जनपद के अन्तर्गत था। उत्कल कलिङ्ग
के उत्तर की ओर है इस जनपद में विरजाचेत्र, पुरुषोत्तम-
क्षेत्र तथा एकाग्रक्षेत्र हैं। उत्तरकलिङ्ग अथवा उत्कलिङ्ग
शब्दों का ही संचिप्त रूप उत्कल मालूम पड़ता है।
कालिदास के समय उत्कल कलिङ्ग से पृथक् हो गया था,
क्योंकि उन्होंने दोनों जनपदों का पृथक् उल्लेख किया है।
महाभारत में भी सहदेव के दिग्विजय की सूची में दोनों
जनपदों के पृथक्-पृथक् नाम आये हैं। किराता बर्बराः
सिद्धा विदेहास्ताम्रलिप्तकाः। “ओड्रा म्लेच्छाः ससैरिन्ध्राः
पावर्तियाश्च मारिषाः॥” भीष्मपर्व ६।१५। “पाण्ड्याश्च
द्रविडाश्चैव सहिताश्चोड्रकेरलैः। आन्ध्रास्तालवनाश्चैव
कलिङ्गानुष्टर्कणिकान्॥” समापर्व ३१-७१।

वर्तमान समय में इस जनपद का प्रधान नगर कटक
दशवीं शताब्दी में नृपकेशरी द्वारा बसाया गया था—
हरट्टर का बङ्गाल खण्ड १७ पृ० १८४। प्राचीनकाल में
इसका नाम पद्मावती था। माधवचम्पू के आधार पर यह
मृकन्दसेनदेव की राजधानी थी—“अस्ति तावदुत्कलाधिराजो

मुकुन्दसेननामा नृपतिकुलमुकुटमणिस्तस्य तनुजा त्रिभुवन-
कमनीयमूर्तिः कलावतीति विख्याता सम्प्रति पुनः पद्मावतीं
प्राप्तवती।” माधवचम्पू २। प्राचीनकालमें बालसर (बालेश्वर)
जिले की सीमा पर स्थित जाजपुर (यज्ञपुर) तथा
भुवनेश्वर के विख्यात मन्दिर का नगर जो कि पुरी जिले में
है, इसकी राजधानी थे। कथासरित्सागर में पूर्वी सागर
के तट पर स्थित कर्कोटक नाम के एक नगर का उल्लेख
मिलता है—“अस्ति पूर्वाम्बुधेः पारेपुरं कर्कोटकाभिषम” कथा
स० सा० १८-२३३ २३४। परन्तु उक्त नगर की पहिचान
अभी तक न हो सकी।

इस जनपद का दूसरा प्रधान नगर पुरी है। यह कटक
के दक्षिण है। यहाँ जगन्नाथ का प्रख्यात मन्दिर है। यह
मन्दिर बहुत प्राचीन नहीं जान पड़ता, क्योंकि महाभारत
तथा पुराणों में इसकी चर्चा नहीं मिलती, केवल स्कन्द
पुराण में इसका वर्णन मिलता है।

ओड़ अथवा जपा अड़हुल के फूल को कहते हैं—“ओड़-
पुष्पम् जपापुष्पम्” अमर २-४-२६। यह कई प्रकार का होता
है। डा० राक्स वर्ग ने लिखा है कि यह पुष्प अधिकतर
मध्य भारत में पाया जाता है। सम्भव है प्राचीनकाल में
यह पुष्प ओड़ जनपद में अधिक उत्पन्न होता रहा हो,
उसी के नाम पर जनपद का नाम ओड़ पड़ गया हो।

कलिङ्ग—ओड़ के दक्षिण कलिङ्ग जनपद है। इस
जनपद में महानदी, वैतरणी, ब्राह्मणी तथा ऋषिकुल्या
नाम की नदियाँ बहती हैं। वैतरणी के दक्षिण तथा गोदावरी
के उत्तर का प्रदेश इस जनपद में सम्मिलित था—“एते
कलिङ्गा कौन्तेय यत्र वैतरणी नदी” ३-११४-४। कलिङ्ग
की उत्तरी सीमा वैतरणी तथा दक्षिणी सीमा गोदावरी थी।
किसी समय गोदावरी का नदी-मुख आन्ध्रनरेश के अधिकार
में था—एक बार कलिङ्ग राज अपने अन्तःपुर के साथ
सागर तट पर अग्रगण्य गया था। वहाँ उसके पड़ोसी
आन्ध्रनरेश ने उसको पकड़ लिया था—“कलिङ्गनगरस्य
.....कलिङ्गराजः सहाङ्गनाजनेन.....
सागरतीरकानने तत्र रन्ध्रे आन्ध्रनाथेन जयसिहेन.....
ब्रागागत्य.....अगुह्य तसकलत्रः—दशकुमार ७।
कलिङ्ग जनपद की राजधानी ऋषिकुल्या नदी के मोहाने
पर स्थित कलिङ्ग नगर थी। वहाँ से ताम्रलिप्ति (तामलुक),

सिंहल (लंका), ब्रह्मद्वीप, सुवर्णद्वीप (सुमात्रा) तथा यवद्वीप
(जावा) आदि स्थानों को समुद्री मार्ग जाते थे। कलिङ्ग जन
वड़े शूरवीर होते थे उन्होंने अनेक द्वीपों में जाकर अपना राज्य
स्थापित किया था। अब भी उस जनपद के रहने वाले
जन अपने को विलग (कलिङ्ग का विकृतरूप) कहते हैं।

भारतीय जनपदों में कलिङ्ग का स्थान महत्त्वपूर्ण था।
प्राचीन काल में भारत में मागध तथा कालिङ्ग दो परिमाण
प्रचलित थे। कलिङ्ग जनपद के दक्षिणी भाग में महेन्द्र पर्वत
(पूर्वीघाट, महेन्द्रमलै) था इसी कारण इस जनपद का
राजा महेन्द्रनाथ कहा जाता था।

आन्ध्र महेन्द्र पर्वत के दक्षिण आन्ध्र जनपद था।
यह गोदावरी तथा कृष्णा नदियों के नदी-मुख के मध्य में
स्थित अतीव उपजाऊ प्रदेश था। यहाँ के निवासी बड़े
साहसी होते थे। इनकी जीविका का प्रधान साधन व्यापार
था। किसी समय आन्ध्र के राजा सातवाहनो का राज्य
सह्याद्रि (पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग) से लेकर महेन्द्र
पर्वत तक विस्तृत रहा। पश्चिम में नासिक से लेकर पूर्व में
अमरावती, नागार्जुनी तथा कोण्डा तक का प्रदेश उनके
राज्य में सम्मिलित था। उक्त जनपद की भाषा तेलुगू थी।

श्रीशैल—इस जनपद में श्रीशैल नाम का एक पर्वत है।
महाभारत से ज्ञात होता है कि यह पर्वत महेन्द्र तथा देव-
हूद के मध्य में स्थित है—“ततो महेन्द्रमासाद्य जामदग्न्य-
निषेवितम् । रामतीर्थे नरः स्नात्वा वाजपेयफलं लभेत् ।
श्रीपर्वतमासाद्य नदीतीरमुपस्पृशेत्.....तत्र देव
हूदेस्नात्वा शुचिः प्रयतमानसः ॥” वनपर्व ८५-१६-२०।
मद्रास प्रदेश के कृष्णा जिले की कृष्णा नदी के तट पर यह
पर्वत है। इस पर्वत पर शिव के द्वादशज्योतिर्लिंगों में से
मल्लिकार्जुन नाम का एक शिवलिंग है। कथासरित्सागर
१६-२३, २४ से ज्ञात होता है कि कृष्णा तथा पलार के
मध्य में समुद्र तटवर्ती वनों तथा पर्वतों पर असम्य जन
रहते थे। महाभारत के दक्षिणी यवन इसी जाति के जन
मालूम पड़ते हैं।

द्रविड—उपरिलिखित वन्य प्रदेश के दक्षिण का देश
द्रविड जनपद कहलाता था। इस जनपद की प्रधान नदियाँ
पिनाकिनी, कावेरी तथा ताम्रपर्णी हैं। पिनाकिनी नदी के
उत्तर इतिहास प्रसिद्ध पल्लव जन रहते थे। इस जनपद

की राजधानी काञ्ची थी—“द्रविडमण्डलमौलिमाणिक्यस्तव-
कमिदञ्च काञ्चीपुरनामधेयं सायतनं मीनकेतनस्य” अनर्घराघव
७। “अस्ति द्रविणोपु काञ्चीनाम नगरी” दशकुमार ६। मद्रासके
दक्षिण-पश्चिम वेगमती नदी के तट पर स्थित आधुनिक
काञ्चीवरम् का प्राचीन नाम काञ्ची अथवा काञ्चीपुरी
था। यह अपने सुन्दर मन्दिरों के लिये विख्यात है। वसन्त-
तिलक के भाण के कथानक का स्थान यही नगर है। इस
भाण का एक श्लोक इस नगर को भारत के नगरों में प्रथम
स्थान देता है—“नारीपु रम्भा नगरेपु काञ्ची काव्येपु माघः
कविकालिदासः।” इस जनपद में किसी समय गोदावरी के
दक्षिण का कारोमण्डल सम्मिलित था। महाभारत
३-११८-३४ में लिखा है कि पाण्डव लोग गोदावरी को
पारकर इस जनपद में प्रविष्ट हुए थे। इस जनपद की भाषा
तामिल है।

चोल—चोल जनपद कावेरी तथा पिनाकिनी के मध्य
में स्थित था। महाभारत के भीष्मपर्व तथा अन्य पुराणों में
उल्लेख है कि—“तेषां परे जनपदा दक्षिणापथवासिनः।
पाण्डवाश्च केरलाश्चैव चोला कुल्यास्तथैव च॥” मत्स्य पु०
११३।४६। सभापर्व में लिखा है कि चोल तथा पाण्डव के
राजा युधिष्ठिर के लिये उपहार में मलय तथा दर्दुर पहाड़ों
से चन्दन, अगर, बहुमूल्य रत्न तथा मलमल ले गये थे—
“मलया दर्दुराश्चैव चन्दनागुरुसंचयान्। मणिरत्नानि
भास्वन्ति काञ्चनं सूक्ष्मवस्त्रकम्। चोलपाण्डवापि
द्वारौ न लेभाते ह्युपस्थितौ॥”—सभापर्व ५३-३४, ३५। मलय
पर्वत की ही एक छोटी शृंखला का नाम दर्दुर है। पण्डित
की धारणा है कि नील गिरि अथवा पलनी पर्वत का नाम
दर्दुर था। कावेरी के बीच पश्चिमी घाट का दक्षिणी भाग,
जिसको आजकल ट्रावन्कोर पर्वत कहते हैं, मलय पर्वत का
पश्चिमी भाग है। कथासरित्सागर १९-६५ में कावेरी नदी
के तट पर चोल जनपद की स्थिति का स्पष्ट उल्लेख मिलता
है—“उल्लङ्घ्यमाना कावेरी तेन समदकारिणा। चोलकेश्वर-
कीर्तिश्च कालुष्यं ययतुः समम्।” बाद में चलकर इस जनपद
का नाम कर्नाटक पड़ गया। यहाँ कन्नड़ी भाषा बोली
जाती है।

चोल जनपद के लिये कर्नाटक का प्रयोग बाल रामायण
में मिलता है। उसमें लिखा है कि कावेरी का जल कर्नाटकी

स्त्रियों के स्नान करने से अपनी दिशा को छोड़ देता है—
“कावेरी कवरीव भामिनिभुवो देव्याः पुरो दृश्यताम्, पूर्गेर्नाग-
लताश्रितैरुपदिशत्यारलेषविद्यामिव। कान्ताटीजनमञ्जनेषु
जघनैर्यस्याः पयः प्लावितम्, पोत्वा नाभिगुहाभिरात्मरुचिभिः
प्राचीं दिशं नीयते॥ वा० रा० १०-७२। प्राचीनकाल में
इसकी राजधानी कौन थी—ज्ञात नहीं, परन्तु मध्यकाल में
श्रीरङ्गपत्तन थी। पंद्रहवें शतक में श्री चैतन्यदेव इस
स्थान पर गये थे।

पाण्ड्य—चोल जनपद के दक्षिण-पश्चिम अर्थात्
भारत के विलकुल दक्षिण पाण्ड्य देश था। वा० रा० के
आधार पर मालूम होता है कि इस जनपद में मलय पर्वत
तथा ताम्रपर्णी नदी थी—“अये! कथमसी पाण्ड्यः—यत्की-
र्तिलयाद्रिचन्दनलताकुञ्जं भुजङ्गाङ्गनाः श्रुत्वा तच्छ्रवरी-
जनात् फणितेर्गायन्ति संगीतिपु। पाण्ड्यः सोऽयमुदन्वदन्वयवृषा
किञ्चान्यदस्य स्वयं दातुं मौक्तिककामधेनुरसमा सा ताम्रपर्णी
सरित्”॥ वा० रा० ३-३१। ये शब्द नीलगिरि की घाटियों
में रहने वाले तूद जान पड़ते हैं। कालिदास के समय यह
जनपद कावेरी से लेकर भारत महासागर तक विस्तृत था।
उन्होंने इसकी राजधानी का नाम उरगपुर लिखा है—
“अथोरगाव्यस्य पुरस्य नाथम्” रघु—० ६-५१।

आधुनिक नेगपत्तम (नाग पत्तन) का प्राचीन नाम
उरगपुर था। यह मद्रास के दक्षिण १६० मील पर स्थित
है। इस जनपद का दूसरा नगर मदुरा (मधुरा) है।
इसको राजा कुलशेखर ने बसाया था। भारत का प्रसिद्ध
रामेश्वर तीर्थ इसी जनपद में है। प्राचीन साहित्य का
गोर्ख भी यही मालूम पड़ता है—“अपरोधसि दक्षिणोदधेः
श्रितगोर्खनिकेतमीश्वरम्” रघु ८।३३। दोनों स्थान दक्षिणी
सागर के तट पर हैं। तथा दोनों स्थानों पर शिवलिङ्ग भी
हैं। लङ्का जाने वाले जन यहीं से जहाज द्वारा अपनी यात्रा
प्रारम्भ करते हैं।

रामायण से ज्ञात होता है कि श्रीरामचन्द्र ने यहीं सेतु
बनवाकर समुद्र पार जाकर लङ्का पर आक्रमण किया था।
आजकल यहाँ समुद्र के भीतर दिखाई देनेवाली चट्टानों
को लोग श्रीराम द्वारा बनवाया गया सेतु कहते हैं। उसी
को आदम का पुल भी कहते हैं। रामायण में इसका नाम

नलसेतु लिखा है—“यावत् स्थास्यन्ति गिरयो यावत् स्थास्यति सागरः । नलसेतुरिति ख्यातस्तावन्व स्थास्यति ध्रुवम् ।” रामायण ६-१०८-१६। आजकल इसका प्रचलित नाम ‘सेतुबन्ध’ ही है। सेतुबन्ध के आगे सिंहल द्वीप है साधारणतया लोग इसी को रामायण की लंका मानते हैं। यहाँ रोहण पर्वत अथवा आदम की चोटी है—“पश्यस्यग्रे जलधि-परिखं मण्डलं सिंहलानां चित्रोत्तसं मणिमयभुवः रोहणेना चलेन । दूर्वाकाण्डच्छविपु चतुरं मण्डनं यद्वधूनां गात्रेण्व-म्भो भवति गमितं रत्नतां शुक्तिगर्भैः । वा० रा० १०-४८।

केरल—मलय पर्वत के पश्चिम भाग में केरल देश था जिस भाग में आजकल मलाबार, कोचीन तथा ट्रावन्कोर हैं, उसी प्रदेश को केरल कहते थे। इस जनपद के दक्षिण कन्याकुमारी अन्तरीप है। यहाँ समुद्र के तट पर पार्वती का परम मनोहर मन्दिर है। महाभारत में कन्याकुमारी की स्थिति पाण्ड्य जनपद में उल्लिखित है—“कुमार्यः कथिताः पुण्याः पाण्ड्येण्वेव नरपंभ” ३-८८-१४। महाभारत में ऋषभ पर्वत की स्थिति भी पाण्ड्य जनपद में ही लिखी है—“ऋषभं पर्वतं गत्वा पाण्ड्येषु सुरपूजितम् । वाजपेयमवाप्नोति नाकपृष्ठं च मोदते ॥ ३-८५-२१। सम्भव है प्राचीन काल में मलय की किसी शृंखला का नाम ऋषभ रहा हो।

अश्मक—पाण्ड्य जनपद के पश्चिम ट्रावन्कोर है। स्थानीय जन इसको चेरों का देश कहते हैं। परन्तु प्राचीन साहित्य ग्रन्थों में इसका उल्लेख नहीं मिलता। डा० कर्न ने बाराही संहिता के चेरों को चेर माना है। दशकुमार चरित में लिखा है कि अश्मक के राजा ने विदर्भ (वरार) के राजा के विरुद्ध सार्वजनिक विद्रोह कराने के लिये कुन्तल, कोङ्कण, वनवासी, मुरल, ऋचिक तथा नासिक के राजाओं को उत्तेजित किया था—“अथ वसन्तभानुर्भानुवर्माणं वन-वास्यां व्यग्राह्यत अश्मकेन्द्रस्तु कुन्तलपतिमेकान्ते समम्यघत्त प्रमत्त एष राजा कियत्यवज्ञा सोढव्या—तदावां सम्भूय मुरलेशं वीरसेनमृचीकेशमेकवीरं, कोङ्कणपतिं कुमारपुप्तं नासिक्यनागपालमुपजपावः” दशकुमार १४-१५। मुरल केरल देश का ही पर्याय है। अश्मक को छोड़कर इनकी स्थिति का निर्णय हो चुका है। अतः कुछ विद्वान् ट्रावन्कोर का ही प्राचीन नाम अश्मक मानते हैं। ब्रह्माण्ड पुराण में अश्मक की स्थिति दक्षिण भारत में लिखी है। कौटिल्य के

अर्थशास्त्र के प्रसिद्ध टीकाकार भट्टस्वामी ने महाराष्ट्र प्रान्त को अश्मक माना है।

पाणिनि सूत्र ४।१।१७३ में अश्मक का उल्लेख है। अश्मक जनपद गोदावरी के दक्षिण सह्याद्रि (पश्चिमी घाट का उत्तरी भाग) पर्वतशृंखला तक विस्तृत था। अनेक प्रमाणों से ज्ञात होता है कि गोदावरी तट पर स्थित प्रतिष्ठान (पैठण) अश्मक जनपद को राजधानी था। महाभारत का अश्वक तथा बौद्ध साहित्य का अस्सक यही है।

तमसा-मुरला—भवभूति ने उत्तररामचरित में तमसा, मुरला नाम की दो नदियों का उल्लेख किया है। तमसा की चर्चा की जा चुकी है। मुरला केरल जनपद की प्रधान नदी है—“भयोत्सृष्टविभूषाणां तेन केरलयोषिताम् । अल-केषु चमूरेणुश्चूर्णप्रतिनिधीकृतः । मुरलामास्तोद्धूतमगमत् कैतकं रजः । तद्योषवरवाणानामयत्नपटवासताम् ॥ रघु० ४।५५। मुरला नदी के समीप रहने के कारण वहाँ के जन मुरल कहे जाते थे। कथा सरित्सागर १६-९६ में चोलों के बाद ही मुरलों की चर्चा की गयी है। रघुवंश तथा कथासारित्सागर के उद्धरणों से ज्ञात होता है कि पश्चिमीघाट तथा कावेरी के उत्तर के सागरमध्यवर्ती भूमिखण्ड को केरल कहते थे। इसकी उत्तरी सीमा कोङ्कण का दक्षिणी भाग है। इस प्रदेश की मुख्य नदियाँ नेत्रवती, शरावती तथा काली हैं। नेत्रवती के तट पर मङ्गलोर, शरावती के तट पर हूनवर तथा काली नदी के तट पर सदाशिवगढ़ स्थित हैं। सम्भवतः काली नदी का ही प्राचीन नाम मुरला हो सकता है। भवभूति तथा कालिदास ने इसी का उल्लेख किया है।

कालिदास ने केरल देश में पुन्नाग वृक्षों की प्रचुरता का उल्लेख किया है। पुन्नाग को ही नागकेशर कहते हैं—“कटेपु करिणाम् पेतुः पुन्नागेभ्यः शिलीमुखाः” रघु० ४.५७। डा० राक्सवर्ग ने लिखा है कि पुन्नाग कारोमण्डल तट का प्रधान वृक्ष है। केरल जनपद को उग्र भी कहते थे। “उग्राः केरल पर्यायाः” हेम० ४।२७।

कोङ्कण—गोवा के उत्तर कुछ मील की दूरी पर स्थित दामन समुद्रतट का नाम आजकल भी कोङ्कण है। इस जनपद में तन्ना तथा रत्नागिरि के जिले सम्मिलित हैं।

हरिवंश पुराण १५ अध्याय में इस जनपद के निवासियों का नाम मदगुह लिखा है परन्तु इस नाम करण का आधार नहीं मालूम पड़ता ।

नासिक्य—उत्तरी कोङ्कण के पूर्व नासिक्य राज्य है । आजकल इसको नासिक कहते हैं । वाराही संहिता के १४ वें अध्याय में कनटिक तथा चोलों के साथ इस जनपद का भी नाम उल्लिखित है । यहाँ के जनों की चर्चा अन्य पुराणों में भी मिलती है । सम्भवतः इस जनपद में दौलतावाद (देवगिरि) सम्मिलित है । दौलतावाद राजा महादेव के महामात्य हेमाद्रि के कारण अधिक प्रसिद्ध हो गया है—“अस्ति शब्दगुणस्तोभः सोमवंशविभूषणम् । महादेव इति ख्यातो राजराजेव भूतले.....तस्यास्ति नाम हेमाद्रिः सर्वस्वीकरणी प्रभुः ॥” हेमाद्रि । किसी समय इस जनपद को ऋक्ष भी कहते थे, क्योंकि ऋक्ष शृङ्खला का कुछ भाग इसमें भी है । हरिवंश पुराण में इस देश के राजा को आर्च कहा गया है । आर्च का अर्थ ऋक्षों का राजा होता है । अतः ज्ञात होता है कि नासिक्य का एक नाम ऋक्ष भी रहा होगा ।

शूर्पारक—नासिक्य के दक्षिण-पूर्व महाभारत का प्रसिद्ध शूर्पारक है आजकल इसको सोपारा कहते हैं । महाभारत में शूर्पारक के वर्णन से इसकी पुष्टि होती है—“स तानि तीर्थानि च सागरस्य पुण्यानि चान्यानि बहूनि राजन् ! क्रमेण गच्छन् परिपूर्णकामः शूर्पारकं पुण्यतमं ददर्श ॥ तत्रोदधेः किञ्चिदतीत्य देशं ख्यातं पृथिव्यां वनमाससाद । तप्तं सुरैरत्र तपः पुरस्तादिष्टं तथा पुण्यपरिर्नरेन्द्रैः ॥”—वनपर्व ११८-८-१० । “ततः शूर्पारकश्चैव तालीकटमथापि च” । सभापर्व ३१-६५ । यह परशुराम से बसाया गया कहा जाता है—हरिवंश ५३०० । परशुराम ऋचीक के वंशज थे । अभीतक इस जनपद का सम्बन्ध ऋचीक नाम से विद्यमान है । इस जनपद में पूना तथा सतारा जिले सम्मिलित थे ।

पद्मावत—शूर्पारक के दक्षिण पद्मावत था । इस जनपद की राजधानी करवीर थी । हरिवंश इसकी स्थिति वेण्या के तट पर बतलाता है—“पद्मावतोंपि राजर्षिः सह्यपृष्ठे पुरोत्तमम् । चकार नद्या वेण्यायास्तीरे तरुलताकुले । विषयस्याल्पतां ज्ञात्वा सम्पूर्णं राष्ट्रमेव च । निवेशयामास नृपः सवप्रप्रायमुत्तमम् ॥ पद्मावतं जनपदं करवीरञ्च

तत्पुरम्” ॥ हरिवंश ५२२८-३ । कोल्हापुर का एक नाम करवर भी कहा जाता है । सम्भवतः प्राचीन करवीर यही हो सकता है । परन्तु कोल्हापुर वेण्या के तट पर नहीं है, उसकी एक सहायक नदी के तट पर स्थित है । सम्भव है प्राचीन काल में वेण्या की प्रधान धारा वहाँ से होकर बहती रही हो । देवीभागवत में कोल्हापुर की चर्चा मिलती है, अतः यह नगर प्राचीन अवश्य है—“कोल्हापुरं महास्थानं यत्र लक्ष्मीः सदा स्थिता” देवीभागवत ७-३८-५१ ।

वनवासी—पद्मावत के दक्षिण वनवासी जनपद था । यह तुङ्गा तथा भद्रा नाम की दो छोटी नदियों के मध्य में स्थित था । इसकी राजधानी का नाम वैजयन्ती था । आजकल भी लोग इसको वनवासी कहते हैं । कर्नल मैकेञ्जी की वनवासी नगर के अवशेष सूडा जिले में प्राप्त हुए थे । सूडा भी प्राचीन स्थान मालूम पड़ता है । यहाँ के निवासियों का कहना है कि इसका एक प्राचीन नाम सौधपुर भी था । महाभारत के वनपर्व अध्याय ८-१४-२३ में इसका विस्तृत उल्लेख मिलता है ।

कुन्तल—वनवासी के पूर्व तथा चोल के उत्तर कुन्तल जनपद था । गोदावरी के दक्षिण कृष्णा नदी सह्याद्रि से निकल कर पूर्व की ओर बहती है उसके तटवर्ती प्रदेश का ही प्राचीन नाम कुन्तल था । इसकी राजधानी का नाम कल्याण था । कृष्णा दक्षिण भारत की प्रधान नदी है । यह पूर्वी घाट को तोड़कर बङ्गाल की खाड़ी में गिरती है । यह मद्रास, हैदराबाद तथा बम्बई के प्रदेश में होकर बहती है । आलमपुर के पूर्वोत्तर से जगज्यपेट के नीचे कुछ दूरी तक यह हैदराबाद की प्राकृतिक सीमा का काम करती थी । इसी कुन्तल जनपद में तालीकट का प्रसिद्ध युद्ध हुआ था । कुन्तल का एक नाम उपहालक भी था—कुन्तला उपहालकाः” हेमचन्द्र ४।२७ ।

विदर्भ—कुन्तल के उत्तर विदर्भ जनपद था । प्राचीनकाल में यह जनपद कृष्णा नदी से लेकर नर्मदा के समीप तक विस्तृत था । अपने महदाकार के कारण ही प्राचीनकाल में यह महाराष्ट्र भी कहलाता था । बालरामायण से इसके दोनों नामों का पता चलता है—“रामः—यत् क्षेत्रं त्रिदिवस्य वर्त्म निगमस्याङ्गञ्च यत् सप्तमम् । स्वादिष्टं च यदैक्षवादपि रसाच्चक्षुश्च यद्वाङ्मयम् । तद्यस्मिन् मधुरं

प्रसादि रसवत् कान्तञ्च काव्यामृतं सोऽयं सुभ्रु पुरो विदर्भ-
विषयः सारस्वतीजन्मभूः” बा० रा० १०-७४। अनर्घराघव
से भी इसकी पुष्टि होती है—“इदमग्रे महाराष्ट्रकमण्डलं
कुण्डनं नाम नगरम्। इह हि विदर्भीणां भूरि प्रियतमपरि-
रम्भरभसप्रसङ्गादङ्गानि द्विगुणपुलकसञ्जि तनुते।” अनर्घ-
राघव ७-९६। यह जनपद नर्मदा के दक्षिण तक ही सीमित
था क्योंकि अज को वहाँ जाने में नर्मदा को पार करके जाना
पड़ा था—“तथेत्युपस्पृश्य पयः पवित्रं सोमोद्भवायाः सरितः
नृसोमः। ययौ विदर्भान्.....” रघु० ५-५९, ६०। इस जनपद
के क्रथ तथा कैशिक नाम के दो प्रसिद्ध राजा हो चुके हैं
उन्हीं के नाम पर यहाँ के निवासी क्रथकैशिक भी कहे जाते
थे। “प्रत्युज्जगाम क्रथकैशिकेन्द्रः” रघु० ५-६१। विष्णु-
पुराण ४-१२, १४, १५ से भी ज्ञात होता है कि क्रथ तथा
कैशिक यहाँ के राजा थे।

इस जनपद की प्राचीन राजधानी का नाम कुण्डिनपुर
था। लोग इसको विदर्भपुरी भी कहते थे—“स्यात् विदर्भा तु
कुण्डिनम्” हेम० ४।४५ गोदावरी के उत्तर तथा पूर्व भाग में
स्थित आधुनिक वरार का प्राचीन नाम विदर्भ था। किसी
समय यहाँ दमयन्ती के पिता भीम तथा रुक्मिणी के पिता
भीष्मक का राज्य था। भीष्मक के पुत्र रुक्म ने अपनी
प्राचीन राजधानी को छोड़कर भोजकट को अपनी राज-
धानी बनाया। भोजकट को कुण्डिनपुर के और उत्तर
कहीं होना चाहिये, क्योंकि रुक्म ने श्री कृष्ण से अपनी
बहिन रुक्मिणी के अपहरण का बदला लेने के लिये नर्मदा
के तट तक उनका पीछा किया था, जब उनको न पा सका
तो लौट कर लज्जा के कारण कुण्डिनपुर न जाकर भोजकट
में ही ठहर गया और उसको अपनी राजधानी बना लिया।
हरिवंश ११८। विष्णुपुराण ५-२८। मालविकाग्निमित्र
में लिखा है कि अग्निमित्र ने विदर्भ को वरदा नदी के उत्तर
दक्षिण दो भागों में विभक्त कर दिया था। वरदा नदी
अपनी पैनी गङ्गा नाम की सहायक नदी से बरार जनपद
को निजाम के राज्य से पृथक् करती है। मालूम पड़ता है
कि उत्तरी बरार की राजधानी अमरावती तथा दक्षिण
बरार की राजधानी किसी समय प्रतिष्ठान (पैठण) थी—
“तौ पृथक् वरदाकूले शिष्टामुत्तरदक्षिणे। नक्तं दिनं विभ-
ज्योभौ शीतोष्णकिरणाविव” मालविकाग्निमित्र ५।१३।

“अस्ति नाम्ना प्रतिष्ठानं नगरं दक्षिणापथे। प्रतिष्ठाना-
भिधानोऽस्ति देशो गोदावरीतटे॥” कथासरित्सागर ५१-
११७। ७५-२१।

विदर्भ जनपद में वैदर्भी नाम की एक मनोरम रीति का
प्रादुर्भाव हुआ था। वामन जैसे प्राचीन साहित्याचार्यों ने
इसकी चर्चा की है। विदर्भ जनपद में भोजों का भी राज्य
था। भोज राजा द्रुह्यु के वंशज थे—“द्रुह्योः सुतास्तु वै भोजा
अनोस्तु म्लेच्छजातयः” महाभारत १-८३-८४। भोज जन
भारत के अनेक भागों में रहते थे, क्योंकि भारत के अनेक
भागों में अनेक भोजपुर आज भी वर्तमान हैं। भोजों के
अनेक वंशज हुये, जैसे कुन्तिभोज, इन्हीं कुन्तिभोज ने कुन्ती को
गोद लिया था; मातिकावत अथवा मृत्तिकावत भोज “तस्या-
न्वये भोजा मातिकावता बभूवुः” विष्णु पु० ४।१३।५३।
“भोजैः सहाकूरो द्वारकामपहायाक्रान्तः” विष्णु पु० ४।१३।५२।
मातिकावत के राजा ने कुरुक्षेत्र में दुर्योधन के पक्ष से युद्ध
किया था। परम प्रसिद्ध राजा भोज भी (धारा नगरी का
राजा) इसी वंश का था।

तिलिङ्ग—प्राचीन निजाम राज्य का पूर्वी भाग तिलिङ्ग
कहलाता था। “तिलिङ्गाः कुञ्जरदरीकच्छवासाश्च ये
जनाः।” मार्कण्डेय पु० ५८।२८। यहाँ की भाषा तेलुगु है।
बारहवीं शताब्दी में इसकी राजधानी बारङ्गल (बरन कुल)
से ६ मील उत्तर हम्मन कोन्द्र (हर्म्य कुण्ड) थी। किसी
समय यह जनपद आन्ध्र जनपद के अधीन था।

महाभारत में वर्णित दक्षिण भारत का भूगोल भ्रामक
तथा अस्पष्ट मालूम पड़ता है। बुन्देलखण्ड की सीमा से
लेकर कृष्णा नदी के तट तक का समस्त प्रदेश विशाल बन
था। वह दण्डक के नाम से प्रसिद्ध था। श्रीराम चित्रकूट
से चल कर इसी बन में गये थे। यहाँ उनको एक वेगवती
नदी को पार करना पड़ा था। वह नदी एक ऊँचे पर्वत के
समीप थी। सम्भवतः वह नर्मदा नदी थी। इसी बन में
उनको एक पञ्चाप्सर नाम का सरोवर मिला था। यह
सरोवर सम्भवतः मध्य प्रदेश में था। उन्होंने इसी बन में
प्रस्रवण (गोदावरी के तट पर स्थित औरङ्गाबाद की
पहाड़ी, जिसका दूसरा नाम माल्यवान था) तथा गोदावरी
के समीप पञ्चवटी में कुछ समय व्यतीत किया था। दण्डक

वन का यह भाग जनस्थान नाम से प्रसिद्ध था। उस प्रदेश के रहने वाले जन भी दण्डक कहलाते थे।

किष्किन्धा—वानरराज सुग्रीव की राजधानी किष्किन्धा थी। वीजापुर के समीप निम्बपुर नाम के एक छोटे से गाँव के समीप पूर्व की ओर ज्वालामुखी के विस्फोट से बने हुये चूने के पत्थर की एक अण्डाकार राशि पड़ी हुई है। स्थानीय जनो में यह अनुश्रुति है कि यह श्री रामचन्द्र से मारे गये बाली की हड्डियों की भस्म-राशि है। प्राचीन यात्रियों के यात्रा-विवरण से ज्ञात होता है कि प्राचीन किष्किन्धा आजकल भी किष्किन्धा तथा अज्जदी नाम से पुकारी जाती है। अज्जदी नाम का गाँव बेलरी के समीप विजय नगर से तीन मील की दूरी पर तुङ्गभद्रा नदी के तट पर स्थित है। किष्किन्धा से दक्षिण-पश्चिम लगभग दो मील पर स्थित पेन्नर को लोग पम्पा कहते हैं। पम्पा के उत्तर-पश्चिम अज्जना नाम की पहाड़ी है। यहाँ हनुमान् का जन्म हुआ था। किष्किन्धा से साठ मील पश्चिम शवरी का आश्रम है। पेन्नर को पम्पा मानने में एक आपत्ति यह उठती है कि रामायण में पम्पा एक सरोवर माना गया है—“तौ पुष्करिण्याः पम्पायाः” रामा० ३-७७-६ और पेन्नर एक नदी है, परन्तु उत्तरी तथा दक्षिणी दोनों पेन्नर सरोवरों अथवा झीलों से निकली हैं। उत्तरी पेन्नर चन्द्रदुर्ग के मध्य में स्थित एक झील से निकलती है यदि यही झील पम्पा है तो निःसन्देह चन्द्रदुर्ग ऋष्यमूक पर्वत का नाम है, क्योंकि ऋष्यमूक पर्वत को पम्पा के समीप होना चाहिये। रामायण ३-७६-२६। महाभारत वनपर्व २७६-४४। सम्भव है झील के नाम पर नदी का नाम पम्पा पड़ गया हो।

रुमणवत्—पा० सू० ८।२।१२ में रुमणवत् शब्द का उल्लेख है। काशिकाकार ने लवण शब्द के स्थान में रुमण का आदेश करके रुमणवत् शब्द की सिद्धि की है। सम्भवतः यह अजमेर जिले की साँभर झील के समीपवर्ती प्रदेश का नाम रहा हो, क्योंकि उस झील से लूनी नाम की एक नदी निकलती है सम्भव है प्राचीन काल में उसका नाम रुमा रहा हो तथा उसी के आधार पर जनपद का नाम रुमणवत् पड़ गया हो।

माहिष्मती—नर्मदा का ऊपरी प्रदेश हैह्यराज कृतवीर्य तथा उसके पुत्र कार्तवीर्य (सहस्रबाहु) के अधिकार

में था। हरिवंश ५२१८-२५ के अनुसार उसकी राजधानी का नाम माहिष्मती था। माहिष्मती को मुचकुन्द ने बसाया था—“मुचकुन्दश्च राजधिविन्ध्यमध्ये व्यरोचत। स्वस्थानं नर्मदातीरे दारुणोपलसंकटे.....नाम चास्या शुभं चक्रे.....माहिष्मती नाम पुरी उभयोर्विन्ध्ययोः पादे नगयोस्तां महापुरीम्।”

माहिष्मती के पार्श्ववर्ती प्रदेश का नाम चेदि जनपद था; क्योंकि राजशेखर ने लिखा है—“यन्मेखला भवति मेकल-शैलकन्या वीतेन्धनो वसति यत्र च चित्रभानुः। तामेव पाति कृतवीर्यशोवतंसां माहिष्मतीं कुलचुरेः कुलराजधानीम्” वाल० रामा० उपर्युक्त उद्धरण से यह भी ज्ञात होता है कि किसी समय इस जनपद पर चेदियों की शाखा कलचुरियों ने भी शासन किया था। कुछ लोग विशेषतः मांडला निवासी मांडला को प्राचीन माहिष्मती मानते हैं, परन्तु यह उनका पक्षपात ही है; क्योंकि अपनी इस स्थापना के लिये वे कुछ पुष्ट प्रमाण नहीं उपस्थित करते। अधिकांश विद्वान् जबलपुर के नीचे भेड़ाघाट को प्राचीन माहिष्मती निश्चित करते हैं। वहाँ कुछ प्राचीन अवशेष भी इसकी पुष्टि करते हैं। भेड़ाघाट के समीप नर्मदा का स्रोत श्वेत संगमरमर की परम मनोहर ऊँची शृंखलाओं के मध्य से बहता है। ऐतिहासिकों ने आधुनिक महेश्वर को प्राचीन माहिष्मती मान लिया है।

अनूप—कालिदास के समय इस जनपद का नाम अनूप था तथा उसकी राजधानी भी माहिष्मती ही थी, परन्तु कालिदास ने माहिष्मती की स्थिति की चर्चा नहीं की है—“माहिष्मतीं वप्रनितम्बकाञ्चीम्। प्रसादजालैर्जलवेणिरम्यां रेवां यदि प्रेक्षितुमस्ति कामः” रघु० ६-४३। पाणिनि ने अनूप शब्द की सिद्धि के लिये एक सूत्र ६-३-६८ लिखा है, काशिकाकार ने उसका उदाहरण ‘अनूपो देशः’ दिया है। भावमिश्र ने लिखा है कि जिस देश में नदियाँ, सरोवर तथा पर्वत अधिक हों, जङ्गल हो, पशुपक्षियों का बाहुल्य हो उस प्रदेश को अनूप समझना चाहिए—भावप्रकाश ४-२३, ४। इससे ज्ञात होता है कि मध्य भारत के दक्षिण में स्थित निमाड़ जिले का नाम प्राचीनकाल में अनूप था। नर्मदा घाटी की खुदाई में प्रागैदिककाल के अवशेष मिलने के कारण यह प्रदेश महत्त्वपूर्ण माना जाता है। उस काल में इस प्रदेश के प्रधान नगर का नाम माहिष्मती (महेश्वर) था।

लाट—नर्मदा के दक्षिण उसी के बराबर तापी (ताप्ती) अथवा पयोष्णी नाम की नदी है। वह शुक्तिमान् पर्वत से निकली है। दोनों नदियों के मुख पर का तथा उसके उत्तर तथा दक्षिण का भाग लाट जनपद के नाम से प्रसिद्ध था। लङ्का से अयोध्या जाते समय रामचन्द्र के किसी साथी ने नर्मदा की बायीं ओर लाट जनपद को दिखलाया था—
“वामतो दर्शयन्—अयमसौ विश्वम्भरशिरःशेखर इव लाटदेशः”
वा० रा० १०-७७। कथासरित्सागर १६-१०३ तथा दशकुमारचरित के सोमदत्तचरित से ज्ञात होता है कि लाट जनपद अवन्ति के समीप ही कहीं था।

भृगुकच्छ—लाट जनपद में भृगुकच्छ नाम का नगर था। आजकल समुद्र तट पर स्थित भड़ोच नाम का स्थान प्राचीन भृगुकच्छ है। यह प्राचीनकाल में पश्चिम जाने वाले जहाजों का प्रसिद्ध बन्दरगाह था। आजकाल का जो प्रदेश गुजरात नाम से प्रसिद्ध है प्राचीनकाल में उसको लाट जनपद कहते थे। उसके सागर-समीपवर्ती भाग का नाम किसी समय पिप्पली कच्छ था।

महाभारत में लाट जनपद का नाम नहीं आया है। मध्यकालीन भारत में लाट नाम की एक विशिष्ट जाति के जनों की चर्चा अवश्य मिलती है, उन्हीं के द्वारा लाटी नाम की काव्य की एक रीति का प्रादुर्भाव हुआ था। अलङ्कार ग्रन्थों में इस रीति का पूर्ण विवेचन किया गया है। “लाटी तु रीतिर्वेदभीषाञ्चाल्योरन्तरा स्थिता” सा० द० ९। बराह-मिहिर ने एक लाटाचार्य का उल्लेख किया है। बाल-रामायण से ज्ञात होता है कि वह आचार्य चालुक्य ब्राह्मण थे—“देवान् कुशेशयभुवो भुवनैकबन्धो सन्ध्याविधौ कलयत-श्चुलुकं जलस्य। यो जातवान् प्रतिभया समुनिश्चुलुक्य-स्तस्यान्वयैकतिलको नृप एष लाटः॥” वा० रा० ३-५७।

आनर्त्त अथवा सुराष्ट्र—काठियावाड़ का प्रायद्वीप प्राचीनकाल में आनर्त्त अथवा सुराष्ट्र जनपद के नाम से प्रसिद्ध था—“हर्षश्च महतेजा दिव्ये गिरिवरोत्तमे निवेशयामास पुरं वासार्थममरोपमः॥ आनर्त्तं नाम तद्राष्ट्रं सुराष्ट्रं गोघनायुतम्” हरिवंश ५१८८-९। काठियावाड़ के गाय तथा बैल समस्त भारत में प्रसिद्ध हैं। महाभारत में द्वारका का एक नाम आनर्त्त नगरी अर्थात् आनर्त्त जनपद की राजधानी मिलता है। वृष्णियों के रहने के कारण

द्वारका को वृष्णिपुरी भी कहते थे। पुरुषोत्तम ने इसके पर्याय द्वारवती, वनमालिनी तथा अविधनगरी लिखा है—
“द्वारका वनमालिनी द्वारवत्यविधनगरी।” आधुनिक द्वारका प्राचीन द्वारका नहीं हैं, क्योंकि पुराणों में लिखा है कि द्वारका समुद्र में डूब गयी—“प्लावयामास तां शून्यां द्वारकाञ्च महोदधिः” वि० पु० ५-३८-६। स्थानीय अनुश्रुति से ज्ञात होता है कि प्राचीन द्वारका वर्तमान द्वारका से ६५ मील दक्षिण-पूर्व मधुपुर के समीप थी।

संस्कृत साहित्य से ज्ञात होता है कि द्वारका रैवतक पर्वत के समीप थी। रैवतक का दूसरा नाम ऊर्ज्यन्त भी था—“ऊर्ज्यन्तो रैवतकः” हेमचन्द्र ४।९७; अभिलेखों तथा स्थानीय परम्परा से ज्ञात होता है कि जूनागढ़ के समीप के गिरनार पर्वत का प्राचीन नाम रैवतक था। मधुपुर गिरनार के समीप ही है, अतः मालूम पड़ता है कि प्राचीन द्वारका वर्तमान द्वारका से दूर अवश्य रही होगी। हरिवंश पुराण में मधुपुर की चर्चा मिलती है किसी समय मधुपुर आनर्त्त की राजधानी भी था। सम्भवतः मधुजन के रहने के कारण उसका नाम मधुपुर पड़ा था। मधुजन काठियावाड़ प्रायद्वीप में रहने वाली एक प्राचीन जाति के जन थे—
“मधुभोजदशार्हर्हिकुक्कुरान्धकवृष्णिभिः। आत्मतुल्यवलैर्गुप्तां नागैर्भोगवतीमिव।” भागवत १-२-२३। श्रीकृष्ण के समय वहाँ सात्वत तथा श्रीजय नाम की जाति के जन रहते थे।

पाणिनि ने ६-२-३७ में “कुन्तिसुराष्ट्राः” “चिन्ति-सुराष्ट्राः” इन दो समस्त पदों का प्रयोग दिखलाया है। इससे ज्ञात होता है कि ये दोनों जनपद पड़ोसी थे।

बलभी—किसी समय सुराष्ट्र की राजधानी बलभी भी थी—“अस्ति सौराष्ट्रे बलभी नाम नगरी” दशकुमार ६। मालूम पड़ता है कि श्रीकृष्ण के भाई बलभद्र के नाम पर इसका नामकरण किया गया था, क्योंकि वाराहीसंहिता में इसका एक नाम बलदेवपत्तन भी आया है। कर्नल टाड ने भाव-नगर के पश्चिमोत्तर लगभग दस मील पर बलवी नाम के स्थान पर इसके अवशेषों का अन्वेषण किया था। कुछ अभिलेखों में बलभी के नरेशों की उपाधि लाटेश्वर भी मिली थी। इससे अनुमान किया जाता है कि लाट देश किसी समय सुराष्ट्र के अन्तर्गत था।

प्रभास—इसी प्रसंग में प्रभास की भी चर्चा कर लेनी चाहिए। यह एक प्रसिद्ध तीर्थ है। महाभारत से ज्ञात होता है कि यह समुद्र तट पर स्थित था—“सुराष्ट्रेष्वपि वक्ष्यामि पुण्यान्यायतनानि च। प्रभासञ्चोदधौ तीर्थं त्रिदशानां युधिष्ठिर॥” वनपर्व ८८-१९, २०। गदापर्व में इसके नामकरण का इतिहास मिलता है। चन्द्रमा प्रभास तीर्थ में स्नान करके क्षय रोग से मुक्ति पाकर देदीप्यमान हुये थे, अतः इसका नाम प्रभास हुआ। “पुण्यं प्रभासं समुद्राजगाम यत्रेन्दुराङ्गदक्षणा क्लिश्यमानः। विमुक्तशापः पुनराप्ततेजः सर्वं जगद् भासयते नरेन्द्र॥ एवं तु तीर्थप्रवरं पृथिव्यां प्रभासनात्तस्य ततः प्रभासः॥” गदापर्व ३५, ४१, ४२। इसका एक नाम सोमपत्तन भी था। आजकल इसको सोमनाथ कहते हैं। यह समुद्रतटवर्ती एक प्रसिद्ध तीर्थ है। यहाँ शिव के द्वादशज्योतिर्लिंगों में एक लिङ्ग स्थित है। यहीं यादव पानोत्सव में परस्पर नष्ट हुए थे—मुसलपर्व अध्याय ३।

वृष्णि—प्राचीन परम्परा के अनुसार ये जन काठियावाड़ अथवा द्वारका प्रदेश के निवासी थे। परन्तु महाभारत में इनका नाम हारहूर तथा हैमवत के साथ आया है। कर्निधम ने औदुम्बरों के सिक्कों के साथ राजवृष्णि का भी एक सिक्का प्रकाशित किया है; परन्तु उसकी व्याख्या नहीं की है। केवल एक सिक्के के आधार पर उनके स्थान का निर्णय कर लेना समुचित नहीं जान पड़ता। यह प्रायः निश्चित सा है कि कुक्कुर, वृष्ण्यन्धकगण के सदस्य थे और यदि जिला होशियारपुर के दसूय तहसील का खोखर इन प्राचीन कुक्कुरों का निवास स्थान है तो उनके साथी वृष्ण्यन्धक भी होशियारपुर जिले में ही कहीं रहते रहे होंगे।

इस प्रसङ्ग में यह विचारणीय है कि वैश्यों की एक उपजाति बारहसेनी नाम से प्रसिद्ध है, जिसका अर्थ है बारह सेना वाली। ये जन उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलों में अधिकतर पाये जाते हैं। इनका कहना है कि इनके पूर्व पुष्य अग्रोहा के निवासी थे। पंजाब के गुड़गाँव जिले में भी ये पाये जाते हैं। बहुत सम्भव है ये ही प्राचीन वृष्णि के वंशज हों और अपना प्राचीन व्यवसाय आयुध जीवन छोड़ दिया हो। डा० जायसवाल ने लिखा है कि प्राचीन भारतीय गणतन्त्र की यह विशेषता पायी जाती है कि जब

उनकी राजनीतिक शक्ति का ह्रास हो जाता था तब वे अपना पूर्व का व्यवसाय भी त्याग देते थे। उदाहरणार्थ पंजाब के खत्री तथा अरोड़ा प्राचीनकाल में आयुधजीवी थे, परन्तु राजनैतिक शक्ति के क्षीण हो जाने पर वे व्यापारी हो गये। उर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि द्वारका के समुद्र में डूब जाने पर वृष्णिजन वहाँ से चलकर भारत के पश्चिमोत्तर भाग में जा बसे।

कुन्ति अथवा कुन्तिभोज—इसकी गणना एक राज-जनपद में थी। महाभारत वनपर्व ३०८।७ तथा बृहत् संहिता १०-१५ के अनुसार इसके पड़ोस में अवन्ति जनपद था। इस जनपद में अश्वा अथवा अश्वरथा नाम की नदी थी। अश्वा नदी को चम्बल की एक सहायक नदी कुमारी निर्णय किया गया है। इस जनपद का एक नाम भोज भी था। इसी जनपद के कुन्तिभोज नगर में पाण्डवों की माता पृथा का लालन पालन उसके गोद लेने वाले पिता राजा कुन्तिभोज के द्वारा हुआ था। यहाँ आने के बाद पृथा का दूसरा नाम कुन्ती पड़ा। सहदेव ने दक्षिण दिक्विजय में कुन्ति जनपद को भी जीता था। यमुना तथा चम्बल के काँठे में प्राचीन कुन्ति जनपद था। आजकल उसको कोंतवार कहते हैं। पाणिनिसूत्र ४।१।१७१ के उदाहरण में कुन्ति तथा अवन्ति का उल्लेख साथ-साथ किया गया है।

अवन्ति—नर्मदा के उत्तर प्रसिद्ध अवन्ति जनपद था। इसकी राजधानी उज्जयिनी उत्तरा-पथ तथा दक्षिणा-पथ के मार्ग में स्थित बहुत बड़ी नगरी थी। इसको अवन्तिपुरी भी कहते थे—“उज्जयिनी स्याद्विशालावन्ती पुष्करसिन्धी” हेमचन्द्र ४।४२ आजकल अवन्ति जनपद को मालव कहते हैं। गुप्तकाल से अवन्ति का नाम मालव पड़ा हुआ मालूम पड़ता है—“मालवाः स्युरवन्तयः” हेमचन्द्र ४।२२।

मालव—मालव वंश के क्षत्रिय किसी समय पंजाब के दक्षिण तथा पश्चिम के प्रदेश में इरावती (रावी) और चन्द्रभागा चेनाव के संगम के समीप रहते थे। उक्त प्रदेश में उनके सिक्के प्राप्त हुए हैं। मालव जन वहाँ से चलकर उत्तरी राजपूताने में जयपुर की ओर जाबसे। वहाँ से कोटा की ओर जाकर वर्तमान मालव प्रदेश में बस गये। उनके बसने के कारण इसका नाम मालव पड़ गया।

दशार्ण—अवन्ति जनपद के पूर्व वेन्नवती (वेतवा) के पश्चिम के प्रदेश का नाम दशार्ण जनपद था। कालिदास से ज्ञात होता है कि इस जनपद की राजधानी का नाम विदिशा था, जो कि वेन्नवती के तट पर स्थित आधुनिक भेलसा के नाम से प्रसिद्ध है—‘तेषां दिवु प्रथितविदिशाल-
क्षणां राजधानीम्’ पूर्व मेघ २४। वाणभट्ट ने भी विदिशा की चर्चा की है—‘वेन्नवत्या परिगता विदिशाभिधाना
नगरी राजधान्यासीत्’—कादम्बरी। इस जनपद में दशार्णा नाम की नदी बहती है, आज कल इसको ‘घसान’ कहते हैं। व्याकरण साहित्य में ‘प्रवत्सतरकम्बलवसनार्ण दशानामृणे’ के उदाहरण में ‘दशार्णो देशः, दशार्णा नदी’ मिलता है। मालूम पड़ता है कि दशार्णा नदी के कारण ही उसके समीपवर्ती प्रदेश का नाम दशार्ण पड़ गया। कालिदास ने भी दशार्ण का प्रयोग जनपद के अर्थ में किया है—‘सम्भत्स्यन्ते कतिपयदिनस्यायिहंसा दशार्णाः’—पूर्वमेघ। भिलसा से चार मील की दूरी एक नीची पहाड़ी है। उस पर पुरातत्व की सामग्री प्रचुर मात्रा में प्राप्त हुई है। सम्भवतः यह पहाड़ी कालिदास की नीची नाम की पहाड़ी है—‘नीचैराख्यं गिरिमिवसेस्तत्र विश्रामहेतोः’—पूर्व मेघ २६। रामायण से ज्ञात होता है कि यह प्रदेश शत्रुघ्न के अधिकार में था—‘सुबाहुर्मधुरां (मदुरा) लेभे शत्रुघाती च वैदिशम्।’ रामायण उत्तरकाण्ड १७१-१०।

दशपुर—महाभारत काल में अवन्ति जनपद दक्षिण में नर्मदा तथा पश्चिम में माही नदी तक विस्तृत था—‘ततस्तेनैव सहितो नर्मदामभितो ययौ विन्दानुविन्दावावन्त्यौ सैन्येन महता वृत्तौ ॥ जिगाय समरे वीरावाश्विनेयः प्रतापवान् । ततो रत्नानुपादाय पुरं भोजकटं ययौ ॥’—महाभारत २-३१-१०, ११। माही नदी का नाम महाभारत में भी आया है—‘चर्मण्वती मही चैव मेघ्या मेघातिथिस्तथा । वन पर्व २२२-२२३ ॥ अवन्ति के उत्तर चर्मण्वती के तट पर एक दूसरा राज्य भी था, जिसकी राजधानी दशपुर थी—‘ततश्चर्मण्वतीतीरे जम्भकस्यात्मजं नृपम् । ददर्श वासुदेवेन शेषितं पूर्वं वैरिणा महाभारत २-३१-३। ॥’ पात्रीकुर्वन् दशपुर वधूनेत्रकौतूहलानाम् पूर्व’ मेघदूत ४८। कुछ लोग वर्तमान धौलपुर का प्राचीन नाम दशपुर समझते हैं परन्तु अधिकांश विद्वान् आधुनिक मन्दसौर को प्राचीन दशपुर मानते हैं।

राजा रन्तिदेव की राजधानी भी दशपुर थी। महाभारत में रन्तिदेव की चर्चा अनेक बार हुई है—‘राज्ञो महानसे पूर्वं रन्तिदेवस्य वै द्विज । द्वे सहस्रे तु वध्यते पशूनामन्वहं तदा ॥ अहन्यहनि वध्यते द्वे सहस्रे गवां तथा ॥’ वनपर्व २०८-२०९।

कालञ्जर—दशार्ण के पूर्व कालञ्जर नाम का एक पर्वत है। आजकल भी यह इसी नाम से पुकारा जाता है। यह जबलपुर से दमोह जाने वाले मार्ग पर स्थित है। इस पर्वत पर हिरण्यविन्दु नाम का एक शिवलिंग है—‘हिरण्यविन्दुः कथितो गिरौ कालञ्जरे महान् ।’ महाभारत ३-८७-२१।

पन्नागार—पा० सू० २-४-६० में पन्नागार शब्द गोत्रवाक्य प्रयुक्त किया है। इस गोत्र के जनों के निवास स्थान को भी पन्नागार कहते थे। जबलपुर के दक्षिण-पूर्व की ओर पन्ना नाम का एक राज्य स्थित है। कुछ विद्वान् इसी को पन्नागार मानते हैं, परन्तु यह समुचित नहीं जान पड़ता; क्योंकि यह राज्य बहुत प्राचीन नहीं है। जबलपुर जिले में ही पन्नागर नाम का एक अति प्राचीन कस्बा है वहाँ प्राचीन अवशेष भी पाये जाते हैं। सम्भवतः यहीं पन्नागरि जन रहते थे। पन्नागार का ही विकृत रूप पन्नागर जान पड़ता है।

कुशावती—जबलपुर के पूर्व दक्षिण कोसल का प्रसिद्ध राज्य था। श्री रामचन्द्र की माता यही के राजा की पुत्री थी। इस राज्य की राजधानी का नाम कुशावती अथवा कुशस्थली थी। यह विन्ध्य पर्वत के समीप ही स्थित थी। श्री रामचन्द्र के पुत्र कुश के नाम पर इसका नाम कुशावती पड़ा था। कुछ लोगों की धारणा है कि कुश घास की अधिकता के कारण लोग इसको कुशावती कहते थे।

कुश ने थोड़े समय तक दक्षिण-कोसल में राज्य किया फिर विश्वामित्र के पुत्र सुश्रुत को वह राज्य देकर अयोध्या चले गये। सुश्रुत एक प्रसिद्ध वैद्य थे। इस कथा की चर्चा पद्यपुराण के पाताल खण्ड तथा रघुवंश के सोलहवें सर्ग में मिलती है। उसमें लिखा है कि अयोध्या जाते समय कुश को विन्ध्य पर्वत लांघना पड़ा था। इससे ज्ञात होता है कि कुशस्थली नर्मदा के उत्तर तथा विन्ध्य के दक्षिण कहीं स्थित थी। उसको जबलपुर के पूर्व तथा बुन्देलखण्ड के रामनगर के समीप कहीं होनी चाहिये। अभी तक कुशस्थली

की ठीक-ठीक पहिचान न हो सको। सुश्रुत ने काशी में वहाँ के तत्कालीन राजा दिवोदास से आयुर्वेद का अध्ययन किया था। राजा दिवोदास धन्वन्तरि के अवतार कहे जाते हैं। सम्भव है कुश ने सुश्रुत की आयुर्वेदिक योग्यता से प्रसन्न होकर अपना राज्य उनको उपहार में दे दिया हो।

रघुवंश से ज्ञात होता है कि दक्षिण-कोसल में पुलिन्द जन रहते थे। सम्भव है मध्यकालीन बुन्देले ही प्राचीन पुलिन्द हों। इस राज्य में शोण (सोन) तथा ज्योतिरथी (जोहिला) नदियों का संगम एक प्रसिद्ध तीर्थ था—“शोणस्य ज्योतिरथ्याश्च सङ्गमे निवसन् शुचिः। तर्पयित्वा पितृन् देवान् अग्निष्टोमफलं लभेत् ॥” वन पर्व ८५-८८।

महोत्सवपुर—बुन्देल खण्ड में बाँदा से छत्तीस मील दक्षिण पूर्व महोत्सवपुर नाम का एक प्रसिद्ध नगर था। मध्यकालीन भारत में इसकी पर्याप्त ख्याति थी। आजकल इसको महोवा कहते हैं।

साल्व—प्राचीनकाल में साल्व नाम का एक प्रसिद्ध जनपद था। वह सत्यवान् के पितामह राजा द्युमत्सेन के अधीन था। पाणिनि ने ४।२।१३५, ४।१।१६६ ४-१-१७३ तथा सूत्रों में साल्वेय साल्व, साल्वावयव नाम के तीन जनपदों का उल्लेख किया है। मालूम पड़ता है कि साल्व नाम की किसी प्राचीन तम जाति के जनों ने अपने मूल निवासस्थान में एक जनपद की स्थापना की। महाभारत से ज्ञात होता है इस जनपद के राजा का नाम साल्व था। उसकी राजधानी का नाम सीम नगरी था। कुछ विद्वानों की धारणा है कि सीम नगरी हरिद्वार का ही प्राचीन नाम है। सिन्ध तथा बलूचिस्तान की सीमा पर स्थित वर्तमान हाला पर्वत का प्राचीन नाम शाल्वकागिरि था। डा० वासुदेव शरण अग्रवाल का मत है कि शाल्व जनों का अभिजन ईरान था। वे लोग प्राचीन काल में ईरान से बलूचिस्तान तथा सिन्ध होते हुये इस देश में आकर बस गये। उन्हीं के नाम पर हाला पर्वत का नाम शाल्वकागिरि पड़ा। वहाँ से वे लोग सिन्ध नदी के किनारे किनारे बढ़कर राजस्थान में सरस्वती के किनारे से होते हुये उत्तरी बीकानेर में बस गये। फिर वहाँ से उन्होंने यमुना तक तथा पश्चिम में पंजाब के पठानकोट तथा कांगड़ा तक के प्रदेशों पर आक्रमण करके उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया।

साल्वेय—उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि साल्व मूल राज्य का नाम था तथा साल्वेय उनकी कोई शाखा थी।

साल्वावयव—साल्वजनों के द्वारा इधर-उधर जाकर छोटे-मोटे राज्य बसाये थे। काशिकाकार ने लिखा है—“उदुम्बरास्तिलखला मदुकारा युगम्बराः। मूलिङ्गाः शरदण्डा च साल्वावयवसंसकाः ॥” गोपथ ब्राह्मण में साल्व तथा मत्स्य जनपदों का नाम साथ-साथ आया है। महाभारत भीष्म पर्व १०।३ में साल्व, मांय तथा जांगल जनपदों का साथ साथ उल्लेख मिलता है, इससे यह ज्ञात होता है कि साल्व जनपद उत्तरी राजस्थान तथा दक्षिणी पंजाब में था। मत्स्य जनपद का निश्चय हो ही चुका है। मत्स्य जनपद की राजधानी विराट (जयपुर राज्य में स्थिति आधुनिक वैराठ) थी। जांगल से कुरुजांगल ही अभिप्रेत हो सकता है। कुरुजांगल में दक्षिण-पूर्वी पंजाब (हाँसी, हिसार तथा सिरसा) सम्मिलित था। मत्स्य तथा जांगल जनपदों की भूमि छोड़कर जो शेष बचता है वही साल्व जनपद का प्रदेश हो सकता है। उपर्युक्त विवरण से ज्ञात होता है कि साल्व-जनपद वर्तमान अलवर से उत्तरी बीकानेर तक के प्रदेश में सीमित था। साल्वेय अथवा साल्वपुत्र जनपद को अलवर के समीप होना चाहिए। साल्वेय अलवर का तत्सम रूप जान पड़ता है। महाभारत के विराट पर्व २६।२ में उल्लेख है कि साल्वेयक तथा मत्स्य जनपद की सम्मिलित सेना ने त्रिगर्त के राजा सुशर्मा से युद्ध किया था।

उदुम्बर—ऊपर कहा जा चुका है कि साल्वजनों ने पृथक्-पृथक् अन्य छोटे-छोटे जनपदों को स्थापित कर लिया था। उन्हीं को साल्वावयव कहते थे। साल्वावयव उदुम्बरों की मुद्रायें त्रिगर्त जनपद (व्यास तथा रावी नदियों का मध्यवर्ती प्रदेश) में पायी गयी हैं। कांगड़ा के पठानकोट नगर में भी इनकी कुछ मुद्रायें प्राप्त हुई हैं। इस पुरातत्त्व के प्रमाण से निश्चित हो जाता है कि व्यास के उत्तर तथा रावी के दक्षिण की संकुचित घाटी में होकर त्रिगर्त में (गुल्दासपुर) उदुम्बरों का राज्य था। पा० सू० ४।२।७१ के भाष्य में उदुम्बरावती नाम की एक नदी का उल्लेख है। सम्भवतः यह कोई छोटी नदी रही होगी। उसके तट पर उदुम्बरों की राजधानी स्थित थी, उसको भी उदुम्बरावती ही कहते थे।

तिलखल—महाभारत (भीष्मपर्व १०।५६) में तिलभार नाम के एक राज्य का उल्लेख है। सम्भवतः उसी का नाम तिलखल भी रहा होगा। तिलखल का शब्दार्थ तिल के खलिहानों का प्रदेश होता है, अतः जहाँ तिल की खेती प्रचुरता से होती रही हो उसी प्रदेश का नाम तिलखल होना चाहिए। वर्तमान काल में पंजाब के जिला होशियारपुर में तिल की खेती का प्राचुर्य है, अतः बहुत सम्भव है कि उसी प्रदेश का नाम तिलखल अथवा तिलभार रहा हो।

मद्रकार—प्राध्यापक शिलुस्की की धारणा है कि 'मद्रकार' शब्द में कार शब्द ईरानी भाषा का है। उक्त भाषा में 'कार' शब्द सेना का वाचक है, अतः मद्रकार शब्द का अर्थ मद्रों की सेना द्वारा प्रतिष्ठापित राज्य हुआ। मद्रों तथा शाल्वों का सम्बन्ध मद्रराजकुमारी सावित्री तथा शाल्वराज-कुमार सत्यवान् के विवाह के कारण सुदृढ़ हो गया था। इस सम्बन्ध के कारण तीन छोटे-छोटे राज्यों की स्थापना हुई। (१) सावित्रीपुत्रक, (२) मद्रकार, (३) शाल्वसेनय। सावित्रीपुत्रकों का उल्लेख महाभारत वनपर्व २८३।१२ तथा पाणिनि-गणपाठ ५।३।१६ में विद्यमान है। सावित्री तथा सत्यवान् की सन्तान में गोवंश प्रवर्तित हुआ। उसका नाम सावित्रीपुत्रक हुआ। यहाँ पुत्र शब्द का प्रयोग वंश अथवा कुटुम्ब के अर्थ में हुआ है। आजकल भी पंजाब के कुछ खत्रियों में केहरपोत्रे, चन्दनपोत्रे आदि वंश नाम प्रचलित हैं।

मद्रकार जनपद मद्रसेना द्वारा स्थापित छोटे राज्य का नाम रहा होगा। इसी प्रकार शाल्वसेन भी शाल्वसेना द्वारा स्थापित राज्य का नाम रहा होगा। विवाह के समय सत्यवान् अपने राज्य से निर्वासित थे। सावित्री के साथ विवाह हो जाने पर मद्र तथा शाल्व दोनों राज्यों की सेनाओं ने उनकी सहायता की थी तथा उनको पुनः अपने राज्य में प्रतिष्ठित हो जाने पर उन सेनाओं ने पृथक् पृथक् राज्यों की स्थापना कर ली जो कि उनके नाम पर मद्रकार तथा शाल्वसेनय के नाम से प्रसिद्ध हुये। अष्टाध्यायी के सूत्र २।३।७३ तथा ५।४।६७ में मद्र तथा मद्र दो प्रकार के नाम मिलते हैं। सम्भव है बीकानेर के उत्तर-पूर्व के कोले में बग्घर के तट पर स्थित वर्तमान मद्र मद्रकार की राजधानी रहा हो।

युगन्धर—एक प्राचीन गाथा प्रचलित है—“योगन्धरि-रेवनो राजा इति साल्वीरवादिपुः। विवृत्तचक्रा आसीनास्तीरेण यमुने तव ॥” यमुना तट पर बैठ कर चर्खा चलाती हुई साल्व जनपद की स्त्रियाँ कहती थीं कि हमारा राजा योगन्धर ही है। इससे प्रतीत होता है कि युगन्धर यमुना का कोई तटवर्ती राज्य था। सम्भवतः वह अम्बाला जिले में यमुना तथा सरस्वती के मध्य में स्थित रहा होगा। वर्तमान जगाधारी जिला युगन्धर से बहुत ही मिलता जुलता है। सम्भव है यही प्राचीनकाल में युगन्धर जनपद की राजधानी रहा हो।

भूलिंग—एक यूनानी प्राचीन भूगोल लेखक टालेमी ने लिखा है कि अड़ावला के उत्तर-पश्चिम बोलिंगई नाम की एक प्राचीन जाति के जन रहते थे। सम्भवतः उन्हीं का नाम भूलिंग होगा।

शरदण्ड—इस राज्य की चर्चा पहिले की जा चुकी है। यह राज्य दृषद्वती (चितांग) नदी के तट पर कहीं स्थित रहा होगा। दृषद्वती का ही एक नाम शरदण्ड अथवा शरावती भी था। इसी के समीप शरदण्ड राज्य था।

मत्स्य—वर्तमान धौलपुर के पश्चिम मत्स्य देश था। पाण्डवों ने इस जनपद में एक वर्ष तक अज्ञातवास किया था। महाभारत में लिखा है कि वे लोग दशार्ण के उत्तर तथा पाञ्चाल के दक्षिण यकृल्लोम तथा शूरसेन जनपद के मध्य में होकर यमुना के किनारे-किनारे कालपी, उरई और कौंच होते हुये वहाँ पहुँचे थे। “ते वीरा बद्धनिस्त्रिंशस्तथा बद्धकलापिनः। बद्धगोधाङ्गुलित्राणाः कालिन्दीमभितो ययुः॥ उत्तरेण दशार्णस्ते पञ्चालान् दक्षिणेन तु। अन्तरेण यकृल्लोमान् शूरसेनाञ्च पाण्डवाः॥ लुब्धा वृवाणा मत्स्यस्य विषयं प्राविशन् वनात्॥” वनपर्व ५।१।४। यकृल्लोम का शब्दार्थ होता है यकृत् के रंग के बालवाले जनों का देश। भीष्मपर्व में यकृल्लोम की चर्चा है। इन जनों का मूल निवास रोहतक जिले का वन्य प्रदेश है। मालूम पड़ता है कि ये रहेले वहाँ से चलकर कालपी, उरई तथा जालौन के आस-पास बस गये थे। इस जनपद (मत्स्य) की राजधानी का नाम विराट था। जयपुर से इकतालीस मील उत्तर की ओर स्थित आधुनिक वैराट प्राचीन विराट माना जाता है। मत्स्य जनपद में जयपुर, जोधपुर, भरतपुर तथा

अलवर का कुछ भाग सम्मिलित था। वैराट से उत्तर लगभग एक मील की दूरी पर एक छोटी पहाड़ी है उस पर की कुछ गुफायें पाएँडवों के नाम से पुकारी जाती हैं।

शाकम्भरी—किसी समय मत्स्य जनपद की राजधानी शाकम्भरी (साँभर) भी थी। वर्तमान काल में साँभर में भगवती शाकम्भरी का एक प्रसिद्ध मन्दिर है। मध्यकालीन अभिलेखों में इसकी चर्चा मिलती है—“आविन्ध्यादाहिमाद्रे-विचित्तविजयस्तीर्थयात्राप्रसङ्गादुद्ग्रीवेपु प्रहर्ता नृपतिपु विन-मत्कन्धरेपु प्रसन्नः। आर्यावर्तं यथाथं पुनरपि कृतवान् म्लेच्छ-विच्छेदनामिदं देवः शाकम्भरीन्द्रो जगति विजयते वीसलः चोष्ण-पालः॥” कोलचुक के निबन्ध भाग २ पृ० २०३। एक दूसरे अंग्रेज ने लिखा है कि शाकम्भरी झील अधिक वर्षा हो जाने पर लगभग दोस मील लम्बी तथा दो मील चौड़ी हो जाती है। आजकल इस झील के जल से साँभर नमक प्रस्तुत किया जाता है।

अजमीढ—अजमेर का प्राचीन नाम अजमीढ था। सम्भवतः यह युधिष्ठिर का बसाया हुआ नगर है, क्योंकि इसका दूसरा नाम अजमीढ भी मिलता है। पा० सू० ६-२-१२५ की व्याख्या में वामन ने दोनों नामों का उल्लेख किया है।

अर्बुद—इस प्रदेश में अर्बुद नाम का एक पर्वत है। आजकल इसको आबू कहते हैं। अड़ावला शृङ्खला का ही एक भाग अर्बुद नाम से प्रसिद्ध था। कुछ लोग अड़ावला को वीना हिमालय भी कहते हैं। इसी पर बसिष्ठ ऋषि का आश्रम था।

पुष्कर—अजमेर जिले में पुष्कर नाम का एक तीर्थ है। यहाँ एक सरोवर है, परन्तु उसका निर्माण प्राचीन नहीं मालूम पड़ता। सम्भव है अर्वाचीन काल में इसका जीर्णोद्धार किया गया हो। आजकल इसको पोकुर कहते हैं। यह पुष्कर का ही विकृत रूप मालूम पड़ता है उत्तर प्रदेश में सरोवर को बोलचाल की भाषा में पोखरा कहते हैं यह भी पुष्कर का ही रूप मालूम पड़ता है। यहाँ ब्रह्मा का एक विशिष्ट मन्दिर है। पुष्कर अजमेर से पाँच मील पश्चिमोत्तर में स्थित है। पुष्कर सरोवर में जब अधिक जल होता है तब वह बहकर सरस्वती तथा लूनी नदियों में चला जाता है।

मरुधन्व—पाणिनि ने धन्व का प्रयोग मरुभूमि अथवा रेगिस्तान के अर्थ में किया है—“धन्वशब्दो मरुदेशवचनः” काशिका ४।२।२१। पतञ्जलि ने पाणिनिसूत्र ४।२।१२१ की व्याख्या में पारेधन्व तथा अष्टकधन्व नाम के दो रेगिस्तानों का उल्लेख किया है। काशिकाकार ने ऐरावत-धन्व का भी उल्लेख किया है। पारेधन्व का अर्थ है मरुभूमि के उस पार का देश। राजस्थान को मरुभूमि का अथवा आधुनिक मारवाड़ का प्राचीन नाम मरुधन्व ज्ञात होता है। इस मरुधन्व के पार पश्चिम में आज भी सिन्ध प्रान्त का पूर्वी भाग पारकर कहलाता है। सम्भवतः इस प्रदेश का एक नाम पारेधन्व भी रहा हो। मरुस्थल के उस पार प्राचीन सौवीर जनपद (आधुनिक सिन्ध) से आनेवाली वस्तुओं को पारेधन्वक कहते रहे होंगे। अष्टकधन्व उत्तर पश्चिमी पंजाब के अटक जिले का प्राचीन नाम जान पड़ता है क्योंकि वर्तमान काल में उसको धन्नी भी कहते हैं।

काशिका का ऐरावतधन्व भारतवर्ष की सीमा के बाहर मध्य एशिया का गोबी रेगिस्तान जान पड़ता है, क्योंकि महाभारत महाप्रास्थानिक पर्व २।१,२ में लिखा है कि पाएँडवों ने हिमालय को पार कर बालुकार्णव—(बालू का समुद्र) का दर्शन किया तथा उसके समीप ही मेरु नाम के महापर्वत को देखा। मेरुपर्वत पामीर का पठार है वहाँ से पूर्व में सीता (यारकन्द) तथा पश्चिम में बंधु (आक्सस, आमूदरया) निकलती थी।

उत्तरकुरु—बंझु नदी पश्चिमवाहिनी है। इस नदी के उत्तर तट पर उत्तरकुरु था—“मेरोः पार्श्वे तथोत्तरे। उत्तराः कुरवो राजन् पुण्याः सिद्धनिषेविताः।” भीष्मपर्व ७।२। भीष्मपर्व ६।७ के अनुसार यहीं ऐरावत वर्ष था। अतः ऐरावत वर्ष तथा ऐरावतधन्व दोनों की स्थिति मध्य एशिया के बड़े रेगिस्तान गोबी में ही थी। इसी प्रदेश का प्राचीन नाम शाकद्वीप था। महाभारत सभापर्व में लिखा है कि यहाँ अर्जुन को दिग्विजय-यात्रा के समय कुमुद पर्वत पर रहने वाले शक तथा ऋषिकों के साथ घोर युद्ध करना पड़ा था। यूनानी इतिहास लेखकों ने कुमुद पर्वतवासी शब्दों का नाम हेरोडोटस लिखा है उन लोगों ने कुमुद पर्वत को कोमेदाइ पर्वत लिखा है।



सिद्धान्तकौमुदी में प्रयुक्त

१. मुद्राओं का परिचय

१ निष्क—३२० रत्ती की स्वर्ण मुद्रा ।

२ सुवर्ण—८० रत्ती की स्वर्ण मुद्रा । इसी को हाटक कार्पापण भी कहते थे ।

३ माष—रौप्य कार्पापण ।

४ शतमान—१०० रत्ती अथवा १७७.३ ग्रेन की चाँदी की मुद्रा ।

५ शाय—१२३ रत्ती अथवा २५ ग्रेन की चाँदी की मुद्रा ।

६ कार्पापण, धरण या पुराण—३२ रत्ती की चाँदी मुद्रा । इसी को प्रति भी कहते थे । स्वर्ण

तथा ताँबे के कार्पापण की तोल ८० रत्ती थी ।

७ अर्ध कार्पापण—१६ रत्ती की चाँदी की मुद्रा ।

८ पाद कार्पापण—८ रत्ती की चाँदी की मुद्रा ।

९ माष—२ रत्ती चाँदी की एक मुद्रा ।

१० माष—५ रत्ती ताँबे की एक मुद्रा ।

११ विंशतिक—४० रत्ती चाँदी की एक मुद्रा ।

१२ त्रिंशत्क—६० रत्ती चाँदी की एक मुद्रा ।

१३ अर्धशतमान—५० रत्ती चाँदी की एक मुद्रा ।

१४ पादशतमान—२५ रत्ती चाँदी की एक मुद्रा ।

१५ अर्धधंशाण—१८.७५ रत्ती चाँदी की एक मुद्रा ।

१६ अर्धधंविंशतिक—६० रत्ती चाँदी की एक मुद्रा ।

२. परिमाणवाचक शब्दों का परिचय

१ कम्बल्य—पाँच सेर ।

२ आचित—१० भार या पचीस मन ।

३ द्रोण—अर्थशास्त्र के अनुसार १० सेर । चरक के अनुसार १२½ सेर ।

४ खारी—कोटिल्य के अनुसार ४५ मन । चरक के अनुसार २ मन २२ सेर ३२ तोला ।

५ भार—२½ मन ।

६ पल्ल—१ तोला ।

७ कुब्जि—५० तोला ।

८ शूर्प—चरक के अनुसार १ मन ११ सेर १६ तोला ।

९ गोणी—२½ मन । २ मन २२ सेर ३२ तोला ।

१० प्रस्थ—१० छटाँक = ५० तोला ।

११ आढक—२½ सेर ।

१२ कुडच—२½ छटाँक ।

१३ कंस—अर्थशास्त्र के अनुसार ५ सेर । चरक के अनुसार ६½ ।

१४ बिस्त—८० रत्ती ।

१५ पात्र—२½ सेर ।

१६ पाय्य पाँच, सात तथा दस सेर के परिमाण को पाय्य कहते थे ।

१७ निष्पाव—३ रत्ती ।

१८ अञ्जलि—२½ छटाँक या १२½ तोला ।

१९ मन्थ—१० सेर ।

२० कुम्भ—५ मन ।

२१ वह—५० मन ।

३. आयामवाचक शब्दों का परिचय

१ वितस्ति—१½ फुट

२ शम—१४ अंगुल

३ दिष्टि—१½ फुट

४ पुरुष—लगभग ६ फुट

५ हस्ति—लगभग १३½ फुट

६ अंगुलि—¾ इंच

७ भरलि—१½ फुट

८ काण्ड—१६ हाथ या २७ फुट

९ दण्ड—१६ हाथ या २७ फुट

१० किष्कु—२ फुट

११ गव्यूति—दो कोस या ४ मील

१२ योजन—४ कोस या ८ मील



अर्थ प्रकाशिका



12/1/1911

अर्थप्रकाशिका

अथ संज्ञाप्रकरणम्

आ ये—ऋ० १०-१३-१—जो दिव्य स्थानों में रहते हैं।

अर्वाङ्—ऋ० ६-६३-१—जो समीप जाता है।

क १ वोऽश्वाः—ऋ० ५-६१-२—तुम्हारे घोड़े कहाँ हैं ?

रथानां न येऽराः—ऋ० १०-७८-४—हमारे रथों के जो आर हैं।

शतचक्रं योऽष्टाः—वृत्रासुर का जो शतचक्र है।

अग्निमीळे—अग्निदेव की स्तुति करता हूँ।

अचसन्धि प्रकरणम्

सुद्युपास्यः—ज्ञानियों द्वारा जिसकी आराधना की जाय।

मध्वरिः—मधु नामक दैत्य का शत्रु, विष्णु।

धात्रंशः—ब्रह्मा का अंश।

लाकृतिः—‘लृ’ के समान आकार। देव माता को भी ‘लृ’ कहते हैं उसके समान आकार।

पुत्रादिनी स्वमसि पापे—हे पापिनि ! तू पुत्रों को खाने वाली है।

पुत्रादिनी सर्पिणी—पुत्रों को खाने वाली सर्पिणी।

पुत्रपुत्रादिनी—पौत्रों को खाने वाली।

पुत्रहती—पुत्र मारने वाली।

पुत्रजग्धी—पुत्र खाने वाली।

इन्द्रः—देवों के राजा इन्द्र।

राष्ट्रम्—राज्य, देश।

अर्कः—सूर्य, मदार का पौधा, इन्दु, ताम्रा, स्फटिक, विष्णु।

ब्रह्मा—सृष्टि करने वाले ब्रह्मा।

दात्रम्—दराँत, हँसिया।

पात्रम्—वर्तन, अधिकारी, अभिनेता, झुवा, राजमन्त्री।

हर्यनुभवः—हरि का अनुभव।

नह्यस्ति—नहीं है।

आदित्यं हविः—जिस हवि के देवता आदित्य हैं।

माहात्म्यम्—प्रभाव, महत्ता।

तादात्म्यम्—तत्त्वरूपता।

हरये—हरि के लिए, हरि को।

विष्णवे—विष्णु के लिए, विष्णु को।

नायकः—नेता, मुखिया, अगुवा, सेनापति।

पावकः—अग्नि, मिलावा, वायविडंग, सदाचार, शुद्ध करने वाला व्यक्ति।

गव्यम्—गाय का दूध, दही, घी आदि।

नाव्यम्—नाव से पार करने योग्य जल।

गव्यूतिः—दो कोस।

लव्यम्—काटने योग्य।

अवश्यलाव्यम्—अवश्य काटने योग्य।

ओयते—बुना जाता है।

ओयत—बुना गया।

क्षय्यम्—नष्ट होने या करने योग्य।

जय्यम्—जीत सकने योग्य।

क्षेयम्—नष्ट होने या करने योग्य।

जेयम्—जीत सकने योग्य।

ऋयम्—ग्राहकों को खरीदने के लिए दूकान में रखी हुई वस्तु।

क्रेयम्—खरीदने योग्य वस्तु।

हरपहि, हरयेहि—हे हरि, यहाँ आओ।

विष्णइह, विष्णविह—हे विष्णु, यहाँ।

श्रियाउद्यतः, श्रियायुद्यतः—श्री के लिए तैयार। श्री=लक्ष्मी, लौंग, शोभा, वाणी, सरल वृक्ष, बुद्धि, विभूति, कीर्ति।

गुरावत्कः, गुरावुत्कः—गुरु के लिए उत्कण्ठित।

उपेन्द्रः—विष्णु, वामन।

रमेशः—विष्णु।

गङ्गोदकम्—गङ्गाजल।

कृष्णार्द्धः—कृष्ण का ऐश्वर्य ।
 तवल्कारः—तुम्हारा लृकार ।
 कृष्णकृत्वम्—कृष्ण की एकता ।
 गङ्गाधः—गङ्गा का प्रवाह ।
 देवैश्वर्यम्—राजा का ऐश्वर्य ।
 कृष्णात्कृत्यम्—कृष्ण की उत्कृष्टता ।
 उपैति—समीप आता है, प्राप्त होता है ।
 उपैष्यते—समीप बढ़ता है ।
 प्रष्टौहः—हल या गाड़ी में जोतने के लिए जिस बैल के कन्धे पर पहले पहल लकड़ी रखी जाती है ।
 उपेतः—युक्त, दो व्यक्ति पास जाते हैं ।
 मा भवान् प्रेदिषत्—आप मत बढ़वाइये ।
 अक्षौहिणी—सेना विरोध—२१८७० हाथी ।
 २१८७० रथ ।
 ६५६१० घोड़े ।
 १०६३५० पदाति सैनिक ।
 स्वैरी—स्वेच्छाचारी ।
 स्वैरिणी—स्वेच्छाचारिणी स्त्री ।
 प्रौढः—उत्कृष्ट तर्क ।
 प्रौढः—अघेड़, दृढ़ ।
 प्रोढवान्—उठाया हुआ ।
 प्रौढिः—महत्त्व ।
 प्रैषः—आज्ञा ।
 प्रैष्यः—सेवक, नौकर ।
 ईपः—आश्विन मास ।
 ईष्यः—बटोरने, मारने या भोजने योग्य ।
 प्रेषः—भोजने का आदेश ।
 प्रेष्यः—दास ।
 सुखार्तः—सुख के लिए पीड़ा सहने वाला ।
 परमर्तः—बहुत दुःखी ।
 प्रार्णम्—बहुत अधिक कर्ज ।
 वत्सतरार्णम्—बछड़े के लिए ऋण ।
 ऋणार्णम्—ऋण चुकाने के लिए लिया गया ऋण ।
 दशार्णः—अवन्ति जनपद के पूर्व वैजवती के पश्चिम के प्रदेश का नाम ।
 दशार्णः—दशार्ण देश की नदी (आधुनिक घसान)

प्राच्छति—अच्छी तरह चलता है, उगता है ।
 उपाच्छति—समीप आता है ।
 प्रार्थमीयति, प्रर्वमीयति—उत्तम बैल चाहता है ।
 उपात्कारीयति, उपत्कारीयति—लृकार के पास वाले को चाहता है ।
 उपत्कारीयति, उपर्कारीयति—ऋकार के पास वाले को चाहता है ।
 प्रेजते—प्रदीप्त होता है ।
 उपोषति—जलता है ।
 उपेडकीयति, उपैडकीयति—भेड़ के पास की वस्तु चाहता है ।
 प्रोक्षीयति, प्रौक्षीयति—बड़ा वेग चाहता है ।
 क्वेव मोक्ष्यसे—कहाँ भोजन करोगे ।
 तवैव—तुम्हारा ही ।
 शकन्धुः—शकों का कूप ।
 कर्कन्धुः—ककों का कूप, बेर ।
 कुलटा—मिठा अथवा व्यभिचार के लिए घर-घर घूमने वाली स्त्री ।
 सीमन्तः—मार्ग = सीमनः + अन्तः ।
 सीमान्तः—सीमा, सरहद = सीमायाः + अन्तः ।
 मनीषा—बुद्धि ।
 हलीषा—हल का दण्ड, हरिस ।
 लाङ्गलीषा—हल का दण्ड, हरिस ।
 पतञ्जलिः—व्याकरण महाभाष्यकार मुनि ।
 सारङ्गः—चातक, मृग, हाथी ।
 साराङ्गः—दृढ़ शरीरवाला, वलवान् ।
 मार्तण्डः—सूर्य, सूरर ।
 स्थूलोतुः, स्थूलौतुः—मोटा विलाव ।
 विम्बोष्ठः, विम्बौष्ठः—पके कुंदरू के समान लाल ओठ वाला ।
 तवौष्ठः—तुम्हारा ओठ ।
 शिवायों नमः—शिवजी को ओंकारपूर्वक नमस्कार ।
 शिव एहि, शिवेहि—शिवजी, आइये ।
 पटिति—पट् पट् ऐसा शब्द ।
 अटिति—भ्रत् भ्रत् ऐसी ध्वनि ।
 पटत्पटदिति—पटत् पटत् ऐसी ध्वनि ।
 पटत्पटति—
 दैत्यारिः—दैत्यों के शत्रु, विष्णु ।

श्रीशः—लक्ष्मी के पति, विष्णु ।
 विष्णुदयः—विष्णु का उदय, अवतार, उन्नति ।
 कुमारी शेते—कुमारी सोती है ।
 होतृकारः, होतृकारः—होता का ऋकार ।
 होतृलकारः, होतृलकारः—होता का लृकार ।
 हरेऽव—हे हरि ! रक्षा करो ।
 विष्णोऽव—हे विष्णु ! रक्षा करो ।
 गवाग्रम्, गोऽग्रम्, गोअग्रम्—गो का अग्रभाग ।
 गवि—गो में ।
 गवाक्षः—खिड़की, झरोखा, रोशनदान, ताखा ।
 गवेन्द्रः—गौओं का मालिक अथवा गौओं में श्रेष्ठ ।
 एहि कृष्ण अत्र गौश्चरति—कृष्ण आओ, यहाँ गौ
 चरती है ।

हरी एतौ—ये दोनों हरि हैं ।
 चक्रि अत्र, चक्रयत्र—विष्णु या कुम्हार यहाँ है ।
 वाप्यश्वः—बावली में घोड़ा (जल पीता है) ।
 पार्श्वम्—हसियों का समूह, पसली, पास, वगल ।
 ब्रह्मन्त्रिभिः, ब्रह्मर्षिः—जो ब्राह्मण ऋषि पद
 प्राप्त कर चुका हो ।

आच्छत्—चला गया ।
 सप्तऋषीणाम्, सप्तर्षीणाम्—सात ऋषियों का ।
 अमिवादये देवदत्तोऽहं भोः—भगवन्, मैं देवदत्त नमस्कार
 करता हूँ ।
 आयुष्मान् भव देवदत्त—देवदत्त ! तुम आयुष्मान् होओ ।
 अमिवादये गार्ग्यहं भोः—भगवन् ! मैं गार्गी नमस्कार
 करती हूँ ।

आयुष्मती भव गार्गि—गार्गि ! तुम आयुष्मती होओ ।
 आयुष्मान् एधि—आयुष्मान्, बढ़ो ।
 आयुष्मान् एधि भोः—आयुष्मान्, तुम बढ़ो ।
 आयुष्मानेधीन्द्रवर्मन्—इन्द्रवर्मन् ! तुम्हारी आयु बढ़े ।
 आयुष्मानेधीन्द्रपालित—इन्द्रपालित ! ” ”
 सक्तून् पिब देवदत्त—देवदत्त ! तुम सक्तू पीओ ।
 हे राम—हे राम !
 राम हे—हे राम !
 देवदत्त—हे देवदत्त !

कृष्ण—हे कृष्ण !
 सुश्लोक इति, सुश्लोकेति—हे पुण्यात्मन्, यशस्विन् ।
 अग्नी इति—अग्नि ऐसा ।
 चिनुहि इति, चिनुहीति—चुनो ऐसा ।
 चिनुहि इदम्, चिनुहीदम्—इसे चुनो ।
 हरी एतौ—ये दोनों हरि हैं ।
 विष्णू इमौ—ये दोनों विष्णु हैं ।
 गंगे अमू—ये दोनों गङ्गा (नदियाँ) हैं ।
 पचेते इमौ—ये दोनों पकाते हैं ।
 मणीवोदस्य लम्बेते प्रियौ वत्सतरौ मम—मेरे दोनों प्यारे
 बछड़े ऊँटके गले
 में मणि के समान
 लटकते हैं ।

अमी ईशा—ये सब मालिक हैं ।
 रामकृष्णावमू आसाते—ये दोनों बलराम और कृष्ण हैं ।
 अमुकेऽत्र—यहाँ अमुक हैं ।
 अस्मे इन्द्राबृहस्पती—हमको इन्द्र और बृहस्पति ।
 इ इन्द्रः—अरे, यह इन्द्र हैं ।
 उ उमेशः—क्या यह गौरीपति शिव हैं ।
 आ एवं नु मन्यसे—क्या अब तुम ऐसा मानते हो ?
 आ एवं किल तत्—अच्छा, यह ऐसी बात है ।
 ओष्णम्—कुछ गर्म ।
 अहो ईशाः—अहो ये राजा हैं या मालिक हैं ।
 विष्णो इति, विष्ण इति, विष्णविति—विष्णु यह ।
 ब्रह्मबन्धवित्यब्रवीत्—(ऐ० ब्रा० पं० ७।२७) उसने हे
 'ब्रह्मबन्धो' यह कहा ।

'इ' इति, विति—इ, यह ।
 ॐ इति, विति—'ॐ' यह ।
 किमु उक्तम्, किमुक्तम्—क्या कहा ?
 सोमो गौरी अधिभितः—चन्द्रमा गौरी में आधित है ।
 मामकी तनू इति—मेरे शरीर में । मेरा शरीर ।
 वाप्यश्वः—बावली में घोड़ा ।
 दधिं, दधि—दही ।
 अग्नी—आग ।

अथ हल्सन्धिप्रकरणम्

हरिश्चेते—हरि सीते है ।
 रामश्चिनोति—राम चुनता है ।
 सच्चित्—नित्य और ज्ञान ।
 शार्ङ्गिजयः—हे विष्णु तुम्हारी जय हो ।
 विद्मः—जाना, फिसलना ।
 प्रश्नः—प्रश्न ।
 रामप्लवः—राम छटा है ।
 रामपीकते—राम चलता है ।
 पेष्टा—पीसनेवाला ।
 तट्टीका—उसकी टीका, अथवा वह टीका ।
 चक्रियदौकसे—हे विष्णु, तुम जाते हो ।
 षट्सन्तः—छः सत्पुरुष ।
 षट्ते—वे छः हैं ।
 ईहे—वह स्तुति करता है ।
 सर्पिष्टमम्—उत्तम धी ।
 षण्णाम्—छः व्यक्तियों का ।
 षण्णवतिः—छानवे = ६६ ।
 षण्णगर्गः—छः शहर ।
 सन्पष्टः—छटा उत्तम है ।
 वागीशः—बृहस्पति ।
 चिद्रूपम्—चैतन्यस्वरूप ।
 एतन्पुरारिः, एतदुसुरारिः—यह श्रीकृष्ण हैं ।
 चतुर्मुखः—चार मुखवाला, ब्रह्मा ।
 तन्मात्रम्—उतना ही ।
 चिन्मयम्—चैतन्यस्वरूप ।
 तल्लयः—उसका लय, नाश, अभाव ।
 मदोदग्राः ककुब्धन्तः—मदोन्मत्त वेल ।
 विद्वौल्लिखति—विद्वान् लिखता है ।
 उत्थानम्—उठना, उभ्रति ।
 उत्तम्भनम्—सहारा देना, रोकना, पकड़ना ।
 वाग्धरिः वाग्धरिः—बोलने में धीर ।
 तच्छिवः, तच्छिवः—वह शिव ।
 तच्छ्लोकेन, तच्छ्लोकेन—उस श्लोक से ।
 वाक्श्च्योतति—वाणी निकलती है ।

हरिं वन्दे—हरि को नमस्कार करता हूँ ।
 गम्यते—जाया जाता है ।
 यशांसि—कीर्ति ।
 आक्रंस्यते—आक्रमण किया जायगा ।
 मन्यते—समझा या माना जाता है ।
 अङ्कितः—८-४-५८—लिखा गया चिह्न, किया गया ।
 अन्वितः—८-४-५८—पूजित अथवा सिकोड़ा गया ।
 कुण्ठितः—” कुन्द, रुका हुआ ।
 गुम्फितः—” गुथा हुआ ।
 शान्तः—” शान्त ।
 त्वङ्करोषि, त्वङ्करोषि ८-४-५९—तुम करते या बनाते हो ।
 सँय्यन्ता, संयन्ता—” उत्तम सारथि ।
 सँवत्सरः, संवत्सरः—वर्ष ।
 यँलोकम्, यँलोकम्—जिस लोक को ।
 सम्राट् ८-३-२५—चक्रवर्ती राजा ।
 किम्वल्लयति, किंल्लयति—८-३-२६—क्या चलाता है ?
 किँयद्वाः, किँयद्वाः—१-३-१०—क्या कल ?
 किँव्वल्लयति, किँव्वल्लयति—” क्वा हिलाता या चलाता है ?
 किँल्लहादयति, किँल्लहादयति—” क्यौं प्रसन्न करता है ?
 किँहुते, किँहुते ८-३-२७—क्यों या क्या छिपाता है ?
 प्राड्व्षष्टः, प्राड्व्षष्टः, प्राड्व्षष्टः ८-३-३८—पहिला छटा ।
 सुगणष्टष्टः, सुगणष्टष्टः, सुगणष्टष्टः—” छटा उत्तम गिननेवाला ।
 षट्सन्त, षट्सन्तः ८-३-२९—छः सज्जन ।
 सन्तः, सन्तः ८-३-३०—वह सज्जन ।
 सन्धम्भुः, सन्धम्भुः, सन्धम्भुः, सन्धम्भुः ८-३-३१—वर्तमान शिव ।
 प्रत्यङ्मात्मा ८-३-३२—अन्तरात्मा ।
 सुगणगीशः—” गणितज्ञों में श्रेष्ठ ।
 सन्नच्युतः—” सत्स्वरूप विष्णु ।
 संस्कर्ता, संस्कर्ता ८-३-३४—संस्कार करनेवाला ।
 पुंस्कोकिलः, पुंस्कोकिलः ८-३-६—नर कोयल ।
 पुंस्पुत्रः, पुंस्पुत्रः—” पुरुष पुत्र (लड़का) ।
 पुंशीरम्—” पुरुष का दूध ।

पुंदासः	८-३-७—पुरुष दास ।
पुंख्यानम्	” पुरुष का कथन ।
पुंस्कामा, पुंस्कामा	” पुरुष चाहने वाली ।
पुंश्र्वली, पुंश्र्वली	” पुरुष के पीछे दौड़ने वाली व्यभिचारिणी ।
पुंगवः	” बैल ।
शार्ङ्गिन्श्छिन्धि, शार्ङ्गिन्श्छिन्धि	८-३-७—हे शार्ङ्गिन् इसे काटो ।
चक्रिन्श्चायस्व, चक्रिन्श्चायस्व	” हे विष्णु, रक्षा करो ।
सन्त्सरुः	” (तलवार की) उत्तम मूठ ।
प्रशान्तनोति	” परम शान्त.... फैलाता बढ़ावा है ।
वासः क्षौमम् ८-३-१०—जूट का वस्त्र, रेशमी वस्त्र ।	

इति हल्सन्धिप्रकरणम् ।

अथ विसर्गसन्धिप्रकरणम्

विष्णुस्त्राता ८-३-३४—रक्षा करने वाले विष्णु ।	
कः त्सरुः ८-३-३५—कौन सी (तलवार की) मूठ ।	
घनाघनः क्षोभणः ”	घबरा देनेवाला मेघ, मत्त हस्ती, इन्द्र ।
हरिः शेते, हरिश्शेते ८-३-३६—हरि सोते हैं ।	
रामस्थाता ”	रामचन्द्र स्थित होंगे ।
हरिस्स्फुरति, हरिः स्फुरति ”	सूर्य प्रकाशित होते हैं ।
क—करोति, कः करोति ”	कौन करता या बनाता है ?
क—खनति, कः खनति ”	कौन खोदता है ?
क—पचति, कः पचति ”	कौन पकाता है ?
क—फलति, कः फलति ”	कौन फलता या फल देता है ?
पयस्पाशम् ८-३-३८—खराब या विकृत दूध ।	
यशस्कल्पम् ”	कुछ यश ।
यशस्कम् ”	अपकीर्ति ।
यशस्काम्यति ”	यश चाहता है ।

नूँ—पाहि, नूँ—पाहि, नूँ : पाहि, नून् पाहि ८-३-३७—	मनुष्यों की रक्षा करो ।
काँस्कान्, काँस्कान् ८-३-१२, ८-३-४८—किनको किनको....	
कस्कः ”	कौन-कौन....
कौतस्कुतः ८-३-१२, ८-३-४८—कहाँ-कहाँ से ।	
सर्पिष्कुयिडका ”	घी की कुण्डी ।
धनुष्कपालम् ”	धनुष का टुकड़ा ।
स्वच्छाया ६-१-७४—अपनी छाया ।	
शिवच्छाया ”	शिव की छाया या कान्ति, शोभा ।
आच्छादयति ६-१-७४—ढकता है ।	
माच्छिदत् ”	नहीं काटा ।
चेच्छिद्यते ६-१-७५—अनेक बार काटा जाता है ।	
लक्ष्मीच्छाया, लक्ष्मीछाया ६-१-७६—लक्ष्मी की छाया, कान्ति शोभा ।	

प्रातःकल्पम् ८-३-३८—कुछ कुछ सबेरा ।	
गीः काम्यति ”	वाणी चाहता है ।
सर्पिष्पाशम् ८-३-३९—खराब घी ।	
सर्पिष्कल्पम् ”	घी के सदृश ।
सर्पिष्कम् ”	खराब घी ।
सर्पिष्काम्यति ”	घी चाहता है ।
नमस्करोति, नमः करोति ८-३-४०—नमस्कार करता है ।	
पुरस्करोति ८-३-४०—पुरस्कार देता है ।	
पुरः प्रवेष्टव्याः ”	प्रवेश करने योग्य नगर ।
निष्प्रत्यूहम् ८-३-४१—विघ्न रहित ।	
आविष्कृतम् ”	प्रकट किया, आविष्कार किया ।
दुष्कृतम् ”	पाप, खराब किया ।
भग्निःकरोति ”	अग्नि करता है ।
वायुः करोति ”	वायु करता है ।
मातुः कृपा ”	माता की कृपा ।
मुहुःकामा ”	बार-बार चाहने वाली ।
तिरस्कर्ता, तिरः कर्ता ८-३-४२—तिरस्कार करने वाला ।	

द्विष्करोति, द्विःकरोति ८-३-४३—दोबार यां दुवारा करता है।

चतुष्कपालः ,, चार सकोरों में बनाया गया।

सर्पिष्करोति, सर्पिः करोति ८-३-४४—धी बनाता है।

तिष्ठतु सर्पिः, पिव त्वमुदकम् ,, धी रहे, तुम पानी पीओ।

सर्पिष्कुण्डिका ८-३-४५—धी की कुण्डी।

परमसर्पिःकुण्डिका ,, धी की बड़ी कुण्डी।

अयस्कारः ८-३-४६—लोहार।

अयस्कामः ,, लोहा चाहने वाला।

अयस्कंसः ,, लोहे का तसला कटोरा या प्याला।

अयस्कुम्भः ३-८-४६—लोहे का घड़ा।

अयस्पात्रम् ,, लोहे का बर्तन।

अयस्कुशा ३-८-४६—हल का वह भाग जिसमें फल लगा रहता है। उत्तर प्रदेश के पूर्वी भाग में इसे चौभी कहते हैं।

अयस्कूर्णी ,, लोहे के समान काले या कड़े कान वाली।

गीःकारः ,, शब्द करने वाला, बृहस्पति।

स्वःकामः ,, स्वर्ग चाहने वाले।

यशः करोति ३-८-४६—कीर्ति करता है।

परमयशःकारः ,, श्रेष्ठ यश करने वाला।

अधस्पदम्, अधःपदम् ८-३-४७—पैर के नीचे।

शिरस्पदम्, शिरःपदम् ,, सिर का स्थान।

परमशिरःपदम् ,, उत्तम सिर का स्थान।

भास्करः ,, सूर्य, अग्नि, वीर,

मन्दार वृक्ष।

इति विसर्गसन्धिप्रकरणम्।

अथ स्वादिसन्धिप्रकरणम्

शिवोऽर्च्यः ६-१-११३—शिवजी पूजनीय हैं।

देवा अत्र ,, हे देव गण, यहाँ (आइये)।

इव आगन्ता ,, (वह) कल आने वाला है।

एहि सुखोत अत्र स्नाहि ,, अच्छे प्रवाह वाले, यहाँ स्नान करो।

तिष्ठतु पय अग्निदत्त ,, अग्नि दत्त! दूध रखा रहे।

शिवो वन्द्यः ६-१-११४—शिवजी वन्दनीय हैं।

प्रातरत्र ,, सबेरे यहाँ (आना)।

धातर्गच्छ ,, हे धाता जाओ।

देवा इह, देवायिह ८-३-१७—हे देव ! यहाँ (आओ)

देवास्सन्ति ,, देवता हैं।

भोअच्युत, भोयच्युत ८-३-२०—हे अच्युत।

तोयम् ,, जल।

स उ एकाम्निः ८-३-२१—क्या वह एकाम्नि है।

तन्त्रयुतम् ,, जुलाहे से बुना गया।

भो देवाः ८-३-२२—हे देवगण।

भो लक्ष्मीः ,, हे लक्ष्मी।

भो विद्वद्बृन्द ,, हे पण्डित गण।

भगो नमस्ते ,, हे भगो आप को नमस्कार है।

देवा नम्याः ८-३-२२—देवता नमस्कार के योग्य हैं।

देवा यान्ति ,, देवता जाते हैं।

देवा यिह ,, यहाँ देवता (आते हैं)

अधोयाहि ,, हे पापी ! तुम जाओ।

अहरहः ८-२-६९—प्रतिदिन।

अहर्गणः ,, बहुत दिन।

अहोभ्याम् ८-२-६९—दो दिन से।

गतमहो रात्रिरेषा ,, दिन बीत गया, यह रात है।

अहोरूपम् ,, दिन का रूप।

अहोरथन्तरम् ,, दिन में गाया जाने वाला साम विशेष।

अहर्पतिः, अहःपतिः ,, दिन का स्वामी, सूर्य।

धूर्पतिः, धूर्पतिः ,, नेता, धुरे का स्वामी, बैल।

गीर्पतिः, गीर्पतिः गीर्पतिः ८-२-६९—बृहस्पति।

पुनारमते ८, ३, १४, १११—फिर प्रसन्न होता या रमण करता है।

हरीरम्यः ,, हरि रमणीय है।

शम्भू राजते ,, शिवजी शोभित होते हैं।

वृढः ,, मारा गया।

घृढः " उठाया गया, स्वामी ।
 अजर्घाः " (तुमने) बार-बार ग्रहण किया ।
 लीढः " चाटा गया ।
 मनोरथः " कामना, इच्छा ।
 स शम्भुः ६-१-१३२—वह शिजी हैं ।
 एषको रुद्रः " यह रुद्र हैं ।
 असन्दिग्धः " वह शिव नहीं है ।
 एषोऽत्र " यह यहाँ (हैं) ।
 सेमामविद्धिदप्रभृतिं य ईशिपे ६-१-१३४—हे वृहस्पति, आप

समस्त संसार के ईश्वर
 हैं, इस स्तुति को स्वीकार
 कीजिये ।
 सैष दशरथी रामः ६-१-१३४—यह वही दशरथ के पुत्र
 राम है ।
 स इत् क्षेति—
 स एवमुक्त्वा " वह ऐसा कहकर ।
 सत्येव " (उसके) रहते ही ।
 सोऽहमा जन्म शुद्धानाम्, " वह मैं आजन्म शुद्ध
 व्यक्तियों के ।

इति स्वादिसन्धिप्रकरणम् ।

षड्लिङ्गप्रकरणम्

अथाजन्तुषुल्लिङ्गप्रकरणम्

रामः—दाशरथिराम, परशुराम, बलराम, ब्रह्मा, रमणीय ।

सर्वः—सर्व

विश्वः—सर्व १-१-२७

सुपीः ८-३-५९—अच्छी तरह चलने वाला ।

उभौ—१-१-२७—दोनों

उभयः ,, दो भाग वाला ।

अन्यः ,, दूसरा ।

अन्यतरः ,, दो में से एक ।

अन्यतमः ,, बहुतों में से एक ।

त्वः ,, दूसरा ।

नेमः ,, आधा ।

समः ,, समान, सब ।

सिमः ,, प्रत्येक, समर्थ, समस्त ।

अन्तरायां पुरि—नगर के भीतरी भाग में ।

पूर्वः १-१-३४—पहिला ।

दक्षिणा गायकाः १-१-३४—निपुण गायक ।

उत्तराः कुरवः ,, सुमेरु पर्वत तक विस्तृत प्रदेश ।

स्वे, स्वाः १-१-३५—आत्मीय, अपने ।

स्वाः ,, अपनी जाति के, घन ।

अन्तरे अन्तरा वा गृहाः १-१-३६—चहारदीवारी के बाहर के घर ।

अन्तरे अन्तरा वा शाटकाः ,, पहिने की साड़ी ।

त्यद्—वह

तद्—वह ।

यद्—जो ।

एतद्—यह ।

इदम्—यह ।

अदस्—वह ।

एक—एक, प्रधान, अन्य, केवल ।

द्वि—दो ।

युष्मद्—तुम ।

अस्मद्—मैं ।

भवतु—आप ।

किम्—कौन, क्या ?

त्वत्कपितृकः १-१-२९—जिसके तुम पिता हो ।

मत्कपितृकः ,, जिसका मैं पिता हूँ ।

सर्वाय देहि ,, सर्व नामक व्यक्ति को दो ।

अतिसर्वाय देहि ,, जो सब से बढ़कर है उसको दो ।

अति कतरं कुलम् ,, कतर नामक व्यक्ति को उल्लंघन करने वाला कुल ।

अतितत् ,, तत् को उल्लंघन करने वाला कुल ।

मासपूर्वाय १-१-३०—एक मास से पहले के लिए ।

वर्णाश्रमेतरे, इतराः १-१-३१—वर्ण तथा आश्रम से बाहर के लोग ।

प्रथमः १-१-३२—पहला ।

द्वितये, द्वितयाः ,, दो अवयव या भाग वाले ।

नेमे, नेमाः ,, आधे ।

द्वितीयस्मै, द्वितीयाय ,, दूसरे को, के लिए ।

पटुजातीयाय ,, निपुण-सा के लिए ।

निर्जरः ७-२-१०१—वार्द्धक्य रहित, देवता ।

पादः ६-१-६३—पैर ।

दतः ,, दाँतों को ।

मासः ,, महीनों को ।

यूष्णः ,, माँड़, जूस, “रस, मुद्गामलक यूषस्तु भेदी दीपनपाचनः ।”

आसन्यः ६-१-६३—मुख में रहने वाला, श्वास, प्राण,

“आसन्यं प्राणमूचुः ।”

द्वयहः—दो दिन में होने वाला ।

व्यहः ६-३-११०—बीता हुआ दिन ।

सायाहः ,, सायंकाल ।

विश्वपाः—संसार को पालनेवाले, विष्णु ।
 शङ्खध्माः—शङ्ख बजाने वाला ।
 सोमपाः—सोम पीने वाला ।
 कीलालपाः—जल, मधु या शरवत पीने वाला ।
 मधुपाः—शराब या शहद पीने वाला ।
 हाहाः ६-४-१४०—गन्धर्व विशेष ।
 कत्वः—क्त्वा प्रत्यय का ।
 इनः—इना प्रत्यय का ।
 हरिः—विष्णु, सूर्य, सिंह, इन्द्र आदि ।
 सखा—अभिन्न हृदय मित्र, “समप्राणः सखा मतः ।”
 ग्रामणीः—गाँव का सुखिया, नाई, धूर्त ।
 पद्मी—निपुण स्त्री ।
 सुसखा—उत्तम मित्र ।
 परमसखा—अत्यन्त घनिष्ठ मित्र ।
 अतिसखा—श्रेष्ठ मित्र ।
 पतिः—स्वामी, मालिक ।
 भूपतिः—राजा ।
 कृति—कितने ।
 त्रयः—तीन ।
 द्वौ—दो ।
 भवान्—आप ।
 द्विः—‘द्वि’ नाम का व्यक्ति, दो बार ।
 औदुलोमिः—उदुलोमा का पुत्र ।
 वातप्रमी—मृग ।
 ययीः—मार्ग ।
 बहुश्रेयसी—जिसके पास बहुत सी श्रेष्ठ स्त्रियाँ हो ।
 पपीः—सूर्य ।
 अतिलक्ष्मीः—लक्ष्मी का उत्लंघन करने वाला ।
 कुमारी—कुमारी चाहने वाला अथवा कुमारी की तरह
 इच्छा करने वाला ।
 प्रधीः—अच्छा ध्यान करने वाला ।
 उन्नीः—ऊपर ले जाने वाला, उन्नति करने वाला ।
 नीः—ले जाने वाला ।
 सुश्रीः—सुन्दर शोभा वाला, उत्तम धन वाला ।
 यवक्रीः—जौ खरीदने वाला ।
 शुद्धधीः—शुद्ध बुद्धि वाला ।

परमधीः—श्रेष्ठ बुद्धि वाला ।
 सुधीः—सुन्दर बुद्धि वाला, पण्डित ।
 सखा—मित्र चाहने वाला ।
 सखीः—आकाश के साथ रहने वाले को चाहने वाला ।
 सुखीः—सुख चाहने वाला ।
 सुतीः—पुत्र चाहने वाला ।
 खूनीः—काटने की इच्छा करने वाला ।
 क्षामीः—दुर्बल को चाहने वाला ।
 प्रस्तीमीः—शोर गुल करने वाला ।
 शुष्की—सूखे पदार्थ को चाहने वाला ।
 शम्भुः—शिव ।
 क्रोष्टा—गीदड़ ।
 हूहूः—एक गन्धर्व ।
 अतिचमूः—सेना को जीतने वाला, सेना को पार कर लेने
 वाला ।
 खलपूः—खलिहान साफ करने वाला, या दुष्ट को पवित्र
 करने वाला ।
 लूः—काटने वाला ।
 उल्लूः—ऊपर से काटने वाला ।
 कटप्रूः—चटाई पर कूदने वाला ।
 परमलूः—उत्तम काटने वाला ।
 स्वमूः—ब्रह्मा, स्वयं उत्पन्न होने वाला ।
 वर्षाभूः—मेढक ।
 दम्भूः—ग्रन्थ बनाने वाला ।
 दन्भूः—सर्प, बन्दर, एक वृक्ष, वज्र ।
 करभः, कारभूः—हाथ से या हाथ में होने वाला, नाखून ।
 पुनर्मूः—फिर होने वाला, पुनर्विवाहिता (स्त्री) ।
 दग्भूः—नेत्र में होने वाला ।
 काराभूः—जेल में होने वाला ।
 धावा—ब्रह्मा ।
 पिता—पिता ।
 ना—पुरुष ।
 कीः—कृ धातु ।
 नीः—नृ धातु ।
 कूः—कृ धातु ।
 गमा—गम्भू धातु ।

शका—शक्नु धातु ।

से—कामदेव के साथ रहने वाला ।

स्मृतेः—कामदेव को स्मरण करने वाला ।

गौः—गाय या बैल ।

सुद्यौः—सुन्दर आकाश वाला दिन ।

स्मृतौः—शिव को स्मरण करने वाला ।

राः—धन ।

ग्लौः—चन्द्रमा ।

इत्यजन्ताः पुल्लिङ्गाः ।

अथाजन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्

रमा—लक्ष्मी ।

सर्वा—सब (स्त्री) ।

उत्तरपूर्वस्यै—उत्तर तथा पूर्व दिशा के मध्य (ईशान कोण) के लिए ।

उत्तरपूर्वायै—जिस पगली स्त्री को उत्तर दिशा पूर्व मालूम पड़े, उसके लिए ।

अन्तरस्यै शालायै—प्राकार के भीतर के मकान के लिए ।

अन्तरायै नगर्यै—प्राकार के भीतर के नगर के लिये ।

द्वितीया—दूसरी अथवा द्वितीया तिथि ।

तृतीया—तीसरी अथवा तृतीया तिथि ।

अम्या, अक्का, अल्ला—माता ।

अम्बाडे, अम्बाले, अम्बिके—हे माता !

जरा—वृद्धावस्था ।

अतिखट्वः—बारपाई का उल्लंघन करने वाला ।

निष्कौशाम्बिः—कौशाम्बी से बाहर निकला हुआ ।

नासिका, नसः—नाक ।

निशा—रात ।

पृतना—सेना ।

गोपाः—गौओं की रक्षा करने वाला ।

मतिः—बुद्धि ।

तिस्त्रः—तीन (स्त्रियाँ) ।

प्रियत्रिः—जिस स्त्री को तीन पुरुष या स्त्रियाँ प्रिय हों ।

प्रियतिसा—जिस पुरुष को तीन स्त्रियाँ प्रिय हों ।

प्रियत्रि, प्रियतिस्र—जिस कुल को तीन स्त्रियाँ प्रिय हों ।

द्वे—दो (स्त्री) ।

गौरी—पार्वती, गौर वर्ण वाली, आठ वर्ष की कन्या, हल्दी गोरोचन, प्रियङ्गु ।

वाणी—सरस्वती, वात, मूल्य, मेघ ।

नदी—नदी ।

सखी—सखी, सहेली ।

लक्ष्मीः—धन की अधिष्ठात्री देवी, शोभा ।

स्त्री—स्त्री ।

अतिस्त्रिः—स्त्रियों को अतिक्रमण करने वाला पुरुष ।

तरी—नौका ।

तन्त्री—वीणा, तार वाला बाजा ।

अतिस्त्रि—स्त्रियों को अतिक्रमण करने वाला कुल ।

श्रीः—लक्ष्मी, शोभा, वेष रचना ।

प्रधी—सुन्दर बुद्धि, सुन्दर बुद्धि वाली ।

सुधीः—सुन्दर बुद्धि वाला ।

धेनुः—गाय ।

क्रोष्ट्री—स्यारिन, शृगाली ।

वधूः—बहू, या स्त्री ।

भूः—भौंह ।

खलपूः—खलिहान साफ करने वाली स्त्री ।

पुनर्भूः—पुनर्विवाह करने वाली स्त्री ।

वर्षाभूः—मेढक (मादा), पुनर्नवा, गदहपूर्णा ।

स्वयम्भूः—माया, दुर्गा, प्रकृति ।

स्वसा—बहिन ।

माता—माता ।

द्यौः—आकाश ।

राः—धन ।

नौः—नौका ।

ननान्दा—ननद, पति की बहिन ।

याता—देवरानी, जिठानी ।

इत्यजन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ।

अथाजन्तनपुंसकलिङ्गप्रकरणम्

ज्ञानम्—ज्ञानकारी ।
 धनम्—सम्पत्ति ।
 वनम्—जङ्गल ।
 फलम्—फल ।
 कतरत्—दो में से कौन सा एक ।
 कतमत्—बहुतों में से कौन-सा एक ।
 अन्यत्—और, दूसरा ।
 अन्यतरत्—दो में से कोई दूसरा ।
 इतरत्—दूसरा, अन्य ।
 अन्यतमम्—बहुतों में से एक ।
 एकतरम्—अकेला ।
 अजरम्—वार्द्धक्य रहित ।
 हृन्दि—हृदय ।
 उदानि—जल ।
 आसानि—मुख ।
 मांसि—महीना ।
 श्रीपम्—धन की रक्षा करने वाला ।

वारि—जल ।
 पीलु—पीलु वृक्ष का फल, वाण ।
 दधि—दही ।
 अस्थि—हड्डी । सक्थि—जाँघ । अक्षि—आँख । अतिदधि—
 दही से बढ़कर ।
 सुधि—उत्तम ज्ञान वाला ।
 प्रधि—तीव्र बुद्धि वाला ।
 मधु—शहद, मदिरा ।
 सानु—पर्वत की चोटी ।
 प्रियक्रोष्टु—जिसे गीदड़ प्रिय हो ।
 सुलु—सुन्दर काटने वाला शस्त्र ।
 धातृ—पालन पोषण करने वाला, धारण करने वाला ।
 ज्ञातृ—ज्ञानने वाला ।
 कर्तृ—करने वाला ।
 प्रद्यु—उत्तम आकाश वाला ।
 प्ररि—प्रचुर धन वाला ।
 सुनु—सुन्दर नौका वाला ।

इत्यजन्ता नपुंसकलिङ्गाः ।

अथ हलन्तपुंलिङ्गप्रकरणम्

लिट्—चाटने या स्वाद लेने वाला ।
 दामलिट्—रस्सी चाटने वाले बछड़े को चाहने वाला ।
 गर्घप्—गर्घे का वर्णन करने वाला ।
 दुग्धम्—दुहा, दुहलिया, दूध ।
 दोग्धा—दूहने वाला ।
 शुक्—दूहने वाला ।
 ध्रुक्, ध्रुट्—द्रोह करने वाला ।
 मुद-मुक्—चोरी करने वाला ।
 स्नुट्-स्नुक्—वमन करने वाला ।
 स्निट्, स्निक्—स्नेह करने वाला, मित्र ।
 विश्ववाट्—संसार का संचालक, ईश्वर ।
 विद्वान्—पण्डित, ज्ञानी ।
 अनड्वान्—बैल

क्षस्तम्—खिसका या गिरा हुआ ।
 ध्वस्तम्—नष्ट ।
 तुराषाट्—इन्द्र ।
 सुद्यौः—जिस दिन आकाश स्वच्छ हो ।
 चत्वारः—चार ।
 प्रियचत्वाः—जिसको चार प्रिय हो ।
 परमचत्वारः—श्रेष्ठ चार व्यक्ति ।
 कमल्—कमल या कमला का वर्णन करने वाला ।
 प्रशान्—परम शान्त ।
 कः—कौन ।
 अथम्—यह ।
 सुगण्, सुगाण्—उत्तम गणक ।
 राजा—राजा ।

परमे व्योमन्—उत्तम ब्रह्मलोक में ।
 चर्मतिलः—जिसके चमड़े पर तिल हो, जिसने चमड़े की थैली में तिल रखा हो ।
 ब्रह्मनिष्ठः—ईश्वर भक्त, ज्ञानी ।
 प्रतिदिवा—चमकने वाला, फँकने वाला, जुआ खेलने वाला ।
 सूर्य, प्रतिद्वन्द्वी ।
 यज्वा—यज्ञ करने वाला ।
 ब्रह्मा—ब्रह्मा ।
 वृत्रहा—इन्द्र ।
 शार्ङ्ग—सींग के धनुष वाले (विष्णु) ।
 यशस्वी—कीर्तिमान् ।
 अर्यमा—सूर्य, वैदिक काल के एक देवता, जो जीवों को परलोक ले जाते हैं ।
 पूषा—सूर्य ।
 मघवान्—इन्द्र ।
 मघवती—इन्द्राणी ।
 माघवनम्—जिसके अधिष्ठाता देवता इन्द्र हों ।
 इवा—कुत्ता ।
 युवा—जवान ।
 अर्वा—घोड़ा ।
 पन्थाः—मार्ग ।
 मन्थाः—मन्थनदण्ड (छोड़ी)
 ऋभुक्षाः—इन्द्र ।
 सुपथी—उत्तम मार्ग वाली नगरी ।
 सुमयी—,, मन्थन दण्ड वाली ।
 अनृभुक्षी (सेना)—इन्द्ररहित सेना ।
 पञ्च—पाँच ।
 बिभ्रुषः—पानी की बूँद ।
 पामानः—खुजली ।
 शतानि—सैकड़ों ।
 सहस्राणि—हजारों ।
 प्रियपञ्चा—जिसको पाँच प्रिय हो ।
 अष्टौ—आठ ।
 प्रियाष्टाः—जिसको आठ प्रिय हों ।
 भुव्—पण्डित ।
 युव्—योगी ।

सुयुक्—उत्तम योगी ।
 खन्—लँगड़ा ।
 राट्—राजा ।
 विभ्राट्—विशेष शोभायमान ।
 देवेद्—देवों की आराधना करने वाला ।
 विश्वसृट्—संसार की सृष्टि करने वाला (ब्रह्मा) ।
 परिसृट्—सफाई करने वाला ।
 विभ्राक्—चमकने वाला ।
 परिभ्राट्—संन्यासी ।
 विश्वावसुः—गन्धर्व राज ।
 विश्वाराट्—सूर्य, सम्राट् ।
 भृट्—भूँजा ।
 ऋत्विक्—पुरोहित ।
 ऊर्क—अन्न, प्राणी ।
 सः—वह ।
 स्यः—वह ।
 परमस्यः—श्रेष्ठ वह ।
 त्यद्—वह ।
 अतित्यद्—उसका उल्लंघन करने वाला ।
 यः—जो ।
 पुषः—यह ।
 त्वम्—तुम ।
 अहम्—मैं ।
 परमत्वम्—श्रेष्ठ तुम ।
 परमाहम्—उत्तम मैं ।
 अतित्वम्—तुमको अतिक्रमण करने वाला ।
 अत्यहम्—मुझको ” ” ।
 ओदनं पच, तव भविष्यति—भात पकाओ, वह तुम्हारा होगा ।
 शालीनान्ते ओदनं दास्यामि—तुमको साठी चावल का भात दूँगा ।
 धाता ते भक्तोऽस्ति—ब्रह्मा तुम्हारे भक्त हैं ।
 तस्मै ते नमः—उस आप को नमस्कार है ।
 हरिस्त्वां माञ्च रक्षतु—हरि तुम्हारी और मेरी रक्षा करें ।
 कथं त्वां मां न रक्षेत्—तुम्हारी और मेरी रक्षा कैसे न करें ।

हरो हरिश्चमे स्वामी—शिव और विष्णु मेरे स्वामी हैं ।
चेतसा त्वां समीक्षते—मन से तुम्हारा ध्यान करता है ।
भक्तस्तव रूपं ध्यायति—भक्त तुम्हारे रूप का ध्यान करता है ।

भक्तस्त्वा पश्यति चक्षुषा—भक्त तुमको आँख से देखता है ।
भक्तस्त्वमप्यहम्, तेन हरिस्त्वां त्रायते स माम्—तुम भक्त हो और मैं भी भक्त हूँ इसलिए हरि तुम्हारी और मेरी रक्षा करते हैं ।

अग्ने तव—हे अग्नि, तुम्हारा ।
देवास्मान् पाहि—हे देव, हमारी रक्षा करो ।
अग्ने नय—हे अग्नि, ले जाओ ।
सर्वदा रक्ष देव नः—हे देव, हमारी सदा रक्षा करो ।
हरे दयालो नः पाहि—हे दयालु, हरि हमारी रक्षा करो ।
अग्ने तेजस्विन्—हे तेजस्वी अग्नि !
देवाः शरण्याः—देवता शरणागतवत्सल हैं ।
यूयं प्रमवः—तुम लोग समर्थ (मालिक) हो ।
युष्मान् भजे, वो भजे—आप का भजन करता हूँ ।
सुपात्—सुन्दर पैर वाला ।
अग्निमत्—अग्नि को मथने वाला ।
प्राङ्—प्राचीन, प्राप्त होने वाला, जाने वाला ।
प्रत्यङ्—पिछला, उलटा चलने वाला ।
असुमुखङ्, अद्वयङ्—उसके पास जाने पाला ।
उदङ्—ऊपर जाने वाला, उत्तर ।
सम्यङ्—अच्छी तरह जाने वाला ।
सम्रथङ्—साथ चलने वाला, मित्र ।
तिर्यङ्—टेढ़ा चलने वाला, पशु ।
प्राङ्—अच्छी तरह पूजा करने वाला ।
क्रुङ्—चक्रवाक, चकवा ।
पयोमुक्—मेघ ।
सुवृट्—अच्छी तरह काटने वाला ।
महान्—बड़ा ।
धीमान्—बुद्धिमान् ।
गोमान्—गाय वाले को चाहने वाला ।
भवान्—आप ।

भवन्—होता हुआ ।
वदत्—देता हुआ ।
जक्षत्—खाता हुआ, हँसता हुआ ।
जाग्रत्—जागता हुआ ।
दरिद्रत्—दरिद्र होता हुआ ।
शासत्—शासन करता हुआ ।
चकासत्—प्रदीप्त होता हुआ ।
दीध्यत्—चमकता हुआ ।
वेन्यत्—जाता हुआ ।
गुप्—रक्षा करने वाला ।
ताडक्—बैसा ।
विट्—वैश्य, मल, प्रजा ।
नक्—नष्ट होने वाला ।
धृतस्पृक्—घी छूने वाला ।
स्पृक्—स्पर्श करने वाला ।
दधक्—प्रगल्भ, ढीठ ।
रत्नमुट्—रत्न चुराने वाला ।
षट्—छः ।
परमषट्—अष्ट छः ।
प्रियषषः—जिसको छह प्रिय हों ।
पिपठीः—पढने की इच्छा वाला ।
निस्स्व—चुम्बन करो ।
निस्से—तुम चुम्बन करते हो ।
सुहिन्सु—अच्छी तरह मारने वालों में ।
चिकीः—करने की इच्छा वाला ।
दोः—बाहु ।
विविट्—प्रवेश चाहने वाला ।
तट्—छीलने वाला, बढ़ई ।
गोरट्—गाय की रक्षा करने वाला ।
पिपक्—पकाने की इच्छा वाला ।
विवक्—बोलने की इच्छा वाला ।
दिधक्—जलाने की इच्छा वाला ।
सुपीः—अच्छी तरह जाने वाला ।
सुट्—अच्छी तरह काटने वाला ।
विद्वान्—ज्ञाता, पण्डित ।
सेदिवान्—बैठा हुआ ।

सुहित्—अच्छी तरह मारने वाला ।

ध्वत्—ध्वंस होने वाला ।

खत्—खिसकने वाला ।

पुमान्—पुरुष ।

उशना—शुक्राचार्य ।

अनेहा—समय, काल ।

वेधाः—व्रह्मा ।

सुत्रः—अच्छी तरह ढकने वाला ।

पिण्डग्रः, पिण्डग्नः—पिण्ड खाने वाला ।

असौ, असकौ—वह ।

इति हलन्ताः पुल्लिङ्गाः ।

अथ हलन्तस्त्रीलिङ्गप्रकरणम्

उपानद्—जूता ।

उष्णिक्—एक वैदिक छन्द, सूर्य के एक घोड़े का नाम ।

द्यौः—आकाश ।

गीः—वाणी ।

पूः—नगरी ।

चतस्रः—चार स्त्रियाँ ।

का—कौन (स्त्री) ।

इयम्—यह (स्त्री) ।

स्रक्—माला ।

स्या—वह (स्त्री)

सा—वह ”

या—जो (स्त्री) ।

एषा—यह ” ।

वाक्—वाणी ।

आपः—जल ।

दिक्—दिशा ।

इक्—नेत्र ।

त्विद्—तेज, प्रकाश, कान्ति ।

सजूः—सखी, मित्र ।

आशीः—आसीस ।

असौ—वह (स्त्री)

इति हलन्ताः स्त्रीलिङ्गाः ।

अथ हलन्तनपुसंकलिङ्गप्रकरणम्

स्वनडुत्—अच्छे वेल वाला (कुल, घर) ।

विमलद्यु—निर्मल आकाश वाला (दिन) ।

वाः—जल ।

चत्वारि—चार ।

किम्—क्या, कौन ।

इदम्—यह ।

एतत्—यह ।

ब्रह्म—परमेश्वर, वेद ।

दीर्घाहा—बड़े दिनों वाली ऋतु (ग्रीष्म) ।

दण्डि—दण्ड वाला ।

स्रग्वि—माला वाला ।

वाग्मि—वक्ता ।

अहः—दिन ।

बहुवृत्रहाणि—बहुत इन्द्र वाले ।

बहुपूषाणि— ” सूर्य वाले ।

बह्वर्यमाणि— ” ”

असृक्—रक्त ।

अर्कः—अन्न, बल, प्राण ।

बहूर्जि—बहुत अन्न वाले ।

त्यत्—वह ।

तत्—वह ।

यत्—जो ।

एतत्—यह ।
वेमित्—बार-बार काटने वाला ।
चेच्छित्—बार-बार कटने वाला ।
गवाक्, गवाङ्—गौ के पीछे चलने वाला ।
तिर्यक्, तिर्यङ्—टेढ़ा चलने वाला (पशु) ।
यकृत्—जिगर, पेट में दाहिनी ओर रहने वाला ।
शकृत्—मल, विष्टा ।
ददत्—देता हुआ ।
तुदत्—कष्ट देता हुआ ।
भात्—दीप्त होता हुआ ।

पचत्—पकाता हुआ ।
दीव्यत्—चमकता हुआ, जुआ खेलता हुआ ।
स्वप्—सुन्दर जल वाला ।
धनुः—धनुष ।
पिपठीः—पढ़ना चाहने वाला ।
पयः—दूध, जल ।
सुपुम्—सुन्दर पुरुषों वाला ।
अदः—यह ।
चक्षुः—आँख ।
हविः—हवन सामग्री ।

इति हलन्ता नपुंसकलिङ्गाः ।

अथान्वयप्रकरणम्

स्वर्—स्वर्ग लोक, परलोक ।
अन्तर्—मध्य में, बीच में ।
प्रातर्—प्रातःकाल, कल ।
पुनर्—फिर ।
सनुतर्—छिपकर ।
उच्चैस्—जोर से, ऊपर, ऊँचा ।
नीचैस्—धीरे से, नीचे, नीचा ।
शनैस्—धीरे से ।
ऋधक्—सचमुच, वास्तव में ।
ऋते—बिना, छोड़कर ।
युगपत्—एक साथ ही, एकाएक ।
आरात्—दूर, समीप ।
पृथक्—भिन्न, अलग ।
ह्यस्—बीता हुआ कल ।
श्वस्—आने वाला कल ।
दिवा—दिन ।
रात्रौ—रात ।
सायम्—सायंकाल ।
चिरम्—देर तक ।
मनाक्—थोड़ा, कुछ, अल्प ।
ईषत्— " " "
जोषम्—सुख से, चुपचाप ।

तूष्णीम्—चुपचाप, मौन ।
बहिस्—बाहर ।
अवस्—बाहर ।
समया—समीप ।
निकषा—समीप ।
स्वयम्—खुद, अपने आप ।
वृथा—व्यर्थ ।
नक्तम्—रात ।
नञ्—नहीं, निषेध ।
हेतौ—निमित्त, कारण ।
इद्धा—स्पष्ट, वास्तव में ।
अद्धा—निश्चय ही, स्पष्टतया ।
सामि—आधा, निन्दित ।
वत्—तरह, समान ।
सना—नित्य ।
सनत्— " "
सनात्— " "
उपधा—भेद, विभाग, श्रेणी ।
तिरस्—छिपकर, टेढ़ा, अनादर ।
अन्तरा—मध्य में, बिना ।
अन्तरेण—बिना, विषय में ।
ज्योक्—चिरकाल, शीघ्र, प्रश्न, इस समय ।

कम्—जल, सिर, निन्दा, सुख ।
 शम्—सुख, कल्याण ।
 सहसा—अकस्मात्, एकाएक, बिना विचार किये ।
 विना—छोड़कर ।
 नाना—अनेक, बिना ।
 स्वस्ति—कल्याण ।
 स्वधा—पितरों को कव्य (अन्नादि) देने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द ।
 अन्नम्—पर्याप्त ।
 वषट्—देवों को हवि देने के लिए प्रयुक्त किया जाने वाला शब्द ।
 श्रोषट्— ” ” ”
 वौषट्— ” ” ”
 अन्यत्—पुनः, और, दूसरा ।
 अस्ति—वर्तमान ।
 उपांशु—धीरे से, गुप्त रूप से, एकान्त में ।
 क्षमा—शान्ति, क्षमा करना ।
 विहायसा—आकाश में ।
 दोषा—रात या सायं काल ।
 सृषा—असत्य ।
 मिथ्या—”
 मुधा—व्यर्थ ।
 पुरा—प्राचीन काल, पहिले ।
 मिथो—परस्पर, साथ-साथ ।
 मियस्—” ”
 प्रायस्—बहुधा, अधिकतर ।
 मुहुस्—बार-बार ।
 प्रवाहुकम्—उसी समय, एक ही समय, ऊपर ।
 प्रवाहिका— ” ” ”
 आर्यहलम्—बलात्, जबरदस्ती ।
 अभीक्ष्णम्—बार-बार ।
 साकम्—साथ ।
 सार्धम्—साथ ।
 नमस्—नमस्कार ।
 हिरक्—बिना, छोड़कर ।
 धिक्—धक्कार ।

अथ—अब, इस प्रकार, इसके पश्चात् ।
 अम्—शीघ्रता से, थोड़े में ।
 आम्—हाँ, वास्तव में ।
 प्रताम्—कष्ट से, श्रम से ।
 प्रशाम्—इसी प्रकार ।
 प्रतान्—विस्तारपूर्वक ।
 मा—मत ।
 माङ्—मत ।
 च—और ।
 वा—अथवा, या ।
 ह—प्रसिद्धार्थसूचक ।
 अह—निश्चयसूचक ।
 एव—ही, केवल ।
 एवम्—इस प्रकार ।
 नूनम्—वास्तव में, अवश्य ।
 शश्वत्—लगातार, निरन्तर ।
 युगपत्—एक साथ ।
 भूयस्—बार-बार ।
 कूपत्—अच्छी तरह ।
 सूपत्—”
 कुवित्—अधिकता से ।
 नेत्—यदि ।
 चेत्—”
 चण्—”
 कञ्चित्—क्या ।
 किञ्चित्—कुछ थोड़ा ।
 यत्र—जहाँ ।
 नह—नहीं ।
 हन्त—आह ।
 माकिः—मत ।
 माकिम्—”
 नकिः—”
 नकिम्—नहीं ।
 आकिम्—नहीं ।
 माङ्—मत ।
 नञ्—नहीं ।

यावत्—जब तक, जितना, ज्यों ही ।
 तावत्—तब, तितना, त्योंही ।
 त्वै, द्वै, न्वै—संभवतः, शायद ।
 रै—अनादरसूचक ।
 औषट्, वौषट्, स्वाहा—देवों को हवि देने के लिए प्रयुक्त शब्द ।
 ओम्—हाँ, स्वीकारसूचक ।
 तुम्—तुम ।
 तथाहि—जैसे कि, इस प्रकार ।
 खलु—वास्तव में ।
 किल—वास्तव में ।
 अथो, अथ—अब, प्रारम्भसूचक ।
 सुष्ठु—अच्छी तरह ।
 स्म—भूतकालसूचक ।
 आदह—धिक्कार ।
 अवदत्तम्—दे दिया गया ।
 अहंयुः—अहंकारी ।
 अस्तिक्षीरा—दूध वाली ।
 अ—सम्बोधनसूचक ।
 आ—साधारणार्थक ।
 इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ—सम्बोधनसूचक ।
 पशु—अच्छी तरह ।

शुकम्—शीघ्रता से ।
 यथाकथा च—किसी प्रकार ।
 पाट्—सम्बोधनसूचक ।
 प्याट्—“ ”
 अङ्ग हे, है, भोः, अये—सम्बोधनसूचक ।
 द्य—हिसार्थक, विरोधार्थक, पादपूरणार्थक ।
 विषु—चारों ओर ।
 एकपदे—तत्क्षण, अकस्मात् ।
 युत्—निन्दासूचक ।
 आतः—यहाँ से ।
 स्मारं स्मारम्—बार बार स्मरण करके ।
 जीवसे—जीने के लिए ।
 पिवन्धुथै—पीने के लिए ।
 कृत्वा—करके ।
 उदेतोः—उठकर, उदय हीकर ।
 विसृपः—फैलकर ।
 अधिहरि—विष्णु में या विष्णु पर ।
 अत्युच्चैस्तौ—उँचाई का उल्लंघन करके ।
 तत्रशालायाम्—उस कमरे या मकान में ।
 वगाहः, अवगाहः—स्नान ।
 पिधानम्, अपिधानम्—ढक्कन ।

इत्यव्ययप्रकरणम् ।

अथ स्त्रीप्रत्ययप्रकरणम्

अजा ४-१-४—बकरी ।
 खट्वा ,, चारपाई, खाट ।
 पञ्जाजी ,, पाँच बकरियों का झुण्ड ।
 एडका—मेंड़ (मादा)
 अश्वा—घोड़ी ।
 चटका—गौरैया ।
 मूषिका—बुहिया ।
 बाला—लड़की ।
 वत्सा—बच्ची, बछिया ।

होडा—लड़की ।
 मन्दा—मूर्ख (स्त्री)
 विलाता—लड़की ।
 संफला—अच्छे फलवाली ।
 मन्त्रफला—मकोय, रसभरी ।
 सत्पुष्पा—अच्छे फूलवाली ।
 प्राक्पुष्पा—वनस्पति विशेष ।
 प्रत्यक्पुष्पा—अपामार्ग, चिचिड़ी ।
 शूद्रा—शूद्र जाति की स्त्री ।

शूद्रा—शूद्र स्त्री ।
 महाशूद्रा—ब्राह्मण से शूद्रा में उत्पन्न स्त्री, अहीर की स्त्री ।
 क्रुञ्चा—क्रुञ्च जाति की स्त्री ।
 उष्णिहा—एक वैदिक छन्द का नाम ।
 देवविशा—देवों की प्रजा ।
 ज्येष्ठा—बड़ी स्त्री, बड़ी, जेठानी, छिपकली ।
 कनिष्ठा—छोटी स्त्री, छोटी ।
 कोकिला—मादा कोयल ।
 अमूला—आकाश वेंबर ।
 कर्त्री—करने वाली ।
 दण्डिनी—दण्ड वाली ।
 भवन्ती ४-१-६—होती हुई ।
 पचन्ती ४-१-६—पकाती हुई ।
 दीव्यन्ती—चमकती हुई ।
 उल्लासत्—पतीली से गिरी हुई ।
 पर्णध्वत्—पत्तों से गिरी हुई ।
 प्राची—पूर्व दिशा ।
 प्रतीची—पश्चिम दिशा ।
 अतिसुखरी ४-१-७—पैदा करने वाले को अतिक्रमण करने वाली ।
 अतिधीवरी—धारण करने वाले, ध्यान करने वाले को अतिक्रमण करने वाली ।
 शर्वरी—रात ।
 अवावा ब्राह्मणी—दूर करने वाली ब्राह्मणी ।
 राजयुध्वा—राजा से युद्ध करने वाली स्त्री ।
 बहुधीवरी—बहुत मधुवों वाली नगरी ।
 बहुधीवा— ” ”
 द्विपदी—दो पैर वाली ।
 द्विपदा—दो पद वाली ऋचा ।
 एकपदा—एक पद वाली ऋचा ।
 पञ्च—पाँच ।
 चतस्रः—चार स्त्रियाँ ।
 सीमा—हृद ।
 दामा—रस्सी ।
 बहुयुग्वा—बहुत से यज्ञ करने वालों से युक्त नगरी ।
 बहुराशी, बहुराजा—जिस नगरी में बहुत राजा हों ।

सर्विका—अज्ञात सब स्त्रियाँ ।
 कारिका—करने वाली ।
 नौका—नाव ।
 शका—समर्थ स्त्री ।
 बहुपरिवाजिका नगरी—जिस नगरी में बहुत संन्यासी हों ।
 नन्दना—प्रसन्न करने वाली ।
 कटुका—कटु रस वाली ।
 राका—पूर्ण चन्द्र वाली रात ।
 कारकः—करने वाला ।
 नारिका—रात में लोगों का नाम लेकर बुलाने वाली एक राक्षसी ।
 दाक्षिणात्यिका—दक्षिण देश में रहने या होने वाली ।
 इहत्यिका—यहाँ होने वाली ।
 यका—जो स्त्री ।
 सका—वह स्त्री ।
 उपत्यका—पर्वत के समीप की भूमि ।
 अधित्यका—पर्वत के ऊपर की भूमि ।
 जीवका—जीने वाली ।
 भवका—होने वाली ।
 देवदत्तिका—देवदत्ता नाम की स्त्री ।
 देवका— ” ”
 क्षिपका—फेंकने वाली ।
 ध्रुवका—स्थिर ।
 चटका—गौरैया ।
 कन्यका—कन्या ।
 तारका—तारा, नक्षत्र, आँख की पुतली ।
 तारिका—तारने वाली, दासी ।
 वर्णका—वस्त्र ।
 वर्णिका—प्रशंसा करने वाली ।
 वर्तका, वर्तिका—बटेर, बत्ती ।
 अष्टका—एक श्राद्ध ।
 अष्टिका—आठ संख्या वाली ।
 सूतका, सूतिका—जिसे बच्चा पैदा हुआ हो ।
 पुत्रिका—पुत्री ।
 आर्यका, आर्यिका—आर्य जाति की अज्ञात स्त्री ।
 चटकका, चटकिका—अज्ञात गौरैया ।

साङ्काशिका—सांकाश्य में होने या रहने वाली ।
 अधिक—अज्ञात घोड़ी ।
 शुभंजिका—अज्ञात कल्याण प्राप्त करने वाली ।
 सुनयिका—सुन्दर नीति वाली ।
 सुपाकिका—सुन्दर पाक वाली ।
 अनैपका—जो अज्ञात न हो ।
 परमैपका—श्रेष्ठ यह स्त्री ।
 अद्वके—अज्ञात दो ।
 परमद्वके—श्रेष्ठ दो ।
 स्विका—अपनी ।
 परमस्विका—श्रेष्ठ अपनी ।
 निर्मस्त्रिका, निर्मस्त्रका—भायी से निकली, अज्ञात ।
 एषका, एषिका—अज्ञात यह ।
 एतिके, एतिका—अज्ञात ये दो ।
 अजका, अजिका—अज्ञात बकरी ।
 जका, जिका—अज्ञात पण्डिता ।
 द्वके, द्विके—अज्ञात दो ।
 निःस्वका, निःस्विके—निर्वन स्त्री ।
 गङ्गाका, गङ्गिके—अज्ञात गङ्गा ।
 अखट्टिका—विना चारपाई वाली, अज्ञात स्त्री ।
 गङ्गाका—अज्ञात गङ्गा ।
 शुभ्रिका—अज्ञात शुभ्र स्त्री ।
 कुरुचरी—कुरुदेश में घूमने वाली ।
 नदी—नदी ।
 बहुकुरुचरा—जिस नगरी में बहुत कुरुचर हो ।
 सौपर्णयी—नागों की माता सुपर्णी की पुत्री ।
 ऐन्द्री—जिसके देवता इन्द्र हों, पूर्व दिशा ।
 औस्सी—झरने में होने वाली ।
 उरुद्वयसी—जाँघ तक जलवाली नदी ।
 उरुद्वघ्नी—
 उरुमात्री—
 पञ्चतयी—पाँच भाग वाली ।
 आक्षिकी—पासों से जुआ खेलने वाली ।
 लावणिकी—नमक बेचने वाली ।
 यादशी—जैसी ।
 इत्तरी—घुमकड़ स्त्री ।

चौरी—चोर की स्त्री, चोरी करने वाली ।
 खैणी—स्त्री में आसक्त स्त्री ।
 पौंस्नी—पुरुष में
 शक्तिकी—शक्ति नामक अस्त्र चलाने वाली स्त्री ।
 आढ्यङ्करणी—धनी बनाने वाली स्त्री ।
 तरुणी—युवती ।
 तलुनी—युवती ।
 गार्गी—गर्ग की पुत्री ।
 द्वैप्या—द्वीप में होने वाली ।
 दैन्या—देव की पुत्री ।
 गार्ग्यायणी—गर्ग गोत्र की स्त्री ।
 लौहित्यायनी—लोहित की पुत्री ।
 कात्यायनी—कत गोत्र की पुत्री, पार्वती, विधवा ।
 कौरव्यायणी—कुरु की पुत्री ।
 माण्डूकायनी—मण्डूक ऋषि की पुत्री ।
 आसुरायणी—असुर की पुत्री ।
 कुमारी—क्वारी कन्या ।
 बधूटी—स्त्री ।
 चिरण्टी—युवती ।
 शिशुः—बच्ची ।
 कन्या—कन्या ।
 अयनीका सेना—तीन पंक्ति, समूह अथवा नेता वाली सेना ।
 पञ्चाश्व—पाँच घोड़ों से खरीदी गई ।
 द्विविस्ता—दो तोला सोना से खरीदी गई ।
 द्वयाचिता—बत्तीस मन से खरीदी गई ।
 द्विकम्बल्या—दस सेर ऊन से खरीदी गई ।
 द्वयाढकी—सेर सेर से खरीदी गई ।
 पञ्चाश्वी—पाँच घोड़ों का झुंड ।
 द्विकाण्डा—दो लाठी वाली खेत की सीमा ।
 काण्ड-लाठी = १६ हाथ ।
 द्विकाण्डी—सोलह हाथ लम्बी रस्ती ।
 द्विपुरुषी द्विपुरुषा वा परिखा—दो पोरसा (लगभग १२ कुट) गहरी खाई ।
 कुण्डोघ्नी—कुण्डे की तरह थनवाली गाय ।
 कुण्डोघो धैनुकम्—कुण्डे की तरह थनवाली गायों का झुंड ।
 द्वयून्नी—दो थन वाली (छीमी वाली) गाय ।

काला—कूर स्त्री ।
नीली—नीले रंग की गाय, एक ओपधि ।
नीला—नील रंग की साड़ी ।
नीली—नील ओपधि ।
नीली—नीले रंग की गाय ।
कुशी—लोहे की शलाका, छड़ ।
कुशा—लकड़ी की शलाका, लम्बी लकड़ी ।
कामुकी—मैथुन की इच्छा वाली स्त्री ।
कामुका—धन आदि चाहने वाली स्त्री ।
कवरी—जूड़ा ।
कवरा—चितकवरे रंग की ।
शोणी, शोणा—लाल रंग की ।
मृद्वी, मृदुः—कोमल अंग वाली ।
शुचिः—पवित्र, शुद्ध स्त्री ।
आखुः—बुहिया ।
खरुः—विवाह के लिए उत्सुक कन्या ।
पाण्डुः—सफेद रंग की ।
बह्वी—बहुत ।
बहुः—,,
रात्रिः, रात्री—रात ।
शकटिः, शकटी—गाड़ी ।
अजननिः—जन्म का अभाव ।
पद्धतिः, पद्धती—मार्ग, पगडंडी ।
गोपी—गोप की स्त्री ।
गोपालिका—गोपालक की स्त्री ।
सूर्या—सूर्यदेव की स्त्री (देवता) ।
सूरी—सूर्यदेव की मानुषी स्त्री (कुंती) ।
इन्द्राणी—इन्द्र की स्त्री (शची) ।
हिमानी—हिमसमूह (glacier) ।
अरण्यानी—महावन, बहुत बड़ा जंगल ।
यवानी—खराब जौ, घोड़जई ।
यवनानी—यवनों की लिपि, फारसी लिपि ।
मातुलानी, मातुली—मामी ।
उपाध्यायानी, उपाध्यायी—उपाध्याय की स्त्री ।
उपाध्यायी, उपाध्याया—पढ़ानेवाली स्त्री ।
आचार्यानी—आचार्य की स्त्री ।

आचार्या—स्वयं आचार्य स्त्री ।
अर्याणी, अर्या—वैश्य की स्त्री ।
क्षत्रियाणी, क्षत्रिया—क्षत्रिय की स्त्री ।
अर्यो—वैश्य की स्त्री ।
क्षत्रियी—क्षत्रिय की स्त्री ।
ब्रह्माणी—ब्रह्मा को जिलाने वाली स्त्री ।
वस्त्रक्रीती—वस्त्र से खरीदी गई ।
धनक्रीती—धन से खरीदी गई ।
अभ्रलिप्सी घौः—मेघों से घिरा आकाश ।
चन्दनलिप्सा अङ्गना—जिस स्त्री के शरीर में चन्दन लगा हुआ हो ।
उरुमित्री—जिस स्त्री की जाँघें टूटी हुई या अलग हों ।
बहुकृता—जिसने बहुत किया हो ।
दन्तजाता—जिसके दाँत निकल आये हों ।
पाणिगृहीती—विधि पूर्वक अग्नि के सामने जिसका हाथ पकड़ा गया हो विवाहिता भार्या ।
पाणिगृहीता—जिसका हाथ पकड़ लिया गया हो, रखेली स्त्री ।
सुरापीती, सुरापीता—जिस स्त्री ने मद्यपान किया हो ।
वस्त्रच्छन्ना—वस्त्र से ढकी हुई ।
अतिकेशी, अतिकेशा—केश से बढ़कर ?
चन्द्रमुखी, चन्द्रमुखा—चन्द्रमा के समान मुखवाली ।
सुगुल्फा—सुन्दर टखनों वाली ।
शिखा—चोटी ।
सुस्वेदा—अच्छे पसीने वाली ।
सुज्ञाना—उत्तम ज्ञान वाली ।
सुमुखा—सुन्दर मुखवाली ।
सुशोभा—अधिक सूजन वाली ।
सुकेशी, सुकेशा—सुन्दर बालों की गद्दी वाला रथ ।
सुस्तनी, सुस्तना—सुन्दर स्तनवाली स्त्री ।
तुङ्गनासिकी, तुङ्गनासिका—ऊँची नाक वाली ।
सहनासिका—नाक वाली ।
अनासिका—बिना नाक की ।
स्वङ्गी, स्वङ्गा—अच्छे अंग वाली ।
सुपुच्छी, सुपुच्छा—अच्छी पूछ वाली ।
कबरपुच्छी—रंग विरंगी पूछ वाली ।

उल्लूकपक्षी शाला—उल्लू के पंख की तरह पाख वाला मकान ।
 उल्लूकपुच्छी सेना—उल्लू के पूँछ की तरह खड़ी की गई सेना ।
 कल्याणक्रोडा—सुन्दर छाती वाली घोड़ी ।
 सुजधना—सुन्दर जाँघ वाली ।
 सुकेशा—सुन्दर बाल वाली ।
 अकेशा—बिना बाल वाली ।
 विद्यमाननासिका—जिसकी नाक विद्यमान हो ।
 शूर्पणखा—सूप की तरह नाखून वाली स्त्री, रावण की बहिन ।
 गौरमुखा—किसी स्त्री का नाम ।
 ताम्रमुखी कन्या—लाल मुख वाली कन्या ।
 प्राङ्मुखी—पूर्व मुख वाली ।
 दित्यवाट् च मे दित्यौही च मे—दो वर्ष का बछड़ा और दो वर्ष की बछिया मेरे पास रहें ।
 सखी—सहेली ।
 अशिश्वी—बिना बच्चे की स्त्री ।
 आधेनवो धुनयन्तामशिश्वीः—बिना बच्चे वाली गाय को हटाओ ।
 तटी—किनारा ।
 वृषली—शूद्र की स्त्री ।
 शुक्ला—सफेद स्त्री ।
 देवदत्ता—स्त्री विशेष का नाम ।
 औपगवी—उपगु की सन्तान स्त्री ।
 कठी—कठशाखा पढ़ने वाली ।
 कलापी—कलाप पढ़ने वाली ।
 बह्वृची—बहुत ऋचा पढ़ने वाली ।
 मुण्डा—सिर मुड़ाये हुए स्त्री ।
 बलाका—बगुला, सुरखाव, प्रेमिका स्त्री ।
 क्षत्रिया—क्षत्रिय जाति की स्त्री ।
 हयी—घोड़ी ।
 गवयी—नील गाय ।
 मुकयी—खच्चरी ।
 मनुषी—मनुष्य जाति की स्त्री ।

मत्सी—मादा मछली ।
 ओदनपाकी—नील पुष्पा, कट सरैया ।
 शङ्कुकर्णी—श्वेतापराजिता, श्वेतकण्टकारी ।
 शालपर्णी सरिवन ।
 शङ्खपुष्पी—शंखपुष्पी ।
 दासीफली—काक जंघा ।
 दर्भमूली—ओषधि विशेष ।
 गोवाली सफेद मकई ।
 दाक्षी—दक्ष की पुत्री ।
 औदमेथी—उदमेथ की पुत्री ।
 तित्तिरिः—मादा तीतर ।
 कुरुः—कुरु राजा की पुत्री ।
 अध्वर्युः—यजुर्वेदज्ञ ऋत्विक् ।
 अलाब्वा—लौकी द्वारा ।
 कर्कन्धवा—बेर द्वारा ।
 कृकवाकुः—वनमूर्गी ।
 रज्जुः—रस्ती ।
 हनुः—ठोड़ी ।
 मद्रबाहुः—अच्छे बाहु वाली स्त्री ।
 वृत्तबाहुः—गोल बाहु वाली ।
 पङ्गुः—पंगु स्त्री ।
 श्वश्रूः—सास ।
 करमोरुः—जिसकी जाँघ हथेली के किनारे की तरह सुन्दर हो ।
 संहितोरुः—जिसकी जाँघें मिली या सटी हों ।
 शफोरुः—
 लक्षणोरुः—सुलक्षण जाँघ वाली ।
 वामोरुः—सुन्दर जाँघ वाली ।
 सहितोरुः—हितकारी जाँघ वाली ।
 सहोरुः—सहने योग्य जाँघ वाली ।
 कद्रूः—तागों की माता ।
 कमयडलुः—पात्र विशेष ।
 कद्रुः—भूरे रंग वाली ।
 कमयडलुः—पात्र विशेष ।
 शार्ङ्गरवी—शार्ङ्गरव की पुत्री ।
 वैदी—वैद की पुत्री ।

नारी—स्त्री ।

अम्बष्ठ्या—अम्बष्ठ की पुत्री ।

कारीषगन्ध्या—कारीषगन्धि की पुत्री ।

शार्कराक्ष्या—शार्कराक्ष की पुत्री ।

पौत्तिमाण्या—पूतिमाप की पुत्री ।

आवध्या—अवट की पुत्री ।

युवतिः—जवान स्त्री ।

बहुयुवा—जिस नगरी में बहुत से जवान रहते हो ।

युवती—पति को सुख देनेवाली ।

इति स्त्रीप्रत्ययप्रकरणम् ।

अथ कारकप्रकरणम्

उच्चैः—ऊँचा ।

नीचैः—नीचा ।

कृष्णः—श्रीकृष्ण ।

श्रीः—लक्ष्मी, शोभा ।

ज्ञानम्—ज्ञान ।

तटः, तटो, तटम्—तट, किनारा ।

द्रोणो ग्रीहिः—सोलह सेर धान ।

एकः—एक (पुल्लिङ्ग) ।

द्वौ—दो ”

बहवः—बहुत ”

हे राम—हे राम ।

माषेप्वश्वं बध्नाति—उड़ के खेत में घोड़े को बाँधता है ।

पयसा ओदनं भुङ्क्ते—दूध से भात खाता है ।

हरिं भजति—हरि को भजता है ।

हरिः सेव्यते—हरि की सेवा की जाती है ।

लक्ष्म्या सेवितः—लक्ष्मी से सेवित ।

शत्यः—सौ रुपये से खरीदा गया ।

प्राप्तानन्दः—जिसको आनन्द प्राप्त हुआ है ।

विषवृक्षोऽपि संवर्ध्य स्वयं छेतुमसाम्प्रतम्—स्वयं लगाये हुए विषवृक्ष को भी स्वयं काटना उचित नहीं है ।

ग्रामं गच्छंस्तृणं स्पृशति—गाँव जाता हुआ घास छूता है ।

ओदनं भुञ्जानो विषं भुङ्क्ते—भात खाता हुआ विष खा जाता है ।

गां दोग्धि पयः—गाय से दूध दूहता है ।

वलिं याचते वसुधाम्—वलि से पृथ्वी माँगता है ।

अविनीतं विनयं याचते अविनीत से विनीत होने की याचना करता है ।

तण्डुलान् ओदनं पचति—चावलों का भात पकाता है ।

गर्गाञ्छतं दण्डयति—गर्गों को सौ रुपये दण्ड देता है ।

ब्रजमवरुणद्वि गाम्—गोशाला में गाय को रोकता है ।

माणवकं पन्थानं पृच्छति—लड़के से मार्ग पूछता है ।

वृक्षमवचिनोति फलानि—पेड़ से फल तोड़ता है ।

माणवकं धर्मं ब्रूते शास्ति वा—लड़के को धर्म बताता या सिखाता है ।

शतं जयति देवदत्तम्—देवदत्त से सौ रुपये जीतता है ।

सुधां क्षीरनिधिं मथ्नाति—क्षीरसागर से अमृत मथता है ।

देवदत्तं शतं मुष्णाति—देवदत्त के सौ रुपये चुराता है ।

ग्राममजां नयति हरति कर्षति वहति वा—गाँव में बकरी को ले जाता, घसीटता या पहुँचाता है ।

वलिं भिक्षते वसुधाम्—वलि से पृथ्वी माँगता है ।

माणवकं धर्मं माषते अभिधत्ते वक्ति वा—लड़के को धर्मों-पदेश देता या कहता है ।

माणवकस्य पितरं पन्थानं पृच्छति—लड़के के पिता से मार्ग पूछता है ।

कुरुन् स्वपिति—कुरु देश में सोता है ।

मासमास्ते—महीने भर रहता है ।

गोदोहमास्ते—गाय दूहने के समय तक रहता है ।

क्रोशमास्ते—कोश भर तक है ।

शत्रून् गमयत्स्वर्गम्—शत्रुओं को स्वर्ग पहुँचाया ।

वेदार्थं स्वानवेदयत्—आत्मीय जनों को वेद का अर्थ समझाया ।

आशयञ्चामृतं देवान्—देवों को अमृत पिलाया ।

वेदमध्यापयद्विधिम्—ब्रह्मा को वेद पढ़ाया ।

आसयत्सलिले पृथ्वीम्—पृथ्वी को जल में स्थित किया ।

यः स मे श्रीर्हरिर्गतिः—वह भगवान् मेरे लिए शरण हैं ।

पाचयत्योदनं देवदत्तेन—देवदत्त से भात पकवाता है ।

गमयति देवदत्तेन यज्ञदत्तं विष्णुमित्रः—विष्णुमित्र यज्ञ-
दत्त को भेजने के लिए
देवदत्त को प्रेरित
करता है ।

नाययति वाहयति वा भारं भृत्येन—नौकर से बोझ पहुँच-
वाता है ।

वाहयति रथं वाहान् सूतः—सूत घोड़ों से रथ खिंचवाता है ।

आदयति खादयति वाक्षं वटुना—वटु से भोजन खिलवाता
है ।

भक्षयत्यन्नं वटुना—वटु से भोजन खिलवाता है ।

भक्षयति बलीवर्दान् सस्यम्—बैलों से धान नष्ट करवाता है ।

जल्पयति भाषयति वा धर्मं पुत्रं देवदत्तः—देवदत्त पुत्र को
धर्म सिखाता है ।

दर्शयति हरिं भक्तान्—भक्तों को भगवान् का दर्शन
कराता है ।

स्मारयति प्रापयति देवदत्तेन—देवदत्त को स्मरण कराता
या सुँघाता है ।

मासमासयति देवदत्तम्—देवदत्त को महीने भर ठहराता
है ।

देवदत्तेन पाचयति—देवदत्त से पकवाता है ।

हारयति कारयति वा भृत्यं भृत्येन वा कटम्—नौकर से चटाई
वनवाता या लिवा
जाता है ।

अभिवाद्यते दर्शयते देवं भक्तं भक्तेन वा—भक्त को भगवान्
को दिखलाता या
प्रणाम कराता है ।

अधिरोते वैकुण्ठं हरिः—हरि वैकुण्ठ में है या बैठते हैं ।

अधितिष्ठति— " "

अध्यास्ते— " "

अभिनिविशते सन्मार्गम्—सन्मार्ग में लगता है ।

पापेऽभिनिवेशः—पाप में आग्रह ।

उपवसति, अनुवसति अधिवसति आवसति वा वैकुण्ठं

हरिः—हरि वैकुण्ठ में रहते या वास जरते हैं ।

वने उपवसति—जंगल में उपवास करता है ।

उभयतः कृष्णं गोपाः—कृष्ण के दोनों ओर गोप हैं ।

सर्वतः कृष्णम्—कृष्ण के सब ओर ।

धिकं कृष्णामक्तम्—कृष्ण के अभक्त को धिक्कार है ।

उपर्युपरि लोकं हरिः—लोकों के ऊपर हरि हैं ।

अध्यधि लोकम्—लोकों के नीचे ।

अधोऽधोलोकम्— " "

अमितः कृष्णम्—कृष्ण के चारों ओर ।

परितः कृष्णम्— " "

ग्रामम् समया—गाँव के समीप ।

निकषा लङ्काम्—लंका के समीप ।

हा कृष्णामक्तम्—कृष्ण का अभक्त सोचनीय है ।

बुभुक्षितं न प्रतिभाति किञ्चित्—भूखे को कुछ अच्छा नहीं
लगता ।

अन्तरा त्वां मां हरिः—तुम्हारे मेरे बीच हरि हैं ।

अन्तरेण हरिं न सुखम्—हरि के बिना सुख नहीं ।

पर्जन्यो जपमनुप्रावर्षत्—जप के बाद मेघ बरसा ।

नदीमन्ववसिता सेना—नदी के किनारे-किनारे सेना
पड़ी है ।

अनुहरिं सुराः—देवता हरि से छोटे हैं ।

उपहरिं सुराः—देवता हरि से छोटे हैं ।

वृक्षं प्रति, अनु, परि वा विद्योतते विद्युत्—विजली वृक्ष की
ओर चमकती है ।

भक्तो विष्णुं प्रति परि अनु वा—भक्त विष्णु की ओर ।

लक्ष्मी हरिं प्रति परि अनु वा—लक्ष्मी हरि के हिस्से, पड़ी) ।

वृक्षं वृक्षं प्रति परि अनु वा सिञ्चति—प्रत्येक वृक्ष को
सींचता है ।

परिषिञ्चति अग्निम्—अग्नि के चारों ओर सींचता है ।

हरिमभि वर्तते—हरि की ओर है ।

भक्तो हरिमभि—भक्त हरि की ओर ।

देवं देवमभिषिञ्चति—प्रत्येक देवता पर जल चढ़ाता है ।

यदत्र ममामिष्यात् तदीयताम्—इसमें जो मेरा भाग
हो, दो ।

कुतोऽध्यागच्छति—कहाँ से आता है ।

कुतः पर्यागच्छति— " " "

सुसिक्तम्—खूब खींचा (प्रशंसा) ।

सुस्तुतम्—खूब प्रशंसा की ।

सुषिक्तं किं स्यात् तवान्न—तुमने खूब सींचा, परन्तु तुम्हारा क्या लाभ ?

अतिदेवान् कृष्णः—कृष्ण देवों से बड़े हैं ।

सर्पिषोऽपि स्यात्—बी का बिन्दु भी तो होता ।

अपि स्तुयाद् विष्णुम्—विष्णु की स्तुति भी तो करता ।

अपि स्तुहि—यदि या हो, स्तुति भी करो ।

धिक् देवदत्तम्, अपि स्तुयाद् वृषलम्—देवदत्त को धिक्कार है जो शूद्र की भी स्तुति करे ।

अपि सिद्ध, अपि स्तुहि—सींचो और स्तुति करो ।

मासं कल्याणी—लगातार महीने भर कल्याणयुक्त ।

मासमधीते—महीने भर पढ़ता है ।

मासं गुडधानाः—महीने भर गुडधान (गुड़ में पागा गया भुना दाना) ।

क्रोशं कुटिला नदी—नदी कोस भर तक टेढ़ी है ।

क्रोशमधीते—कोस भर तक पढ़ता है ।

क्रोशं गिरिः—कोस भर तक पर्वत है ।

मासस्य द्विरधीते—महीने में दो दिन पढ़ता है ।

क्रोशस्यैकदेशे पर्वतः—कोस के एक भाग में पर्वत है ।

गङ्गायां घोषः—बिलकुल गङ्गा तट पर अहीरों का गाँव है ।

करण (तृतीया)

रामेण बाणेन हतो बालिः—बालि राम द्वारा बाण से मारा गया ।

प्रकृत्या चारुः—सहज सुन्दर है ।

प्रायेण याज्ञिकः—प्रायः याज्ञिक है ।

गोत्रेण गार्ग्यः—गर्ग गोत्र है ।

समेनेति—सीधा जाता है ।

विषमेणैति—टेढ़ा जाता है ।

द्विद्रोणेन धान्यं क्रीणाति—दो द्रोण (१ द्रोण = १६ सेर) धान खरीदता है ।

सुखेन दुःखेन वा याति—सुख अथवा दुःख से जाता है ।

अक्षैरक्षान्वा दीव्यति—पासों से जुआ खेलता है ।

अ० प्र० : १२

अह्ना क्रोशेन चानुवोकोऽधीतः—दिन भर में या कोस भर में अनुवाक (वेद का एक भाग) पढ़ लिया ।

मासमधीतो नायातः—महीने भर पढ़ा, परन्तु आया नहीं ।

पुत्रेण सहागतः पिता—पिता पुत्र के साथ आया ।

अक्षणा काणः—एक आँख का काना ।

अक्षि काणमस्य—इसकी आँख कानी है ।

जटाभिस्तापसः—जटा से तपस्वी मालूम होता है ।

पित्रा पितरं वा संजानीते—पिता को जानता है ।

दण्डेन घटः—दंड से घड़ा (बनता है) ।

पुण्येन दृष्टो हरिः—पुण्य से भगवान् का दर्शन हुआ ।

अभ्ययनेन वसति—पढ़ने के लिए रहता है ।

अलं श्रमेण—श्रम की आवश्यकता नहीं ।

शतेन शतेन वत्सान् पाययति पयः—सौ सौ करके बछड़ों को पानी पिलाता है ।

दास्या संयच्छते कामुकः—कामी व्यभिचार के लिए दासी को धन देता है ।

भार्यायै संयच्छति—भार्या को धन देता है । सम्प्रदान (चतुर्थी)

दानीयो विप्रः—ब्राह्मण दान देने योग्य है ।

विप्राय गां ददाति—ब्राह्मण को गाय देता है ।

पत्ये शेते—पति के लिए सोती है ।

पशुना रुद्रं यजते—पशु से रुद्र का यज्ञ करता है ।

हरये रोचते भक्तिः—भगवान् को भक्ति रुचती है ।

देवदत्ताय रोचते मोदकः पथि—देवदत्त को मार्ग में लड्डू रुचता है ।

गोपी स्मरात् कृष्णाय श्लाघते ह्रुते तिष्ठते शपते वा—गोपी काम से कृष्ण को स्तुति द्वारा, सपत्नियों से छिपाकर, ठहर कर और शपथ खाकर अनुराग दिखाती है ।

देवदत्ताय श्लाघते पथि—मार्ग में देवदत्त की प्रशंसा करता है ।

भक्ताय धारयति मोक्षं हरिः—भगवान् भक्त के मोक्ष के ऋणी हैं ।

देवदत्ताय शतं धारयति ग्रामे—वह गाँव में देवदत्त का सौ रुपये का ऋणी है ।

पुष्पेभ्यः स्पृहयति—वह फूलों को चाहता है ।
 पुष्पेभ्यो धने स्पृहयति—वह जंगल में फूलों को चाहता है ।
 पुष्पाणि स्पृहयति—फूलों को चाहता है ।
 हरये क्रुध्यति—हरि पर क्रोध करता है ।
 हरये द्रुह्यति—हरि से द्रोह करता है ।
 हरये ईर्ष्यति—हरि से ईर्ष्या करता है ।
 हरये असूयति—हरि की निन्दा करता है ।
 भार्यामीर्ष्यति—पत्नी की ईर्ष्या करता है कि कोई उसे देख न ले ।
 क्रूरमभिदुह्यति—दुष्ट पर क्रुद्ध होता है ।
 कृष्णाय राध्यति—कृष्ण के शुभाशुभ को देखता है ।
 विप्राय गां प्रति शृणोति आशृणोति वा—वह ब्राह्मण को गाय देने की प्रतिज्ञा करता है ।
 होत्रे अनुगृणाति प्रतिगृणाति वा—अध्वर्यु होता को प्रोत्साहित करता है ।
 शतेन शताय वा परिश्रीतः—सौ रुपये पर दास खरीदा गया ।
 मुक्तये हरिं भजति—मुक्ति के लिए हरि को भजता है ।
 भक्तिज्ञानाय कल्पते सम्पद्यते जायते वा—भक्ति से ज्ञान होता है ।
 वाताय कपिला विद्युत्—भूरे रंग की बिजली वायु को सूचित करती है ।
 ब्राह्मणाय हितम्—ब्राह्मण का कल्याण ।
 फलेभ्यो याति—फल लाने के लिए जाता है ।
 नमस्कुर्मो नृसिंहाय—हम प्रसन्न करने के लिए नृसिंह को नमस्कार करते हैं ।
 स्वयंभुवे नमस्कृत्य—ब्रह्मा को प्रसन्न करने के लिए नमस्कार करके ।
 यागाय याति—यज्ञ करने के लिए जाता है ।
 हरये नमः—हरि को नमस्कार है ।
 नमस्करोति देवान्—देवों को नमस्कार करता है ।
 अग्नये स्वाहा—यह (हवि) अग्नि के लिए ।
 पितृभ्यः स्वधा—यह (पिण्ड, जल) पितरों के लिए ।
 दैत्येभ्यो हरिरलं प्रभुः समर्थः शक्तः—दैत्यों के लिए हरि पर्याप्त, प्रभु तथा समर्थ है ।

तस्मै प्रभवति—उसके लिए समर्थ है ।
 स एषां ग्रामणी—वह इनका मुखिया है ।
 वषट् इन्द्राय—यह इन्द्र के लिए ।
 स्वस्ति गोभ्यो भूयात्—गायों का कल्याण हो ।
 न त्वां तृणं मन्ये तृणाय वा—मैं तुमको तृण भी नहीं समझता ।
 न त्वां तृणं मन्ये—मैं तुमको तृण भी नहीं समझता ।
 न त्वां शुनं मन्ये—,, कुत्ता ,,
 न त्वां नावं मन्ये—,, नौका ,,
 ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति—वह गांव जाता है ।
 मत्सा हरिं भजति—मन से हरि के पास जाता है ।
 पन्थानं गच्छति—वह रास्ते में जाता है ।
 उत्पथेन पथं गच्छति—कुमार्ग से मार्ग पर जाता है ।
 (अपादान) पञ्चमी
 धावतोऽश्वात्पतति—दौड़ते हुए घोड़े से गिरता है ।
 वृक्षस्य पर्णं पतति—पेड़ का पत्ता गिरता है ।
 पापाञ्जुगुप्सते, विरमति—पाप से घृणा करता या अलग होता है ।
 धर्मात्प माद्यति—धर्म से चूकता है ।
 चौराद् विभेति—चोर से डरता है ।
 चौरात्त्रायते—चोर से रक्षा करता है ।
 अरय्ये विभेति त्रायते वा—जंगल में डरता या रक्षा करता है ।
 अध्ययनात्पराजयते—अध्ययन से हार मानता है ।
 शत्रून्पराजयते—शत्रुओं को जीतता है ।
 यवेभ्यो गां वारयति—जौ से गाय को हटाता है ।
 यवेभ्यो गां वारयति क्षेत्रे—खेत में जौ से गाय को हटाता है ।
 मातुर्निलीयते कृष्णः—कृष्ण माता से हिलते हैं ।
 चौरान्न दिदृक्षते—चोरों को देखना नहीं चाहता ।
 देवदत्ताद् यज्ञं दधौ निलीयते—यज्ञदत्त देवदत्त से छिपता है ।
 उपध्यायादधीते—अध्यापक से पढ़ता है ।
 नटस्य गाथां शृणोति—नट का गाना सुनता है ।
 ब्रह्मणः प्रजाः प्रजायन्ते—ब्रह्मा से जीव उत्पन्न होते हैं ।
 हिमवतो गङ्गा प्रभवति—हिमालय से गंगा निकलती है ।
 प्रासादात्प्रेक्षते—महल से देखता है ।
 आसनात्प्रेक्षते—आसन से देखता है ।

श्वशुराज्जिहेति—श्वशुर को देखकर लज्जित होता है ।
कस्मात्त्वम् ? नद्याः—तुम कहाँ से आ रहे हो ? नदी से ।
वनाद् ग्रामो योजनं योजने वा—जंगल से गाँव चार कोस
पर है ।

कार्तिक्या आप्रहायणी मासे कार्तिक की पूर्णिमा से अगहन
की पूर्णिमा एक मास है ।

अन्यो मित्र इतरो वा कृष्णात्—कृष्ण से भिन्न ।
आराद्वनात्—जंगल के पास या दूर ।
ऋते कृष्णात्—कृष्ण के बिना या कृष्ण को छोड़ कर ।
पूर्वो ग्रामात्—गाँव के पूर्व ।
चैत्रात्पूर्वः फाल्गुनः—चैत्र के पहिले फाल्गुन होता है ।
पूर्व कायस्थ—शरीर का पूर्व या भाग ।

प्राक् प्रत्यग्वा ग्रामात्—गाँव के पूर्व या पश्चिम ।
दक्षिणा ग्रामात्—गाँव के दक्षिण ।

दक्षिणाहि ग्रामात्—
भवात्प्रभृति आरभ्य वा सेव्यो हरिः—जन्म से लेकर हरि
की सेवा करनी
चाहिये ।

ग्रामाद्वहिः—गाँव के बाहर ।
अपहरेः परिहरेः संसारः—हरि के छोड़ कर संसार है ।
हरिं परि—हरि की ओर ।
आमुक्तेः संसारः—मुक्ति तक संसार है ।
आसकलाद् ब्रह्म—ब्रह्म सब वस्तुओं में है ।
प्रद्युम्नः कृष्णात्प्रति—प्रद्युम्न कृष्ण के प्रतिनिधि है ।
तिलेभ्यः प्रतियच्छति माषान्—तिल से उड़द बदलता है ।
शताद् बद्धः—सौ रुपये के ऋण से बँधा है ।
शतने बन्धितः—सौ रुपये के ऋण से वह कारागार में है ।
जाड्याज्जाड्येन वा बद्धः—मूर्खता से बँधा है ।
धनेन कुलम्—धन से कुल है ।
बुद्ध्या मुक्तः—बुद्धि से मुक्त हुआ ।
धूमादग्निमान्—धुएँ से आग वाला ।
नास्ति घटोऽनुपलब्धेः—न मिलने से घट नहीं है ।
पृथग्रामेण रामाद् रामं वा—राम से भिन्न या राम को
छोड़ कर ।

स्तोकेन स्तोकाद्वा मुक्तः—थोड़े में छूट गया, सरलता से
छूट गया ।

स्तोकेन विषेण हतः—थोड़े से विष से मारा गया ।

ग्रामस्य दूरम् दूराद् दूरेण वा—गाँव से दूर ।

„ अन्तिम् अन्तिकात् अन्तिकेन वा—गाँव के समीप ।

दूरः पन्थाः—दूर मार्ग ।

सम्यग्ध (षष्ठी)

राज्ञः पुरुषः २-३-५०—राजा का आदमी ।

सतां गतम्—सज्जनों का जाना ।

सर्पिषो जानीते—वह घी के विषय में जानता है अर्थात् घी
का मूल्य, बनावट तथा गुण आदि सभी
विषयों को जानता है ।

मातुः स्मरति—माता को याद करता है ।

एधोदकस्योपस्कुरुते—इधन जल को अच्छा बनाता है
अर्थात् उसे शुद्ध या गर्म करता है ।

भजे शम्भोदचरणयोः—शम्भु के चरणों की पूजा करता हूँ ।

फलानां तृप्तः—फलों से संतुष्ट ।

अन्नस्य हेतोर्वसति २-३-२६—भोजन के लिए रहता है ।

केन हेतुना वसति २-३-२७—किस कारण रहता है ।

कस्य हेतुः

किं निमित्तं वसति

केन निमित्तेन

कस्मै निमित्ताय

किं कारणम्

को हेतुः

किं प्रयोजनम्

ज्ञानेन निमित्तेन हरिः सेव्यः—ज्ञान के लिए भगवान् की
सेवा करनी चाहिए ।

ज्ञानाय निमित्ताय

ग्रामस्य दक्षिणतः २-३-३०—गाँव के दक्षिण ।

पुरः, पुरस्तात्

उपरि, उपरिष्ठात्

दक्षिणेन ग्रामं ग्रामस्य वा २-३-३१—गाँव के दक्षिण ।

पृथमुत्तरेण

दूरं निकटं ग्रामस्य ग्रामाद्वा २-३-३४—गाँव से दूर या
गाँव के पास ।

सर्पिषो ज्ञानम् २-३-५१—(तेल को) घी समझना ।

सर्पिषोदयनम्, ईशनं वा २-३-५२—घी का देना ।
 मातुः स्मरणम् " माता की याद ।
 एषोदकस्योपस्करणम् २-३-५३—ईशन का जल में नवीन
 गुण उत्पन्न करना ।
 चौरस्य रोगस्य रुजा २-३-५४—रोग चोर को पीड़ित करता है ।
 रोगस्य चौरज्वरः चौरसन्तापो वा—रोग के कारण चोर को
 ज्वर या जलन ।
 सर्पिषो नाथनम् २-३-५५—घी का आशीस, घी पाने की
 प्रार्थना ।
 माणवकस्य नाथनम्—लड़के से प्रार्थना या विनय ।
 चौरस्योज्जासनम् २-३-५६—चोर को मारना, आहत
 करना ।
 चौरस्य निग्रहणम् प्रणिहणनम् निहननम् ग्रहणनम् वा—
 चोर को मारना ।
 चौरस्योन्नादनम्—चोर को मारना ।
 चौरस्य काथनम्— " "
 वृषलस्य पेषणम्—शूद्र को पीसना, मारना ।
 धानापेषणम्—भुने हुए जौ को पीसना ।
 शतस्य व्यवहरणं पणनं वा २-३-५७—सौ रुपयों का व्यवहार
 करना या वाजी लगाता ।
 शलाकाव्यवहारः " शलाका (पासों) का
 गिनना ।
 ब्राह्मणपणनम् " ब्राह्मणों की स्तुति या
 प्रशंसा ।
 शतस्य दीव्यति २-३-५८—बह सौ रुपये का व्यवहार करता
 या वाजी लगाता है ।
 ब्राह्मणं दीव्यति " ब्राह्मण की स्तुति करता है ।
 शतस्य शतं वा प्रतिदीव्यति २-३-५९—बह सौ रुपयों का
 व्यवहार करता या
 वाजी लगाता है ।
 अग्नये छागस्य हविषो वपाया मेदसः प्रेष्य अनुग्रहि वा—
 २-३-६१—हे मैत्रावरुण ! अग्नि को छाग हवि,
 चर्वी तथा मेदा दीजिये ।
 पञ्चकृत्वोऽहो भोजनम् २-३-६४—दिन में पाँच बार भोजन ।
 द्विरहो भोजनम् " दिन में दो बार भोजन ।
 द्विरहन्यध्ययनम् " दिन में दो बार पढ़ना ।

कृष्णस्य कृतिः २-३-६५—कृष्ण का कार्य ।
 जगतः कर्ता कृष्णः—कृष्ण संसार के कर्ता हैं ।
 नेताऽश्वस्य सुध्नस्य सुध्नं वा—घोड़े को सुध्न ले जाने
 वाला (है) ।
 कृतपूर्वी कटम् " जिसने पहिले चटाई बनाई
 हो ।
 आश्रयीं गवां दोहोऽगोपेन २-३-६६—गोपेतर से गाय दुहना
 आश्चर्य है ।
 भेदिका विमित्ता वा रुद्रस्य जगतः " रुद्र का जगत् को
 नष्ट करना अथवा करने
 की इच्छा ।
 विचित्रा जगतः कृतिर्हरिहरिणा वा " भगवान् द्वारा संसार
 की रचना आश्चर्य-
 जनक है ।
 शब्दानामनुशासनमाचार्येणाचार्यस्य वा—आचार्यद्वारा शब्दों
 का विवरण ।
 राज्ञां मतो बुद्धः पूजितो वा २-३-६७—राजाओं द्वारा पूजित
 आहत ।
 इदमेषामासितं शयितं गतं भुक्तं वा २-३-६८—यह उनका
 बैठना, सोना,
 जाना, खाना ।
 हरिं दिदृक्षुः अलङ्कारिण्युः वा २-३-६९—हरि को देखने या
 सुशोभित करने की
 इच्छा वाला ।
 कुर्वन् कुर्वाणो वा सृष्टिं हरिः " हरि सृष्टि को करते
 हुए ।
 दैत्यान् घातुको हरिः " दैत्यों को मारने
 वाले भगवान् ।
 लक्ष्म्याः कामुको हरिः " लक्ष्मी को चाहने
 वाले हरि ।
 जगत् सृष्ट्वा " संसार की रचना
 करके ।
 सुखं कर्तुम् " सुख करने के लिए ।
 विष्णुना हता दैत्याः " विष्णु द्वारा दैत्य
 मारे गये ।

दैत्यान् हतवान् विष्णुः २-३-६६—विष्णु ने दैत्यों को मारा ।

ईषत्करः प्रपञ्चो हरिणा ,, हरि के लिए संसार की रचना साधारण बात है ।

सोमं पवमानः ,, सोम को पवित्र करता हुआ ।

आत्मानं मण्डयमानः ,, अपना शृंगार करता हुआ ।

वेदमधीयन् ,, वेद को पढ़ता हुआ ।

कर्ता लोकान् ,, संसार का बनाने वाला ।

सुरस्य सुरं वा द्विषन् ,, सुर दैत्य का शत्रु ।

ब्राह्मणस्य कुर्वन् ,, ब्राह्मण का (काम) करने वाला ।

नरकस्य जिष्णुः ,, नरकामुर को जीतने वाला ।

सतः पालकोऽवतरति २-३-७०—सज्जनों की रक्षा करने वाला जन्म लेता है ।

व्रजं गामी ,, वह व्रज जाने वाला है ।

शतं दायी ,, वह सौ रुपया देने वाला है ।

मया मम वा सेव्यो हरिः २-३-७१—हरि मेरे सेव्य है ।

गेयो माणवकः साम्नाम् ,, लड़का सामगान करने वाला है ।

नेतव्या व्रजं गावः कृष्णेन ,, ,,—कृष्ण द्वारा गायें व्रज ले जाने योग्य हैं ।

तुल्यः सदृशः समो वा कृष्णस्य कृष्णेन वा २-३-७२—कृष्ण के समान ।

तुला उपमा वा कृष्णस्य नास्ति ,, कृष्ण की समता नहीं है ।

आयुष्यं चिरजीवितं कृष्णाय कृष्णस्य वा भूयात् २-३-७३—कृष्ण चिरजीवी हो ।

मद्रं मद्रं कुशलं निरामयं सुखं शम् अर्थः प्रयोजनं हितं पथ्यं वा भूयात्—कृष्ण का कल्याण, हर्ष, सीमाग्य, हित, सुख तथा उन्नति हो ।

अधिकरण (सप्तमी)

कटे आस्ते २-३-३६—चटाई पर बैठा है ।

स्थाल्यां पचति ,, पतीली में पकाता है ।

मोक्षे इच्छाऽस्ति ,, मोक्ष की इच्छा है ।

सर्वस्मिन्नात्माऽस्ति ,, सब में आत्मा है ।

वनस्य दूरे अन्तिके वा ,, जंगल के समीप या दूर ।

अधीती व्याकरणे ,, व्याकरण पढा हुआ ।

साधुः कृष्णो मातरि असाधुर्मातुले ,, कृष्ण माता के साथ सत् तथा मामा के साथ असद्व्यवहार करते हैं ।

चर्मणि द्वीपिनं हन्ति ,, चमड़े के लिए व्याघ्र मारता है ।

दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम् ,, दातों के लिए हाथी ,,

केशेषु चमरीं हन्ति ,, बालों के लिए चौरी गाय ,,

सीम्नि पुष्कलको हतः ,, अण्डकोष के लिए कस्तूरी मृग मारता है अथवा सीमा के लिए लड़ा गाड़ता है ।

वेतनेन धान्यं लुनाति ,, वह मजदूरी से धान काटता है ।

गोषु दुष्टमानासु गतः २-३-३७—वह गायों के दुष्ट जाने पर गया ।

सत्सु तरत्सु असन्त आसते ,, सज्जनों के पार होने पर दुर्जन बैठे रहते हैं ।

असत्सु तिष्ठत्सु सन्तस्तरन्ति ,, दुर्जनों के बैठ रहने पर सज्जन पार होते हैं ।

सत्सु तिष्ठत्सु सन्तस्तरन्ति ,, सज्जनों के बैठे रहने पर दुर्जन पार होते हैं ।

असत्सु तरत्सु सन्तस्तिष्ठन्ति ,, —दुर्जनों के पार होने पर सज्जन बैठे रहते हैं ।

रुदति रुदतो वा प्रावाजीत् २-३-३८—उसके रोने पर भी वह सन्यासी हो गया ।

गवां गोषु वा स्वामी २-३-३९—गायों का मालिक ।

गवां गोषु वा प्रसूतः ,, गायों के लिए उनकी सेवा करने के लिए पैदा हुआ ।

आयुक्तः कुशलो वा हरिपूजने हरिपूजनस्य वा २-३-४०—भगवान् की पूजा में लीन ।

आयुक्तो गौः शकटे २-३-४०—गाड़ी में कुछ जुता हुआ वैल ।	मूलेनावाहयेद् देवीम् २-३-४५—मूल में सरस्वती का आवाहन करे ।
नृणां नृषु वा ब्राह्मणः श्रेष्ठः २-३-४१—मनुष्यों में ब्राह्मण यथेष्ट है ।	श्रवणेन विसर्जयेत् ,, और श्रवण में विसर्जन करना चाहिए ।
गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा ,, गायों में काली गाय अधिक दूध वाली है ।	पुष्ये शनिः ,, पुष्य में शनि ।
गच्छतां गच्छत्सु वा धावन्छीघ्रः ,, चलने वालों में दौड़ने वाला क्षीघ्रगामी है ।	अद्य भुक्त्वायं द्वयहे द्वयहाद्वा भोक्ता २-३-७—यह आज खाकर दो दिन पर भोजन करता है ।
छात्राणां छात्रेषु वा मैत्रः पटुः ,, छात्रों में मैत्र कुशल है माथुराः पाटलिपुत्रकेभ्य आढ्यतराः २-३-४२—मथुरा निवासी पटना निवा- सियों से धनी है ।	इहस्थोऽयं क्रोशे क्रोशाद्वा लक्ष्यं विध्येत् ,, यह यहां बैठ कर कोश भर पर निशाना मार सकता है ।
मातरि साधुर्निपुणो वा २-३-४३—माता के प्रति सज्जन । निपुणो राज्ञो भृत्यः ,, राजा का नौकर चतुर है ।	लोके लोकाद्वा अधिको हरिः ,, हरि संसार में सबसे बड़े हैं । उपपराधे हरेर्गुणाः २-३-५—हरि के गुण दस अरब से भी अधिक हैं ।
साधुर्निपुणो वा मातरं प्रति पर्यनु वा २-३-४३—माता के प्रति सज्जन ।	अधिभुवि रामः ,, राम संसार के स्वामी हैं । अधिरामे भूः ,, राम संसार के स्वामी हैं ।
प्रसित उत्सुको हरिणा हरौ वा २-३-४४—हरि में आसन्द ।	यदत्र मामधिकरिष्यति १-४-९८—इसमें जो मुझको नियुक्त करेगा ।

इति कारकप्रकरणम् ।

समासप्रकरणम्

अथान्वयीभावः

पर्यभूषत् २-१-४—अच्छी तरह अलंकृत किया ।
 अनुव्यचलत् ,, —पीछे चला ।
 भूतपूर्वः २-४-७१—पहिले हुआ या रहा ।
 जीमूतस्येव ,, मेघ या इन्द्र के समान ।
 अपदिशम् २-१-६—दो दिशाओं के मध्य ।
 अधिहरि ,, हरि अथवा विष्णु में ।
 अधिगोपम् ,, गोपालक में ।
 उपकृष्णम् ,, कृष्ण के समीप ।
 सुमद्रम् ,, मद्रों का ऐश्वर्य ।
 दुर्धनम् ,, यवनों की बुरी दशा ।
 निर्मक्षिकम् ,, जहाँ मक्खियों का भी पूर्णतया
 अभाव हो, निर्गुण स्थान ।
 अतिहिमम् ,, शीतकाल का अन्त ।
 अतिनिद्रम् ,, शयन काल के पश्चात्, जागने का
 समय ।
 इतिहरि ,, हरि शब्द का उच्चारण, हरिकीर्तन
 (वैष्णवानां गृहे इतिहरि वा ते) ।
 अनुविष्णु ,, विष्णु के वाद ।
 अनुरूपम् ,, समुचित प्रकार से ।
 प्रत्यर्थम् ,, अनेक विषय में ।
 यथाशक्ति ,, शक्ति के अनुसार ।
 सहरि ,, हरि के समान ।
 अनुज्येष्ठम् ,, ज्येष्ठता (बड़ाई) के अनुसार ।
 सचक्रम् ६-३-८१—पहिया के साथ-साथ ।
 सहपूर्वाह्णम् ,, पूर्वाह्ण के साथ ।
 ससखि ,, मित्र के समान ।
 सक्षत्रम् ,, जैसा योद्धा को होना चाहिए उस प्रकार ।
 सतृणम् ,, तिनके को भी न छोड़कर ।
 साग्नि ,, अग्निप्रकरण तक ।
 यावच्छ्लोकम् २-१-८—जितने श्लोक हैं उतनी बार ।
 शाकप्रति २-१-९—बहुत थोड़ा शाक

शलाकापरि २-१-१०—शलाका को विपरीत फेंककर
 पराजय ।
 अक्षपरि ,, पासे को ,, ,,
 एकपरि ,, पासे को एक बार फेंक कर हारना ।
 अपविष्णु २-१-१२—विष्णु से दूर ।
 परिविष्णु ,, विष्णु को छोड़कर ।
 वहिर्वनम् ,, जंगल के बाहर ।
 प्राग्वनम् ,, जंगल के पूर्व ।
 आमुक्ति २-१-१३—जब तक मलिन हो तब तक, मुक्ति
 पर्यन्त ।
 आबालम् ,, बालकों तक ।
 अभ्यग्नि २-१-१४—अग्नि की ओर ।
 प्रत्यग्नि ,, ,,
 अनुवनमशनिर्गतः २-१-१५—जंगल के पास बिजली गई ।
 अनुगङ्गां वाराणसी २-१-१६—गङ्गा के किनारे-किनारे
 काशी स्थित है ।
 तिष्ठद्गु २-१-१७—जिस समय गाय खड़ी रहें, गाय दूहने
 का समय ।
 आयतीगवम् ,, जिस समय गाय आती हों, सायंकाल ।
 पारेगङ्गात् २-१-१८—गङ्गा के पार से ।
 गङ्गापारात् ,, ,,
 मध्येगङ्गात् ,, गंगा के मध्य में ।
 गङ्गामध्यात् ,, ,,
 द्विमुनि २-१-१९—जिस वंश के दो मुनि हों ।
 त्रिमुनि व्याकरणम् ,, जिस व्याकरण के कर्ता तीन
 मुनि हों ।
 एकविंशतिभारद्वाजम् ,, जिस वंश के इक्कीस भार-
 द्वाज हों ।
 सप्तगङ्गम् २-१-२०—सात गङ्गाओं का सङ्गम ।
 द्वियमुनम् ,, दो यमुनाओं का सङ्गम ।

उन्मत्तगङ्गम् २-१-२१—जिस देश में गंगा उमड़ कर बहती हों ।	उपचर्मम् ५-४-१०६—चमड़े के समीप ।
लोहितगङ्गम् ,, ,, ,, लाल हों ।	उपचर्म ,, ,,
उपशरदम् ५-४-१०७—शरद ऋतु के समीप ।	उपनदम् ५-४-११०—नदी के समीप ।
प्रतिषिपाशम् ,, व्यास नदी के समीप ।	उपनदि ,, ,,
उपजरसम् ,, वृद्धावस्था के समीप ।	उपपौर्णमासम् ,, पूर्णिमा के समीप ।
प्रत्यक्षम् ,, आँखों के सामने ।	उपपौर्णमासि ,, ,,
परोक्षम् ,, आँखों से ओझल ।	उपाग्रहायणम् ,, अग्रहन की पूर्णिमा के समीप ।
समक्षम् ,, आँखों के सामने ।	उपाग्रहायणि ,, ,, ,,
अन्वक्षम् ,, आँखों के पीछे ।	उपसमिधम् ५-४-१११—समिधि के समीप ।
उपराजम् ५-४-१०८—राजा के समीप ।	उपसमिध् ,, ,,
अध्यात्मम् ,, आत्मा के विषय में ।	उपगिरम् ५-४-११२—पर्वत के समीप ।
	उपगिरि ,, ,,

इत्यव्ययीभावः ।

अथ तत्पुरुषप्रकरणम्

पञ्चराजम् २-१-२२, २३—पाँच राजा ।	मूर्तसुखम् २-१-२९—क्षणिक सुख ।
कृष्णश्रितः २-१-२४—जिसने कृष्ण का सहारा (आश्रय) लिया हो ।	शंकुलाखण्डः २-१-३०—सरौते या चाकू से खण्ड किया हुआ ।
दुःखातीतः ,, दुःख को त्यागे हुए ।	धान्यार्थः ,, अन्न से अर्जित धन ।
कूपपतितः ,, कुँए में गिरा हुआ ।	अक्षणा काणः ,, एक आँख का काना ।
ग्रामगतः ,, गाँव गया हुआ ।	मासपूर्वः २-१-३१—एक महीना पहिले ।
तुहिनात्यस्तः ,, जिसने वर्ष को पार कर लिया है ।	मातृसदृशः ,, माता के समान ।
सुखप्राप्तः ,, सुख को प्राप्त करने वाला ।	पितृसमः ,, पिता के समान ।
दुःखापन्नः ,, दुःख पाने वाला ।	माषोर्ण कार्षापणम् ,, एक मासा कम कार्षापण (सोलह मासे का सिक्का ।)
ग्रामगामी ,, गाँव जाने वाला ।	माषविकलम् ,, एक मासा कम ।
ग्रामगामी ,, ,,	वाक्कलहः ,, मौखिक झगड़ा, वाद विवाद ।
अन्नं दुःखदुःखः ,, अन्न खाने वाला ।	आचारनिपुणः ,, आचार विचार में कुशल ।
स्वायंकृतिः २-१-२५—स्वयं कार्य किये हुए का पुत्र ।	गुडमिश्रः ,, गुड़ मिला हुआ ।
खट्वारुढो जादमः २-१-२६—सदा चारपाई पर पड़ा रहने वाला, मूर्ख, आलसी ।	आचारश्लक्ष्णः ,, आचार में शिष्ट ।
सामिकृतम् २-१-२७—आधा किया हुआ ।	गुडसमिश्राः धानाः ,, गुड़ में पागया हुआ भुना जौ ।
मासप्रमितः प्रतिपच्चन्द्रः २-१-२८—मास के प्रारम्भ को सूचित करने वाला, प्रतिपदा का चन्द्र ।	मासावरः ,, एक महीने से छोटा ।
	हरित्रातः २-१-३२—हरि से बचाया गया ।

नखमिन्नः २-९-३२—नाखून से काटा या तोड़ा गया ।

नखनिर्मिन्नः " " "

काकपेया नदी २-१-३४—भरी हुई नदी, इतनी भरी हुई
कि कीआ भी तट पर बैठकर
अपनी चौंच जल में डाल कर
जल पी सके ।

वातच्छेद्यं नृणम् " पतला तिनका, इतना पतला कि
हवा-से भी टूट जाय ।

दध्योदनः २-१-३४—दही मिलाकर स्वादिष्ट बनाया
गया भात ।

गुडधानाः २-१-३५—गुड़ में पागा हुआ भुना जौ ।

यूपदारुः २-१-३६—यज्ञ के स्तम्भ के लिए लकड़ी ।

द्विजार्थः सूयः " द्विज के लिए दाल ।

द्विजार्था यवागूः " द्विज के लिए लप्सी ।

द्विजार्थं पयः " द्विजके लिए दूध या जल ।

भूतबलिः " भूतों के लिए बलि ।

गोहितम् " गाय के लिए लाभदायक ।

गोसुखम् " " सुखदायक ।

गोरक्षितम् " " बचाया गया ।

चोरमयम् २-१-३७—चोर का डर ।

वृकमीतः " भेड़िये का डर ।

वृकमीतिः " " "

वृकमीः " " "

सुखापेतः २-१-३८—सुख से रहित ।

कल्पनापोढः " कल्पना से ले जाया गया ।

चक्रमुक्तः " पहिये से छूटा हुआ ।

स्वर्गपतितः " स्वर्ग से गिरा हुआ ।

तरङ्गापत्रस्तः " तरङ्गों से डरा हुआ ।

प्रासादात्पतितः " महल से गिरा हुआ ।

स्तोकान्मुक्तः २-१-३९—थोड़ी दूर से छूटा हुआ ।

अल्पान्मुक्तः " थोड़े से छूटा हुआ ।

अन्तिकादागतः " समीप से आया हुआ ।

अभ्याशादागतः " " "

दूरादागतः " दूर से आया हुआ ।

विप्रकृष्टादागतः " दूर से आया हुआ ।

कृच्छ्रादागतः " कठिनता से आया हुआ ।

राजपुरुषः २-८—राजा का आदमी ।

ब्राह्मणयाजकः २-२-९—ब्राह्मण का यज्ञ कराने वाला ।

देवपूजकः " देवता की पूजा करने वाला ।

सर्वश्वेतः " सबसे श्वेत ।

सर्वमहान् " सबसे बड़ा ।

इध्मवश्चनः " इध्म काटने वाली (कुल्हाड़ी) ।

नृणां द्विजः श्रेष्ठः २-२-१०—मनुष्यों में द्विज सर्वश्रेष्ठ ।

सर्पिषो ज्ञानम् " धी का ज्ञान ।

सतां षष्ठः २-२-११—सज्जनों में छठा ।

काकस्य काण्यम् " कौए की कालिमा ।

ब्राह्मणस्य शुक्लः " ब्राह्मण का श्वेत ।

अर्थगौरवम् " अर्थ का गौरव ।

बुद्धिमान्धम् " बुद्धि की मन्दता, जड़ता ।

फलानां सुहितः " फलों से तृप्त ।

द्विजस्य कुर्वन् कुर्वाणो वा " ब्राह्मण का नौकर ।

ब्राह्मणस्य कृत्वा " ब्राह्मण का करके ।

ब्राह्मणस्य कर्तव्यम् " ब्राह्मण का कर्तव्य ।

स्वकर्तव्यम् " अपना कर्तव्य ।

तक्षकस्य सर्पस्य " तक्षक नाम के सर्प का ।

राज्ञां भतो बुद्धः पूजितो वा २-२-१२—राजा का चाहा हुआ,
जाना हुआ अथवा
पूजित ।

इदमेषामासितं गतं मुक्तं वा २-२-१३—इनका यह बैठना,
जाना अथवा खाना ।

आश्चर्यं गवां दोहोऽगोपेन २-२-१४—गोपेतर से गायों का
दुहा जाना आश्चर्य है ।

अपां लप्टा २-२-१५—जल की सृष्टि (रचना) करने वाला ।

वज्रस्य मर्ता " वज्र धारण करने वाला ।

ओदनस्य पाचकः " भात पकाने वाला ।

इक्षुमक्षिका " ईख चूसना ।

भूमर्ता " पृथ्वी का पालन करने वाला ।

भवतः शायिका २-२-१७—आप का शयन, विराम या शान्ति ।

उद्दालकपुष्पमञ्जिका " पूर्वी भारत का एक
प्राचीन खेल जिसमें
लिसोड़ा के फूल तोड़े
जाते थे ।

दन्तलेखकः २-२-१७—दाँतों को रंगकर जीविकोपार्जन करने वाला ।

पूर्वकायः २-२-१—शरीर का अगला भाग ।

अपरकायः ,, शरीर का पिछला भाग ।

पूर्वनाभेः कायस्थ ,, नाभि के पहिले शरीर का भाग ।

पूर्वश्छात्राणाम् ,, छात्रों का प्रधान ।

मध्याह्नः ,, दोपहर ।

सायाह्नः ,, सायंकाल ।

मध्यरात्रः ,, आधी रात ।

अर्धपिप्पली २-२-२—पीपर का आधा ।

ग्रामार्धः ,, गाव का आधा ।

द्वितीयमिक्षा २-२-३—मिक्षा का दूसरा भाग ।

द्वितीयं मिक्षाया भिक्षुकस्य ,, भिक्षुक की भीख का दूसरा भाग ।

मिक्षाद्वितीयम् ,, दूसरी बार भीख मांगना ।

प्रासजीविकः २-२-४—जिसको जीविका मिल गई हो ।

जीविकाप्रासः ,, ,,

आपन्नजीविकः ,, ,,

जीविकापन्नः ,, ,,

प्राप्तजीविका ,, जिस स्त्री को भिक्षा मिल गई हो

आपन्नजीविका ,, ,,

मासजातः २-२-५—जिस व्यक्ति को जन्म लिए एक मास हो गया हो ।

द्वयहजातः ,, ,, दो दिन ।

द्वयहजातः ,, ,, ,,

अक्षशौण्डः २-१-४०—पासा के खेल में निपुण ।

ईश्वराधीनः ,, ईश्वर के अधीन ।

साङ्काश्यसिद्धः २-१-४१—सांकाश्य (संकसिया) में तैयार हुआ ।

आतपशुष्कः ,, धूप में सूखा हुआ ।

स्थालीपक्वः ,, पत्तीली में पका हुआ ।

चक्रबन्धः ,, पहिये में बँधा हुआ ।

तीर्थध्वाङ्क्षः २-१-४२—तीर्थ में कौए की तरह । जिस प्रकार कौआ तीर्थ में जाकर चिर काल तक वहाँ नहीं ठहरता इसी प्रकार जो विद्यार्थी गुरुकुल में चिरकाल

तक नहीं ठहरता उसको तीर्थध्वाङ्क्ष कहते हैं ।

मासे देयम् ऋणम् २-१-४३—महीने भर में लौटा दिया जाने वाला ऋण ।

पूर्वाह्णे गेयं साम ,, दोपहर के पहिले गाया जाने वाला साम ।

अरण्ये तिलकाः २-१-४४—जंगली तिल । ऐसा व्यक्ति या वस्तु जिससे किसी की आशा की पूर्ति न हो ।

वने कसेरुकाः २-१-४४—जो वस्तु अकस्मात् मिल जाय ।

पूर्वाह्नकृतम् २-१-४५—दोपहर के पहिले किया गया ।

अपररात्रकृतम् ,, रात्रि के अन्तिम भाग में किया गया ।

अह्निदृष्टम् ,, दिन में देखा गया ।

तत्रभुक्तम् २-१-४६ वहाँ खाया गया ।

अवतप्ते नकुलस्थितं त एतत् २-१-४७—जिस प्रकार तप्त प्रदेश में नेवले चिर काल तक नहीं ठहरते उसी प्रकार जो किसी कार्य को प्रारंभ कर उसको बिना पूरा किए इधर उधर दौड़ता है उस अव्यवस्थित अथवा चपल व्यक्ति के लिए यह कहा जाता है ।

पात्रेसंमिताः २-१-४८—भोजन पात्र रखने जाने पर सम्मिलित होने वाले, स्वार्थी ।

गेहेश्वरः ,, घर में बीर न कि युद्ध में ।

गेहेनर्दी ,, घर में गर्जने वाला न कि युद्ध में ।

परमाः पात्रे समिताः ,, बहुत बड़े स्वार्थी ।

स्नातानुजिप्सः २-१-४९—पहिले स्नान करके बाद में लेप लगाने वाला ।

एकनाथः ,, मुख्य स्वामी ।

सर्वयाज्ञिकाः ,, समस्त यज्ञ करने वाले ।

जरन्त्रैयायिकाः २-१-४९—बुद्धे नैयायिक (न्याय जानने वाले)

पुराणमीमांसकाः ,, पुराने मीमांसक (मीमांसा जानने वाले)

नवपाठकाः ,, नवीन पढ़ने वाले ।

केवलवैयाकरणाः ,, केवल व्याकरण शास्त्रके ज्ञाता ।

पूर्वपुकामशमी २-१-५०—पूर्वी भारत का इपुकामशमी गाँव ।

सप्तर्षयः ,, सात ऋषि ।

पौर्वशालः २-१-५१—पूर्व के कमरे में होने या रहने वाला ।

पूर्वशालाप्रियः ,, जिसको पूर्व का कमरा प्रिय हो ।

षाण्मातुरः ,, छः माताओं का पुत्र, कार्तिकेय ।

पञ्चगवधनः ५-४-९२—जिसका धन पाँच गाय है ।

पञ्चगवम् २-१-५२—पाँच गाय ।

वैयाकरणखसूचिः २-१-५३—किसी प्रश्न के पूछे जाने पर आकाश की ओर देखने वाला अज्ञ वैयाकरण ।

मीमांसकदुर्दुर्लभः ,, मीमांसा शास्त्र के मर्म को न जानकर व्यर्थ वाद करने वाला मूर्ख मीमांसक ।

पापनापितः २-१-५४—घृणित नाई ।

अणककुलालः ,, घृणित कुम्हार ।

घनश्यामः २-१-५५—बादल की तरह काले कृष्ण ।

पुरुषव्याघ्रः २-१-५६—व्याघ्र की तरह (बलवान्) मनुष्य ।

नुसोमः ,, चन्द्रमा के समान मनुष्य (दर्शनीय)

नीलोत्पलम् २-१-५७—नील कमल ।

कृष्णसर्पः ,, काला साँप ।

पूर्ववैयाकरणः २-१-५८—पहिले का (प्राचीन) वैयाकरण ।

अपराध्यापकः ,, नवीन वैयाकरण ।

पश्चार्धः ,, निचला आधा भाग ।

श्रेणिकृताः २-१-५९—जो पहिले क्रमबद्ध नहीं थे उनको क्रमबद्ध कर दिया गया ।

कृताकृतम् २-१-६०—किया और नहीं किया ।

शाकपार्थिवः ,, शाक का प्रेमी राजा ।

देवब्राह्मणः ,, देवपूजक ब्राह्मण ।

सद्वैद्यः २-१-६१—उत्तम, कुशल वैद्य ।

महावैयाकरणः ,, महान् वैयाकरण ।

उत्कृष्टो गौः ,, (कीचड़ से) निकाला गया बैल ।

गोवृन्दारकः २-१-६२—उत्तम बैल अथवा गाय ।

कतरकठः २-१-६३—दोनों में से कौन कठशाखा का है ?

कतमकलापः ,, इनमें से कौन कलाप शाखा है ।

किंराजा २-१-६४—निन्दनीय राजा ।

महानवमी १-२-४२—चैत्र या आश्विन मास की नवमी ।

कृष्णचतुर्दशी ६-३-४२—कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी ।

महाप्रिया ,, अत्यन्त प्यारी ।

पाचकस्त्री ,, पाचक की स्त्री ।

दत्तभार्या ,, दी गई भार्या ।

पञ्चमभार्या ,, पाँचवीं भार्या ।

सौधनभार्या ,, सृष्ट (वर्तमान सुध) नगर की भार्या ।

सुकेशभार्या ,, सुन्दर बाल वाली भार्या ।

ब्राह्मणभार्या ,, ब्राह्मणपत्नी ।

पाचकजातीया ,, पकाने वाली स्त्री ।

पाचकदेशीया ,,

इमपोटा २-१-६५—युवती हथिनी ।

इमयुवतिः ,, हथिनी ।

अग्निस्तोकः ,, थोड़ी आग ।

उदश्वित्कतिपयम् ,, थोड़ा मठा ।

गोगृष्टिः ,, पहली बार ब्याई हुई गाय ।

गोधेनुः ,, हाल की ब्याई हुई गाय ।

गोवशा ,, बन्ध्या गाय ।

गोवेहत् ,, गर्भ गिराने वाली गाय ।

गोवष्कयणी ,, जिस गाय का बछड़ा एक वर्ष का हो गया हो ।

कठप्रवक्ता ,, यजुर्वेद की कठशाखा का पारा-यण करने वाला ।

कठश्रोत्रियः ,, यजुर्वेद की कठशाखा का श्रोत्रिय ।

कठध्यापकः ,, यजुर्वेद की कठशाखा पढ़ाने वाला ।

कठभूतः ,, यजुर्वेद की कठशाखा का विज्ञ ब्राह्मण ।

गोमतल्लिका २-१-६६—उत्तम गाय ।

गोमर्चिका २-१-६६—उत्तम गाय ।	एहीडम् २-१-७२—एक यज्ञ जिसमें निरन्तर “आओ स्तुति करो” कहा जाता है ।
गोप्रकाण्डम् ” ”	एहिपचम् ” जहाँ “आओ, पकाओ” निरन्तर कहा जाय ।
गवोद्धः ” उत्तम बैल ।	उद्धरोत्सृजा ” जिस काम में निरन्तर “निकालो और दो” कहा जाय ।
गोतल्लजः ” ”	उद्धमविधमा ” जिस काम में “अनेक प्रकार से शंख बजाओ” कहा जाय ।
कुमारीमतल्लिका ” श्रेष्ठ कुमारी ।	जहिजोडः ” जो व्यक्ति “जोड नाम के व्यक्ति को मारो” बार बार कहे ।
युवखलतिः २-१-६७—युवक खल्वाट ।	जहिस्तम्बः ” जो व्यक्ति “स्तम्ब नाम के व्यक्ति को मारो” बार बार कहे ।
युवखलती ” युवती खल्वाट ।	ईषत्पिङ्गलः २-२-७—कुछ भूरा ।
युवजरती ” ऐसी युवती जो देखने में वृद्धा मालूम होती हो ।	ईषद्रक्तम् ” कुछ लाल ।
भोज्योष्णम् २-१-६८—गर्म भोज्य पदार्थ ।	अब्राह्मणः ६-३-७३—ब्राह्मणोत्तर ।
तुल्यश्वेतः ” समान सफेद रंग का ।	अनश्वः ६-३-७४—जो पशु घोड़ा न हो, अश्वेतर ।
सदृशश्वेतः ” ”	अनुपलब्धिः ” अप्राप्ति, एक प्रमाण (मीमांसा)
भोज्य ओदनः ” भोज्य भात ।	अविवादः ” विवाद का अभाव ।
कृष्णसारङ्गः २-१-६९—काला चीतल मृग ।	अविघ्नम् ” विघ्न का अभाव ।
कडारजैमिनिः २-२-३८—कठिन तप के कारण भूरे रंग के जैमिनि ।	अपचसि त्वं जालम् ” नीच, तू धुरी तरह पकाता है ।
जैमिनिकडारः ” कठिन तप के कारण भूरे रंग के जैमिनि ।	नैकधा ” एक बार नहीं ।
कुमारधमणा २-१-७०—ब्वारी संन्यासिनी भिक्षुकी ।	नभ्राद् ६-३-७५—जो चमकता न हो, काला (बादल) ।
गोगर्भिणी २-१-७०—गर्भिणी गाय ।	नपात् ” जो रचा न करता हो ।
मयूरव्यंसकः २-१-७२—चालाक मोर ।	नवेदाः ” जो न जानता हो ।
उच्चावचम् ” ऊँची नीची, इधर उधर की ।	नासत्याः ” अश्विनीकुमार, देवचिकित्सक ।
निश्चितप्रचितम् ” निश्चय की हुई ओर बटोरी हुई ।	नमुचिः ” जो न छोड़े, एक राक्षस जिसको इन्द्र ने मारा था ।
अकिंचनः ” जिसके पास कुछ भी न हो, निर्धन ।	नकुलम् ” नेवला, जिसका कुल न हो । प्राणि-शास्त्र का मत है कि नेवला चतुष्पदों की किसी जाति का प्राणी नहीं है ।
अकुतोभयः ” जिसको किसी का भय न हो, निर्भय ।	नखम् ” जिसमें आकाश (खाली स्थान) न हो, नाखून ।
राजान्तरम् ” दूसरा राजा ।	नपुंसकम् ” जो स्त्री या पुरुष कोई भी न हो ।
चिन्मात्रम् ” केवल चैतन्यरूप, ब्रह्म ।	नक्षत्रम् ” जो अपने स्थान से न चले । अश्विनी आदि २७ नक्षत्र ।
अङ्गीतपिबता ” जहाँ निरन्तर “खाओ पिओ” कहा जाय, भोज ।	
पचत्तभृज्जता ” जहाँ निरन्तर “पकाओ, भूनो, तलो” कहा जाय, रसोई घर ।	
खादतमोदता ” जहाँ निरन्तर “खाओ, भोज करो” कहा जाय, रसोईघर ।	

नक्रम् ६-३-७५—जो (जल से) बहुत दूर न जाता हो ।
 नाकः " जिसमें दुःख न हो, स्वर्ग ।
 नगाः ६-३-७७—जो चलते न हों, पर्वत, वृक्ष ।
 अगाः " " "
 अगो वृषलः शीतेन " वह शूद्र जो शीत के कारण न
 चलता हो ।
 कुपुरुषः २-२-१८—निन्दनीय, दुष्ट मनुष्य ।
 उरीकृत्य १-४-६१—स्वीकार करके ।
 शुक्लीकृत्य " सफेद करके ।
 पटपटाकृत्य " पट पट शब्द करके ।
 कारिकाकृत्य " काम करके ।
 खाट्कृत्य १-४-६२—खट् शब्द करके ।
 खाडिति कृत्वा निरष्टीवत् " उसने खट् शब्द करके थूक
 दिया ।
 सत्कृत्य १-४-६३—सत्कार करके ।
 असत्कृत्य " अनादर करके ।
 अलंकृत्य १-४-६४—सजा करके ।
 अलंकृत्यौदनं गतः " वह पर्याप्त भात खाकर गया ।
 अन्तर्हृत्य १-४-६५—मध्य में मार कर ।
 अन्तर्हत्वा गतः " मारे हुए को लेकर चला गया ।
 कणोहत्य पयः पिबति १-४-६६—वह पेट भर दूध पीता है ।
 मनोहत्य " पेट भर ।
 पुरस्कृत्य १-४-६७—आगे करके ।
 अस्तंगत्य १-४-६८—उस तरफ जाकर ।
 अच्छगत्य १-४-६९—सामने जाकर ।
 अच्छोद्य " सामने कहकर ।
 जलमच्छं गच्छति " निर्मल जल बहता है ।
 अदःकृत्य १-४-७०—यह करके ।
 अदःकृतम् " यह किया ।
 अदः कृत्वा " यह करके ।
 तिरोभूय १-४-७१—छिपकर ।
 तिरःकृत्य १-४-७२—अनादर करके ।
 तिरस्कृत्य " " "
 तिरः कृत्वा " " "

उपाजेकृत्य १-४-७३—सहारा अथवा सहायता देकर ।
 उपाजे कृत्वा " " "
 अन्वाजेकृत्य " " "
 अन्वाजे कृत्वा " " "
 साक्षात्कृत्य १-४-७४—प्रत्यक्ष करके ।
 साक्षात्कृत्वा " " "
 लवणंकृत्य " नमकीन करके ।
 लवणं कृत्वा " " "
 उरसिकृत्य १-४-७५—हृदय में अनुभव करके, छाती पर
 रख कर ।
 उरसि कृत्वा " हृदय में अनुभव करके, छाती
 पर रखकर ।
 मनसिकृत्य " मन में निश्चय करके ।
 मनसि कृत्वा " " "
 मध्येकृत्य १-४-७६—मध्य में करके ।
 मध्ये कृत्वा " " "
 पदेकृत्य " पैर पर करके—हस्तिनः पदे कृत्वा
 शिरः शेते ।
 पदे कृत्वा " पैर पर करके ।
 निवचनेकृत्य " मौन करके या मौन धारण करके ।
 निवचने कृत्वा " " "
 हस्तेकृत्य १-४-७७—बिवाह करके ।
 पाणौकृत्य " " "
 प्राध्वंकृत्य १-४-७८—गाड़ी में अच्छी तरह रस्सी बाँध
 कर ।
 प्राध्वं कृत्वा " प्रार्थना आदि से अनुकूल करके ।
 जीविकाकृत्य १-४-७९—जीविका की तरह करके ।
 उपनिषत्कृत्य " उपनिषद् की तरह करके ।
 जीविकां कृत्वा " जीविका करके ।
 प्राचार्यः " प्रतिष्ठित अथवा पहिले के
 आचार्य ।
 अतिमालः " सौन्दर्य अथवा सुगन्ध में माला
 को अतिक्रमण करनेवाला ।
 अवकोकिलः " कोकिला द्वारा घोषित
 (वसन्त) ।
 पर्यध्ययनः " अध्ययन से परिश्रान्त ।

निष्कौशाम्भिः १-४-७६—कौशाम्बी (कोसम) से बाहर गया हुआ ।	संख्याताहः ८-४-७—गिना हुआ दिन ।
वृक्षं प्रति ,, वृक्ष की ओर ।	द्वयहः ,, दो दिन में होने वाला कार्य ।
कुम्भकारः २-२-१९—कुम्हार ।	द्वयह्ना ,, ,, होने वाली क्रिया ।
व्याघ्री ,, बाधिन ।	द्वयहप्रियः ,, जिसे दो दिन में होने वाला कार्य प्रिय हो ।
अश्वक्रोती ,, घोड़े से खरीदी गयी ।	अत्यहः ,, एक दिन से अधिक ।
कच्छपी ,, मादा कछुआ ।	दीर्घाह्नी प्रावृट् ८-४-३९—बड़े दिन वाली वर्षा ऋतु
स्वादुद्वारम् २-२-२०—स्वादिष्ठ बनाकर ।	पराहः ,, दिन का अन्तिम भाग ।
कालः समयो वेला वा मोक्षुम् २-२-२०—भोजन करने का समय ।	द्वयहः ५-४-८९—दो दिन ।
अग्नेभोजम् २-२-२१—पहिले भोजन कर लेने पर ।	त्र्यहः ,, तीन दिन ।
अग्ने भुक्त्वा ,, ,,	पुण्याहम् ५-४-९०—पवित्र दिन, शुभ दिन ।
मूलकोपदंशम् २-२-२१—मूली काट-काटकर (भोजन करता है ।	सुदिनाहम् ,, अच्छा दिन ।
उच्चैःकारम् २-२-२२—जोर से, ऊँचे स्वर से ।	एकाहः ,, एक दिन ।
उच्चैःकृत्य ,, ऊँचा करके ।	संख्याताहः ,, गिना हुआ दिन ।
उच्चैः कृत्वा ,, ,,	अश्वोरसम् ५-४-९३—उत्तम जाति का घोड़ा ।
अलं कृत्वा ,, वन्द करके ।	उपानसम् ५-४-९४—गाड़ी में का स्थान ।
खलु कृत्वा ,, निश्चय करके ।	अमृताश्मः ,, चन्द्रकान्त मणि की तरह का एक पत्थर ।
द्वयङ्गुलं दारु ५-४-८६—दो अङ्गुल प्रमाण की लकड़ी ।	कालायसम् ,, लोहा ।
निरङ्गुलम् ,, अङ्गुल से बड़ी ।	मण्डूकसरसम् ,, मेढकों से भरा हुआ तालाव ।
अहोरात्रः ५-४-८७—रात और दिन ।	महानसम् ५-४-९४—रसोई घर, पाकशाला ।
सर्वरात्रः ,, समस्त रात ।	पिण्डाश्मः ,, लोहे का पत्थर ।
पूर्वरात्रः ,, रात का पहिला भाग ।	लोहितायसम् ,, ताँबा ।
संख्यातरात्रः ,, गिनी हुई रात ।	ग्रामतक्षः ५-४-९५—गाँव का बड़ई, जो किसानों के घर जा कर काम करता है ।
पुण्यरात्रः ,, शुभ या पवित्र रात ।	कौटक्षः ,, अपनी दूकान पर काम करने वाला बड़ई, स्वतन्त्र बड़ई ।
द्विरात्रम् ,, दो रात ।	अतिश्वो वराहः ५-४-९६—कुत्ते से तेज भागने वाला सूअर ।
अतिरात्रः ,, जिसने रात बिता दी हो ।	अतिश्वी सेना ,, कुत्ते से तेज चलने वाली सेना ।
परमराजः ५-४-९१—उत्तम राजा ।	आकर्षश्चः ५-४-९७—कुत्ते की तरह का पासा, कुत्ते की तरह पासे का बुरा दाव ।
अतिराजी ,, राजा से बड़कर या श्रेष्ठ रानी ।	वानरश्चवा ,, कुत्ते की तरह वन्दर ।
कृष्णसखः ,, कृष्ण का मित्र ।	उत्तरसक्थम् ५-४-९८—टाँग का ऊपरी भाग ।
द्वयहीनः ऋतुः ६-४-१४५—दो दिन में सम्पन्न होने वाला यज्ञ ।	मृगसक्थम् ,, हिरन की टाँग ।
मद्रराज्ञी ,, मद्रों की अथवा मद्रदेश की रानी ।	पूर्वसक्थम् ,, टाँग का निचला भाग ।
सर्वाहः ८-४-७—पूरा दिन ।	फलसक्थम् ,, पटरी के समान टाँग ।
पूर्वाहः ,, दिन का पहिला भाग ।	

द्विनाधरूप्यः ५-४-९९—दो नौकाओं से आया हुआ मनुष्य ।
 पञ्चनावप्रियः ,, जिसको पाँच नाव प्यारी हों ।
 द्विनावम् ,, दो नौकायें ।
 त्रिनावम् ,, तीन नौकाएँ ।
 पञ्चनौः ,, पाँच नौकाओं से खरीदा गया ।
 अर्धनावम् ,, आधी नौका ।
 द्विखारम् ५-४-१०१—दो खारी = ३२ द्रोण ।
 द्विखारि ,, ,,
 अर्धखारम् आधी खारी = ८ द्रोण ।
 अर्धखारी ,, ,,
 द्व्यञ्जलम् ५-४-१०२—दो अँजलि ।
 द्व्यञ्जलिः ,, ,,
 सुराष्ट्रब्रह्मः ५-४-१०४—सुराष्ट्र का ब्राह्मण ।
 कुब्रह्मः ५-४-१०५—बुरा ब्राह्मण, निन्दनीय ब्राह्मण ।
 कुब्रह्मा ,, ,,
 महाब्रह्मः ६-३-४६—प्रेतक्रिया करने वाला ब्राह्मण ।
 महाब्रह्मा ,, ,,
 महादेवः ,, श्रेष्ठ देव, शंकर ।
 महाजातीयः ,, बड़ों के समान पुरुष ।
 महस्सेवा ,, बड़ों की सेवा ।
 एकादश ,, ग्यारह ।
 महाजातीया ,, बड़ों के समान स्त्री ।
 महाघासः ,, बड़े आदमी की घास ।
 महाकरः ,, बड़े आदमी का कर = हाथ ।
 महाविशिष्टः ,, बहुत बड़ा ।
 अष्टाकपालः ६-३-४६—आठ सेकड़ों में तैयार किया गया पुरोडाश, हवि ।
 अष्टागवम् शकटम् ,, आठ बैल वाली गाड़ी ।
 अष्टगवम् ,, आठ गायें ।
 द्वादश ६-३-४७—बारह ।
 द्वाविंशतिः ,, बाईस ।
 अष्टादश ,, अठ्ठारह ।
 अष्टाविंशति ,, अट्ठाईस ।
 द्वित्राः ,, दो या तीन ।
 द्व्यशीतिः ,, बयासी ।
 त्रिंशत् ,, एक सौ तीन ।

त्रिसहस्रम् ६-३-४७—एक हजार तीन ।
 द्विंशत् ६-३-४७—एक सौ दो ।
 द्विसहस्रम् ,, एक हजार दो ।
 त्रयोदश ६-३-४८—तेरह ।
 त्रयोविंशति ,, तेईस ।
 त्रिदशाः ,, जिसके तीस हैं ।
 त्र्यशीतिः ,, ,, तिरासी ।
 द्विचत्वारिंशत् ६-३-४९—बयालीस ।
 द्वाचत्वारिंशत् ,, ,,
 अष्टचत्वारिंशत् ,, अड़तालीस ।
 अष्टाचत्वारिंशत् ,, ,,
 त्रिचत्वारिंशत् ,, तैंतालीस ।
 त्रयश्चत्वारिंशत् ,, ,,
 एकाविंशति ६-३-७६—उन्नीस ।
 एकाद्विंशतिः ,, ,,
 एकोनविंशतिः ,, ,,
 षोडन् ,, जिसके छः दाँत हो ।
 षोडश ,, सोलह ।
 षोढा ,, छः प्रकार का या छः प्रकार से ।
 पद्धा ,, ,,
 कुक्कुटमयूर्याविमे २-४-२६—ये मोरनी और मुर्गी हैं ।
 मयूरीकुक्कुटाविमौ ,, ये मोली और मोरन हैं ।
 अर्धपिप्पली ,, आधी पीपर ।
 पञ्चकपालः पुरोडाशः ,, पाँच सेकड़ों में पकाया गया पुरोडाश (हवि) ।
 अलङ्कुमारिः ,, कुमारी के लिए उपयुक्त वर ।
 अश्वबडवौ २-७-२७—घोड़ा और घोड़ी ।
 अश्वबडवान् ,, घोड़ा और घोड़ियों को ।
 अश्वबडवैः २-४-२७—घोड़ा और घोड़ियों से
 अहोरात्रः २-४-२९—दिन और रात ।
 पूर्वरात्रः ,, रात का पहिला भाग ।
 पूर्वाह्नः ,, दिन का पहिला भाग ।
 द्वयहः ,, दो दिन ।
 द्विरात्रम् ,, दो रातें ।
 त्रिरात्रम् ,, तीन रातें ।
 गणरात्रम् ,, बहुत सी रातें ।

अपथम् २-४-३०—	बुरा मार्ग ।
अपथो देशः	विना सड़क का देश ।
अपन्थाः	विना मार्ग का ।
अर्धर्चः २ ४-३१—	मन्त्र का आधा ।
अर्धर्चम्	" "
ध्वजः	झंडा ।
ध्वजम्	" "
ब्राह्मणाः पूज्याः १-२-५८—	ब्राह्मण पूजनीय हैं ।
ब्राह्मणः पूज्यः	" " है ।
वयं ब्रूमः १-२-५९—	हम कहते हैं ।
अहं ब्रवीमि	मैं कहता हूँ ।
आवां ब्रूवः	हम दोनों कहते हैं ।
पटुरहं ब्रवीमि	मैं पटु कहता हूँ ।
पूर्वफल्गुन्यौ १-२-६०—	पूर्वाफाल्गुनी और उत्तराफाल्गुनी ।
पूर्वाः फल्गुन्यः	" "
पूर्वे प्रोष्ठपदे	पूर्वभाद्रपद और उत्तरभाद्रपद ।
पूर्वाप्रोष्ठपदाः	" "
फल्गुन्यौ माणविके	पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न बालिकाएँ ।
तिष्यपुनर्वसू १-२-६३—	पुष्य और पुनर्वसु ।
विशाखानुराधाः	विशाखा और अनुराधा ।
तिष्यपुनर्वसवो माणवकाः	पुष्य तथा पुनर्वसु नाम के बालक ।
पञ्चगवम् २-४-१७—	पाँच गायें ।
दन्तोष्ठम्	दाँत और ओठ ।
पञ्चमूली	पाँच जड़ें ।
पञ्चषट्की	पाँच पलंग ।
पञ्चषट्कम्	" "
पञ्चतक्षी	पाँच बड़ई ।
पञ्चतक्षम्	" "
पञ्चपात्रम्	पाँच बर्तन ।
त्रिभुवनम् २-४-१७—	तीनों लोक ।
चतुर्युगम्	चारों युग ।
पुण्याहम्	शुभ दिन ।
सुदिनाहम्	सुन्दर दिन ।

त्रिपथम्	”	तीन मार्ग ।
विपथम्	”	बुरा मार्ग ।
सुपन्थाः	”	सुन्दर मार्ग ।
अतिपन्थाः	”	”
मृदु पचति	”	कोमल पकाता है ।
प्रातःकमनीयम्	”	प्रातःकाल के समान सुन्दर है ।
सौशमिकन्थम् २-४-२०—		सुशम नामक व्यक्ति के पुत्र की कथरी ।
वीरणकन्था	”	गाड़र घास की कथरी ।
दाक्षिकन्था	”	दक्ष के वंशज की कथरी ।
पाणिन्युपज्ञम् ग्रन्थः १-४-२१—		पाणिनि से बनाया गया या पहले प्रचलित किया ग्रन्थ ।
नन्दोपक्रमं द्रोणः	”	सर्व प्रथम नन्द के शासन काल में प्रचलित द्रोण ।
इक्षुच्छायम् २-४-२२—		ईख की छाया ।
इनसमम् २-४-२३—		राजा की सभा ।
ईश्वरसमम्	”	राजा की सभा ।
राजसभा	”	राजा की सभा ।
चन्द्रगुप्तसभा	”	चन्द्रगुप्त की सभा ।
रक्षःसमम्	”	राक्षसों की सभा ।
पिशाचसमम्	”	पिशाचों की सभा ।
स्त्रीसमम् २-४-२४—		स्त्रियों की सभा ।
धर्मसभा	”	धर्मशाला ।
ब्राह्मणसेनम् २-४-२५—		ब्राह्मणों की सेना ।
ब्राह्मणसेना	”	”
यवसुरम्	”	जौ की शराब ।
यवसुरा	”	”
कुड्यच्छायम्	”	दीवाल की छाया ।
कुड्यच्छाया	”	”
गोशालम्	”	गोशाला ।
गोशाला	”	”
श्वनिशम्	”	कल की रात (आने वाली) ।
श्वनिशा	”	”
दृढसेनो राजा	”	बलवती सेना वाला राजा ।
असेना	”	जो सेना न हो ।
परमसेना	”	उत्तम सेना ।

अथ बहुव्रीहिः

प्राप्तोदको ग्रामः २-२-२४—जिस गाँव में जल पहुँच गया हो ।	कल्याणपञ्चमीकः पक्षः ७-४-१४—जिस पक्ष की पञ्चमी शुभ हो ।
ऊढरथोऽनङ्वान् " जिस बैल ने रथ खींचा हो ।	बहुकर्तृकः " जिसके बहुत से कर्ता (बनाने, करनेवाले) हो ।
उपहृतपशु रुद्रः " जिस रुद्र को पशु दिया गया हो ।	कल्याणीप्रियः " जिसको गुणवती प्यारी हो ।
उद्भूतौदना स्थाली " जिस पत्तीली से भात निकाल गया हो ।	इदमक्तिः " जिसकी भक्ति दृढ़ या स्थिर हो ।
पीताम्बरो हरिः " जिसका वस्त्र पीला हो ।	बहुत्र ६-३-३५—बहुतों में ।
वीरपुरुषको ग्रामः " जिस गाँव में वीर मनुष्य हो ।	बहुतः " बहुतों से ।
वृष्टे देवे गतः " वर्षा हो जाने पर गया ।	दर्शनीयतरा " दो में अधिक सुन्दर ।
पञ्चभिर्भुक्तमस्य " पाँच के साथ इसका भोजन हुआ ।	दर्शनीयतमा " बहुतों में सबसे अधिक सुन्दर ।
प्रपर्णः " जिस वृक्ष के पत्ते गिर गये हो ।	पट्वितरा " दो में अधिक कुशल ।
अपुत्रः " जिसके पुत्र न हों ।	पट्वितमा " सबसे अधिक कुशल ।
अस्तिक्षीरा गौः " दूध देने वाली गाय ।	पटुचरी " जो पहिले कुशल रही हो ।
चित्रगुः ६-३-३४—चितकवरी गाय वाला मनुष्य ।	पटुजातीया " निपुण के समान ।
रूपवन्मार्गः " जिसकी भार्या रूपवती हो ।	दर्शनीयकल्पा " प्रायः दर्शनीय ।
चित्रजरतीगुः " चितकवरी और बुढ़ी गाय वाला ।	दर्शनीयदेशीया " " "
जरतीचित्रागुः " " " " " "	दर्शनीयरूपा " अत्यन्त दर्शनीय ।
दीर्घातन्वीजङ्घः " लम्बी और पतली जाँघ वाला ।	दर्शनीयपाशा " निन्दनीय सुन्दर ।
तन्वीदीर्घाजङ्घः " " " " " "	बहुधा " अनेक प्रकार की ।
चित्राजरद्गुः " चितकवरी बुढ़ी गाय वाला ।	वृक्तिः " प्रशंसनीय भेड़िया (मादा) ।
जरच्चित्रगुः " " " " " "	अजथ्या " वकरियों के लिए लाभदायक ।
चित्राजरद्गवोः " " " " " "	बहुशो देहि " बहुत सी स्त्रियों को दो ।
ग्रामणिदृष्टिः " " " " " "	अल्पशः " थोड़ी सी स्त्रियों को दो ।
गङ्गामार्गः " जिसकी भार्या गङ्गा हो ।	शुक्लत्वम् " श्वेत स्त्री की श्वेतता ।
वामोरुमार्गः " जिसकी भार्या की जाँघें सुन्दर हों ।	शुक्लता " " "
कल्याणीमाता " कल्याणी की माता ।	कर्त्रीत्वम् " कर्त्री का भाव ।
कल्याणीप्रधानः " जिसकी गुणवती स्त्री मुख्य हो ।	हास्तिकम् " हथिनियों का झुंड ।
कल्याणीपञ्चमा रात्रयः ५-४-११६—जिन रातों की पाँचवीं रात शुभ हो ।	रौहिण्यः " रोहिणी का पुत्र बुध, शनैश्चर ।
स्त्रीप्रमाणः " जिसका प्रमाण स्त्री हो ।	आग्नेयः " जिस स्थाली-पाक की अधि-ष्ठात्री देवता अग्नि की स्त्री हों ।
	सापत्नः " शत्रु स्त्री का पुत्र, सोत का पुत्र ।

सापत्यः	७-४-१४—समान स्वामी वाली स्त्री का पुत्र ।	सौघ्नीभार्यः	६-३-३९—जिसकी भार्या सृघ्न नगर की हो ।
भावत्काः	” आप (स्त्री) के छात्र ।	माथुरीयते	” जो स्त्री मथुरावासिनी स्त्री की तरह आचरण करती है ।
भवदीयाः	” ”	माथुरीमानिनी	” जो स्त्री अपने को मथुरावासिनी समझती है ।
सर्वभयः	” सबसे आया हुआ, अथवा सब कुछ ।	मध्यमभार्यः	” जिसकी भार्या मझली है ।
सर्वकाम्यति	” सब स्त्रियों को चाहता है ।	कायडलावभार्यः	” जिसकी भार्या डण्टल काटने वाली है ।
सर्वकभार्यः	” जिसकी पत्नी सविका नाम वाली हो ।	तावन्भार्यः	” जिसकी भार्या उतनी है ।
सर्वकप्रियः	” जिसे सविका प्रिय हो ।	काषायकन्थः	” जिसकी कथरी गेरुआ रंग की है ।
सर्विकाः	” सभी स्त्रियाँ ।	हैममुद्रिका	” जिसकी अँगूठी सुवर्ण की है ।
सर्वाः	” ”	वैयाकरणभार्यः	” जिसकी भार्या व्याकरण जानने वाली है ।
कुक्कुटायडम्	” मुर्गी का अण्डा ।	सौवश्चभार्यः	” जिसकी भार्या सुन्दर घोड़े वाले पुरुष की सन्तान है ।
सृगपदम्	” हरिणी का पैर ।	सुकेशीभार्यः	६-३-४०—जिसकी भार्या सुन्दर बालों वाली मानती है ।
सृगक्षीरम्	” हरिणी का दूध ।	पटुभार्यः	” जिसकी भार्या निपुण है ।
काकशावः	” मादा कौये का बच्चा ।	अकेशभार्यः	” जिसकी भार्या बिना बालों वाली है ।
पुतायते ६-३-३६	—जो मादा चीतल की तरह व्यवहार करता है ।	सुकेशमानिनी	” जो स्त्री अपने को अच्छे बालों वाली है ।
श्येतायते	” जो मादा वाज की तरह व्यवहार करता है ।	शूद्राभार्यः	६-३-४१—जिसकी भार्या शूद्रा है ।
दर्शनीयमानिनी	” जो स्त्री दूसरी स्त्री को सुन्दर समझती है ।	ब्राह्मणीभार्यः	” जिसकी भार्या ब्राह्मणी है ।
दर्शनीयमानी चैत्रः	६-३-३६—चैत्र सभी की दर्शनीय समझता है ।	उपदशाः	२-२-२५—दस के लगभग, नौ या ग्यारह ।
पाचिकभार्यः	६-३-२७—जिसकी भार्या रसोइयादारिन है ।	आसन्नविंशाः	६-४-१४२—बीस के लगभग उन्नीस या इक्कीस ।
रसिकभार्यः	” जिसकी भार्या रसिका है ।	अदूरत्रिंशाः	” तीस के लगभग उन्तीस या इक्तीस ।
मद्रिकामानिनी	” जो स्त्री अपने को मद्रिका समझती हो ।	अधिकचत्वारिंशाः	” एकतालीस ।
पाकभार्यः	” जिसकी भार्या युवती हो ।	द्वित्राः	” दो या तीन ।
दत्ताभार्यः	६-३-३८—जिसकी भार्या का नाम दत्ता हो ।	द्विदशाः	” बीस ।
दत्तामानिनी	” जो स्त्री अपने को दत्ता समझती हो ।	दक्षिणपूर्वा	२-२-२६—दक्षिण और पूर्व ।
पञ्चमीभार्यः	” जिसकी पत्नी पाँचवीं हो ।	केशकेशी	६-३-१३७—जिस युद्ध में एक दूसरे के बाजों को पकड़ कर लड़ें ।
पञ्चमीपाशा	” निन्दनीय पाँचवीं ।		

दण्डादण्डि ६-३-१३७—जिस युद्ध में लाठी का प्रहार करके लड़ें ।

मुष्टीमुष्टि ,, जिस युद्ध में घूसों का प्रहार करके लड़ें ।

बाहुबाहुवि ६-४-१४६—जिस युद्ध में भुजाओं का प्रहार करके लड़ें ।

हलेन मुसलेन ,, हल तथा मूसल से ।

सपुत्रः सहपुत्रो वा आगतः २-२-२८—पुत्र के साथ आया ।

सकर्मकः ,, कर्म के साथ ।

सलोमकः २-२-२८—रोएँ के साथ ।

सहपुत्राय सहामात्याय राज्ञे स्वस्ति ६-३-८३—पुत्र तथा मंत्री के साथ राज का कल्याण हो ।

सगवे ६-३-८२—गाय के साथ ।

सवत्साय ,, बछड़े के साथ ।

सहलाय ,, हल के साथ ।

उपदशाः ५-४-७३—दस के लगभग, नौ या ग्यारह ।

उपबहवः ,, लगभग बहुत ।

उपगणाः ,, ,,

निस्त्रिशानि वर्षाणि चैत्रस्य ,, चैत्र नामक व्यक्ति के तीस वर्ष से अधिक दिन हो गये ।

निस्त्रिशः खड्गः ,, तीस अङ्गुल से बड़ी (तलवार) ।

दीर्घसक्थः ५-४-११३—जिसकी जाँघें लम्बी हों ।

जलजाक्षी ,, जिस स्त्री की आँखें कमल के समान हों ।

दीर्घसक्थि शकटम् ,, जिस गाड़ी के फड़ लम्बे हों ।

स्थूलाक्षा वेणुयष्टिः ,, बड़ी आँखों वाली बाँस की छड़ी ।

पञ्चांगुलं दारु ५-४-११४—पाँच अँगुलियों वाली लकड़ी, पाँचा ।

द्वयांगुला यष्टिः ,, दो अँगुल की छड़ी ।

पञ्चांगुलिहस्तः ,, पाँच अँगुलियों वाला हाथ ।

द्विमूर्धः ५-४-११५—जिसके दो सिर हों ।

त्रिमूर्धः ,, जिसके तीन सिर हों ।

मृगनेत्राः रात्रयः ,, जिन रातों का नेता (अर्थात् व्यवस्था-पक, जिसकी स्थिति से रात्रि के समय का ज्ञान होता है, मृगशीर्ष-नामक नक्षत्र हो ।

पुष्यनेत्राः ,, जिन रातों का नेता पुष्य नक्षत्र हो ।

अन्तर्लोमः ५-४-११७—जिस वस्त्र के रोयें भीतर हों ।

बहिर्लोमः ,, जिस वस्त्र के रोयें बाहर हों ।

द्रुणसः ५-४-११८—जिनकी नाक वृक्ष के समान हो, किसी व्यक्ति का नाम ।

ऋगयनम् ,, मंत्रों का घर ।

स्थूलनासिकः ,, जिसकी नाक मोटी हो (नाम) ।

खुरणाः ,, जिसकी नाक खुर के समान चिपटी हो (नाम)

खरणाः ,, जिसकी नाक नुकीली हो (नाम) ।

खुरणसः ,, जिसकी नाक चिपटी हो (नाम) ।

खरणसः ,, जिसकी नाक नुकीली हो (नाम) ।

उन्नसः ५-४-११९—जिसकी नाक ऊँची हो ।

प्रणसः ८-४-२८—जिसकी नाक उत्तम हो ।

विग्रः ,, जिसकी नाक कट गयी हो ।

विख्यः ,, ,,

सुप्रातः ५-४-१२०—वह दिन या व्यक्ति जिसका प्रातः-काल शुभ हो ।

सुश्वः ,, आने वाला कल ,, ।

सुदिवः ,, वह व्यक्ति जिसका दिन शुभ हो ।

शारिकुक्षः ,, जिसका पेट शारि नाम के पक्षी अथवा पासे के समान गोल हो ।

चतुरश्रः ,, जिसके चार कोण हों, चतुष्कोण, चौकोर ।

पृणीपदः ,, जिसके पैर मृगी के समान हो ।

अजपदः ५-४-१२०—जिसके पैर बकरी की तरह हों ।

प्रोष्ठपदः ,, जिसके पैर गाय की तरह हो ।

अहलः ५-४-१२१—जिसके पास हल न हो ।

अहलिः ,, ,,

असक्थः ,, जिसकी टाँगें न हों ।

असक्थिः ,, ,,

- अप्रजा: ५-४-१२२—जिसकी कोई सन्तान न हो ।
 दुष्प्रजा: " जिसकी सन्तान बुरी हों ।
 सुप्रजा: " जिसकी सन्तान अच्छी हों ।
 अमेधा: " जो बुद्धिहीन हो ।
 दुर्मेधा: " जिसकी बुद्धि बुरी हो ।
 सुमेधा: " जिसकी बुद्धि अच्छी हो ।
 कल्याणधर्मा ५-२-१२४—जिसका धर्म कल्याणकारी हो ।
 परमस्वधर्मा " जिसको अपना धर्म श्रेष्ठ हो ।
 निवृत्तिधर्मा " संसार से अलग रहना जिसका धर्म हो ।
 अनुच्छित्तिधर्मा " जो नाश होने वाला न हो, अविनाशी ।
 सुजम्मा ५-४-१२५—जिसके दाँत सुन्दर हों, अथवा जिसका भोजन उत्तम हों ।
 हरितजम्मा " जिसका भोजन घास हो ।
 तृणजम्मा " " तृण हो ।
 सोमजम्मा " " सोम हो ।
 पतितजम्मा: " जिसके दाँत गिर गये हो ।
 दक्षिणेर्मा मृगः ५-४-१२६—जिस मृग की दाहिनी ओर धाव हो ।
 केशाकेशि ५-४-१२७—जिस युद्ध में एक दूसरे के वालों को पकड़कर लड़ा जाय ।
 मुसलामुसलि " जिस युद्ध में एक दूसरे पर मूसलों के प्रहार से लड़ा जाय ।
 द्विदण्डि प्रहरणम् ५-४-१२८—जिस युद्ध में दो लाठियों से प्रहार किया जाय ।
 द्विमुसलि " " दो मूसलों " ।
 उमाहस्ति " " दोनों हाथों " ।
 उमयाहस्ति " " " " " ।
 प्रजुः ५-४-१२९—जिसके घुटने फूले हुए हों ।
 संजुः " " सटे हुए हों ।
 ऊर्ध्वजुः ५-४-१३०— " ऊपर की ओर या ऊँचे हों ।
 ऊर्ध्वजानुः " " " " " ।
 शङ्खधन्वा ५-४-१३२—जिनका धनुष सींग का हो, विष्णु ।
 शतधन्वा ५-४-१३३—जिसके पास सौ धनुष हों, एक राजा का नाम ।
 शतधनुः " " " " " ।
 युवजानिः ५-४-१३४—जिसकी पत्नी युवती हो ।
 उद्गन्धिः ५-३-१३५—जिसकी गन्ध उत्कट हो ।
 पूतिगन्धिः " " जिसकी गन्ध बुरी हो ।
 सुरभिगन्धिः " " जिसकी गन्ध उत्तम हो ।
 सुगन्ध आपणिकः " जिस दूकानदार के पास उत्तम गन्ध हो ।
 सूपगन्धि भोजनम् ५-४-१३६—वह भोजन जिसमें दाल की गन्ध हो, थोड़ी दाल वाला भोजन ।
 घृतगन्धि " " थोड़ा घी वाला भोजन ।
 पद्मगन्धि ५-४-१३७—जिसमें कमल की सी गन्ध हो ।
 व्याघ्रपात् ५-४-१३८—जिसके पैर शेर के पैर की तरह हों ।
 हस्तिपादः " " जिसके पैर हाथी के पैर की तरह हों ।
 कुसूलपादः " " जिसके पैर कोठिली (अन्न रखने के लिए मिट्टी का बड़ा गोल पात्र) की तरह हों ।
 कुम्भपद्मी ५-४-१३९—जिस स्त्री के पैर घड़े की तरह हों ।
 कुम्भपादः " " जिस पुरुष " " ।
 द्विपात् ५-४-१४०—जिसके दो पैर हों, मनुष्य ।
 सुपात् " " जिसके सुन्दर पैर हों ।
 द्विदन् ५-४-१४१—जिस वच्चे को केवल दो दाँत निकले हों ।
 चतुर्दन् " " " " " ।
 षोडन् " " " चार " " ।
 सुदन् " " जिसके सब दाँत सुन्दर हों ।
 द्विदन्तः करी, सुदन्तः " " जिसके दो दाँत हों, हाथी, सुन्दर दाँत वाला नर ।
 अयोदती ५-४-१४३—जिसके दाँत लोहे की तरह हों, किसी स्त्री का नाम ।
 फालदती " " " फाल " " ।
 समदन्ती " " जिसके दाँत समान हों ।

श्यावदन् ५-४-१४४—जिसके दाँत काले हों ।

श्यावदन्तः " " " "

अरोकदन् " " " " जिसके दाँत चमकीले नहीं, काले हों ।

अरोकदन्तः " " " " " "

कुड्मलाग्रदन् ५-४-१४५—जिसके दाँत कली के अग्रभाग की तरह नुकीले हों ।

कुड्मलाग्रदन्तः " " " " " "

अजातककुत् ५-४-१४६—जिसका डिल न निकला हो, बछड़ा ।

पूर्णककुत् " " " " " " पूरा निकल गया हो, पूर्ण युवा बाल ।

त्रिककुत् ५-४-१४७—जिस पर्वत की तीन चोटियाँ हो ।

त्रिककुदः " " " " " " जिसकी तीन चोटियाँ हो ।

उत्ककुत् ५-४-१४८—जिसकी तालु ऊँची हो ।

विकाकुत् " " " " " " जिसकी तालु न हो ।

पूर्णकाकुत् ५-४-१४९—जिसकी तालु पूरी हो ।

पूर्णकाकुदः " " " " " "

सुहृन्मित्रम् ५-४-१५०—अच्छे हृदय वाला अर्थात् मित्र ।

दुहृदमित्रः " " " " " " बुरे हृदय वाला दुर्जन ।

सुहृदयः " " " " " " अच्छे हृदय वाला, सज्जन ।

दुहृदयः " " " " " " बुरे हृदय वाला, शत्रु ।

व्यूढोरस्कः ५-४-१५१—जिसका वक्षःस्थल चौड़ा हो ।

प्रियसर्पिष्कः " " " " " " जिसे धी प्रिय हो ।

द्विपुमान् " " " " " " जिसके पास दो पुरुष हो ।

द्विपुंस्कः " " " " " "

अनर्थकम् " " " " " " जिसका कुछ अर्थ (प्रयोजन न निरर्थक हो) ।

अपार्थम् ५-४-१५१—अर्थ रहित, जिसका कुछ अर्थ न हो ।

अपार्थकम् " " " " " "

बहुदण्डिका नगरी ५-४-१५२—जिस नगरी में बहुत से दण्डी (संन्यासी) हों ।

बहुवाग्मिका " " " " " " जिस (सभा में) बहुत से वक्ता हों ।

बहुदण्डी " " " " " " जिस (नगर) में बहुत से दण्डी हों ।

बहुदण्डिकी ग्रामः ५-४-१५२—जिस (गाँव में) बहुत से दण्डी हों ।

महायशस्कः ५-४-१५४—जिसका यश बहुत हो ।

महायशाः " " " " " "

व्याघ्रपात् " " " " " " जिसके पैर शेर के पैर की तरह हों ।

सुगन्धिः " " " " " " जिसकी गन्ध उत्तम हो ।

प्रियपथः " " " " " " जिसको मार्ग प्रिय हो ।

उपबहवः " " " " " " लगभग बहुत ।

उत्तरपूर्वा " " " " " " उत्तर तथा पूर्व दिशा का मध्य ।

सपुत्रः " " " " " " पुत्र के साथ ।

बहुमालाकः " " " " " " जिसके पास बहुत से मालाएँ हों ।

बहुमालकः " " " " " "

बहुमालः " " " " " "

विश्वदेवः ५-४-१५३—जिसके देवता विश्वदेव हों ।

बहुश्रेयान् ५-४-१५६—जिसके पास बहुत से उत्तम गुण हों ।

बहुश्रेयसिः " " " " " " जिसके पास बहुत सी उत्तम स्त्रियाँ हों ।

अतिश्रेयसिः " " " " " " गुणवती स्त्री से बढ़कर ।

प्रशस्तभ्राता ५-४-१५७—जिसका भाई प्रशंसनीय हो ।

मूर्खभ्रातृकः " " " " " " जिसका भाई मूर्ख हो ।

बहुनाडिः कायः ५-४-१५९—बहुत सी नाडियों वाला शरीर ।

बहुतन्त्रीर्ग्रीवा " " " " " " बहुत सी नसों वाली गर्दन ।

बहुनाडीकः स्तम्भः " " " " " " बहुत सी नालियों वाला स्तम्भ ।

बहुतन्त्रीका वीणा " " " " " " बहुत से तारों वाली वीणा ।

निष्प्रवाणिः पटः ५-४-१६०—जो वस्त्र करघे से निकाल लिया गया हो, नवीन वस्त्र ।

कण्ठेकालः २-२-३५—जिसका गला काला हो ।

चित्रगुः " " " " " " जिसकी गाय चितकबरी हो ।

सर्वश्वेतः " " " " " " जिसका सब सफेद हो, विलकुल सफेद ।

द्विशुक्लः " " " " " " जिसके दो सफेद हों ।

द्वयन्यः	२-२-३५—जिसके दो अन्य (दूसरे) हों ।
द्वित्राः	” दो या तीन ।
द्वादश	” बारह ।
गुडप्रियः	” जिसे गुड़ प्रिय हो ।
प्रियगुडः	” ” ”
गडुकण्ठः	” जिसके गले में घेघा (कण्ठमाल) हो ।
वहेगडुः	” जिसके कन्धे पर मांसपिण्ड हो ।
कृतकृत्यः	२-२-३६—जिसने कर्त्तव्य पूरा कर लिया हो, सफल ।
सारङ्गजग्धी	” जिस स्त्री ने मृग खाया हो ।
मासजाता	२-२-३६—जिसको पैदा हुए एक महीना हुआ हो ।

सुखजाता	२-२-३६—जिसका जन्म सुख से हुआ हो ।
कृतकटः	” जिसने चटाई बना ली हो ।
पीतोदकः	” जिसने जल पी लिया हो ।
आहिताग्निः	२-२-३७—जिसने हवन की अग्नि स्थापित कर ली हो ।
अग्न्याहितः	” ” ”
अस्युद्यतः	” जिसने तलवार उठा ली हो ।
दण्डपाणिः	” जिसके हाथ में लाठी हो ।
विवृतासिः	” जिसने म्यान से तलवार निकाल ली हो ।

इति बहुव्रीहिसमासप्रकरणम् ।

अथ द्वन्द्वः

धवखदिरौ	२-२-२९—धव और खैर ।
संज्ञापरिभाषम्	” संज्ञा और परिभाषा ।
होतृपोतृनेष्टोद्गातारः	” होता, पोता, नेष्टा और उदारता ।
होतापोतानेष्टोद्गातारः	” ” ”
राजदन्तः	२-२-३१—दाँतों में सर्वश्रेष्ठ ।
अर्थधर्मौ	” धर्म और अर्थ ।
धर्मार्थौ	” ” ”
दम्पती	” पति पत्नी ।
जम्पती	” ”
जायापती	” ”
हरिहरौ	२-२-३२—विष्णु और महादेव ।
हरिगुरुहराः	” विष्णु शिव तथा गुरु ।
हरिहरगुरवः	” ” ”
ईशकृष्णौ	२-२-३३ ” ”
अश्वरथेन्द्राः	” घोड़ा, रथ तथा इन्द्र ।
इन्द्राश्वरथाः	” ” ”
इन्द्राग्नी	” इन्द्र तथा अग्नि ।
शिवकेशवौ	२-२-३४—शिव तथा विष्णु ।

हेमन्तरिशिशिरवसन्ताः	२-२-३४—हेमन्त, शिशिर तथा वसन्त ।
कृत्तिकारोहिण्यौ	” कृत्तिका तथा रोहिणी ।
ग्रीष्मवसन्तौ	” गर्मी तथा वसन्त ।
कुशकाशम्	” कुश तथा काश ।
तापसपर्वतौ	” तपस्वी तथा पर्वत ।
ब्राह्मणक्षत्रियविद्यूदाः	” ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र ।
युधिष्ठिराञ्जनौ	” युधिष्ठिर तथा अर्जुन ।
पाणिपादम्	२-४-२—हाथ और पैर ।
मार्दङ्गिकपाणविकम्	” मृदङ्ग तथा नगाड़ा बजाने वाले ।
रथिकाश्वारोहम्	” रथसैनिक तथा अश्वसैनिक ।
उदगात्कठकालापम्	२-२-३—
प्रत्यष्ठात्कठकौथुमम्	” कठ तथा कौथुम चरण (शाखा) को पुनः प्रतिष्ठित किया ।
अर्काश्वमेधम्	२-४-४—अर्क तथा अश्वमेध नाम के यज्ञ ।

इषुचञ्चौ सामवेदे विहितौ २-४-४—सामवेद में प्रोक्त इषु
तथा वज्र नाम के यज्ञ ।
राजसूयवाजपेये ,, राजसूय तथा वाजपेय नाम के
यज्ञ ।
पदक्रमकम् २-४-५—वेदमन्त्रों के पढ़ने की विधि, पद
तथा क्रम के पढ़ने वाले ।
धानाशङ्कुलि २-४-६—भूने हुए जौ तथा पूरी ।
विट्शूद्राः ,, वैश्य तथा शूद्र ।
रूपरसौ ,, रूप तथा रस ।
गमनाकुञ्चने ,, जाना तथा सिकुड़ना ।
वदरामलकानि ,, वेर तथा आँवला ।
उद्वयेरावति १-४-७—उद्वय नद (उद) तथा रावी नदी ।
गङ्गाशोणम् ,, गङ्गा तथा सोन ।
कुरुकुरुक्षेत्रम् ,, कुरुदेश तथा कुरुक्षेत्र ।
गङ्गायमुने ,, गङ्गा और यमुना ।
मद्रकेकयाः ,, मद्र (स्यालकोट से रावी तक
का प्रदेश) तथा केकय ।
जाम्बवशालूकिन्यौ ,, जाम्बर नगर तथा शालूकिनी
गाँव ।
यूकालिक्षम् २-४-८—जूँ तथा लीख ।
अहिनकुलम् २-४-९—साँप तथा नेवाला ।
गोव्याघ्रम् ,, गाय तथा शेर ।
काकोलूकम् ,, कौआ और उल्लू ।
तक्षायस्कारम् २-४-१०—बढ़ई तथा लोहार ।
चाण्डालमृतपाः ,, चाण्डाल तथा डोम [मृतक
(दाहा) कर्म करने वाले] ।
गवाश्वम् २-४-११—गाय तथा घोड़े ।
दासीदासम् ,, नौकर तथा नौकरानी ।
प्लक्षन्यग्रोधम् २-४-१२—पाकड़ तथा बरगद ।
प्लक्षन्यग्रोधाः ,,
रुरुषतम् ,, काले मृग तथा चीतल ।
रुरुषताः ,,
कुशकाशम् ,, कुश तथा काश ।
कुशकाशाः ,,
व्रीहियवम् ,, धान तथा जौ ।
व्रीहियवाः ,,

दधिघृतम् २-४-१२—दही तथा घी ।
दधिघृते ,,
गोमहिषम् ,, बैल तथा भैंसे ।
गोमहिषाः ,,
शुकवकम् ,, तोता तथा वगुला ।
शुकवकाः ,,
अश्ववडवम् ,, घोड़े तथा घोड़ियाँ ।
अश्ववडवौ ,,
पूर्वापरम् ,, पहिला और अन्तिम ।
पूर्वापरे ,,
अधरोत्तरम् ,, निचला और ऊपरी ।
अधरोत्तरे ,,
वदरामलकम् ,, वेर तथा आँवला ।
वदरामलके ,,
रथिकाश्वारोहौ ,, रथी तथा घुड़सवार ।
प्लक्षन्यग्रोधौ ,, पाकड़ तथा बरगद ।
शीतोष्णम् २-४-१३—सदी तथा गर्मी ।
शीतोष्णे ,,
नन्दकपाञ्चजन्यौ ,, नन्दक (विष्णु की तलवार)
और पाञ्चजन्य (विष्णु का शंख) ।
दधिपयसी २-४-१४—दही और दूध ।
इध्मावर्हिषी ,, हवन की लकड़ी और दूध ।
ऋक्सामे ,, ऋग्वेद और सामवेद के मंत्र ।
वाङ्मनसे ,, वाणी और मन ।
दशदन्तोष्ठाः २-४-१५—दस, दाँत और ओठ ।
उपदशं दन्तोष्ठम् ,, लगभग दस दाँत और ओठ ।
उपदशा दन्तोष्ठाः ,,
होतापोतारौ ६-३-२५—होता और पोता । होता—याज्या
तथा अनुवाक मन्त्रों का पाठ करने
वाला, पोता—अपने वेद का
ऋत्विक् ।
मातापितरौ ,, माता और पिता ।
पितापुत्रौ ,, पिता और पुत्र ।
मित्रावरुणौ ६-३-२६—सूर्य और वरुण ।
अग्निवायू, वाय्वग्नि ,, अग्नि तथा वायु ।
ब्रह्मप्रजापती ,, ब्रह्मा और प्रजापति ।

अग्निष्टुत् ८-३-२७—एक यज्ञ ।
 अग्निष्टोमः " एक यज्ञ ।
 अग्नीषौमौ " अग्नि और चन्द्रमा ।
 अग्नीवरुणौ " अग्नि तथा वरुण ।
 अग्निमारुतं कर्म ६-३-२८—जिस कर्म के अधिष्ठातृदेवता
 " अग्नि तथा मरुत् हों ।
 अग्निवारुणम् " अग्नि तथा वरुण हों ।
 आग्नेन्द्रः " जिसके देवता अग्नि तथा इन्द्र
 हों ।
 आग्नावैष्णवम् " जिसके देवता अग्नि तथा विष्णु
 हों ।
 दधावाभूमि ६-३-२९—आकाश तथा पृथिवी ।
 दधावानामा " "
 दिवस्पृथिव्यौ ६-३-३०— "

दधावापृथिव्यौ ६-३-३०—आकाश तथा पृथिवी ।
 दधावाचिदस्मै पृथिवी "
 दिवस्पृथिव्योरातिम् "
 उषासासूर्यम् ६-३-३१—उषा (प्रातःकाल की अधिष्ठात्री
 देवी) तथा सूर्य ।
 मातरपितरौ " माता तथा पिता ।
 मातापितरौ " "
 वाक्त्वचम् ५-४-१०६—वाणी तथा त्वचा ।
 त्वक्स्त्रजम् " त्वचा और माला ।
 शमीदृषदम् " शमीपत्र और सिल ।
 वाक्त्विषम् " वाणी तथा कान्ति ।
 छत्रोपानहम् " छाता तथा जूता ।
 प्रावृट्शरदौ " वर्षा और शरद ।

इति बृहत्समासप्रकरणम्

अथैकशेषः

रामौ १-२-६४—दो राम ।
 रामाः " अनेक राम ।
 वक्रदण्डौ " दो टेढ़ी लाठी वाले ।
 कुटिलदण्डौ " "
 गार्ग्यौ १-२-६५—गर्ग का पोता और पर पोता ।
 गर्गगार्ग्यायणौ " गर्ग और उसका प्रपौत्र ।
 गर्गगार्ग्यौ " गर्ग और उसका पौत्र ।
 भागवित्तिभागवित्तिकौ " भागवित् का पौत्र और उसका
 निन्दित प्रपौत्र ।
 गार्ग्यवास्त्यायनौ " गर्ग का पौत्र और वत्स का
 युवा प्रपौत्र ।
 गर्गाः १-२-६६—गर्ग की कन्या और उसका युवा प्रपौत्र ।
 दाक्षी " दक्षकी कन्या और उसका युवा
 प्रपौत्र ।
 हंसौ १-२-६७—हंसी और हंस ।

भ्रातरौ १-२-६८—भाई और बहन ।
 पुत्रौ " पुत्र और पुत्री ।
 पितरौ १-२-७०—माता तथा पिता ।
 मातापितरौ " "
 श्वशुरौ १-२-७१—सास और ससुर ।
 श्वश्रूश्चशुरौ " "
 तौ १-२-७२—वह और देवदत्त ।
 यौ " वह और जो कोई ।
 तौ " "
 तौ " वह स्त्री और देवदत्त ।
 तानि " वह पुस्तक देवदत्त और यज्ञदत्त ।
 ते " वह पुस्तक और देवदत्त ।
 कुक्कुटमयूर्याविमौ १-२-७२—ये मुर्गा और मोरनी ।
 मयूरीकुक्कुटाविमौ " ये दो मरनी और मुर्गा ।
 गाव इमाः १-२-७३—ये बैल तथा गाय ।

रुख इमे १-२-७३—ये काले मृग ।
ब्राह्मणाः " ये ब्राह्मणी और ब्राह्मण ।
पुतौ गावौ " ये दो गाय और बैल ।

वत्सा इमे १-२-७३—ये बछिया और बछड़े ।
अश्वा इमे " ये घोड़ी और घोड़े ।

इत्येकशेषप्रकरणम्

अथ सर्वसमासशेषः

सूषप्रति—थोड़ी सी दाल ।
उन्मत्तगङ्गम्—जिस स्थान पर गङ्गा उमड़कर बहती हों ।
अतिमालः—(सौन्दर्य अथवा सुगन्ध में) माला से बढ़कर ।
द्वित्राः—दो या तीन ।
दन्तोष्ठम्—दाँत और ओठ ।
राजपुरुषः—राजा का नौकर ।
पर्यभूषत्—भूषित किया ।

कुम्भकारः—कुम्हार ।
कटप्रः—चटाई बनाने वाला ।
अजस्रम्—निरन्तर ।
पिवत्तखादता—जिस काम में निरन्तर 'खाओ, पीओ' कहा जाय ।
कुन्तविचक्षणा—'विचक्षण, काटो' " ।

इति सर्वसमासशेषप्रकरणम्

अथ समासान्तप्रकरणम्

अर्धर्चः ५-४-७४—मंत्र का आधा ।
अनुचः " जिसने ऋग्वेद न पढ़ा हो ।
बहुचः " जिसने ऋग्वेद का पूर्ण अध्ययन कर लिया हो ।
अनुक् साम " सामवेद जो ऋचाओं में विभक्त नहीं हैं ।
बहुक् सूक्तम् " वह सूक्त जिसमें बहुत सी ऋचाएँ हों ।
विष्णुपुरम् " विष्णु का नगर ।
विमलार्प सरः " निर्मल जल वाला तालाब ।
द्वीपम् ३ ३-९७—टापू ।
अन्तरीपम् " वह देश जिसके तीन ओर जल हो ।
प्रतीपम् " जल प्रवाह के विरुद्ध, प्रतिकूल ।
समीपम् " नजदीक ।

समापो देवयजनम् (भाष्ये समापम्)
५-७-७४—ऐसी यज्ञ भूमि जिसमें समान (बराबर) जल हो ।
स्वप् " जिसके पास उत्तम जल हो (पुरुष) ।
स्वपी " " (स्त्री) ।
प्रेपम् " गड़ही ।
परेपम् " जल निकलने का मार्ग ।
प्रापम् " गड़ही ।
परापम् ६-३-९७—जल निकलने का मार्ग ।
अनूपो देशः ६-३-९८—जिस देश में जल न हो (आधुनिक मध्य प्रदेश का निमाड़ जिला)
राजधुरा " राजा का शासन भार ।
अक्षधूः " गाड़ी के अग्रभाग में लगा हुआ जुआ ।
दृधूः, अक्षः " जिस गाड़ी में दृढ हरसाया फड़ लगा हो ।

सखिपथः ३-६-९८—मित्र की सड़क ।
 रम्यपथो देशः ॥ जिस देश की सड़क सुन्दर हो ।
 प्रतिसामम् ५-४-७५—रुवाई से ।
 अनुसामम् ॥ सौहार्द से ।
 अवसामम् ॥ असज्जनता से ।
 प्रतिलोमम् ॥ उलटी तरह से, प्राकृतिक नियम के विरुद्ध ।
 अनुलोमम् ॥ नियमानुकूल ।
 अवलोमम् ॥ नियमानुकूल ।
 कृष्णभूमः ॥ जिस महल की भूमि (फर्श) काली हो ।
 उदग्भूमः ॥ जिस महल की भूमि उत्तर की ओर झुकी हो ।
 पाण्डुभूमः ॥ जिस महल की भूमि सफेद हो ।
 द्विभूमः प्रासादः ॥ जिस महल में दो फर्श हो, दो मंजिल का महल ।
 पञ्चनदम् ॥ जिस देश में पाँच नदियाँ हों, पंजाब ।
 सप्तगोदावरम् ॥ जिस देश में सात गोदारी हों ।
 पद्मनामः ॥ जिसकी नामि में कमल हो, विष्णु ।
 गवाक्षः ५-४-७६—मकान में प्रकाश के लिए छिद्र, झरोखा, खिड़की ।
 अचतुरः ५-४-७७—जिसके पास चार न हों ।
 विश्वतुरः ॥ जिसके चार नष्ट हो गये या चले गये हों ।
 सुचतुरः ॥ जिसके चार सुन्दर हो ।
 त्रिचतुराः ॥ जिनके पास तीन या चार हों ।
 उपचतुराः ॥ चार के लगभग, तीन या पाँच ।
 स्त्रीपुंसौ ॥ स्त्री और पुरुष ।
 धेन्वनुडुहौ ॥ गाय और बैल ।
 ऋक्सामे ॥ ऋग्वेद और सामवेद ।
 वाङ्मनसे ॥ वाणी और मन ।
 अक्षिभ्रुवम् ॥ आँख और भौंह ।

दारगवम् ५-४-७७—भार्या और गायें ।
 उर्वच्छीवम् ॥ जाँघे तथा घुटने ।
 नक्तन्दिवम् ॥ रात दिन ।
 रात्रिन्दिवम् ॥ ॥
 अहर्दिवम् ॥ ॥
 सरजसम् ॥ धूल को भी न छोड़ कर ।
 निःश्रेयसम् ॥ परम कल्याण ।
 निःश्रेयान् पुरुषः ॥ परम कल्याण वाला पुरुष ।
 पुरुषायुषम् ॥ पुरुष की आयु तक ।
 त्र्यायुषम् ॥ तीन पुरुषों की आयु तक ।
 द्वयायुषम् ॥ दो पुरुषों की आयु तक ।
 ऋग्यजुषम् ॥ ऋग्वेद और यजुर्वेद ।
 जातोक्षः ॥ जवान बैल ।
 महोक्षः ॥ बड़ा बैल ।
 वृद्धोक्षः ॥ बुढ़ा बैल ।
 उपशुनम् ॥ कुत्ते के पास ।
 गोष्ठ्यवः ॥ गोशाला में बैठा हुआ कुत्ता, जो अकारण दूसरों को भौंकता है । जो व्यक्ति अकर्मण्य रहकर दूसरों की निन्दा किया करता है उसके लिए प्रयुक्त ।
 ब्रह्मवर्चसम् ५-४-७८—तप से उत्पन्न ब्राह्मण का तेज ।
 हस्तिवर्चसम् ॥ हाथी का बल ।
 पत्न्यवर्चसम् ॥ मांसाहारी का बल ।
 राजवर्चसम् ॥ राजा की शक्ति ।
 अवतमसम् ५-४-७९—साधारण अन्धकार ।
 संतमसम् ॥ अधिक अन्धकार ।
 अन्धतमसम् ॥ अन्धा बना देने वाला घोर अन्धकार ।
 श्वोवसीयम् ५-४-८०—भावी कल्याण ।
 श्वःश्रेयसं ते भूयात् ॥ कल तुम्हारा परम कल्याण हो ।
 अनुरहसम् ५-४-८१—एकान्त, निर्जन स्थान ।
 अवरहसम् ॥ कुछ अधिक एकान्त, निर्जन स्थान ।
 तसरहसम् ॥ बिलकुल एकान्त निर्जन स्थान ।
 प्रत्युरसम् ५-४-८२—वक्षःस्थल के विरुद्ध ।
 अनुगवम्, यानम् ५-४-८३—बढ़ सवारी जो लम्बाई में बैलों के बराबर हो ।

द्विस्तावा ५-४-८४—साधारण वेदी से दुगुनी बड़ी ।
 त्रिस्तावा ,, साधारण वेदी से तिगुनी बड़ी ।
 द्विस्तावती रज्जुः ,, दुगुनी बड़ी रस्सी ।
 त्रिस्तावती रज्जुः ,, तिगुनी बड़ी रस्सी ।
 प्रायो रथः ५-४-८५—जिस रथ में रस्सी आदि बंध चुकी
 हो और वह सवारी के लिए सड़क
 पर पहुँच गया हो ।
 सुराजा ५-४ ६९—उत्तम राजा ।
 अतिराजा ,, सर्वश्रेष्ठ राजा ।
 परमराजः ,, श्रेष्ठ राजा ।
 अतिगवः ,, जो बैल से भी बढ़कर हो, महामूर्ख ।
 सुसन्धः ,, सुन्दर जाँघ वाला व्यक्ति ।
 स्वच्छः ,, सुन्दर आँख वाला ।

किंराजा ५-४ ७०—बुरा राजा, कैसा राजा ?
 किंसखा ,, बुरा मित्र, कैसा मित्र ?
 किंगौः ,, बुरा बैल, कैसा बैल ?
 किंराजः ,, किसका राजा ।
 किंसखः ,, किसका मित्र ।
 किंगवः ५-४-७०—किसका बैल ।
 अराजा ५-४-७१—जो राजा न हो ।
 असखा ,, जो मित्र न हो ।
 अधुरं शकटम् ,, बिना जुए की गाड़ी ।
 अपथम् ५-४-७१—मार्ग का अभाव ।
 अपन्थाः ,, मार्ग का अभाव ।
 अपथो देशः ,, जिस देश में मार्ग न हो ।
 अपथं वर्तते ,, मार्ग का अभाव है ।

इति समासान्तप्रकरणम् ।

अथालुक्समासः

स्तोकान्मुक्तः ६ ३-२—थोड़े से छूटा हुआ ।
 निस्तोकः ,, थोड़े से निकला हुआ ।
 ब्राह्मणच्छंसी ऋत्विग्विशेषः—ब्राह्मणप्रोक्त शास्त्र का पारायण
 करने वाला ऋत्विग्विशेष ।
 तमसाकृतम् ६-३-३—शक्ति से किया गया ।
 सहसाकृतम् ,, एकाएक किया गया ।
 अम्मसाकृतम् ,, शक्ति से किया गया ।
 ओजसाकृतम् ,, शक्ति से किया गया ।
 अञ्जसाकृतम् ,, ठीक प्रकार से किया गया ।
 पुंसाजुजः ,, जिसका बड़ा भाई हो वह व्यक्ति ।
 जनुषान्धः ,, जन्म से अन्धा ।
 जात्यन्धः ,, जन्म से अन्धा ।
 मनसागुप्तः ६-३-४—किसी व्यक्ति का नाम ।
 मनसाज्ञायी ६-३-५—मन से जानने वाला ।
 आत्मनापञ्चमः ६-३-६—अपने को लेकर पाँचवाँ ।
 जनार्दनस्त्वात्मचतुर्थ एव ,, जनार्दन तो अपने को लेकर
 चौथे ही है ।
 आत्मकृतम् ,, अपने से किया गया ।

आत्मेनपदम् ६ ३-७—व्याकरण का पारिभाषिक शब्द
 रूप का बोधक । क्रिया के एक
 रूप का बोधक ।
 आत्मेनभाषा ,, ,, ,,
 परस्मैपदम् ,, ,, ,,
 परस्मैभाषा ,, ,, ,,
 त्वचिसारः ६-३-९—जिसकी त्वचा दृढ़ हो, बाँस ।
 गविष्ठिरः ८-३-९५—आकाश में स्थिर रहने वाला, अत्रि-
 कुल के एक ऋषि का नाम ।
 युधिष्ठिरः ,, युद्ध में स्थिर रहने वाला, पाण्डवों में
 सबसे बड़े भाई धर्मराज का नाम ।
 अरण्येतिलकाः ,, जंगली तिल, जिनमें तेल नहीं
 निकलता । कोई निराशाजनक वस्तु ।
 हृदिस्पृक् ,, हृदय स्पर्श करने वाला, प्रभा-
 वोत्पादक ।
 दिविस्पृक् ,, आकाश छूने वाला, गगनचुम्बी ।
 मुकुटेकार्षापणम् ६-३-१०—प्राच्य भारत में प्रति व्यक्ति
 लगने वाला एक कर ।

- दृषदिमाषकः ६-३-१०—प्राच्य भारत में प्रति चक्की पर लगने वाला एक कर ।
- अभ्यर्हितपशुः ,, प्राच्य भारत में दक्षिणा में आचार्य को दिया जाने वाला पशु ।
- यूथपशुः ,, प्राच्य भारत के बारह पशु समूह पर लगने वाला कर ।
- अविकटोरणः ,, प्राच्य भारत में भेड़ों के झुण्ड पर लगने वाला कर ।
- नदीदोहः ,, प्राच्य भारत में नदी पार करने के समय उस समय का दुहाव कर ।
- मध्यगुरुः ६-३-११—मध्य में गुरु ।
- अन्तेगुरुः ,, अन्त में गुरु ।
- घटेकालः ६-३-१२—जिसके गले में काला वर्ण हो ।
- वरसिलोमा ,, जिसकी छाती पर बल हो ।
- मूर्धशिल्पः ,, जिसके सिर पर चोटी हो ।
- मस्तकशिल्पः ,, जिसके मस्तक पर चोटी हो ।
- मुखकामः ,, जिसके मुख में काम हो ।
- हस्तेबन्धः, हस्तबन्धः ,, जिसके हाथ में बन्धन हो (हथकड़ी) हो ।
- गुप्तिबन्धः ,, जो कारागार में पड़ा हो ।
- स्तम्बेरमः, स्तम्बरमः ६-३-१४—जो घास की ढेर में सुख माने, हाथी ।
- कर्णजपः, कर्णजपः ,, कान में बात करने वाला, पिशुन, चुगलखोर ।
- कुरुचरः ,, कुरु (हिमालय के दक्षिण का प्रदेश) देश में भ्रमण करने वाला ।
- प्रावृषिजः ६-३-१५—वर्षा में उत्पन्न होने वाला, तूफान ।
- शरदिजः ,, शरद ऋतु में उत्पन्न होने वाला ।
- कालेजः ,, उपयुक्त समय में उत्पन्न होने वाला ।
- दिविजः ,, आकाश या स्वर्ग में उत्पन्न होने वाला ।
- वर्षेजः ६-३-१६—वर्ष में उत्पन्न होने वाला ।
- क्षरेजः, क्षरजः ,, अर्क खींचने से उत्पन्न, मेघ से उत्पन्न होने वाला ।
- शरेजः, शरजः ६-३-१६—सरकण्डे में उत्पन्न होने वाला, कार्तिकेय ।
- वरेजः, वरजः ,, वरदान से उत्पन्न होने वाला ।
- पूर्वाह्णितरे, पूर्वाह्णितरे ६-३-१३—अधिक पूर्वाह्ण में ।
- पूर्वाह्णितमे, पूर्वाह्णितमे ,, बिलकुल पूर्वाह्ण में
- पूर्वाह्णिकाले, पूर्वाह्णिकाले ,, पूर्वाह्ण के समय ।
- पूर्वाह्णितने, पूर्वाह्णितने ,, ,, ,,
- खेशयः, खशयः ६-३-१८—आकाश में सोने वाला ।
- ग्रामेवासः, ग्रामवासः ,, गाँव में रहना ।
- ग्रामेवासी, ग्रामवासी ,, गाँव में रहने वाला ।
- भूमिशयः ,, भूमि पर सोना ।
- अप्सुयोनिः ,, जिसकी उत्पत्ति जल में हो ।
- अप्सव्यः ,, जल में होने वाला ।
- स्थण्डिलशायी ६-३-१९—तंगी भूमि या यज्ञ भूमि पर सोने वाला तपस्वी ।
- साङ्काश्यसिद्धः ,, सांकाश्य (संकसिया) में तैयार हुआ ।
- चक्रवद्धः ,, पहिये में बधा हुआ ।
- समस्थः ६-३-२०—समतल भूमि पर स्थिर रहने वाला ।
- कृष्णोऽस्याखरेष्ठः ,,
- चौरस्य कुलम् ६-३-२१—चोर का कुल (निन्दा)
- ब्राह्मणकुलम् ,, ब्राह्मण का कुल ।
- वाचोयुक्तिः ,, वाणी की युक्ति ।
- दिशोदण्डः ,, आकाश में तारों की दण्डाकार स्थिति ।
- पश्यतोहरः ,, डाकू, जो स्वामी के सामने सम्पत्ति चुराले, जैसे स्वर्णकार ।
- आमुष्यायणः ,, अमुक का पुत्र ।
- आमुष्यपुत्रिका ,, अमुक के पुत्र का भाव ।
- आमुष्यकुलिका ,, अमुक के कुल का भाव ।
- देवानांप्रियः ,, अज्ञानी देवों को प्रिय होता है, मूर्ख । आत्मज्ञानी देवों को प्रिय नहीं होता, क्योंकि वह यज्ञादि नहीं करता,
- देवप्रियः ,, जो देवों को प्रिय हो ।

शुनःशेषः ६-३-२१—एक ऋषि का नाम ।

शुनःपुच्छः " "

शुनोलाङ्गूलः " "

दिबोदासः " काशी के एक प्राचीन राजा का नाम ।

दास्याःपुत्रः ६-३-२२—दासी का लड़का, गाली, जो दासी का पुत्र न हो ।

दासीपुत्रः " दासी का पुत्र ।

ब्राह्मणीपुत्रः " ब्राह्मणी का पुत्र ।

होतुरन्तेवासी ६-३-२३—होता का छात्र ।

होतुःपुत्रः " होता का पुत्र ।

पितुरन्तेवासी " पिता का छात्र ।

पितुःपुत्रः " पिता का पुत्र ।

होतृधनम् " होता का धन ।

मातुःस्वसा ६-३-२४—माता की बहिन, मौसी ।

मातुःप्वसा ८-३-८५ " "

पितुःस्वसा, पितुःप्वसा " पिता की बहिन, बूया ।

मातृप्वसा ८-३-८४—माता की बहिन, मौसी ।

पितृप्वसा " पिता की बहिन, बूया ।

इत्यलुक्समासप्रकरणम् ।

अथ समासाश्रयविधयः

ब्राह्मणितरा ६-३-४३—श्रेष्ठ ब्राह्मणी ।

ब्राह्मणित्तमा " सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मणी ।

ब्राह्मणिरूपा " प्रशंसनीय ब्राह्मणी ।

ब्राह्मणिकल्पा " ब्राह्मणी के सदृश ।

ब्राह्मणिचेली " निन्दिता ब्राह्मणी ।

ब्राह्मणिब्रुवा " निन्दिता ब्राह्मणी ।

ब्राह्मणिगोत्रा " निन्दिता ब्राह्मणी ।

दत्तातरा " अधिक दी हुई ।

आमलकीतरा " उत्तम आँवले का वृक्ष ।

कुवलीतरा " उत्तम उन्नाव का वृक्ष ।

ब्रह्मबन्धूतरा ६-३-४४—केवल नाम मात्र की ब्राह्मणी ।

ब्रह्मबन्धुतरा " श्रेष्ठ स्त्री ।

स्त्रितरा " " "

स्त्रीतरा " " "

लक्ष्मीतरा " श्रेष्ठ लक्ष्मी ।

विदुषितरा ६-३-४—अधिक विदुषी स्त्री ।

विद्वत्तरा " " "

हृल्लेखः ६-३-५०—हृदय की पीड़ा, अशान्ति ।

हृथम् " प्रिय, मनोहर ।

हार्दम् " हृदय का, हृदय सम्बन्धी ।

हृल्लासः " हृदय की धड़कन ।

हृदयल्लेखः " हृदय की पीड़ा, अशान्ति ।

हृच्छोकः ६-३-५१—हृदय का शोक ।

हृदयशोकः " " "

सौहार्थम् " सज्जनता ।

सौहृदय्यम् " " "

हृद्रोगः " हृदय का रोग ।

हृदयरोगः " " "

पदाजिः ६-३-५१—पैदल चलने वाला ।

पदातिः " " "

पदगः " " "

पदोपहतः " पैरों से मारा गया ।

पद्याः ६-३-५३—पैरों में चुभने वाली ।

पाथम् " पैरों के लिए जल ।

पदिकः " पैदल चलने वाला ।

पद्मिम् ६-३-५४ पैर की सर्दी ।

पत्काशी " पैर घसीटने वाला, कष्ट से चलने वाला ।

पद्मतिः " पैरों से घिसा या बनाया हुआ मार्ग ।

गायत्रीं पच्छः शंसति ६-३-५५—एक एक पाद गायत्री पढ़ता है ।

पादशः कार्षापणं ददाति " चौथाई चौथाई कार्षापण देता है ।

पद्घोषः ६-३-५६—पैरों का शब्द ।

पादघोषः " "

पन्मिश्रः " पैरों से मिलाया गया ।

पादमिश्रः " "

पच्छब्दः " पैरों का शब्द ।

पादशब्दः " "

पलिष्कः " स्वर्णमुद्रा (अशर्फी) का चतुर्थांश ।

पादनिष्कः " "

उद्मेघः ६-३-११—जल से भरा हुआ (विशेष प्रकार का) मेघ, व्यक्ति विशेष का नाम ।

क्षीरोदः " क्षीर सागर ।

उदपेषं पिनष्टि ६-३-५८—जल डाल कर पोसता है ।

उदवासः " जल में रहना ।

उदवाहनः " जल ढोने वाला ।

उदधिर्घटः " जिसमें जल रक्खा जाय, घड़ा ।

उदकुम्भः ६-३-५९ जल का घड़ा ।

उदककुम्भः " "

उदकस्थाली " जल की पतीली ।

उदकपर्वः " हिमालय की एक चोटी का नाम ।

उदमन्थः ६-३-६०—जल मिला हुआ सत्तू ।

उदकमन्थः " "

उदौदनः " जल में पकाया गया भात ।

उदकौदनः " "

ग्रामणिपुत्रः ६-३-६१—गाँव के मुखिया का पुत्र ।

ग्रामणीपुत्रः " "

रमापतिः " लक्ष्मीपति, विष्णु ।

गौरीपतिः " पार्वती के पति शिव ।

श्रीमदः " लक्ष्मी का गर्व ।

भ्रूमङ्गः " भौंहों का सिकुड़ना ।

शुक्लीभावः " जो सफेद न हो उसका सफेद होना ।

भ्रुकुंसः " भौंहों से बात करने वाला अथवा भौंहों से जिसकी शोभा हो, नट ।

भ्रुकुटिः " भौंहों का टेढ़ापन ।

भ्रूकुंसः " नट ।

भ्रूकुटिः " भौंहों का टेढ़ापन ।

भ्रुकुंसः ६-३-६१—नट ।

भ्रुकुटिः " भौंहों का टेढ़ापन ।

एकरूप्यम् ६-३-६२—एक स्त्री से आया या मिला हुआ ।

एकक्षीरम् " एक स्त्री का दूध ।

रेवतिपुत्रः ६-३-६३—रेवती का पुत्र, बलराम ।

अजक्षीरम् " बकरी का दूध ।

अजत्वम् ७-३-७४—बकरी का स्वभाव ।

अजात्वम् ६-३-६४—बकरी का स्वभाव ।

रोहिणित्वम् " रोहिणी का स्वभाव ।

रोहिणीत्वम् " "

कौमुदगन्धीपुत्रः ६-१-१३—कौमुदगन्ध्या नाम की स्त्री का पुत्र ।

कौमुदगन्धीपतिः " पति ।

परमकारीषगन्धीपुत्रः " परमकारीषगन्ध्या नाम की स्त्री का पुत्र ।

अतिकारीषगन्ध्यापुत्रः " अति " पुत्र ।

कारीषगन्धीबन्धुः ६-१-१४—जिसका बन्धु कारीषगन्ध्या हो ।

कारीषगन्ध्याबन्धुः " कारीषगन्ध्या का बन्धु ।

कारीषगन्धीमातः " जिसकी माता कारीषगन्ध्या हो ।

कारीषगन्ध्यामातः " "

कारीषगन्धीमातृकः " "

कारीषगन्ध्यामातृकः " "

कारीषगन्धीमाता " "

कारीषगन्ध्यामाता " कारीष गन्ध्या की माता ।

इष्टकचितम् ६-३-६५ ईंटों से चुना गया ।

पक्वेष्टकचितम् " पकी ईंटों से चुना गया ।

इषीकतूलम् " सीकों का गुच्छा ।

मुञ्जेषीकतूलम् " मूँज की सीकों का गुच्छा ।

मालभारी " माला पहिने या लिये हुए ।

उत्पलमालभारी " कलल के फूलों की माला पहिने या लिए हुए ।

सत्यङ्कारः ६-३-७०—शपथ ग्रहण करना ।

अगदङ्कारः " नीरोग करने वाला वैद्य ।

अस्तुङ्कारः " समर्थ ।

धेनुम्भ्या ६-३-७०—जो गाय बच्चा देने वाली हो ।
 लोकंपृणः ” संसार में व्याप्त होने वाला,
 फैलने वाला । ‘लोकम्पृणैः
 परिमलैः परिपूरितास्या’ ।
 अनभ्याशमित्यः ” जिसके पास न जाया जा सके,
 दूर से त्यागने योग्य ।
 आप्रमिन्धः ” भाड़ में भूनने वाला ।
 अग्निमिन्धः ” आग जलाने वाला ।
 तिमिङ्गिलः ” तिमिनाम की मछली को निगलने
 वाली बहुत बड़ी मछली ।
 गिलगिलः ” एक मछली ।
 तिमिङ्गिलगिलः ” तिमिङ्गिल को भी निगल जाने
 वाली मछली ।
 उष्णङ्करणम् ” गर्म करना ।
 मद्रङ्करणम् ” कल्याण करना ।
 रात्रिचरः ६-३-७१—रात में घूमने वाला, राक्षस,
 निशाचर ।
 रात्रिचरः ” ”
 रात्रिमटः ” ”
 रात्र्यटः ” ”
 रात्रिम्मन्यः ” अपने को रात समझाने वाला ।
 सपलाशम् ६-३-७८—पत्ते के साथ, पत्ते को भी न छोड़
 कर ।
 सहयुध्वा ” साथ युद्ध करने वाला ।
 समुहूर्त्तं ज्योतिषमधीते ६-३-७९—वह मुहूर्त्त पर्यन्त ज्योतिष
 पढ़ता है ।
 सद्रोणा खारी ” द्रोणसहित खारी परिमाण ।
 सराक्षसीका निशा ६-३-८०—राक्षसियों वाली रात ।
 सगर्भ्यः ६-३-८४—एक गर्भ में उत्पन्न होने वाला ।
 सयूध्यः ” एक झंड में रहने या होने वाला ।
 सनुयः ” शत्रु, डाकू ।
 समानमूर्धा ” जिसका मस्तक समान हो ।
 समानप्रभृतयः ” जिनका आदि अवयव समान, एक
 सा हो ।
 समानोदकीः ” समान परिणाम वाले ।

सपक्षः ६-३-८४—समान (एक) पक्षक ।
 साधर्म्यम् ” समान धर्म, कार्य का होना ।
 सजातीयम् ” समान जाति का होना ।
 ससखि ” मित्र के सदृश ।
 सज्योतिः ६-३-८५—अर्धरात्रि का वह काल जो सूर्यास्त
 तक अथवा नक्षत्रों के निकलने
 तक हो ।
 सजनपदः ” एक जनपद का ।
 सग्रहचारी ” वेद की एक ही शाखा का पढ़ने
 वाला छात्र ।
 सतीर्थः ६-३-८७ एक ही गुरु का, अध्यापक का छात्र ।
 सोदर्यः ६-३-८८—एक ही गर्भ से उत्पन्न, सगा भाई ।
 समानोदर्यः ” ”
 सदक् ६-३-८९—समान ।
 सदक्षः ” ”
 सदशः ” ”
 ईदक् ” ऐसा ।
 ईदशः ” ”
 ईदक्षः ” ”
 कीदक् ” कैसा ।
 कीदशः ” ”
 कीदक्षः ” ”
 तादक् ” वैसा ।
 तादशः ” ”
 तादक्षः ” ”
 तावान् ” उतना ।
 अमूदक् ” ऐसा, इस तरह का ।
 अमूदशः ” ”
 अमूदक्षः ” ”
 अङ्गुलिपङ्कः ८-३-८०—अंगुली में लगा हुआ ।
 अङ्गुलिपङ्गा यवागूः (काशिका) ” लगी हुई काँजी ।
 मीरुष्ठानम् ८-३-८१—डरपोक का स्थान ।
 ज्याष्टोमः ८-३-८३—सोलह ऋत्विगों से किया जाने
 वाला एक यज्ञ ।
 आयुष्टोमः ” दीर्घायु के निमित्त किया जाने
 वाला एक यज्ञ ।

सुधामा ८-३-९८--सामवेद का सुन्दर गान करने वाला ।	कत्तृणम् ६-३-१०३—एक प्रकार की सुगन्धित घास
सुषन्धिः ,, सुन्दर सन्धि (मेल) करने वाला ।	(हरिद्वारी कुश)
हरिषेणः ८ ३-९९--बन्दर जिसकी सेना हो ।	कापथम् ६-३-१०४ बुरा मार्ग ।
हरिसक्थम् ,, बन्दर की जाँघ ।	काक्षः ,, खराब पासा, बुरी आँख वाला ।
पृथुसेनः ,, जिसकी सेना बड़ी हो, राजा रुचिर के	काजलम् ६-३-१०५—थोड़ा जल ।
एक पुत्र का नाम ।	काम्लः ,, कुछ कुछ खट्टा ।
विष्वक्सेनः ,, जिसकी सेना सर्वत्र जाती हो, विष्णु	कापुरुषः ६-३-१०६—कुत्सित पुरुष, कायर ।
अथवा कृष्ण ।	कुपुरुषः ,, ,,
सर्वसेनः ,, सम्पूर्ण सेना का स्वामी, ब्रह्मदत्त के एक	कापुरुषः ,, कुछ कुछ पुरुष ।
पुत्र का नाम (हरिवंश)	कवोष्णम् ६ ३-१०७—कुछ कुछ गर्म ।
रोहिणीपेणः ८ ३ १००- व्यक्ति विशेष का नाम ।	कदुष्णम् ,, ,,
रोहिणीसेनः ,, ,,	कोष्णम् ,, ,,
शतभिषक्सेनः ,, ,,	पृषोदरम् ६ ६ १०९—चित्तकवरे मृग का उदर, हवा ।
अन्यदाशीः ६ ३ ९९—दूसरा आशीर्वाद ।	बलाहकः ,, मेघ ।
अन्यदाशाः ,, दूसरी आशा ।	हंसः ,, पक्षि विशेष ।
अन्यदूतिः ,, दूसरी सहायता, दया अथवा	सिंहः ,, पशुविशेष ।
बुनावट ।	गूढोत्मा ,, छिपी हुई आत्मा ।
अन्यदास्था ,, दूसरे में आसक्ति या भक्ति ।	दक्षिणतारम् ,, दक्षिणी तट ।
अन्यदास्थितः ,, सम्मति या सहायता के लिए दूसरे	दक्षिणतीरम् ,, ,,
के पास गया हुआ ।	उत्तरतारम् ,, उत्तरी तट ।
अन्यदुत्सुकः ,, दूसरे के लिए उत्सुक ।	उत्तरतीरम् ,, ,,
अन्यदूतिः ,, दूसरी सहायता दया अथवा	दूबाशः ,, जिसको कठिनता से दिया जासके या
बुनावट ।	कष्ट पहुँचाया जा सके ।
अन्यद्रागः ,, दूसरा राग, रंग ।	दूणाशः ,, जिसको कठिनता से नष्ट किया
अन्यदीयः ,, दूसरे का ।	जा सके ।
अन्याशीः ,, दूसरे का आशीर्वाद ।	दूडभः ,, जिसको कठिनता से दबाया जा सके
अन्यत्कारकः ,, दूसरे का करने वाला ।	या कष्ट पहुँचाया जा सके ।
अन्यदर्थः ६ ३ १००—दूसरा अर्थ ।	दूढयः ,, जो कठिनता से ध्यान करे ।
अन्यार्थः ,, ,,	दूसीः ,, व्यासासन, ऋषि का आसन, गद्दी ।
कदम्बः ६ ३-१०१—खराब घोड़ा ।	द्विगुणाकर्णः ६-३ ११४, ११५—जिस पशु के कान पर
कदन्तम् ,, खराब अन्न, मोटा अन्न ।	दुगुनी रेखाएँ हों ।
कूट्रो राजा ,, खराब ऊँटों का राजा ।	शोमनकर्णः ,, ,, कान सुन्दर हों ।
कत्त्रयः ,, खराब तीन व्यक्ति ।	विष्टकर्णः ,, ,, ,,
कटुदः ६ २-१०२—बुरा बोलने वाला ।	अष्टकर्णः ,, जिस पशु के कान पर आठ अंक
कद्वथः ,, बुरा रथ ।	अंकित हो ।

अ० प्र० : १६

देवदारुवनम् ८-४-६—देवदार का जंगल ।
 इरिकावनम् ,, इरिका (एक प्रकार की घास या पेड़) का वन ।
 मिरिकावनम् ,, मिरिका (एक प्रकार का पौधा) का जंगल ।
 इक्षुवाहनम् ८-४-८—ईख होने की गाड़ी ।
 इन्द्रवाहनम् ,, इन्द्र की सवारी ।
 क्षीरपाणा उशीनराः ८-४-९—दूध पीने वाले उशीनर ।
 सुरापाणाः प्राच्याः ,, शराब पीने वाले, पूर्वी ।
 क्षीरपाणम् ८-४-१०—दूध का पीना ।
 क्षीरपानम् ,, ,,
 गिरिणदी, गिरिनदी ,, पहाड़ी नदी ।
 चक्रणितम्बा ८-४-१०—जिस स्त्री का नितम्ब चक्र के समान हो ।
 चक्रनितम्बा ,, ,,
 माषवापिणौ ८-४-११—उड़द बोने वाले दो व्यक्ति ।
 व्रीहिवापाणि ,, घान बोने वाले किसानों के कुल ।
 माषवापेण ,, उड़द बोने से ।
 गर्गमगिनी ,, गर्ग गोत्र वाले की बहिन ।
 ग्रेन्वनम् ,, भोजता ।
 रम्ययूना ,, सुन्दर युवक द्वारा ।
 परिपक्वानि ,, अच्छी तरह पके हुए ।
 वृत्रहणौ ,, वृत्रासुर को मारने वाले ।
 हरिमाणौ ,, विष्णु को पूजने वाला ।
 क्षीरपाणि ,, दूध पीने वाला ।
 क्षीरपेण ,, दूध पीने वाले के द्वारा ।
 रम्यविणा ,, सुन्दर पक्षी द्वारा ।
 हरिकामिणौ ८-४-१३—विष्णु को चाहने वाले दो व्यक्ति ।
 हरिकामाणि ,, ,, कुल ।
 हरिकामेण ,, विष्णु की कामना वाले व्यक्ति द्वारा ।

माषकुम्भवापेन ८-४-३८—एक घड़े उड़द के बोने योग्य खेत द्वारा ।

चतुरङ्गयोगेन ,, चतुरङ्गिनी सेना के सम्बन्ध से ।
 शुष्कगोमयेण ,, सूखे गोबर से ।

कुतुम्बुरुणि ६-१-१४३—तेन्दू के खराब फल ।
 कुस्तुम्बुरुः ,, धनियाँ ।
 अपरस्पराः सार्था गच्छन्ति ६-१-१४४—व्यापारी (बैलें) पर सामान लाद कर चलने वाले साथ साथ जाते हैं ।
 अपरपरा गच्छन्ति ,, भिन्न-भिन्न लोग साथ जाते हैं ।
 गोष्पदः ६-१-१४५—जिस प्रदेश में गाय अधिक हों ।
 अगोष्पदान्यरण्यानि ,, जिन जंगलों में गाय न हों ।
 गोष्पदमात्रं क्षेत्रम् ,, गाय के खुर के बराबर (थोड़ा सा) खेत ।
 गोपदम् ,, गाय का पैर ।
 आस्पदम् ६-१-१४६—प्रतिष्ठित स्थान ।
 आपदम् ,, आपत्ति ।
 आश्चर्यं यदि स भुञ्जीत ६-१-१४७—आश्चर्य है यदि वह भोजन करे ।
 आश्चर्यं कर्म शोभनम् ,, सुन्दर (उत्तम) काम करना चाहिए ।
 अवस्करः ६-१-१४८—मल, विष्टा, यज्ञावशिष्ट रखने का स्थान ।
 अवकरः ,, धूल या बटोरन ।
 अपस्करः ६-१-१४९—पहिया ।
 अपकरः ,, मियाँवली जिले में सिन्धु तट पर स्थित आधुनिक भक्खर ।
 विष्किरः ६-१-१५०—पक्षी ।
 विकरः ,, ,,
 प्रतिष्कशः ६-१-१५२—सहायक या अप्रगामी ।
 प्रतिकशोऽश्वः ,, कोड़ा खाने वाला (खराब) घोड़ा ।
 प्रक्कयवः ६-१-१५३—एक ऋषि का नाम ।
 प्रक्कयवः ,, एक देश का नाम (आधुनिक फरघाना ।
 हरिश्चन्द्रः ,, एक ऋषि का नाम ।
 हरिचन्द्रो माणवकः ,, एक छात्र का नाम ।
 मस्करः ६-१-१५४—बाँस ।
 मस्करी ,, परित्राजक, संन्यासी ।
 मकरः ,, मगर, प्राइ ।

मकरी ६-१-१५४—मगरों वाला समुद्र ।

कास्तीरं नाम नगरम्, ६-१-१५५—लाहौर जिले का कसूर
नामक नगर, सतलज
के दाहिने तट पर ४,५
मील हट कर स्थित है ।

कातीरम्, " खराब तट ।

अजस्तुन्दम् नाम नगरम्, " बाहीक देश का एक ग्राम ।

अजस्तुन्दम्, " बकरे की तोंद ।

कारस्करः ६-१-१५६—कुचिला ।

कारस्करः, " कार्यकर्ता, स्थानापन्न ।

पारस्करः ६-१-५७—एक मुनि का नाम; आधुनिक थर-
पार कर ।

किष्किन्धा

"

बालि की राजधानी, हैदराबाद
के दक्षिण मैसूर राज्य का
एक स्थान ।

तस्करः

"

चोर ।

वृहस्पतिः

"

देवों के गुरु का नाम ।

प्रायश्चित्तिः

"

पापों के विशोधन का कर्म ।

प्रायश्चित्तम्

"

"

वनस्पतिः

"

केवल फल लगने वाला वृक्ष,
साधारण वृक्ष ।

परःशतानि

"

सैकड़ों ।

इति समासाश्रयविधयः ।

तद्धिताधिकारप्रकरणम्

अथ अपत्यादि-विकारान्तार्थसाधारणप्रत्ययाः

आश्वपतम् ४-१-८४—अश्वपति की सन्तान अथवा अश्वपति सम्बन्धी ।	बाहीकः ४-१-८५—बाहर होने वाला, बाहरी ।
गाणपतम् ॥ गणपति की सन्तान अथवा गणपति सम्बन्धी ।	अश्वत्थामः ॥ अश्वत्थामा की सन्तान अथवा तत्सम्बन्धी ।
दैत्यः ४-१-८५—दिति की सन्तान अथवा दिति सम्बन्धी ।	अश्वत्थामा ॥ ॥
आदित्यः ॥ अदिति अथवा आदित्य की सन्तान अथवा तत्सम्बन्धी ।	उडुलोमाः ॥ उडुलोमा की सन्तानें अथवा तत्सम्बन्धी ।
प्रजापत्यः ॥ प्रजापति की सन्तान अथवा प्रजापति सम्बन्धी ।	उडुलोमान् ॥ उडुलोमा की सन्तानों को ।
याम्यः ॥ यम की सन्तान अथवा यम सम्बन्धी ।	औडुलोमिः ॥ उडुलोमा की सन्तान ।
पार्थिवा ॥ पृथिवी की सन्तान अथवा पृथिवी सम्बन्धी ।	गव्यम् ॥ गाय में होने वाला, जिसके देवता गाय हो, गायसम्बन्धी ।
पार्थिवी ॥ ॥ ॥	गोरूप्यम् ॥ गाय के लिए अथवा गाय से प्राप्त ।
दैव्यम् ॥ देव की सन्तान देव अथवा देव सम्बन्धी ।	गोमयम् ॥ गोबर ।
दैवम् ॥ ॥	औत्सः ४-१-८६—उत्स की सन्तान अथवा उत्स सम्बन्धी ।
बाह्यः ॥ बाहर होने वाला, बाहरी ।	आग्नेयम् ॥ अग्नि की सन्तान अथवा अग्नि सम्बन्धी ।
	कालेयम् ॥ कलि की सन्तान ॥ कलि सम्बन्धी ।

इत्यपत्यादिविकारान्तार्थसाधारणाः प्रत्ययाः ।

अथापत्याधिकारप्रकरणम्

औणः ४-१-८७—स्त्रियों में होने वाला, स्त्रीसम्बन्धी, स्त्रियों के उपयुक्त ।	पाञ्चकपालम् ४-१-८८—पाँच सकोरों का एक टुकड़ा ।
पौंसः ॥ पुरुषों में होनेवाला पुरुष सम्बन्धी पुरुषों के उपयुक्त ।	पञ्चगार्ग्यम् ॥ पाँच गर्गों से आया हुआ या प्राप्त ।
स्त्रीवत् ॥ स्त्रियों की तरह ।	द्वैमित्रिः ॥ दो मित्रों की सन्तान ।
पुंवत् ॥ पुरुषों की तरह ।	गार्गीयाः ४-१-८९—६-४-१५१—गर्गों के छात्र ।
पञ्चकपालः ४-१-८८—पाँच सकोरों में प्रस्तुत की गयी यज्ञीय चावल की टिकिया ।	गर्गीयम् ॥ गर्गों के लिए लाभदायक ।
	गार्ग्यम् ॥ गर्गों से आया हुआ या प्राप्त ।
	ग्लुचुकायनिः ४-१-९०—ग्लुचुक के गोत्र में उत्पन्न सन्तान ।

ग्लौचुकायनः ४-१-९०—ग्लुचुकायनि की युवा सन्तान ।
 ग्लौचुकायनः " ग्लुचुकायनि का छात्र ।
 पैलः २-४-५९—पीला के गोत्र में उत्पन्न सन्तान, वृद्ध
 अथवा युवा ।
 आङ्गः " अङ्गदेश के राजा के गोत्र में उत्पन्न
 वृद्ध अथवा युवा ।
 पान्नागारिः २-४-६०—प्राच्य देश के पन्नागारकी सन्तान
 वृद्ध अथवा युवा ।
 दाक्षिः " दक्ष की सन्तान, वृद्ध ।
 दाक्षायणः " दक्ष की सन्तान, युवा ।
 तौल्वलिः २-४-६१—तुल्वल की सन्तान, वृद्ध ।
 तौल्वलायनः " तुल्वल की सन्तान, युवा ।
 कातीयाः ४-१-९१—कात्यायन के छात्र ।
 कात्यायनीयाः " " "
 यास्कः " यास्क की सन्तान ।
 यास्कायनिः " यास्क की युवा सन्तान ।
 यास्कीयाः " यास्कायनि के छात्र ।
 यास्कायनीयाः " " "
 औपगवः ४-१-९२—उपगु की सन्तान ।
 भानवः " भानु की सन्तान ।
 सौत्थितिः " सूत्थित की सन्तान ।
 औपगवी " उपगु की सन्तान (स्त्री) ।
 आश्वपतः " अश्वपति की सन्तान ।
 दैत्यः " दिति की सन्तान ।
 औत्सः " उत्स की सन्तान ।
 स्त्रैणः " स्त्री की सन्तान ।
 पौंसः " पुरुष की सन्तान ।
 गार्ग्यायणः ४-१-१६२-१६५—गर्गकुल का युवा सदस्य ।
 गार्ग्यः " गर्गकुल का वृद्ध सदस्य ।
 गार्ग्यायणः " गर्गकुल का आदरणीय युवा
 सदस्य ।
 गार्ग्यः " गर्ग कुल का आदरणीय वृद्ध सदस्य ।
 गार्ग्यो जाल्मः " गर्ग कुल की नीच सन्तान ।
 गार्ग्यायणः " गर्ग कुल की सन्तान ।

औपगवः ४-१-९३—उपगु का पौत्रादि ।
 गार्ग्यः " गर्ग का पौत्र ।
 नाडायनः " नड का पौत्र ।
 गार्ग्यायणः ४-१-९४—गर्ग कुल की युवा सन्तान ।
 दाक्षिः ४-१-९५—दक्ष की सन्तान ।
 बाह्विः ४-१-९६—बाहु नामक ऋषि की सन्तान ।
 औडुलोमिः " उडुलोमा की संतान ।
 सौधातकिः ४-१-९७—मुधातु की सन्तान ।
 वैयासकिः ७-३-३ व्यास की संतान ।
 वारुडकिः " वरुड की संतान ।
 कौञ्जायन्यः ४-१-९८-५-३-११३—कुञ्ज की सन्तान ।
 ब्राध्नायन्यः " ब्रध्न की सन्तान ।
 कौञ्जायनी " कुञ्ज की सन्तान (स्त्री) ।
 कौञ्जिः " कुञ्ज का पुत्र ।
 नाडायनः ४-१-९९—नड के पौत्र आदि वंशज ।
 चारायणः " चर के पौत्र आदि वंशज ।
 नाडिः " नड का पुत्र ।
 हारितायनः ४-१-१००—हरित कुल की युवा सन्तान ।
 गार्ग्यायणः ४-१-१०१—गर्ग कुल के पौत्र आदि वंशज ।
 दाक्षायणः " दक्ष कुल के पौत्र आदि वंशज ।
 शारद्वतायनः ४-१-१०२—शरद्वत के पौत्र आदि वंशज
 जो भार्गव हों ।
 शारद्वतः " शरद्वत के पौत्र आदि वंशज जो
 भार्गव न हों ।
 शौनकायनः " शुनक के पौत्र आदि वंशज
 जो वात्स्य हों ।
 शौनकः " शुनक के पौत्र आदि वंशज जो
 वात्स्य न हों ।
 दार्मायणः " दर्म के पौत्र आदि वंशज जो
 आप्रायण हों ।
 दार्मिः " दर्म के पौत्र आदि वंशज जो
 आप्रायण न हों ।
 द्रौणायनः ४-१-१०३—द्रोण के पौत्र आदि वंशज,
 महाभारत से भिन्न द्रोण ।
 द्रौणिः " द्रोण के पौत्र आदि वंशज, महाभारत
 से भिन्न द्रोण ।

पार्वतायनः ४-१-१०३—पर्वत के पौत्र आदि वंशज ।	
पार्वतिः	” ” ”
जैवन्तायनः	” जीवन्त के पौत्र आदि वंशज ।
जैवन्तिः	” ” ”
वैदः ४-१-१०४—विद के पौत्र आदि वंशज ।	
वैदिः	” विद का पुत्र ।
पौत्रः	” पुत्र का पुत्र ।
दौहित्रः	” लड़की का पुत्र ।
गार्ग्यः ४-१-१०५—गर्ग का पौत्र आदि वंशज ।	
वात्स्यः	” वत्स का पौत्र आदि वंशज ।
गर्गाः २-४-६४—गर्ग के पौत्र आदि वंशज ।	
वत्साः	” वत्स ” ”
विदाः	” विद ” ”
उर्वाः	” उर्व ” ”
प्रियगार्ग्याः	” जिनको गर्ग गोत्रज प्रिय हों ।
गार्ग्यः	” गर्ग के पौत्री आदि वंशज (स्त्री) ।
द्वैप्याः	” द्वीप में रहने वाले ।
औत्साः २-४-६४—उत्स की सन्तान ।	
पौत्राः	” पुत्र के पुत्र, पोते ।
दौहित्राः	” लड़की के पुत्र, नाती ।
माधव्यः ४-१-१०६—मधु नामक ब्राह्मण का वंशज ।	
माधवः	” मधु नामक ब्राह्मणेतर व्यक्ति का वंशज ।
बाभ्रव्यः	” वभ्रु का वंशज, कौशिक ऋषि ।
बाभ्रवः	” वभ्रु का वंशज अन्य व्यक्ति ।
बाभ्रव्यायणी	” ”
काप्यः ४-१-१०७—कपि का वंशज, आङ्गिरस ।	
बौध्यः	” बोध का पौत्र आदि वंशज आङ्गिरस ।
कापेयः	” कपि का वंशज ।
बौधिः	” बोध का वंशज ।
वातण्ड्यः ४-२-१०९—वतण्ड का पौत्र आदि वंशज आङ्गिरस ।	
वातण्ड्यः	” आङ्गिरस भिन्न वतण्ड का वंशज ।
वातण्डः	” ”

वातण्डी ४-१-१०९—आङ्गिरस वतण्ड का वंशज (स्त्री) ।	
वातण्ड्यायनी	” आङ्गिरस भिन्न वतण्ड की वंशज स्त्री ।
वातण्डी	” ”
आश्वायनः ४-१-११०—अश्व का पौत्र आदि वंशज ।	
जातायनः	” जात का पौत्र आदि वंशज ।
जातेयः	” जाता नाम की स्त्री की सन्तान ।
भार्गायणः ४-१-१११—त्रिगर्त देशीय भर्ग का पौत्र आदि वंशज ।	
भार्गिः	” अन्य देश के भर्ग का पौत्र आदि वंशज ।
शैवः ४-१-११२—शिव की सन्तान ।	
गाङ्गः	” गङ्गा की सन्तान ।
गाङ्गायनिः	” ”
गाङ्गेयः	” ”
यामुनः ४-१-११३—यमुना की सन्तान ।	
नार्मदः	” नर्मदा की सन्तान ।
चैन्तितः	” चिन्तिता की सन्तान ।
वासवदत्तेयः	” वासवदत्ता की सन्तान ।
वैनतेयः	” विनता की सन्तान ।
शौभनेयः	” शोभना की सन्तान ।
वासिष्ठः ४-१-११४—वसिष्ठ की सन्तान ।	
वैश्वामित्रः	” विश्वामित्र की सन्तान ।
श्वफल्कः	” श्वफल्क की सन्तान ।
वासुदेवः	” वसुदेव की सन्तान ।
अनिरुद्धः	” अनिरुद्ध की सन्तान ।
शौरिः	” शूर नामक यादव का पुत्र ।
नाकुलः	” नकुल का पुत्र ।
सहादेवः	” सहदेव का पुत्र ।
आत्रेयः	” अत्रि का पुत्र ।
द्वैमातुरः ४-१-११५—दो माताओं का पुत्र, गणेश ।	
षाण्मातुरः	” छह माताओं का पुत्र, स्कन्द ।
साम्मातुरः	” उत्तम माता का पुत्र ।
माद्रमातुरः	” श्रेष्ठ माता का पुत्र ।
सौमात्रः	” सुमाता का पुत्र ।
वैमात्रेयः	” सोतेसी माता का पुत्र ।

कानीनः ४-१-११६—अविवाहिता कन्या का पुत्र, वेद-
व्यास, कर्ण ।

वैकर्णो वात्स्यः ४-१-११७—विकर्ण का पुत्र, वत्सगोत्रीय ।

वैकर्णिः " " जो वत्सगोत्रीय न हो ।

शौङ्गः " शुङ्ग का पुत्र जो भारद्वाज न हो ।

शौङ्गिः " " जो भारद्वाज न हो ।

छागलः " अत्रिगोत्र वाले छागल का पुत्र ।

छागलिः " छागल का पुत्र जो अत्रिगोत्र का
न हो ।

पैलः ४-१-११८—पीला का पुत्र ।

पैलेयः " " " " " " " "

माण्डूकेयः ४-१-११९—मण्डूक ऋषि का पुत्र ।

माण्डूकः " " " " " " " "

माण्डूकिः " " " " " " " "

वैनतेयः ४-१-१२०—विनता का पुत्र ।

सौमित्रिः " सुमित्रा का पुत्र ।

सापलः " सपत्नी का पुत्र ।

दात्तेयः ४-१-१२१—दत्ता का पुत्र ।

पार्थः " पृथा (कुन्ती) का पुत्र ।

दौलेयः ४-१-१२२—दुलि का पुत्र ।

नैधेयः " निधि का पुत्र ।

शौभ्रेयः ४-१-१२३—शुभ्र का पुत्र ।

वैकर्ण्यः ४-१-१२४—कश्यपगोत्रीय विकर्ण का पुत्र ।

कौषीतकेयः " कश्यपगोत्रीय कुषीतक का पुत्र ।

वैकर्णिः " विकर्ण का पुत्र जो कश्यपगोत्रीय न हो ।

कौषीतकिः " कुषीतक का पुत्र ।

भ्रौवेयः ४-१-१२५—भ्रूका पुत्र ।

प्रावाहयेयः ७-३-२८—प्रवाहण का पुत्र ।

प्रवाहणेयः " " " " " " " "

प्र-प्रावाहणेयिः ७-३-२९— " " " " " " " "

काल्याणिनेयः ४-१-१२६—कल्याणी का पुत्र ।

बान्धकिनेयः " बन्धकी का पुत्र ।

कौलटिनेयः ४-१-१२७—साध्वी मिश्रुकी का पुत्र ।

कौलटेयः " " " " " " " "

कौलटेरः " व्यभिचारिणी स्त्री का पुत्र ।

सौहार्दः ७-३-१९—मित्र अथवा सत्पुरुष का पुत्र ।

सौभाग्यनेयः " सौभाग्यवती स्त्री का पुत्र ।

साक्तुसैन्धवः " सक्तुसिन्धु प्रदेश में होने वाला ।

चाटकैरः ४-१-१२८—गौरैया का बच्चा ।

गौधेरः ४-१-१२९—गोह का बच्चा ।

गौधेयः ४-१-१२९—गोह का बच्चा ।

गोधारः ४-१-१३०— " " " " " " " "

जाडारः " जड का पुत्र ।

पायडारः " पण्ड का पुत्र ।

कायेरः ४-१-१३१—कानी स्त्री का पुत्र ।

काणेयः " " " " " " " "

दासेरः " दासी का पुत्र ।

दासेयः " " " " " " " "

पैतृष्वस्त्रीयः ४-१-१३२—बुआ का पुत्र, फुफेरा भाई ।

पैतृष्वसेयः ४-१-१३३— " " " " " " " "

मातृष्वस्त्रीयः ४-१-१३४—मौसी का पुत्र, मौसेरा भाई ।

मातृष्वसेयः " " " " " " " "

कामण्डलेयः ४-१-१३५, ६-४-१४७—चार पैर वाले
पशु विशेष का बच्चा ।

गाट्टेयः ४-१-३६—पट्टिली बार-बच्चा देने वाले पशु का
बच्चा ।

मैत्रेयः ७-३-२, ६-४-१७४—मित्रयु का पुत्र ।

मैत्रेयौ " " " " " " " "

मित्रयवः २-४-६३—मित्रयु का पौत्र आदि वंशज ।

अत्रयः २-४-६५—अत्रि के पौत्र आदि वंशज ।

मृगवः " मृगु " " " " " " " "

कुत्साः " कुत्स " " " " " " " "

वसिष्ठाः " वसिष्ठ " " " " " " " "

गोतमाः " गोतम " " " " " " " "

अज्जिरसः " अज्जिरस " " " " " " " "

पन्नागाराः २-४-६६—प्रादेशीय पन्नागार के पौत्र आदि
वंशज ।

युधिष्ठिराः " भारत कुल के युधिष्ठिर के पौत्र
आदि वंशज ।

गोपवनाः २-४-६७—गोपवन ऋषि के पौत्र आदि वंशज ।

वैप्रवाः " शिशु ऋषि के पौत्र आदि के वंशज ।

तिककितवा: २-४-६८—तिककितव के पौत्र आदि वंशज ।

उपकलमका: २-४-६९—उपक लमक के पौत्र आदि वंशज ।

औपकायनलामकायना: ,, ,, ,, ,,
आष्टककपिष्ठला: ,, आष्टक कपिष्ठल के पौत्र आदि वंशज ।

आष्टकिकापिष्ठलय: ,, ,, ,, ,,

उपका: ,, उपक के पौत्र आदि वंशज ।

औपकायना: ,, ,, ,,

लमका: ,, लमक के पौत्र आदि वंशज ।

लामकायना: ,, ,, ,,

अगस्त्य: २-४-७०—अगस्त्य के पौत्र आदि वंशज ।

कुण्डिना: ,, कौण्डिन्य के पौत्र आदि वंशज ।

राजन्य: ४-१-१३७—राजा का क्षत्रिया में उत्पन्न पुत्र ।

राज्यम् ,, राजा का कर्म या भाव ।

श्वसुर्य: ,, श्वसुर का पुत्र ।

राजन: ,, राजा का क्षत्रिया से भिन्न स्त्री से उत्पन्न पुत्र ।

चाक्रिण: ६-४-१६६—चक्रधारी का पुत्र ।

माद्रसाम: ६-४-१७०—मद्रसाम का पुत्र ।

सौत्वन: ,, सुत्वन का पुत्र ।

चार्मण: ६-४-१७०—चमड़े से ढका हुआ (रथ) ।

चाक्रवर्मण: ,, चक्रवर्मा का पुत्र ।

हैतनाम: ,, हितनाम का पुत्र ।

हैतनामन: ,, ,,

ब्राह्मम् ५-४-१७१—जिस (हवि) के देवता ब्रह्मा हों ।

ब्राह्मण: ,, ब्रह्मा की संतान ।

ब्राह्मी ,, जिस ओषधिके देवता ब्रह्मा हों ।

औक्षम् पदम् ६-४-१७३—बैल का पदचिह्न ।

औक्षण: ६-४-१२५—बैल का बछड़ा ।

ताक्षण: ,, बड़ई का पुत्र ।

भ्रौणघ्न: ,, भ्रूणहत्या करने वाले का पुत्र ।

धार्तराज: ,, धृतराज का पुत्र ।

सामन: ,, साम का पुत्र ।

ताक्षयय: ४-१-१३८—बड़ई का पुत्र ।

क्षत्रिय: ,, क्षत्र (रक्षा करने वाले) का पुत्र ।

क्षत्रि: ,, क्षत्र का शूद्रा में उत्पन्न पुत्र ।

कुलीन: ४-१-१३९—उत्तम कुल में उत्पन्न पुत्र ।

आव्यकुलीन: ,, धनी कुल में उत्पन्न ।

कुल्य: ४-१-१४०—उत्तम कुल में उत्पन्न ।

कौलेयक: ,, ,, ,,

कुलीन: ,, ,, ,,

बहुकुल्य: ,, अनेक कुलों में उत्पन्न ।

बाहुकुलेयक: ,, ,, ,,

बहुकुलीन: ,, ,, ,,

माहाकुल: ४-१-१४१—उच्चकुल में उत्पन्न ।

माहाकुलीन: ,, ,,

महाकुलोन: ,, ,,

दौकुलेय: ४-१-१४२—खराब कुल में उत्पन्न ।

दुष्कुलीन: ,, ,,

स्वस्त्रीय: ४-१-१४३—बहिन का पुत्र, भाज्जा ।

भ्रातृव्य: ४-१-१४४—भाई का पुत्र, भतीजा ।

भ्रात्रीय: ,, ,,

भ्रातृव्य: ४-१-१४५—भाई का दुष्ट पुत्र, शत्रु भतीजा ।

रैवतिक: ४-१-१४६—रेवती का पुत्र ।

गार्गिक: ४-१-१४७—गार्गी का नीच पुत्र ।

गार्ग: ,, ,,

भागवित्तिक: ४-१-१४८—व्यास के साम शिष्य परम्परा के

एक शिष्य का नाम भागवित्ति

था । भागवित्ति का पौत्र आदि

वंशज ।

भागवित्तायन: ,, ,,

यामुन्दायनि: ४-१-१४९—यमुन्द की सन्तान ।

यामुन्दायनीय: ,, यमुन्द का पौत्र आदि वंशज ।

यामुन्दायनिक: ,, ,,

यामुन्दायनि: ,, यमुन्द का निन्दनीय पुत्र ।

तैकायनि: ,, तिक का पुत्र, यह सौवीर

देशीय नहीं था ।

फाण्टाहृत: ४-१-१५०—फाण्टाहृति का पुत्र ।

फाण्टाहतायनिः ४-१-१५०—फाण्टाहति का पौत्र आदि वंशज ।

मैमतः ,, मिमत का पुत्र ।

मैमतायनिः ,, मिमत का पौत्र आदि वंशज ।

कौरव्याः ४-१-१५१—कुष नामक ब्राह्मण के पुत्र ।

वावदूक्याः ,, वावदूका के पुत्र ।

साम्राज्यः ,, क्षत्रिय सम्राट् का पुत्र ।

साम्राजः ,, क्षत्रियेतर सम्राट् का पुत्र ।

हारिषेण्यः ४-१-१५२—हरिसेन का पुत्र ।

लाक्षण्यः ,, लक्षण का पुत्र ।

तानुवाय्यः ,, जुलाहे का पुत्र ।

कौम्मकार्यः ,, कुम्हार का पुत्र ।

न पित्र्यः ,, नाई का पुत्र ।

हारिषेणिः ४-१-१५३—हरिसेन का पुत्र ।

लाक्षणिः ,, लक्षण का पुत्र ।

तानुवायिः ,, जुलाहे का पुत्र ।

कौम्मकारिः ,, कुम्हार का पुत्र ।

नापितायनिः ,, नाई का पुत्र ।

ताक्षणः ,, बढई का पुत्र ।

ताक्षय्यः ,, ,,

तैकायनिः ४-१-१५४—तिक का वंशज ।

कौशल्ल्यायनिः ४-१-१५५—कुशल का वंशज ।

कार्त्तर्यायिनिः ,, कर्मर का वंशज ।

छाग्यायनिः ,, छाग का वंशज ।

वाप्यायनिः ,, वृष का वंशज ।

कार्त्तर्यणिः ४-१-१५६—कार्त्तर का पुत्र ।

दाक्षायणः ,, दक्ष का वंशज ।

औपगविः ,, औपगव का पुत्र ।

त्यादायनिः ,, उसका पुत्र ।

त्यादः ,, ,,

आम्रगुसायनिः ४-१-१५७—आम्रगुप्त का पुत्र ।

आम्रगुप्तिः ,, ,,

दाक्षिः ,, दक्ष का पुत्र ।

औपगविः ,, औपगव का पुत्र ।

वाकिनकायनिः ४-१-१५८—वाकिन का पुत्र ।

वाकिनिः ,, ,,

गार्गीपुत्रकायनिः ४-१-१५९—गार्गीपुत्र का पुत्र ।

गार्गीपुत्रिः ,, ,,

ग्लुचुकायनिः ४-१-१६०—ग्लुचुक का पुत्र ।

मानुषः ४-१-१६१—मनु का पुत्र (मानुष जाति) ।

मानुष्यः ,, ,,

ऐक्ष्वाकः ४-१-१६२—ऐक्ष्वाकु का पुत्र ।

ऐक्ष्वाकौ ,, ऐक्ष्वाकु के दो पुत्र ।

पाञ्चालः ,, पाञ्चाल क्षत्रियों का अथवा

पाञ्चाल जनपद का राजा ।

पौरवः ,, पूव क्षत्रियों का राजा ।

पाण्ड्यः ,, पाण्डुदेश अथवा पाण्डुक्षत्रियों का राजा ।

साल्वेयः ४-१-१६५—साल्वेय का पुत्र या राजा ।

गान्धारः ,, गान्धार का पुत्र या राजा ।

आङ्गः ४-१-१७०—अङ्गदेश का राजा अथवा अङ्गदेश के क्षत्रिय का पुत्र ।

वाङ्गः ,, वङ्ग ,, वङ्ग ,,

सौह्यः ,, सुह्य ,, सुह्य ,,

मागधः ,, मगध ,, मगध ,,

कालिङ्गः ,, कलिङ्ग ,, कलिङ्ग ,,

सौरमसः ,, सूरमस ,, सूरमस ,,

आम्बष्ठ्यः ४-१-१७१—अम्बष्ठ ,, अम्बष्ठ ,,

सौवीर्यः ,, सौवीर ,, सौवीर ,,

आवन्त्यः ,, अवन्ति ,, अवन्ति ,,

कौन्त्यः ,, कुन्ती ,, कुन्ती ,,

कौसल्यः ,, कोसल ,, कोसल ,,

आजाथः ,, आजाद ,, आजाद ,,

कौरव्यः ४-१-१७२—कुष का पुत्र ।

नैषध्यः ,, निषध का पुत्र ।

औदुम्बरिः ४-१-१७३—उदुम्बर देश का राजा अथवा उदुम्बर देशीय क्षत्रिय का पुत्र ।

प्रात्यग्रथिः ,, प्रत्यग्रथ ,, प्रत्यग्रथ ,,

कालकूटिः ,, कलकूट ,, कलकूट ,,

आश्मकिः ,, अश्मक ,, अश्मक ,,

इक्ष्वाकवः ४-१-१७४, २-४-६२—इक्ष्वाकुओं के राजा ।	कौमुदगन्ध्या ४-१-७८—कुमुदगन्धि की पौत्री आदि वंशज ।
पञ्चालाः " पाञ्चालों के राजा ।	वाराह्या " वराह " "
कम्बोजः ४-१-१७५—कम्बोज जनपद का राजा ।	वासिष्ठी " वसिष्ठ ऋषि " "
कम्बोजौ " कम्बोज के दो राजा ।	वैश्वामित्री " विश्वामित्र ऋषि " "
चोलः " चोल जनपद का राजा ।	औपगवी " औपगव की पुत्री " "
शकः " शकों का राजा ।	आहिच्छत्री " अहिच्छत्र में उत्पन्न स्त्री ।
केरलः " केरल जनपद का राजा ।	पौणिक्या ४-१-७९—पुणिक कुल के वंश में उत्पन्न स्त्री ।
यवनः " यवन देश का राजा ।	भौणिक्या " भुणिक कुल के वंश में उत्पन्न स्त्री ।
अवन्ती ४-१-१७६—अवन्ति जनपद की राजकुमारी ।	धौड्या ४-१-८०—धौडि की स्त्री सन्तान ।
कुन्ती " कुन्ती जनपद की " "	व्याड्या " व्याडि की स्त्री सन्तान ।
कुरुः " कुरु जनपद की " "	सूत्या " सूत की युवती कन्या ।
शूरसेनी ४-१-१७७—शूरसेन देश की " "	भोज्या " भोज क्षत्रियों की कन्या ।
मद्रि " मद्र देश की " "	दैवयज्ञा ४-१-८१—दैवयज्ञि की पौत्री आदि सन्तान ।
पाञ्चाली ४-१-१७८—पाञ्चाल जनपद की राजकुमारी ।	दैवयज्ञी " " " "
वैदर्भी " विदर्भ " "	शौचिवृक्ष्या " शौचिवृक्षि " "
आङ्गी " अङ्ग " "	शौचिवृक्षी " " " "
वाङ्गी " वङ्ग " "	सात्यमुद्र्या " सात्यमुद्रि " "
मागधी " मगध " "	सात्यमुग्री " " " "
मार्गी " मर्ग " "	काण्डेविध्या " काण्डेविद्धि " "
कारुशी " कारुश " "	काण्डेविद्धी " " " "
कैकेयी " केकय " "	
यौधेयी " यौधेय " "	
शौक्रेयी " शौक्रेय " "	

इत्यपत्याधिकारप्रकरणम् ।

अथ रक्ताद्यर्थकप्रकरणम्

काषायं वस्त्रम् ४-२-१—हलके लाल रंग से रंगा हुआ वस्त्र ।

माज्जिष्ठम् ,, मजीठ(तेज लाल) रंग से रंगा हुआ ।

लाक्षिकः ४-२-२—लाख से रंगा हुआ ।

रौचनिकः ,, रोली से रंग हुआ ।

शाकलिकः ,, काले रंग से रंगा हुआ ।

कार्दमिकः ,, कीचड़ से रंगा हुआ ।

शाकलः ,, काले रंग से रंगा हुआ ।

कार्दमः ,, कीचड़ से रंगा हुआ ।

नीलम् ,, नील से रंगा हुआ ।

पीतकम् ,, पीले रंग से रंगा हुआ ।

हारिद्रम् ,, हल्दी से रंगा हुआ ।

माहारजनम् ,, कुसुम रंग से रंगा हुआ ।

पौषमहः ४-२-३—पुष्य नक्षत्र से युक्त दिन, जिस दिन चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र का हो ।

पौषी रात्रिः ,, ,, रात, ,, रात

अद्य पुष्यः ४-२-४—आज पुष्य नक्षत्र है । आज दिनरात चन्द्रमा पुष्यनक्षत्र से युक्त है ।

श्रावणी ,, श्रवण नक्षत्र से युक्त पूर्णिमा ।

श्रवणा रात्रिः ४-२-५—श्रवण नक्षत्रयुक्त चन्द्रमा वाली रात ।

अश्वत्थो मुहूर्तः ,, श्रवण नक्षत्रवाला एक विशेष मुहूर्त ।

श्रावणी ,, श्रवण नक्षत्रयुक्त चन्द्रमा वाली रात ।

आश्वत्थी ,, ,,

तिष्यपुनर्वसवीर्यमहः ४-२-६—पुष्य तथा पुनर्वसु नक्षत्र वाला दिन ।

राधानुराधीया रात्रिः ,, विशाखा तथा अनुराधा नक्षत्र वाली रात ।

वसिष्ठं साम ४-२-७—सामवेद का वह भाग जिसको वसिष्ठ ऋषि ने देखा था ।

औशनसम् ,, ,, शुक्राचार्य ,,

औशनम् ,, ,, ,, ,,

कालेयम् ४-२-८— ,, कलि ऋषि ,,

वामदेव्यम् ४-२-९— ,, वामदेव ,,

वासो रथः ४-२-१०—कपड़े से ढका हुआ रथ ।

पाण्डुकम्बली ४-२-११—गन्धार देश में बनने वाला चट-कीले लाल रंग का बहुमूल्य कम्बल 'पाण्डुकम्बल' कहालाता था, उससे ढका हुआ रथ ।

द्वैपो रथः ४-२-१२—व्याघ्र के चमड़े से ढका हुआ रथ ।

वैयाघ्रः ,, ,, ,,

कौमारः पतिः ४-२-१३—कुमारी (अविवाहिता) कन्या का पति ।

कौमारी भार्या ,, कुमारी (अविवाहिता) कन्या भार्या ।

शराव ओदनः ४-२-१४—मिट्टी की तश्तरी में निकाल कर रक्खा हुआ भात ।

स्थाण्डिलो भिक्षुः ४-२-१५—रिक्तभूमि पर शयन करने वाला भिक्षु ।

आष्टा यवाः ४-२-१६—माड़ में भुने हुए जौ ।

अष्टकपालः पुरोडाशः ,, आठ सकोरों में पकाया गया चावल की टिकिया ।

शूल्यं मांसम् ४-२-१७—लोहे के सीकचों पर पकाया हुआ मांस, कबाब ।

उत्थम् ,, उखा (पात्रविशेष) में पकाया हुआ ।

दाधिकम् ४-२-८—दही में बनाया गया ।

धूम्या ४-२-४९—धूम राशि ।
 वन्या ,, जंगलों का समूह ।
 वात्या ,, आँधी, बवंडर ।
 खल्या ,, खलिहानों का समूह ।
 गव्या ,, गायों का झुण्ड ।
 रथ्या ,, रथों का झुण्ड ।
 खलिनी ४-२-५१—खलिहानों का समूह ।
 गोत्रा ,, गायों का झुण्ड ।
 रथकट्या ,, रथों का समूह ।
 डाकिनी ,, काली की अनुचरी डाक नाम की राक्षसियों का झुण्ड ।
 कुटुम्बिनी ,, कुटुम्ब का समूह ।
 शैवः ४-२-५२—शिवियों का देश ।
 राजन्यकः ४-२-५३—राजकुमारों का देश ।
 भौरिकिविधम् ४-२-५४—भौरिकि लोगों का देश, बंगाल का समतल, दक्षिणी बंगाल ।
 भौलिकिविधम् ,, ,,
 ऐषुकारिमक्तम् ,, इषुकारि लोगों का प्रदेश, सम्भवतः हिसार ।
 सारसायनमक्तम् ,, सारसायन लोगों का प्रदेश ।
 पाङ्क्तः प्रगाथः ,, जिस प्रगाथ का प्रारम्भ पङ्क्ति छन्द से हो ।
 त्रैष्टुभम् ,, त्रिष्टुभ छन्द ।
 सौभद्रम् ४-२-५६—सुभद्रा के निमित्त किया गया युद्ध ।
 भारतः ,, जिस युद्ध में भरत कुल के लड़ने वाले योद्धा हों ।
 दायडा ४-२-५७—लाठी के खेल ।
 मौष्टा ,, मुक्के बाजी का खेल ।
 इयैनम्पाता मृगया ४-२-५८ ,, ६-३-७१—जिस मृगया में शिकार पर आक्रमण करने या उसको लाने के लिए बाज पक्षी छोड़ा जाता है ।

तैलम्पाता स्वधा ६-३-७१—जिस श्राद्ध में तिल गिराया जाय ।
 दण्डपाता तिथिः ,, जिस तिथि में दण्ड की हानि हो ।
 वैयाकरणः ४-२-५९—व्याकरण पढ़ने या जानने वाला ।
 आग्निष्टोमिकः ४-२-६०—अग्निष्टोमयज्ञ जानने वाला या उसकी विधि की पुस्तक पढ़ने वाला ।
 वाजपेयिकः ,, वाजपेययज्ञ जानने वाला या ,,
 औक्थिकः ,, सामवेद के प्रातिशाख्य को जानने या पढ़ने वाला ।
 नैयायिकः ,, न्याय जानने या पढ़ने वाला ।
 वार्त्तिकः ,, वृत्ति (ग्रन्थों की टीका) जानने या पढ़ने वाला ।
 लोकायतिकः ,, भूतवाद तथा उच्छेदवाद के मानने वाले बौद्धों के दर्शन का लोक में अधिक प्रचार होने से लोकायत अर्थात् बौद्ध दर्शन जानने या पढ़ने वाला ।
 सांग्रहसूत्रिकः ,, संग्रह सूत्र जानने या पढ़ने वाला ।
 कल्पसूत्रः ,, कल्प सूत्र पढ़ने या जानने वाला ।
 वायसविद्यकः ,, वायसविद्या या पश्चि विद्या का जानने या पढ़ने वाला ।
 गौलक्षणिकः ,, गाय के लक्षण ग्रन्थों का जानने या अध्ययन करने वाला ।
 आश्वलक्षणिकः ,, घोड़े के ,,
 पाराशरकल्पिकः ,, पराशर कल्प का जानने या अध्ययन करने वाला ।
 आज्ञविद्यः ,, अज्ञविद्या का जानने या अध्ययन करने वाला ।
 धर्मविद्यः ,, धर्म विद्या का ,,
 त्रैविद्यः ,, त्रिविद्या (तीन वेद) का जानने या पढ़ने वाला ।

यावक्रीतिकः ४-२-६०—यवक्रीत का आस्थान जानने या पढ़ने वाला ।

वासवदत्तिकः	॥	वासवदत्ता की कहानी	॥
ऐतिहासिकः	॥	इतिहास	॥
पौराणिकः	॥	पुराण	॥
सर्ववेदः	॥	सर्ववेद	॥
सर्वतन्त्रः	॥	सब शास्त्रों	॥
सर्वास्तिकः	॥	वृत्तिसहित ग्रन्थों का	॥
द्वितन्त्रः	॥	दो शास्त्रों का	॥
पूर्वपदिकः	॥	पूर्व पद	॥
उत्तरपदिकः	॥	उत्तर पद	॥
शतपथिकः	॥	शतपथ	॥
शतपथिकी	॥	॥	॥
षष्ठिपथिकः	॥	षष्ठिपथ	॥
षष्ठिपथिकी	॥	॥	॥
क्रमकः ४-२-६१	॥	क्रम पाठ	॥
पदकः	॥	पद पाठ	॥
शिक्षकः	॥	शिक्षा	॥
मीमांसकः	॥	मीमांसा	॥

अनुब्राह्मणी ४-२-६२—ब्राह्मण सदृश ग्रन्थ का

वासन्तिकः ४-२-६३—वसन्तत्रय सम्बन्धी ॥

आथर्वणिकः ॥ अथर्व वेद ॥

पाणिनः ४-२-६४—पाणिन का पुत्र ।

पाणिनिः ६-४-१६५—पाणिन का पौत्र आदि वंशज (युवा) ।

कौरव्यः पिता २-४-५८—कुरु का पुत्र ।

कौरव्यः पुत्रः ॥ कुरु का वंशज पौत्र आदि ।

श्वफल्कः पिता ॥ श्वफल्क का पुत्र ।

श्वफल्कः पुत्रः ॥ श्वफल्क का वंशज पौत्र आदि ।

वासिष्ठः पिता ॥ वसिष्ठ का पुत्र ।

वासिष्ठः पुत्रः ॥ वसिष्ठ का वंशज पौत्र आदि ।

तैकायनिः पिता ॥ तिक का पुत्र ।

तैकायनिः पुत्रः ॥ तिक का वंशज पौत्र आदि ।

कौहडः ॥ कौहड का पुत्र ।

कौहडिः ॥ कौहड का वंशज पौत्र आदि ।

वामरथ्याः ॥ वामरथ के शिष्य ।

पाणिनीयम् ॥ पाणिनि से बनाया गया ।

पाणिनीयः ॥ पाणिनीय शास्त्र पढ़ने वाला ।

पाणिनीया ॥ ॥ ॥ वाली ।

अष्टकः ४-२-६५—पाणिनि की अष्टाध्यायी का पढ़ने या जानने वाला ।

कालापकाः ॥ कालाप के कहे गये वेद को पढ़ने या जानने वाले ।

कठाः ४-२-६६—कठ से कहे गये वेद के पढ़ने या जानने वाले ।

इति रक्ताद्यर्थकप्रकरणम् ।

अथ चातुरर्थिकप्रकरणम्

औदुम्बरः ४-२-६७—जहाँ गूलर बहुत हों वह जनपद ।

कौशाम्बी नगरी ४-२-६८—कुशाम्ब (कुशपुत्र) से बनाई गई नगरी, आधु० कोसम ।

शैबः ४-२-६९—शिवियों के रहने का जनपद ।

वैदिशम् ४-२-७०—विदिशा (भेलसा) के समीप का नगर ।

काक्षतवम् ४-२-७१—जिस देश में कक्षतु (एकफल) बहुत हों ।

इक्षुमती ४-२-७१—जिस नदी के समीप ईख बहुत होती हो । फर्रुखाबाद जिले की ईखन नदी ।

सैन्नकावतम् ४-२-७२—कत्ये की तरह के एक वृक्ष (सिघ्रका) का जंगल ।

आहिमतम् ॥ जिस देश में सर्प अधिक हों ।

दीर्घवरत्रः कूपः ४-२-७३—दीर्घवरत्र का बनवाया हुआ कुँआ ।

दात्तः ४-२-७४—दात का बनवाया हुआ कुँआ ।

साङ्कलम् ४-२-७५—संकल का बसाया हुआ नगर ।
 पौष्कलम् " पुष्कल " "
 दात्तामित्रा नगरी ४-२-७६—दात्तामित्र की बसायी हुई नगरी ।
 वैधूमाग्नी " विधूम " "
 माकन्दी " माकन्द " "
 सौवास्तवम् ४-२-७७—सुवास्तु (स्वात) नदी की घाटी का नगर ।
 वार्णवम् " वर्णु (वै० क्रमु, कुरम्) नद के समीप स्थित नगर (आधु० वल्लू) ।
 सौवास्तवी " सुवास्तु (स्वात) नदी की घाटी की नगरी ।
 रौणः ४-२-७८—रोणी का बनवाया हुआ कुँआ ।
 आजकरोणः " अजकरोणी का बनवाया हुआ कुँआ ।
 कार्णच्छिद्रकः कूपः ४-२-७९—कर्णच्छिद्रक का बनवाया हुआ कुँआ ।
 कार्कवाकम् " कृकवाकु " "
 त्रैशङ्कवम् " त्रिशङ्कु " "
 आरीहणकम् ४-२-८०—अरीहणक का बनवाया हुआ ।
 कार्शाश्वीयम् " कृशाश्व का बनवाया हुआ ।
 ऋष्यकम् " ऋश्यक का बनाया हुआ ।
 कुमुदिकम् " कुमुद का बनवाया हुआ ।
 काशिलः " काश का बना हुआ ।
 तृणसम् " तृण का बना हुआ ।
 प्रेक्षी " प्रेक्ष का बनवाया हुआ ।
 अश्मरः " पत्थर का बना हुआ ।
 साखेयम् " सखा का बसाया हुआ ।
 साङ्काश्यम् " सङ्काश का बसाया हुआ । फर्रुखा-
 बाद जिले का संकास ।
 बल्यम् ४-२-८०—बल का बनाया या बसाया हुआ ।
 पाक्षायणः " पक्ष " "
 पान्थायनः " पथिक " "
 कार्णायनिः " कर्ण " "
 सौतङ्गमिः " सुतङ्गम ऋषि " "
 प्रागद्यः " प्रगद " "
 वाराहकः " वराह " "
 कौमुदिकः " कुमुद " "

पञ्चालाः ४-२-८१—पाञ्चाल क्षत्रियों के रहने का जनपद ।
 कुरवः " कुरु " "
 अङ्गाः " आङ्गों " "
 वङ्गाः " वाङ्गों " "
 कलिङ्गाः " कालिङ्गों " "
 पञ्चाला रमणीयाः १-२-५२—पाञ्चालों के रहने का जनपद सुन्दर है ।
 गोदौ रमणीयौ " गोद सुन्दर हैं ।
 पञ्चाला जपपदः " पाञ्चाल जनपद ।
 गोदो ग्रामः " गोद गाँव ।
 हरीतक्यः " हरें के फल, हड़ ।
 खलतिकं वनानि " खलतिक पर्वत के समीप के जंगल ।
 चञ्चा अभिरूपः " चास फूस की बनी हुई मनुष्य की मूर्ति ।
 वरणा ४-२-८२—वरणा नदी के समीप का नगर (ऊण-
 आरलस्टाइन) ।
 शर्करा ४-२-८३, ८४—शर्कराओं का निवास स्थान, सिन्धु
 नदी के तट का सखर ।
 शार्करम् " " "
 शार्करिकम् " " "
 शार्करीयम् " " "
 शार्करकम् " " "
 इक्षुमती ४-२-८५—जिस नदी के समीप ईख अधिक हो,
 फर्रुखाबाद की ईखन नदी ।
 मधुमान् ४-२-८६—जहाँ मधु हो ।
 कुमुद्वान् ४-२-८७—जहाँ कुवलय हो ।
 नद्वान् " जहाँ नरकुल हो ।
 वेतस्वान् " जहाँ बेत हो ।
 महिष्मान्नाम देशः " जहाँ भैंसें हों ।
 नद्वलः ४-२-८८—जहाँ नरकुल हो ।
 शाद्वलः " जहाँ हरी भरी घास हो (Lawn) ।
 शिखावलम् ४-२-८९—शिखा वाला नगर, सोन तट पर
 स्थित रीवाँ का सिंहवल ।
 उत्करीयः ४-२-९०—उत्कर का बनाया या बसाया ।

नडकीयम् ४-२-९१—नड का बनाया या बसाया ।

क्रुञ्चकीयः " क्रुञ्च का "

तक्षकीयः " तक्ष "

विल्वकीयाः ६-४-१५३—जहाँ वेल हों ।

वैल्वकाः ६-४-१५३—विल्वकीय में होने या रहने वाले ।

वैत्रकीयाः " जहाँ वेत बहुत हों ।

वैत्रकाः " वैत्रकीय में होने या रहने वाले ।

इति चातुरथिकप्रकरणम् ।

अथ शैपिकप्रकरणम्

चाक्षुषं रूपम् ४-२-९२—जो आँख से ग्रहण किया जाय,
दृश्य विषय ।

श्रावणः शब्दः " जो कान से ग्रहण किया जाय,
शब्द ।

औपनिषदः पुरुषः " जिसका वर्णन उपनिषद् में किया
गया है, आत्मा ।

दार्षदाः सक्तवः " जो चक्की में पिसा गया हो,
सत्तू ।

औलूखलो यावकः " जो ओखली में कूटा गया हो,
बिना भूसी का जी ।

आइवो रथः " जो घोड़ों से खींचा जाय, रथ ।

चातुरं शकटम् " जिस पर चार आदमी चढ़ते हों,
छकड़ा ।

चातुर्दशं रत्नः " जो चतुर्दशी को दिखायी पड़े,
राक्षस ।

राष्ट्रियः ४-२-९३—राष्ट्र (देश) में उत्पन्न ।

अवारपारीणः " जो दोनों किनारों तक फैला या
गया हो ।

अवारीणः " नदी के इस किनारे का ।

पारीणः " नदी के उस किनारे का ।

पारावारीणः " नदी के दोनों किनारे का ।

ग्राम्यः ४-२-९४—देहाती, गवाँर, गाँव में होने वाला ।

ग्रामीणः " " "

कात्त्रेयकः ४-२-९५—तीन निन्दित स्थानों में उत्पन्न ।

नागरेयकः " शहर में उत्पन्न ।

ग्रामेयकः " गाँव में उत्पन्न ।

कौलेयकः इवा ४-२-९६—कुल में उत्पन्न कुत्ता (Pedigree dog) ।

कौलोऽन्यः " कुल में उत्पन्न अन्य व्यक्ति ।

कौक्षेयकोऽसिः " म्यान में रहने वाली तलवार ।

कौलोऽन्यः " दूसरी वस्तु जो खोल में रहे ।

ग्रैवेयकोऽस्तङ्कारः " गर्दन में पहिनने का आमूषण,

ग्रैवोऽन्यः " गर्दन में होने वाला कोई रोग
आदि ।

नादेयम् ४-२-९७—नदी में होने वाला ।

माहेयम् " पृथ्वी "

वाराणसेयम् " वाराणसी "

दाक्षिणात्यः ४-२-९८—दक्षिण देश में होने वाला ।

पाश्चात्यः " पश्चिम दिशा में होने या रहने-
वाला ।

पौरस्त्यः " पूर्व दिशा में होने या रहने वाला ।

कापिशायनं मधु ४-२-९९—कपिशा (काबुल से उत्तर-
पूर्व हिन्दू कुश के दक्षिण
आधुनिक बेग्राम है जो घोरबंद
और पंजशीर नदियों के संगम
पर स्थित है) की शराब ।

कापिशायनी द्राक्षा " कपिशा का अंगूर ।

राक्षवो गौः ४-२-१००—रंक्रु जनपद (अलकनंदा और
पिंडर के पूर्व का प्रदेश-प्रियर्सन,
डा० मोतीचन्द्र) का बैल ।

राक्षवायणः " " "

राक्षवको मनुष्यः " रंक्रु जनपद का मनुष्य ।

दिव्यम् ४-२-१०१—स्वर्गीय ।

प्राच्यम् ,, पूर्वीय देश में होनेवाला ।

प्रतीच्यम् ,, पश्चिम प्रदेश में होने वाला ।

अवाच्यम् ,, दक्षिण ,, ,,

उदीच्यम् ,, उत्तर ,, ,,

कान्थकः ४-२-१०२—गाँव में होने वाला ।

कान्थकम् ४-२-१०३—वर्णु (वधू) नदी के समीपवर्ती प्रदेश के गाँव में होने वाला ।

अमात्यः ४-२-१०४—साथ रहने वाला, मन्त्री ।

इहत्यः ,, यहाँ रहने वाला ।

क्वत्यः ,, कहाँ रहने वाला ।

ततस्त्यः ,, उससे होने वाला ।

तत्रत्यः ,, वहाँ होने या रहने वाला ।

औपरिष्टः ,, ऊपर होने या रहने वाला ।

आरातीयः ,, दूर या समीप होने या रहने वाला ।

नित्यः ,, सदा होने या रहने वाला ।

शाश्वतीयः ,, ,, ,,

निप्लव्यः ८-३१०१—वर्णाश्रम से निकला हुआ चाण्डाल आदि ।

आरण्याः सुमनसः ,, जंगल में होने वाले फूल ।

दूरेत्यः ,, दूर जाने वाला, पथिक ।

औत्तराहः ,, उत्तर होने वाला ।

ऐषमस्त्यम् ४-२-१०५—इस वर्ष होने वाला ।

ऐषमस्तनम् ,, ,,

ह्यस्त्यनम् ,, बीते हुए कल होने वाला ।

ह्यस्तनम् ,, ,,

इवस्तनम् ,, आने वाले कल होने वाला ।

इवस्त्यम् ,, ,,

शौवस्तिकम् ,, ,,

काकतीरम् ४-२-१०६—काकतीर नामक बाहीक ग्राम, (पतञ्जलि के अनुसार) में होने वाला ।

पल्वलतीरम् ,, पल्वलतीर (नामक बाहीक ग्राम में होने वाला ।

शैवरूप्यम् ,, शिव रूप्य नामक बाहीक ग्राम में होने वाला ।

बाहुरूप्यम् ,, बाहुरूप्य नामक ग्राम में होनेवाला ।

पौर्वेशालः ४-२-१०७—पूर्व के कमरे में होने या रहने वाला ।

पूर्वेषुकामशमः ,, पूर्वीय इषुकामशमी नामक ग्राम में होने वाला या रहने वाला ।

पौर्वमद्रः ४-२-१०८—पूर्वीय मद्र जनपद (बाहीक का उत्तरी भाग, जिसकी राजधानी स्याल कोट (शाकलथी) में होने या रहने वाला ।

अपरमद्रः ,, पश्चिमी मद्र में होने या रहने वाला ।

शैवपुरम् ४-२-१०९—शिवपुर में होने या रहने वाला ।

माहिकिप्रस्थः ४-२-११०—माहिकिप्रस्थ में होने या रहने वाला ।

पालदः ,, पलदि (बाहीक ग्राम) ग्राम में होने या रहने वाला ।

नैलीनकः ,, निलीनक (बाहीक ग्राम) में होने या रहने वाला ।

काण्वाः ४-२-१११—काण्व्य के छात्र ।

दाक्षाः ४-२-११२—दाक्षि के छात्र ।

सौतङ्गमीयम् ,, सौतङ्गमि सम्बन्धी या सौतङ्गमि का ।

पाणिनीयम् ,, पाणिनि सम्बन्धी या पाणिनि का ।

प्राष्टीयः ४-२-११३—प्राष्ठ सम्बन्धी या प्राष्ठ का ।

काशीया ,, काशी सम्बन्धी या काशी का ।

शालीयः ४-२-११४—कमरे में होने या रहने वाला या कमरे का ।

मालीयः ,, माला में होने वाला या माला का ।

तदीयः ,, उसका ।

एणीपचनीयः १-१-७५—एणीपचन नामक ग्राम में होने या रहने रहने वाला ।

गोनर्दीयः ,, गोनर्द (आधु० गोंडा) में ,,

भोजकटीयः ,, भोजकट नामक ग्राम ,,

एणीपचनः ,, एणीपचन ,,

गोनर्दः ,, गोनर्द ,,

भोजकटः ,, भोजकट ,,

आहिच्छत्रः ,, अहिच्छत्र (आधु० रामनगर, बरेली के पास) में होने या रहने वाला

कान्यकुब्जः ४-२-११४—कान्यकुब्ज (कन्नौज में) ”
 देवदत्तः ” देवदत्त (वाहीक ग्राम) नामक
 ग्राम में होने या रहने वाला ।
 देवदत्तीयः ” ” ”
 भावत्कः ४-२-११५—आप का ।
 भवदीयः ” ” ”
 भावतः ” ” ”
 काशिकी ४-२-११६—काशी में होने या रहने वाली ।
 काशिका ” ” ”
 वैदिकी ” वेदों में ”
 वैदिका ” ” ”
 आपत्कालिका ” आपत्ति के समय ”
 आपत्कालिका ” ” ”
 कास्तोरिकी ४-२-११७—कास्तोर (वाहीक ग्राम आधु-
 कसूर) में होने या रहने वाली ।
 कास्तोरिका ” ” ”
 सौदर्शनिकी ४-२-११८—सुदर्शन नामक उशीनर देश के
 वाहीक ग्राम में ”
 सौदर्शनिका ” ” ”
 सौदर्शनीया ” ” ”
 निषादकर्षुः ४-२-११९—निषादकर्षु नामक देश में ”
 नैषादकर्षुकः ” ” ”
 पाटवाः ” पटुनामक आचार्य के छात्र ”
 दाक्षिकर्षुकः ” दाक्षिकर्षु ” ”
 आढकजम्बुकः ४-२-१२०—आढयजम्बु (प्राच्यदेश) ”
 शाकजम्बुकः ” शाकजम्बु ” ”
 माल्लवास्तवः ” मल्ल वास्तु ” ”
 ऐरावतकः ४-२-१२१—ऐरावत नामक मल्लस्थल ”
 साङ्काश्यकः ” साङ्काश्य ” प्रदेश ”
 काम्पिल्यकः ” काम्पिल्य ” ” ”
 मालाप्रस्थकः ४-२-१२२—माला प्रस्थ (कुल्लजनपद
 का एक नगर आधु-
 मालयत ।
 नान्दीपुरकः ” नान्दी पुर ” ”
 पैलुवहकः ” पोलुवह ” ”
 पाटलिपुत्रकः ४-२-१२३—पाटलिपुत्र (पटना) ”
 काकन्दकः ” काकन्दी ” ”

आदर्शकः ४-२-१२४—आदर्श (सरस्वती के बालू में
 लुप्त होने का स्थान में) ”
 त्रैगर्तकः ४-२-१२४—त्रिगर्त (वाहीक का एक मुख्य
 भाग, आधु-कांगड़ा) में होने या
 रहने वाला ।
 अङ्गकः ४-२-१२—अङ्ग जनपद (वर्तमान भागलपुर
 का प्रदेश) में होने या रहने वाला ।
 अजमीढकः ” अजमीढ आधुनिक अजमेर)
 में होने या रहने वाला ।
 दार्वकः ” दार्व में होने या वाला ।
 कालञ्जरकः ” कालञ्जर में होने या रहने
 वाला ।
 वार्तनः ” वर्तनी में होने या रहने वाला ।
 दास्कच्छकः ४-२-१२६—दास्कच्छ (काठियावाड़ के
 समुद्रतट का प्रदेश) में होने
 या रहने वाला ।
 काण्डाग्नकः ” काण्डाग्नि (कंडाला बन्दरगाह के
 उत्तर पूर्व में तपता हुआ रेगि-
 स्तान) में होने या रहने वाला ।
 सैन्धुवक्त्रकः ” सिन्धुवक्त्र (जहाँ सिन्धु नदी
 समुद्र में मिलती है वह प्रदेश,
 में होने या रहने वाला ।
 बाहुवर्तकः ” बहुवर्त में होने या रहने वाला ।
 धौमकः ४-२-१२७—धूमनामदेश में होने या रहने
 वाला ।
 तैर्यकः ” तीर्थ नाम के देश में ”
 नागरकः चौरः शिल्पी वा ४-२-१२८—नगर होने या रहने
 वाला, चौर या चतुर
 मनुष्य ।
 नागराः ” नगर में होने या रहने वाला
 ब्राह्मण ।
 आरय्यकः ४-२-१२९—जंगल में होने या रहने वाला,
 मार्ग, उपनिषद, नियम, खेल,
 मनुष्य या हाथी ।
 आरय्यकाः ” जंगली कंडा जंगल में होने या
 रहने वाला ।
 आरय्या गोमयाः ” ”

कौरवकः ४-२-१३०—कुरुजनपद में होने वाला ।

कौरवः

यौगन्धरकः, यौगन्धरः,, युगन्धर (अम्बला जिले में सर-
स्वती से यमुना तक फैला
प्रदेश) होने या रहने वाला ।

मद्रकः ५-२-१३१—मद्र जनपद में उत्पन्न ।

वृजिकः,, वृजि,,

माहिषिकः ४-२-१३२—माहिषिक देश में उत्पन्न ।

काच्छः ४-२-१३३—कच्छ जनपद (सिन्धु के ठीक दक्षिण)
में उत्पन्न ।

सैन्धवः,, सिन्धु जनपद (सिन्धु नदी के पूर्व
सिन्धु सागर दोआब) में उत्पन्न ।

काच्छकः मनुष्यः ४-२-१३४—कच्छ जनपद में उत्पन्न
मनुष्य ।

काच्छकं हसितम्,, कच्छ के जनों का हँसना ।

काच्छो गौः,, कच्छ जनपद का बैल ।

साल्वको ब्राह्मणः ४-२-१३५—साल्व जनपद (अलवर से
लेकर उत्तरी बीकानेर
प्रदेश) में उत्पन्न ब्राह्मण ।

साल्वः पदातिर्ब्रजति,, साल्व जनपद में उत्पन्न
पैदल सैनिक जाता है ।

साल्वको गौः ४-२-१३६—साल्व जनपद में उत्पन्न बैल ।

साल्विका यवागुः,, साल्व जनपद की लक्ष्मी ।

साल्वमन्यत्,, साल्व जनपद की अन्य वस्तु ।

वृकगर्तीयम् ४-२-१३७—वृकगर्त (बिहार प्रदेश के आरा
जिले में स्थित गुप्तेश्वर महादेव
के पास का प्रदेश) में उत्पन्न ।

गह्वीयः ४-२-१३८—गह (गुफा) में उत्पन्न ।

मुखतीयम्,, मुख से उत्पन्न ।

पार्श्वतीयम्,, पार्श्व (बगल) से उत्पन्न ।

जनकीयम्,, जन का ।

परकीयम्,, दूसरों का ।

देवकीयम्,, देवता का ।

स्वकीयम्,, अपना, निजी ।

वैणुकीयम्,, बाँस से उत्पन्न ।

वैत्रकीयम्,, वेत से उत्पन्न ।

औत्तरपदकीयम् २-४-१३८—उत्तर पद सम्बन्धी ।

कटनगरीयम् ४-२-१३९—कटनगर में उत्पन्न ।

कटघोषीयम्,, कटघोष में उत्पन्न ।

कटपल्लवीयम्,, कटपल्लव में उत्पन्न ।

राजकीयम् ४-२-१४०—राजा का, राजा में होने या रहने
वाला ।

ब्राह्मणकीयः ४-२-१४१—ब्राह्मणक जनपद (सिन्धु प्रान्त
के मध्य में मीरपुरखास से २५
मील उत्तर) में होने या
रहने वाला ।

शाल्मलिकीयः,, शाल्मलिक जनपद में होने या
रहने वाला ।

अयोमुखीयः,, अयोमुख,,

दाक्षिकन्थीयम् ४-२-१४२—दाक्षिकन्था में,,

दाक्षिपलदीयम्,, दाक्षिपलद में,,

दाक्षिनगरीयम्,, दाक्षि नगर में,,

दाक्षिग्रामीयम्,, दाक्षि ग्राम,,

दाक्षिहृदीयम्,, दाक्षिहृद,,

पर्वतीयः ४-२-१४३—पर्वत,,

पर्वतीयानि फलानि ४-२-१४४—पर्वत में होने या रहने
वाले फल ।

पार्वताग्नि,,

पर्वतीयो मनुष्यः,, पर्वत में उत्पन्न मनुष्य ।

कृकणीयम् ४-२-१४५—भारद्वाज देशीय कृकण (पार्जितर
के अनुसार गढ़वाल) में उत्पन्न ।

पर्णीयम्,, पर्ण में उत्पन्न ।

कार्कणम्,, कृकण (जो भारद्वाज देशीय न हो)
में उत्पन्न ।

पार्णम्,, पर्ण (,,) में उत्पन्न ।

युष्मदीयः ४-३-१—तुम्हारा ।

अस्मदीयः,, हमारा ।

यौष्माकीणः ४-३-२—तुम्हारा ।

आस्माकीनः,, हमारा ।

यौष्माकः,, तुम्हारा ।

आस्माकः,, हमारा ।

तावकीनः, तावकः ४-३-३—तुम्हारा ।

मामकीनः, मामकः ,, मेरा ।

त्वदीयः ७-२-९८—तुम्हारा ।

मदीयः ,, मेरा ।

त्वत्पुत्रः ,, तुम्हारा पुत्र ।

मत्पुत्रः ,, मेरा पुत्र ।

अर्धः ४-३-४—आधे भाग का ।

परार्धम् ४-३-५—आखिरी आधे भाग का ।

अवरार्धम् ,, सबसे कम आधे भाग का ।

अधमार्धम् ,, निम्न आधे भाग का ।

उत्तमार्धम् ,, उत्तम आधे भाग का ।

पौर्वार्धिकम् ४-३-६—पूर्वी आधे भाग का ।

पूर्वार्धम् ,, ,,

पौर्वार्धाः ४-३-७—ग्राम या नगर के पूर्वी आधे भाग के ।

पौर्वार्धिका ,, ,,

मध्यमः ४-३-८—बीच का ।

मध्यो वैयाकरणः ४-३-९—साधारण कोटि का वैयाकरण,
न तीव्र न मन्द ।

मध्यं दारु ,, मझोली लकड़ी, न बहुत लम्बी
न बहुत छोटी ।

द्वैप्यम् ४-३-१०—द्वीप में होने या रहने वाला ।

द्वैप्या ,, ,, वाली ।

मासिकम् ४-३-११—महीने में होने वाला ।

सांवत्सरिकम् ,, वर्ष ,,

सायम्प्रातिकः ,, सुबह शाम ,,

पौनःपुनिकः ,, बार बार होने वाला

शारदिकं श्राद्धम् ४-३-१२—शरद ऋतु में होने वाला
श्राद्ध ।

शारदिकः शारदो वा रोग आतपो वा ४-३-१३—शरद ऋतु
में होने वाला रोग या
धूप ।

शारदं दधि ,, शरद ऋतु में उत्पन्न दही ।

नैशिकम् ४-३-१४—रात में होने वाला ।

नैशम् ,, ,,

प्रादोषिकं, प्रादोषम् ,, प्रदोष काल में होने वाला ।

शौवस्तिकम् ४-३-१५—आने वाले कल होने वाला या
तत्सम्बन्धी ।

सान्धिवेलम् ४-३-१६—दिन तथा रात के संयोग के
समय होने वाला ।

ग्रैष्मम् ,, गर्मी में होने वाला ।

तैषम् ,, पुष्य नक्षत्र में होने वाला ।

सांवत्सरं फलं पर्वं वा ,, वर्ष में होने वाला फल या पर्व ।

सांवत्सरिकमन्यम् ,, ,, अन्य

प्रावृषेयः ४-३-१७—वर्षा में होने वाला ।

वार्षिकं वासः ४-३-१८—वर्षा ऋतु में उपयोगी वस्त्र ।

हैमनम्, हैमन्तम् ४-३-२२—हेमन्त में होने वाला या
उत्पन्न ।

सायन्तनम् ४-३-२३—सायंकाल का ।

चिरन्तनम् ,, प्राचीन काल का ।

प्राह्णेतनम् ,, दोपहर के पहिले का ।

प्रगेतनम् ,, प्रातः काल का ।

दोषातनम् ,, रात का या रात में होने वाला ।

दिवातनम् ,, दिन का ,, दिन ,,

चिरत्नम् ,, प्राचीन काल का ।

परुत्नम् ,, गतवर्ष का ।

परारिन्तम् ,, गतवर्ष के पहिले वर्ष का ।

अग्रिमम् ,, आगे का ।

आदिमम् ,, प्रारम्भ का ।

पश्चिमम् ,, पीछे का ।

अन्तिमम् ,, अन्त का ।

पूर्वाह्णेतनम् ४-३-२४—दोपहर के पहिले का ।

अपराह्णेतनम् ,, दोपहर के बाद का ।

पूर्वाह्नतनम् ,, दोपहर के पहिले का ।

अपराह्नतनम् ,, दोपहर के बाद का ।

पौर्वार्हिकम् ,, दोपहर के पहिले का ।

आपराह्निकम् ,, दोपहर के बाद का ।

सौधः ४-३-२५—सुध नगर (पूर्वी पंजाब में यानेश्वर
से दक्षिण-पश्चिम लगभग पचास
मील पर स्थित वर्तमान सुध) में
उत्पन्न ।

औत्सः ४-३-२५—उत्स (झरना) में उत्पन्न ।
 राष्ट्रियः ,, राज्य या देश में उत्पन्न ।
 अवारपारीणः ,, दोनों तटों पर उत्पन्न ।
 प्रावृषिकः ४-३-२६—वर्षा ऋतु में उत्पन्न ।
 शारदका दर्भविशेषाः ४-३-२७—शरद् ऋतु में उत्पन्न होने वाली एक घास ।
 ,, सुदृगविशेषाश्च ,, मूँग ।
 पूर्ववार्षिकः ७-३-११—वर्षा के पहले उत्पन्न ।
 अपरहेमनः ,, हेमन्त के बाद में उत्पन्न ।
 पौर्ववार्षिकः ,, वर्षा के पूर्व भाग में उत्पन्न ।
 सुपाञ्चालकः ७-३-१२—सुन्दर पञ्चाल जनपद में उत्पन्न ।
 सर्वपाञ्चालकः ,, समस्त ,,
 अर्धपाञ्चालकः ,, आधे ,,
 पूर्वपाञ्चालकः ७-३-१३—पूर्वी पञ्चाल ,,
 पौर्वपाञ्चालः ,, ,,
 पौर्वमद्रः ,, पूर्वी मद्र ,,
 पूर्वपुकामशमः ७-३-१४—पूर्वी इपुकामशमी ,,
 पूर्वपाटलिपुत्रकः ,, पूर्वी पटना ,,
 पूर्वाह्नकः ४-३-२८—दोपहर के पहिले उत्पन्न ।
 अपराह्नकः ,, दोपहर के बाद ,,
 आर्द्रकः ,, आर्द्रा नक्षत्र में ,,
 मूलकः ,, मूल ,,
 प्रदोषकः ,, प्रदोष काल ,,
 अवस्करकः ,, मल में उत्पन्न ।
 पन्थकः ४-३-२९—मार्ग में उत्पन्न ।
 अमावास्याकः ४-३-३०—अमावास्या को उत्पन्न ।
 आमावास्यः ,, ,,
 अमावास्यः ४-३-३१— ,,
 सिन्धुकः ४-३-३२—सिन्धु जनपद में उत्पन्न ।
 अपकरकः ,, अपकर प्रदेश (मिर्यावाली जिले का भक्खर) में उत्पन्न ।
 सैन्धवः ४-३-३३—सिन्धु जनपद में उत्पन्न ।
 आपकरः ,, अपकर प्रदेश में उत्पन्न ।
 श्रविष्ठः ४-३-३४—श्रविष्ठा (श्रवण) नक्षत्र में उत्पन्न ।

फल्गुनः २-२-४९—फल्गुनी नक्षत्र में उत्पन्न ।
 चित्रा ,, चित्रा में उत्पन्न ।
 रेवती, रोहिणी ,, रेवती में रोहिणी में उत्पन्न ।
 फल्गुनी ,, फल्गुनी में उत्पन्न ।
 अषाढा ,, अषाढा नक्षत्र में उत्पन्न ।
 श्राविष्ठीयः ,, श्रवण में उत्पन्न ।
 आषाढीयः ,, अषाढा में उत्पन्न ।
 प्रोष्ठपादो माणवकः ७-३-१८—पूर्वाभाद्रपद तथा उत्तराभाद्रपद में उत्पन्न वालक ।
 प्रोष्ठपदः ,, ,,
 भाद्रपदः ,, भाद्रपद ,,
 गोस्थानः ४-३-३५—गायों के स्थान में उत्पन्न ।
 गोशालः ,, गोशाला में उत्पन्न ।
 खरशालः ,, गधों के रहने के स्थान में उत्पन्न ।
 वत्सशालः ४-३-३६—बछड़ा के रहने के स्थान में उत्पन्न ।
 वात्सशालः ,, ,,
 शतमिषजः ,, शतमिष नक्षत्र में उत्पन्न ।
 शतमिषः ,, ,,
 शतमिषक् ,, ,,
 रोहिणः, रौहिणः ४-३-३७—रोहिणी नक्षत्र में उत्पन्न ।
 स्रौघः ४-३-३८—स्रुघ्न (सुघ) में किया गया, पाया गया, खरीदा गया या निपुण ।
 स्रौघः ४-३-३९—स्रुघ्न में प्रचुरता से होने वाला ।
 औपजानुकः ४-३-४०—प्रायः घुटनों के समीप होने वाला ।
 औपकर्णिकः ,, ,, कानों ,,
 औपनीविकः ,, ,, नीवी ,,
 स्रौघः ४-३-४१—जो स्रुघ्न में संभव हो ।
 कौशेयम् वस्त्रम् ४-३-४२—रेशमी वस्त्र ।
 हेमन्तः प्राकारः ४-३-४३—जो हेमन्त ऋतु में सुखदायक हो, चादर ।
 वासन्त्यः कुन्दलताः ,, जो वसन्त ऋतु में फूले, कुन्दलता ।
 शारदाः शालयः ,, जो शरद् ऋतु में पके, जड़हन धान ।

हैमन्ताः यवाः ४-३-४४—हेमन्त ऋतु में जो बोया जाय, जौ ।

आश्वयुजकामाषाः ४-३-४५—जो आश्विन में बोये जायें उड़द ।

ग्रैष्मिकम्, ग्रैष्मम् ४-३-४६—जो गर्मी में बोया जाय ।
वासन्तिकम्, वासन्तिकम् ,, जो वसन्त में बोया जाय ।
मासिकम् ४-३-४७—जो ऋण महीने भर में दे दिया जाय ।

कलापकम् ४-३-४८—जो ऋण मयूरो के बोलने के समय दे दिया जाय ।

अश्वत्थकम् ,, जो ऋण पीपल में फल लगने के समय दे दिया जाय ।

यवधुसकम् ,, जिस समय जौ तथा भूसा तैयार होता है उस समय दिया जाने वाला ऋण ।

ग्रैष्मिकम् ४-३-४९—गर्मी में दे दिया जाने वाला ऋण ।
आवरसमकम् ,, आने वाले वर्ष में दे दिया जाने वाला ऋण ।

सांवत्सरिकम्, सांवत्सरिकम् ४-३-५०—वर्ष भर में दे दिया जाने वाला ऋण ।

आग्रहायणिकम्, आग्रहायणिकम् ,, अग्रहन में भुगतान कर दिया जाने वाला ऋण ।

नैशो मृगः, नैशिकः ४-३-५१—रात में बोलने वाला पशु ।
नैशिकः, नैशः ४-३-५२—जिस छात्र का अभ्यास रात में पढ़ने का हो ।

स्रौतः ४-३-५३—स्रुत में होने वाला ।

राष्ट्रियः ,, राज्य या देश में होने वाला ।

दिश्यम् ४-३-५४—दिशा में उत्पन्न ।

वर्ग्यम् ,, पक्ष या झुंड में उत्पन्न ।

दन्त्यम् ४-३-५५—जिसका उच्चारण दाँतों से किया जाय ।

कर्ण्यम् ,, कानों में उत्पन्न ।

सौहानागरः ७-३-२४—सुहानगर (आधु० राढ़) में उत्पन्न (वैजयस्ती प्रा० न०) ।

पौर्वनागरः ३-७-२४—पूर्वनागर में उत्पन्न (प्राच्य-नगर) ।

माद्रनगरः ,, मद्र नगर में उत्पन्न (उदीच्य-नगर) ।

कौरुजङ्गलम्, कौरुजाङ्गलम् ७-३-२५—कुरुजङ्गल (रोहतक, हाँसी, हिसार प्रदेश) में उत्पन्न ।

वैश्वधेनवम्, वैश्वधैनवम् ,, विश्वधेनु में उत्पन्न ।
सौवर्णवलजम्, सौवर्णवालजम् ,, सुवर्णवलज में उत्पन्न ।
दातैयम् ४-३-५६—मशक में होने वाला, उत्पन्न ।
कौचेयम् ,, पेट में होने वाला, म्यान में रहने वाली तलवार ।

कालशेयम् ४-३-५६—घड़े में उत्पन्न या रहने वाला ।
वास्तेयम् ,, पेड़ में होने वाला, उत्पन्न ।
आस्तेयम् ,, धन में होने या रहने वाला ।
आहेयम् ,, सर्प में रहने वाला विष ।
ग्रैवेयम्, ग्रैवम् ४-३-५७—रक्तवाहिनी नाड़ियों में रहने वाला ।

गाम्भीर्यम् ४-३-५८—गहराई में होने वाला, गहराई ।
पाञ्चजन्यम् ,, पञ्चजन नामक दैत्य के पास रहने वाला ।

परिमुख्यम् ४-३-५९—सामीप्य, उपस्थिति ।

औपकूलः ,, तट के समीप होने वाला ।

आन्तर्वैश्विकम् ४-३-६०—मकान के भीतर होने वाला ।
आन्तर्गणिकम् ,, गण या झुंड के भीतर होने वाला ।

आध्यात्मिकम् ,, आत्मा में होने वाला या उत्पन्न ।

आधिदैविकम् ७-३-२०—ईश्वर से होने वाला ।

आधिभौतिकम् ,, प्राणियों या पदार्थों में होने वाला ।

पेहलौकिकम् ,, इस लोक में होने वाला ।

पारलौकिकम् ,, दूसरे लोक में होने वाला ।

दाविकम् ७-३-१—देविका नदी में उत्पन्न । (आधुनिक
देग नदी जो जम्मू की पहाड़ियों से
निकल कर स्यालकोट शेखूपुरा जिलों
में होती रावी में मिली है)

दाविकाकूलाः शालयः ,, देग के तट पर होने वाले धान ।

शांशपश्मसः ,, शीशम की लकड़ी की बनी हुई
चौकोर कठौती ।

दात्यौहम् ,, दो वर्ष के बछड़े में होने वाला ।

दीर्घसत्रम् ,, दीर्घकालीन यज्ञ में होने वाला ।

श्रायसम् ,, कल्याण में होने वाला ।

पारिमामिकः ४-३-६१—गाँव के समीप होने वाला ।

आनुग्रामिकः ,, गाँव के पीछे होने वाला ।

जिह्मामूलीयम् ४-३-६२—जिह्वा की जड़ में उत्पन्न, वर्ण ।

अङ्गुलीयम् ,, अङ्गुली में रहने वाला, अँगुठी ।

कवर्गीयम् ४-३-६३—कवर्ग में रहने वाला ।

मद्वर्ग्यः, मद्वर्गीयः, मद्वर्गीयः ४ ३ ६४—मेरे पक्ष में रहने
वाला ।

कवर्गीयो वर्णः ,, कवर्ग का अक्षर ।

कर्णिका ४-३-६५—कानों में रहने वाला, वाली ।

ललाटिका ,, माथे पर ,, एक अलंकार ।

सौपो ग्रन्थः ४-३-६६—जिस ग्रन्थ में सुपविभक्तियों की
व्याख्या हो ।

तैडः ,, जिस ग्रन्थ में तिङ् प्रत्ययों की
व्याख्या हो ।

कार्तः ,, जिस ग्रन्थ में कृत् प्रत्ययों की
व्याख्या हो ।

सौपम् ,, सुपविभक्तियों में होने वाला ।

षात्वणत्विकः ४-३-६७—जिस शास्त्र में षत्व और णत्व
विधायक नियमों की व्याख्या हो ।

आग्निष्टोमिकः ४-३-६८—जिस ग्रन्थ में अग्निष्टोमयज्ञ
की व्याख्या हो ।

वाजपेयिकः ,, ,, वाजपेय ,,

राजसूयिकः ,, ,, राजसूय ,,

पाकयज्ञिकः ,, ,, पाकयज्ञ ,,

नावयज्ञिकः ,, ,, नवयज्ञ ,,

वसिष्ठः ४-३-६९—वसिष्ठ ऋषि से देखा गया मन्त्र ।

वासिष्ठिकोऽध्यायः ,, जिस अध्याय में वसिष्ठ मन्त्रों की
व्याख्या हो ।

वासिष्ठी ऋक् ४-३-६९—वसिष्ठ से उपलब्ध मन्त्रों की
व्याख्या करने वाली ऋचा ।

पौरोडाशिकः ४-३-७०—पुरोडाश की विधि बताने वाले
मन्त्र तथा जिसमें उसकी व्याख्या
हो ।

छन्दस्यः, छान्दसः ४-३-७१—छन्दा शास्त्र परक ग्रन्थ ।

पेष्टिकः ४-३-७२—इष्टि की व्याख्या करने वाला ग्रन्थ ।

पाशुकः ,, पशुबन्ध यज्ञ की व्याख्या करने
वाला ग्रन्थ ।

चातुर्होतृकः ,, चतुर्होताओं द्वारा किये जानेवाले यज्ञ
का व्याख्यान ग्रन्थ ।

ब्राह्मणिकः ,, ब्राह्मण ग्रन्थों की व्याख्या करने वाला
ग्रन्थ ।

आर्चिकः ,, ऋचाओं की व्याख्या करने वाला
ग्रन्थ ।

आर्गयनः ४-३-७३—ऋग्वेद के पारायण की व्याख्या करने
वाला ग्रन्थ ।

औपनिषदः ,, उपनिषदों की व्याख्या करने वाला
ग्रन्थ ।

वैयाकरणः ,, व्याकरण की व्याख्या करने वाला
ग्रन्थ ।

श्रौतः ४-३-७४—स्रुन् से आया हुआ (सुच) ।

शौल्कशालिकः ४-३-७५—चुंगी घर से आया हुआ (प्राप्त)
कर, धन, आय ।

शौचिकः ४-३-७६—मद्य विभाग से प्राप्त धन, आय ।

कार्कणः ,, कुकण (एक प्रकार का शिकारी
पक्षी) से प्राप्त आय ।

तैर्यः ,, तीर्थ से प्राप्त धन, आय ।

औदपानः ,, जलाशय से प्राप्त धन, आय ।

औपाध्यायकः ४-३-७७—उपाध्याय (आचार्य) से प्राप्त
ज्ञान ।

पैतामहकः ,, दादा से प्राप्त धन, सम्पत्ति ।

हौतुकम् ४-३-७८—होता से प्राप्त ।
 आतुकम् ,, भाई से प्राप्त ।
 पित्र्यम्, पैतृकम् ४-३-७९—पिता से प्राप्त ।
 वदम् ४-३-८०—वैदों से प्राप्त ।
 गार्गम् ,, गार्गों से प्राप्त ।
 दाक्षम् ,, दाक्षों से प्राप्त ।
 औपगवकम् ,, औपगवों से प्राप्त ।
 आशौचम्, अशौचम् ७-३-३०—अपवित्रता ।
 आनेश्वर्यम्, अनेश्वर्यम् ,, प्रभुत्व का अभाव ।
 आक्षेत्रज्ञम्, अक्षेत्रज्ञम् ,, मुखता ।
 आकौशलम्, अकौशलम् ,, ,,
 अनैपुणम्, अनैपुणम् ,, ,,
 समरूप्यम् ४-३-८१—समान कारण से प्राप्त ।
 विषमरूप्यम् ,, असमान कारण से प्राप्त ।
 समीयम् ,, समान कारण से प्राप्त ।
 विषमीयम् ,, असमान कारण से प्राप्त ।
 देवदत्तरूप्यम्,
 देवदत्तम्, देवदत्तीयम् ,, देवदत्त से प्राप्त ।
 सममयम् ४-३-८२—समान कारण से प्राप्त ।
 विषममयम् ,, असमान ,,
 देवदत्तमयम् ,, देवदत्त से प्राप्त ।
 हैमवती गङ्गा ४-३-८३—हिमालय से निकलने वाली
 गङ्गा ।
 वैदूर्यो मणिः ४-३-८४—विदूर (वाल्वाय) नामक पर्वत से
 निकलने वाली मणि ।
 स्रौघः पन्था दूतो वा ४-३-८५—स्रुघ्न (सुघ) जाने
 वाला मार्ग या दूत ।
 स्रौघं कान्यकुब्जद्वारम् ४-३-८६—स्रुघ्न की ओर जाने
 वाला कान्यकुब्ज का
 फाटक ।
 शारीरकीयः ४-३-८७—जीवात्मा के सम्बन्ध में लिखा
 गया ग्रन्थ, शारीरकसूत्रों का
 भाष्य ।
 शिशुकन्दीयः ४-३-८८—बच्चों के रोने के सम्बन्ध में
 लिखा गया ग्रन्थ ।

यमसभीयः ४-३-८८—यम की सभा के सम्बन्ध में
 लिखा गया ग्रन्थ ।
 किराताजुनीयम् ,, किरात तथा अर्जुन के सम्बन्ध
 में लिखा गया ग्रन्थ ।
 इन्द्रजननीयम् ,, इन्द्र की उत्पत्ति के सम्बन्ध में
 लिखा गया ग्रन्थ ।
 विरुद्धभोजनीयम् ,, विरुद्ध भोजन के सम्बन्ध में
 लिखा गया ग्रन्थ ।
 स्रौघः ४-३-८९—जिनका निवास स्रुघ्न में हो ।
 स्रौघः ४-३-९०—जिनके पूर्वज स्रुघ्न में रहे हों ।
 हृद्गोलीयाः ४-३-९१—जिन आयुषजीवियों के पूर्वजों का
 निवास हृद्गोल पर्वत रहा हो ।
 आर्षोदा द्विजाः ,, जिन ब्राह्मणों के पूर्वज ऋग्वेद
 पर्वत पर रहे हों ।
 शण्डिक्यः ४-३-९२—जिनके पूर्वज शण्डिक में रहे हों ।
 सैन्धवः ४-३-९३—जिनके पूर्वज सिन्ध में रहे हों ।
 तक्षशिलाः ,, जिनके पूर्वज तक्षशिला में रहे हों ।
 तौदेयः ,, जिनके पूर्वज तूदी में रहे हों ।
 सालातुरीयः ,, ,, सालातुर (लहुर) में
 रहे हों ।
 वार्मतेयः ,, ,, वर्मती में रहे हों ।
 सम्भवतः वामियाँ ।
 कौचवार्यः ,, जिनके पूर्वज कूचवार (कम्बोज के
 पूर्वतारि नदी के समीप कूचप्रदेश)
 में रहे हों ।
 स्रौघः ४-३-९५—जिनके पूर्वज स्रुघ्न में रहे हों ।
 आपूपिकः ४-३-९६—मालपूजा के प्रति जिसकी अभिरुचि
 हो ।
 पायसिकः ,, खीर ,, ,,
 देवदत्तः ,, देवदत्त के प्रति ,,
 स्रौघः ,, स्रुघ्न ,, ,,
 प्रैष्मः ,, ग्रीष्म ऋतु ,, ,,
 माहाराजिकः ४-३-९७—जो महाराज का भक्त हो ।
 वासुदेवकः ४-३-९८—जो वासुदेव ,,
 अर्जुनकः ,, जो अर्जुन ,,

- ग्लौचुकायनकः ४-३-९९—जो ग्लुचुकायनि का भक्त हो ।
 नाकुलकः " जो नकुल " "
 पाणिनीयः " जो पाणिनि का " "
 आज्ञकः ४-३-१००—जो अङ्ग जनपद का भक्त हो ।
 आज्ञकः " जो अङ्ग क्षत्रियों " "
 पाञ्चालाः " जो पञ्चाल ब्राह्मणों का भक्त हो ।
 पौरवीयः " जो पौरव राजा का भक्त हो ।
 पाणिनीयम् ४-३-१०१—जो पाणिनि से विशेष रूप से कहा गया हो । व्याकरण ।
 तैत्तिरीयाः ४-३-१०२—तैत्तिरि से कहे गये शास्त्र के पढ़ने वाले ।
 काश्यपिनः ४-३-१०३—काश्यप से कहे गये " "
 हरिद्रविणः ४-३-१०४—हरिद्रु " "
 आलम्बिनः " वैशम्पायन के शिष्य आलम्ब से कहे गये शास्त्र के पढ़ने वाले ।
 माल्लविनः ४-३-१०५—मल्ल से कहे गये शास्त्र के पढ़ने वाले ।
 शाट्यायनिनः " शाट्य से " "
 पैङ्गी " पिङ्ग से " की पढ़ने वाली ।
 याज्ञवल्कानि ब्राह्मणानि " याज्ञवल्क्य से कहे गये ब्राह्मण ग्रन्थ ।
 आश्वरथः कल्पः " अश्वरथ " कल्प ग्रन्थ ।
 शौनकिनः ४-३-१०६—शौनक से कहे गये शास्त्र के पढ़ने वाले ।
 कठाः ४-३-१०७—कठ " "
 चरकाः ४-३-१०८—चरक " "
 कालापाः ४-३-१०८—कलाप " "
 छागलेयिनः ४-३-१०९—छगलि " "
 पाराशरिणः, मित्रवः ४-३-११०—पाराशर्य " भिक्षुसूत्रों " "
 शैलाक्षिनो नटाः " शिलालि " नटसूत्रों " "
 कर्मन्दिनो मिश्रवः ४-३-१११—कर्मन्द " भिक्षुसूत्रों " "
 कृशाश्विनो नटाः " कृशाश्व " नटसूत्रों " "
 सौदामनी विद्युत् ४-३-११२—विजली जो सुदामा पर्वत की दिशा में हो ।
 पीलुमूलतः ४-३-११३—जो पीलुमूल की दिशा में हो ।
 उरस्यः, उरस्तः ४-३-११४—जो उरःस्थल की ओर हो ।
 पाणिनीयम् ४-३-११५—पाणिनि द्वारा विना उपदेश के ज्ञात, व्याकरण ।
 वाररुचो ग्रन्थः ४-३-११६—वररुचि से बनाया गया ।
 माक्षिकं मधु ४-३-११७—मधु मक्खियों से बनाया गया, शहद ।
 कौलालकम् ४-३-११८—कुम्हार से बनाया गया वर्तन ।
 वारुडकम् " वरुड से बनाया गया ।
 क्षौद्रम् ४-३-११९—मधुमक्खियों से बनाया गया मधु ।
 भ्रामरम् " भौरों से बनाया गया ।
 वाटरम् " वटरों से बनाया गया ।
 पादपम् " पादप से बनाया गया ।
 औपगवम् ४-३-१२०—उपगु सम्बन्धी या उपगु का ।
 सांवहितम् " संबोड़ा की सम्पत्ति ।
 अग्नीत् " जो यज्ञ की आग को जलाये, ऋत्विग्विशेष ।
 आग्नीध्रम् " उस ऋत्विग्विशेष का स्थान ।
 आग्नीध्रः " उस स्थान में रहने वाली आग ।
 सामिधेन्यः, मन्त्रः " आग में समिधा डालने के समय पढ़ा जाने वाला, मन्त्र ।
 सामिधेनी ऋक् " के समय पढ़ी जाने वृत्ता ।
 रथम् चक्रम् ४-३-१२१—रथ सम्बन्धी या रथ का, पहिया ।
 पत्त्रं बाहनम् ४-३-१२२—जिससे कोई जाता हो, सवारी ।
 आश्वरथम् ४-३-१२३—घोड़ा गाड़ी सम्बन्धी या घोड़ा गाड़ी का, पहिया ।
 आश्वम् " घोड़ा के डोने योग्य बोझा ।
 आध्वर्यवम् " अध्वर्यु सम्बन्धी या अध्वर्यु का ।
 पारिषदम् " परिषद " परिषद् का ।
 हालिकम् ४-३-१२४—हल सम्बन्धी या हल का ।
 सैरिकम् " " "
 काकोलूकिका ४-३-१२५—कौआ और उल्लू का बैर ।
 कुरसकुशिकिका " कुत्स और कुशिक का विवाह ।
 दैवासुरम् " देव और असुर का बैर ।
 औपगवकम् ४-३-१२६—उपगु सम्बन्धी या उपगु का ।
 काठकम् " कठों का धर्म या परम्परा ।

वैदः, सङ्क्षोऽङ्को घोषो वा ४-३-१२७—विदों का समूह,
चिह्न अथवा गोशाला ।
वैदम्, लक्षणम् ,, विदों का गुण ।
गार्गः, गार्गम् ,, गर्गों का समूह चिह्न अथवा
गोशाला ।
दाक्षः, दाक्षम् ,, दक्ष के वंशजों का समूह ,,
शाकलः, शाकलकः ४-३-१२८—शाकलसे कहे गये शास्त्रों
के पढ़ने वालों का समूह,
चिह्न अथवा गोशाला ।
छान्दोग्यम् ४-३-१२९—छान्दोग्यों का धर्म या परम्परा ।
औक्थिकम् ,, औक्थिकों ,,
याज्ञिक्यम् ,, याज्ञिकों ,,
वाह्व्यम् ,, बह्वृचों ,,
नाट्यम् ,, नटों ,,

दाक्षाः, दशद्विभाषाः शिष्या वा ४-३-१३०—दाक्षि के कम
अवस्था के
सीखने वाले
ब्रह्मचारी अथ-
वा शिष्य ।
रैवतिकीयः ४-३-१३१—रैवतिक सम्बन्धी या रैवतिक
का शिष्य ।
वैजवापीयः ,, वैजवापि ,, वैजवापि ,,
कौपिञ्जलः ,, कौपिञ्जल सम्बन्धी या
कौपिञ्जल का शिष्य ।
हास्तिपदः ,, हास्तिपद ,, हास्तिपद ,,
हास्तिपदः ,, हास्तिपद की सन्तान ।
अथर्वणः धर्म आम्नायो वा ,, आथर्वणिक का धर्म या पर-
म्परा ।

इति शैविकं प्रकरणम् ।

अथ प्राग्दीन्यतीयप्रकरणम्

आश्मः ४-३-१३४—पत्थर का बना हुआ ।
भास्मनः ,, भस्म ,,
मार्त्तिकः ,, मिट्टी ,,
मायूरः ४-३-१३५—मोर का बना हुआ अथवा मोर का
अंग ।
मौर्वे काण्डं भस्म वा ,, गोकर्णी ओषधि का अंग अथवा
बना हुआ, डंठल या राख ।
पैपलम् ,, पीपल का अंग या बना हुआ ।
वैल्वम् ४-३-१३६—वेल का अंग या बना हुआ ।
सार्कवम् ४-३-१३७—तर्कु (टेकुआ) का अंग या बना हुआ ।
तैत्तिडीकम् ,, इमली का अंग या बना हुआ ।
त्रापुषम् ४-३-१३८—टिन (जस्ते) का बना हुआ ।
जातुषम् ,, लाख का बना हुआ ।
दैवदारवम् ४-३-१३९—देवदार का अंग या उससे बना
हुआ ।
भाद्रदारवम् ,, देवदार विशेष का अंग या
उससे बना हुआ ।

दाधित्यम् ४-३-१४०—केये का अंग या उससे बना
हुआ ।
कापित्यम् ,, ,,
पलाशम् ४-३-१४१—पलाश का अंग या उससे बना
हुआ ।
खादिरम् ,, कथे का अंग या उससे बना
हुआ ।
कारीरम् ,, करील का अंग या उससे बना
हुआ ।
शामीलं भस्म ४-३-१४२—शमी का राख ।
शामीली खुक् ,, शमी की खुवा ।
अश्ममयम्, आश्मनम् ४-३-१४२—पत्थर का अंग या
उससे बना हुआ ।
मौद्गः, सूपः ४-३-१४३—मूँग की बनी हुई दाल ।
कार्पासमाच्छादनम् ,, कपास का बना हुआ (सूती)
वस्त्र ।
आम्रमयम् ४-३-१४४—आम का अंग या उससे बना
हुआ ।

शरमयम् ४-१-४४—नरकुल का अंग या उससे बना हुआ ।	शामीलम् ४-३-१५५ शमी का अंग या उससे बना हुआ ।
त्वल्मयम् ,, त्वचा (छाल) का बना हुआ या उसका अंग ।	दाधित्थम् ,, कैथे का अंग या उससे बना हुआ ।
वाल्मयम् ,, वाणी से बना हुआ साहित्य ।	कापित्थम् ,, ,,
आप्यम्, अम्मयम् ,, पानी से बना हुआ ।	वैल्वमयम् ,, वेल का अंग उससे बना हुआ ।
गोमयम् ४-३-१४५—गोबर ।	नैष्किकम् ४-३-१५६—निष्क (अशर्फी) से खरीदा गया ।
पिष्टमयम्, भस्म ४-३-१४६—आटे का बना हुआ भस्म ।	नैष्किकः ,, अशर्फी का बना हुआ ।
पैष्टी, सुरा ,, आटे की बनी शराब ।	शत्यः, शक्तिकः ,, सौ कार्षापण से खरीदा गया ।
पिष्टकः ४-३-१४७—आटे का बना हुआ पूआ ।	औष्ट्रकः ४-३-१५७—ऊँट का अंग या उससे बना हुआ ।
ब्रीहिमयः पुरोडाशः ४-३-१४८—धान का बना हुआ पुरोडाश ।	औमम्, औमकम् ४-३-१५८—अलसी का बना हुआ, रेशमी वस्त्र ।
ब्रैह्म, अन्यत् ,, धान की बनी हुई दूसरी वस्तु ।	और्णम्, और्णकम् ,, ऊन का बना हुआ, ऊनी वस्त्र ।
तिलमयम् ४-३-१४९—तिल का बना हुआ या उसका अंग ।	ऐणेयम् ४-३-१५९—काली मृगी का अंग, मांस ।
यवमयम् ,, जौ का बना हुआ ।	ऐणम् ,, काले मृग का अंग ।
तैलम् ,, तेल ।	गव्यम् ४-३-१६०—दूध, दही, घी ।
चावकः ,, दिना भूसी के जौ को उवाल कर दूध चीनी डालकर तैयार किया गया पदार्थ ।	पयस्यम् ,, दही, घी ।
तालं धनुः ४-३-१५२—ताड़ का बना हुआ धनुष ।	द्रव्यम् ४-३-१६१—वृक्ष का अंग, लाख आदि ।
तालमयम् ,, ताड़ की बनी हुई अन्य वस्तु ।	द्रुवयम् ४-३-१६२—लकड़ी का एक माप ।
ऐन्द्रायुधम् ,, वज्र का बना हुआ ।	आमलकम् ४-३-१६३—आंवला (फल) ।
हाटकः, तापनीयः, सौवर्णो वा निष्कः ४-३-१५३—सोने का बना हुआ निष्क (वैदिक काल की १६ मासे की स्वर्णमुद्रा)	प्लाक्षम् ४-३-१६४—पाकड़ का फल ।
हाटकमयी, यष्टिः ,, सोने की बनी हुई छड़ी ।	नैयग्रोधम् ७-२-५—बरगद का फल ।
शौकम् ४-३-१५४—तोते का अंग या उससे बना हुआ ।	जाम्बवम्, जम्बु ४-३-१६५—जामुन का फल ।
वाकम् ,, बगुले का अंग या उससे बना हुआ ।	जम्बूः ,, जामुन का फल ।
राजतम् ,, चाँदी का बना हुआ ।	ब्रीहयः ,, धान ।
	मुद्गाः ,, मूँग ।
	मल्लिका ,, मोगरे का फूल ।
	जाती ,, चमेली का फूल ।
	विदारी ,, विदारी कन्द ।
	पाटलानि, पुष्पाणि ,, गुलाब के फूल ।
	साल्वानि, भूलानि ,, साल्व नामक वृक्ष की जड़ ।
	अशोकम् ,, अशोक का फूल ।
	करवीरम् ,, कर्नैल का फूल ।
	हरीतक्यः ४-३-१६७—हर्रे के फल ।

कंसीयम् ४-३-१६८—जिससे प्याला बनाया जाय,	परशव्यम् ४-३-१६८—जिससे कुल्हाड़ी बनायी जाय,
काँसा ।	लोहा ।
कांस्यम् ,, काँसे का बना हुआ ।	पारशवः ,, लोहे का बना हुआ ।

इति प्राग्दिव्यतीयप्रकरणम् ।

अथ ठगधिकारप्रकरणम्

माशब्दिकः ४-४-१—“शब्द (शोरगुल) मत करो”	गौपुच्छिकः ४-४-६—गाय की पूँछ पकड़कर पार करने वाला ।
कहने वाला ।	
स्वागतिक ७-३-७—“स्वागत” कहने वाला ।	नाचिकः ४-४-७—नौका से पार करने वाला ।
स्वाध्वरिकः ,, “उत्तम यज्ञ” कहने वाला ।	घटिकः ,, घड़े से पार करने वाला ।
स्वाङ्गिः ,, स्वङ्ग का पुत्र ।	बाहुका ,, हाथों से तैर कर पार जाने वाली ।
व्याङ्गिः ,, व्यङ्ग का पुत्र ।	हास्तिकः ४-१-८—हाथी से यात्रा करने वाला ।
व्याडिः ,, व्यड का पुत्र ।	शाकटिकः ,, बैलगाड़ी से यात्रा करने वाला ।
व्यावहारिकः ,, व्यवहार (प्रथा) जानने वाला ।	दाधिकः ,, दही से भोजन करने वाला ।
स्वापतेयम् ,, धन ।	आकर्षिकः ४-४-९—कसीटी को साथ लेकर चलने वाला ।
प्राभूतिकः ,, “बहुत” कहने वाला ।	आकर्षिकी ,, ,, ,, वाली ।
पार्याप्तिकः ,, “काफी” कहने वाला ।	परिपिकः ४-४-१०—जिस लकड़ी को हाथ में लेकर पंगु चलते हैं उससे चलने वाला ।
सौस्नातिकः ,, “तुमने अच्छी तरह स्नान कर लिया” यह पूछने वाला ।	परिपिकी ,, ,, ,, वाली ।
सौख्यशायनिकः ,, “तुमने अच्छी तरह सो लिया” यह पूछने वाला ।	अश्विकः ,, घोड़े से चलने वाला ।
पारदारिकः ,, पर स्त्री से सम्बन्ध रखने वाला ।	रथिकः ,, रथ से चलने वाला ।
गौरुत्तल्लिकः ,, गुरु पत्नी से सम्बन्ध करने वाला ।	श्वामास्त्रिः ४-४-११, ७-३-८—श्वभस्त्र का पुत्र ।
आक्षिकः ४-४-२—पासे से जुआ खेलने वाला, ज्वारी ।	श्वदंष्ट्रिः ,, श्वदंष्ट्र का पुत्र ।
आम्निकः ,, फण्ही (लकड़ी की कुदाली) से खोदने वाला ।	श्वगणिकः, श्वगणिकः ,, कुत्तों को लेकर चलने वाला, कुत्तों से निर्वाह करने वाला ।
आक्षिकः ,, पासों से जीतने वाला ।	श्वगणिकी, श्वगणिकी ,, ,, ,, वाली ।
आक्षिकम् ,, पासों से जीता गया ।	श्वापदम्, शौवापदम् ७-३-९—हिंसक पशु सम्बन्धी ।
दाधिकम् ,, दही से स्वादिष्ट बनाया गया ।	वैतनिकः ४-४-१२—वेतन लेकर निर्वाह करने वाला ।
मारीचिकम् ,, मिर्च से स्वादिष्ट बनाया गया ।	धनुष्कः ,, धनुष से निर्वाह करने वाला ।
कौलुत्थम् ,, कुलयी से स्वादिष्ट बनाया गया ।	वास्निकः ४-४-१३—पूँजी लगाकर निर्वाह करने वाला ।
तैन्तिडिकम् ,, इमली से स्वादिष्ट बनाया गया ।	क्रयविक्रयिकः ,, खरीद फरोस्त से निर्वाह करने वाला ।
औडुपिकः ४-४-५—डोंगी (छोटी नाव) से पार करने वाला ।	क्रयिकः ,, खरीद कर निर्वाह करने वाला ।
	विक्रयिकः ,, बेचकर निर्वाह करने वाला ।

आयुधीयः, आयुधिकः ४-४-१४—शस्त्र से निर्वाह करने वाला, सिपाही ।

औत्सङ्गिकः ४-४-१५—गोद में लेकर चलने वाला ।

मास्त्रिकः ४-४-१६—चमड़े की थैली (भाथी के आकार की) से ले जाने वाला ।

भाक्षिकी ,, ,, ,, ,, वाली ।

विवधिकः, वैवधिकः ४-४-१७—बहूँगी से ढोने वाला ।

वीवधिकः ,, ,, ,,

वीवधिकी ,, ,, वाली ।

कौटिलिकः, व्याधः, कर्मारश्च ४-४-१८—गति विशेष से चलकर शिकार करने वाला व्याध अथवा अँगोठी में आग लेकर चलने वाला लोहार ।

आक्षयूतिकं, वैरम् ४-४-१९—जो बढ़ती हुई शत्रुता जुए से शान्त हो गयी हो ।

कृत्रिमम् ४-४-२०—बनावटी, बना हुआ ।

पक्त्रिमम्, पाक्त्रिमम् ,, पका हुआ ।

त्यागिमम् ,, त्यागा हुआ ।

आपमित्यकम् ४-४-२१—जो ऋण जिस रूप में लिया जाय उसी रूप में चुका दिया जाय ।

याचितकम् ,, मँगनी की वस्तु, जो लौटायी न जाय ।

दाधिकम् ४-४-२२—दही मिला हुआ ।

चूर्णिनोऽपूपाः ४-४-२३—चूर्ण (आटा) मिले हुए पूए ।

लवणः, सूपः ४-४-२४—नमक मिली हुई दाल ।

लवणम्, शाकम् ,, नमक मिला हुआ शाक ।

मौद्गः, ओदनः ४-४-२५—भूँग मिला हुआ भात, खिचड़ी ।

औजसिकः, झूरः ४-४-२७—शक्ति से रहने वाला, चीर ।

साहसिकः, चौरः ,, हिम्मत से रहने वाला, चोर ।

आम्भसिकः, मत्स्यः ,, जल में रहने वाली मछली ।

प्रातीपिकः ४-४-२८—प्रतिकूल रहने वाला ।

आन्वीपिकः ,, अनुकूल रहने वाला ।

प्रातिलोमिकः ,, प्रतिकूल रहने वाला ।

आनुलोमिकः ४-४-२८—अनुकूल रहने वाला ।

प्रातिकूलिकः ,, प्रतिकूल रहने वाला ।

आनुकूलिकः ,, अनुकूल रहने वाला ।

पारिमुखिकः ४-४-२९—स्वामी के मुख के सामने (समीप) रहने वाला सेवक ।

पारिपार्श्विकः ,, स्वामी के समीप रहने वाला सेवक ।

द्वैगुणिकः ४-४-३०—द्वय प्रतिशत सूद लेने वाला ।

त्रैगुणिकः ,, त्रिगुना सूद लेने वाला ।

वार्षुषिकः ,, धन वृद्धि के लिए ऋण देने वाला सूदखोर ।

कुसीदिकः ४-४-३१—कड़ी दर पर सूद लेने वाला सूदखोर ।

कुसीदिकी ,, ,, वाली ।

दशैकादशिकः ,, दस रुपये देकर महीने भर बाद ग्यारह रुपया लेने वाला ।

दशैकादशिकी ,, ,, ,, वाली ।

बादरिकः ४-४-३२—बेर बिनने वाला ।

सामाजिकः ४-४-३३—अपनी उपस्थिति से समाज (सभा) की सहायता करने वाला ।

शाब्दिकः ४-४-३४—जो शब्द को सिद्ध करता है, वैयाकरण ।

दादुरिकः ,, जो मिट्टी के घड़े को बजाता है ।

पाक्षिकः ४-४-३५—चिड़ीमार जो पक्षियों की मारता है ।

शाकुनिकः ,, ,, ,,

मायूरिकः ,, ,, मयूरों ,,

मास्त्यिकः ,, मछुआहा जो मछलियों ,,

मैनिकः ,, ,, ,,

शाकुलिकः ,, ,, ,,

मार्गिकः ,, जो मृगों को मारता है ।

हारिणिकः ,, जो मृगों को मारता है ।

सारङ्गिकः ,, ,, ,,

पारिपन्थिकश्चौरः ४-४-३६—जो मार्ग को छोड़कर या घेर कर बैठता है, चोर ।

पारिपन्थिकः ,, जो मार्ग में लोगों को मारता है, डाकू ।

दाण्डमाधिकः ४-४-३७—लम्बी सड़क पर यात्रा करने
या दौड़ने वाला ।
पादचिकः ,, मार्ग पर चलने वाला, पथिक ।
आनुपदिकः ,, पीछे-पीछे दौड़ने वाला ।
आक्रन्दिकः ४-४-३८—दुःस्त्रियों के रोने के स्थान पर
दौड़कर जाने वाला ।
पौर्वपदिकः ४-४-३९—पूर्वपद पर लिखा हुआ ग्रन्थ या
उसका पढ़ने वाला ।
औत्तरपदिकः ,, उत्तरपद पर लिखा हुआ ग्रन्थ या
उसका पढ़ने वाला ।
प्रातिकण्ठिकः ४-४-४०—जिस वैयाकरण ने निपात ने सिद्ध
प्रयोगों का संग्रह या व्याख्या
किया हो ।
आर्थिकः ,, अर्थ विचार का प्रतिपादक ग्रन्थ ।
लालामिकः ,, चिह्न या सौन्दर्य ग्रहण करने
वाला ।
धार्मिकः ४-४-४१—धर्माचरण करने वाला ।
अधार्मिकः ,, अधर्म (पाप) करने वाला ।
प्रतिपथिकः, प्रातिपथिकः ४-४-४२—मार्ग से चलने वाला ।
सामवायिकः ४-४-४३—सभा में सम्मिलित होने वाला ।
सामूहिकः ,, समूह में ,,
पारिषद्यः ४-४-४४—जो सभा में सम्मिलित होता है ।
सैन्याः, सैनिकाः ४-४-४५—सेना के सदस्य ।
लालाटिकः ४-४-४६—ललाट (मुख) देखने वाला,
नौकर ।
कौक्कुटिको मिश्रुः ,, मुर्गी की उड़ान की दूरी तक
देखने वाला, मिश्रु ।
आपणिकम् ४-४-४६—बाजार का कर (शरी) ।
माहिषम् ४-४-४८—रानी का कर्तव्य ।
याजमानम् ,, यजमान का कर्तव्य ।
यात्रम् ४-४-४९—यात्री का कर्तव्य ।
नारी ,, स्त्री ।
नैशस्त्रम् ,, शासन, नियम ।
नैमाजिस्त्रम् ,, बेटवारा ।
आपणिकः ४-४-५०—बाजार का कर (शरी)
आपूपिकः ४-४-५१—पूजा वेचने वाला हलवाई ।

लावणिकः ४-४-५२—नमक बेचने वाला ।
किसरिकः ४-४-५३—सुगन्धित द्रव्य बेचने वाला ।
किसरिकी ,, ,, वाली ।
शालालुकः, शालालुकः ४-४-५४— ,, वाला ।
शालालुकी, शालालुकी ,, ,, वाली ।
मार्दङ्गिकः ४-४-५५—मृचङ्ग बजाने वाला ।
माड्डुकः, माड्डुकिकः ४-४-५६—मड्डु बजाने वाला ।
शार्शरः, शार्शरिकः ,, ,, शार्श बजाने वाला ।
आसिकः ४-४-५७—तलवार चलाने वाला ।
धानुष्कः ,, धनुष चलाने वाला ।
पारश्वधिकः ४-४-५८—परशु चलाने वाला ।
शान्तीकः ४-४-५९—शक्ति चलाने वाला ।
याष्टीकः ,, लाठी चलाने वाला ।
आस्तिकः ४-४-६०—ईश्वर की सत्ता मानने वाला ।
नास्तिकः ,, ,, न मानने वाला ।
दैष्टिकः ,, भाग्य को मानने वाला ।
आपूपिकः ४-४-६१—पूजा खाने वाला ।
छात्रः ४-४-६२—गुरु के दोषों को छिपाने वाला ।
कर्मः ४-४-६३—काम करने वाला, मजदूर, नौकर ।
कर्मणः ,, काम का ।
ऐकान्यिकः ४-४-६४—पढ़ने में एक गलती करते वाला
छात्र ।
द्वादशान्यिकः ,, ,, बारह ,, ,,
आपूपिकः ४-४-६५—जिसको पूर का खाना हितकारक
हो ।
आग्रमोजनिकः ४-४-६६—जिस ब्राह्मण को प्रतिदिन
नियम से अग्र भोजन
दिया जाता हो ।
श्राणिकः ४-४-६७— ,, व्यक्ति ,, शाक ,,
श्राणिकी ,, ,, ,, ,, ,,
मांसौदनिकः ,, ,, ,, मांस चावल
मांसिकः ,, ,, ,, मांस ,,
औदनिकः ,, ,, ,, भात ,,
मात्तः, मात्तिकः ४-४-६८— ,, ,, भात ,,
आकरिकः ४-४-६९—खानों का निरीक्षक ।
देवागारिकः ४-४-७०—देवमन्दिर का निरीक्षक ।

इमाशानिकः ४-४-७१—श्मशान में अध्ययन करने वाला ।
 चातुर्दशिकः ,, चतुर्दशी को अध्ययन करने वाला ।
 वांशकठिनिकः ४-४-७२—ब्रांस के वन में व्यवसाय करने वाला ।
 प्रास्तारिकः ,, समूह के साथ खनिज धातुओं का व्यापार करने वाला, यज्ञ में व्यवहार करने वाला ।

सांस्थानिकः ४-४-७३—व्यापारियों के समूह के साथ व्यवहार करने वाला ।
 नैकटिकः, भिक्षुः ४-४-७३—गाँव के भीतर नहीं, बल्कि गाँव के समीप रहने वाला भिक्षु ।
 आवसथिकः ४-४-७४—गृह में रहने वाला, गृहस्थ ।
 आवसथिकी ,, ,, वाली, गृहस्था ।

इति ठगधिकारप्रकरणम् ।

अथ प्राग्धितीयप्रकरणम्

रथ्यः ४-४-७५, ७६—रथ खींचने वाला, बैल या घोड़ा ।
 युग्यः ,, जुआ ढोने वाला, बैल ।
 प्रासङ्ग्यः ,, बछड़ों को निकालने के लिए धनुषाकार लकड़ी को कन्धे पर ढोने वाला ।
 धुर्यः, धौरेयः ४-४-७७—बोझ ढोने वाला, लट्ठ बैल ।
 सर्वधुरीणः ४-४-७८—सब प्रकार के बोझ को ढोने वाला ।
 एकधुरीणः, एकधुरः ४-४-७९—एक ही प्रकार के बोझ को ढोने वाला ।
 शाकटो गौः ४-४-८०—गाड़ी खींचने वाला बैल ।
 हालिकः ४-४-८१—हल ढोने वाला, किसान, हलवाहा ।
 सौरिकः ,, हल खींचने वाला, बैल ।
 जन्या ४-४-८२—बहू को ले जाने वाली सखी ।
 पद्याः शर्कराः ४-४-८३—पैरों में चुभने वाली, कंकड़ी ।
 धन्यः ४-४-८४—वन पाने वाला ।
 गण्यः ,, चरण या शब्द समूह वाला, समूह या झुंड प्राप्त करने वाला ।
 आन्नः ४-४-८५—जिसको भोजन मिल गया हो ।
 वश्यः ४-४-८६—वश में रहने वाला, आश्रित, नौकर ।
 पद्यः, कर्दमः ४-४-८७—जिसमें पैर दिखाई पड़े, कीचड़, जो अत्यन्त सूखा न हो ।

मूल्याः, मुद्गाः ४-४-८८—जड़ से उखाड़ी जाने वाली मूँग ।
 धेनुव्या ४-४-८९—बन्धक (गिरवी) रक्खी गई गाय ।
 गार्हपत्योऽग्निः ४-४-९०—अग्नि होत्र के लिए गृहपति अग्नि ।
 नाव्यम् ४-४-९१—नौका से पार करने योग्य जल ।
 वयस्यः ,, समान वय वाला, मित्र ।
 धर्म्यम् ,, धर्म से प्राप्त करने योग्य ।
 विष्यः ,, जो विष देकर मारने योग्य हो ।
 मूल्यम् ,, जी मूलधन प्राप्त किया जा सके, कीमत ।
 मूल्यः ,, मूलधन से प्राप्त करने योग्य, वस्त्र आदि ।
 सीत्यं क्षेत्रम् ,, जो कूँड़ से नापा जा सके, खेत ।
 तुल्यम् ,, जो तराजू से नापा या तोला जा सके, समान, सदृश ।
 धर्म्यम् ४-४-९२—धर्मयुक्त ।
 पथ्यम् ,, लाभदायक भोजन ।
 अर्थ्यम् ,, उपयुक्त ।
 न्याय्यम् ,, समुचित ।
 छन्दस्यम् ४-४-९३—इच्छानुसार बनाया गया ।
 औरसः, उरस्यः ४-४-९४—सगा पुत्र ।

हृद्यो देशः ४-४-९५—हृदय को प्रिय, मनोहर देश ।
हृद्यो वशीकरणमन्त्रः ४-४-९६—दूसरों के हृदय को वश
में करने वाला मंत्र ।

मत्स्यम् ४-४-९७—ज्ञान प्राप्त करने का साधन ।
जन्यः, " लोगों का कहना, किंवदन्ती ।
हल्यः, " जुता हुआ ।

अग्र्यः ४-४-९८—आगे रहने या चलने में कुशल,
अगुआ ।

सामन्यः " सामवेद में निपुण, कुशल ।
कर्मण्यः " काम करने में दक्ष ।
शरण्यः " शरण देने में कुशल ।

प्रातिजनीनः ४-४-९९—जो शत्रु का मुकाबला करने में
कुशल हो या प्रति व्यक्ति के
लिए सज्जन हो ।

सांयुगीनः " जो युद्ध में कुशल हो ।
सार्वजनीनः " जो सब के लिए भला हो ।
वैश्वजनीनः " जो संसार के लिए उत्तम हो ।

भाक्ताः शाल्यः ४-४-१००—भात बनाने के लिए
उपयुक्त, धान ।

पारिषदः, पारिषदः ४-४-१०१—जो व्यवस्थापिका सभा-
के कार्यों में कुशल हो,
मन्त्री ।

काथिकः ४-४-१०२—कहानी कहने में निपुण ।
गौडिक इक्षुः ४-४-१०३—गुड़ बनाने के लिए उपयुक्त,
ईख ।

सात्तुका यवाः " सत्तू बनाने के लिए उत्तम,
यव ।

पाथेयम् ४-४-१०४—यात्रा में लाभदायक, कलेवा,
जलपान ।

आतिथेयम् " अतिथि सत्कार ।
वासतेयी " निवास के लिए उपयुक्त, रात्रि ।

स्वापतेयं धनम् " स्वामी को लाभदायक, धन ।
सम्यः ४-४-१०५—सभा या समाज के लिए उपयुक्त,
शिष्ट व्यक्ति ।

सतीर्थ्यः ४-४-१०७—एक आचार्य के पास रहने वाला,
सह छात्र ।

समानोदर्यो भ्राता ४-४-१०८—एक ही उदर (गर्भ) में
रहने वाला, सगा भाई ।

सोदर्यः ४-४-१०९—

" "

इति प्राग्वितीयप्रकरणम् ।

अथ छयतोरधिकारः

नभ्योऽक्षः ५-१-१, २—पहिये के मध्य के छिद्र के लिए
उपयुक्त धुरी ।

नभ्यमञ्जनम् " " तेल या वेसलिन ।

शून्यम्, शून्यम् " कुत्ते के लिए उपयुक्त ।

ऊधन्यः " कुआँ ।

कम्बल्यम् ५-१-३—कम्बल बनाने के लिए उपयोगी,
पाँच सेर ऊन ।

कम्बलीया ऊर्णा " कम्बल बनाने के लिए उपयोगी
ऊन ।

आमिक्ष्यम्, आमिक्षीयं दधि ५-१-४—दही बनाने के लिए
उपयोगी, जोरन ।

पुरोडाश्यास्तण्डुलाः पुरोडाशीया चा " पुरोडाश बनाने के
लिए उपयोगी चावल ।

अपूप्यम्, अपूपीयम् " पुआ बनाने के लिए
उपयुक्त ।

वत्सीयो गोधुक् ५-१-५—बछड़े के लिए हितकारक दूध
दुहने वाला ।

शङ्कश्यं दारु " खूँदी बनाने के लिए उपयुक्त
लकड़ी ।

गन्धम् ५-१-५—गाय के लिए हितकारी ।
 हविष्यम् ५-१-६—हविष के लिए उपयुक्त ।
 दन्त्यम् ५-१-६—दाँतों के लिए हितकर ।
 कण्ठ्यम् ५-१-६—गले के लिए हितकर ।
 नस्यम् ५-१-६—नाक के लिए हितकर ।
 नाभ्यम् ५-१-६—नाभि के लिए हितकर ।
 शीर्षस्थः ५-१-६—शिर के लिए हितकर ।
 शिरस्यति ५-१-६—शिर चाहता है ।
 शीर्षस्थाः शिरस्या वा केशाः ५-१-६—शिर के लिए हितकर, बाल ।
 स्थूलशीर्षम् ५-१-६—स्थूल शिर वाले का, स्थूल शिर सम्बन्धी ।
 खल्यम् ५-१-७—खलिहान के लिए उपयुक्त ।
 यव्यम् ५-१-७—जौ के लिए उपयुक्त ।
 माष्यम् ५-१-७—उड़द के लिए उपयुक्त ।
 तिल्यम् ५-१-७—तिल के लिए उपयुक्त ।
 वृष्यम् ५-१-७—शक्ति बढ़ाने के लिए उपयुक्त, वीर्य-वर्द्धक ।
 ब्रह्मण्यम् ५-१-७—ब्राह्मण के लिए हितकर ।
 रथ्या ५-१-७—रथ के लिए उपयुक्त, सड़क ।
 अजश्या यूथिः ५-१-८—बकरों के लिए हितकर, जूही ।
 अविथ्या ५-१-८—भेड़ों के लिए हितकर ।
 आत्मनीनम् ५-१-९, ६-४-१ ६९—अपने लिए हितकर ।
 विद्वजनीनम् ५-१-९—सब मनुष्यों के लिए उपयुक्त ।
 विद्वजनीयम् ५-१-९—मानव जाति के लिए हितकर ।
 पञ्चजनीनम् ५-१-९—पञ्चजन के लिए हितकर ।
 पञ्चजनीनम् ५-१-९—पाँच प्रजाओं के लिए ।
 सार्वजनिकः ५-१-९—सब मनुष्यों के लिए हितकर ।
 सार्वजनीनः ५-१-९—” ” ”
 माहाजनिकः ५-१-९—महापुरुषों के लिए उपयुक्त ।
 मातृभोगीणः ५-१-९—माता के शरीर के लिये हितकारी
 पितृभोगीणः ५-१-९—पिता ”
 राजभोगीणः ५-१-९—राजा ”
 आचार्यभोगीणः ५-१-९—आचार्य ”

सार्वम्, सर्वोयम् ५-१-१०—सबके लिए लाभदायक ।
 पौरुषेयः ५-१-१०—पुरुष का वध ।
 पौरुषेयः ५-१-१०—पुरुषार्थ ।
 पौरुषेयः ५-१-१०—पुरुषों का समूह ।
 पौरुषेयः ५-१-१०—पुरुष का बनाया हुआ ग्रन्थ ।
 माणवीनम् ५-१-११—छोटे (नवसिखुए) छात्र के लिए हितकर ।
 चारकीणम् ५-१-११—चरक के लिए हितकर ।
 अङ्गारीयाणि काष्ठानि ५-१-१२—कोयला बनाने लिए उप-युक्त, लकड़ी ।
 प्राकारीया इष्टकाः ५-१-१२—चहारदीवारी बनाने के उपयुक्त, ईंटें ।
 शङ्खन्यं दारु ५-१-१२—खूँटी बनाने के लिए उपयुक्त लकड़ी ।
 छादिषेयाणि तृणानि ५-१-१३—छप्पर बनाने के लिए उपयोगी घास फूस ।
 बालेयास्तयङ्गुलाः ५-१-१३—बलि के लिए उपयुक्त चावल ।
 औपशेयम् ५-१-१३—पहिया अथवा आर के लिए उपयुक्त ।
 आर्षभ्यो वत्सः ५-१-१४—साँड़ बनाने के लिए उपयुक्त बछड़ा ।
 औपानह्यो मुञ्जः ५-१-१४—जूता बनाने के लिए उपयुक्त मूँज ।
 औपानह्यं चर्म ५-१-१४—” ” ” चमड़ा ।
 वाध्रं चर्म ५-१-१४—ताँत बनाने के लिए ” ”
 वारन्नं चर्म ५-१-१४—” ” ” ”
 प्राकारीया, इष्टकाः ५-१-१६—चहारदीवारी बनाने लिए पर्याप्त ईंटें ।
 प्रासादीयं दारु ५-१-१६—महल बनाने के लिए पर्याप्त लकड़ी ।
 प्राकारीयो देशः ५-१-१६—चहारदीवारी ” भूमि
 पारिखेयी, भूमिः ५-१-१७—खाई बनाने के लिए ”

अथ आर्होयप्रकरणम्

नैषिकम् ५-१-१८, १९, २० — निष्क (स्वर्ण मुद्रा) से खरीदा गया ।

परमनैष्ठिक: ७-३-१७—उत्तम निष्क से खरीदा गया।

सुगन्धम्, " सुन्दर गाय के लिए हित-
कारक ।

यवापूज्यम्, " जी के पूजों के लिए उपयुक्त ।

पारायणिकः , पारायण (पाठ) करने वाला ।

द्वैपारायणिकः " दो पारायण करने वाला ।

द्विशूर्पम् " दो शूर्प (२॥५) से खरीदा गया ।

अर्धद्रौणिकम् ७-३-२६—आधे द्रोण (५ या साढ़े बारह सेर) से खरीदा गया ।

आर्धद्रौणिकम् " "
 अर्धप्रास्थिकम् ७-३-२७—आधेप्रस्थ (१० छटाक) से
 खरीदा गया ।

आर्धप्रास्थिकम्	”	आधे कुडव (सवा छटांक) से
अर्धकौडविकम्	”	आधी खारी से प्राप्त या
अर्धखारी	”	उत्पन्न (१ खारी = ४५ चार मन) ।

अर्धखारीमायः " - जिसकी पत्नी दो मन देकर
प्राप्त हुई हो ।

शत्यम्, शतकम्, ५-१-२१—सी सुवर्ण मुद्राओं से खरीदा गया ।

द्विशतकम् " दो सौ "

पञ्चकः ५-१-२२—गाँच सुवर्ण मुद्राओं से ”

बहुकः " बहुतसी " "

साप्ततिकः " सत्तर " "

चात्वारिंशत्कः ॥ चालीस ॥ ॥

तावत्तिकः, तवत्कः ५-१-२३—उत्तरी

विशंकः, विशतिकः ५-१-२४—बीस मुद्राओं से खरीदा गया ।

त्रिशकः, त्रिशतिकः ,, तीस ,,
कंसिकः ५-१-२५—कंस (५या ६सेर से ,,
कंसिकी ,, खरीदी गयी ।

अधिक: " आधे कंस से खरीदा गया ।

अधिकी ,, ,, खरीदी गयी ।

कार्पापणिकः ॥ कारण से खरीदा गया ।

कार्षापणिकी , , खरीदी गयी ।

प्रतिकः " प्रति (कार्षापण) से खरीदा गया ।

प्रतिकी	"	"	खरीदी गयी ।
प्रतिकी	"	"	

सौर्षम् ५-१-२६—शूर्प (५० सेर) से खरीदा गया ।

शौरिकम् ॥ ॥
शातमानम् ५-१-२७-शातमान (१०० रत्ती की राजत
या सोवर्ण मुद्रा) से खरीदा गया ।

वैशतिकम् ॥

साहस्रम्	”	सहस्र कार्पाण से खरीदा गया ।
वासनम्	”	वस्त्र से खरीदा गया ।

अध्यक्षकंसम् ५-१-२८—चौथाई कंस (५१ सवा सेर)
से खरीदा गया ।

द्विकंसम्, " दो कंस (१० सेर) से खरीदा गया ।

पांचकलापिकम्, पांच कलाप (अज्ञात) से खरीदा गया ।

अध्यर्धकार्षापणम् ५-१-२९—कार्षापण के चतुर्थ भाग
से खरीदा गया ।

द्विकार्षापणम् ॥ दो कार्षापण से खरीदा गया ।

द्विकार्षापणिकम् " " कार्षापण के चतुर्थ भाग
अभ्यर्धप्रतिकम् " से खरीदा गया ।

द्विप्रतिकम् ५-१-२९—दो कार्पापण से खरीदा गया ।
 अध्यर्धसहस्रम् ,, हजार के चतुर्थ भाग से खरीदा गया ।
 अध्यर्धसाहस्रम् ,, ,, ,,
 द्विसहस्रम्, द्विसाहस्रम् ,, दो हजार से खरीदा गया ।
 द्विनिष्कम्, द्विनैष्किकम् ५-१-३०—दो निष्क से खरीदा गया ।
 त्रिनिष्कम्, त्रिनैष्किकम् ,, तीन निष्क से खरीदा गया ।
 बहुनिष्कम्, बहुनैष्किकम् ,, बहुत निष्कों से खरीदा गया ।
 द्विविस्तम्, द्विवैस्तिकम् ५-१-३१—दो विस्त (१ विस्त = ५० रत्ती) से खरीदा गया ।
 अध्यर्धविंशतिकीनम् ५-१-३२—पाँच मासे के कार्पापण से खरीदा गया ।
 द्विविंशतिकीनम् ,, दो विंशतिक (२० मासे के दो कार्पापण) से खरीदा गया ।
 अध्यर्धखारीकम् ५-१-३३—खारी (४५ मन) के चतुर्थ भाग से खरीदा गया ।
 द्विखारीकम् ,, दो खारी (८५ मन) से खरीदा गया ।
 खारीकम् ,, खारी (४५ मन) से खरीदा गया ।
 अध्यर्धपाययम् ५-१-३४—पण (गड्डी) के चतुर्थ भाग से खरीदा गया ।
 द्विपाययम् ,, दो पण (गड्डी) से खरीदा गया ।
 अध्यर्धपादम् ,, पाद (रजतकार्पापण) के चतुर्थ भाग से खरीदा गया ।
 द्विपादम् ,, दो पाद से खरीदा गया ।
 अध्यर्धशाणम् ५-१-३५—शाण (१२॥ रत्ती की रजतमुद्रा) के चतुर्थ भाग से खरीदा गया ।
 अध्यर्धशाणम् ,, ,,

द्वैशाणम्, द्विशाण्यम्, द्विशाणम् ५-१-३६—दो शाण से खरीदा गया ।
 गौपुच्छिकम् ५-१-३७—गाय से खरीदा गया ।
 साप्ततिकम् ,, ७० कार्पापण से खरीदा गया ।
 प्रास्थिकम् ,, प्रस्थ (१० छटाँक) से खरीदा गया ।
 नैष्किकम् ,, निष्क से खरीदा गया ।
 पञ्चगोणिः ५-१-५०—पाँच गोणी (१ गोणी = २॥५ मन) से खरीदा गया ।
 शत्यः शतिको वा-
 धनपतिसंयोगः ५-१-३८—धनिक का संयोग सौ की प्राप्ति का कारण है ।
 शत्यंशतिकं वा दक्षिणाक्षिस्पन्दनम् ,, दाहिनी आँख का फड़कना सौ की प्राप्ति का कारण है ।
 वातिकम् ,, वात को शमन करना या दूषित करना ।
 पैत्तिकम् ,, पित्त को ,, ,,
 श्लैष्मिकम् ,, कफ को ,, ,,
 साक्षिपातिकम् ,, सन्निपात ,, ,,
 गन्धः ५-१-३९—गाय के निमित्त संयोग या शकुन ।
 धन्यः ,, धन के ,, ,,
 यशस्यः ,, यश के ,, ,,
 स्वर्ग्यः ,, स्वर्ग के ,, ,,
 वैजयिकः ,, विजय के ,, ,,
 पञ्चकम् ,, पाँच के ,, ,,
 सप्तकम् ,, सात के ,, ,,
 प्रास्थिकम् ,, प्रस्थ के ,, ,,
 खारीकम् ,, खारी के ,, ,,
 आक्षिपकम् ,, घोड़े के ,, ,,
 आक्षिपकम् ,, पत्थर के ,, ,,
 ब्रह्मवर्चस्यम् ,, ब्रह्मतेज के ,, ,,
 पुत्रीयः, पुत्र्यः ५-१ ४०—पुत्र के ,, ,,
 सार्वभौमः ५-१-४१—समस्त भूमि का स्वामी ,,
 पार्थिवः ,, पृथिवी का स्वामी ,,

पंक्ति ५-१-५९, ६०—पाँच चरणों का एक छन्द, रेखा, परम्परा ।

विंशतिः	॥	बीस ।
त्रिंशत्	॥	तीस ।
चत्वारिंशत्	॥	चालीस ।
पञ्चाशत्	॥	पचास ।
षष्टिः	॥	साठ ।
सप्ततिः	॥	सत्तर ।
अशीतिः	॥	असी ।
नवतिः	॥	नव्वे ।
शतम्	॥	सौ ।
पञ्चद्वर्गः	॥	पाँच व्यक्तियों या वस्तुओं का समूह ।

दशत्	॥	दस	॥	॥
पञ्चकः	॥	पाँच	॥	॥
त्रैशानि ५-१-६२	—	तीस अध्यायों वाला ब्राह्मणग्रन्थ ।		
चात्वारिंशानि	॥	चालीस	॥	॥
इगैतच्छत्रिकः ५-१-६३	—	जो सफेद छाते का अधिकारी है ।		
छैदिको वेतसः ५-१-६४	—	सदा काटने योग्य वेत, क्यों कि काटने से वह बढ़ता है ।		
वैरागिकः	॥	सदा वैराग्य का अधिकारी ।		
वैरञ्जिकः	॥	॥	॥	॥

शीर्षच्छेद्यः, शीर्षच्छेदिकः ५-१-६५—सदा सिर काटने योग्य ।

दण्ड्यः ५-१-६६	—	दण्ड पाने का अधिकारी ।
अर्घ्यः	॥	अर्घ पाने का अधिकारी ।
वध्यः	॥	वध किये जाने के योग्य ।
पात्रियः, पात्र्यः ५-१-६८	—	पात्र पाने का अधिकारी ।
कडङ्करीयः, कडङ्कर्यः ५-१-६९	—	डंठल (भूसा) पाने का अधिकारी, पशु ।
दक्षिणीयः, दक्षिण्यः	॥	दक्षिणा पाने का अधिकारी ।

स्थात्रीविलीयाः,

स्थात्रीविल्यास्तण्डुलाः ५-१-७०—पात्र (पतली) के योग्य, पकाने योग्य चावल ।

यज्ञियः ५-१-७१—यज्ञका अधिकारी (यज्ञ में आदर पाने योग्य) ब्राह्मण ।

आर्त्विजीनो यजमानः ॥ यज्ञ में पुरोहित पाने का अधिकारी, यजमान ।

यज्ञियो देशः ॥ यज्ञ करने योग्य स्थान ।

आर्त्विजीन ऋत्विक् ॥ यज्ञ में पुरोहित पद का अधिकारी, ऋत्विक् ।

इत्याहोयप्रकरणम् ।

अथ ठाधिकारे कालाधिकारः

पारायणिकश्छात्रः ५-१-७२—अध्यापक के निरीक्षण में वेदपाठ करने वाला छात्र ।

तौरायणिको यजमानः ॥ तुरायण नामक यज्ञ करने वाला यजमान ।

चान्द्रायणिकः ॥ चान्द्रायण व्रत करने वाला ।

सांशयिकः ५-१-७३—संदेहास्पद ।

यौजनिकः ५-१-७४—चार कोस जाने वाला ।

क्रौंशशक्तिकः ॥ सौ कोस जाने वाला भिक्षु ।

यौजन्नशक्तिकः ॥ चार सौ कोस जाने वाला ।

क्रौंशशक्तिको भिक्षुः ॥ सौ कोस से आने वाला भिक्षु ।

यौजनशक्तिक आचार्यः ॥ चार सौ कोस से आने वाला आचार्य ।

पथिकः ५-१-७५—रास्ता चलने वाला ।

पथिकी ॥ रास्ता चलने वाली ।

पान्थः ५-१-७६—सदा रास्ता चलने वाला ।

पान्था ॥ सदा रास्ता चलने वाली ।

औत्तरपथिकम् ५-१-७७—उत्तर पथ से लाया गया ।

औत्तरपथिकः ॥ उत्तर पथ से जाने वाला ।

वारिपथिकम् ५-१-७७—जल मार्ग (प्रवाह) से लाया गया ।

आह्निकम् ५-१-७८, ७९—एक दिन में समाप्त किया जाने वाला ।

मासिकोऽध्यापकः ५-१-८०—महीने भर के लिए अवैतनिक नियुक्ति किया गया अध्यापक ।

मासिकः, कर्मकरः ,, महीने भर के लिए मजदूरी पर नियुक्त किया गया मजदूर ।

मासिको, व्याधिः ,, महीने भर से उत्पन्न रोग ।

मासिकः, उत्सवः ,, महीने भर होने वाला उत्सव ।

मास्यः, मासीनः ५-१-८१—महीने भर का ।

द्विमास्यः ५-१-८२—दो महीने का ।

षण्मास्यः, षाण्मास्यः, षायमासिकः ५-१-८३—छः महीने का ।

षायमासिको व्याधिः, षाण्मास्यः ५-१-८४—छः महीने का रोग ।

समीनः ५-१-८५—वर्ष भर के लिए सादर नियुक्त, मजदूरी पर नियुक्त, रहने वाला ।

द्विसमीनः, द्वैसमिकः ५-१-८६—दो वर्ष के लिए ,,

द्विरात्रीनः, द्वैरात्रिकः ५-१-८७—दो रात के लिए ,,

द्व्यहीनः, द्वैयह्निकः ,, दो दिन के लिए ,,

द्विसंवत्सरीणः ,, दो वर्ष के लिए ,,

द्विसंवत्सरिकः ७-१-१५—दो वर्ष के लिए ,,

द्विषाष्टिकः ,, एक सौ बीस वर्ष या मास के लिए ,,

द्विवर्षीणः, द्विवार्षिकः, द्विवर्षः ५-१-८८—दो वर्ष से रहने वाला रोग

द्विवार्षिको मनुष्यः ७-३-१६—दो वर्ष के लिए ,,

द्वैवर्षिकः ,, ,, ,,

द्विवार्षिको मनुष्यः ,, ,, ,,

द्विकौडविकः ८-३-१७—दो कुडव (पाँच छटाँक) चाहने वाला ।

द्विसौवर्णिकम् ८-३-१७—दो सुवर्ण (१६० गुंजा) से खरीदा गया ।

द्विनैष्किकम् ,, दो निष्क से खरीदा गया ।

पाञ्चकपालिकम् ,, पाँच सकोरों में रखा गया ।

पाञ्चकपालिकम् ,, ,,

द्वैशाणम् ,, दो शाण से खरीदा गया ।

द्वैकुलिजिकः ,, दो कुलिज चाहने वाला ।

द्विवर्षो दारकः ५-१-८९—दो वर्ष का बालक ।

षष्टिको धान्यविशेषः ५-१-९०—साठ रात में पकने वाला, साठी धान ।

मासिको व्याधिः ५-१-९३—महीने भर में अच्छा होने वाला रोग ।

मासिकम् ,, महीने भर में प्राप्त करने, करने या आसानी से करने योग्य ।

मासिको ब्रह्मचारी ५-१-९४—महीने भर ब्रह्मचर्य रखने वाला ब्रह्मचारी ।

अर्धमासिकः ,, आधा मास ,,

मासिकं ब्रह्मचर्यम् ,, महीने भर रहने वाला ब्रह्मचर्य ।

माहानात्मिकः ,, महानात्मी पर्यन्त सामवेद की ऋचाओं के पढ़ने का व्रती ।

चातुर्मास्यानि यज्ञकर्माणि ,, चार महीने होने वाले यज्ञ के कर्म ।

चातुर्मासी आषाढी ,, चार महीने के बाद होने वाली आषाढ की पूर्णिमा ।

द्वादशाहिकी ५-१-९५—बारह दिन में किये जाने वाले द्वादशाह यज्ञ की दक्षिणा ।

आग्निष्टोमिकी ५-१-९५—अग्निष्टोम यज्ञ की दक्षिणा ।

वाजपेयिकी ,, वाजपेय यज्ञ की दक्षिणा ।

प्रावृषेण्यम् ४-१-९६—वर्षान्ततु में दिया या किया जाने वाला ।

शारदम् ,, शरद् ऋतु में ,,

इति कालाधिकारः ।

अथ ठगधिकारप्रकरणम्

वैयुष्टम् ५-१-९७—व्युष्ट (श्रावण का पहिला दिन या प्रातःकाल में) दिया या किया जाने वाला ।

यायाकपाचम् ५-१-९८—अनादर से दिया या किया जाने वाला ।

हस्थम् ,, हाथ से ,,
कार्णवेष्टिकं मुखम् ५-१-९९—कर्णभूषण के योग्य मुख ।

कर्मण्यम् शौर्यम् ५-१-१००—कर्म से की जाने वाली शूरता ।

वेप्यो नटः ,, वेध बनाने से अच्छा लगने वाला, नट ।

सान्तापिकः ५-१-१०१—संताप देने में समर्थ ।

सांग्रामिकः ,, युद्ध करने समर्थ ।

योग्यः ५-१-१०२—योग के लिये समर्थ ।

यौगिकः ,, ,,

कामुकम् ५-१-१०३—काम करने के लिए समर्थ, धनुष ।

सामयिकम् ५-१-१०४—जिसका समय आगया हो ।

आर्तवम् ५-१-१०५—जिसका मौसम आ गया हो ।

काल्यं शीतम् ५-१-१०७—जिसका समय आ गया हो ।

कालिकं वैरम् ५-१-१०८—चिरकालीन शत्रुता ।

ऐन्द्रमहिकम् ५-१-१०९—जिसका प्रयोजन इन्द्रोत्सव हो ।

वैशाखो मन्थः ५-१-११०—मथनी, छोड़ी ।

आषाढो दण्डः ,, पलाश दण्ड ।

चौडम् ,, मुंडन ।

आद्धम् ,, श्रद्धा के कारण किया जाने वाला पितृकार्य ।

अनुप्रवचनीयम् ५-१-१११—वेदाध्ययन समाप्ति के पश्चात् किया जाने वाला होम ।

व्याकरणसमापनीयम् ५-१-११२—जिसका प्रयोजन व्याकरण के अध्ययन की समाप्ति हो ।

ऐकागारिकश्चौरः ५-१-११३—जिसका लक्ष्य सूना मकान पाना हो, चोर ।

आकालिकः ५-१-११४—अण भर रहने वाला, मेघ ।

आकालिका विद्युत् ,, अण भर रहने वाली बिजली, एक ही समय उत्पन्न तथा नष्ट होने वाली ।

इति ठगधिकारप्रकरणम् ।

अथ भावकर्मार्थाः

ब्राह्मणधर्षते ५-१-११५—ब्राह्मण की तरह पड़ता है ।

पुत्रेण तुल्यः स्थूलः ,, पुत्र के समान मोटा है ।

मथुरावत्सुप्ने प्राकारः ५-१-११६—मथुरा के समान सुप्न में चहारदीवारी है ।

चैत्रवन्मैत्रस्य गावः ,, चैत्र की तरह मैत्र की गाये हैं ।

विधिवत्पूज्यते ५-१-११७—विधिवत् (देवता की तरह) पूजा जाता है ।

राजानमर्हति छत्रम् ,, छाता राजा के योग्य है ।

गोत्वम्, गोता ५-१-११९—गाय का स्वभाव ।

स्त्रीत्वम्, स्त्रीता ५-१-१२०—स्त्रियों का स्वभाव ।

पौंसत्वम्, पुंस्त्वम्, पुंस्ता ,, पुरुषों का स्वभाव ।

अपतित्वम् ५-१-१२१—जो स्वामी न हो उसका स्वभाव ।

अपटुत्वम् ,, जो पटु न हो उसका स्वभाव ।

बाहस्पत्यम् ,, दूहस्पति का स्वभाव ।

आपटवम् ,, जिसके पास पटु न हो उसका स्वभाव ।

अ० प्र० : २१

शौचम् ५-१-१३१—पवित्रता ।

मौनम् ,, मुनि का स्वभाव या कर्म ।

काव्यम् ,, कवि का ,, , कविता ।

रामणीयकम् ५-१-३२—सुन्दर व्यक्ति का स्वभाव या कर्म ।

आभिधानीयकम् ,, संज्ञा, कोश या नाम का स्वभाव कर्म ।

साहाय्यम्, साहायकम् ,, सहायता ।

शौच्योपाध्यायिका ५-१-१३३—शिष्य तथा आचार्य का स्वभाव या कर्म ।

मानोज्ञकम् ,, सुन्दर व्यक्ति का स्वभाव या कर्म ।

गार्गिकया इक्षाघते, अत्याकुरुते ५-१-३४—गर्ग गोत्र का होने के कारण अपना

वङ्गपन दिखाता है या दूसरों को तुच्छ समझता है ।

गार्गिकामचेतः ५-१-१३४—गर्ग गोत्र के स्वभाव या कर्म को प्राप्त अथवा उसको समझने वाला ।

अच्छावाकीयम् ५-१ १३५—अच्छावाक (ऋत्विग्विशेष) का स्वभाव या कर्म ।

मैत्रावरुणीयम् ,, मित्रावरुण का स्वभाव या कर्म ।

ब्रह्मत्वम् ५-१-१३६—ब्रह्मा (ऋत्विग्विशेष) का स्वभाव या कर्म ।

ब्रह्मत्वम्, ब्रह्मता ,, — ब्राह्मण का स्वभाव या कर्म ।

इति भावकर्माधिकारः ।

अथपाञ्चमिकाः

मौद्गीनम् ५-२-१—मूँग उत्पन्न होने वाला खेत ।

वैह्वम् ५-२-२—वकी घान ,,

शालेयम् ,, रोपघान ,,

यव्यम् ५-२-३—जौ ,,

यवक्यम् ,, यवक (एक प्रकार का घान) का खेत ।

षष्ठिक्यम् ,, साठी घान उत्पन्न करने वाला खेत ।

तिल्यम् तैलीनम् ५-२-४—तिल ,,

माष्यम्, माषीनम् ,, उड़द ,,

उभ्यम्, औमीनम् ,, अलसी ,,

भङ्ग्यम्, साङ्गीनम् ,, पटुआ ,,

अणल्यम्, आणवीनम् ,, चीना ,,

सर्वचर्मणः सार्वचर्मणः ५-२-५—विलकुल चमड़े से बना हुआ ।

यथामुखीनः ५-२-६—जिसमें मुख का प्रतिबिम्ब दिखाई पड़े, दर्पण ।

संमुखीनः ,, जिसमें समस्त मुख दिखाई पड़े ।

सर्वपथीनः ५-२-७—जो समस्त मार्ग में व्याप्त हो या फैल जाय, रथ ।

सर्वाङ्गीणः ,, जो समस्त अङ्ग में व्याप्त हो या फैल गया हो, रोग आदि ।

सर्वकर्मणः ,, जो समस्त कर्मों को करे ।

सर्वपात्रीणः ,, जो समस्त पात्रों में व्याप्त हो ।

सर्वपत्रीणः ,, जो समस्त सवारियों में व्याप्त हो, सारथी ।

आग्रपदीनः पटः ५-२-८—पैर के अग्रभाग तक पहुँचने वाला वस्त्र ।

अनुपदीना उपानत् ५-२-९—समूचे पैर में घँटने वाला जूता ।

सर्वाङ्गीनो मिश्रः ,, सब प्रकार के अन्न खाने वाला मिश्र ।

आयानयीनःशारः ५-२-६—दाहिनी ओर से बाईं ओर
गोटी की चाल को अय तथा
बाईं ओर से दाहिनी ओर
की चाल को अनय कहते हैं ।
अयानय उस खाने या घर
को कहते हैं, जिसमें दोनों
ओर से आई हुई गोटियाँ
किसी से मारी न जा सकें ।
उस घर में ले जायी जाने
वाली गोटी को अयानयीन
कहते हैं ।

परोवरीणः ५-२-१०—ऊँच नीच का अनुभव करने वाला ।

परम्परीणः " " "

पुत्रपौत्रीणः " पुत्र तथा पौत्र का अनुभव करने
वाला ।

पारम्पर्यम् " परम्परा का अनुभव करने वाला ।

अवारपारीणः ५-२-११—आर पार जाने वाला ।

अवारीणः " इस पार "

पारीणः " उस पार "

पारावारीणः " आर पार "

अत्यन्तीनः " बहुत चलने वाला ।

अनुकामीनः " इच्छानुसार "

समांसमीना गौः ५-२-१२—प्रति वर्ष बच्चा देने वाली
गाय ।

समां समां विजायते " प्रतिवर्ष बच्चा देने वाली ।

समायां समायां वा " " "

अद्यश्वीना वडवा ५-२-१३—आजकल में बच्चा देने
वाली घोड़ी ।

अद्यश्वीनस्मरणम् ५-२-१३—आजकल में होने वाली मृत्यु,
निकटवर्ती मृत्यु ।

आगवीनः ५-२-१४—गायों के चरागाह से लौटने तक
काम करने वाला मजदूर, दिन भर
का मजदूर ।

अनुगवीनः गोपालः ५-२-१५—गायों के पीछे चलने
वाला, खाला, चरवाहा ।

अध्वन्यः अध्वनीनः ५-३-१६—यात्रा करने वाला ।

अभ्यमित्रीयः, अभ्यमिन्धः,

अभ्यमित्रीणः ५-२-१७—धीरता से शत्रु का सामना
करने वाला योद्धा ।

गौष्ठीनो देशः ५-२-१८—जो स्थान पहिले गोशाला
रहा हो ।

आश्वीनः अध्वा ५-२-१९—एक दिन में घोड़े के जाने
योग्य मार्ग ।

शालीनः अष्टष्टः ५-२-२०—जो घर में घुस जाय, लज्जा-
शील ।

कौपीनम् पापम् " कुँ में गिरने योग्य, पाप ।

धातीनः ५-२-२१—जो शारीरिक श्रम से जीवित रहे,
बुद्धि की शक्ति से नहीं ।

सासपदीनम् ५-२-२२—जो एक साथ सात पग चलने से
या सात शब्द बोलने से सम्पन्न
हो, मित्रता ।

हैयङ्गवीनम् नवनीतम् ५-२-२३—जो बीते हुए कल के
दूध से बना हो, नयन ।

पीलुकुणः ५-२-२४—पीलू नामक फलों का पकना ।

कर्णजाहम् " कान की जड़ ।

पक्षतिः ५-२-२५—पंख की जड़ ।

विधाचुञ्चुः ५-२-२६—विद्या से प्रसिद्ध, विख्यात ।

विद्याचणः " " "

विना ५-२-२७—बगैर ।

नाना " अनेक ।

विस्तृतम् ५-२-२८—फैला हुआ ।

विशालम् " बृहत्, बड़ा ।

विशङ्कटम् " "

सङ्कटम् ५-२-२९—दुःख ।

प्रकटम् " विदित, प्रत्यक्ष ।

उत्कटम् " बड़ा हुआ ।

विकटम् " भयंकर ।

अलावृकटम् " लोके की घूल ।

गोगोष्ठम् " गोशाला ।

अविकटः " भेड़ों का झुंड ।

अविपटः ५-२-२९—भेड़ों का विस्तार ।

उष्ट्रोयुगम् " दो ऊँट ।

वृषगोयुगम् " बैलों की जोड़ी ।

अश्वपङ्क्तम् " छः घोड़े ।

तिलतैलम् " तिल का तेल ।

सर्पपतैलम् " सरसों का तेल ।

इक्षुशाकटम् " ईख उत्पन्न होने वाला खेत ।

इक्षुशाकिनम् " " "

अवकुटारः ५-२-३०—नीचे की ओर झुका हुआ, बहुत गहरा ।

अवकटः " " "

अवटीटम् ५-२-३१—नाक का झुकना ।

अवनाटम् " " "

अवभ्रतम् " " "

अवटीटा " झुकी नाक ।

अवटीटः " झुकी नाक वाला ।

निबिडम् ५-३-३२—नाक का झुकना ।

निबिरीसम् " " "

चिकिनम् ५-२-३३— " " "

चिपिटम् " " "

चिक्कम् " " "

चिछः " जिसकी आँख सदा मीली रहती हो ।

पिछः " " "

चुछः " " "

उपत्यका ५-२-३४—पर्वत के पास की भूमि ।

अधित्यका " पर्वत के ऊपर की भूमि ।

कर्मठः पुरुषः ५-२-३५—काम करने में चतुर, निपुण

सारकितं नमः ५-२-३६—तारोंवाला (आकाश)

ऊरुद्वयसम् " जाँघभर (जल)

ऊरुद्वयम् " " "

शमः ५-२-३६—१४ अंगुल या एक हाथ ।

दिष्टिः " १॥ फुट ।

वितस्तिः " १२ अंगुल, एक बालिशत ।

द्विशमम् " दो हाथ या २८ अंगुल ।

शममात्रम् " एक हाथ या १४ अंगुल भर ।

प्रस्थमात्रम् " प्रस्थ भर ।

पञ्चमात्रम् " पाँच भर ।

तावद्वयसम् " उतना ही ।

तावन्मात्रम् " उतनाही ।

पौरुषम्, पुरुषद्वयसम् ८-२-३८—पौरसा (पौरसा नाप

तीन प्रकार का होता

है = ८४ अंगुल

६६ "

१०८ "

१६ अंगुल = १ फुट

हस्तिनम्, हस्तिद्वयसम् " १३॥ फुट लम्बा ।

यावान् ५-२-३९—जितना ।

तावान् " तितना ।

एतावान् " इतना ।

कियान् ५-२-४०—कितना ।

इयान् " इतना ।

कति, कियन्तः ५-२-४१—कितने ।

का संख्या एषां दशानाम् " इन दसों की क्या संख्या है ?

(आक्षेप हैं)

पञ्चतयं दारु ५-२-४२—पाँच भाग वाली लकड़ी ।

द्वयम्, द्वितयम् ५-२-४३—जोड़ा, दो ।

त्रयम्, त्रितयम् " तीन ।

उभयम् ५-२-४४—दोनों ।

इति पाञ्चमिकाः ।

अथ मत्वर्थीयप्रकरणम्

एकादशम् ५-२-४५—ग्यारह अधिक सौ अथवा हजार ।

एक सौ या एक हजार ग्यारह ।

एकादश अधिकाः

अस्यां विंशतौ ,, इस बीस में ग्यारह अधिक है ।

एकादश भाषा अ-

धिका अस्मिन्सुवर्णशते ,, इस सौसुवर्ण में ग्यारह भाषे अधिक है ।

त्रिंशत्तम् ५-२-४६—तीस अधिक सौ, एक सौ तीस ।

विंशम् ,, बीस अधिक सौ, एक सौ बीस ।

द्विमयमुद्विचयवानाम् ५-२-४७—एक भाग मठे का मूल्य उसका दो भाग जो ।

द्वौघ्रीहियवौ निमानमस्योद्वितः ,, मठे का दूना जो और धान उसका मूल्य ।

द्वौ गुणौ क्षीरस्य एकस्तैलस्य,

द्विगुणं क्षीरं पंच्यते तैलेन ,, तेल द्वारा उसका दुगुना दूध जलाया या पकाया जाता है ।

एकादशः ५-२-४८—ग्यारहवाँ ।

पञ्चमः ५-२-४९—पाँचवाँ ।

विंशः ,, बीसवाँ ।

एकादशः ,, ग्यारहवाँ ।

षष्ठः ५-२-५०—छठा ।

कतिथः ,, कौन सा ।

कतिपयथः ,, बहुतों में से कौथा ।

चतुर्यः ,, चौथा ।

तुरीयः, तुर्यः ,, चौथा ।

बहुतिथः ५-२-५२—बहुत बार ।

यावतिथः ५-२-५३—जितनी बार ।

द्वितीयः ५-२-५४—दूसरा ।

तृतीयः ५-२-५५—तीसरा ।

विंशतितमः विंशः ५-२-५६—बीसवाँ ।

एकविंशतितमः, एकविंशः ,,—इक्कीसवाँ ।

शततमः ५-२-५७—सौवाँ ।

एकशततमः ,, एक सौ एकवाँ ।

मासतमः ,, महीने का अन्तिम दिन ।

अर्धमासतमः ,, आधे महीने का अन्तिमदिन ।

संवत्सरतमः ,, वर्ष का अन्तिम दिन ।

षष्टितमः ५-२-५८—साठवाँ ।

एकषष्टः, एकषष्टितमः ,, एकसठवाँ ।

अच्छावाकीयसूक्तम् ५-२-५९—अच्छावाक् शब्द वाली ऋचा ।

चारचन्तीयं साम ,, 'चखन्तु' शब्द वाला साम ।

गर्दभाशब्दः गर्दभाशब्दीयः ५-२-६०—गर्दभाण्डशब्द वाला अध्याय या अनुवाक ।

वैमुक्तः ५-२-६१—विमुक्त शब्द वाला अध्याय या अनुवाक ।

दैवासुरः ,, दैवासुर शब्द वाला अध्याय या ,,

गोषदकः ५-२-६२—गोषदशब्द ,, ,,

इषेत्वकः ,, इषेत्वाशब्द ,, ,,

पथकः ५-२-६३—यात्रा में कुशल ।

आकर्षकः ५-२-६४—खींचने में उत्तम, तलवार की मूठ ।

आकषः ,, कसने (परखने) में कुशल ।

धनको देवदत्तस्य ५-२-६५—देवदत्त की धन इच्छा ।

हिरण्यकः ,, सुवर्ण की इच्छा ।

केशकः ५-२-६६—बालों को सँवारने में लीन ।

औदरिकः ५-२-६७—भूख के कारण पेट सहलाने वाला ।

उदरकः ,, पेट अधिक भर जाने से उसको सहलाने वाला ।

सस्यकः साधुः ५-२-६८—गुणों से परिपूर्ण, सज्जन ।

अंशको दाय्यादः ५-२-६९—भाग लेने का अधिकारी, दाय्याद ।

तन्त्रकः पटः ५-२-७०—करघे से तत्त्वण उतरा हुआ (नवीन) वस्त्र ।

ब्राह्मणकः ५-२-७१—जिस देश में आयुधजीवी ब्राह्मण हों ।
 उष्णिका यवागूः ॥ कम अन्नवाली लप्सी ।
 शीतको अलसः ५-२-७२—सुस्ती से काम करने वाला,
 आलसी ।
 उष्णकः शीघ्रकारी ॥ शीघ्रता से काम करने वाला,
 फुर्तीवाज ।
 अनुकः ५-२-७३, ७४—इच्छुक ।
 अमिकः अमीकः ॥ प्रेमी, कामुक ।
 पार्श्वकः ५-२-७५—मायावी, जादूगर ।
 आयःशूलिकः ५-२-७६—साहस करने वाला ।
 दायडाजिनिकः ॥ दूसरों को धोखा देने के लिए
 दण्ड तथा मृग चर्म धारण करने
 वाला ।
 द्वितीयकं द्विकं वा ग्रहणं देवदत्तस्य ५-२-७७—देवदत्त की
 दूसरी बार सफलतापूर्वक
 ज्ञान की प्राप्ति ।
 षट्को देवदत्तः ॥ देवदत्त का छठी बार
 ज्ञान अथवा पुस्तक के
 ज्ञान की प्राप्ति ।
 पञ्चकः ॥ पाँचवीं ॥
 देवदत्तकः ५-२-७८—जिनका नेता देवदत्त हो ।
 त्वत्कः ॥ जिनके नेता तुम हो ।
 मत्कः ॥ जिनका नेता मैं हूँ ।
 शृङ्खलकः करमः ५-२-७९—सिकड़ी से बाँधा जानेवाला
 हाथी का वच्चा ।
 उत्कः उत्कण्ठितः ५-२-८०—उत्सुक ।
 द्वितीयको ज्वरः ५-२-८१—दूसरे दिन आने वाला ज्वर ।
 विषपुष्पकः ॥ विष पुष्प से होने वाला ज्वर ।
 उष्णकः ॥ गर्मी पैदा करने वाला ज्वर ।
 द्वितीयो दिवसोऽस्य ॥ इसका दूसरा दिन ।
 गुडापूपिका पौर्णमासी ५-२-८२—गुड़ के पूरवाली पूर्णिमा
 अर्थात् जिस पूर्णिमा का
 मुख्य भोजन गुड़ के
 पूर हों ।
 वटकिनी ॥ जिस दिन का मुख्य
 भोजन, बड़ा हो ।

कौलमाषी ५-२-८३—जिस दिन का मुख्य भोजन बुधरी
 हो ।
 ओत्रियः ५-२-८४—वेद पढ़ने वाला ।
 छान्दसः ॥ ॥ ॥
 आद्री, आद्रिकः ५-२-८५—आद्यान्न खाने वाला ।
 पूर्वी ५-२-८६—जिसने पहिले कुछ किया हो ।
 कृतपूर्वी कटम् ५-२-८७—जिसने पहले चटाई बनायी थी ।
 इष्टी ५-२-८८—जिसने यज्ञ किया ।
 अधीती ॥ जिसने अध्ययन किया ।
 परिपन्थी ५-२-८९—विरोधी, शत्रु ।
 परिपरी ॥ विरोधी शत्रु ।
 अनुपदी ५-२-९०—पीछे चलने वाला या हूँदने वाला ।
 साक्षी ५-२-९१—प्रत्यक्ष देखने वाला ।
 केत्रियो व्याधिः ५-२-९२—दूसरे शरीर में चिकित्सा के
 (शरीरान्तरे चिकित्स्यः) यंभ्य, जन्मान्तर में अच्छा
 होने वाला, रोग ।
 इन्द्रियम् ५-२-९३—इन्द्र (आत्मा) के बाह्यचिह्न
 इन्द्र से दृष्ट (अनुभूत) ।
 इन्द्र से रचित (बनायी गयी),
 इन्द्र से जुष्ट (सेवित) इन्द्रने
 इन्द्रियों को अपने विषयों का भोग
 प्रदान किया ।
 गोमान् ५-२-९४—जिसके पास गाय या बैल हो ।
 रसवान् ५-२-९५—रसवाला, स्वादिष्ट ।
 रूपवान् ॥ रूपवाला, सुन्दर ।
 स्ववान् ॥ धनवाला, धनी ।
 विदुष्मान् १-४-१९—विद्वान् वाला ।
 शुक्लः पटः ॥ सफेद कपड़ा ।
 कृष्णः ॥ काला ।
 किंवान् ८-२-९—कुछ रखने वाला, क्या रखने वाला ।
 ज्ञानवान् ॥ ज्ञान वाला ।
 विद्यावान् ॥ विद्यावाला ।
 लक्ष्मीवान् ॥ धनवाला ।
 यशस्वान् ॥ कीर्तिवाला ।
 भास्वान् ॥ तेज वाला ।
 यवमान् ॥ जौ वाला ।

भूमिमान् ८-२-९—भूमिवाला ।
 विद्युत्त्वान् ८-२-१०—विजली वाला ।
 अहीवती ८-२-११—साँपोवाली (नदी विशेष) ।
 मुनीवती ,, मुनियों वाली ,,
 आसन्दीवान् ग्रामः ८-२-१२—अहिस्थल नामक ग्राम ।
 आसनवान् ,, आसन वाला ।
 अष्टीवान् ,, हड्डियों वाला (ऋषि विशेष का नाम) ।
 अस्थिमान् ,, हड्डियों वाला कोई व्यक्ति ।
 चक्रीवान् नाम राजा ,, चक्र वाला (नृप विशेष का नाम) ।
 चक्रवान् ,, चक्र वाला कोई व्यक्ति ।
 कक्षीवान् नाम ऋषिः ,, कमरों वाला (ऋषिविशेष का नाम) ।
 कक्ष्यावान् ,, कमरों वाला मकान ।
 रुमणवान् नाम पर्वतः ,, नमक वाला (रुमालूणी) नदी के समीप का कोई पर्वत) ।
 लवणवान् ,, नमक वाला कोई व्यक्ति ।
 चर्मण्वती नाम नदी ,, चम्बल नदी ।
 चर्मवती ,, चमड़े वाली ।
 उदन्वान् समुद्रः ऋषिश्च ८-२-१३—जलवाला समुद्र तथा एक ऋषि का नाम ।
 राजन्वती भूः ८-२-१४—उत्तम राजा वाली पृथ्वी ।
 राजवान् ,, राजा वाला देश ।
 चूडालः चूडावान् ५-२-९६—शिखा (चोटी) वाला ।
 शिखावान् दीपः ,, शिखा (लौ) वाला दीपक ।
 हस्तवान् ,, हाथ वाला ।
 मेधावान् ,, बुद्धिवाला ।
 सिध्मलः, सिध्मवान् ५-२-९७—कुष्ठ रोग वाला ।
 वातूलः ,, वात रोग वाला ।
 वत्सलः ५-२-९८—प्रेम करने वाला, प्रिय ।
 अंसलः ,, हृष्ट पुष्ट ।
 फेनिलः, फेनलः, फेनवान् ५-२-९९—फेन वाला ।

लोमशः लोमवान् ५-२-१००—रोयें वाला ।
 रोमशः रोमवान् ,, ,,
 पामनः ,, खुजली रोग वाला ।
 अङ्गना ,, सुन्दर अङ्गवाली, स्त्री ।
 लक्ष्मणः ,, लक्ष्मी (सौन्दर्य) वाला ।
 विष्णुः ,, अनेक प्रकार से चलने वाला, पीछे मुख कर चलने वाला ।
 पिच्छिलः पिच्छवान् ,, चिकना, फिसलने वाला ।
 उरसिलः उरस्वान् ,, चौड़े वक्षःस्थल वाला ।
 प्राज्ञो व्याकरणे ५-२-१०१—बुद्धिमान्, व्याकरण शास्त्र में ।
 प्राज्ञा ,, बुद्धिमती ।
 श्राद्धः ,, श्रद्धा वाला ।
 आर्चः ,, पूजा वाला ।
 वार्त्तः ,, जीविका या व्यापार वाला ।
 तपस्वी ५-२-१०२—तप वाला ।
 सहस्री ,, हजार कार्पापण वाला ।
 तापसः ५-२-१०३—तप वाला ।
 साहस्रः ,, हजार कार्पापण वाला ।
 ज्यौत्स्नः ,, चाँदनी (चन्द्रमा का प्रकाश) वाला पक्ष ।
 तामिस्रः ,, अन्धकार वाला पक्ष ।
 सैकतः घटः ५-२-१०४—बालू वाला घड़ा ।
 शार्करः ,, कंकड़ियों वाला ।
 सिकताः, सिकतिलः, सैकतः,
 रसिकतावान् ५-२-१०५—बालू वाला ।
 दन्तुरः ५-२-१०६—निकले दाँत वाला ।
 ऊषरः ५-२-१०७—खारी मिट्टी वाला ।
 सुषिरः ,, सुराख वाला ।
 मुष्करः ,, अङ्कोष वाला ।
 मधुरः ,, मिठास वाला ।
 खरः ,, चौड़े गले वाला, गधा ।
 मुखरः ,, अधिक बोलने वाला ।
 कुञ्जरः ,, निकले हुए दाँत वाला हाथी ।
 नगरम् ,, पेड़ोंवाला, नगर ।

पांसुरः ५-२-१०६—मिट्टी या धूल वाला ।	
पाण्डुरः ,, सफेद वर्ण वाला ।	
कच्छुरः ५-२-१०७—खौरहा, खजरोग वाला ।	
द्युमः ५-२-१०८—प्रकाश ।	
हुमः ,, वृक्ष, शाखावाला ।	
केशवः, केशी, केशवान् ५-२-१०९—बाल वाला ।	
मणिवः नाग विशेषः ,, मणिवाला, सर्प विशेष ।	
हिरण्यवो निधि विशेषः ,, सुवर्णवाला रत्न विशेष ।	
धर्णवः ,, लहरोंवाला, समुद्र ।	
गाण्डीवम् ५-२-११०—गाँठवाला, अर्जुन का धनुष ।	
अजगवं पिनाकः ,, शंकर का धनुष ।	
काण्डीरः ५-२-१११—बाण वाला ।	
आण्डीरः ,, अंडावाला ।	
रजस्वला ५-२-११२—रजोधर्मवाली ।	
कृषीवलः ,, खेतीवाला, किसान ।	
आसुतीवलः शौण्डिकः ,, शराव बनाने या देवने वाला ।	
परिषद्वलः ,, सभावाला ।	
पर्वद्वलम् ,, ,, ,,	
भ्रातृवलः ,, भाईवाला ।	
पुत्रवलः ,, पुत्रवाला ।	
शत्रुवलः ,, शत्रुवाला ।	
दन्तावल्लो हस्ती ५-२-११३—दाँतवाला हाथी ।	
शिखावलः केकी ,, चोटीवाला मोर ।	
ज्योत्स्ना ५-२-११४—प्रकाशवाली, चाँदनी ।	
तमिल ,, अंधकार वाली, रात ।	
तमिलम् ,, अंधकार वाला ।	
शृङ्गिणः ,, सींगवाला ।	
ऊर्जस्वी ,, शक्तिशाली ।	
ऊर्जस्वलः ,, ,,	
ऊर्जस्वतीः ,, शक्तिशालिनी ।	
गोमी ,, बैल या गायवाला ।	
मलिनः ,, मैलवाला ।	
मलीमसः ,, मैलवाला ।	
दण्डी दण्डिकः ५-२-११५—दण्डवाला ।	

ग्रीही, ग्रीहिकः ५-२-११६—धानवाला ।	
तुन्दिलः तुन्दी तुन्दिकः तुन्दवान् ५-२- १७—तोंदवाला ।	
कर्णिलः कर्णी कर्णिकः कर्णवान् ,, वड़े कान वाला ।	
ऐकशतिकः ५-२-११८—एक सौ कार्षापण वाला ।	
ऐकसहस्रिकः ,, एक हजार कार्षापण वाला ।	
गौशतिकः ,, सौ गाय वाला ।	
गौसहस्रिकः ,, हजार गाय वाला ।	
नैकशतिकः ५-२-११९—एक सौ निष्क वाला ।	
नैक सहस्रिकः ,, एक हजार निष्क वाला ।	
रूप्यः कार्षापणः ५-२-१२०—जिस कार्षापण पर किसी राजा का आकार हो ।	
रूप्यो गौः ,, सुन्दर रूपवाला बैल ।	
रूपवान् ,, रूप वाला ।	
हिम्याः पर्वताः ,, बर्फ वाले पहाड़ ।	
गुण्याः ब्राह्मणाः ,, गुण वाले ब्राह्मण ।	
यशस्वी यशस्वान् ५-२-१२१—कीर्ति वाला ।	
मायावी मायी मायिकः ,, माया वाला, जादूगर ।	
मग्वी ,, माला वाला ।	
आमयावी ,, रोग वाला ।	
शृङ्गारकः ,, सींग वाला ।	
वृन्दारकः ,, झुंडवाला, देवता ।	
फलिनः ,, फलवाला ।	
बर्हिणः ,, पूँछवाला, मोर ।	
हृदयालुः, हृदयी ,, प्रशस्त हृदय वाला ।	
हृदयिकः हृदयवान् ,,	
शीतालु ,, शीत, न सहने वाला ।	
उष्णालुः ,, गर्मी न सहने वाला ।	
तृप्रालुः ,, पुरोडाश या कष्ट, पीड़ा न सहने वाला ।	
हिमेलुः ,, हिम न सहने वाला ।	
बलूलः ,, बल न सहने वाला ।	
वातूलः ,, वात न सहने वाला या वात समूह, बवंडर ।	
पर्वतः, मरुतः ,, पहाड़, हवा ।	
ऊर्णायुः ५-२-१२३—	ऊन वाला ।

वाग्मी ५-२-१२४—उपयुक्त और अधिक बोलने वाला ।

वाचाः ५-२-१२५—व्यर्थ बहुत बोलने वाला, वक-
वादी ।

वाचाटः ” ”

वाग्मी ” वावदूक, खूब बोलने वाला ।

स्वामी ५-२-१२६—ऐश्वर्य वाला ।

अशंसः ५-२-१२७—ववासीर वाला ।

कटकवल्यिनी ५-२-१२८—कंकण तथा विगायठ वाली ।

शङ्खनूपुरिणी ” शंख और नूपुर वाली ।

कुष्ठी ” गलित कुष्ठ वाला ।

किलासी ” श्वेत कुष्ठ वाला ।

ककुदावर्ती ” कंभे पर चक्र (भौरी)
वाला ।

काकतालुकी ” कौए की तरह तालु वाला ।

पुष्पफलवान् घटः ” फूलफल वाला घड़ा ।

पाणिपादवती ” हाथ पैर वाली ।

चित्रकललाटिकावती ” तिलक तथा ललाट के
आभूषण वाली ।

वातकी ५-२-१२९—वातरोग वाला ।

अतीसारकी ” अतीसार रोग वाला ।

वातवती गुहा ” हवा वाली गुफा ।

पिशाचकी ” पिशाचों वाले (कुबेर) ।

पञ्चमी उष्ट्रः ” पाँच महीने या पाँच वर्ष का ऊँट ।

पञ्चमवान् ग्रामः ” पञ्चम स्वर वाला ग्राम राग ।

सुखी ५-२-१३—सुखवाला ।

दुःखी ” दुःखवाला ।

माली ” माला धारण का अधिकारी न होते
हुए माला वाला ।

ब्राह्मणधर्मी ५-२-१३२—ब्राह्मणों के धर्म वाला ।

ब्राह्मणशीली ” ब्राह्मण स्वभाव या चरित्र वाला ।

ब्राह्मणवर्णी ५-२-१३५—ब्राह्मण वर्ण वाला ।

हस्ती ५-२-१३३—हाथ (सूँड) वाला हाथी ।

हस्तवान् पुरुषः ” हाथ वाला पुरुष ।

वर्णी ५-२-१३४—ब्रह्मचारी ।

पुष्करिणी ५-२-१३५—तालाब, बावली ।

पद्मिनी ” ”

पुष्करवान् करी ” सूँड वाला हाथी ।

बाहुवली ” बाहुवल वाला ।

ऊरुवली ” जाँघ के दलवाला ।

सर्वधनी ” सब प्रकार के धन वाला ।

सर्वबीजी ” सब प्रकार के बीज वाला ।

अर्थी ” धन चाहने वाला, जिसके पास धन
न हो ।

अर्थवान् ” धन वाला ।

भान्यार्थी ” अन्न चाहने वाला ।

हिरण्यार्थी ” सुवर्ण चाहने वाला ।

बलवान्, बली ५-२-१३६—बलवाला ।

उत्साहवान्, उत्साही ” उत्साह वाला ।

प्रथिमिनी ५-२-१३७—स्थूलता वाली ।

दामिनी ” विजली ।

होमिनी ” हवन करने वाली ।

सोमिनी ” सोमरस वाली ।

सोमवान् ” सोमरस वाला ।

कँवः, कंभः, कँव्युः, कंतिः,

कंतुः, कंतः, कँयः ५-२-१३८—जलवाला या सुख वाला ।

शँवः, शंभः, शँयुः,

शंतिः, शंतुः, शंतः, शँयः ” सुख वाला ।

तुन्दिमः ५-२-१३९—तोंद वाला ।

वलिमः, वटिमः, वलिनः ” त्रिवली वाला ।

अहंयुः ५-२-१४०—बमंडी, अभिमानी ।

शुभंयुः ” कल्याण वाला ।

इति मत्त्वर्थीयप्रकरणम् ।

अथ प्राग्दिशीयप्रकरणम्

कुतः, कस्मात् ५-३-१, २, ३, ४, ५,
 ६, ७, ७-२-१०४—किससे, कहाँ से किस कारण से ।
 यतः ,, क्योंकि, जिससे, जिस कारण से ।
 ततः ,, इसलिए, इससे, इस ,,
 अतः ,, ,, ,,
 इतः ,, यहाँ से, इधर से ।
 अमुतः ,, यहाँ से ।
 बहुतः ,, बहुतों से, अनेक स्थानों से ।
 परितः ५-३-८, ९—चारों ओर से ।
 अमितः ,, दोनों ओर ।
 कुत्र ५-३-१०—कहाँ ।
 यत्र ,, जहाँ ।
 तत्र ,, वहाँ ।
 बहुत्र ,, बहुत स्थानों में ।
 इह ५-३-११—यहाँ ।
 क्व, कुत्र ५-३-१२; ७-२-१०५—कहाँ ।
 कुह ५-३-१३—कहाँ (वैदिक प्रयोग) ।
 एतस्मिन् ग्रामे सुखं वसामः २-४-३३—हम इस ग्राम में
 सुख से रहते हैं ।
 अतोऽग्राधीमहे ,, इसलिए हमें यहाँ
 पढ़ने दो ।
 अतो न गन्तारः स्मः ,, हम लोग यहाँ से
 न जायेंगे ।
 स भवान् ५-३-१४—परम माननीय आप ।
 ततो भवान् ,, ,,
 तत्र भवान् ,, ,,
 तं भवन्तम् ,, ,, आपको ।
 ततो भवन्तम् ,, ,,
 तत्र भवन्तम् ,, ,,
 स दीर्घायुः ,, वह बड़ी आयु वाले ।

देवानां प्रियः ,, देवताओं का प्रिय ।
 आयुष्मान् ,, लम्बी आयु वाला ।
 सदा, सर्वदा ५-३-१५—हमेशा ।
 एकदा ,, एक बार ।
 अन्यदा ,, दूसरी बार ।
 यदा ,, जब ।
 कदा ,, कब ।
 तदा ,, तब ।
 सर्वत्र देशे ,, सारे देश में ।
 एतर्हि ५-३-१६—इस समय ।
 इह देशे ,, इस देश में ।
 अधुना ५-३-१७—अब ।
 इदानीम् ५-३-१८—इस समय ।
 तदा, तदानीम् ५-३-१९—तब, उस समय ।
 कर्हि, कदा ५-३-२१—कब ।
 यर्हि, यदा ,, जब ।
 तर्हि, तदा ,, तब ।
 एतर्हि ,, इस समय ।
 सद्यः ५-३-२२—उसी दिन, तत्क्षण ।
 परित् ,, गत वर्ष ।
 परारि ,, गतवर्ष के पहले वर्ष ।
 ऐषमः ,, इस वर्ष ।
 परेद्यवि ,, दूसरे दिन ।
 अद्य ,, आज ।
 पूर्वेषुः ,, पहले दिन ।
 अन्येषुः ,, दूसरे दिन ।
 उभयेषुः, उभयद्वयः ,, दोनों दिन ।
 तथा ५-३-२३—उस प्रकार से ।
 यथा ,, जिस प्रकार से ।
 इत्थम् ५-३-२४—इस प्रकार से ।
 कथम् ५-३-२५—किस प्रकार से, क्यों, कैसे ।

इति प्राग्दिशीयप्रकरणम् ।

अथ प्राग्वीयप्रकरणम्

पुरः, पुरस्तात् ५-३-२७, ३९, ४०—पूर्व की ओर, पूर्व से पहले, पूर्वकाल में, सामने ।	पूर्वेण ग्रामम् ५-३-३५—गाँव के समीप ही पूर्व की ओर ।
अधः, अधस्तात् ,, नीचे की ओर, नीचे से, नीचे ।	अधरेण ग्रामम् ,, गाँव के समीप ही नीचे की ओर ।
अवः, अवस्तात् ,, बाहर की ओर, बाहर से, बाहर ।	दक्षिणा वसति ५-३-३६—दक्षिण दिशा में रहता है ।
अवस्तात्, अवस्तात् ५-३-४१—	दक्षिणादागतः ,, दक्षिण दिशा से आया है ।
ऐन्द्रथां वसति ,, वह पूर्व दिशा में रहता है ।	दक्षिणाहि-दक्षिणा ५-३-३७—दूर दक्षिण में या दूर दक्षिण दिशा ।
पूर्व ग्रामं गतः ,, पूर्व के गाँव में गया ।	उत्तराहि, उत्तरा ५-३-३८—दूर उत्तर दिशा में या दूर उत्तर दिशा ।
पूर्वस्मिन् गुरौ वसति ,, पहले के गुरु के यहाँ रहता है ।	चतुर्धा ५-३-४२—चार प्रकार से ।
दक्षिणतः ५-३-२८—दक्षिण की ओर, दक्षिण से, दक्षिण उत्तरतः ,, उत्तर ,, उत्तर से, उत्तर ।	पञ्चधा ,, पाँच प्रकार से ।
परतः ५-३-२९—आगे ,, आगे से, आगे ।	एकं राशिं पञ्चधा कुरु ५-३-४३—एक ढेर को पाँच में बाँटो ।
अवरतः ,, बाहर ,, बाहर से, बाहर ।	ऐक्यम्, एकधा ५-३-४४—एक प्रकार से ।
परस्तात् ,, आगे ,, आगे से, आगे ।	द्वैधम्, द्विधा ५-३-४५—दो प्रकार से ।
अवरस्तात् ,, बाहर ,, बाहर से, बाहर ।	त्रैधम्, त्रिधा ,, तीन प्रकार से ।
प्राक् ५-३-३०—पूर्वकी ओर पूर्व से, पूर्व ।	पथि द्वैधानि ,, मार्ग में दो प्रकार ।
उदक् ,, उत्तर की ओर, उत्तर से, उत्तर ।	द्वेधा ५-३-४६—दो प्रकार से ।
उपरि उपरिष्टाद्वा वसति,	त्रेधा ,, तीन प्रकार से ।
आगतः, रमणीयंवा ५-३-३१—ऊपर की ओर रहता है, ऊपर से आया है, ऊपर मनोहर है ।	मिषकपाशः ५-३-४७—तुच्छ या बुरा वैद्य ।
उत्तरात् ५-३-३४—उत्तर की ओर, उत्तर से, उत्तर ।	द्वितीयः ५-३-४८—दूसरा ।
अधरात् ,, नीचे की ओर, नीचे से, नीचे ।	तृतीयः ,, तीसरा ।
दक्षिणात् ,, दक्षिण की ओर दक्षिण से दक्षिण ।	द्वैतीयिकः, द्वितीयः ,, दूसरा ।
उत्तरेण ५-३-३५—पासही उत्तर की ओर ।	तार्तीयिकः, तृतीयः ,, तीसरा ।
अधरेण ,, पासही नीचे की ओर ।	द्वितीया ,, दूसरी (विद्या) ।
दक्षिणेन ,, पासही दक्षिण की ओर	तृतीया ,, तीसरी (विद्या)
	चतुर्थः ५-३-४९—चौथा ।
	पञ्चमः ,, पाँचवाँ ।
	षष्ठः, षष्ठः ५-३-५०—छठा ।
	आष्टमः, अष्टमः ,, आठवाँ ।
	षष्ठः, षाष्ठः षष्ठकः ५-३-५१—एक ग्रेन (मान) का छठा भाग ।
	अष्टमः आष्टमः ,,
	अष्टमः ,, पशु के अंग का आठवाँ भाग ।

एकः, एकाकी, एककः ५-३-५२—अकेला ।
 आढ्यचरः ५-३-५३—पूर्वकाल का घनी ।
 कृष्णरूप्यः, कृष्णचरः ५-३-५४—पूर्वकाल में (पहले का)
 कृष्ण का ।
 शुभ्रारूप्यः ,, पूर्वकाल में शुभ्रानाम
 की स्त्री का ।
 आढ्यतमः ५-३-५५—सबलोगों में अधिक सम्पन्न, घनी ।
 लघुपिण्डः, लघुतमः ,, सबसे छोटा ।
 किन्तुमा ५-३-५६, ५-४-११,
 १-१-२२—कितना अधिक ।
 प्राद्गेतमाम् ,, बिलकुल पूर्वाह्न में ।
 पचसितमाम् ,, वह अत्युत्तम पकाता है ।
 उच्चैस्तमाम् ,, बहुत ऊँचे से या बहुत जोर से ।
 उच्चैस्तमस्तरुः ,, सबसे ऊँचा वृक्ष ।
 लघुतरः, लघीयान् ५-३-५७—दोनों में छोटा ।
 पटुतराः, पटीयांस्तः—
 उदीच्याः प्राच्येभ्यः ,, उत्तरीय जन पूर्वीय जनों
 की अपेक्षा निपुण होते हैं ।
 प्रथिण्डः, प्रथीयान् ,, सबसे बड़ा ।
 पाचकतरः ५-३-५८—दोनों में अच्छा पकाने वाला ।
 पाचकतमः ,, सब में अच्छा पकाने वाला ।
 करिण्डः ६-४-१५४—सबसे बढ़कर काम करने वाला ।
 दोहीयसी धेनुः ,, अधिक दूध देने वाली गाय ।
 ओण्डः, ओयान् ५-३-६० ६-४-१६३—सबसे बड़ा ।
 ज्येष्ठः, ज्यायान् ५-३-६१, ६२—सबसे बड़ा ।
 ज्येष्ठः, ज्यायान् ६-४-१६०—सबसे बृद्ध ।
 नेदिण्डः, नेदीयान् ५-३-६३—सबसे समीप ।
 साधिष्ठः, साधीयान् ,, सबसे शक्ति शाली ।
 स्थविण्डः ६-४-१५६—सबसे मोटा ।
 दविण्डः ,, बहुत दूर ।
 यविण्डः ,, सबसे छोटा ।
 हसिण्डः ,, सबसे छोटा ।
 क्षेपिण्डः ,, सबसे शीघ्र ।
 क्षोदिण्डः ,, सबसे छोटा ।
 हसिमा ,, छोटाई ।
 क्षेपिमा ,, शीघ्रता ।

क्षोदिमा ६-४-१५६—छोटाई ।
 प्रेष्ठः ,, सबसे प्रिय ।
 स्थेष्ठः ,, सबसे स्थिर ।
 स्फेष्ठः ,, सबसे अधिक ।
 वरिष्ठः ,, सबसे श्रेष्ठ, सर्वोत्तम ।
 वंहिष्ठः ,, सबसे अधिक ।
 गरिष्ठः ,, सबसे बड़ा ।
 वर्धिष्ठः ,, सबसे बृद्ध ।
 त्रपिष्ठः ,, सबसे शीघ्र ।
 द्राधिष्ठः ,, सबसे शीघ्र ।
 वृन्दिष्ठः ,, सबसे बड़ा भुंड ।
 प्रेयान्, प्रेमा ,, सबसे प्रिय ।
 भूमा, भूयान् ६-४-१५८—सबसे अधिक ।
 भूयिष्ठः ६-४-१५९—सबसे अधिक ।
 कनिष्ठः, कनीयान् ५-३-६४—सबसे छोटा ।
 यविष्ठः ,, सबसे छोटा ।
 अलिपिष्ठः ,, सबसे कम ।
 सजिष्ठः, सजीयान् ५-३-६५—सबसे अधिक माला वाला ।
 त्वचिष्ठः, त्वचीयान् ५-३-६५—सबसे अधिक त्वचा
 वाला ।
 पटुरूपः ५-३-६६—प्रसिद्ध या विख्यात कलाकार या
 निपुण ।
 पचतिरूपम् ,, पकाने में प्रसिद्ध ।
 यशःकल्पम् ५-३-६७—साधारण कीर्ति ।
 यजुष्कल्पम् ,, अधूरा यजुर्वेद ।
 विद्वद्देश्यः, विद्वद्देशीयः, विद्वत्कल्पः ,, साधारण विद्वान् ।
 पचतिकल्पम् ,, साधारण पकाने वाला ।
 बहुपटुः, पटुकल्पः ५-३-६८—साधारण निपुण ।
 यजतिकल्पम् ,, साधारण यज्ञ करने वाला ।
 पटुजातीयः ५-३-६९—निपुण व्यक्ति समझा जाने वाला ।
 अश्वकः ५-३-७०, ७१, ७२, ७३—किसका घोड़ा ?
 उच्चकैः ,, क्या ऊँचा है ?
 नीचकैः ,, क्या नीचा है ?
 सर्वकैः ,, क्या यह सबको
 स्वीकार है ?

विश्वके ५-३-७४—क्या यह संसार को स्वीकार है ?

युवकयोः ॥ क्या तुम दोनों का ?

आवकयोः ॥ क्या हम दोनों का ?

युष्मकासु ॥ क्या तुम लोगों में ?

अस्मकासु ॥ क्या हम लोगों में ?

युष्मकाभिः ॥ क्या तुम लोगों से ?

अस्मकाभिः ॥ क्या हम लोगों से ?

त्वयका ॥ क्या तुम से ?

मयका ॥ क्या मुझसे ?

तूष्णीकामास्ते ॥ वह चुपचाप बैठा है ?

तूष्णीकः ॥ मौन, अल्पभाषी ।

पचतकि ॥ क्या वह पकाता है ?

जल्पतकि ॥ क्या वह बोलता है ?

धकित् ॥ धिक्कार ।

हिरकुत् ॥ दूर, अलग, परोक्ष ।

अश्वकः ५-३-७४—खराब सुस्त घोड़ा ।

शूद्रकः ५-३-७५—खराब शूद्र ।

राधकः ॥ निन्दित सूत ।

पुत्रकः ५-३-७६—दयनीय पुत्र, छोटा पुत्र ।

हन्त ते धानकाः ५-३-७७—बेटा, तुम्हारे लिये भुने जाँ हैं ।

गुडकाः ॥ ॥ गुड़ हैं ।

एहकि ॥ बेटा आओ ।

अद्धकि ॥ ॥ भोजन करो ।

देविकः, देवियः, देविलः,

देवदत्तकः ५-३-७८, ७९, ८३—प्रिय देवदत्त, अति-परिचय के कारण देव-दत्त के नाम ।

वायुकः, वायुदत्तकः ॥ प्रेम तथा परिचय के कारण वायुदत्त के नाम ।

वायुकः ॥ ॥ ॥

पितृकः ॥ ॥ अतिप्रिय पिता ।

वृहस्पतिकः ५-३-७९—प्रिय बृहस्पति दत्त ।

देवदत्तकः, देवकः ॥ प्रिय देवदत्त ।

दत्तिकः, दत्तियः, दत्तिलः, दत्तकः ॥ प्रिय तथा अति परिचित देवदत्त ।

देवदत्तः, दत्तः, देवः ५-३-७९—प्रिय तथा अति परिचित देवदत्त ।

सत्यभामा, मामा, सत्या ॥ ॥ सत्यभामा ।

मानुदत्तः, मानुलः ॥ ॥ मानुदत्त ।

सवित्रियः, सवितृलः ॥ ॥ सविता ।

उपडः, उपकः, उपियः, उपिलः, उपिकः

उपेन्द्रदत्तकः ५-३-८०—प्रिय तथा अति परिचित उपेन्द्रदत्त ।

सिंहकः ५-३-८१—प्रिय तथा परिचित किसी मनुष्य का नाम ।

शरभकः ॥ ॥ ॥

रासभकः ॥ ॥ ॥

कहोडः ॥ ॥ ॥

कहिकः ॥ ॥ ॥

वागाशीर्दत्तः ॥ ॥ ॥

वाचिकः ॥ ॥ ॥

षडङ्गुलिदत्तः, षडिकः ॥ ॥ ॥

शेवलिकः, शेवलियः, शेवलिलः ५-३-८४—॥

सुपरिकः ॥ ॥ ॥

विशालिकः ॥ ॥ ॥

वरुणिकः ॥ ॥ ॥

अर्यमिकः ॥ ॥ ॥

व्याघ्रकः ५-३-८२—व्याघ्राजिन का नाम ।

सिंहकः ॥ सिंहा जिनका नाम ।

तैलकम् ५-३-८५—थोड़ा तेल ।

वृक्षकः ५-३-८६—छोटा पेड़ ।

वंशकः ५-३-८७—छोटा बाँस (बाँसिन) ।

वेणुकः ॥ ॥ ॥

कुटीरः ५-३-८८—छोटी झोपड़ी ।

शमीरः ॥ छोटा शमी वृक्ष ।

शुण्डारः ॥ शुण्डा (वृक्ष विशेष) छोटा शुण्डा ।

कुतुपः ५-३-८९—छोटी कुप्पी (तेल रखने के लिए चर्मपात्र) ।

कासूतरी ५-३-९०—छोटा भाला ।

गोणीतरी ॥ छोटी बोरी ।

एकशालिकः, ऐकशालिकः ५-३-१०९—एक कमरे या मकान की तरह ।

कार्कीकः ५-३-११०—सफेद घोड़े की तरह ।

लौहितीकः स्फटिकः ,, स्फटिक जो अन्य वस्तु के सम्पर्क से लाल प्रतीत होता हो ।

लोहितध्वज्यः ५-३-११२—लाल ध्वजा वाला संघ ।

कपोतपाक्यः ५-३-११३—कबूतरों से जीवन निर्वाह करने वाली एक जंगली जाति ।

कौञ्जान्यः ,, कुञ्ज के वंशजों का समूह ।

ब्राह्म्यान्यः ,, ब्रह्म के वंशजों का समूह ।

क्षौद्रक्यः ५-३-११४—वाहीक जनपद के शस्त्रजीवी दुद्रकों का समूह ।

मालव्यः ,, ,, ,, मालवों ,,

क्षौद्रकी ,, वाहीक जनपद के शस्त्रजीवी स्त्री समूह ।

मल्लाः ,, वाहीक जनपद का मल्ल जाति का समूह ।

सम्राट् ,, वाहीक जनपद का शस्त्रजीवी राजा ।

शवराः ,, एक जंगली जाति समूह, यह वाहीक जनपद का नहीं है ।

गोपालकाः ब्राह्मणाः ,, गाय पालने वाले ब्राह्मण ।

शालङ्कायनाः ,, शालङ्कायन नामक क्षत्रियों का समूह ।

वार्केण्यः ५-३-११५—वृक नामक शस्त्र जीवियों का समूह

दामनीयः ५-३-११६—दामनि नामक शस्त्र जीवियों का समूह ।

दामनीयौ ,, ,,

दामनयः ,, ,,

औलपीयः ,, औलपी नामक ,,

कौण्डोपरथीयः ,, कौण्डोपरथ ,,

दाणुकीयः ,, दाणुकि ,,

पार्श्वः ५-३-११७—पशु ,,

पार्श्वौ ,, ,,

पश्वः ,, ,,

यौधेयः ,, यौधेय ,,

यौधेयौ ५-३-११७—यौधेय नामक शस्त्र जीवियों का समूह ।

यौधेयाः ,, ,,

आभिजित्यः ५-३-११८—अभिजित् के वंशज

वैदभृत्यः ,, विदभृत् के वंशज

शालावत्यः ,, शालावत् के वंशज

शैखावत्यः ,, शिखावत् के वंशज

शमीवत्यः ,, शमीवत् ,, ,,

और्णावत्यः ,, ऊर्णावत् ,, ,,

श्रौमत्यः ,, श्रुमत् के वंशज

लोहितध्वजाः ५-३-११९—लाल ध्वजा वाले सङ्घ ।

कपोतपाकाः कबूतरों से निर्वाह करने वाली जाति का संघ ।

कौञ्जानाः ५-३-११९—कुञ्ज के वंशज ।

ब्राह्मयानाः ,, ब्रह्म के वंशज ।

द्विपदिकाम् ५-४-१—दो दो चतुर्याश ।

द्विशतिकाम् ,, दो दो सौ ।

द्विमोदकिकाम् ,, दो दो लड्डू ।

द्विपदिकां दण्डितः द्विशतिकां-

व्यवसृजति ५-४-२—दो चतुर्याश दण्डित होने पर दो सौ देता है ।

स्थूलकः ५-४-३—मोटा सा ।

अणुकः ,, छोटा सा ।

चञ्चलकः ,, चलता हुआ सा ।

बृहत्कः ,, बड़ा सा ।

सुरकः ,, शराव की तरह (लाल सर्प) ।

छिन्नकम् ५-४-४—कटा हुआ सा ।

मिन्नकम् ,, टूटा हुआ सा ।

अमिन्नकम् ,, न टूटा हुआ सा ।

सामिकृतम् ५-४-५—आवा किया हुआ ।

अर्धकृतम् ,, ,,

बहुतरकम् ,, अधिकतर ।

बृहतीकम् ५-४-६—चादर ।

बृहतीछन्दः ,, बृहती नामक वैदिक छन्द ।

अषडक्षीणो मन्त्रः ५-४-७—बह सलाह जो छः आँखों, (तीन मनुष्यों) से न देखी गयी हो ।

आशितङ्गवीनमरण्यम् ५-३-७—वह जंगल जहाँ पहले
पशु चरते रहे हों।

अलङ्कर्मणिः ,, किसी काम को करने में समर्थ,
निपुण, कुशल।

अलम्पुरुषीणाः ,, किसी मनुष्य के लिए योग्य,
बराबर।

ईश्वराधीनः ,, ईश्वर के वश में।

प्राचीनम् ५-४-८—पुराना।

प्रतीचीनम् ,, नया।

अर्वाचीनम् ,, नया।

प्राची दिक् ,, पूर्व दिशा।

उदीची दिक् ,, उत्तर दिशा।

प्राचीना ब्राह्मणी ,, पुरानी ब्राह्मणी।

प्राचीनं ग्रामादाम्नाः ,, आम के पेड़ गाँव से पूर्व हैं।

ब्राह्मणजातीयः ५-४-९—ब्राह्मण के लिए उचित, संगत।

ब्राह्मणजातिः शोभना ,, ब्राह्मण जाति सुन्दर जाति है।

पितृस्थानीयः, पितृस्थानः ५-४-१०—पिता के समान
स्थान का अधिकारी।

गोःस्थानम् ,, गोशाला।

अनुगादिकः ५-४-१३—दुहराने वाला या प्रतिध्वनि करने
वाला।

वैसारिणः ५-४-१६—मछली, धीरे-धीरे खिसकने वाली।

विसारी देवदत्तः ,, धीरे-धीरे खिसकने वाला देवदत्त।

पञ्चकृत्वो भुङ्क्ते ५-४-१७—पाँच बार भोजन करता है।

भूरिवारात् भुङ्क्ते ,, अनेक बार भोजन करता है।

द्विभुङ्क्ते ४-३-१८—दो बार भोजन करता है।

त्रिभुङ्क्ते ,, तीन बार ,,

चतुर्भुङ्क्ते ,, चार बार ,,

सकृद्भुङ्क्ते ५-४-१९—एक बार ,,

बहुधाकृत्वो वा दिवसस्य भुङ्क्ते ५-४-२०—दिन में अनेक
बार भोजन करता है।

बहुकृत्वो मासस्य भुङ्क्ते ,, महीने में अनेक बार
भोजन करता है, प्रति-
दिन नहीं।

अन्नमयम् ५-४-२१—भोजन का प्राचुर्य, आधिक्य।

अपूपमयम् ,, पुओं का प्राचुर्य ,,

यवागूमयी ,, लप्सी का ,,

अन्नमयो यज्ञः ,, भोज, जिसमें भोजन का
प्राचुर्य हो।

अपूपमयं पर्वं ,, वह त्योहार जिसमें पुओं का
प्राचुर्य हो।

मौदकिकम्, मोदकमयम् ५-४-२२—जिसमें लड्डू प्रचुरता
से प्रस्तुत किये
गये हों।

शाकुलिकम्, शकुलीमयम् ,, जिसमें पूरियाँ प्रचुरता
से प्रस्तुत की गई हों।

मौदकिको यज्ञः, मोदकमयः ,, वह यज्ञ जिसमें लड्डू
प्रचुरता से प्रस्तुत
किये गये हों।

आनन्त्यम् ५-४-२३—जिसका अन्त न हो।

आवसथ्यम् ,, आहवनीय अग्नि का स्थान।

ऐतिह्यम् ,, परम्परागत वर्णन, इतिहास।

मैषज्यम् ,, औषध।

अग्निदेवत्यम् ५-४-२४—अग्निदेव के लिए।

पितृदेवत्यम् ,, पितृदेव के लिए।

पाद्यम् ५-४-२५—पैर धोने के लिए जल।

अर्घ्यम् ,, पूजन के लिए जल।

नूतनम्, नूतनम्,

नवीनम् ,, नया।

प्रणम्, प्रत्नम्,

प्रतनम्, प्रीणम् ,, पुराना।

भागधेयम् ,, भाग्य।

रूपधेयम् ,, रूप।

नामधेयम् ,, नाम।

अग्नीध्रम् ,, यज्ञ में अग्नि स्थापन का स्थान।

साधारणम् ,, सामान्य।

अग्नीध्री ,, यज्ञ में अग्नि स्थापन की शाला।

साधारणी ,, सामान्य।

आतिथ्यम् ,, अतिथि सत्कार।

देवता ५-४-२७—देव ।
 अविकः ५-४-२८—भेड़ ।
 यावकः ५-४-२९—कूटा हुआ, उवाला हुआ तथा दूध
 शक्कर मिला जा ।
 मणिकः ,, मणि ।
 लोहितकः मणिः ५-४-३०—लाल मणि ।
 लोहितकः कोपेन ५-४-३१—क्रोध से लाल ।
 लोहितिका, लोहिनिका कोपेन ,, क्रोध से लाल ।
 लोहितिका, लोहिनिका शाटी ५-४-३२—लाल रंग की
 साड़ी ।
 कालकं मुखं वैलक्ष्येण ५-४-३३—लज्जा या व्याकुलता से
 काला मुख ।
 कालकः पटः ,, काला वस्त्र ।
 कालिका शाटी ,, काली साड़ी ।
 वैनयिकः ५-४-३४—नम्रता, प्रार्थना ।
 सामयिकः ,, समय ।
 औपयिकः ,, उपाय ।
 वाचिकम् ५-४-३५—सन्देश ।
 कार्मणम् ५-४-३६—सन्देश सुनकर तदनुसार किया जाने
 वाला कर्म ।
 औषधं पिबति ५-४-३७—दवा पीता है ।
 औषधयःक्षेत्रे रूढाः ,, औषधियाँ खेत में उगी हुई ।
 प्राज्ञः ५-४-३८—बुद्धिमान् ।
 प्राज्ञी स्त्री ,, बुद्धिमती स्त्री ।
 दैवतः ,, देवता ।
 बान्धवः ,, भाई बन्धु ।
 मृशिका ५-४-३९—मिट्टी ।
 मृत्सा, मृत्स्ना ५-४-४०—उत्तम मिट्टी ।
 बहुशः ५-४-४२—बहुत सा, बहुतों को ।
 अल्पशः ,, थोड़ा सा, थोड़े आदमियों को ।
 वहूनि ददात्यनिष्टेषु ,, अनिष्ट के समय बहुत देता है ।
 अल्पं ददात्याभ्युदयिकेषु ,, उन्नति के समय कम देता है ।
 द्विशः ५-४-४३—दो दो ।
 मापशः ,, एक एक माशा ।
 प्रस्थशः ,, एक एक प्रस्थ ।
 घटं घटं ददाति ,, घड़े घड़े भर देता है ।

द्वौ ददाति ५-४-४३—दो देता है ।
 द्वयोर्द्वयोः स्वामी ,, दो दो का मालिक ।
 प्रद्युम्नः कृष्णतः प्रति ५-४-४४—प्रद्युम्न कृष्ण के
 प्रतिनिधि ।
 आदितः ,, आदि से लेकर ।
 मध्यतः ,, मध्य से लेकर ।
 अन्ततः ,, अन्त से लेकर ।
 पृष्ठतः ,, पीछे से लेकर या तक ।
 पार्श्वतः ,, बगल से लेकर ।
 स्वरतः ,, स्वर से ।
 वर्णतः ,, अक्षर से ।
 ग्रामतः ५-४-४५—गाँव से ।
 स्वर्गाद्दीयते ५-४-४५—स्वर्ग से अलग होता है ।
 पर्वतादवरोहति ,, पहाड़ से उतरता है ।
 चारित्र्येण-चारित्र्यतोऽतिगृह्यते ५-४-४६—अपने सदाचार से
 दूसरों से बढ़ता है ।
 वृत्तेन-वृत्ततो न व्यथते ,, अपने सद्ब्यवहार से
 दुःखी नहीं होता ।
 देवदत्तेन क्षिप्तः ,, देवदत्त से बुरा भला
 कहा गया ।
 वृत्तेन-वृत्ततो हीयते पापः ५-४-४७—पापी अपने दुर्व्यवहार
 से नष्ट होता है ।
 देवदत्तेन हीयते ,, देवदत्त से अलग
 किया जाता है ।
 देवा अर्जुनतोऽभवन् ५-४-४८—देवता अर्जुन के पक्ष में
 हुए ।
 आदित्याः कर्णतोऽभवन् ,, आदित्यगण कर्ण के
 पक्ष में हुए ।
 वृक्षस्य शाखा ,, पेड़ की शाखा ।
 प्रवाहिकातः कुरु ५-४-४९—हैजे की चिकित्सा करो ।
 प्रवाहिकायाः प्रकोपनं करोति ,, हैजे को बढ़ा रहा है या
 कुपित कर रहा है ।
 कृष्णीकरोति ५-४-५०, ७-४-४२—काला करता है ।
 ब्रह्मीभवति ,, ब्रह्म हो रहा है ।
 गङ्गीस्यात् ,, गङ्गा हो जाय ।
 दोषाभूतमहः ,, दिन रात हो गया ।
 दिवाभूता रात्रिः ,, रात दिन हो गयी ।

गार्गीभवति ६-४-१४५—गर्ग का वंशज हो रहा है ।

शुचीभवति ७-४-२४—पवित्र होता है ।

पद्मस्याव् ,, निपुण हो जाय ।

स्वस्तीस्याव् ,, कल्याण हो ।

मात्रीकरोति ,, माता बनाता है ।

अरुक्करोति १-४-५१—घाव करता है ।

उन्मनीस्याव् ,, अन्यमनस्क हो जाय, उदास हो जाय ।

उच्चक्षूकरोति ,, आँख ऊपर करता है ।

उञ्चेतीकरोति ,, उदास करता है, विक्षिप्त करता है ।

विरहीकरोति ,, अलग करता है, वियोग कराता है ।

विरजीकरोति ,, धूल अथवा रजोगुण से रहित करता है ।

दधिसिञ्चति १-४-५२, ८-३-१११—दही छिड़कता है ।

अग्निसाद्भवति ,, आग होता है, जल जाता है ।

अग्नीभवति ,, ,,

एकदेशेन शुक्लीभवति पटः ,, वस्त्र एक भाग में सफेद होता है ,

अग्निसात्सम्पद्यते अग्निसाद्भवतिशस्त्रम् १-४-५३—
शस्त्र आग होता है ।

अग्नी भवति ,, ,,

जलसात्सम्पद्यते जलीभवति जवणम् ,, नमक जल हो जाता है ।

राजसात्करोति राजसात्सम्पद्यते १-४-५४—राजा के अधीन करता है या होता है ।

विप्रत्राकरोति-विप्रत्र सम्पद्यते १-४-५५—दातव्य वस्तु ब्राह्मण को देता है ।

विप्रसात्करोति ,, ब्राह्मण को देता है ।

राजसाद्भवति राष्ट्रम् ५-४-५४—राष्ट्र राजा के अधीन होता है ।

देवत्रा वन्दे रमे वा ५-४-५६—देवता को नमस्कार बहुत करता हूँ या उनमें रमता हूँ ।

बहुत्रा जीवतो मनः १-४-५६—जीवित प्राणी का मन बहुत जगह रमता है ।

पटपटाकरोति ५-४-७५—पटत् पटत् शब्द करता है ।

वृषत्करोति ,, वह पत्थर बना देता है ।

श्रत्करोति ,, वह 'श्रत्' शब्द करता है ।

घरटघरटाकरोति ,, घरट घरट शब्द करता है ।

पटिति करोति ,, वह 'पट' शब्द करता है ।

त्रपटत्रपटाकरोति ,, वह त्रपट त्रपट शब्द करता है ।

द्वितीयाकरोति १-४-५८—वह दुबही (दुबारा जोतना) करता है ।

तृतीयाकरोति ,, ,, तिवहीं (तिबारा जोतना) करता है ।

शम्व्याकरोति ,, वह कोन करता है । एक तरफ से जुते हुए खेत को दूसरी तरफ से जोतता है ।

बीजाकरोति ,, टाँड़ चलाता है । बीज के साथ जोतता है ।

द्विगुणाकरोति क्षेत्रम् १-४-५९—खेत को दुबारा जोतता है ।

समयाकरोति १-४-६०—समय बिताता है ।

समयंकरोति ,, समय बनाता है ।

सपत्राकरोति मृगम् ५-४-६१—मृग को ऐसा बाण मारता है कि बाण का पंखा वाला भाग भी घुस जाता है ।

निपत्रा करोति ,, मृग को ऐसा बाण मारता है कि बाण का पंख वाला भाग भी बाहर निकल जाता है ।

सपत्रं निपत्रं वा करोति भूतलम् ,, वह जमीन में बाण मारता है ।

निष्कुलाकरोति दाडिमम् १-४-६२—वह अनार के दानों को निकालता है ।

सुखाकरोति प्रियाकरोति गुरुम् ५-४-६३—वह गुरु को प्रसन्न करता है ।

दुःखाकरोति स्वामिनम् ५-४-६४—मालिक को दुःखी करता है ।

शूलाकरोति मांसम् ५-४-६५—वह लोहे के छड़ पर मांस भूनता है ।

सत्याकरोति आप्ठं वणिक् ५-४-६६—बनिया बर्तनों के लिए साईं देता है ।

सत्यं करोति विप्रः ५-४-६७—ब्राह्मण कसम खाता है ।

मद्रा करोति ५-४-६७—मुण्डन करता है ।

मद्रा करोति ५-४-६७—मुण्डन करता है ।

मद्रं करोति ५-४-६७—प्रसन्न करता है ।

मद्रं करोति ५-४-६७—कल्याण या भलाई करता है ।

इति तद्विदितप्रकरणम् ।

अथ द्विरुक्तप्रकरणम्

पचति पचति ८-१-१, ४—वह सदा पकाता है ।

भुक्त्वा भुक्त्वा ८-१-१, ४—खा खाकर ।

वृक्षं वृक्षं सिञ्चति ८-१-१, ४—प्रत्येक वृक्ष को खींचता है ।

ग्रामो ग्रामो रमणीयः ८-१-१, ४—प्रत्येक गाँव सुन्दर है ।

परिपरि वङ्गभ्यो वृष्टो देवः ८-१-५—वङ्गाल को छोड़कर चारों ओर वर्षा हुई ।

परिवङ्गभ्यः ८-१-५—वङ्गाल को छोड़कर ।

उपर्युपरि ग्रामम् ८-१-७—गाँव के समीप का प्रदेश ।

अध्यधि सुखम् ८-१-७—सुख के बाद दुःख ।

अधोधो लोकम् ८-१-७—लोकों के बिलकुल नीचे का प्रदेश ।

सुन्दर सुन्दर वृथा ते सौन्दर्यम् ८-१-८—हे सुन्दर, हे सुन्दर, तुम्हारा सौन्दर्य व्यर्थ है ।

देव देव वन्द्योऽसि ८-१-८—हे देव, हे देव, तुम बन्दनीय हो ।

दुर्विनीत दुर्विनीत इदानीं ज्ञास्यसि ८-१-८—अरे दुष्ट, अरे दुष्ट अब तू जानेगा ।

धानुष्क धानुष्क वृथा ते धनुः ८-१-८—धनुर्धर, धनुर्धर तुम्हारा धनुष व्यर्थ है ।

चोर चोर घातयिष्यामि त्वाम् ८-१-८—ऐ चोर, ऐ चोर, तुझे मार डालूँगा ।

एकैकमक्षरम् ८-१-९—प्रत्येक अक्षर, एक एक अक्षर ।

एकैकस्मै देहि ८-१-९—एक एक को (प्रत्येकको) दो ।

गतगतः ८-१-१०—कष्ट है, वह चला ही गया ।

गतगता ८-१-१०—चली ही गयी ।

पटुपटु ८-१-११, १२—कुछ कुछ चतुर स्त्री ।

पटुपटुः ८-१-११, १२—कुछ कुछ चतुर ।

शुक्लशुक्लं रूपम् ८-१-११, १२—सफेद आकार ।

शुक्लशुक्लः पटः ८-१-११, १२—सफेद वस्त्र ।

मूले मूले स्थूलः ८-१-११, १२—प्रत्येक जड़ मोटी होती गयी है ।

सर्पसर्प बुध्यस्व

बुध्यस्व ८-१-११, १२—सर्प, सर्प, सावधान, सावधान हो जाओ ।

सर्प सर्प सर्प बुध्यस्व

बुध्यस्व बुध्यस्व ८-१-११, १२—वह काटो काटो छुनीहि छुनीहीत्येवायं छुनाति ८-१-१२—वह काटो काटो कहकर काटता है ।

अन्योन्यां विप्राः नमन्ति ८-१-१३—ये ब्राह्मण एक दूसरे को प्रणाम करते हैं ।

अन्योन्यौ ८-१-१३—

अन्योन्यान् ८-१-१३—

अन्योन्येन कृतम् ८-१-१३—एक दूसरे से किया गया ।

अन्योन्यस्मै दत्तम् ८-१-१३—एक दूसरे को दिया गया ।

अन्योन्येषां पुष्करैरामृशन्तः ८-१-१३—सूँडों से एक दूसरे को सहलाते हुए ।

परस्परम् ८-१-१३—आपस में ।

इतरेतरम् ८-१-१३—

इतरेतरेण ८-१-१२—एक दूसरे से ।

अन्योन्याम् ,, ,, को

अन्योन्यम् ,, ,,

परस्परम् ,, ,,

परस्परम् ,, ,,

इतरेतराम् ,, ,,

इतरेतरम् ,, ,,

इमे ब्राह्मण्यौ कुले वा

भोजयतः ८-१-१२—ये दोनों ब्राह्मणियाँ अथवा कुल
भोजन कराते हैं ।

प्रियप्रियेण प्रियेण वा ददाति ८-१-१३—हर्ष के साथ
देता है ।

सुखसुखेन सुखेन वा ददाति ,, सुख से देता है ।

यथायथंज्ञाता यथास्मीथं वा ८-१-१४—स्वभाव के अनु-
सार देता है ।

द्वन्द्वं मन्त्रयते ८-१-१५—सलाह (मन्त्रणा) करता है ।

आचतुरं हीमे पशवो

द्वन्द्वं मिथुनीयन्ति ,, ये पशु चार पीढ़ी तक जोड़
खाते हैं अर्थात् मैथुन करते हैं ।

माता पुत्रेण मिथुनं गच्छति ,, माता पुत्र के साथ पौत्र के
साथ तथा प्रपौत्र के साथ
मैथुन करती है ।

द्वन्द्वं व्युत्क्रान्ताः ,, दो दो पृथक् पृथक् हो गये ।

द्वन्द्वं यज्ञपात्राणि प्रयुनक्ति ,, यज्ञ पात्रों को दो दो कर
रखता है ।

द्वन्द्वं सङ्कर्षणवासुदेवौ ,, बलराम तथा कृष्ण का जोड़ा ।

इति द्विरुक्तप्रकरणम् ।

अथ तिङन्ते भ्वादिप्रकरणम्

भू—होना, रहना, उत्पन्न होना ।

एध्—बढ़ना, उन्नत होना ।

स्पर्ध्—चाहना, होड़ लगाना, ललकारना ।

गाध्—खड़ा होना, ठहरना, रहना, बूँढ़ना, खोज करना,
गोता लगाना, लालच करना, संग्रह करना, बुनना ।

नाध्—माँगना, प्रार्थना करना, बीमार होना, कष्ट देना,
शक्तिशाली होना, आशीस देना ।

नाध्— ” ” ”

वाध्—कष्ट देना, दवाना, विघ्न डालना, विरोध करना,
बाधा डालना, लुढ़काना, लुभाना ।

दध्—धारण करना, देना, उपहार देना ।

स्कृदि—कूदना, उठाना ।

श्विदि—सफेद होना ।

वदि—प्रणाम करना, प्रशंसा करना, पूजना ।

मदि—भाग्यशाली होना, शुभसमाचार कहना, प्रसन्न होना,
प्रतिष्ठा करना, चमकना ।

मदि—प्रशंसा करना, प्रसन्न होना, नशे में होना, धमण्ड
करना, सोना, सुस्त होना, चमकना, धीरे-धीरे
हिलना, विजयी होना, शिथिल होना ।

स्पदि—फड़कना, कांपना, हिलना ।

विलिदि—दुःखी होना, विलाप करना ।

सुद्—प्रसन्न होना ।

दद्—देना, उपहार देना ।

प्वद्=स्वद्—स्वाद लेना, चखना, रुचना, स्वादिष्ट होना ।

उद्—नापना, खेलना ।

कुद्, खुद्, गुद्, गुद्—खेलना ।

पूद्—बहना, उँड़ेलना, बहाना, टपकाना, अर्क खींचना ।

ह्लाद्—शब्द करना चिल्लाना ।

ह्लादी—शब्द करना, प्रसन्न होना ।

स्वाद—स्वाद लेना, चखना, रुचना ।

पद्—अपान वायु छोड़ना ।

यती—प्रयत्न करना ।

युत्-जुत्—चमकना ।

विथ्, वेथ्—याचना करना, माँगना ।

श्रथि—ढीला होना, शक्तिहीन होना ।

प्रथि—टेढ़ा होना, दुष्ट होना, झुकाना ।

कत्थ्—झींग मारना, प्रशंसा करना, अकड़ कर चलना ।

अत्—निरन्तर चलना, घूमना ।

चिती—ध्यान से देखना, निरीक्षण करना, जानना,
समझना, स्मरण करना ।

च्युतिर्—सींचना, आर्द्र करना ।

श्च्युतिर्—टपकना, बहना, सूखना, उँड़ेलना, फैलाना ।

मन्थ्—मथना, क्षुब्ध करना, हिलाना, कुचलना, दवाना,
दुःखी करना, नष्ट करना, मार डालना ।

कुथि, पुथि, लुथि, मथि—क्षति पहुँचाना, कष्ट पाना,
आहत करना, प्रहार करना,
मार डालना, कुचलना, पीसना,
दवाना ।

विधु—जाना, चौकसी करना, हाँकना ।

विधू—आज्ञा देना, आदेश देना, निदेश देना, शुभ होना ।

खाद्—भोजन करना, खाना ।

खद्—दृढ़ होना, स्थिर होना, कष्ट पहुँचाना, मार डालना ।

गद्—स्पष्ट बोलना ।

बद्—दृढ़ या स्थिर होना ।

रद्—तोड़ना, फाड़ना, खुरचना, खोदना ।

पद्—अस्पष्ट ध्वनि या शब्द करना ।

अद्—जाना, याचना करना, प्रार्थना करना ।

नद्, गद्—गर्जना, शब्द करना ।

तद्—पीड़ा देना, हानि पहुँचाना ।

कद्—पेट गुड़गुड़ाना ।

खद्—काटना, डंक मारना ।

अत्ति, अदि—बाँधना ।

इदि—शक्ति सम्पन्न होना, शक्तिशाली होना ।

त्रिवि—अलग करना या होना, पृथक् करना ।

मिदि— ” ” ”

गडि—गाल फुलाना या टेढ़ा मेढ़ा करना ।
 गिदि—दोपारोपण करना, निन्दा करना, गाली देना,
 अपराधी ठहराना ।
 टुनदि—प्रसन्न होना, संतुष्ट होना ।
 चदि—प्रसन्न होना, भाग्यशाली होना ।
 अदि—चेष्टा करना, व्यस्त रहना ।
 कदि, कदि, क्लदि—चिल्लाना, रोना, आँसू बहाना,
 धोपणा करना ।
 विलदि—विलाप करना ।
 शुन्ध्—शुद्ध होना या करना, साफ करना, पवित्र करना ।
 शौक—सौचन, आर्द्र करना ।
 लोक्—देखना, ध्यान से देखना ।
 श्लोक्—संग्रह करना (कविता या निबन्ध), कविता
 करना ।
 ब्रेक्, ब्रेक्—शब्द करना, बढ़ना, हर्ष प्रकट करना, प्रसन्न
 होना ।
 रेक्—सन्देह करना, शंका करना ।
 सेक्, सेक्, सकि, शकि, इलकि—जाना, हिलना ।
 शकि—शंका करना, हिचकिचाना, विश्वास न करना,
 डरना ।
 अकि—चिह्न बनाना या लगाना, मुहर लगाना ।
 बकि—टेढ़ा मेढ़ा चलना ।
 मकि—सुसज्जित करना, सजाना ।
 कक्—चंचल होना या रहना, गर्व करना ।
 कुक्, वृक्—लेना, स्वीकार करना, पकड़ना ।
 चक्—संतुष्ट होना, विरोध करना, टालना ।
 ककि, वकि, श्वकि, अकि, डौक, श्रौक, प्वक्, वस्क्,
 मस्क्, टिक, टीक, तिक, तीक, रधि, लधि—जाना ।
 अधि, वधि, मधि—जाना, दोपारोपण करना, प्रारम्भ करना ।
 मधि—घोखा देना, जाना, दोपारोपण करना ।
 राध, लाध, द्राध—योग्य या समर्थ होना, पर्याप्त होना ।
 द्राध—विस्तृत होना ।
 इलाध—प्रशंसा करना ।
 फक्—धीरे धीरे जाना, खिसकना, दुर्ब्यवहार करना ।
 तक्—हँसना, सहना, उपहास करना, ।

तकि—कष्ट से जीवित रहना ।
 शुक्—जाना ।
 वुक्—कुत्ते का भूकना ।
 कक्—हँसना ।
 ओख, राख, लाख, द्राख, ध्राख—सूखना, पर्याप्त होना,
 अस्वीकार करना, समर्थ
 होना, सजाना ।
 शाख, इलाख—फैलना, व्याप्त होना ।
 उख, उखि, वख, वखि, मख, मखि, पख, पखि, रख,
 रखि, लख, लखि, इख, इखि, ईखि, वख्ना, रगि, लगि,
 अगि, वगि, मगि, तगि, त्वगि, श्रगि, इल्लगि, इगि, रिगि,
 लिगि—जाना ।
 त्वगि—काँपना ।
 युगि, जुगि, जुगि—त्याग देना ।
 वध्—हँसना ।
 दधि—रक्षा करना, पालन करना ।
 लधि—सुखाना ।
 मधि—सजाना, ।
 शिवि—सूँघना ।
 वच्—चमकना ।
 षच्—सौचन, छिड़कना, सेवा करना ।
 लोच्—देखना ।
 शच्—स्पष्ट बोलना ।
 कच्—बाँधना ।
 कचि—बाँधना, चमक ।
 मच्, मुचि—घोखा देना, गर्व करना, ।
 मचि—पहिनना, उन्नत होना, पूजा करना, चमकना ।
 पचि—स्पष्ट करना, व्याख्या करना ।
 प्दुच—प्रसन्न होना ।
 ऋज्—जाना, खड़ा होना या स्थिर होना, प्राप्त करना या
 पैदा करना ।
 ऋजि, भृजी—भूना ।
 एज्, भ्रेज्, भ्राज्, रेज्—चमकना ।
 ईज्—जाना, निन्दा करना, दोषारोपण करना ।
 बीज्—जाना ।
 शुच्—शोक करना, दुःखी होना ।

कुच्—चीखना, चीत्कार करना ।
 कुञ्ज, कुञ्ज—टेंढा करना, छोटा करना ।
 कुञ्ज—हटाना, ।
 अञ्जु—जाना, पूजा करना ।
 वञ्जु, चञ्जु, तञ्जु, त्वञ्जु, मुञ्जु, म्लुञ्जु, मुञ्जु, म्लुञ्जु—
 जाना ।
 ग्रुञ्जु, ग्लुञ्जु, कुञ्जु, खुञ्जु—चुराना ।
 ग्लुञ्जु, षस्ज—जाना ।
 गुजि—अस्पष्ट शब्द करना, गूँजना ।
 अर्च—पूजा करना, आदर सत्कार करना ।
 म्लेच्छ—अस्पष्ट बोलना, अशुद्ध उच्चारण करना ।
 लछ, लाछि—चिह्न करना या बनाना ।
 वाछि—चाहना ।
 आछि—सम्बा होना, विस्तृत होना ।
 हीच्छ—लज्जित होना ।
 हुर्छा—घोखा देना, हट जाना ।
 मुर्छा—बेहोश या अचेत होना, बढ़ना ।
 स्फुर्छा—भूलना या विस्तृत होना, फैलना ।
 शुल्—असावधान होना या रहना, ध्यान न देना ।
 उछि—दाने बीनना ।
 उच्छी—निर्वासित करना, समाप्त करना ।
 धज्, धजि, व्रज्, व्रजि, धृज्, धृजि, ध्वज, ध्वजि—
 जाना ।
 कृज्, कुजि—अस्पष्ट शब्द बोलना, कोयल का बोलना ।
 अर्ज्, पर्ज—पैदा करना ।
 गर्ज—गर्जना ।
 तर्ज—डाटना, फट कारना ।
 कर्ज—तंग करना, कष्ट देना ।
 खर्ज—पूजा करना, कष्ट देना ।
 अज्—जाना, फेकना ।
 तेज्—रक्षा करना ।
 खज्—मथना, झुग्ध करना ।
 कज्—नशे में होना ।
 खजि—लैंगडाना, लैंगडा कर चलना ।
 एज्—कौपना ।
 दुओस्फूर्ज—विजली गिरने का शब्द होना, बादलों का
 गर्जना ।

खि—नष्ट होना या नष्ट करना ।
 बीज्—अस्पष्ट शब्द करना ।
 लज्, लजी—भूतना ।
 लाज्, लाजि—भूतना, डाटना, फटकारना ।
 जज्, जजि—युद्ध करना, लड़ना ।
 तुज्—कष्ट पहुँचाना, आहत करना ।
 तुजि—रक्षा करना ।
 गज्, गजि, गृज्, गृजि, मुज्, मुजि—शब्द करना,
 चिल्लाना ।
 गज्—नशे में होना ।
 वज्, व्रज्—जाना ।
 अट्ट—अतिक्रमण करना, पराजित करना, हानि पहुँचाना,
 नष्ट करना ।
 वेष्ट—घेरना, लपेटना, कपड़े बाँधना ।
 चेष्ट—प्रयत्न करना ।
 गोष्ट, लोष्ट—इकट्ठा होना, एकत्र करना ।
 घट्ट—हिलाना ।
 स्फुट्ट—विकसित होना, खिलना ।
 अठि—जाना, हिलना ।
 वठि—अकेले जाना ।
 मठि, कठि—उत्सुक होना, पश्चात्ताप करना ।
 मुठि—रक्षा करना ।
 हेट्, एट्—दुःखी करना ।
 हिडि—जाना, अनादर करना ।
 हुडि—एकत्र करना ।
 कुडि—जलाना ।
 वडि, मडि—बाँटना, विभक्त करना ।
 मडि—उपहास करदा, निन्दापूर्वक उपहास करना, चिल्लाना ।
 पिडि—इकट्ठा करना या होना ।
 मुडि—पवित्र होना, रगड़ना, डूबना ।
 तुडि—तोड़ना, फोड़ना, मारना ।
 हुडि—पसन्द करना, चुनना, पकड़ना ।
 स्फुडि—खोलना, फैलाना ।
 चडि—क्रोध करना ।
 शडि—आहत करना, इकट्ठा करना ।
 तडि—पीटना ।

पडि—जाना, हिलना ।
 कडि—नशे में होना ।
 खडि—मथना ।
 हेड्, होड्—अनादर करना ।
 बाड्—डुबकी लगाना, नहाना ।
 द्राड्, ध्राड्—काटना, फाड़ना ।
 शाड्—प्रशंसाकरना, डींग मारना ।
 शौट्—गर्व करना ।
 यौट्—बाँधना ।
 म्लेट् म्रेट्, मेट्—पागल होना, उन्मत्त होना ।
 कटे, चटे—वर्षा होना, ढाकना ।
 अट्, पट्—भ्रमण करना, घूमना ।
 रट्—चिल्लाना, पुकारना ।
 लट्—लड़कपन करना, बालकों की तरह बड़ बड़ाना ।
 शट्—रुण होना, अलग करना, जाना, दुःखी होना, फटना ।
 बट्—घेरना, लपेटना, ढाकना ।
 किट्, खिट्—डराना ।
 शिट्, पिट्—अनादर करना, उपेक्षा करना ।
 जट्, झट्—गूथना, बुनना, थक्का बनजाना ।
 मट्—भाड़े पर देना, पोषण करना, मजदूरी लेना ।
 तट्—उठना या उठाना, कराहना ।
 खट्—चाहना, इच्छा करना ।
 नट्—अभिनय करना, नाचना ।
 पिट्—शब्द करना, इकट्ठा करना या राशि बनाना ।
 हट्—चमकना ।
 घट्—भाग या अवयव होना ।
 लुट्—लोटना, दुःखी होना ।
 चिट्—भेजना ।
 बिट्—कसमखाना, चिल्लाना, बुराभला कहना ।
 विट्—शब्द करना ।
 इट् किट्, कटी—जाना ।
 हेट्—दुष्टता करना, मारना, पवित्र करना, उत्पन्न होना,
 मडि—सजाना, सुशोभित करना ।
 कुडि—उत्तेजित करना, अंग भंग करना ।
 मुड्, मुट्, मुडि, पुड्, पुडि—कुचलना, पीसना, मारना ।
 सुडि—कम या छोटा होना, काटना, बाँटना ।

मुडि—बाल बनाना, काटना, तोड़ना, कुचलना ।
 रुटि, लुटि—लूटना, चुराना ।
 रुठि, लुठि—
 रुडि, लुडि—
 वटि—बाँटना ।
 स्फुटिर्—विकसित होना ।
 पट्—पढ़ना ।
 वट्—हृष्ट पुष्ट होना, शक्तिशाली होना, स्थूल होना ।
 मट्—नशे में होना, रहना, जाना ।
 कट्—कष्ट से जीना ।
 रट्, रट्—बोलना, चिल्लाना ।
 हठ—कूदना, दुष्टता करना, खूँटे में बाँधना ।
 रुट्, लुट्, उट्—प्रहार करना, मारना ।
 पिट्—आहत करना, दुःख देना ।
 शट्—घेसा देना, आघात पहुँचाना, दुःख देना, धूर्तता
 करना ।
 शुठ—रोका जाना ।
 कुठि—आलसी होना, शिथिल होना ।
 लुठि—सुस्त या शिथिल होना, मारना ।
 शुठि—सूखना ।
 रुठि, लुठि—जाना ।
 खुड्—अभिप्राय सूचित करना ।
 अड्—सम्मिलित होना, आक्रमण करना, तर्क से सिद्ध
 करना, अनुरक्त होना ।
 कड्—रुख या कर्कश होना, कठोर होना ।
 क्रीड्—क्रीड़ा करना, खेलना ।
 तुड्, तूड्—तोड़ना, ढकेलना, कष्ट देना ।
 हुड्, हूड्, होड्—जाना ।
 रौड्—अनादर करना, तुच्छ समझना ।
 रोड्, लोड्—मूर्ख होना, पागल होना ।
 अड्—प्रयत्न करना, श्रम करना ।
 लड्—क्रीड़ा करना, विलास करना ।
 लल्—इच्छा करना, चाहना ।
 कड्—गर्व करना ।
 गडि—गाल फुलाना या टेढ़ा करना ।
 तिष्ट्, तेष्ट्, छिष्ट्, छेष्ट्—छिड़कना, उपकाना ।

तेष्टृ—कांपना ।
 ग्लेष्टृ—दीन होना, दरिद्र होना ।
 दुवेष्टृ—कांपना ।
 केष्टृ, गेष्टृ, ग्लेष्टृ—कांपना, जाना ।
 मेष्टृ, रेष्टृ, लेष्टृ, धेष्टृ—जाना ।
 त्रपूष्—लज्जित होना ।
 कपि—हिलना, चलायमान होना ।
 रवि, लवि, अबि—शब्द करना ।
 लबि—शब्द करना, लटकना ।
 कवृ—रंगना ।
 क्लीवृ—नपुंसक या कायर होना, डरना ।
 वीवृ—मदोन्मत्त होना, नशे में होना ।
 शीमृ, चीमृ—डोंग मारना ।
 रेमृ, अमि, रमि—गाय की तरह शब्द करना, कौए की तरह शब्द करना ।

ष्टमि, ष्कमि—ठहरना, रुक जाना, रोकना, ठहराना ।
 जमी, जृमि—मैथुन करना, जम्भाई लेना ।
 शल्म्—आत्म प्रशंसा करना, डोंग मारना ।
 वल्म्—भोजन करना ।
 गल्म्—ढिठाई करना, आत्मविश्वास करना ।
 श्रम्भु—असावधानी करना, गलती करना ।
 शुम्भु—रुकना या रोकना ।
 शुप्—रचा करना ।
 धृप्—तपना या तपाना ।
 जप्—जप करना ।
 जप्, जल्प्—स्पष्ट बोलना ।
 चप्—सान्त्वना देना ।
 षप्—सम्बन्ध करना, पूर्ण जानकारी प्राप्त करना ।
 रप्, लप्—स्पष्ट बोलना ।
 चुप्—चुपके से जाना, धीरे-धीरे जाना ।
 तुप्, तुम्प्, शुप्, कुम्प्, तुफ्, तुम्फ्, शुफ्, शुम्फ्—
 पीड़ा देना, हानि पहुँचाना ।
 पप्, रफ्, रफि, अर्ब, पर्ब, लर्ब, बर्ब, मर्ब,
 कर्ब, खर्ब, गर्ब, शर्ब, षर्ब, चर्ब—जाना ।
 कुबि—ढाकना, छिपाना, कपड़ा पहिनना, पर्दा डालना ।
 छुबि, तुबि—पीड़ा पहुँचाना, कष्ट देना ।

चुबि—चूमना, चुम्बन करना ।
 वृम्भु, वृम्भु—दुःख देना, पीड़ा पहुँचाना ।
 शुम्, शुम्भु—बोलना, चमकना, सजाना, मारना ।
 धिणि, घुणि, घृणि—प्राप्त करना, ग्रहण करना ।
 पण्-पन्—सौदा करना, खरीदना, प्रशंसा करना ।
 माम्—क्रोध करना ।
 समूष्—सहन करना ।
 कमु—चाहना, कामना करना ।
 अण्, रण्, मण्, वण्, मण्, कण्, क्वण्, व्रण्,
 भ्रण्, ध्वण्, धण्—शब्द करना, बोलना ।
 ओण्—दूर करना, दूर ले जाना, हटाना ।
 शोण्—जाना, लाल होना ।
 श्रोण्, श्लोण्—एकत्र करना या होना ।
 पैण्—जाना, भोजना, आलिंगन करना, चिपकना ।
 भ्रण्—शब्द करना ।
 कनी—चमकना, प्रेमकरना, चाहना, जाना ।
 एन्, वन्—शब्द करना, गर्जना ।
 वन्, घण्—आदर करना, सम्मान करना ।
 अम्—जाना शब्द करना, आदर करना ।
 द्रम्, हम्म्, मीमृ—जाना, दौड़ना ।
 चमु, छमु, जमु, जिमु, झमु—भोजन करना ।
 क्रमु—चलना, टहलना, पग धरना ।
 अय्, वय्, पय्, मय्, चय्, तय्, णय्—जाना ।
 दय्—देना, जाना, रक्षा करना, हानि पहुँचाना, दिया करना, स्वीकार करना ।
 रय्—जाना ।
 ऊयी—बुनना, सीना ।
 पूयी—फटना, दुर्गन्ध निकलना ।
 क्नीयी—चरचर शब्द करना, आर्द्र होना, गीला होना ।
 क्षमायी—हिलाना, हिलना, कांपना ।
 स्फायी, ओष्यायी—बड़ा या मोटा होना, फूलना ।
 ताय्—फैलना, फैलाना, रचाकरना, सुरक्षित रखना ।
 शल्—हिलाना, हिलना, ढाकना, जाना ।
 वल् वल्—ढाकना, बन्द करना, जाना ।
 मल्, मल्—पकड़ना, अधिकार करना ।
 मल्, मल्—वर्णन करना, हानि पहुँचाना, देना ।

कल्—शब्द करना या गिनना ।
 कल्ल्—अस्पष्ट शब्द करना, मौन रहना ।
 लेव्, देव्—खेलना, क्रीड़ा करना ।
 वेव्, गेव्, ग्लेव्, पेव्, मेव्, म्लेव्—सेवा करना ।
 शेव्, खेव्, क्लेव्, केव्—सेवा करना ।
 मव्य्—वाँघना ।
 सूक्ष्य्, ईक्ष्य्, ईर्ष्य्—अनादर करना, उपेक्षा करना
 डाह करना ।
 हय्—जाना ।
 शुष्यी—निचोड़ना, टपकाना ।
 हर्ष्य्—जाना चमकना पूजा करना, भ्रान्त होना ।
 अल्—सजाना, योग्य होना, समर्थ होना, रोकना ।
 निफल्ला—फलना, दो टुकड़े हो जाना ।
 मील्, श्मील्, स्मील्, क्षमील्—पलक बन्द करना, आँख
 मूँदना ।
 पील्—रोकना ।
 नील्—नीला रंगमें रंगना ।
 शील्—समाधि लगाना, ध्यान करना ।
 कील्—वाँघना ।
 कूल्—ढाकना ।
 शल्—छण होना, जोर का शब्द करना ।
 तूल्—खींचना ।
 पूल्—इकट्ठा करना एकत्र करना ।
 मूल्—स्थिर या दृढ़ होना, जड़ जमाना ।
 फल्—सफल होना ।
 चुल्—अभिप्राय सूचित करना ।
 कुल्—खिलना, विकसित होना ।
 चिल्—ढीला या शिथिल होना, अभिप्राय प्रकट करना ।
 सिल्—जाना हिलना ।
 वेल्, चेल्, केल्, खेल्, क्षेल्, वेल्—चलना, हिलना,
 खेलना, क्रीड़ा करना ।
 पेल्, फेल्, शेल्—जाना, हिलना हिलाना ।
 स्खल्—लड़खड़ाता ।
 खल्—इकट्ठा करना, संग्रह करना ।
 गल्—निगलना ।
 बल्—जाना ।

दल्—विदीर्ण होना फटना ।
 श्वल्, श्वल्ल्—दौड़ना, तेजी से जाना ।
 खोल्, खोर्ल्—लँगड़ा कर चलना, लँगड़ा होना ।
 धोर्ल्—तेजी से चलना, चतुरता करना ।
 त्सर्—चुपके से या धीरे से जाना, रेंगना, टेढ़ा मेढ़ा
 चलना ।
 कम्प्—कूरता करना, बेईमानी करना, धोखा देना ।
 अम्प्, बम्प्, मम्प्, चर्—जाना ।
 चर्—भोजन करना ।
 लिङ्गु—थूकना ।
 जि—जीतना ।
 जीव्—जीना, श्वासलेना ।
 पीव्, मीव्, तीव्, णीव्—स्थूल होना ।
 क्षीव्, क्षेव्—थूकना ।
 उर्वी, तुर्वी, धुर्वी, दुर्वी, धुर्वी—हानि पहुँचाना ।
 गुर्वी—प्रयत्न करना ।
 मुर्वी—वाँघना ।
 पुर्व्, पर्व्, मर्व्—पूरा करना, भरना ।
 चर्व्—चबाना ।
 मर्व्—हानि पहुँचाना ।
 कर्व्, खर्व्, गर्व्—गर्व करना, डोंग मारना ।
 अर्व्, शर्व्, षर्व्—मारना ।
 इवि—ग्याप्त होना, फैलाना, घेरना ।
 पिवि, मिवि, णिवि—आर्द्र करना, गीला करना ।
 हिवि, दिवि, धिवि, जिवि—प्रसन्न होना, खुश होना ।
 रिवि, रवि, धवि—जाना, हिलना ।
 कृवि—हानि पहुँचाना, काम करना ।
 मव्—वाँघना ।
 अव्—रक्षा करना, जाना, सुन्दर होना, चाहना, प्रसन्न
 करना, संतुष्ट होना, समझना, प्रवेश करना, सुनना,
 शासन करना या स्वामी होना, माँगना, प्रार्थना
 करना, काम करना, चाहना, चमकना, प्राप्त करना,
 आलिंगन करना, मारना या हानि पहुँचाना, स्वीकार
 करना, विभक्त करना, वृद्धि करना ।

धातु—दीड़ना, घोना ।

धुक्ष्—धिक्—जलाना, भ्रान्त होना, जीना, जीवित रहना ।

वृक्ष्—स्वीकार करना, चुनना, ढाकना ।

शिक्ष्—विद्या पढ़ना, पढ़ाना ।

मिक्ष्—माँगना, बिना प्राप्त होने पर माँगना, पाना ।

क्लेश्—अस्पष्ट बोलना, आगा पीछा करना ।

वक्ष्—बढ़ना, करना, तेजी से जाना ।

दीक्ष्—मुण्डन कराना, यज्ञोपवीत धारण करना, यज्ञ करना, तप करना, व्रत करना ।

ईक्ष्—देखना, ध्यान से देखना ।

ईष्—भागजाना, वचकर निकलजाना, आक्रमण करना, मारना ।

भाष्—स्पष्ट बोलना ।

वर्ष्—तेल लगाना ।

गेष्, ग्लेष्—ढूँढ़ना, खोज करना ।

पेष्—प्रयत्न करना ।

जेष्, योष्, एष्, प्रेष्—जाना, हिलना ।

रेष्—मेड़िये का शब्द करना ।

हेष्, हेष्—हिन हिनाना ।

कास्—खाँसना, कराहना ।

मास्—चमकना ।

णास्, रास्—शब्द करना ।

णस्—भुकना या टेढ़ा होना ।

म्यस्—डरना ।

आह्—शसि—इच्छा करना, चाहना ।

प्रसु, ग्लसु—निगलना, खाना, नष्ट करना, व्यय करना ।

ईह्—चेष्टा करना, प्रयत्न करना ।

बहि, महि—बढ़ना ।

अहि—जाना, पहुँचना ।

गह्, गल्ह्—निन्दा करना, दोषारोपण करना ।

बह्, बल्ह्—प्रधान होना, सर्वश्रेष्ठ होना ।

वह्, वल्ह्—बातचीत करना, कष्ट देना, हानि पहुँचाना, ढाकना ।

प्लिह्—जाना हिलना ।

जेह्-वेह्, बाह्—प्रयत्न करना ।

द्राह्—जागना, फेंकना ।

काश्—चमकना ।

ऊह्—तर्क करना, अनुमान करना, विचार करना ।

गाह्—हिलाना, मथना, झुब्ब करना ।

गृह्, ग्लह्—लेना, पकड़ना ।

घुषि—सुन्दर होना या चमकना ।

घुषिर्—शब्द करना ।

अक्ष्—व्याप्त होना ।

तक्ष्, त्वक्ष्—पतला करना, छीलना ।

उक्ष्—सींचना ।

रक्ष्—रक्षा करना, पालन करना ।

णिक्—चुम्बन करना ।

रृक्, स्तृक्, णक्—जाना ।

वक्—कुछ होना, इकट्ठा करना ।

सृक्, ऋक्—इकट्ठा करना, राशि बनाना ।

तक्—ढाकना, अथवा खाल उतारना ।

पक्—स्वीकार करना ।

सुर्क्ष्—आदर करना ।

काचि, वाचि, माचि—चाहना, इच्छा करना ।

व्राक्षि, भ्राक्षि, भ्वाक्षि—चाहना, इच्छा करना, काँव काँव करना ।

चूष्—पीना, चूसना ।

तृष्—संतुष्ट होना या संतुष्ट करना ।

पृष्—पुष्ट करना, बढ़ाना ।

मूष्—चुराना, लूटना ।

लूष्, रूष्—सजाना, सुशोभित करना ।

शूष्—उत्पन्न करना, अनुमति देना ।

यूष्, जूष्—हानि पहुँचाना ।

मूष्, तसि—सजाना ।

ऊष्—बीमार होना, रग्न होना ।

ईष्—अन्न बुनना ।

कष्, खष्, शिष्, जष्, झष्, शष्, वष्, मष्,

रुष्, रिष्—पीड़ा देना, हानि पहुँचाना ।

मष्—कुत्ते का भूकना ।

उष्—जलाना ।

जिष्, विष्, मिष्, णिष्—सींचना, छिड़कना ।

पुष्—पोषण करना, पुष्ट करना ।
 धिष्, झिष्, प्रुष्, प्लुष्—जलाना ।
 पृष्, वृष्, सृष्—सींचना ।
 सृप्—सहन करना ।
 धृष्—धिसना, रगड़ना ।
 हृष्—झूठ बोलना, रोंगटे खड़े होना, प्रसन्न होना ।
 तुस्, हस्, ह्रस्, रस्—शब्द करना ।
 जस्—आलिंगन करना, क्रीड़ा करना ।
 घस्ल—खाना ।
 जर्ज, चर्च, क्षर्क्ष—कहना, हानि पहुँचाना, कष्ट देना,
 डाटना, धमकाना ।
 पिसृ, पेसृ, विसृ, वेसृ, पिशृ, पेशृ—जाना ।
 हसे—हसना ।
 गिश्—ध्यान करना, समाधि लगाना ।
 मिश, मश—शब्द करना, कोलाहल करना, क्रुद्ध होना ।
 शक्—जाना, पहुँचना ।
 शक्—कूदना, उछलना, छलाँग मारना ।
 शसु—हानि पहुँचाना, मारडालना ।
 शंसु—प्रशंसा करना, दुर्गति करना ।
 चह्—बोखा देना, ठगना ।
 मह्—सम्मान करना, आदर करना, पूजा करना ।
 रह्—छोड़ना, त्याग देना ।
 दह्, दहि, वृह्, वृहि—बढ़ना या बढ़ाना ।
 सुहिर, दुहिर, उहिर—कष्ट देना, पीड़ा पहुँचाना ।
 अहर्—समादर करना, पूजा करना ।
 शुत्—चमकना ।
 श्विता—सफेद होना ।
 जिमिदा—चिकना करना या होना, तेल डालना ।
 जिप्विदा—स्नेह (तेल) युक्त करना या होना, बिच-
 लित होना ।
 रुक्—चमकना, चाहना, प्रसन्न होना ।
 घुट्—बदलना, माल हेर फेर करना ।
 रुट्, छुट्, छुट्—मारने वाले को मारना, रोकना,
 मुकाबिला करना ।
 शुभ्—चमकना ।

क्षुभ्—हिलना, काँपना, क्षुब्ध होना ।
 णम्, तुम्—हानि पहुँचाना ।
 णम्—अभाव रहना या होना ।
 संसु, ध्वंसु, अंसु—गिरना, टपकना, खिसकना ।
 स्रम्भु—विश्वास करना ।
 वृत्तु—होना, स्थित रहना, ठहरना, कायम रहना ।
 वृधु—बढ़ना ।
 शृधु—अपान वायु छोड़ना ।
 स्यन्दू—टपकना, बूँद बूँद गिरना ।
 कूपू—समर्थ होना, योग्य होना ।
 घट्—चेष्टा करना ।
 व्यथ्—डरना, काँपना, दुःखी होना ।
 प्रथ्—प्रसिद्ध होना ।
 प्रस्—विस्तृत होना, फैलना ।
 झद्—कुलचना, पीसना ।
 स्खद्—काटना, फाड़ना, टुकड़े करना ।
 क्षजि—जाना, देना ।
 दक्ष्—जाना कष्ट देना ।
 क्रप्—दया करना, जाना ।
 कदि, क्रदि, क्खदि—व्याकुल होना, धबराना ।
 मित्वरा—शीघ्रता करना, जल्दी मचाना ।
 ज्वर्—ज्वर आना, रोगी होना ।
 गढ्—टपकाना, पानी टपका कर साफ करना, सींचना ।
 हेड्—बेरना ।
 वट्, मट्—वार्तालाप करना, बोलना ।
 नट्—नाचना ।
 षक्—बाधा डालना, रोकना ।
 चक्—संतुष्ट होना ।
 कखे—हसना ।
 रगे—सदेह करना ।
 लगे—चिपकना ।
 हगे, हगे, षगे, षगे—छिपाना, ढाकना ।
 करो—करना, अनेकार्थक धातु ।
 अक्, अग्—टेढ़ा चलना, साँप की तरह चलना ।
 कण्, रण्—जाना ।
 चण्, अण्, शण्—जाना, देना ।

अथ्, इनथ्, कनथ्, क्रथ्, इलथ्, कलथ्—हानि पहुँचाना,
पीड़ा देना, कष्ट देना ।

घन्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना ।

घनु—अनेकार्थक धातु ।

ज्दल्—चमकना ।

हल्, ह्यल्—टहलना, चलना, जाना ।

स्मृ—स्मरण करना, याद करना ।

ट—डरना ।

नृ—लेजाना, नेतृत्व करना ।

श्रा—पकाना ।

शा—मार डालना, संतुष्ट करना, देखना ।

चलि—काँपना ।

छदिर्—दृढ़ करना, जीवित रखना ।

लडि—जीभ लपलपाना या ऐँठना ।

मदी—प्रसन्न होना, दीन होना, दरिद्र होना ।

ध्वन्—शब्द करना, बजाना ।

दल्—फटना ।

वल्—ढाकना ।

स्खल्—लड़खड़ाता ।

त्रपि, क्षपि, त्रपुष्—लज्जित होना ।

स्वन्—सजाना, सुशोभित करना ।

जनी—उत्पन्न करना ।

जृष्—वृद्ध होना ।

कनसु—शरीर टेढ़ा होना ।

रञ्ज्—रँगना ।

ज्वल्—जलाना ।

ह्यल्—चलना ।

ह्यल्—चलना ।

नम्—नमस्कार करना ।

शम्—देखना ।

थम्—न परसना ।

स्वदिर्—भगाना, काटना, नष्ट करना ।

फण्—जाना ।

राज्—चमकना ।

भ्राज्, भाश्, भ्लाश्—चमकना ।

स्थसु, स्वन्, प्तन्, स्तन्, ध्वन्—शब्द करना ।

षम्, षम्,—शान्त रहना, व्याकुल न होना ।

ज्वल्—चमकना, जलाना ।

चल्—हिलना, काँपना ।

जल्—तेज होना, तीक्ष्ण होना ।

टल्, ट्वल्—व्याकुल होना, क्षुब्ध होना ।

स्थल्, छल्—दृढ़ रहना, दृढ़ता से खड़ा रहना ।

हल्—हल चलाना ।

णल्—सूँघना, वीधना ।

पल्—जाना ।

बल्—साँस लेना, जीना, अन्न इकट्ठा करना ।

पुल्—बड़ा होना, ऊँचा होना ।

कुल्—इकट्ठा करना, सम्बन्धी के समान व्यवहार करना,
सम्बन्धी होना ।

शल्, हुल्, पल्लु—जाना ।

हुल्—मारना ढाकना ।

कथे—उबालना, पचाना, काढ़ा बनाना ।

पथे—जाना ।

मथे—मथना ।

टुवम्—उगलना ।

भ्रम्—टहलना, घूमना ।

चर्—चहना, नष्ट होना, चूजाना ।

षह्—सहन करना ।

रम्—क्रीड़ा करना ।

षदल्—फट जाना, जाना, दुःखी होना ।

शदल्—गिरना, नष्ट होना, मुरझाना ।

क्रुश्—बुलाना, रोना ।

कुच—जोड़ना, टेढ़ा करना, रोकना, बन्द कर देना, चित्र
बनाना ।

बुध्—जानना, समझना ।

सह्—उगना, अंकुरित होना ।

कस्—जाना ।

ह्विक्क—हिचकी आना ।

अम्बु—जाना, प्रार्थना करना, माँगना ।

टुयाचू—माँगना, प्रार्थना करना ।

रेदू—बात करना ।

चते, चदे—मांगना, प्रार्थना करना ।
 प्रोथ्—समान होना, उपयुक्त होना ।
 मिह्, मेह्—बुद्धिमान् होना, हानि पहुँचाना ।
 मेध्—स्थूल होना, हानि पहुँचाना, मिलना ।
 णिद्, णेद्—निन्दा करना, समीप जाना ।
 शधु, सधु—गोला (आर्द्र) होना या करना ।
 बुधिर्—जानना, समझना ।
 उबुन्दिर्—देखना, जानना ।
 वेण्—जाना, समझना, जानना, देखना, बाजा बजाना ।
 खनु—खोदना ।
 चीव्—लेना, प्राप्त करना, ढाकना ।
 चाय्—पूजा करना, देखना ।
 व्यय्—जाना ।
 दाश्—देना ।
 भेष्—डरना ।
 अेषु, म्लेषु—जाना ।
 अस्—जाना, चमकना, लेना, स्वीकार करना, पकड़ना ।
 अय्—जाना ।
 स्पश्—बाधा पहुँचाना, स्कावट डालना, छूना, एकसाथ बाँधना ।
 लष्—चाहना, इच्छा करना ।
 चष्—खाना ।
 छष्—हानि पहुँचाना ।
 शष्—लेना, पहिनना ।
 अक्ष्, म्लक्ष्—भोजन करना ।
 दास्—देना ।
 भाद्—नापना ।
 गुह्—ढाकना, छिपाना ।
 भिज्—सेवा करना ।
 भृज्—भरना, सहारा देना ।
 हृज्—लेलेना, पहुँचाना, लेजाना ।
 छृज्—पकड़ना, सहारा देना ।
 कृज्—करना ।
 णीज्—लेजाना ।
 धेद्—पीना, चूसना, स्तन पान करना ।
 ग्लै, म्लै—दुःखी होना, उदास होना ।

खै—घृणा के साथ व्यवहार करना, अनादर करना, उपेक्षा करना ।
 द्वै—सोना ।
 ध्रै—तृप्त होना, संतुष्ट होना, प्रसन्न होना ।
 ध्यै—सोचना, ध्यान करना ।
 रै—शब्द करना, भूकना ।
 स्तयै, ष्टयै—शब्द करना, प्रतिध्वनि करना ।
 खै—दृढ़ रहना, मारना, हानि पहुँचाना ।
 क्षै, जै, पै—नष्ट होना, क्षीण होना, दुर्बल होना ।
 कै, गै—शब्द करना, कावें कावें करना ।
 शै, श्रै—पकाना ।
 पै, ओवै—सुखाना ।
 रटै—पहिनना, सजाना ।
 णै—पहिनना, सजाना ।
 दैप्—पवित्र करना, साफ कारना ।
 पा—पीना ।
 प्रा—सूँघना ।
 ध्मा—फूँक कर बाजा बजाना, आग फूँकना ।
 घा—दक जाना, स्थित होना ।
 म्ना—ध्यान से पढ़ना ।
 दाण्—देना ।
 ह्—टेढ़ा या कुटिल होना ।
 स्वृ—शब्द करना, दुःख देना ।
 स्मृ—स्मरण करना ।
 ह्—ढाकना ।
 सृ—जाना ।
 ऋ—जाना ।
 गृ, धृ—सींचना; छिड़कना ।
 ध्वृ—शुकाना, मारना ।
 स्तृ—जाना, बहना ।
 धृ—अनुमति देना, सम्पन्न होना ।
 शृ—सुनना ।
 ध्रु—स्थिर अथवा दृढ़ होना ।
 दु, हु—जाना ।
 जि, जि—जीतना, विजय प्राप्त करना ।
 ज्ञ—शीघ्रता से जाना ।

मिङ्—मुस्कुराना ।

गुङ्—गुणगुणाना, अस्पष्ट शब्द करना ।

गाङ्—जाना ।

कृङ्, घुङ्, उङ्, डुङ्, खुङ्—शब्द करना, अस्पष्ट ध्वनि करना ।

ज्युङ्, ज्युङ्, मुङ्, प्लुङ्—जाना ।

प्लुङ्—उड़ना, तैरना ।

रङ्—जाना, हानि पहुँचाना, मारना, कष्ट देना ।

धृङ्—धारण करना, पकड़ना, नष्ट करना ।

मेङ्—माल का अदल बदल करना, बदले में देना ।

वेङ्—रक्षा करना, लालन पालन करना, पोषण करना ।

व्यैङ्—जाना ।

प्यैङ्—बढ़ना, फूलना ।

मेङ्—रक्षा करना ।

पूङ्—पवित्र करना, साफ करना ।

मूङ्—बाँधना ।

डीङ्—उड़ना, हवा में जाना ।

तृ—तैरना, पार करना ।

शुप्—छिपाना ।

तिज्—तेज या तीखा करना, सहना, चमा करना ।

मान्—पूजा करना, माँगना ।

म्रध्—बाँधना ।

रम्—प्रारम्भ करना, चाहना, इच्छा करना, उत्सुक होना, आलिंगन करना ।

हुलमष्—प्राप्त करना, पाना ।

प्वञ्—आलिंगन करना ।

हृद्—मल त्यागना, पाखाना करना ।

जिप्तिदा—अस्पष्ट शब्द करना ।

स्कन्दिर्—जाना, सूखना ।

यम्—मैथुन करना ।

णम्—नमस्कार करना, भुक्ता, शब्द करना ।

गम्ल्, सृम्ल्—जाना ।

यम्—रोकना, ।

तप्—कष्ट पाना ।

त्यज्—त्यागना, छोड़ना ।

षज्—चिपकना, सटना ।

दशिर्—देखना ।

दंश्—दाँत से काटना ।

कृष्—जोतना, खींचना ।

वह्—जलाना ।

मिह्—गीला करना, आर्द्र करना, छिड़कना ।

कित्—रहना, दवा करना, चिकित्सा करना ।

दान्—काटना, अलग करना ।

शान्—तेज करना ।

हुपचष—पकाना, उबालना ।

षच—सम्मिलित होना ।

मज्—सेवा करना ।

रञ्ज्—रंगा जाना ।

शप्—शाप देना ।

त्विष्—चमकना ।

यज्—यज्ञ करना, देव पूजा करना, मेल करना, देना ।

दुवप्—बोना, पैदा करना ।

वह्—बोना, पहुँचाना ।

वस्—रहना ।

वेज्—कपड़ा बुनना ।

व्येज्—ढाकना ।

ह्वेज्—नाम लेकर बुलाना, होड़ लगाना, स्पर्धा करना ।

यद्—स्पष्ट बोलना ।

डुओश्चि—जाना बढ़ना ।

इति भ्वादि-प्रकरणम् ।

अथादादि-प्रकरणम्

अद्—भोजन करना, खाना ।
हन्—मारना, जाना ।
दिष्—सन्नुता करना, घृणा करना ।
दुह्—दूध दुहना, लाम उठाना ।
दिद्—उन्नत होना ।
लिह्—चाटना, चखना, स्वाद लेना ।
चक्षिह्—स्पष्ट बोलना ।
ईर्—जाना, काँपना, हिलना ।
ईद्—स्तुति करना, प्रशंसा करना ।
ईश्—शासन करना, समर्थ होना ।
आस्—वैठना ।
आह्—आश्वास—इच्छा करना, चाहना ।
वस्—पहिनना, धारण करना, (वस्त्र) ।
कसि—जाना, नष्ट करना ।
णिसि—चुम्बन करना ।
णिजि—घोना, शुद्ध करना ।
शिजि—अस्पष्ट शब्द करना ।
पि जि—रँगना ।
वृ जि—मना करना, छोड़ना ।
पृची—सम्पर्क में आना या जाना ।
षूह्—वच्चा पैदा करना, शिशु जनना ।
शीह्—सोना, निद्रित होना, लेटना ।
यु—सम्मिलित होना, मिलाना, ढीला करना ।
रु—शब्द करना, गुराना ।
तु—जाना, बढ़ना, हानि पहुँचाना ।
खु—स्तुति करना, प्रशंसा करना ।
दुक्षु—छींकना, खाँसना ।
क्षु—तेज करना, तीखा करना ।
व्यु—टपकना, गुद गुदाना ।
उर्गुम्—ढाकना ।
धु—आगे बढ़कर मिलना, आक्रमण करना, सामना करना ।
धु—राजी होना, स्वीकृति देना, वच्चा पैदा करना, शक्तिशाली होना ।

कु—भनभनाना, भनभन शब्द करना (मधुमक्खी) ।
पुञ्—स्तुति करना, प्रशंसा करना ।
प्रूञ्—स्पष्ट शब्द बोलना ।
इण्—जाना ।
इह्—अध्ययन करना ।
इक्—याद करना, स्मरण करना ।
पी—जाना, व्याप्त होना, गर्भधारण करना, चमकाना, सुन्दर होना, फेंकना, खाना ।
पा—जाना ।
वा—जाना, बहना, महँकना ।
माति—चमकना, मालूम पड़ना ।
ष्णा—स्नान करना, शुद्ध होना ।
भ्रा—पकाना, उवालना ।
द्रा—लज्जित होना, दौड़ना, शीघ्रता करना ।
प्सा—भोजन करना, खाना ।
पा—रक्षा करना ।
रा—देना ।
ला—लेना ।
दाप्—काटना ।
ख्या—कहना ।
प्रा—भरना, पूर्ण करना ।
मा—समाना, अटना ।
वच्—कहना ।
विद्—जानना ।
अस्—होना, रहना ।
सृज्—झाड़ू लगाना, साफ करना, धोना ।
रुदिर्—रोना, आँसू गिराना ।
जिब्वप्—लेटना, सोना ।
इवस्, अन्—साँस लेना ।
जश्—भोजन करना, हँसना ।
जागृ—जागना, नींद से उठना ।

दरिद्रा—दरिद्र होना, दरिद्रता करना ।

चकास्—चमकना ।

शासु—सिखाना, शिक्षा देना ।

दीधीङ्—चमकना, मालूम पड़ना, प्रकट होना ।

वेवीङ्—प्राप्त करना, गर्भधारण करना, व्याप्त होना, फेंकना, खाना, चाहना, चमकना, जाना ।

षस्, सस्ति—सोना, निद्रित होना ।

वश्—चाहना, इच्छा करना ।

हुङ्—हटा देना, लेलेना, लूटना ।

इति तिङन्तादादि-प्रकरणम् ।

अथ जुहोत्यादि-प्रकरणम्

हु—देना अर्थात् हवन करना, भोजन करना, स्वीकार करना, संतुष्ट करना ।

जिभी—डरना, भयभीत हो जाना ।

ही—सजाना, लज्जित होना ।

पृ—पालन-पोषण करना, भरना ।

डुभृज्—धारण करना, सहारा देना, पालन पोषण करना ।

माङ्—नापना, शब्द करना, चिल्लाना ।

ओहाङ्—जाना ।

ओहाक्—छोड़ना, त्यागना ।

डुदाब्—देना ।

डुधाज—पकड़ना, निर्वाह करना, पालन पोषण करना देना ।

गिजिर्—धोना, कपड़ा धोना, साफ करना, पोषण करना ।

विजिर्—अलग करना, वांटना, विभक्त करना ।

विष्लु—फैलना, विस्तृत होना, व्याप्त होना ।

घृ—वहना, छिड़कना, चमकना ।

हृ—हठ पूर्वक लेना ।

क्र, सृ—जाना ।

मस्—दोषारोपण करना, अपशब्द कहना, गाली देना, चमकना ।

कि—जानना ।

तुर्—दौड़ना, शीघ्रता करना ।

धिष्—शब्द करना ।

धन्—अन्न पैदा करना ।

जन्—उत्पन्न करना ।

गा—प्रशंसा करना, गाना ।

इति जुहोत्यादि-प्रकरणम् ।

अथ दिवादि-प्रकरणम्

दिबु—खेलना, क्रीड़ा करना, विजय की इच्छा करना, बेचना, व्यापार करना, चमकना, प्रशंसा करना, प्रसन्न होना, मुदित होना, नशे में होना, मदमत्त होना, निद्रित होना, चाहना, इच्छा करना, जाना ।

षिबु—सीना, रफू करना, कपड़े जोड़ना ।

खिबु—जाना, सुखना ।

पिबु—थूकना, मुँह से थूक बाहर निकालना ।

अ० प्र० : २५

पुसु—लेना, स्वीकार करना, लुप्त हो जाना, अदृश्य होना ।

पुसु—थूकना ।

क्रसु—कुटिल होना, टेढ़ा होना, चमकना ।

व्युष्, प्लुष्—जलना ।

नृत्ती—नाचना, इधर उधर घूमना ।

असी—डरना, काँपना, घबराना ।

कुम्भ्—दुर्गन्ध निकलना, दुर्गन्धित होना ।
 पुथ्—हानि पहुँचाना, पीटना ।
 गुथ्—लपेटना, ढाकना ।
 क्षिप्—भेजना, फेंकना ।
 पुष्प—फूल खिलना, विकसित होना ।
 तिम्र्, छिम्र्, छीम्र्—गीला होना, आर्द्र होना ।
 श्रीड्—फेंकना, भेजना, लज्जित होना ।
 इष्—जाना ।
 पृह्, पुह्—संतुष्ट होना, प्रसन्न होना ।
 जृष्, क्षृष्—वृद्ध होना, पुराना होना, मुर्क्षाना ।
 पूड्—पैदा करना, बच्चा जनना ।
 दूड्—दुःखी होना, पीड़ित होना, खिन्न होना ।
 दीड्—नष्ट करना या नष्ट होना ।
 डीड्—उड़ना, आकाश से जाना ।
 धीड्—धारण करना, रखना, अनादर करना, उपेक्षा करना ।
 मीड्—हानि पहुँचाना, मारना, मरना, नष्ट होना ।
 रीड्—टपकना, चूना, बहना ।
 लीड्—चिपकना, सटना ।
 व्रीड्—पसन्द करना, चुनना ।
 पीड्—पीना ।
 माड्—नापना ।
 ईड्—जाना ।
 प्रीड्—संतुष्ट होना, प्रसन्न होना ।
 शो—पतला करना, क्षीण करना, दुर्बल बनाना ।
 छो—काटना, हँसुए से घास काटना ।
 घो—पूर्ण करना, अन्त करना, समाप्त करना ।
 दो—काटना, अलग करना, हँसुए से घास काटना ।
 जनी—पैदा होना, उत्पन्न होना, जन्मलेना ।
 दीपी—चमकना ।
 पूरी—भरना, पूरा करना, संतुष्ट करना, प्रसन्न करना ।
 तूरी—शीघ्रता से जाना, शीघ्रता करना, हानि पहुँचाना, मारना ।
 धूरी, गूरी—जाना, हानि पहुँचाना, पुराना होना ।
 धूरी, जूरी—मारना, हानि पहुँचाना, पुराना या वृद्ध होना ।
 शूरी—मारना, हानि पहुँचाना, दृढ़ रहना ।

चूरी—जलाना ।
 तप्—जलना या शक्तिशाली होना ।
 वृत्तु—चुनना, प्रसन्न करना ।
 विल्लिष्—दुःखी होना, कष्ट पाना ।
 काश्च—चमकना ।
 घाश्च—शब्द करना, चहचहाना (चिड़ियोंका), गर्जना ।
 क्षृष्—सहन करना ।
 शुचिर्—स्नान करना ।
 णह्—बाँधना ।
 रञ्ज्—रंगा जाना ।
 शप्—शाप देना, बुरा भला कहना ।
 पद्—जाना ।
 खिद्—दुःखी होना, कष्ट पाना ।
 विद्—रहना, होना ।
 बुध्—जानना, देखना ।
 युध्—लड़ना, युद्ध करना ।
 अनुरुध्—चाहना, इच्छा करना, आज्ञा मागना ।
 अण्—जीवित रहना, साँस लेना ।
 मन्—सोचना, समझना, विश्वास करना ।
 युज्—मन एकाग्र करना ।
 सृज्—छूटना ।
 लिश्—घटना, छोटा होना, कम होना ।
 राध्—समृद्ध या उन्नत होना, बढ़ना ।
 व्यध्—ब्रेधना (बाण, भाला) ।
 पुष्—पोषण करना, पुष्ट करना ।
 शुष्—सूखना ।
 तुष्—प्रसन्न या संतुष्ट होना ।
 दुष्—बुरा या दुष्ट होना ।
 श्लिष्—आर्लिगन करना ।
 शक्—सकना, योग्य होना ।
 प्विदा—पसीना होना, स्वेद निकलना ।
 क्रुध्—क्रोध करना ।
 क्षुध्—भुख लगना, क्षुधित होना ।
 शुध्—पवित्र या शुद्ध होना ।
 धिधु—पूरा होना, पूर्ण होना ।
 रध्—हानि पहुँचाना, कष्ट देना, पूर्ण होना ।

णश्—नष्ट होना ।
तृप्—प्रसन्न होना, संतुष्ट होना, तृप्त होना ।
हृप्—अत्यन्त प्रसन्न होना, गर्वित होना, मूर्ख होना ।
दुह्—घृणा करना, शत्रुता करना, हानि पहुँचाने का अवसर
ढूँढ़ना ।
मुह्—मूर्च्छित होना, विवेकशून्य हो जाना ।
ष्णुह्—कम करना, बमन करना, उगिलना ।
प्णिह्—प्रेम करना ।
शमु—शान्त रहना या होना ।
तमु—चाहना, इच्छा करना, शरीर या मन से दुःखी होना ।
दमु—शान्त करना, पालतू बनाना ।
श्रमु—तप करना, दुःखी होना, थकना, कष्ट उठाना ।
चमु—सहन करना ।
क्लमु—थक जाना ।
मदी - प्रसन्न होना ।
असु—फेंकना ।
यसु—प्रयत्न करना, श्रम करना ।
जसु—मुक्त कर देना, छोड़ देना ।
तक्षु, दसु—क्षीण होना, मुरझाना, थक जाना ।
वसु—स्थिर करना, जोड़ना ।
व्युष्—अलग करना, विभक्त करना ।
प्लुष्—जलना, जलाना ।
बिस्—उत्तेजित करना, उसकाना ।
कुक्ष्—आलिङ्गन करना, घेरना ।
वुस्—छोड़ना, उड़ेलना, विभक्त करना ।
मुस्—फाड़ना, तोड़ना, अलग करना ।

मसी—तोलना, नापना, आकार बंदलना, रूपान्तर करना ।
लुट्—पृथ्वी पर लुढ़काना ।
उच्—उपयुक्त होना, योग्य होना, फिट होना ।
शृश्, अंश्—नीचे गिरना ।
वृश्—चुनना, पसन्द करना ।
कृश्—पतला होना, दुर्बल होना, कम होना ।
जितृष्—प्यासा होना, प्यास लगना ।
हृप्—हर्षित होना, प्रसन्न होना ।
रुष्, रिष्—क्रुद्ध होना, हानि पहुँचाना, कष्ट देना ।
डिप्—फेंकना ।
कुप्—क्रोध करना ।
गुप्—व्याकुल होना, क्षुब्ध होना ।
युप्, रुप्, लुप्—कष्ट देना, मिटाना, नष्ट करना ।
प्लुप्—राशि लगाना, इकट्ठा करना, उठाना ।
लुम्—लालच करना ।
क्षुम्—व्याकुल होना, क्षुब्ध होना ।
णम्, तुम्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
क्लिद्—गीला होना, आर्द्र होना ।
लिमिद्—स्निग्ध होना, तैलयुक्त होना, चिकना होना,
स्नेह (प्रेम) करना ।
जिक्विद्—स्निग्ध होना, तैलयुक्त होना, चिकना होना,
प्रेम करना ।
ऋशु—उन्नत होना, बढ़ना ।
गृशु—लालच करना, इच्छा करना, चाहना ।
सृग्—तलाश करना, ढूढ़ना ।

इति दिवादि-प्रकरणम् ।

अथ स्वादि-प्रकरणम्

पुञ्—नहलाना, स्नान कराना, निचोड़ना, नहाना, शराव
टपकाना ।
षिञ्—बाँधना ।
शिञ्—तेज करना ।
डुमिञ्—फेंकना, बिखेरना, छिटकाना ।

चिञ्—चुनना ।
स्तृञ्—ढाकना ।
कृञ्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
वृञ्—चुनना, पसन्द करना ।
शुञ्—काँपना, हिलना हिलाना ।

दुहु—कष्ट देना, जलाना ।
 हि—जाना, उन्नत करना ।
 पृ—प्रसन्न करना ।
 स्पृ—प्रसन्न करना, रक्षा करना, चलना ।
 आप्लृ—व्याप्त होना, फैलना ।
 शक्लृ—योग्य होना, समर्थ होना, सकना ।
 राध्, साध्—सिद्ध करना, पूरा करना ।
 अशू—फैलना, व्याप्त होना, इकट्ठा होना या करना ।
 ष्टिध्—आक्रमण करना, चढ़ाई करना ।
 तिक्, सिग्—जाना, आक्रमण करना, चढ़ाई करना ।

पध—हानि पहुँचाना, कष्ट देना, मारना ।
 जिधृषा—गर्व युक्त होना, ठीठ होना, ढिठाई करना ।
 दम्भु—घोखा देना, ठगना, हानि पहुँचाना ।
 ऋधु—उन्नत होना, बढ़ना ।
 तृप्—प्रसन्न होना, संतुष्ट होना ।
 अह्—व्याप्त होना, फैलना ।
 दध्—मारना, हानि पहुँचाना, कष्ट देना, रक्षा करना ।
 चरु—भोजन करना, पालन करना ।
 रि, क्षि, चिरि, जिरि, दाश्, दृ—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।

इति स्वादि-प्रकरणम् ।

अथ तुदादि-प्रकरणम्

तुद्—कष्ट देना, दुःख देना ।
 शुद्—भोजना, आगे बढ़ाना, हाँकना ।
 दिश—देना, स्वीकृति देना ।
 अस्ज्—पकाना, भूनना ।
 क्षिप्—भोजना, फेंकना ।
 कृप्—हल जोतना ।
 ऋपी—जाना ।
 जुपी—प्रसन्न होना, सेवा करना ।
 ओविजी—भयभीत होना, धवराना, काँपना, व्याकुल होना ।
 ओलजी, ओलस्त्री—लजाना, लज्जित होना ।
 ओवश्चू—काटना, फाड़ना ।
 व्यच्—घोखा देना ।
 उच्छि—दाना चुनना, एक-एक दाना इकट्ठा करना ।
 उछी—छोड़ देना, रोक देना, पूरा करना, समाप्त करना ।
 ऋच्छ्—जाना, कड़ा होना, सामर्थ्य रहित होना, शक्ति-रहित होना ।
 मिच्छ—रोकना, विघ्न डालना, उद्विग्न करना ।
 जर्ज्, चर्च्, शर्श्—कहना, बात करना, दोषारोपण करना, डाटना ।
 स्वच्—ढाकना, खोल चढ़ाना ।

ऋच्—प्रशंसा करना ।
 उञ्ज—सीधा करना, सरल करना ।
 उञ्श्—त्यागना, छोड़ना ।
 लुम्—व्याकुल करना, धवराना ।
 रिक्—डींगमारना, कर्कश शब्द करना, युद्ध करना, लड़ना, दोषारोपण करना, कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना, देना ।
 तृप्, तृम्फ्—संतुष्ट होना ।
 तृप्, तृम्प्, तृप्, तृम्फ्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना ।
 दृप्, दृम्फ्—पीड़ा देना, कष्ट देना, पीड़ित करना ।
 ऋफ्, ऋम्फ्—कष्ट देना, पीड़ा देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
 गुफ्, गुम्फ्—बुनना, गूँथना, बाँधना ।
 उम्, उम्फ्—भरना ।
 शुभ शुम्फ्—अच्छा मालूम पड़ना, शोभायमान होना ।
 दभी—बाँधना, गूँथना ।
 चृत्ती—कष्ट देना, मारना, बाँधना, जोड़ना ।
 विध्—शासन करना, हुकूमत करना ।
 जुड्—जाना ।
 मृड्, पृड्—हर्षित होना, प्रसन्न होना ।

वृण्—प्रसन्न करना ।
 मृण्—हानि पहुँचाना, मारना ।
 तुण्—मोड़ना, टेढ़ा करना, झुकाना ।
 पुण्—सत्कर्म करना, अच्छा काम करना ।
 मुण्—प्रतिज्ञा करना ।
 कुण्—शब्द करना, सहायता करना ।
 शुन्—जाना ।
 द्रुण्—हानि पहुँचाना, कष्ट देना, जाना, टेढ़ा करना, झुकाना ।
 घुण्, घूर्ण्—घूमना, लड़खड़ाना ।
 धुर्—शासन करना, चमकाना ।
 धुर्—शब्द करना ।
 खुर्—खुरचना, काटना ।
 मुर्—बेरना, लपेटना ।
 बुर्—पंक्ति बनाना, कूँड़ बनाना ।
 धूर्—भयानक होना, कष्ट प्रन्दन करना, घुरघुराना ।
 पुर्—आगे आगे चलना ।
 बृह्—बढ़ाना, बढ़ना, विस्तृत होना ।
 वृह्, स्तृह्, वृंह्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
 इष्—इच्छा करना, चाहना ।
 मिष्—स्पर्धा करना, होड़ लगाना ।
 किल्—सफेद होना, क्रीड़ा करना ।
 तिल्—तैल युक्त होना ।
 चिल्—वस्त्र पहिनना, वस्त्र धारण करना ।
 चल्—क्रीड़ा करना ।
 इल्—सोना, फेंकना ।
 विल्—ढाकना, छिपाना ।
 बिल्—फाड़ना, अलग करना ।
 णिल्—गम्भीर होना, कड़ा होना, छिपना, भरना ।
 हिल्—कामी व्यक्ति के समान क्रीड़ा करना ।
 शिल्, विल्—दाना बीनना ।
 मिल्—मिलना, भेंट करना ।
 लिख्—लिखना ।
 कुट्—टेढ़ा होना ।
 पुट्—आलिंगन करना, लपेटना ।

कुच्—सिकुड़ना ।
 गुज्—शब्द करना, भगभगाना ।
 गुड्—सुरक्षा करना, वचाना ।
 डिप्—फेंकना, भेजना ।
 छुर्—काटना, विभक्त करना ।
 स्फुट्—विकसित होना ।
 मुट्—शोपारोपण करना, झिड़कना, कुचलना ।
 चुट्—तोड़ना, फाड़ना ।
 तुट्—झगड़ा करना ।
 खुट्, छुट्—काटना, अलग करना ।
 जुट्—बाँधना ।
 कड्—विचलित होना, व्याकुल करना ।
 छुट्—मिलाना या मिलना ।
 कृड्—एकत्र होना ।
 कुड्—बच्चों की तरह खेलना या काम करना ।
 पुड्—छोड़ देना, त्याग देना ।
 धुट्—मारने वाले को मारना ।
 तुड्—तोड़ना, अलग करना, फाड़ना ।
 थुड्, स्थुड्—ढाकना, पर्दा डालना ।
 स्फुर्, स्फुल्—फड़कना, घड़कना, हिलना, काँपना ।
 स्फुड्, चुड्, प्रुड्—ढाकना ।
 कुड्, मृड्—डूबना, डुबकी लगाना ।
 हुड्—इकट्ठा करना या होना ।
 गुरी—प्रयत्न करना ।
 णू—प्रशंसा करना ।
 धू—हिलाना, काँपना ।
 गु—मल त्याग करना ।
 धु—जाना, स्थिर होना ।
 कुड्—शब्द करना ।
 पृड्—व्यस्त होना, काम में लगना ।
 मृड्—मरना ।
 रि, पि—जाना ।
 धि—धारण करना, रखना, अधिकार करना ।
 चि—रहना, ठहरना, जाना ।
 पू—उत्तेजित करना, प्रेरित करना, उसकाना, लगाना ।
 कृ—बिखेरना, छीटना ।

गृ—निगलना ।

दृढ—आदर करना, सम्मान करना ।

धृक्—रहना, होना ।

प्रच्छ—पूछना, प्रश्न करना ।

सृज्—छोड़ना ।

टुमस्जो—स्नान करना ।

रुजो—टुकड़े करना, नष्ट करना ।

भुजो—टेढ़ा करना, भुंकना ।

छुप्—स्पर्श करना या छूना ।

रुश्, रिश्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।

लिश्—जाना ।

सृश्—स्पर्श करना, छूना ।

विच्छ—जाना ।

विश्—घुसना, प्रवेश करना ।

सृश्—घिसना, थपथपाना, स्पर्श करना, पकड़ना ।

शुद्—भेजना, प्रेरित करना, उत्तेजित करना ।

पद्ल—विश्राम करना, सहारा लेना, लेटना, जाना, विपन्न होना, शिथिल होना ।

शद्गृ—गिरना, नष्ट होना, मुरझाना ।

मिल्—मिलना, एकत्र होना, साथ देना ।

मुच्छ—मुक्त कर देना, छोड़ देना, ढीला करना ।

छुप्ल—काटना, तोड़ना ।

विद्ल—पाना, प्राप्त करना ।

लिप्—लेप करना, मालिश करना, ढाकना, बड़ाना ।

विच्—छिड़कना, सींचना, आर्द्र करना ।

कृती—काटना ।

खिद्—मारना, प्रहार करना, दवाना, दुःखी करना ।

पिश्—आकार बनाना, सजाना ।

इति तुदादयः ।

अथ रुधादि-प्रकरणम्

रुधिर—ढाकना रोकना, घेरना, विरोध करना, दवाना ।

मिदिर्—तोड़ना, फाड़ना ।

छिदिर्—काटना, दो टुकड़े करना ।

रिचिर्—शुद्ध करना, पेट साफ करना, खाली करना ।

विचिर्—अलग करना, अन्तर करना ।

छुदिर्—कुचलना, पीसना ।

युजिर्—जोड़ना, मिलाना ।

उच्छदिर्—चमकना, जुआ खेलना ।

उरुदिर्—मारना, नष्ट करना अनादर करना ।

कृती—घेरना ।

जिह्न्धी—जलाना, दीप्त करना ।

खिद्—कष्ट पाना, दुःखी होना ।

विद्—विचार करना, ध्यान देना ।

शिप्ल—विशेषता बनाना, आदर करना ।

पिप्लु—पीसना, चूर्ण करना ।

मज्जो—तोड़ना, फाड़ना, टुकड़े टुकड़े करना ।

मुज—पालन करना, रक्षा करना, खाना ।

रुह्, हिस्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।

उन्दी—गीला करना, आर्द्र करना, नहलाना ।

अज्ज—मलना, चमकना, जाना ।

तब्बु—संकुचित करना, कम करना, सिकोड़ना ।

ओविजी भयभीत होना, हिलना, उद्विग्न होना ।

वृजी—मना करना, रोकना, निषेध करना ।

पृचो—संपर्क में लाना, मिलाना, मिलना ।

इति रुधादिप्रकरणम् ।

अथ तनादिप्रकरणम्

तनु—फैलाना, विस्तृत करना ।
 षणु—देना ।
 क्षणु, क्षिणु—हानि पहुँचाना, कष्ट देना, मारना ।
 ऋणु—जाना ।
 तृणु—घास खाना, चरना ।

धृणु—चमकना, जलना ।
 वृणु—माँगना, प्रार्थना करना ।
 मृणु—समझना, मानना ।
 हृणु—करना ।

इति तनादिप्रकरणम् ।

अथ क्रयादिप्रकरणम्

डुक्कीञ्—खरीदना, द्रव्य का बदल-बदल करना ।
 प्रीञ्—प्रसन्न करना, प्रसन्न होना, चाहना, इच्छा करना ।
 श्रीञ्—पकाना ।
 मीञ्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
 षिञ्—बाँधना ।
 स्कुञ्—ढाकना, फैलाना, छितराना ।
 स्तन्मु, स्तुन्मु, स्कन्मु, स्कुन्मु—रोकना, विघ्न डालना ।

युञ्—बाँधना ।
 कूञ्—चरचर शब्द करना ।
 दूञ्—हानि पहुँचाना, कष्ट देना ।
 पूञ्—शुद्ध करना, साफ करना, पवित्र करना ।
 लूञ्—काटना, लवाई करना ।
 स्तूञ्—ढाँकना ।
 कृञ्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
 वृञ्—चुनना, पसन्द करना, वरण करना ।
 धूञ्—हिलाना, कौपाना, क्षुब्ध करना ।
 शू—कष्ट पहुँचाना, हानि करना, मारना ।
 पू—पालन-पोषण करना, भरण ।
 वृ—चुनना, पसन्द करना ।
 मृ—दोषारोपण करना, डाटना, फटकारना, आशय देना ।
 मृ—मारना, कष्ट देना, हानि पहुँचाना ।

दृ—चुभना, फाड़ना ।
 जृ, झृ, धृ—पुराना होना, मुरझाना, वृद्ध होना ।
 नृ—ले जाना, नेतृत्व करना, जाना ।
 कृ—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
 ऋ—जाना ।
 गृ—शब्द करना, बुलाना, उत्तेजित करना, घोषणा करना ।
 ज्या—पुराना होना, नष्ट होना, क्षीण होना ।
 री—जाना, गुराँना, भेड़िये का गुराँना ।
 ली—चिपकना, सटना, पिघलना ।
 ब्ली, प्ली—जाना, पसन्द करना, सहारा देना ।
 द्रो—चुनना ।
 श्री—डरना ।
 क्षीष—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
 ज्ञा—जानना ।
 वृन्ध्—बाँधना ।
 वृद्ध्—अलग करना, विभक्त करना ।
 श्रन्थ—ढोला करना, बन्धन से छुटकारा देना, बार बार प्रसन्न होना ।
 मन्थ—मथना, क्षुब्ध करना ।
 श्रन्थ्, ग्रन्थ—लिखना, रचना, करना ।
 कुन्थ्—चिपकना, मिलना, कष्ट पाना ।
 मृद्, मृड्—निचोड़ना, दवाना, घिसना, मलना ।
 गुध्—क्रोध करना ।

कुब्—फाड़ना, सत्त निकालना, खींचना ।

क्षुब्—हिलाना, क्षुब्ध करना ।

णम्, तुम्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना ।

क्लिष्ट—कष्ट देना, पीड़ित करना ।

अश्—भोजन करना ।

उग्रस्—फेंकना, उछालना, लवन के बाद छूटा हुआ अन्न
वीनना ।

इष्—शीघ्रता से चलाना, उड़ाना, फेंकना ।

विष्—अलग करना ।

पुष्, प्लुष्—गीला या आर्द्र होना, उड़ेलना, छिड़कना,
भरना ।

पुष्—पालन पोषण करना, आश्रय देना, सहारा देना ।

सुष्—चुराना, चोरी करना ।

खच्, हिट्—प्रकट होना, पुनर्जन्म होना ।

ग्रह—पकड़ना, लेना ।

इति क्रयादिप्रकरणम् ।

अथ चुरादिप्रकरणम्

चुर्—चुराना ।

चित्ति—सोचना, विचार करना, चिन्ता करना ।

यन्त्रि—त्कावट डालना, रोकना ।

स्फुडि, स्फुटि—मजाक करना, परिहास करना, उपहास
करना ।

लक्ष्—देखना, चिह्न लगाना, सूचित करना ।

कुट्रि—झूठ बोलना ।

लड्—प्यार करना, लाड़ दुलार करना ।

मिदि—प्रेम करना, तैल युक्त होना ।

ओलडि, उलडि—उछालना, ऊपर की ओर फेंकना ।

जल्—ढाकना, पर्दा डालना ।

पीड्—दुःख देना, पीड़ित करना ।

नट्—नाचना, गिरना, कष्ट देना, हानि पहुँचाना ।

अथ्—प्रयत्न करना, जाना ।

वध्—रोकना, बाधा डालना ।

पृ—भरना ।

ऊर्ज्—दृढ़ करना, जीना, साँस लेना ।

पक्ष्—लेना, पकड़ना, पक्षपात करना ।

वर्ण्, चूर्ण्—प्रेरित करना, भेजना, वर्णन करना ।

प्रथ्—फैलाना, घोषणा करना ।

पृथ्—फेंकना ।

पग्, शम्, साम्—इकट्ठा करना, राशि बनाना ।

भक्ष्—भोजन करना ।

कुट्—काटना, अलग करना, दोषारोपण करना, डाटना ।

पुट्, चुट्—छोटा होना, घटना ।

अट्, पुट्—घृणा करना, अनादर करना ।

लुण्ट्—चुराना ।

शठ्, श्वट्—अधूरा छोड़ना, जाना ।

गुजि, पिजि—हानि पहुँचाना, मारना, दृढ़ या शक्तिशाली
होना, देना, लेना ।

तुज्, पिज्, लजि—जीवित रहना, रहना ।

पिस्—जाना ।

पाम्स्—शान्त करना, सान्त्वना देना, मनाना, खुश करना ।

श्वल्क्, वल्क्—कहना, वर्णन करना ।

प्लिह्, स्फिट्—तैल युक्त करना, प्रेम करना ।

स्मिट्, स्मिड्—अनादर करना ।

श्लिप्—जोड़ना, सम्मिलित करना ।

पथि—यात्रा करना, जाना ।

पिच्छ्—काटना, अलग करना ।

छदि—ढाकना ।

अण्—देना ।

तड्—पीटना, मारना ।

खड्, खडि, कडि—काटना, तोड़ना, अलग करना ।

कुडि—रक्षा करना, बचाना ।

गुडि, कुडि—घेरना, ढाकना ।
 खुडि—टुकड़े करना, अलग करना ।
 बटि, बडि—बाँटना ।
 मडि—सजाना, प्रसन्न होना, आनन्द लेना ।
 मडि—भाग्यशाली बनाना ।
 छर्द—कै करना, वमन करना ।
 पुस्त, बुस्त—आदर करना, अनादर करना ।
 चुद्—प्रेरित करना, भेजना, कहना ।
 नक्क्, धक्क्—सर्वनाश कर देना ।
 चक्क्, चुक्क्—कष्ट पाना, कष्ट देना ।
 क्षल्—धोना, साफ करना, पवित्र करना ।
 तल्—स्थापित करना ।
 तुल्—तौलना ।
 हुल्—भूला भुलाना ।
 पुल्—ऊँचा होना, महान् होना ।
 चुल्—ऊँचा उठाना, ऊँचा करना ।
 मूल्—पौधा लगाना, बढ़ाना, उगाना ।
 कल्, बिल्—पकड़ना, ढोना, सहन करना, ले जाना ।
 बिल्—तोड़ना, अलग करना ।
 तिल्—तैलयुक्त होना, मालिश करना ।
 चल्—जीना, रहना ।
 पाल्—रक्षा करना ।
 लूप्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, आघात करना ।
 शुल्प्—शूर्प्—तापना, उत्पन्न करना ।
 शुट्—तोड़ना, काटना ।
 सुट्, पडि—कुचलना, तोड़ना, चूर्ण करना ।
 पसि—नष्ट करना ।
 बज्, बज्—परिष्कार करना, तैयार करना, जाना ।
 शुक्क्—लाभ उठाना, मूल्य चुकाना, देना, स्पर्श करना ।
 चपि—जाना ।
 क्षपि—सहन करना ।
 छजि—कष्ट में या विपत्ति में जीवन बिताना ।
 श्वत्, श्वभ्—जाना ।
 जप्—जानना, जानाना ।
 यम्—घेरना, लपेटना ।
 चप्, चह्—धोखा देना, रहित होना ।

रह्—छोड़ देना, त्याग देना ।
 बल्—दृढ़ करना, जीना ।
 चिज्—इकट्ठा करना ।
 बट्ट—हिलाना ।
 मुस्त्—इकट्ठा करना, राशि लगाना ।
 खट्ट—ढाकना, पर्दा डालना ।
 षट्ट, स्फिट्ट, चुबि—हानि पहुँचाना, कष्ट देना, आघात करना, मारना ।
 पुस्, व्युष्, पुल्, पूर्ण, पुण्—इकट्ठा करना, संग्रह करना ।
 पुंस्—कुचलना, पीसना, कष्ट देना ।
 व्यप्, व्यय्—फेंकना ।
 रधिक—बाँधना ।
 धूस्—सजाना, सुसज्जित करना ।
 कीट्—रंगना, बाँधना ।
 चूर्ण्—संकुचित करना, सिकोड़ना, बन्द करना ।
 पूज्—पूजा करना ।
 अर्क्—प्रशंसा करना, गर्म करना ।
 शुट्—आलस्य करना ।
 शुठि—सूखना ।
 जुड्—प्रेरित करना, भेजना ।
 मर्च्-गज्, मार्ज्—शब्द करना, गरजना ।
 धृ—सींचना, छिड़कना, गीला करना ।
 पचि—विस्तृत व्याख्या करना, फैलाना, विस्तार करना ।
 तिज्—तेज करना, तीखा करना ।
 कृत्—नाम लेना, उद्धृत करना, बुलाना ।
 बर्ध्—काटना, अलग करना, भरना ।
 कुबि—ढाकना ।
 छुबि, तुबि—लुप्त हो जाना, न दिखाई पड़ना ।
 ह्रप्—बोलना, शब्द करना ।
 शुटि—काटना, तोड़ना, अलग करना ।
 सुडि, तुडि, हल्—प्रेरित करना, भेजना ।
 अक्ष—अस्पष्ट बोलना, लगाना, मालिश करना, इकट्ठा करना ।
 म्लेच्छ—असम्भ्यता से बोलना, व्याकुलता से बोलना ।
 ब्रूस्, बर्ह्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।

गर्ज्, गर्द्—गरजना, शब्द करना ।
 गर्ध्—लालची होना, इच्छा करना ।
 गुर्द, पुर्व, पूर्व—रहना, निवास करना ।
 जसि—रक्षा करना, मुक्त कर देना ।
 ईर्द्—प्रशंसा करना ।
 जसु—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
 पिडि—इकट्ठा करना, राशि लगाना ।
 रुर्द्, रुद्—क्रुद्ध होना ।
 डिप्—फेंकना ।
 डुप्—उठाना, ऊँचा करना, खड़ा करना ।
 चित्—समझना, ध्यान देना ।
 दशि—काटना ।
 दसि—देखना, काटना ।
 डप्, डिप्—इकट्ठा करना, राशि लगाना ।
 तत्रि—कुटुम्ब का पालन पोषण करना, कुटुम्ब को सहारा देना ।
 मत्रि—सम्मति लेना, सम्मति देना, मन्त्रणा करना ।
 स्पश्—लेना, मिलना ।
 तर्ज्, मर्स्—धमकाना, डाटना, फटकारना ।
 बस्त्, गंध्—कष्ट देना, पीड़ित करना ।
 विष्क्, हिष्क्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना ।
 निष्क्—तौलना, नापना ।
 लल्—प्यार करना, इच्छा करना ।
 कृण्—संकुचित करना, कम करना, बन्द करना ।
 मृण्—भरना ।
 भृण्—आधा करना, डरना ।
 शद्—प्रशंसा करना, डींग मारना ।
 यक्ष्—पूजा करना ।
 स्पम्—अनुमान करना, समझना ।
 गूर—प्रयत्न करना ।
 शम्, लक्ष्—देखना, आलोचना करना, प्रदर्शित करना ।
 कुत्स्—निन्दा करना, बुरा भला कहना ।
 बुद्—काटना, तोड़ना, अलग करना ।
 गल्—बहना ।
 भल्—वर्णन करना, व्याख्या करना (देखना) ।

कूद्—न देना, निन्दा करना, जलाना ।
 ऊद्—जलाना ।
 वञ्चु—धोखा देना, ठगना ।
 वृष्—शक्तिशाली होना, प्रसिद्ध होना ।
 मद्—प्रसन्न होना, संतुष्ट होना ।
 दिवु—कष्ट सहना, विलाप करना, कराहना ।
 गृ—जनाना, वर्णन करना, सिखाना ।
 विद्—अनुभव करना, कहना, निवास करना ।
 मान्—गर्व युक्त होना ।
 यु—निन्दा करना ।
 कुस्म्—बुरी तरह मुस्काना ।
 चर्च्—अध्ययन करना ।
 बुक्क्—भूकना, बोलना, शब्द करना ।
 शब्द्—शब्द करना, पुकारना ।
 प्रति शब्दयति—प्रतिज्ञा को प्रकट करता है ।
 कण्—आँख मूँदना, बन्द करना ।
 जमि—कुचलना, नष्ट करना ।
 धृद्—मारना, कष्ट देना, उड़ेलना ।
 जसु—मारना, पीटना, कष्ट देना ।
 पश—बाँधना ।
 अम्—रुण होना ।
 चद्, स्फुट्—चुमाना, तोड़ना ।
 घद्—हानि पहुँचाना, आघात करना, मारना, एकत्र होना ।
 दिवु—कष्ट देना ।
 अर्ज्—तैयार करना, उपार्जन करना ।
 धुविर्—शब्द करना, चिल्लाना, धोषणा करना ।
 आक्रन्द—लगातार या बार बार शब्द करना ।
 जस—किसी कला का अभ्यास करना ।
 तसि, भृष्—सजाना, सुसज्जित करना ।
 मोक्ष्—फेंकना घुमाकर फेंकना ।
 अह्—पूजा करना ।
 ज्ञा—आज्ञा देना, निदेश देना ।
 मज्—देना, पकाना ।
 श्चु—उपहास करना, अपमान करना ।
 यत्—प्रयत्न करना, प्रोत्साहित करना ।
 रक्, लग्, रग्—घखना, स्वाद लेना ।

अञ्ज—विशेषता प्रकट करना।

लिङि—चित्र बनाना, चित्र रंगना।

मुद्—मिलाना,।

त्रस्—पकड़ना, ग्रहण करना, मना करना।

उध्रस्—डाना बीनना।

मुच्—छोड़ना, प्रसन्न करना।

वस्—प्रेम करना, काटना, अलग करना, लेलेना।

चर्—सन्देह करना।

च्यु, च्युस्—हसना, कष्ट सहना।

मुब्, कृपि—मिलाना, सोचना।

ग्रस्—खाना, भोजन करना, लेना।

पुष्—पहिनना।

दल्—फाड़ना, तोड़ना।

पट्, पुट्, लुट्, तुजि, मिजि, पिजि, लुजि, भजि, लधि,
त्रिसि, पिसि, कुसि, दशि, कुशि, घट्, घटि, वृहि, वर्ह,
बल्ह, गुप्, धूप, विच्छ, चर्च, पुथ्, लोक्, लोचू,
णद्, कुप्, तर्क, वृत्, वृधु—बोलना, चमकना।

रुट्, लजि, अजि, दसि, शृशि, रुशि, शीक्, रुसि, नट्,
पुटि, जुचि, जिवि, जि, चि, रधि, लधि, अहि, रहि,
महि,—बोलना, चमकना।

रडि, तड्, नल्—बोलना, चमकना।

पुरी—संतुष्ट करना, पूर्ण करना।

रुज्—कष्ट देना, हानि पहुँचाना, मारना।

ध्वद्—चखना, स्वाद लेना।

युज्, पृच्—मिलना, मिलाना।

अर्च—पूजा करना।

षह्—सहन करना, सहाना।

ईर—फेंकना, जाना।

ली—पिघलना या पिघलाना।

वृजी—मना करना।

वृज्—ढाकना।

जू, जि—पुराना होना, जीर्ण होना।

रिच्—अलग करना, मिलाना।

शिष्—छोड़ देना, शेष रख देना।

तप्—जलाना, गर्म करना।

तृप्—संतुष्ट करना, प्रसन्न करना।

छृवी—जलाना।

हमी—डरना, भयभीत होना।

हम्—बाँधना गूथना।

अथ्—खोलना, मारना, हानि पहुँचाना, आघात करना,
कष्ट देना।

मी—जाना।

ग्रन्थ—गाँठ देना, बाँधना।

शीक्, चीक्—वैर्य धारण करना, शान्त रहना।

अर्द्, हिसि—कष्ट देना, आघात करना, मारना।

अर्द्—पूजा करना।

आ, वद्—पास जाना, पहुँचाना।

शुन्ध्—शुद्ध होना, पवित्र होना, साफ होना।

छद्—ढाँकना।

जुष्—तर्क करना, मारना, संतुष्ट होना।

धूज्—हिलाना, चलायमान करना।

प्रीज्—प्रसन्न करना, संतुष्ट करना।

अन्य, ग्रन्थ्—बाँधना, रचना करना।

आप्त्—प्राप्त करना।

तनु, चन्—विश्वास करना, सहायता करना, मारना।

वद् कहलाना, बजवाना (बाजा)।

वच्—बाचना, पढ़ना, बोलना।

मान्—पूजा करना, आदर करना।

सू—प्राप्त करना, पाना।

गर्ह्—निन्दा करना, दोषी ठहराना।

मार्ग—ढूँढ़ना।

कठि—शोक करना, दुःखी होना, विलाप करना।

सृज्—धोना, साफ करना, सजाना।

सृष्—सहन करना।

उत्, कठि—उत्कण्ठा करना।

धृष्—आक्रमण करना, कलंकित करना।

कथ्—कहना।

वर्—पसन्द करना, चाहना।

गण्—गिनना।

शट्, श्वट्—बुराबला कहना- अच्छी तरह बोलना।

पट्, वट्—बुनना, गूथना।

रट्—छोड़ना, मुक्त कर देना।

स्तम्—गद्दी—बादलों का गरजना, जोर से चिल्लाना ।
 पत्, पष्—जाना ।
 स्वर—दोष निकालना, दोषी ठहराना, निन्दा करना ।
 रच्—प्रस्तुत करना, निर्माण करना, बनाना ।
 कल्—जाना, गिनना ।
 चह्—गर्व युक्त होना ।
 मह्—पूजा करना, आदर करना ।
 सार्, कृप्, अर्थ—दुबल होना ।
 स्पृह्—चाहना, इच्छा करना ।
 भाम्—क्रुद्ध होना ।
 सूच्—पता लगाना, सूचना देना, निश्चय करना ।
 खेट्, खोट्—खाना, भोजन करना ।
 क्षोट्—फेंकना ।
 गोम्—गोबर से लीपना ।
 कुमार—क्रीड़ा करना ।
 शील्—अध्ययन करना, बार बार अभ्यास करना ।
 साम्—सान्त्वना देना, शान्त करना ।
 वेल्—समय की गणना करना, समय देखना ।
 पल्यल्—लवाई करना, साफ करना, ओसाना, साबुन से
 कपड़ा साफ करना ।
 वाक्—जाना, प्रसन्न करना, सेवा करना ।
 गवेष्—ढूँढ़ना ।
 वास्—सुगन्धित करना, मसाला डालना या लगाना ।
 निवास्—कपड़ा पहिनना या पहिनाना ।
 भाज्—विभक्त करना, अलग करना ।
 सभाज्—प्रसन्न करना, दिखाना ।
 ऊन्—छोड़ देना, कम करना, कम होना ।
 ध्वन्—शब्द करना ।
 कूट्—दुःखी होना ।
 सङ्केत्, ग्राम्, कुण्, गुण्—आमन्त्रित करना ।
 केल्—विद्वान् होना, निमन्त्रित करना, सुनना ।
 कृण्—आमन्त्रित करना, संकुचित करना, कम होना ।
 स्तेन्—चुराना ।
 पद्—जाना ।
 गृह्—लेना, स्वीकार करना ।
 मृग्—ढूँढ़ना ।

कुह्—आश्चर्य में डालना, धोखा देना ।
 शूर्, बीर्—शूरता या वीरता करना, शक्तिमान् होना ।
 स्थूल्—बड़ा या स्थूल होना, बलवान् होना ।
 अर्थ्—प्रार्थना करना, माँगना, चाहना ।
 सत्र्—यज्ञ करना ।
 गर्व्—गर्व करना, गर्वयुक्त होना ।
 सूत्र्—बाँधना ।
 मूत्र्—पेशाब करना ।
 रुग्—कठोर या रुखा होना ।
 पार्, तीर्—कार्य को पूर्ण करना ।
 पुट्—रचना करना, संग्रह करना ।
 धेक्—देखना ।
 कत्र्—शिथिलता करना ।
 पटयति—पटु शब्द कहता है ।
 अक्षयति—बोड़े से जाता है ।
 असयति—तलवार से मारता है ।
 हस्तयति—हाथी से जाता है ।
 वक्—देखना ।
 चित्र्—चित्र बनाना, देखना ।
 अंस—अलग करना, विभक्त करना ।
 वट्—वाँटना ।
 रट्—बोलना, रटना ।
 लज्, वटि—स्पष्ट करना ।
 मिश्र—मिलाना ।
 सङ्ग्राम्—युद्ध करना ।
 स्तोम्—प्रशंसा करना ।
 छिद्र, कर्ण—कान छेदना ।
 अन्ध्—अन्धा होना ।
 दण्ड्—दण्ड देना ।
 अङ्ग, अङ्ग—चिह्न लगाना, पग धरना ।
 सुख्—सुखी करना ।
 दुःख्—दुःखी करना ।
 रस्—स्वाद लेना, प्रसन्न करना ।
 व्यय्—खर्च करना ।
 रूप्—सौन्दर्य प्रदान करना ।
 छेद्—दो टुकड़े करना ।

छद्—मना करना ।
 क्षाम्—प्रेरित करना, भेजना ।
 व्रण्—घाव करना ।
 वर्ण्—रंगना, श्रम करना, विस्तृत करना, प्रशंसा करना,
 व्याख्या करना, पालिश करना, चमकाना ।
 पर्ण्—हरामरा करना ।
 विष्क्—देखना ।
 क्षप्—भेजना, प्रेरित करना ।
 वस्—रहना ।

तुल्य—ढाकना ।
 आन्दोल्—आन्दोलन करना ।
 विडम्ब्—विडम्बना करना ।
 हस्तयते—हाथ फेंकता है ।
 पादयते—पैर फेंकता है ।
 श्वेतयते—सफेद घोड़े से जाता है या सफेद घोड़ा कहता है ।
 अश्वयते—खच्चर से जाता है या खच्चर कहता है ।
 गालोडयते—वाणी की विवेचना करता है ।
 आक्षरयते—कुटिल बनाता है, कष्ट पहुँचाता है ।

इति चुरादिप्रकरणम् ।

अथ णिचप्रकरणम्

मावयति—वह किसी को समझाता है ।
 मावयते—वह अपने आप को समझाता है ।
 अवीमवत्—उसने समझाया ।
 अपीपवत्—उसने साफ कराया ।
 असीमवत्—उसने बँधवाया ।
 अयीयवत्—उसने मिलवाया या अलग कराया ।
 अरीरवत्—उसने शब्द कराया ।
 अलीलवत्—उसने कटवाया ।
 अजीजवत्—उसने भिजवाया ।
 असिन्नवत्—उसने बँहवाया ।
 असुन्नवत्— " "
 अशशासत्—उसने शिचा दिलवाई ।
 अहुडौकत्—उसने भिजवाया, चलाया ।
 अचीचकासत्—उसने खँसवाया ।
 अचचकासत्— " "
 चोरयति—चुरवाता है ।
 अशूशवत्—भिजवाया, चलावाया ।
 अशिश्वयत्— " "
 अवातस्तम्भत्—रोकवाया, धारण कराया ।
 पर्यसीषिवत्—सिलवाया ।
 न्यसीषहत्—सहवाया ।
 आटिटत्—घुमाया ।

आशिशत्—इकट्ठा कराया, फैलवाया ।
 मामवानिदिधत्—आपने नहीं बढ़वाया ।
 मामवान् प्रेदिधत्— " "
 औन्दिदत्—गीला कराया ।
 आङ्गिडत्—बहस कराया, मुकदमा चलावाया ।
 आर्चिचिन्त्—पूजा करायी ।
 औब्जिजत्—सीधा कराया ।
 अदिद्रपत्—चलाया, भिजवाया ।
 अररम्मत्—आरम्भ कराया ।
 अललम्मत्—प्राप्त कराया ।
 अगीहयत्—भिजवाया ।
 असस्मरत्—स्मरण कराया ।
 अवदरत्—विदीर्ण कराया ।
 अववेष्टत्—लपेटवाया, सजवाया, घिरवाया ।
 अविवेष्टत्— " "
 अचचेष्टत्—प्रयत्न कराया ।
 अचिचेष्टत्— " "
 अविभ्रजत्, अवसाजत्—चमकाया, प्रकाशित कराया,
 सुशोभित कराया ।
 अचीकणत्, अचकाणत्—आँख बन्द करायी ।
 असुषुपत्—सुलाया ।
 शावयति—पतला कराता है, छिलवाता है ।

छाद्यति—कटवाता है ।
 ह्यायति—बुलवाता है ।
 व्यायति—डकवाता है ।
 सायति—नष्ट कराता है ।
 अजूहवत्, अजुहावत्—बुलवाया ।
 अपीप्यत्—पिलाया ।
 अर्पयति—प्राप्त कराता है अर्थात् देता है ।
 हेपयति—लजवाता है ।
 व्लेपयति—चलाता है ।
 रेपयति—नाश कराता है ।
 क्नोपयति—शब्द कराता या बुलवाता है ।
 क्षमापयति—हिलवाता है ।
 स्थापयति—रखाता या ठहराता है ।
 अजिघ्रिपत्, अजिघ्रपत्—सुंघाया ।
 अचीकृतत्, अचिकीर्तत्—कहलाया, वर्णन कराया ।
 अवीवृतत्, अववर्तत्—उपस्थित किया ।
 अमीमृजत्, अममार्जत्—शुद्ध कराया ।
 पालयति—रखा कराता है, पालन कराता है ।
 वाजयति—कँपाता या हिलाता है ।
 वापयति केशान् - बालों को सुगन्धित कराता है ।
 विलीनयति, विलायति, विलायति,
 विलापयति वा घृतम्—घी पिघलाता है ।
 लोहं विलापयति—लोहा गलाता है ।
 विलायति—
 जटामिर्लापयते—जटा से पूजा कराता है ।
 श्येनोवर्तिकामुल्लापयते—बाज बटेर पर झपटता है ।
 बालमुल्लापयते—बालक को धोखा देता है ।
 मुण्डो, मापयते—मुड़ियां (साधु) डराता है ।
 मोषयते—डराता है ।
 जल्लो विस्मापयते—जटाधारी आश्चर्य में डालता है ।
 कुञ्जिकयैनं माययति—धूमची अथवा बांस की टहनी से इसे
 डराता है ।
 विस्माययति—आश्चर्य में डालता है ।

स्फावयति—बढ़ाता या बड़ा करता है ।
 शालयति—कटाता या गिराता है ।
 गाः शदयति गोविन्दः—गोविन्द गायों को हाँकता या ले
 जाता है ।
 रोपयति, रोहयति—लगाता या उगाता है ।
 क्रापयति—खरीदवाता है ।
 अध्यापयति—पढ़ाता है ।
 जापयति—जितवाता है ।
 अन्नं साधयति—अन्न तैयार करता है ।
 सेधयति तापक्षं तपः—तपस्या तपस्वी को तत्त्वज्ञान कराती है ।
 वापयति वाययति वा गाः पुरोवातः - सामने की हवा (पूर्वी
 हवा ?) गायों को गर्भ
 धारण कराती है ।
 गूहयति—छिपवाता या ढकवाता है ।
 दूषयति—दूषित करता है ।
 चित्तं दूषयति दोषयति वा कामः—काम चित्त को दूषित
 करता है ।
 घटयति—कराता है ।
 जनयति—पैदा करता है, उत्पन्न करता है ।
 जरयति, जासयति—जीर्ण करता है ।
 रजयति मृगान्—मृगों को शिकार खेलाता है, हिरनों का
 शिकार खेलाता है ।
 चपयति, चययति, चापयति, चाययति—चुनवाता है ।
 रञ्जयति पक्षिणः—पक्षियों को खुश करता है ।
 रञ्जयति मृगांस्तृणदानेन—घास देकर मृगों को प्रसन्न
 करता है ।
 स्फारयति, स्फोरयति—फड़काता है ।
 प्राणिणत्—जिलाया ।
 गमयति—मेजता है ।
 प्रत्याययति—समझाता है, विश्वास दिलाता है ।
 अधिगमयति—समझाता है ।
 घातयति—मरवाता है ।
 ऐर्ष्यत्, ऐर्विष्यत्—ईर्ष्या (डाह) कराया ।

इति प्यन्तप्रक्रियाप्रकरणम् ।

अथ सन्नन्तप्रक्रियाप्रकरणम्

पिपठिषति—पढ़ना चाहता है ।
जिघत्सति—खाना चाहता है ।
ईर्ष्यिषति, ईर्ष्यिषति—ईर्ष्या करना चाहता है ।
रुरुदिषति—रोना चाहता है ।
त्रिविदिषति—जानना चाहता है ।
मुमुषिषति—चुराना चाहता है ।
जिघृक्षति—पकड़ना या ग्रहण करना चाहता है ।
सुषुप्सति—सोना चाहता है ।
पिपृच्छिषति—पूछना चाहता है ।
चिकरिषति—विक्रेना या छोटना चाहता है ।
जिगरिषति, जिगलिषति—निगलना चाहता है ।
दिधरिषते—आदर करना चाहता है ।
दिधरिषते—धारण करना या आश्रय देना चाहता है ।
बुभूषति—होना चाहता है ।
दिदीषते—देना चाहता है ।
जुघुक्षति—ढकना या छिपाना चाहता है ।
बिमिस्सति—तोड़ना चाहता है ।
यियचते—यज्ञ करना चाहता है ।
बिबधिषते—बढ़ना चाहता है ।
तितृक्षति, तितृक्षति—मारना चाहता है ।
जिगीषति—जीतना चाहता है ।
चिकीषति—चुनना चाहता है ।
चिचीषति—
जिघांसति—मारना चाहता है ।
जिगमिषति—जाना चाहता है ।
प्रतोषिषति—समझाना चाहता है ।
अधिजिगमिषति—समझना चाहता है ।
जिगांस्यते—जाना चाहा जाता है ।
अधिजिगांस्यति—स्मरण करना चाहा जाता है ।
जिगांस्यते—जाना चाहा जाता है ।
सजिगांसते—मिलना चाहा जाता है ।
अधिजिगांसते—पढ़ना चाहता है ।
दिद्युतिषते, दिद्योतिषते—चमकना चाहता है ।

रुरुचिषते, रुरोचिषते—चमकना या प्रसन्न होना चाहता है ।
लिलिखिषति, लिखेखिषति—लिखना चाहता है ।
दिदेविषति—खेलना चाहता है ।
विवर्तिषते—रहना चाहता है ।
एषिषति—इच्छा करना चाहता है ।
दुधूषति, दिदेविषति—खेलना चाहता है ।
सुस्यूषति, सिसेविषति—सीना मिलाना या जोड़ना चाहता है ।
ईप्सति—प्राप्त करना चाहता है ।
ईर्त्सति, अर्दिधिषति—उन्नत होना चाहता है ।
बिभ्रज्जिषति, बिभर्जिषति—भूना चाहता है ।
विभ्रक्षति, बिभर्क्षति—
धिप्सति, धीप्सति, दिदम्भिषति—धोखा देना या नुकसान पहुँचाना चाहता है ।
शिथ्रीषति, शिथ्रिषति—आश्रय लेना या सम्पर्क में रहना चाहता है ।
सुस्वूषति, सिस्वविषति—शब्द करना या दुःखी होना चाहता है ।
युयूषति, यियविषति—मिलाना या अलग करना चाहता है ।
ऊर्णुषति, ऊर्णुविषति, ऊर्णुनिषति—ढाकना या छिपाना चाहता है ।
बुभूषति, बिभरिषति—धारण करना या पालन करना चाहता है ।
ज्जीप्सति, जिज्ञपयिषति—जताना चाहता है ।
सिसाषति, सिसनिषति—देना चाहता है ।
तितांसति, तितंसति, तितनिषति—कैलाना या विस्तृत करना चाहता है ।
इवा मुमूर्षति—कुत्ता मरना चाहता है ।
कूलं पिपतिषति—किनारा (तट) गिरना चाहता है ।
पिप्सति—गिरना चाहता है ।
दिदरिद्रिषति, दिदरिद्रिषति—दरिद्र होना चाहता है ।
मिस्सति, मिस्सते—फेंकना या नष्ट करना चाहता है ।
मिस्सति—नापना चाहता है ।

मिस्सते—नापना या बदलना चाहता है ।
 दिस्सति—तोड़ना, काटना या देना चाहता है ।
 दिस्सते—रक्षा करना चाहता है ।
 दिस्सति, दिस्सते—देना चाहता है ।
 धिस्सति—धारण करना, रखना या सहन करना चाहता है ।
 धिस्सति, धिस्सते—धारण करना, रखना या देना चाहता है ।
 रिप्सते—आरम्भ करना या आलिंगन करना चाहता है ।
 लिप्सते—प्राप्त करना, पाना चाहता है ।
 शिञ्चति—समर्थ होना चाहता है ।
 शिक्षति, शिञ्चते—सहन करना चाहता है ।
 पिस्सति—गिरना चाहता है ।
 रिस्सति—मारना चाहता है ।
 आरिरास्सति—प्रसन्न करना चाहता है ।
 मोञ्चते मुमुक्षवे वा वत्सः स्वयमेव—बछड़ा स्वयं मुक्त होना चाहता है ।
 मुमुक्षति वत्सं कृष्णः—कृष्ण बछड़े को मुक्त करना चाहता है ।
 विवृत्सति विवर्तिषते—रहना चाहता है ।
 निनर्तिषति, निनृत्सति—नाचना चाहता है ।
 तितरिषति, तितरीषति, तितीर्षति—पार करना या तैरना चाहता है ।
 विवरिषति, विवरीषति, वुवूर्षति—पसन्द करना या चुनना चाहता है ।
 दुवूर्षते, विवरिषते—
 दुवूर्षति—कुटिलता करना चाहता है ।
 सिस्मयिषते—मुस्कराना चाहता है ।
 पिपत्रिषते—साफ करना चाहता है ।
 अरिरिषति—जाना चाहता है ।
 अज्जिजियति—स्वच्छ करना, मालिश करना या जाना चाहता है ।
 अशिशिषते—भोजन करना चाहता है ।
 प्राणिणिषति—जीना चाहता है ।
 उचिच्छिषति—छोड़ना चाहता है ।
 अधिजिगापयिषति, अध्यापिपयिषति—पढ़ाना चाहता है ।

शिञ्चाययिषति, शुशावयिषति—बढ़वाना चाहता है ।
 जुहावयिषति—बुलाना चाहता है ।
 पुस्कारयिषति—फड़काना या चमकाना चाहता है ।
 चुक्षावयिषति—खेंसाना चाहता है ।
 पिपावयिषति—साफ कराना चाहता है ।
 यियावयिषति—मिलवाना या अलग कराना चाहता है ।
 विभावयिषति—समझवाना चाहता है ।
 रिरावयिषति—शब्द कराना चाहता है ।
 लिलावयिषति—कटवाना चाहता है ।
 जिजावयिषति—भिजवाना अथवा शीघ्रता करना चाहता है ।
 जुनावयिषति—स्तुति कराना या प्रशंसा कराना चाहता है ।
 बुभूषति—होना चाहता है ।
 सिञ्चावयिषति, सुञ्चावयिषति—गिराना या टपकाना चाहता है ।
 शुभ्रूषते—सेवा करना चाहता है ।
 तुष्टूषति—स्तुति करना चाहता है ।
 सुष्वापायिषति—गुलाना चाहता है ।
 सिषाधयिषति—तैयार करना चाहता है ।
 सिसिञ्चति—सींचना चाहता है ।
 परिषिषिञ्चति—अच्छी तराह सींचना चाहता है ।
 तिष्ठासति—ठहरना चाहता है ।
 सुषुप्सति—सोना चाहता है ।
 प्रतीषिषति—मान लेना चाहता है ।
 अधीषिषति—अध्ययन करना चाहता है ।
 सिस्वेदयिषति, सिस्यादयिषति—गोला कराना या पसीने में तर कराना चाहता है ।
 सिसाहयिषति—सहाना चाहता है ।
 अमिसुषूषति—छिड़कना, उड़ेलना या टपकाना चाहता है ।
 आहिच्छन्नः—अहिच्छन्न में होने वाला ।
 आहिच्छन्नीयः—आहिच्छन्न में होने वाला ।
 दयिडमती शाला—संन्यासियों वाला मकान ।
 जुगुप्सिषते—निन्दा करना या घृणा करना चाहता है ।
 मीमांसिषते—विचार करना चाहता है ।

अथ यङ्लुक्प्रकरणम्

बोमवीति, बोमोति—	वह बारबार अथवा अत्यधिक होता है ।	वर्वति, वरिवर्ति, वरीवर्ति—	वह बारबार अथवा अत्यधिक रहता है ।
पास्पवीति, पास्पति—	” ” होड़ करता है ।	चकरीति, चकति, चरिकर्ति, चरीकर्ति—	वह बारबार अथवा अत्यधिक करता है ।
जागादि—	” ” खड़ा होता या चाहता है ।	चाकति—	वह बारबार अथवा अत्यधिक बिखेरता या उड़ेलता है ।
नानाति—	” ” माँगता या पीड़ा पहुँचाता है ।	तातति—	” ” पार करता है ।
दादति, दादधीति—	” ” धारण करता या उपस्थित होता है ।	अरति, अररीति—	” ” जाता है ।
चोस्कन्दीति, चोस्कन्ति—	” ” कूदता या उठता है ।	अरिचति, अरियरीति—	” ” जाता है ।
मोमुदीति, मोमोति—	” ” प्रसन्न होता है ।	जगृहीति, जर्गर्हि—	” ” ग्रहण करता है ।
चोक्तीति, चोकुदीति—	” ” श्रीड़ा करता या खेलता है ।	जाग्रहीति, जाग्रहि—	वह बारबार अथवा अत्यधिक पकड़ता है ।
वनीवञ्चीति, वनीवञ्चति—	” ” जाता है ।	जगृधीति, जर्गर्धि—	” ” लालच करता है ।
जङ्गमीति, जङ्गन्ति—	” ” जाता है ।	प्राप्रञ्चीति, प्रापञ्चि—	” ” पूछता है ।
जङ्गनीति, जङ्गन्ति—	” ” मारता है ।	जाहयीति, जाहति—	” ” जाता है ।
आजङ्गते—	” ” मारता है ।	जाहयीति, जाहति—	” ” जाता या चमकता है ।
चङ्खनीति, चङ्खन्ति—	” ” खोदता है ।	मामोति, मामवीति—	” ” बाँधता है ।
चञ्चुरीति, चञ्चूर्ति—	” ” जाता या खाता है ।	तोतुर्वीति, तोतोर्ति—	” ” कण्ट देता या पीड़ा पहुँचाता है ।
योयोति, योयवीति—	” ” मिलाता या अलग करता है ।	तोथोर्ति—	” ” ” ”
नोनवीति, नोनोति—	” ” नमस्कार या प्रशंसा करता है ।	दोधोर्ति—	” ” ” ”
जाहेति, जाहाति—	” ” जाता या छोड़ता है ।	दोदोर्ति—	” ” ” ”
सास्वपीति, सास्वप्ति—	” ” सोता है ।	मोमोर्ति—	” ” ” ”
वर्वतीति, वरिवृतीति, वरीवृतीति,		वेवीयते—	” ” जाता, दीड़ता या निन्दा करता है ।

इति यङ्लुक्प्रकरणम् ।

अथ नामधातु-प्रकरणम्

पुत्रीयति—	वह अपना पुत्र चाहता है ।
गव्यति—	वह अपनी गाय ”
नान्यति—	वह ” नाव ”
राजीयति—	वह अपना राजा ”

स्वयति—	वह तुमको चाहता है ।
मद्यति—	” मुझको ”
युष्मद्यति—	” तुम लोगों को ”
अस्मद्यति—	” हम लोगों को ”

गीर्यति — वह वाणी चाहता है ।

पूर्यति— „ नगर „

दिव्यति— „ स्वर्ग चाहता है ।

अदस्यति— „ इसको „

कर्त्रायति— „ कर्ता „

गार्गायति— „ गार्ग्य „

कवीयति— „ कवि „

वाच्यति— „ वाणी „

समिध्यति— „ समिधा „

किमिच्छति— „ क्या „

इदमिच्छति— „ यह „

स्वरिच्छति— „ स्वर्ग „

अशनायति— „ भोजन „

उदन्यति— „ जल „

धनायति— „ धन „

अशनीयति— „ भोजन „

उदकीयति— „ जल „

धनीयति— „ धन „

अश्वस्यति बद्ध्वा—घोड़ी घोड़ा चाहती है ।

वृषस्यति गौः—गाय बैल चाहती है ।

धीरस्यति बालः—बालक दूध चाहता है ।

लघणस्यति उष्ट्रः—ऊँट नमक चाहता है ।

दधिस्यति, दध्यस्यति—वह दही चाहता है ।

मधुस्यति, मज्जस्यति— „ मधु „

पुत्रकाम्यति—वह अपना पुत्र चाहता है ।

यशस्काम्यति— „ „ यश „

सर्पिष्काम्यति— „ „ धी „

किङ्काम्यति— „ क्या „

स्वःकाम्यति— „ स्वर्ग चाहता है ।

पुत्रीयति छात्रम्—वह छात्र के साथ पुत्र की तरह

व्यवहार करता है ।

विष्णूयति द्विजम् — „ ब्राह्मण के साथ विष्णु की तरह

व्यवहार करता है ।

प्रासादीयति कुम्भां मिश्रुः—मिश्रुक झोपड़ी में महल की

तरह रहता है ।

कुटीयति प्रासादे राजा—राजा महल में झोपड़ी की तरह रहता है ।

कृष्णायते—काला करता है या कृष्ण की तरह व्यवहार करता है ।

ओजायते—वह शक्तिशाली की तरह व्यवहार करता है ।

अप्सरायते—वह अप्सरा की तरह व्यवहार करती है ।

यशायते, यशस्यते—वह यशस्वी की तरह आचरण करता है ।

विद्वायते, विद्वस्यते—वह विद्वान् की तरह आचरण करता है ।

स्वद्यते— „ तुम्हारी „ „

मधत्ते— „ मेरी „ „

युष्मद्यते „ तुम लोगों „ „

अस्म द्यते— „ हम लोगों „ „

कुमारायते— „ कुमारी की तरह आचरण करती है ।

हरितायते— „ हरिणी की „

गुरुयते— „ स्त्री गुरु „ करता है ।

सपत्नायते, सपत्नीयते, सपत्नीयते—वह सपत्नी की तरह आचरण करती है ।

युवायते—वह युवती की तरह आचरण करता है ।

पद्वीश्वयते—वह दक्षा या सुकुमार स्त्री की तरह आचरण करता है ।

पाचिकायते—वह रसोद्भ्यादारिन की तरह आचरण करता है ।

अवगल्भते—ठीठ व्यक्ति की तरह आचरण करता है ।

क्लीबते— „ व्यापार „ „

होदते— „ अनादर करने वाले की तरह „

कृष्णति— „ कृष्ण की तरह आचरण करता है ।

अति— „ अ (विष्णु) की तरह „

मालाति— „ माला की तरह „

कवयति— „ कवि की तरह „

वयति— „ पत्नी की तरह „

अयति— „ लक्ष्मी की तरह „

पितरति— „ पिता की तरह „

मवति— „ पृथ्वी या प्राणी „

द्रवति— „ वृक्ष की तरह „

इदामति— „ इस तरह „

राजानति—वह राजा की तरह आचरण करता है ।
 पथोनति—,, मार्ग की तरह ,,
 मथीनति—,, मन्थन दण्ड की तरह ,,
 ऋभुकीणति—वह इन्द्र की तरह ,,
 देवति, यवति—,, स्वर्ग ,,
 कति—ग्रहा, क (जल) की ,,
 स्वति—वह अपनी तरह आचरण करता है ।
 भृशायते—वह (थोड़े से) अधिक होता है ।
 सुमनायते—वह उदार होता है ।
 उन्मनायते—वह उदास होता है ।
 ओवायित्वा—ढोये हुए की तरह आचरण करके ।
 औस्त्रीयत्—उसने एक गाय चाही ।
 औकारीयत्—उसने ओंकार चाहा ।
 औढोयत्—उसने ढोने वाले को चाहा ।
 लोहितायति, लोहितायते—वह लाल होता है ।
 पटपटायति, पटपटायते—वह पट पट शब्द करता है ।
 श्यामायते—वह काला होता है ।
 लोहिनीयति, लोहिनीयते—वह लाल होती है ।
 कष्टायते—वह कष्ट (पाप) करने में प्रवृत्त होता है ।
 सत्रायते—वह पाप करना चाहता है ।
 कक्षायते—,,
 रोमन्थायते—पगुरी, जुगाली करता है ।
 कीटो रोमन्थं वर्तयति—कीड़ा निकले हुए मल की गोली बनाता है ।
 तपस्यति—तप करता है ।
 वाष्पायते—आँसू बहाता है ।
 ऊष्मायते—भाप निकालता है ।
 फेनायते—फेन निकालता है ।
 शब्दायते, शब्दयति—शब्द करता है ।
 सुदिनायते—अच्छा दिन करता है ।
 सुखायते—सुखी होता है, सुख का अनुभव करता है ।
 दुःखायते—दुःखी होता है, दुःख का अनुभव करता है ।
 परस्य सुखं वेदेयते—दूसरे के सुख को जानता है ।
 नमस्यति देवान्—देवों को नमस्कार करता है ।
 वरिवस्यति गुरुन्—गुरुजनों का आदर या सेवा करता है ।
 चित्रीयते—चकित करता है ।

उत्पुच्छयते—पूँछ उठता है ।
 विपुच्छयते—पूँछ इधर उधर करता या हिलाता है ।
 परिपुच्छयते—पूँछ चारों तरफ करता या हिलाता है ।
 संमाण्डयते—वह वर्तनों को इकट्ठा करता है ।
 सञ्जीवरयते—वह चियड़ा इकट्ठा करता या पहिनता है ।
 मुण्डयति—वह बाल बनाता है ।
 पयोव्रतयति—वह दुग्धाहार करता है ।
 शूद्रान्नं व्रतयति—वह शूद्रान्न का त्याग करता है ।
 संवस्त्रयति—वह वस्त्र पहिनता है ।
 हल्ययति ३-१-२१—वह बड़े हल का प्रयोग करता है ।
 कल्यति—वह पासे का प्रयोग करता है अथवा कलह करता है ।
 कृतयति—वह उपकार मानता है ।
 वितृस्तयति—वह बालों को अथवा जटा को कंधी से साफ करता है अथवा पाप से मुक्त होता है ।
 सुयडयति माणवकम्—वह लड़के को मूँड़ता है ।
 मिश्रयत्यन्नम्—वह अन्न (भोजन) को मिलाता है ।
 श्लक्ष्णयति वस्त्रम्—वह वस्त्रको चिकना करता है ।
 लवणयति व्यञ्जनम्—वह मसाले में नमक डालता है ।
 सत्थापयति—वह साईं लेता है ।
 अर्थापयति—धन की तरह व्यवहार करता है, अर्थात् सावधानी से छिपाता है ।
 वेदापयति—वह वेद पढ़ाता या वेद का ज्ञान कराता है ।
 विपाशयति—वह पाश से मुक्त करता है या पाश ढीला करता है ।
 रूपयति—रूप या आकार या कोई वस्तु देखता है ।
 उपवीणयति—वीणा के साथ गाता है ।
 अनुतूलयति—बुश (कुँची) से साफ करता है ।
 उपश्लोकयति—श्लोकों से प्रशंसा करता है ।
 अभिपेणयति—सेना के साथ चढ़ाई करता है ।
 अनुलोमयति—रोएँ साफ करता है ।
 त्वचयति—त्वचा निकालता है ।
 सञ्जर्मयति—चमड़े से बाँधता है या मढ़ता है ।
 वर्णयति—रंग लेता है ।
 अवचूर्णयति—आटे या धूल से ढाँकता है ।
 एतयति—मृगी कहता है ।

दारदयति—दरद कहता है ।
 प्रथयति—पृथु (स्थूल) करता या कहता है ।
 भ्रदयति—मृदु (कोमल) „ „
 अशयति—भृश (अधिक) „ „
 क्रशयति—कृश (दुर्बल) „ „
 द्रढयति—दृढ़ (मजबूत) „ „
 परिघ्रढयति—दृढ़ (मजबूत) या स्वामी की व्याख्या करता
 या कहता है ।

औजिडत्, औजडत्—विवाहित किया या कहा ।
 औडडत्— „ „
 स्वापयति—अपना बनाता है ।
 त्वापयति—तुम्हारा बनाता है ।
 मापयति—मेरा बनाता है ।
 त्वादयति—तुम्हारा बनाता है ।
 मादयति—मेरा बनाता है ।
 युष्मयति—तुम दोनों का बनाता है ।
 अस्मयति—हम दोनों का बनाता है ।
 शांवयति, शुनयति—कुत्ता कहता या बनाता है ।
 विद्वयति, विदयति—विद्वान् कहता या बनाता है ।
 उदीचयति—उत्तर की व्याख्या करता या कहता है ।
 प्रतीचयति—पश्चिम की व्याख्या करता या कहता है ।
 समीचयति—साथ जाने वाले की व्याख्या करता या कहता है ।
 तिराययति—पत्तियों की व्याख्या करता या कहता है ।
 सभाययति—मित्र की व्याख्या करता या कहता है ।
 अविष्विष्वद्रायत्—सर्वव्यापक की व्याख्या किया या कहा ।
 अदिदेवद्रायत्—देव भक्तों की व्याख्या किया या कहा ।
 आदद्रायत्—उस ओर जाने वाले अथवा उसपर आसक्त
 की व्याख्या किया है ।
 आदमुआययति, अमुमुआययति—उस ओर जाने वाले की
 व्याख्या करता है ।

इति नामधातुप्रकरणम् ।

अथ कण्वादिप्रकरणम्

कण्दयति, कण्दयते—खुजलाता है ।
 मन्तयति, मन्तयते—क्रोध या अपराध करता है ।

मावयति—पृथ्वी कहता है या पृथ्वी की व्याख्या करता है ।
 अवयति—भौह कहता है या भौह की व्याख्या करता है ।
 आययति—लक्ष्मी कहता या व्याख्या करता है ।
 अजूगवत्—गाय की व्याख्या की या गाय कहा ।
 अरीरयत्—घन की व्याख्या की या घन कहा ।
 अनूनवत्—नाव की व्याख्या की या नाव कहा ।
 स्वाशश्वत्—सुन्दर घोड़े वाले की व्याख्या की या कहा ।
 स्वयति—स्वर्ग कहता या स्वर्ग की व्याख्या करता है ।
 भावयति—बहुत्व की व्याख्या करता या कहता है ।
 स्रजयति—मालावाले को बुलाता है ।
 श्रययति—लक्ष्मी वाले को बुलाता है ।
 पयसयति—दूधवाली गाय को बुलाता है ।
 स्थवयति—स्थूल कहता है या स्थूल की व्याख्या करता है ।
 दवयति—दूर कहता है या दूर की „ „
 यवयति—युवक कहता है या युवक की „ „
 कनयति—छोटा „ छोटे की „ „
 नेदयति—समीप „ समीप „ „
 साधयति—ठीक „ ठीक „ „
 प्रशस्ययति—प्रशंसनीय,, प्रशंसनीय „ „
 ज्यापयति—बड़ा „ बड़े की „ „
 बंहयति—अधिक „ अधिक „ „
 प्रापयति—प्रिय „ प्रिय „ „
 स्थापयति—स्थिर „ स्थिर „ „
 स्फापयति—अधिक „ अधिक „ „
 गरयति—गुरु „ गुरु „ „
 वर्धयति—बड़ा „ बड़ा „ „
 त्रापयति, मापयति—शीघ्र,, शीघ्र „ „
 द्राघयति—लम्बा „ लम्बे „ „
 वृन्दयति—देवता „ देवता „ „

बल्ययति—प्रशंसा या आदर करता है । सुन्दर या सुकुमार
 होता है ।

अस्यति, असूयति, असूयते—डाह करता है ।
 लोटयति, लोटयति—घोखा देता, प्रथम आता, सोता या चमकता है ।
 हरस्यति, हरज्यति—डाह करता, अशिष्टता से व्यवहार करता है ।
 ईर्यति, ईर्यते—यात्रा समाप्त करता है ।
 मेधायति—शीघ्र समझता है ।
 कुपुभ्यति—फेंकता है, गाली देता है, घृणा करता है ।
 सुख्यति—सुख का अनुभव करता है ।
 दुःख्यति—दुःख का अनुभव करता है ।
 मगध्—घेरना ।
 तन्वत्स्, पम्पस्—दुःखी होना ।
 सपर्—पूजा करना ।
 अरर्—आराधना ।
 मिषज्—दवा करना, चिकित्सा करना ।
 मिष्णज्—सेवा करना, पूजा करना, आदर करना, अभ्यास करना, अनुसरण करना ।
 इषुध्—वाण रखना, प्रार्थना करना, माँगना, चाहना ।
 खरण्, खरण्—जाना ।
 खरण्—बुराना ।

तुरण्—शीघ्रता करना ।
 भुरण्—धारण करना, सहारा देना ।
 गद्गद्—जवान लड़खड़ाना ।
 प्ला, केला, खेला, इल्—क्रीड़ा करना ।
 लेखा—लड़खड़ाना ।
 लिट् छोटा होना, निन्दा करना ।
 लाट्—जीवित रहना ।
 हणीङ्—क्रुद्ध होना, लज्जित होना ।
 महीङ्—पूजित या आदृत होना ।
 रेखा—प्रवांसा करना, प्राप्त करना, चापलूसी करना, कष्ट देना ।
 द्रवस्—कष्ट देना, सेवा करना, प्रतीक्षा करना ।
 तिरस्—लुप्त होना ।
 अगद्—रोग मुक्त होना ।
 उरस्—बलवान् होना ।
 तरण्—जाना ।
 पयस्—बहना ।
 संभूयस्—अधिक होना ।
 अंवर, संवर—एक साथ लाना, इकट्ठा करना ।

इति कण्ठ्वादिप्रकरणम् ;

अथ प्रत्ययमालाप्रकरणम्

कण्ठ्ययिषति—खुजलाना चाहता है ।
 पुपुत्रोयिषति, पुतित्रोयिषति—पुत्रवान् होना चाहता है ।
 अशिङ्घोयिषति, अङ्घोयिषति—घोड़ा वाला होना चाहता है ।
 इन्द्रिद्रोयिषति, इन्द्रोयिषति—इन्द्रियवान् होना चाहता है ।
 चिचन्द्रोयिषति, चन्द्रोयिषति, चन्द्रोयिषति—चन्द्रवान् होना चाहता है ।

पिप्रापयिषति, प्रापयिषति, प्रापयिषति—प्रिय कहने के लिए प्रेरित करना चाहता है ।
 विवारयिषति, वारिरयिषति, वारयिषति—उर कहने के लिए प्रेरित करना चाहता है ।
 बोभूयिषति, बोभूययिषति—बार-बार होने के लिए प्रेरित करना चाहता है ।

इति प्रत्ययमालाप्रकरणम् ।

अथ आत्मनेनपद-प्रकरणम्

आस्ते १-३-१२—बैठता हैं ।

शेते ,, सोता या लेटता है ।

बभूवे १-३-१३—हुआ ।

अनुबभूवे ,, अनुभव किया गया ।

व्यतिलुनीते १-३-१४—दूसरे के काटने योग्य (लकड़ी) को स्वयं काटता है ।

व्यतिस्ते ,, दूसरे के स्थान पर वह स्वयं बैठा है ।

व्यतिराते ,, दूसरे के स्थान पर वह स्वयं देता है ।

व्यतिमाते ,, दूसरे के स्थान पर वह स्वयं नापता है ।

व्यतिगच्छन्ति १-३-१५—वे एक दूसरे के विरुद्ध जाते हैं ।

व्यतिघ्नन्ति ,, वे एक दूसरे को मारते हैं ।

व्यतिहसन्ति ,, वे एक दूसरे को हँसते हैं ।

व्यतिजल्पन्ति ,, वे एक दूसरे को बकते हैं ।

संप्रहरन्ते राजानः ,, राजा लोग परस्पर प्रहार करते हैं ।

इतरेतरस्यान्योन्यस्य परस्परस्य वा

व्यतिलुनन्ति १-३-१६—वे हर एक को, एक दूसरे को या परस्पर काटते हैं ।

निविशते १-३-१७—वह भीतर प्रवेश करता है ।

परिक्रीणीते १-३-१८—खरीदता है ।

विक्रीणीते ,, बेचता है ।

अवक्रीणीते ,, खरीदता है ।

विजयते १-३-१९—जीतता है ।

पराजयते ,, जीतता है ।

विद्यामादत्ते १-३-२०—वह विद्या ग्रहण करता है ।

मुखं न्याददाति ,, वह मुँह खोलता है ।

विपादिकां न्याददाति ,, वह बिबाई को खोलता है ।

नदी कूलं न्याददाति ,, नदी तट को तोड़ती है ।

न्याददते पिपीलिकाः पतङ्गस्य मुखम् १-३-२०—चीटियाँ पतङ्ग के मुँह को खोलती हैं ।

अनुक्रीडते १-३-२१—वह खेलता है ।

संक्रीडते ,, वह एक साथ खेलता है ।

परिक्रीडते ,, खेलता है ।

न्याक्रीडते ,, खेलता है ।

माणवक्रमनुक्रीडति ,, बालक के साथ खेलता है ।

संक्रीडति चक्रम् ,, पहिया चरचराता है ।

आगमयस्व तावत् ,, तबतक प्रतीक्षा करो ।

धनुषि शिष्यते ,, धनुर्विद्या में अन्वेषण करता है ।

सर्पिषो नाथते ,, धी पाने के लिए आशीर्ष देता है ।

पैतृकमश्वा अनुहरन्ते ,, घोड़े अपने बाप के अनुहार होते हैं ।

मातृकं गावः ,, बैल अपनी माँ के अनुहार होते हैं ।

मातुरनुहरति ,, माता से मिलता जुलता है ।

अपरिकरते वृषो दृष्टः ६-१-४२—बैल हर्ष के कारण पृथ्वी खोदता है ।

,, कुक्कुटो भक्षार्थी ,, मुर्गा भोजन के लिए पृथ्वी कुरेदता है ।

,, श्वा आश्रयार्थी ,, कुत्ता बैठने के लिए पृथ्वी खुरचता है ।

अपकिरति कुसुमम् ,, वह फूल बिखेरता है ।

गजोपकिरति ,, हाथी घूल उड़ाता है ।

आनुते ,, बोलता है ।

आपृच्छते ,, प्रश्न करता है ।

कृष्णाय शपते ,, कृष्ण को बुरा भला कहता है ।

संतिष्ठते १-३-२२—साथ ठहरता है । समाप्त होता है (बाल० मनो०) ।

अवतिष्ठते ,, शान्ति से प्रतीक्षा करता है ।

प्रतिष्ठते ,, प्रस्थान करता है ।

वित्तिष्ठते १-३-२२—अलग खड़ा होता है ।

शब्दं नित्यमातिष्ठते ,, शब्द को नित्य जानता है ।

गोपी कृष्णाय तिष्ठते १-३-२३—गोपी कृष्ण से अपनी इच्छा प्रकट करती है ।

संशय्य कर्णादिषु तिष्ठते यः ,, जो (दुर्योधन) सन्देह के समय कर्ण आदि को निर्णायक मानता है ।

मुक्ताबुत्तिष्ठते १-३-२४—मुक्ति के लिए प्रयत्न करता है ।

पीठाबुत्तिष्ठति ,, आसन से उठता है ।

ग्रामाच्छतमुत्तिष्ठति ,, गाँव से सो रुपया प्राप्त होता है ।

आग्नेय्या आग्नीध्रमुपतिष्ठते १-३-२५—आग्नेयी ऋचाओं से आग्नीध्र अग्नि की स्तुति करता है ।

मर्तारमुपतिष्ठति यौवनेन ,, युवावस्था के कारण पति के पास जाता है ।

आदित्यमुपतिष्ठते ,, आदित्य की उपासना करता है ।

गङ्गा यमुनामुपतिष्ठते ,, गंगा यमुना में मिलती है ।

रथिकानुपतिष्ठते ,, रथिकों का संघ बनाता है ।

पन्थाः स्नुध्नमुपतिष्ठते ,, मार्ग स्नुध्न जाता है ।

मिक्षुकः प्रसुमुपतिष्ठते, उपतिष्ठति वा—मिक्षुक कुछ पाने की आशा से घनिक मालिक के घर उपस्थित होता है ।

भोजनकाले उपतिष्ठते १-३-२६—भोजन के समय उपस्थित हो जाता है ।

उत्तपते, वितपते १-३-२७—चमक जाता है ।

उत्तपते, वितपते पाणिम् ,, हाथ को गर्म करता है ।

सुवर्णमुत्तपति ,, सोने को तपाता है ।

चैत्रो मैत्रस्य पाणिमुत्तपति ,, चैत्र मैत्र के हाथ को गर्म करता है ।

आयच्छते १-३-२८—फैलाता या फैलता है ।

आहते ,, मारता है ।

परस्य शिर आहन्ति ,, दूसरे के शिर पर प्रहार करता है ।

आवधिष्ट २-४-४४—मारा ।

आहत १-२-१४—मारा ।

उदायत १-२-१५—प्रकाशित कर दिया, सूचित कर दिया ।

उदायंस्त पादम् ,, पैर को उठाया ।

संगच्छते १-३-३९—मिलता है ।

समृच्छते १-२-१३—एकत्र करता है ।

ग्रामं संगच्छति ,, गाँव जाता है ।

संविचे ७-१-७—जानता है ।

संविद्वते ,, जानते हैं ।

सम्पृच्छते ,, पूछता है ।

संस्वरते ,, दोष लगाता है ।

मासमृत ,, मत जाओ ।

संश्रुते ,, ध्यान से सुनता है ।

सम्पश्यते ,, ध्यान से देखता या विचार करता है ।

वहतिभारम् ,, बोझा होता है ।

नदी वहति ,, नदी वहती है ।

जोवनि ,, जोता है ।

नृत्यति ,, नाचता है ।

मेवो वर्षति ,, मेघ बरसता है ।

हितान्न यः संश्रुते स किंप्रभुः ७-१-७—जो हितैषियों की (सलाह) नहीं

सुनता, वह बुरा स्वामी है ।

बन्धं निरस्यति, निरस्यते ,, बन्धन को फेंकता है ।

समूहति, समूहते ,, अच्छी तरह विचार करता है, एकत्र करता है ।

प्रह्य समुह्यात् ७-४-२३—ब्रह्म का अच्छी तरह विचार करना चाहिये ।

अग्निं समुह्य ,, अग्नि को अच्छी तरह एकत्र कर, जलाकर ।

निह्वयते १-३-३०—ललकारता है ।

कृष्णश्वाणूरमाह्वयते १-३-३१—कृष्ण चाणूर को ललकारता है ।

पुत्रमाह्वयति—१-३-३१—पुत्रको बुलाता है।

उत्क्रुस्ते १-३-३२—हानि पहुँचाने के लिए सूचना देता है।

इयेनोवर्तिका—

मुदाक्रुस्ते ,, वाज बटेर को बुरा भला कहता है।

हरिसुपक्रुस्ते ,, हरि की सेवा करता है।

परदारान्प्रक्रुस्ते ,, परस्त्री को अपने अधिकार में करता है, दूषित करता है।

एधोदकस्योपक्रुस्ते ,, ईधन जल में नया गुण उत्पन्न करता है, उवालता है।

ईधन जल के नये गुण को ग्रहण करता है, गीला करता है।

गाथाः प्रक्रुस्ते ,, कहानी, कथा कहता है।

शतं प्रक्रुस्ते ,, सौ रुपये दान देता है।

कटं करोति ,, चटाई बनाता है।

शत्रुमधिक्रुस्ते १-३-३३—शत्रु को क्षमा करता या जीतता है।

स्वरान्विक्रुस्ते १-३-३४—स्वरों का उच्चारण करता है।

चित्तं विकरोति कामः ,, काम चित्त में विकार उत्पन्न करता है।

छात्रा विकुर्वते १-३-३५—विद्यार्थी इच्छानुसार काम करते या इधर उधर घूमते हैं।

शास्त्रे नयते १-३-३६—शास्त्र के सिद्धान्त की शिक्षा देता है।

दण्डमुल्लयते ,, लाठी उठाता है।

माणवकमुपनयते ,, बालक को दीक्षा देता है।

तत्त्वं नयते ,, तत्त्व का वर्णन करता है।

कर्मकरानुपनयते ,, मजदूरों को मजदूरी पर काम में लगाता है।

करं विनयते ,, कर (टैक्स) देता है।

शतं विनयते ,, सौ रुपये दान देता है।

क्रोधं विनयते १-३-३७—क्रोध दवाता है।

गड्ढं विनयति ,, गर्दन मोड़ता है।

अचि क्रमते बुद्धिः १-३-३८—उसकी बुद्धि ऋग्वेद में काम करती है।

अध्ययनाय क्रमते ,, अध्ययन के लिए उत्साहित होता है।

क्रमन्ते ऽस्मिन् शास्त्राणि १-३-३८—शास्त्र इसमें बढ़ते हैं, प्रकाशित होते हैं।

उपक्रमते १-३-३९—बढ़ना प्रारम्भ करता है।

पराक्रमते ,, आक्रमण करने के लिए बढ़ता है।

संक्रामति ,, उन्नति करता है।

आक्रमते सूर्यः १-३-४०—सूर्य निकलता है।

आक्रामति धूमो हर्म्यतलात् ,, छत से धुआँ निकलता है।

साधु विक्रमते वाजी १-३-४१—घोड़ा अच्छी तरह दौड़ता है।

विक्रामति सन्धिः ,, जोड़ खुलता है, अलग होता है।

प्रक्रमते १-३-४२—प्रारम्भ करता है।

उपक्रमते ,, प्रारम्भ करता है।

प्रक्रामति ,, जाता है।

उपक्रामति ,, आता है।

क्रामति, क्रमते १-३-४३—जाता है।

शतमपजानीते १-३-४४—सौ रुपये के ऋण को मुकरता है।

सर्पिषो जानीते १-३-४५—बी से हवन करता है।

शतं सजानीते १-३-४६—सौ रूपयों की आशा करता है।

शतं प्रतिजानीते ,, सौ रूपयों की प्रतिज्ञा करता है।

मातरं मातुर्वा सजानीति ,, दुःख से माता की याद करता है।

शास्त्रो वदते १-३-४७—शास्त्र की व्याख्या करता है।

श्रुत्यानुपवदते ,, नौकरों को राजी करता है

सान्त्वना देता है।

शास्त्रे वदते ,, शास्त्र का ज्ञान प्राप्त करता है।

क्षेत्रे वदते ,, खेत में परिश्रम करता है।

क्षेत्रे विवदन्ते ,, खेत के विषयमें विवाद करते हैं।

उपवदते ,, चाटुकारी करता है। प्रशंसा करता है।

सम्प्रवदन्ते ब्राह्मणाः १-३-४८—ब्राह्मण एक साथ बोलते हैं।

सम्प्रवदन्ति खगाः ,, चिड़िया चहचहाती हैं (एक साथ)।

अनुवदते कठः कलापस्य १-३-४९—कठ शाखा का ब्राह्मण कलाप शाखा की नकल करता है।

उक्तमनुवदति—१-३-४९—कहे हुए को दोहराता है।
 अनुवदतिवीणा ,, वीणा बजती है।
 विप्रवदन्ते,
 विप्रवदन्ति वा वैद्याः १-३-५०—वैद्यों की भिन्न भिन्न
 राय है, ऐकमत्य नहीं है।
 अवगिरते १-३-५१—निगलता है।
 शब्दं नित्यं संगिरन्ते १-३-५२—शब्द को नित्य मानता है
 संगिरति प्रासम् ,, प्रास को निगलता है।
 धर्ममुच्चरते १-३-५३—धर्म या कर्तव्य से विमुख होता है।
 वाष्पमुच्चरति ,, भाप ऊपर उठता है।
 रथेन सञ्चरते १-३-५४—रथ से जाता है।
 दास्या संयच्छते १-३-५५—दासी को (धन) देता है।
 रथेन समुदाचरते ,, रथ पर चलता है।
 दास्या संप्रयच्छते ,, दासी को (धन) देता है।
 भार्यामुपयच्छते १-३-५६—पत्नी को स्वीकार करता
 या जानता है, पत्नी से
 व्याह करता है।
 रामः सीतामुपायत, उपायंस्त वा १-२-१६—रामने सीता
 को व्याहा।
 धर्मं जिज्ञासते १-३-५७—धर्म जानना चाहता है।
 शुश्रूषते ,, ,, सेवा करना चाहता है।
 सुस्मर्यते ,, ,, स्मरण करना चाहता है।
 दिदृक्षते ,, ,, देखना चाहता है।
 पुत्रमनुजिज्ञासति १-३-५८—पुत्र के विषय में जानना
 चाहता है।
 सर्पिषोनुजिज्ञासते ,, धी से हवन करना चाहता
 है।
 प्रतिशुश्रूषति, आशुश्रूषति १-२-५९ प्रतिज्ञा करना चाहता
 है।
 देवदत्तं प्रतिशुश्रूषते ,, देवदत्त से प्रतिज्ञा
 करना चाहता है।
 एदिधिषते १-३-६२—उन्नति करना चाहता है।
 शिशयिषते ,, सोना या लेटना चाहता है।
 निविविधते ,, घुसना चाहता है।
 बुभूषति ,, होना चाहता है।
 शिशत्सति ,, लेटना चाहता है।

मुर्मूर्षति ,, मरना चाहता है।
 एधाञ्चक्रे १-३-६३—उन्नति किया, बढ़ा।
 प्रयुङ्क्ते १-३-६४—प्रयोग करता है।
 उपयुङ्क्ते ,, उपयोग में लाता है।
 उद्युङ्क्ते ,, उद्योग, प्रयत्न करता है।
 नियुङ्क्ते ,, नियुक्त करता है।
 द्वन्द्वन्यञ्चि
 पात्राणि प्रयुनक्ति ,, यज्ञ में दो दो वार पात्रों को उलट
 कर प्रयोग करता है।
 संक्षुप्ते शस्त्रम् १-३-६५—शस्त्र को तीखा (तेज)
 करता है।
 ओदनं भुङ्क्ते १-३-६६—भात खाता है।
 बुभुजे पृथिवीपालः
 पृथिवीमेव केवलाम् ,, राजा ने केवल पृथ्वी का
 भोग किया।
 वृद्धोजनो—
 दुःखशतानि भुङ्क्ते ,, बुद्धे आदमी सैकड़ों प्रकार
 के दुःखों को भोगते हैं।
 सहीं भुनक्ति ,, पृथ्वी की रचा करता है।
 पश्यन्ति भवं भक्ताः १-३-६७—भक्त परब्रह्म को देखते
 हैं।
 दर्शयन्ति भवं भक्ताः ,, भक्त परब्रह्म को दिखा-
 ते हैं अर्थात् देखते हैं।
 दर्शयते भवः ,, परब्रह्म स्वयं दिखाई
 देता है।
 आरोहयते हस्ती ,, हाथी झुकता है।
 आरोहन्ति
 हस्तिनं हस्तिपकाः ,, महावत हाथी को झुकते
 हैं।
 आरोहति हस्ती ,, हाथी झुकता है।
 आरोहयन्ति ,, झुकते हैं।
 दर्शयति भवः ,, परब्रह्म स्वयं दीखता है।
 आरोहयति हस्ती ,, हाथी स्वयं झुकता है।
 दर्शयते ,, दीखता है।
 आरोहयते ,, झुकता है।

स्मरति वनगुल्मं कोकिलः १-३-६८—कोयल वनवृक्ष को
दुःख के साथ स्मरण
करती है ।
स्मरयति वनगुल्मः ,, वनवृक्ष स्वयं स्मरण
किया जाता है ।
माणवकं गर्धयते
वर्धयते वा १-३-६८, ६९—बालक को बोखा देता है ।
इवानं गर्धयति ,, कुत्ते को लालची बनाता है ।
अहिं वधयति ,, साँप से वधता है ।
पदं मिथ्या कारयते १-३-७१—बार बार शब्द का
अशुद्ध उच्चारण करता है ।
पदं सुष्ठु कारयति ,, शब्द का शुद्ध उच्चारण
करता है ।
सकृत्पदं मिथ्या कारयति ,, एक बार शब्द का अशुद्ध
उच्चारण करता है ।
यजते १-३-८२—अपने लिए यज्ञ करता है ।
सुनुते ,, अपने लिए सोम निचोड़ता है ।
ऋत्विजो यजन्ति ,, ऋत्विज् दूसरे के लिए यज्ञ करते हैं ।
सुन्वन्ति ,, दूसरे के लिए सोम निचोड़ते हैं ।
न्यायमपवदते १-३-७३—न्याय को त्यागता है ।
अपवदति ,, बुराभला कहता है ।
कारयते १-३-७४—अपने लिए वनवाता है ।

ब्रीहीन् संयच्छते १-३-७५—धान इकट्ठा करता है ।
भारमुद्यच्छते ,, बोझा उठाता है ।
वस्त्रमायच्छते ,, वस्त्र खींचता या निकालता है ।
उद्यच्छति वेदम् ,, वेद जानने के लिए प्रयत्न
करता है ।
ब्रीहीन् संयच्छति ,, दूसरों के लिए धान इकट्ठा
करता है ।
गा जानीते १-३-३६—अपनी गाय पहिचानता है ।
स्वर्गलोकं न प्रजानाति ,, स्वर्गलोक को नहीं जानता है ।
इत्थं नृपः पूर्व मवाबुलोचे
ततोऽनुजज्ञे गमनं सुतस्य—राजाने पहिले इस प्रकार सोचा
फिर पुत्र के जाने की अनुमति दी ।
स्वं यज्ञं यजति, यजतेवा १-३-७७—अपना यज्ञ करता है ।
स्वं कटं करोति कुल्ले वा ,, अपनी चटाई बनाता है
स्वं पुत्रमपवदति, अपवदते वा ,, अपने को बुरा भला
कहता है ।
स्वं यज्ञं कारयति, कारयते वा ,, अपना यज्ञ करता है ।
स्वं ब्रीहिं संयच्छति संयच्छते ,, अपना धान इकट्ठा
करता है ।
स्वां गां जानाति, जानीते वा ,, अपनी गाय को पहिचान-
ता है ।

इत्यात्मनेपदप्रकरणम्

अथ परस्मैपदप्रकरणम्

अस्ति १-३-७८—झाता है ।
अस्ति ,, है ।
अनुकरोति १-३-७९—नकल करता है ।
पराकरोति ,, अच्छी तरह करता है ।
अभिधिपति १-३-८०—ऊपर की ओर फेंकता है ।
प्रतिधिपति ,, उलटता या अस्वीकार करता है ।
अतिधिपति ,, बाहर फेंकता है ।
प्रवहति १-३-८१—बहता है ।

परिमृष्यति १-३-८२—सहता या क्रुद्ध होता है ।
विरमति १-३-८३—विश्राम करता है ।
उपरमति ,, प्रसन्न होता है ।
परिरमति ,, क्रोड़ा करता है ।
यज्ञदत्तमुपरमति १-३-८४—यज्ञदत्त को रुकवाता है ।
उपरमति, उपरमते वा-१-३-८५—रुकता है, बन्द
होता है ।
बोधयति पशम् १-३-८६—कमल को विकसित करता है ।

योषयति काष्ठानि १-३-८६—लकड़ियों को बजाता है ।
 नाशयति दुःखम् ,, दुःख को नष्ट करता है ।
 जनयति सुखम् ,, सुख उत्पन्न करता है ।
 अभ्यापयति ,, पढ़ाता है ।
 प्रावयति ,, प्राप्त कराता है ।
 द्रावयति ,, पिघलाता है ।
 स्त्रावयति ,, टपकाता है ।
 निगारयति १-३-८७—निगलवाता है ।
 आशयति ,, खिलाता है ।
 भोजयति ,, खिलाता है ।
 चलयति ,, चलाता या हिलाता है ।
 कम्पयति ,, हिलाता है ।
 आदयते देवदत्तेन ,, देवदत्त से खाया जाता है ।
 आदयत्यन्नं वटुना ,, बालक से अन्न खाया जाता है ।
 गोपी कृष्णं शाययति १-३-८८—गोपी कृष्ण को सुलाती है ।
 पाययते १-३-८९—पिलाता है ।
 दमयते ,, पालतू बनाता है ।
 आयामयते ,, लम्बा करता है ।
 आयासयते ,, कष्ट देता है ।

परिमोहयते १-३-८९—लुभाता या मोहित करता है ।
 रोचयते ,, रोचक बनाता है ।
 नर्तयते ,, नचाता है ।
 वादयते ,, बलवाता है ।
 वासयते ,, रहवाता है ।
 धापयेते शिशुमेकंसमीची ,, दो खरगोश एक बच्चे को पिलाती हैं ।
 वत्सान् पाययति पयः ,, बछड़ों को दूध पिलाता है ।
 दमयन्ती कभनीयतामदम् ,, रमणियों के सौंदर्य के मद को चूर चूर करती हुई ।
 मित्रां वासयति ,, भीख पर रहवाता है ।
 लोहितायति, लोहितायते १-३ ९०—लाल होता है ।
 अद्युत्त, अद्योतिष्ठ १-३ ९१—चमका ।
 वर्त्स्यति, वर्तिष्यते १-३-९२—रहेगा ।
 विवृत्सति, विवर्तिषते ,, रहना चाहता है ।
 कल्पता १-३-९३—योग्य होगा ।
 कल्पस्यति ,, योग्य होगा ।
 कल्पिष्यते, कल्पस्यते ,, योग्य होगा ।
 चिकल्पसति ,, योग्य होना चाहता है ।

इति परस्मैपदप्रकरणम्

अथ भावकर्मतिङ्प्रकरणम्

त्वया मया अन्यैश्च भूयते ४-१-६७—तुमसे मुझसे और दूसरों से हुआ जाता है ।

अनुभूयते आनन्दश्चैत्रेण

त्वया मया च २-१-६६—तुमसे मुझसे और चैत्र से आनन्द का अनुभव किया जाता है ।
 अर्थात् तुम, मैं और चैत्र आनन्द का अनुभव करते हैं ।

भाष्यते ,, हुआ जाता है ।
 बुभूष्यते ,, होने की इच्छा की जाती है ।
 बोभूयते ,, बारबार हुआ जाता है ।
 दृश्यते विष्णुः ,, विष्णु की स्तुति की जाती है ।

अर्थते २-१-६६—जाया जाता है ।
 स्मर्यते ,, स्मरण किया जाता है ।
 संस्क्रियते ,, संस्कार किया जाता है ।
 स्तस्यते ,, गिराया जाता है, खिसकाया जाता है ।
 शय्यते ,, सोया या लेटा जाता है ।
 तायते, तन्यते ६-४-४४—बढ़ाया या फैलाया जाता है ।
 जायते, जन्यते ६-४-४३—पैदा किया जाता है ।
 अन्वतप्त पापेन ३-१-६५—पापी द्वारा पश्चात्ताप किया गया ।
 दीयते ,, दिया जाता है ।

धीयते ३-१-६५—धारण किया या पकड़ा जाता है ।
 जगले ,, दुःखी हुआ, दुःख किया गया ।
 हन्यते ,, मारा जाता है ।
 गृह्यते ,, पकड़ा जाता या ग्रहण किया जाता है ।
 दृश्यते ,, देखा जाता है ।
 शम्यते मोहो मुकुन्देन—मुकुन्द द्वारा मोह दबाया जाता या दूर किया जाता है ।
 शंशम्यते ६-४-९३—बार बार दबाया जाता है ।
 दम्यते ,, शान्त किया या दमन किया जाता है ।
 अजागारि ,, जागा गया ।
 अमाजि, अमञ्जि ,, तोड़ा गया ।
 अलामि, अलम्भि—पाया गया ।

गौदुं ह्यते पथः—गाय से दूध दुहा जाता है ।
 अजा ग्रामं नीयते, हियते, कृष्यते, उह्यते वा—वकरी गाँव में ले जाई जाती है ।

बोध्यते माणवकं धर्मः
 माणवको धर्ममिति वा—बालक को धर्म समझाया जाता है ।
 भोज्यते माणवकमोदनम्, माणवक ओदनं वा—बालक को भात खिलाया जाता है ।
 देवदत्तो ग्रामं गम्यते—देवदत्त द्वारा गाँव जाया जाता है ।
 मासो मासे वा आस्यते देवदत्तेन—देवदत्त द्वारा महीने भर बैठा जाता है ।
 मासमास्यते माणवकः—बालक महीने भर बैठाया जाता है ।

इति भावकर्मतिङ्प्रकरणम्

अथ कर्मकर्तृतिङ्प्रकरणम्

साध्वसिच्छिनत्ति—तलवार अच्छा काटती है ।
 काष्ठानि पचन्ति—लकड़ी (ईंधन) पकाती है ।
 स्थास्त्री पचति—पतीली पकाती है ।
 पच्यते ओदनेन—चावल द्वारा पका जाता है अर्थात् चावल पकता है ।
 मिथ्यते काष्ठेन—लकड़ी द्वारा टूटा जाता है अर्थात् लकड़ी टूटती है ।
 पच्यते ओदनेन ३-१-८७—भात पकता है ।
 मिथ्यते काष्ठम्—लकड़ी टूटती है ।
 भेत्तव्यं कुसूलेन—कुसूल (कोठिला) को टूटना चाहिए ।
 गच्छति ग्रामः—गाँव जाता है ।
 आरोहति हस्ती—हाथी झुकता है ।
 अधिगच्छति शास्त्रार्थः स्मरति श्रद्धाति वा
 यत्कृपावशतस्तस्मै नमोऽस्तुगुरवे सदा—उस गुरुदेव को सदा नमस्कार है जिसकी कृपा से शास्त्रों का भाव

समझा जाता है, स्मरण किया जाता है तथा विश्वास होता है ।

करिष्यते घटः—घड़ा बनाया जायगा ।
 अन्योन्यं स्पृशतः—एक दूसरे को छूता है ।
 अजा ग्रामं नयति—वकरी गाँव जाती है ।
 गौः पयो दुग्धे ३-१-८९—गाय स्वयं दूध छोड़ती है ।
 अकारि, अकृत ३-१-६२—स्वयं बना ।
 अदोहि ३-१-६३—स्वयं दूध छोड़ा ।
 उदुम्बरः फलं पच्यते ,, गूलर का फल पकता है ।
 सृज्यते स्रजं भक्तः ,, भक्त माला बनाता है ।
 युज्यते ब्रह्मचारी योगम् ,, ब्रह्मचारी योग साधन करता है ।
 अलंकुरुते कन्या ,, कन्या अपने को सजाती है ।
 अवकिरते हस्ती ,, हाथी धूल उड़ाता है ।
 गिरते ,, निगलता है ।
 आद्रियते ,, आदर किया जाता है ।

चिकीर्षते कटः ३-१-६३—चटाई बनना चाहती है ।
 अवारुद्ध गौः ३-१-६४—गाय स्वयं रोकी गई ।
 अवारोधि गौर्गोपेन ,, गोप द्वारा गाय रोकी गई ।
 तप्यते तपस्तापसः ३-१-८८—तपस्वी तप करता है ।
 उत्तपति सुवर्णं सुवर्णकारः ,, सोनार सोना तपाता है ।
 प्रस्तुते ३-१-८९—टपकता है ।
 नमते दण्डः ,, लाठी झुकती है ।
 कारयते ,, कराता है ।
 उच्छ्रयते दण्डः ,, लाठी उठती है ।
 कारिष्यते ,, किया जायगा ।

उच्छ्रायिष्यते ,, उठाया जायगा ।
 ब्रूते कथा—कथा कही जाती है ।
 भारद्वाजीयाः पठन्ति—भारद्वाजीय पढ़ते हैं ।
 उपुच्छयते गौः—गाय पूँछ ऊपर उठाती है ।
 ग्रन्थति ग्रन्थम्—ग्रन्थ बनाता है ।
 ग्रन्थति मेखलां देवदत्तः—देवदत्त मेखला ढीली करता है ।
 विक्ष्वन्ते सैन्धवाः—घोड़े हिनहिनाते हैं ।
 कुप्यति कुप्यते वा पादः—पैर स्वयं खिंचता है ।
 रज्यति रज्यते वा वस्त्रम्—वस्त्र स्वयं रंगा जाता है ।
 कुष्णाति पादं देवदत्तः—देवदत्त पैर खुजलाता है ।

इति कर्मकर्तृतिङ्प्रकरणम्

अथ लकारार्थप्रकरणम्

स्मरसि कृष्ण गोकुले वत्स्यामः ३-२-११२—कृष्ण याद है ?
 हम लोग गोकुल में रहे थे ।
 बुध्यते, चेतयसे ३-२-११२—जानते हो ? स्मरण है ?
 अमिजानासि कृष्ण यद्वने
 अमुञ्महि ३-२-११३—कृष्ण, स्मरण करते हो हम
 लोगों ने वन में भोजन
 किया था ।

इति हाकरोच्चकार वा ३-२-११६—उसने “ह” (हाय)
 यह कहा ।
 शश्वदकरोच्चकार वा ,, उसने उसे बराबर कहा ।
 अगच्छत् किम्, जगाम किम् ३-२-११७—क्या अभी गया ।
 कंसं जघान किम् ,, क्या कृष्ण ने बहुत पहिले कंस
 को मारा था ।

स्मरसि कृष्ण वने वत्स्यामस्तत्र-
 गाश्चारयिष्यामः ३-२-११४—कृष्ण याद है जो हम लोग
 वनमें रहे और वहाँ गायों
 को चराया ।

यजतिस्म युधिष्ठिरः ३-२-११८—युधिष्ठिर ने यज्ञ किया ।
 एवं स्म पिता ब्रवीति ३-२-११९—पिता ने ऐसा कहा ।
 अकार्षीः किम् ३-२-१२०—क्या तुमने बनाया ?
 ननु करोमि भोः ,, हाँ मैंने बनाया ।
 अकार्षीः किम् ३-२-१२१—क्या तुमने बनाया ?
 नकरोमि, नाकार्षम् ,, नहीं मैंने नहीं बनाया ।
 अहं नु करोमि, अहंन्वकार्षम् ,, हाँ, यदि मैंने बनाया तो क्या
 हुआ ।

चकार ३-२-११५—किया ।
 सुप्तोऽहं किल विललाप ,, वास्तव में मैंने निद्रावस्था में
 वका शका ।

वसन्तीह पुरा छात्राः, अवात्सीः,
 ऊर्षुर्वा ३-२-१२२—यहाँ पहिले छात्र रहते थे ।

बहु जगद पुस्तात्तस्य मत्ता किलाहम् ,, मतवाली हुई मैंने
 उसके सामने बहुत कुछ
 वका शका ।

यजतिस्म पुरा ,, पहिले यज्ञ किया था ।

कलिङ्गेष्ववात्सीः ? ,, क्या तुम कलिंग में रहे ?
 नाहं कलिङ्गान् जगाम ,, मैं कलिंग जनपद गया भी
 नहीं, रहना तो दूर रहा ।

यावद्भुङ्क्ते ३-३-४—अवश्य खायगा ।
 पुरा भुङ्क्ते ,,

यावदास्यते तावदमोक्षयते—जब तक वह देगा तब तक
खायगा ।

पुरा यास्यति ,, नगर के साथ जायगा ।

कदा कर्हि वा मुञ्क्ते, मोक्षयते,

भोक्ता वा ३-३-५—कब खायगा ।

कं कतरंकतमं वा भोजयसि, भोजयिष्यसि,

भोजयितासि वा ३-३-६—तुम किसको, उन दोनों में
किसको, अथवा उन सब में
किसको खिलाओगे ?

कः पाटलिपुत्रं गमिष्यति ३-३-६—कौन पटना जायगा ।

योऽन्नं ददाति दास्यति दाता वा ३-३-७—जो अन्नदान करता है ।

स स्वर्गं याति, यास्यति, याता वा ,, वह स्वर्ग जाता है ।

कृष्णश्चेदमुञ्क्ते त्वं गाश्चारय ३-३-८—यदि कृष्ण खायेंगे
तो तुम गाओं को
चराओ ।

मुहूर्तादुपरि उपाध्यायश्चेदागच्छेत्

आगमिष्यति आगन्ता वा

त्वंछन्दोऽधीष्व ३-३-९—यदि आचार्य दो घड़ी (४५
मिनट) बाद आते हैं तो तुम
छन्दःशास्त्र पढ़ो ।

कदा आगतोसि ३-३-१३१—कब आये हो ?

अयमागच्छामि, अयमागमम्—अभी आता या आया हूँ ।

कदा गमिष्यति—कब जाओगे ।

एष गच्छामि, गमिष्यामि वा—अभी जाता हूँ या जाऊँगा ।

देवश्चेद्वर्षति, अवर्षात् वर्षिष्यति वा धान्यमवाप्सम,

वषामःवप्स्यामो वा ३-३-१३२—यदि वर्षा होती है, हुई
या होगी तो हम धान
बोयेंगे ।

वृष्टिश्चेत्क्षिप्रमाशुत्वरितं

वा यास्यति शीघ्रं वप्स्यामः ३-३-१३३—यदि शीघ्र वर्षा
होती है तो हम
शीघ्र बोयेंगे ।

इवः शीघ्रं वप्स्यामः—कल हम जल्दी बोयेंगे ।

गुरुश्चेदुपेयादाशंसोऽधीयीथ ३-३-१३४—यदि अध्यापक
आयेंगे मैं आशा करता
हूँ कि पढ़ूँगा ।

आशंसो क्षिप्रमधीयीथ ३-३-१३४—आशा करता हूँ शीघ्र
पढ़ूँगा ।

यावज्जीवमन्नमदादास्यति वा ३-३-१३४—जीवन पर्यन्त
अन्न दिया ।

येयं पौर्णमास्यतिक्रान्ता

तस्यामग्नीनाधित ,, जो यह पूर्णिमा व्यतीत
हुई उसमें अग्निस्थापन
किया ।

सोमेनायष्ट—सोम याग किया ।

योऽयमन्वा गन्तव्यः पाटलिपुत्रात्तस्य यद्वरं कौशाम्ब्या-

स्तत्र सक्तून्पास्यामः ३-३-१३६—कौशाम्बी नगर से पटना
जाने वाली सड़क के इस
तरफ हम लोग सक्तू
पीयेंगे ।

योऽयं वत्सर आगामी तस्य यद्वरमाग्रहायण्यास्तत्र-

युक्ता अध्येष्यामहे ३-३-१३७—आगामी वर्ष की अगहन
की पूर्णिमा के इस तरफ
हम लोग साथ साथ पढ़ेंगे ।

योऽयं संवत्सर आगामी तस्य यत्परमाग्रहाय-

ण्यास्तत्राध्येष्यामहे ३-३-१३८—आगामी वर्ष की अगहन
पूर्णिमा के उस तरफ
हम पढ़ेंगे ।

योऽपं मास आगामी तस्यऽवरः

पञ्चदशरात्रस्तत्राध्येतामहे ,, आगामी मास के
पक्ष के इस तरफ
पढ़ेंगे ।

सुवृष्टिश्चेदमविष्यत्तदा

सुभिन्नमभविष्यत् ३-३-१३८—यदि वर्षा अच्छी हुई होती
तो खूब अन्न हुआ होता ।

अपि जायां त्यजसि ३-३-१४२—धक्कार, तुमने अपनी
मार्या को छोड़ा, छोड़ते
हो या छोड़ोगे ।

जातु गणिकामाधरसे ,, क्या वेश्या रक्खोगे ।

कथं धर्मं त्यजेः त्यजसि वा ३-३-१४३—धर्म को कैसे
छोड़ते हो ?

कथं नाम तन्नमवान् धर्ममत्यक्ष्यत् ,, श्रीमान् ने धर्म को
क्यों छोड़ा ।

कः कतरः कतमो वा हरिं
निन्देत् निन्दिष्यति वा ३-३-१४४—कौन हरि की निन्दा
करेगा ।

न सम्भावयामि न मर्षये वा भवान् हरिं
निन्देत् निन्दिष्यति वा ३-३-१४५—मैं विश्वास नहीं करता
या मैं सह नहीं सकता कि
आप हरि की निन्दा करेंगे ।

नश्रद्धे न मर्षये वा किं किल त्वं
शूद्रान्नं मोक्षयसे ३-३-१४६—मैं विश्वास नहीं करता या
सहन नहीं कर सकता कि
तुम शूद्रान्न खाओगे ।

अस्ति भवति विद्यते
वा शूद्रो गमिष्यति ,, क्या यह सम्भव है कि आप
शूद्रा के पास जायेंगे ?

जातु यद्यदा यदि वा स्वादृशो हरिं निन्देन्नाव-
कल्पयामि न मर्षयामि ३-३-१४७—न तो मैं विश्वास
करता न सहन कर सकता हूँ
कि तुम्हारे समान व्यक्ति हरि की
निन्दा करने का साहस करे ।

यद्य यत्र वा त्वमेवं कुर्याः न श्रद्धे-
न मर्षयामि ३-३-१४८—न मैं विश्वास करता हूँ न सहन
कर सकता हूँ कि तुम ऐसा
करोगे ।

यद्य यत्र वा त्वं शूद्रं याजयेः,
अन्यार्यं तत् ३-३-१४९—तुम शूद्र को यज्ञ कराओ यह
अन्यार्य है ।

,, ,, आश्चर्यमेतत् ३-३-१५०—यह आश्चर्य
है ।

आश्चर्यमन्धो नाम कृष्णं
द्रक्ष्यति ३-३-१५१—अन्धा कृष्ण को देखता है यह
आश्चर्य है ।

आश्चर्यं यदि मूको नामाधीयीत ,, यह आश्चर्य है यदि गूंगा
पढ़ता है ।

उत अपि वा हन्यादधं हरिः ३-३-१५२—निःसंदेह भगवान्
पाप नष्ट करते हैं ।

उत दण्डः पतिष्यति ३-३-१५२—क्या लाठी गिरेगी ?
अपिधास्यति द्वारम् ,, दरवाजा बन्द करता
है ।

कामो मे भुञ्जीत भवान् ३-३-१५३—यह मेरी इच्छा है कि
आप भोजन करें ।

कच्चिजीवति ,, मैं आशा करता हूँ वह
जीवित है ।

अपिगिरिं शिरसा भिन्द्यात् ३-३-१५४—मैं आशा करता हूँ
वह सिर से पहाड़
को भी तोड़ देगा ।

अलं कृष्णो हस्तिनं हनिष्यति ,, कृष्ण हाथी को भी
मार सकेंगे ।

सम्भावयामि भुञ्जीत मोक्षयते
वा भवान् ३-३-१५५—मैं आशा करता हूँ आप भोजन
करेंगे ।

सम्भावयामि यद्भु-
जीथास्त्वम् ,, तुम भोजन करोगे ।

कृष्णं न मे द्येत्सुखं यायात् ३-३-१५६—यदि कृष्ण को नम-
स्कार करे तो वह सुख पायेगा ।

कृष्णं न संस्यति चेत्सुखं यास्यति ,, ,, करेगा , ,,
हन्तीति पलायते ,, वह मारता है इसलिए
वह भागता है ।

इच्छामि भुञ्जीत भुङ्क्तां
वा भवान् ३-३-१५७—मैं चाहता हूँ कि आप भोजन करें ।
इच्छन् करोति ,, चाहता हुआ वह करता है ।

भुञ्जीयेतीच्छति ३-३-१५९—वह चाहता है कि वह
भोजन करे ।

इच्छति, इच्छेत् ३-३-१६०—वह चाहता है ।
कामयेत्, कामयते ,, वह चाहता है ।
यजेत ,, उसे यज्ञ करना चाहिए
(विधि) ।

इह भुञ्जीत भवान् ,, आप यहाँ भोजन करें
(निमन्त्रण) ।

इहासीत ,, यहाँ बैठे (कहना) ।
पुत्रमध्यापयेद्भवान् ,, मैं प्रार्थना करता हूँ आप
मेरे पुत्र को पढ़ायें ।

किं भो वेदमधीयीत उत तर्कम् ३-३-१६०—क्या मैं वेद
पढ़ूँ या तर्कशास्त्र ।
भो भोजनं लभेय ॥ क्या मैं भोजन पा सकता हूँ
(प्रार्थना) ।
भवता यष्टव्यम् ३-३-१६३—आपको यज्ञ करना चाहिए ।
भवान् यजताम् ॥ आप यज्ञ करें ।
मुहूर्तादूर्ध्वं यजेत, यजताम्,
यष्टव्यं वा ३-३-१६४—एक घंटे बाद आप यज्ञ कर
सकते हैं, या आपको यज्ञ करना
चाहिए ।
ऊर्ध्वं मुहूर्ताद्यजतां स्म ॥ एक घंटे के बाद आप यज्ञ कर
सकते हैं या यज्ञ करना चाहिए ।
त्वं स्माध्यापय ३-३-१६६—मैं चाहता हूँ कि तुम पढ़ाओ ।
कालः समयो वेला वा यद्-
मुञ्जीत भवान् ३-३-१६८—यह समय है कि आप भोजन
करें ।
त्वं कन्यां वहेः ३-३-१६९—तुम कन्या का विवाह कर
सकते हो ।
भारं त्वं वहेः ३-३-१७२—तुम बोझा ढो सकते हो ।
मा कार्षीः ३-३-१७५—मत करो ।
कथं मा भवतु मा भविष्यतीति ॥ न हो, न होगा ।
वसन्तददर्श ३-४-१—रहते हुए देखा ।
सोमयाज्यस्य पुत्रो भविता ॥ उसे सोम यज्ञ करने वाला पुत्र
पैदा होगा ।
याहि याहीति याति ३-४-२—जाओ, जाओ, कहकर जाता
है अर्थात् निरन्तर जाता है ।

यातयातेति यूयं यात ३-४-२—जाओ जाओ कहकर जाते
हैं अर्थात् निरन्तर जाते हैं ।
अधीष्वाधीष्वेत्यधीते—वह बहुत पढ़ता है ।
अधीष्वमधीष्वमित्यूयमधीष्वम्—तुम लोग बहुत पढ़ते हो ।
सक्तून्पिब घानाः खादेत्यभ्यवहरति—वह सत्तू पीता है, लावा
खाता है इस प्रकार
खाता ही रहता है ।
अन्नं मुह्यस्व दाधिकमास्वा-
दयस्वेत्यभ्यवहरति—चावल खाओ दही-बड़ा खाओ इस
प्रकार वह खाता ही रहता है ।
पिबत खादतेत्यभ्यवहरति—पियो, खाओ इस प्रकार खाता
ही रहता है ।
मुह्यस्वमास्वादयध्वमित्यभ्यवहरध्वम्—खाओ, चखो, इस
प्रकार खाते ही रहते हो ।
सक्तून् पिबति—सत्तू पीता है ।
घानाः खादति—लावा खाता है ।
अन्नं मुह्यस्व—भात खाता है ।
दाधिकमास्वादयते—दही बड़े चखता है ।
पुरीमवस्कन्द लुनीहि नन्दनं मुषाण रत्नानि हरामराज्ञानाः ।
विगृह्य चक्रे नमुचिद्विषा बली य इत्थमस्वात्थ्यमहर्दिवं दिवः॥
उसने नगर को घेर लिया, नन्दन वन के वृक्षों को नष्ट-
भ्रष्ट कर डाला, रत्नों को लूट लिया, देवाङ्गनाओं का अप-
हरण कर लिया, इन्द्रशत्रु बलवान् उस रावण ने इन्द्र से
विरोधकर उपर्युक्त प्रकार से स्वर्ग में दिन रात खलबली
मचा दी ।

इति लकारार्थप्रकरणम्

अथ कृदन्तप्रकरणम्

पृथितव्यम्, पृथनीयं त्वया ३-१ ९६—तुमको बढ़ाना
चाहिए ।
चेतव्यश्चयनीयो वा धर्मस्त्वया ॥ तुमको धर्म का
संग्रह करना चाहिए ।

वास्तव्यः ३-१-९६—रहने वाला, निवासी ।
पचेलिमा माषाः, पक्तव्याः ॥ पकाने योग्य उड़द ।
मिदेलिमाः सरक्षाः, भेत्तव्याः ॥ काटने योग्य या तोड़ने
योग्य देवदार ।

प्रयाणीयम् ८-४-२९—जाने अथवा आक्रमण करने योग्य ।	चत्यम् ६-४-६५—माँगना चाहिए, माँगने योग्य ।
प्रमग्नः " डूबा हुआ ।	यत्यम् " प्रयत्न करना चाहिए, प्रयत्न करने योग्य ।
निर्विण्णः " दुःखी, उदास ।	जन्यम् " उत्पन्न करना चाहिए, उत्पन्न करने योग्य ।
प्रयापणीयम्, प्रयापनीयम् ८-४-३०—भेजे जाने योग्य ।	वध्यः, घाल्यः " मारना चाहिए, मारने योग्य ।
प्रयाप्यमाणम् पश्य " भेजे जाते हुए व्यक्ति को देखो ।	शप्यम् ३-१-९८—शाप देना चाहिए, शाप देने योग्य ।
दुर्यान्म् " बुरी तरह जाना ।	लग्नम् " प्राप्त करना चाहिए, प्राप्त करने योग्य ।
दुर्यापनम् " बुरी तरह भेजना ।	आलम्भ्यो गौः ७-१-६५—मारने योग्य बैल ।
प्रकोपीयम्, प्रकोपनीयम् ८-४-३१—क्रोध करने योग्य, क्रोध करना चाहिए	उपलम्भ्यः साधुः ७-१-६६—प्रशंसा के योग्य साधु ।
प्रोहणीयम् " अनुमान करना चाहिए ।	उपलम्भ्यः " प्राप्त करने योग्य ।
प्रघपणीयम् " बोना चाहिए ।	शक्यम् ३-१-९९—कर सकने योग्य ।
प्रेङ्खणीयम् ८-४-३२—हिलाना चाहिए, हिलाने योग्य ।	सह्यम् " सहने योग्य ।
प्रमङ्गनीयम् " खिसकना चाहिए, खिसकने योग्य ।	गद्यम् ३-१-१००—बोलने योग्य, गद्य ।
प्रेन्वनम् " भेजना ।	मद्यम् " नशा करने योग्य, शराब ।
प्रोम्भणम् " बाँधना ।	चर्यम् " करने योग्य ।
प्रणिसितव्यम्, प्रनिसितव्यम् ८-४-३३—चुम्बन करना चाहिए, चुम्बन करने योग्य ।	आचार्यो देशः " जाने योग्य देश ।
प्रमानीयम् ८-४-३४—चमकना चाहिए, चमकाने योग्य ।	आचार्यो गुरुः " शुश्रूषा के योग्य गुरु ।
प्रमवनीयम् " होना चाहिए, होने योग्य ।	प्रथाम्यम् " रोकने या शासन में रखने योग्य ।
प्रपवणीयः सोमः " सोम को शुद्ध करना चाहिए, शुद्ध करने योग्य ।	नियम्यम् " " " " ।
प्रमापनीयम् " चमकाना चाहिए, चमकाने योग्य ।	अवधं पापम् ३-१-१०१—न कहने योग्य (पाप) ।
प्रथ्यानीयम् " प्रसिद्ध करना चाहिए, प्रसिद्ध करने योग्य ।	अनुद्यं गुरुनाम " न उच्चारण करने या न कहने योग्य गुरु का नाम ।
स्नानीयं चूर्णम् ३-३-११३—जिससे स्नान किया जाय वह चूर्ण ।	पण्या गौः " बेचने योग्य गाय ।
दानीयो विप्रः " जिस ब्राह्मण को दान दिया जाय, दान देने योग्य ।	पाण्यम् " प्रशंसा के योग्य, प्रशंसनीय ।
चयम् ३-१-९७—संग्रह करना चाहिए, संग्रह करने योग्य ।	शतेन वर्या कन्या " सैकड़ों से विवाह करने योग्य कन्या ।
देयम् ६-४-६५—देना चाहिए, देने योग्य ।	वृत्त्यान्या " व्यक्ति विशेष से विवाह करने योग्य कन्या ।
जेयम् ३-१-९७—जीतना चाहिए, जीतने योग्य ।	वह्यम् ३-१-१०२—सवारी ।
ग्लेयम् ६-४-६५—खिन्न होना चाहिए, खिन्न होने योग्य ।	वाह्यम् " डोने योग्य अथवा जो ढो सके ।
तक्यम् " हँसना चाहिए, हँसने योग्य ।	दोढव्यम् " " " " " ।
शस्यम् " मारना चाहिए, मारने योग्य ।	अर्यः ३-१-१०३—स्वामी अथवा वैश्य ।
	आर्यः (ब्राह्मणः) " आदरणीय (ब्राह्मण) ।
	उपसर्या गौः ३-१-१०४—सांड़ के साथ संबन्ध करने योग्य गाय ।

उपसार्था काशी ३-१-१०४—जाने या पहुँचने योग्य काशी ।
 अजर्यम् ३-१-२०५ - जो जोर्ण होने योग्य न हो, नष्ट होने योग्य न हो, मित्रता ।
 अजरिता कम्बलः ,, कभी नष्ट न होने वाला कम्बल ।
 अजार्य संगतेन ,, मित्रता से जो नष्ट न हो ।
 ब्रह्मोद्यम्, ब्रह्मवद्यम् ३-१-१०६—ब्रह्म अथवा वेद, संबंधी चर्चा ।
 अनुवाद्यम् ,, अनुवाद करने योग्य ।
 अपवाद्यम् ,, निषेध करने योग्य ।
 ब्रह्मभूयम् ३-१-१०७—ब्रह्मत्व, ब्रह्मरूप ।
 मन्थम् ,, सुन्दर ।
 प्रमन्थम् ,, अधिक सुन्दर ।
 ब्रह्महत्या ३-१-१०८—ब्राह्मण का वध ।
 हृत्यः ३-१-१०९—जाने योग्य ।
 स्तुत्यः ,, प्रशंसा के योग्य ।
 शिष्यः ,, शिखा देने योग्य ।
 कृत्यः ,, वरण करने या चुनने योग्य ।
 वार्या ऋत्विजः ,, संग्रह करने योग्य ऋत्विज ।
 आहृत्यः ,, आदर करने योग्य ।
 जुष्यः ,, सेवा करने योग्य ।
 अवश्यस्तुत्यः ,, अवश्य प्रशंसनीय ।
 शस्यम्, शंस्यम् ,, प्रशंसनीय ।
 दुह्यम्, दोह्यम् ,, दुहने योग्य ।
 गुह्यम्, गोह्यम् ,, छिपाने योग्य ।
 आज्यम् ,, मलने योग्य ।
 वृष्यम् ३-१-११०—रहने योग्य ।
 वृध्यम् ,, बढ़ने योग्य ।
 कल्प्यम् ,, बनाने योग्य ।
 चर्त्यम् ३-१-११०—हानि पहुँचाने योग्य, कष्ट देने योग्य ।
 कीर्त्यम् ,, काटने योग्य ।
 खेयम् ३-१-१११—खोदने योग्य, खोदना चाहिए ।
 भृत्याः ३-१-११२—भरणपोषण करने योग्य, नौकर ।
 संभृत्याः, संभार्याः ,, अच्छी तरह पालन करने योग्य ।
 भार्याः ,, एक स्त्रीय जाति ।
 भृज्यः, माज्यः ३-१-११३—शुद्ध करने योग्य, साफ करने योग्य ।

न्यरुक्कुः ७-३-५३—काला बारहसिंहा ।
 राजसूयः, राजसूयम् ३-१-११४—यज्ञ, जिसमें क्षत्रिय द्वारा सोमरस निकाला जाय ।
 सूर्यः ,, जो आकाश में चले, जो लोगों को काम करने की प्रेरणा दे, सूर्य ।
 सृषोद्यम् ,, असत्य कथन ।
 रुच्यः ,, अनुकूल प्रेमी ।
 कुप्यम् ,, सोना तथा चाँदी से भिन्न निम्न कोटि की धातु ।
 गोप्यम् ,, छिपाने योग्य ।
 कृष्णपच्याः ,, जोती हुई भूमि में स्वयं उगने वाले अन्न ।
 कृष्णपाक्याः ,, जोती हुई भूमि में पैदा किये जाने वाले अन्न ।
 अव्यय्यः ,, जो पैरों से नहीं चलता, सर्प ।
 मिद्यः ३-१-११५—किनारा तोड़नेवाला नद, जम्मु की 'बई' नाम की नदी ।
 उद्धयः ,, किनारे के ऊपर जिसका जल बहने लगे वह नद, जम्मु की 'उम्य' नदी ।
 भेत्ता ,, तोड़नेवाला कोई व्यक्ति ।
 उज्झिता ,, छोड़नेवाला कोई व्यक्ति ।
 पुष्यः ३-१-११६—जिसमें काम पूरा हो जाय वह नक्षत्र ।
 सिष्यः ,, जिसमें काम सिद्ध हो जाय वह नक्षत्र ।
 विपूयो मुञ्जः ३-१-११७—रस्सी बनाने के लिए साफ की गयी मूँज ।
 विनीचःकल्कः ,, छोड़ने, फेंकने या न करने योग्य, पाप या फोंक ।
 जित्यो हलिः ,, शक्ति से खींचने योग्य बड़ा हल ।
 विपन्यम् ,, साफ करने योग्य ।
 विनेयम् ,, छोड़ने योग्य ।
 जेयम् ,, जीतने योग्य ।
 प्रतिगृह्यम् ३-१-११८—लेना चाहिए (वैदिक) ।
 अपिगृह्यम् ,, ग्रहण करना चाहिए (वैदिक) ।

प्रतिग्राह्यम् ३-१-११८—लेना चाहिए ।	वञ्च्यम् ७-३-६४—जाने योग्य ।
अपिग्राह्यम् ,, ग्रहण करना चाहिए ।	वङ्क्यम् ,, टेढ़ा किया जाने वाला ।
अवगृह्यम् ३-१-११९—अलग करने योग्य पद ।	ओकः ,, पच्ची, शूद्र ।
प्रगृह्यम् ,, प्रगृह्य संज्ञा (सन्ध्यभाव) करने योग्य पद ।	अवश्यपाच्यम् ७-३-६५—अवश्य पकाने योग्य ।
गृह्यकाः शुकाः ,, पकड़े हुए (पालतू) तोते ।	याज्यम् ७-३-६६—यज्ञ करने योग्य ।
ग्रामगृह्या सेना ,, गाँव के बाहर ठहरी हुई सेना ।	याच्यम् ,, माँगने योग्य ।
आर्यगृह्यः ,, आर्यों के पक्ष का व्यक्ति ।	रोच्यम् ,, चमकाने योग्य ।
पक्ष्यः ,, पक्ष में हुआ ।	प्रवाच्यम् ,, पढ़ने योग्य, एक ग्रन्थ का नाम ।
कृत्यम् ३-१-१२०—करने योग्य (काम) ।	अर्च्यम् ,, प्रशंसा करने योग्य ।
कृष्यम्, वृष्यम् ,, शक्ति, स्फूर्ति वर्द्धक ।	त्थाज्यम् ,, छोड़ने योग्य ।
कार्यम् ३-१-१२४—करने योग्य (काम) ।	वाच्यम् ७-३-६७—कहने योग्य ।
वर्ष्यम् ,, वर्षा में हुआ ।	वाक्यम् ,, बोलने योग्य (शब्द समूह) ।
युग्यो गौः ३-१-१२१—गाड़ी में जोता जानेवाला बैल ।	प्रयोज्यः ७ ३-६८—प्रयोग करने योग्य ।
अमावास्या, अमावस्था ३-१-१२२—जिस तिथि को सूर्य तथा चन्द्रमा साथ साथ एक नक्षत्र में हों ।	नियोज्यः ,, जो काम में लगाया जा सके, नौकर ।
पाक्यम् ,, पकाने योग्य ।	भोज्यम् ७-३-६९—खाने योग्य ।
पाणिसर्ग्या रज्जुः ,, हाथ से बनाने या बटने योग्य (रस्ती)	भोग्यम् ,, काम में लाने योग्य ।
समवसर्या ,, अच्छी तरह से बनाने योग्य ।	लाप्यम् ,, कहने योग्य ।
गर्ज्यम् ७-३-५९—गर्जने योग्य ।	दाभ्यः ,, घोखा देने योग्य, अविश्वसनीय ।
समाजः ७-३-६०—साथ साथ रहने या चलने वाला, एक स्वभाव या संस्कृति के व्यक्तियों का समूह ।	लाभ्यम् ३-१-१२५—अवश्य काटने योग्य ।
परिघ्राजः ,, सब कुछ त्याग कर भ्रमण करने वाला, संन्यासी ।	पाव्यम् ,, अवश्य पवित्र करने योग्य ।
भुजः ७-३-६१—जिससे भोजन किया जाय, हाथ ।	लासाव्यम् ३-१-१२६—चुआने या टपकाने (अर्क, घाराब) योग्य ।
न्युब्जः ,, जिससे मनुष्य टेढ़ा हो जाय, कुवड़ा ।	याव्यम् ,, मिलने योग्य ।
भोगः ,, जिससे सुख का अनुभव किया जाय ।	वाप्यम् ,, अवश्य बोलने योग्य ।
समुद्गः ,, ढक्कनदार वक्ता ।	राप्यम् ,, अवश्य कहने योग्य ।
पञ्च प्रयाजाः ७-३-६२—दर्श-पौर्णमासेष्टि में दीजाने वाली पाँच आहुतियाँ ।	त्राप्यम् ,, अवश्य लज्जित किये जाने योग्य ।
त्रयोऽनुयाजाः ,, बाद में दी जाने वाली तीन आहुतियाँ ।	चाप्यम् ,, अवश्य पीने योग्य ।
प्रयागः ,, उत्तम यज्ञ ।	आनाप्यः ३-१-१२७—गार्हपत्य अग्नि से लाई जाने योग्य अग्नि, यह सदा प्रज्वलित नहीं रहती ।
अनुयागः ,, बाद में किया जाने वाला यज्ञ ।	आनेयः ,, लाने योग्य कोई वस्तु ।
	प्रणाप्यः ३-१-१२८—जो पसन्द न किया जाय, यथा चोर, विषय वासनानाओं से विरक्त (छात्र) ।
	प्रपेयः ,, वश में करने योग्य ।

पाथ्यम् ३-१-१२९—जिससे अन्न आदि नापा जाय (प्या)
प्राचीन नाप ।
साक्षाथ्यम् ,, हवन के लिए जिसे अग्नि के पास ले
जाया जाय ।
निकाय्यः ,, जिसमें घन धान्य रक्खा जाय, घर ।
घाया ,, जिस मन्त्र से समिधा रक्खी जाय ।
कुण्डपाथ्यः ३-१-१३०—विशिष्ट सोम क्रतु, जिसमें कुण्ड
(लकड़ी की चौकोर तश्तरी) से
सोम रस पिया जाय ।
संचाय्यः ,, विशिष्ट सोमक्रतु जिसमें सोम संग्रह किया
जाय ।
परिचाय्यः ३-१-१३१—वृत्ताकार रक्खी हुई यज्ञाग्नि ।
उपचाय्य ,, यज्ञ की अग्नि ।
परिचेय्यम् ३-१-१३१—एकत्र करने योग्य ।
उपचेय्यम् ,, संग्रह करने योग्य, बढ़ाने योग्य ।

संवाह्यम् ३-१-१३१—ले जाने योग्य ।
चित्यः ३-१-१३२—जिसका संग्रह किया जाय, अग्नि ।
अग्निचित्या ,, अग्नि का संग्रह ।
गन्तव्यम्, गमनीयम्, गम्यम् ,, तुमको अवश्य जाना चाहिए
तुम जा सकते हो, यह तुम्हारे जाने
का समय है ।
स्तुत्यः ३-३-१६९—प्रशंसनीय ।
स्तोता ,, प्रशंसा करनेवाला ।
मव्यः ३-४-६८—होने या रहनेवाला, सत्ता ।
मव्यमनेन वा ,, इसको होना या रहना चाहिए ।
गेयः साम्नामयम् ,, यह सामवेद का गानेवाला है ।
गेयम्सामानेन वा ,, अथवा इसके द्वारा सामवेद का गान
होना चाहिए ।
वोढव्यः वहनीयो वाह्यो वा ,, ढोने या ले जाने योग्य ।

इति कुत्पप्रक्रिया

अथ कुत्पक्रिया

कारकः, कर्ता ३-१-१३३—करने वाला ।
वोढा ,, ढोने वाला ।
कारिका, कर्त्री ,, करनेवाली ।
कुटिता, कोटकः ,, टेढ़ा करनेवाला, तोड़नेवाला ।
विजिता ,, डरानेवाला, हिलानेवाला ।
घातकः ,, मारनेवाला ।
दायकः ,, देनेवाला ।
शमकः ,, शान्त करनेवाला, सन्धि कराने
वाला ।
दमकः ,, दमन करनेवाला ।
नियामकः ,, शासन या नियन्त्रण करनेवाला ।
जनकः ,, पैदा करनेवाला, पिता ।
वधकः ,, मारनेवाला ।
रन्धकः ,, नाश करनेवाला ।

जम्भकः ३-१-१३३—निगलनेवाला, मायावी ।
रधिता, रद्धा ,, नाश करनेवाला ।
मङ्क्ता ,, शुद्ध करनेवाला, साफ करने
वाला ।
नंष्टा, नशिता ,, नाश करनेवाला ।
रम्भकः रब्धा ,, प्रारम्भ करनेवाला ।
लम्भकः लब्धा ,, पानेवाला ।
पृषिता, पृष्टा ,, चाहनेवाला ।
सहिता, सोढा ,, सहन करनेवाला ।
दरिद्रिता, दरिद्रायकः ,, दरिद्र होनेवाला ।
पादहारकः ,, पैरों से चुराने या ले जानेवाला ।
प्रक्रन्ता ,, जानेवाला ।
प्रक्रमितव्यम् ,, जाना चाहिए ।

संक्रमिता	,,	एक स्थान से दूसरे स्थान पर जानेवाला ।	घनाघनः, हनः	,,	मारनेवाला ।
क्रमिता, क्रन्ता	,,	जानेवाला ।	रात्रिचरः, रात्रिचरः	,,	रात में घूमनेवाला, निशाचर, राक्षस ।
संजिगमिषिता	,,	मिलने की इच्छा करनेवाला ।	क्षिपः १-३-१३९	—	फेंकनेवाला ।
विवृत्तिता	,,	रहने की इच्छा करनेवाला ।	लिखः	,,	लिखनेवाला ।
पापचक्रः, पापाचक्रः	,,	बारबार या सदा पकानेवाला ।	बुधः	,,	जाननेवाला, पण्डित ।
मन्दनः ३-१-१३४	—	प्रसन्न करनेवाला, पुत्र ।	कृशः	,,	पतला होनेवाला ।
जनादनः	,,	पापियों को कष्ट देनेवाला, विष्णु ।	ज्ञः	,,	जाननेवाला ।
मधुसूदनः	,,	मधु नामक राक्षस को मारनेवाला, विष्णु ।	प्रियः	,,	प्रसन्न करनेवाला ।
विभीषणः ३-१-१४	—	अधिक डरानेवाला, रावण का भाई ।	किरः	,,	बिखेरनेवाला, सूअर ।
लवणः	,,	काटनेवाला ।	क्षेपकः, क्षेप्ता	,,	फेंकनेवाला ।
ग्राही	,,	ग्रहण करनेवाला ।	सुरतः ३-१-१३६	—	अत्यन्त थका हुआ, खिन्न ।
स्थायी	,,	ठहरनेवाला ।	प्रज्ञः	,,	अधिक जाननेवाला, बुद्धिमान् ।
विशयी	,,	अधिक सोनेवाला ।	पिबः ३-१-१३७	—	पीनेवाला ।
विषयी	,,	देशवाला, स्थानवाला ।	जिघ्रः	,,	सूँघनेवाला ।
परिमावी, परिमवी	,,	हरानेवाला, अनादर करनेवाला ।	धमः	,,	फूँकनेवाला ।
पक्षः	,,	पकानेवाला ।	धयः	,,	माँ का दूध पीनेवाला, बच्चा ।
नदी	,,	नदी	धया	,,	माँ का दूध पीनेवाली बच्ची ।
चोरी	,,	चोरी करनेवाली ।	पश्यः	,,	देखनेवाला ।
देवी	,,	देवी ।	लिम्पः ३-१-१३८	—	लीपनेवाला, पोतनेवाला ।
जारमरा	,,	जार (उपपत्ति) का भरणपोषण करनेवाली, व्यभिचारिणी ।	विन्दः	,,	प्राप्त करनेवाला ।
श्वपचा	,,	चाण्डाल की स्त्री ।	धारयः	,,	धारण करनेवाला, पकड़नेवाला ।
श्वपाकः	,,	चाण्डाल	पारयः	,,	पार उतारनेवाला
चेक्रियः	,,	अधिक खरीदनेवाला ।	वेदयः	,,	जाननेवाला ।
नेन्यः	,,	अधिक ले जानेवाला ।	उदेजयः ३-१-१३८	—	हिलाने या कँपानेवाला ।
लोलुधः	,,	अधिक काटनेवाला ।	चेतयः	,,	होश में लानेवाला ।
पोपुवः	,,	अधिक शुद्ध या साफ करनेवाला ।	सातयः	,,	सुखी करनेवाला ।
मरीमृजः	,,	अधिक मलनेवाला ।	सात्	,,	(परमात्मा) सुख देनेवाला ।
चराचरः, चरः	,,	चलने या दौड़नेवाला ।	सात्वन्तः	,,	ईश्वर-भक्त ।
चलाचलः, चलः	,,	,,	साहयः	,,	सहनेवाला ।
पतापतः, पतः	,,	गिरनेवाला ।	प्रलिपः	,,	लीपनेवाला ।
बदावदः, वदः	,,	बोलनेवाला ।	निलिम्पा देवाः	,,	देवता, गाय ।
पादपटः, पाटः	,,	चलने या बोलनेवाला ।	गोविन्दः	,,	गायों की रक्षा करनेवाला, कृष्ण ।
			अरविन्दम्	,,	कमल, आर की तरह पंखुड़ियों वाला ।

ददः ३-१-१३९—देना, देनेवाला ।
 दधः ,, धारण करना, धारण करनेवाला ।
 प्रदः ,, देनेवाला ।
 प्रधः ,, धारण करनेवाला ।
 ज्वालाः, ज्वलः ३-१-१४०—लौ, लपट, ज्वाला ।
 चालः, चलः ,, चलनेवाला ।
 उज्ज्वलः ,, श्वेत, चमकनेवाला ।
 अवतानः ,, फैलनेवाला ।
 अवश्यायः ३-१-१४१—तुपार, पाला ।
 प्रतिश्यायः ,, जुकाम, सर्दी ।
 दायः ,, पैतृकधन ।
 धायः ,, धारण करनेवाला ।
 व्याधः ,, पीड़ा ।
 आस्त्राधः ,, घाव ।
 संस्त्राधः ,, बहनेवाला, बहाव ।
 अत्यायः ,, अत्याचार, अनाचार ।
 अवसायः ,, उपसंहारा, अन्त ।
 अवहारः ,, चुरानेवाला ।
 लेहः ,, चाटना ।
 श्लेषः ,, आलिंगन करना ।
 श्वासः ,, साँस ।
 दावः, दवः ३-१-१४२—कष्ट देनेवाला, वन की आग ।
 नायः ,, ले जानेवाला ।
 प्रदवः ,, जलना ।
 प्रणयः ,, प्रेम ।
 ग्राहः ३-१ १४३—पकड़नेवाला, धड़ियाल ।
 ग्रहः ,, तारा ।
 मवः ,, सत्ता, संसार, शंकर ।
 भावः ,, वस्तु, पदार्थ, क्रिया ।
 गृहम् ३-१-१४४—जो धान्य आदि ग्रहण करे, घर ।
 गृहाः ,, घर (बहु०) ।
 नर्तकः ३-१-१४५—नाचनेवाला ।
 नर्तकी ,, नाचनेवाली ।
 खनकः ,, खोदनेवाला ।
 खनकी ,, खोदनेवाली ।
 रजकः ,, घोबी ।

रजकी, रजिका ,, घोविन ।
 गाथकः ३-१-१४६—गानेवाला ।
 गायनः ३-१-१४७—गानेवाला ।
 गायनी ,, गानेवाली ।
 हायनः ३-१-१४८—घान (जो जल को छोड़ दे) वर्ष
 (जो सभी पदार्थों को छोड़ दे) ।
 प्रवकः ३-१-१४९—अच्छी तरह चलनेवाला ।
 सरकः ,, अच्छी तरह सरकनेवाला ।
 लावकः ३-१-१४९—अच्छी तरह काटनेवाला ।
 जीवकः ३-१ १५०—जीवित रहे ।
 नन्दकः ,, प्रसन्न रहे ।
 कुम्भकारः ३-२-१—कुम्हार, घड़ा बनानेवाला ।
 मांसशीला ,, जिस स्त्री को माँस की लत (व्यसन)
 पड़ गयी हो ।
 मांसकामा ,, माँस चाहनेवाली ।
 मांसमक्षा ,, माँस खानेवाली ।
 कल्याणचारा ,, सदाचारिणी, सच्चरित्रा ।
 सुखप्रतीचा ,, सुख की आशा-प्रतीचा करनेवाली ।
 बहुक्षमा ,, अधिक क्षमा करनेवाली ।
 स्वर्गह्वायः ३-२-२—स्वर्ग कहनेवाली, चाहनेवाली ।
 तन्तुवायः ,, सूत बुननेवाला, जुलाहा ।
 धान्यमायः ,, अन्न नापनेवाला ।
 गोदः ३-२-३—गाय देनेवाला ।
 पार्ष्णिग्रम् ,, पीछे से रक्षा करनेवाला ।
 गोसन्दायः ,, गोदान (विधि पूर्वक) करनेवाला ।
 ब्रह्मज्यः ,, ब्राह्मण को कष्ट देनेवाला ।
 आह्नः ,, बुलानेवाला, नाम ।
 प्रह्नः ,, नम्र, विनीत ।
 द्विपः ३-२-४—दो (सूँड तथा मुँह) से पीनेवाला हाथी ।
 समस्थः ,, सामान्य स्थिति में रहनेवाला, सुखी प्रसन्न ।
 विषमस्थः ,, असामान्य स्थिति में रहनेवाला, दुःखी,
 विपन्न ।
 आख्यः ,, चूहों का निकलना, बढ़ना, उत्पन्न होना ।
 प्रष्टो गौः ८-३-९१—आगे चलनेवाला बैल, उत्तल बैल ।
 प्रस्थः ,, दस छटांक का एक तोल, चोटी ।
 द्विष्टः ८-३-९७—दो के साथ रहनेवाला ।

कर्मकरः ३-२-२२—मजदूर ।
 कर्मकारः ,, काम करनेवाला, शिल्पी ।
 शब्दकारः ३-२-२३—शब्द करनेवाला ।
 स्तम्बकारिः ३-२-२४—भूसा पैदा करनेवाला, धान ।
 शकृत्कारिः ,, मल त्याग करनेवाला, बछड़ा ।
 स्तम्बकारः ,, भूसा बनानेवाला ।
 शकृत्कारः ,, मल त्यागनेवाला ।
 दत्तिहरिः ३-२-२५—मशक लेकर भागनेवाला, कुत्ता ।
 नाथहरिः ,, नाथ लेकर जानेवाला पशु ।
 दत्तिहरः ,, मशक ले जानेवाला, भिस्ती ।
 नाथहरः ,, अपने स्वामी को ले जानेवाला ।
 फलेग्रहिः ३-२-२६—फल ग्रहण, धारण करनेवाला, वृद्ध ।
 आत्मम्मरिः ,, अपना ही भरण करनेवाला, स्वार्थी ।
 कुत्तिम्मरिः ,, अपना पेट भरनेवाला, पेटू, स्वार्थी ।
 जनमेजयः ३-२-२८, ६-३-६७—लोगों को भय से
 कँसानेवाला ।
 वातमजाः ,, ,, हवा के साथ भागने
 वाले, एक प्रकार के मृग ।
 शुनिन्धयः ६-३-६६—कुतिया का दूध पीनेवाला, पिल्ला ।
 तिलन्तुदः ,, तिल पेरनेवाला, तेली ।
 शब्दजहाः ,, अपान वायु छोड़ने वाले, एक
 प्रकार के उड़द ।
 स्तनन्धयः ३-२-२९—स्तन पीनेवाला, बच्चा ।
 स्तनन्धयी ,, स्तन पीनेवाली, बच्ची ।
 नासिकन्धमः ,, नाक से फूकनेवाला ।
 नासिकन्धयः ,, नाक से पीनेवाला ।
 नाडिन्धमः ३-२-३०—नली से फूकनेवाला ।
 नाडिन्धयः ,, नली से पीनेवाला ।
 मुष्टिन्धमः ,, मुट्ठी से फूकनेवाला ।
 मुष्टिन्धयः ,, मुट्ठी से पीनेवाला ।
 घटिन्धमः ,, घड़े से फूकनेवाला ।
 घटिन्धयः ,, घड़े से पीनेवाला ।
 कूलमुद्गजः ३-२-३१—तट को तोड़नेवाला, रथ आदि ।
 कूलमुद्गहः ,, किनारे को बहानेवाला ।
 वहंजिहः ३-२-३२—कंधा चाटनेवाला, बैल ।
 अभंलिहः ,, आकाश छूनेवाला, महल ।

प्रस्थम्पचा ३-२-३३—दस छटाँक अन्न पकानेवाली पतीली ।
 खारिम्पचा ,, खारी (चारमन) पकानेवाली कड़ाही ।
 मितम्पचा ३-२-३४—थोड़ा पकानेवाली ।
 नखम्पचा ,, नाखून को जलानेवाली ।
 विधुन्तुदः ३-२-३५—चन्द्रमा को कष्ट देने-प्रसनेवाला राहु ।
 अरुन्तुदः ,, मर्मस्थल पर आघात करनेवाला ।
 असूर्यम्पद्याः ३-२-३६—सूर्य को न देखनेवाली, पर्दान-
 नशीन ।
 ललाटन्तपः ,, मस्तक तपानेवाला, बहुत तेज ।
 उग्रंपश्यः ३-२-३७—भयानक दृश्य देखनेवाला ।
 इरम्मदः ,, पीने से प्रसन्न होनेवाली, अर्जुन
 का एक नाम ।
 पाणिन्धमः ,, हाथ बजानेवाला, अँधेरा मार्ग ।
 प्रियम्बदः ३-२-३८—प्रिय बोलनेवाला ।
 वशंवदः ,, अधीनता स्वीकार करनेवाला,
 आज्ञाकारी ।
 मितङ्गमः ,, थोड़ा-परिमित चलनेवाला ।
 विहङ्गमः ,, आकाश में चलनेवाला, पक्षी ।
 विहङ्गः ,, आकाश में चलनेवाला, पक्षी ।
 सुजङ्गमः, सुजङ्गः ,, टेढ़ा चलनेवाला, साँप ।
 द्विषन्तपः ३-२-३९, ६-४-९४—शत्रु को कष्ट देनेवाला ।
 परन्तपः ,, ,, शत्रु को कष्ट देनेवाला ।
 द्विषतीतापः ,, ,, स्त्रीशत्रु को कष्ट देनेवाला ।
 वाचंयमः ३-२-३०, ६-४-६०—व्रत के कारण मौन
 रहनेवाला ।
 वाग्यामः ,, ,, शक्ति न रहने के
 कारण मौन रहनेवाला ।
 पुरन्दरः ३-२-४१—शत्रु-नगर को नष्ट करनेवाला; इन्द्र ।
 सर्वसहः ,, सब कुछ सहनेवाला ।
 मगन्दरः ,, गुदा का फोड़ा ।
 सर्वंकषः ३-२-४२—सब कुछ नष्ट करनेवाला, दुष्ट ।
 कूलंकषा ,, तट को नष्ट करनेवाली, नदी ।
 अग्रंकषो वायुः ३-२-४२—बादल को रगड़ने (छूने)
 वाली हवा ।
 करीषंकषा वात्या ,, गोबर को रगड़ने (उड़ाने)
 वाला आँधी ।

- मेघकरः ३-२-४३—बादल बनानेवाला ।
 ज्वर्तिकरः ,, कष्ट देनेवाला ।
 भयंकरः ,, भय देनेवाला ।
 अभयंकरः ,, आभय देनेवाला ।
 क्षेमंकरः, क्षेमकारः ३-२-४४—कल्याण करनेवाला मङ्गलप्रद ।
 प्रियंकरः, प्रियकारः ,, भलाई करनेवाला ।
 मद्रंकरः, मद्रकारः ,, हर्ष उत्पन्न करनेवाला ।
 आशितम्मवः ३-२-४५—जिससे अतिथि का भोजन हो सके (भात) ।
 विश्वम्भरः ३-२-४६—संसार का भरण पोषण करनेवाला, परमेश्वर ।
 विश्वम्भरा ,, संसार का भरणपोषण करनेवाली, पृथ्वी ।
 रथन्तरं साम ,, रथन्तरं साम ।
 पतिवरा कन्या ,, पति का वरण करनेवाली कन्या ।
 शत्रुक्षयो हस्ती ,, शत्रु को जीतनेवाला हाथी ।
 युगन्धरः पर्वतः ,, युगन्धर नाम का पर्वत अथवा गाढ़ी का फड़ जिसमें जुआ बाँधा जाता है ।
 शत्रुसहः ,, शत्रु का सामना करनेवाला ।
 शत्रुन्तपः ,, शत्रु को कष्ट देनेवाला ।
 अरिन्दमः ,, शत्रु का दमन करनेवाला, शत्रु को जीतनेवाला ।
 सुतङ्गमः ३-२-४७—पुत्र के पास जानेवाला, एक ऋषि का नाम ।
 अन्तगः ३-२-४८—अन्त तक जानेवाला ।
 सर्वत्रगः ,, सब जगह जानेवाला, परमेश्वर ।
 पन्नगः ,, सर्प, जो लेटकर चले, अथवा जो पैर से न चले ।
 उरगः सर्प, छाती-वक्षः स्थल से चलनेवाला ।
 सुगः ,, जहाँ आसानी से जाया जा सके ।
 दुर्गः ,, जहाँ कठिनाता से जाया जा सके, (किला) ।
 ग्रामगः ,, गाँव जानेवाला ।
 विहगः ,, आकाश में जानेवाला ।
 शत्रुहः ३-२-४९—शत्रु को मारे (आशीस) ।
 शत्रुघातः ,, शत्रु को मारनेवाला ।
 दार्वाघाटः ,, कठफोड़ा पक्षी ।
 चार्वाघाटः ,, सुन्दर प्रहार करनेवाला (एक पक्षी) ।
 वर्णसङ्घाटः, वर्णसङ्घातः ,, वर्णमाला ।
 पदसङ्घाटः, पदसङ्घातः ,, अलग-अलग पदों को एकत्र करनेवाला ।
 क्लेशापहः पुत्रः ३-२-५०—कष्ट को नष्ट करनेवाला पुत्र ।
 तमोऽपहः सूर्यः ,, अन्धकार को नष्ट करनेवाला सूर्य ।
 कुमारघाती ३-२-५१—बालक को मारनेवाला ।
 शीर्षघाती ,, सिर काटनेवाला ।
 जायाघ्नो ना ३-२-५२—जिस पुरुष के शरीर में पत्नी को मारनेवाला तिल हो ।
 पतिघ्नी स्त्री ,, पति को मारनेवाली स्त्री ।
 जायाघ्नः तिलकालकः ३-२-५३—जिसतिल से पत्नी की मृत्यु सूचित होती हो ।
 पतिघ्नी पाणिरेखा ,, हाथ की जिस रेखा से पति की मृत्यु सूचित होती हो ।
 पित्तघ्नं घृतम् ,, पित्त को नष्ट करनेवाला, घृत ।
 आशुघातः शूद्रः ,, चूहों को मारनेवाला शूद्र ।
 चोरघातो, नगरघातो हस्ती ३-२-५३—चोर को मारनेवाला या नगर को नष्ट करनेवाला हाथी ।
 हस्तिघ्नः ना ३-२-५४—हाथी को मारने वाला पुरुष ।
 कपटघ्नःचोरः ,, किवाड़ तोड़ने वाला चोर ।
 पाणिघः ३-२-५५—हाथ से मृदङ्ग आदि बजाने वाला ।
 ताडघ्नः ,, धन से प्रहार करने वाला लोहार ।
 पाणिघातः ,, मुक्के से प्रहार करनेवाला ।
 ताडघातः ,, धन से प्रहार करनेवाला ।
 राजघः ,, राजा को मारनेवाला ।
 आख्यङ्करणम् ३-२-५६—घनी बनाने वाला, सम्पत्ति आदि ।

आढ्यम्मविष्णुः ३-२-५७—घनी होनेवाला, जो पहिले
आढ्यम्मावुकः ३ घनी न था ।

घृतस्पृक् ३-२-५८—घी छूने वाला ।

मन्त्रस्पृक् ३-२-५९—मन्त्र से छूने वाला ।

सदक्, सदशः, सदचः ३-२-५९, ६०—समान ।

अन्यादक्, अन्यादशः, अन्यादचः ३-२-५९, ६०—दूसरी तरह का ।

तादक्षः ३-२-६१—उस तरह का ।

धुसत् ३-२-६१—आकाश या स्वर्ग में बैठने वाला ।

उपनिषत् ३-२-६१—अध्यापक की उपस्थिति में बैठनेवाला ।

अण्डसूः ३-२-६२—अण्ड देनेवाला ।

प्रसूः ३-२-६३—पैदा करनेवाला ।

मित्रद्विट् ३-२-६४—मित्र से द्वेष करनेवाला ।

प्रद्विट् ३-२-६५—शत्रु, बैरी ।

मित्रध्रुक् ३-२-६६—विश्वासघाती, मित्र द्रोही ।

प्रध्रुक् ३-२-६७—प्रबलद्रोही, शत्रु ।

गोधुक् ३-२-६८—गाय दुहनेवाला ।

प्रधुक् ३-२-६९—उत्तम दुहनेवाला ।

अद्वयुक् ३-२-७०—घोड़े को जोतनेवाला, गाड़ी ।

प्रयुक् ३-२-७१—उत्तम जोतनेवाला ।

वेदवित् ३-२-७२—वेद जाननेवाला ।

निवित् ३-२-७३—प्रार्थना करनेवाला ।

अग्रणीः ३-२-७४—अगुआ ।

ग्रामणीः ३-२-७५—गाँव का मुखिया ।

अंशमाक् ३-२-७६—भाग या हिस्सा देने या पानेवाला ।

प्रमाक् ३-२-७७—भाग पानेवाला ।

आमात् ३-२-७८—कच्चा अन्न खानेवाला ।

सस्यात् ३-२-७९—अन्न खानेवाला ।

अन्नादः ३-२-८०—अन्न खानेवाला ।

क्रव्यात् ३-२-८१—कच्चा मांस खानेवाला ।

कामदुघा ३-२-८२—इच्छानुसार दूध देनेवाली, खूब दूध

देनेवाली ।

सुशर्मा ३-२-८३, ८-२-८—अच्छी तरह (पाप या अज्ञान

को) नष्ट करनेवाला ।

प्रातरित्वा ३-२-८४—प्रातःकाल चलनेवाला ।

विजावा ६-४-४१—बच्चा पैदा करनेवाला ।

अवावा ६-४-४१—दूर करनेवाला ।

रोट्, रेट् ६-४-४२—कष्ट देने या मारनेवाला ।

सुगण् ६-४-४३—उत्तम गिननेवाला ।

उखास्तत् ६-४-४४—पात्र से गिरनेवाला ।

पर्णध्वत् ६-४-४५—पत्ते से गिरनेवाला ।

वाहभट् ६-४-४६—सवारी से गिरनेवाला ।

हे प्राण् ८-४-२०—हे साँस लेनेवाले या जीवित रहने-
वाले ।

मित्रशीः ८-४-२१—मित्रों को उपदेश या शिक्षा देनेवाले ।

आशीः ८-४-२२—आशीर्वाद

गीः ८-४-२३—बाणी ।

पूः ८-४-२४—नगर ।

तनुच्छत् ६-४-२५—शरीर को ढाकनेवाला, वस्त्र ।

प्रतान् ६-४-२६—फैलानेवाला ।

प्रशान् ६-४-२७—शान्ति रखनेवाला ।

अच्युः ६-४-२८—जुआ खेजनेवाला ।

जूः ६-४-२९—ज्वरवाला, ज्वरित ।

दूः ६-४-३०—शीघ्रता करनेवाला ।

खूः ६-४-३१—जाने या सुलानेवाला ।

जनौः ६-४-३२—लोगों की रक्षा करनेवाला ।

मूः ६-४-३३—बाँधनेवाला ।

सुमूः ६-४-३४—अच्छी तरह बाँधनेवाला ।

मूः ६-४-३५—मूर्च्छित होनेवाला ।

धूः ६-४-३६—आघात या प्रहार करनेवाला ।

अङ्गात् ६-४-३७—अङ्ग जनपद जानेवाला ।

परीतत् ६-४-३८—चारों ओर फैलानेवाला ।

संयत् ६-४-३९—अच्छी तरह रोकनेवाला ।

सुनत् ६-४-४०—अच्छी तरह प्रणाम करनेवाला,
निर्वन ।

अग्रेगूः ६-४-४१—आगे जानेवाला ।

अग्रेभूः ६-४-४२—आगे भ्रमण करनेवाला ।

शंस्थः ३-२-७७—सुख से रहनेवाला ।

शंस्थाः ३-२-७८—सुख से रहनेवाले ।

उष्णभोजी ३-२-७९—गर्म भोजन करनेवाला ।

शीतभोजी ३-२-८०—ठंडा भोजन करनेवाला ।

ब्राह्मणानामन्त्रयिता ३-२-८१—ब्राह्मणों को बुलानेवाला ।

साधुदायी ३-२-७८—खूब देनेवाला, उदारता से देने-
वाला ।

ब्रह्मवादी ,, ब्रह्म अथवा वेद का वर्णन
करनेवाला ।

उष्ट्रकोशी ३-२-७९ - ऊँट की तरह बलबलानेवाला ।

ध्वाङ्क्षरावी ,, कौए की तरह काँव-काँव
करनेवाला ।

अपूपानिव मक्षयति मावान् ,, पूए की तरह उड़द
खाता है ।

उष्ट्रःकोशति ,, ऊँट बल-बलाता है ।

स्थण्डिलशायी ३-२-८० - व्रत के कारण नंगी पृथ्वी
पर सोनेवाला ।

क्षीरपायिण उशीनराः ३-२-८१—उशीनर के जन दूध पीने
वाले होते हैं ।

दर्शनीयमानी ३-२-८२—अपने आप को सुन्दर सम-
झनेवाला ।

पण्डितम्मन्यः ,, अपने आप को पण्डित
समझनेवाला ।

कालिम्मन्या ,, अपने आप को काली
समझनेवाली ।

दिवामन्या ,, अपने आप को दिन सम-
झने वाली ।

गाम्मन्यः ६-३-६८—अपने को बैल समझनेवाला ।

स्त्रियम्मन्यः स्त्रीम्मन्यः ,, अपने को स्त्री समझनेवाला ।

नरम्मन्यः ,, अपने को पुरुष समझनेवाला ।

भुवम्मन्यः ,, अपने को पृथ्वी समझनेवाला ।

श्रिमन्यं कुलम् ,, अपने को लक्ष्मी समझनेवाला कुल ।

सोमयाजी ३-२-८५—जिसने सोमयाग किया हो ।

अग्निष्टोमयाजी ,, जिसने अग्निष्टोम याग किया हो ।

पितृव्यघाती ३-२-८६—जिसने चाचा को मार डाला हो ।

ब्रह्महा ३-२-८७—जिसने ब्राह्मण को मार डाला हो ।

अणहा ,, जिसने गर्भस्थजीव को मार डाला हो ।

वृत्रहा ,, जिसने वृत्र को मार डाला हो, इन्द्र ।

सुकृत् ३-२-८९—जिसने अच्छी तरह काम किया हो ।

कर्मकृत् ,, जिसने काम किया हो ।

पापकृत् ,, जिसने पाप किया हो ।

मन्त्रकृत् ३-३-८९—जिसने मन्त्र बनाया हो ।

पुण्यकृत् ,, जिसने पुण्य किया हो ।

शास्त्रकृत् ,, जिसने शास्त्र की रचना की हो ।

भाष्यकृत् ,, जिसने भाष्य की रचना की हो ।

सोमसुत् ३-२-९०—जिसने सोमरस निचोड़ा हो ।

अग्निचित् ३-२-९१—जिसने हवन की अग्नि की रचा
की हो ।

अग्नेचित् ३-२-९२—जिसने अग्नि की वेदी को बाज के
आकार की बनाया हो ।

सोमविक्रयी ३-२-९३—सोमलता बेचनेवाला ।

घृतविक्रयी ,, घी बेचने वाला ।

पारदश्वा ३-२-९४—जिसने दूसरा किनारा या अन्त देख
लिया हो ।

राजयुध्वा ३-२-९५—जिसने राजा से युद्ध कराया हो ।

राजकृत्वा ,, जिसने राजा को बनाया हो ।

सहयुध्वा ३-२-९६—जिसने साथ युद्ध कराया हो ।

सहकृत्वा ,, जिसने किसी के साथ कोई काम
किया हो ।

सरसिजम् ३-२-९७—कमल (तालाब में उत्पन्न होने वाला)

मन्दुरजः ,, अस्तबल में उत्पन्न होनेवाला, बछड़ा ।

संस्कारजः ,, संस्कार (अभ्यास) से उत्पन्न
होनेवाला ।

अदृष्टजः ,, अदृष्ट (पूर्व जन्म के कर्म) से उत्पन्न
होने वाला ।

प्रजा ३-२-९९—सन्तान या प्रजा ।

पुमनुजा ३-२-१००—लड़के के बाद पैदा होने वाली
लड़की ।

अजः ३-२-१०१—न पैदा होनेवाला ।

द्विजः ,, दो बार जन्म लेनेवाला (जन्म से,
संस्कार से)

ब्राह्मणजः ,, ब्राह्मण से पैदा होनेवाला ।

परिखा ,, चारों ओर खोदी गई, खाई ।

स्नातं मया ३-२-१०२—मैंने स्नान कर लिया ।

स्तुतस्त्वया विष्णुः ,, तुमने विष्णु की स्तुति करली ।

विष्णुर्विश्वंकृतवान् ,, विष्णु ने विश्व की रचना की ।

क्षीणवान् ८-२-४६—दुर्बल ।
 चितःकामो मया ,, मैने काम को नष्ट कर दिया ।
 श्रितः, श्रितवान् ,, आश्रय लिया ।
 भूतः भूतवान् ,, हुआ, हो गया ।
 क्षुतः ,, शब्द किया ।
 ऊर्णुतः ,, ढक दिया ।
 नुतः ,, नमस्कार किया ।
 वृतः ,, घिरा हुआ ।
 शीणः ८-२-४२—फटा हुआ ।
 छिन्नः ,, कटा या फटा हुआ ।
 मिन्नः ,, टूटा हुआ ।
 द्राणः ८-२-४३—टेढ़ा गया हुआ ।
 स्त्यानः ,, एकत्र किया हुआ ।
 ग्लानः ,, खिन्न दुखी ।
 म्लानः ,, उदास, मुरझाया हुआ ।
 लूनः ८-२-४४—काटा गया ।
 जीनः ,, पुराना या वृद्ध ।
 दूनः ८-२-४४—गया हुआ ।
 गृनः ,, निगला हुआ ।
 पूनः ,, नष्ट किया हुआ ।
 पूतम् ,, पवित्र किया हुआ ।
 सिनः ,, निगला हुआ ।
 सिता पाशेन शूकरी ,, सूखर जाल में फँसी हुई है ।
 सितो ग्रासो देवदत्तेन ,, देवदत्त ने ग्रास को निगल लिया है ।
 भुग्नः ८-२-४५—टेढ़ा किया गया ।
 उच्छूनः ,, फूला या बढ़ा हुआ ।
 प्रहीणः ,, छोड़ा या त्यागा हुआ ।
 सूनः, सूतवान् ,, पैदा किया गया ।
 दूनः, दूनवान् ,, दुःखी किया गया ।
 उड्डीनः ,, उड़ा हुआ ।
 शीनम् ६-१-२४ ८-२-४७—जमा हुआ, घी ।
 शीतम् ,, ठंडा जल ।
 संश्यानो वृश्चिकः ,, सिकुड़ा हुआ, सर्दी से सिकुड़ी हुई विच्छू ।
 प्रतिशीनः ६-१-२५—जमा हुआ ।

अमिश्रयानम्, अमिश्रीनम् ६-१-२६—जमा हुआ ।
 अवश्यानः, अवशीनः ,, जमा हुआ ।
 समवश्यानः ,, जमा हुआ ।
 समक्नः ८-१-४८ ७-२-१५—मिला हुआ, सटा हुआ, संगत ।
 उदक्तमुदकं कृपात् ,, कुएँ से निकाला हुआ जल ।
 वृक्णः वृक्णवान् ,, काटा हुआ, काटा गया ।
 परिस्कन्दः, परिष्कन्दः ८-३-७२—जमा या सूखा ।
 दूनः ८-२-४९—एक खेल, जिसमें जीतने की इच्छा न हो ।
 दूतम् ,, जुआ ।
 निर्वाणः ८-२-५०—बुझा हुआ ।
 निर्वातः ,, बन्द हो गई ।
 शुष्कः ८-२-५१—सूखा ।
 पक्वः ८-२-५२—पका ।
 चामः ८-२-५३—सूखा, क्षीण ।
 प्रस्तीमः, प्रस्तीतः ६-१-२३ ८-२-५—इकट्ठा हुआ ।
 स्त्यानः ,, इकट्ठा ।
 फुल्लः, फुल्लवान् ८-२-५५—विकसित ।
 सीवः ,, नशे में मतवाला ।
 कृशः ,, दुर्बल ।
 उल्लाघो नीरोगः, ,, बीमारी से उठा हुआ, नीरोग ।
 प्रफुल्लः ७-२-१६, ७-४-७९—विकसित ।
 प्रक्षीवितः ,, नशे में मतवाला ।
 प्रकृशितः ,, अत्यन्त दुर्बल ।
 प्रोल्लाघितः ,, अच्छी तरह नीरोग ।
 नुन्नः नुत्तः ८-२-५६—हाँका गया ।
 विन्नः, विराः ,, सोचा गया, विचारा गया ।
 विदितः ,, जाना हुआ ।
 विन्नः ,, स्थित ।
 उन्नः, उत्तः ७-२-१४—आर्द्र, गीला ।
 व्राणः, व्रातः ,, बचाया गया, रखा किया गया ।
 व्राणः, व्रातः ७-२-१४—सूँघा हुआ ।
 हीनः, हीतः ,, लज्जित ।
 ध्यातः ८-२-५७—ध्यान किया गया ।
 क्वातः ,, प्रसिद्ध ।
 पूतः ,, तोषा किया गया ।

मूर्तः ८-२-५७—मूर्च्छित ।
 मत्तः ॥ मत्तवाला ।
 वित्तम् ८-२-५८—भोग किया गया, धन सम्पत्ति ।
 वित्तः ॥ प्रसिद्ध, ज्ञात ।
 विन्नः ॥ पाया गया ।
 मित्तम् ८-२-५९—भाग, टुकड़ा ।
 मिन्नम् ॥ दूटा हुआ ।
 ऋणम् ८-२-६०—कर्ज ।
 ऋतम् ॥ सत्य, उचित ।
 स्फीतः ६-१-५२—विस्तृत, बड़ा हुआ ।
 निष्कुषितः ७-२-४७—फाड़ा या निकाला हुआ ।
 उषितः ७-२-५२—बसा या रहा हुआ ।
 क्षुषितः ॥ भूखा ।
 अञ्जितः ७-२-५३—पूजित ।
 अक्तः ॥ गया हुआ ।
 लुमितः ७-२-५४—मोहित ।
 लुब्धः ॥ लालची ।
 क्लिशितः, क्लिष्टः ७-२-५०—दुःखी ।
 पचितः, पूतः ७-२-५१—पवित्र किया गया ।
 शयितः, शयितवान् १-२-१९—सोया हुआ ।
 शोषितः, शोषितवान् ॥ अधिक काल तक सोया हुआ ।
 प्रस्वेदितश्चैत्रः ७-२-१७—चैत्र को पसीना हो गया है ।
 प्रस्वेदितं तेन ॥ उसको पसीना हो गया है ।
 स्विदितः ॥ पसीना हो गया है ।
 मेदितः, मेदितवान् ॥ पिघल गया है ।
 प्रक्ष्वेदितः प्रक्ष्वेदितवान् ॥ स्नेह किया, छोड़ दिया ।
 प्रधर्षितः, प्रधर्षितवान् ॥ दबाया गया ।
 धर्षितं तेन ॥ उसने दबाया ।
 प्रस्विन्नः ॥ पसीना हो गया ।
 प्रस्विन्नं तेन ॥ उसे पसीना हो गया ।
 मर्षितः, मर्षितवान् १-२-२०—सहा गया, सहन कर लिया ।
 अपमृषितं वाक्यम् ॥ अस्पष्ट वाक्य ।
 शुतितम्, द्योतितम् १-२-२१—चमकाया या जलाया गया ।
 मुदितम्, मोदितम् ॥ खुश या प्रसन्न किया गया ।

प्रद्युतितः, प्रद्योतितः १-२-२१—अच्छी तरह चमक गया ।
 प्रमुदितः प्रमोदितः ॥ अच्छी तरह प्रसन्न ।
 विदितम् ॥ जाना हुआ ।
 रुचितं कार्षापणम् ॥ चमकता हुआ कार्षापण ।
 क्रुष्टम् ॥ चिल्लाया, रोया ।
 गुधितम् ॥ लपेटा हुआ ।
 भावितः, भावितवान् ॥ होने के लिए प्रेरित ।
 शूनः ६-४-५२—बड़ा या फूला हुआ ।
 दीप्तः ॥ चमकाया या जलाया गया ।
 गूढः ॥ छिपा हुआ ।
 वतः ॥ सेवा किया गया या शब्द किया गया ।
 ततः ॥ विस्तृत फैलाया गया ।
 पतितः ॥ गिरा हुआ ।
 दरिद्रितः ॥ दरिद्र हुआ ।
 लुब्धः ७-२-१८—मंथनदण्ड अथवा लप्सी या हलुआ ।
 स्वान्तम् ॥ अन्तःकरण, मन ।
 ध्वान्तम् ॥ अंधकार ।
 लग्नम् ॥ गासक्त, लीन ।
 म्लिष्टम् ॥ अस्पष्ट, अज्ञेय ।
 विरिण्वः ॥ स्वर ।
 फाण्टम् ॥ ताजे दूध से निकाला गया मक्खन, काढ़ा ।
 बाढम् ॥ अत्यधिक ।
 क्षुमितम् ॥ विचलित या व्यग्र किया गया ।
 स्वनितम् ॥ बजा, शब्द किया ।
 ध्वनितम् ॥ शब्द किया, बजा ।
 लगितम् ॥ मिल गया ।
 म्लेच्छितम् ॥ अस्पष्ट शब्द किया ।
 विरेमितम् ॥ शब्द किया ।
 फणितम् ॥ बिना प्रयत्न किया गया ।
 बाहितम् ॥ प्रयत्न किया गया ।
 शृष्टः ७-२-११—ढीठ, विनीत, अशिष्ट ।
 विशस्तः ॥ ढीठ, विनीत, अशिष्ट ।
 धर्षितः ॥ दबाया गया ।
 विशसितः ॥ दबाया गया ।
 धृष्टम्, धर्षितम् ॥ दबाया गया ।

प्रधृष्टः, प्रधर्षितः ७-२-१६—ढीठ ।
 दृढः ७-२-२०—मोटा, बलवान् ।
 दृढितः दृढितः ,, बड़ा हुआ ।
 परिवृढः ७-२-२१—स्वामी ।
 परिवृढितः, परिवृद्धितः ,, बड़ा हुआ ।
 कण्टो मोहः ७-२-२२—भ्रम या अज्ञान दुःख का कारण है ।
 कण्टशास्त्रम् ,, शास्त्र कठिन होता है ।
 कषितम् ,, चिसा हुआ ।
 घुष्टा ७-२-२३—वनाई गई ।
 घुषितम् ,, स्पष्ट ।
 समर्णः, न्यर्णः, व्यर्णः ७-२-२४—पीड़ित, आहत ।
 अर्दितः ,, दबाया गया ।
 अभ्यर्णम् ७-२-२५—मासन्न, समीपवर्ती ।
 अभ्यर्दितम् ,, पीड़ित ।
 घृत्तं छन्दश्छात्रेण ७-२-२६—छात्र द्वारा छन्द रचा गया ।
 वर्तिता रज्जुः ,, बटी गई रस्सी ।
 श्रुतम् ६-१-२७—पकी हुई खीर या हवि ।
 श्राणं श्रणितंवा ,, पकी हुई कोई वस्तु ।
 दान्तः ७-२-२७—इन्द्रियों को दमन किये हुए ।
 शान्तः ७-२-२७—मन का शमन किये हुए ।
 पूर्णः ,, भरा हुआ ।
 दस्तः ,, नष्ट ।
 स्पष्टः ,, साफ ।
 छन्नः ,, छिपा या ढका हुआ ।
 जसः ,, सूचित किया, जनाया ।
 दमितः ,, दमन किया ।
 शमितः ,, शान्त किया ।
 पूरितः ,, भर दिया ।
 दासितः ,, नष्ट कर दिया ।
 स्पाशितः ,, साफ किया ।
 छादितः ,, ढक दिया ।
 शापितः ,, सूचित किया ।
 रुषितः, रुष्टः ७-२-२८—अप्रसन्न, क्रुद्ध ।
 आन्तः अमितः ,, गया ।
 तूर्णः, स्वरितः ,, शीघ्रता किया ।
 संघुष्टः, संघुषितः ,, कहा ।

आस्वान्तः, आस्वनितः ७-२-२८—शब्द किया ।
 हृष्टम्, हृषितम् ७-२-२९—रोंगटे खड़े हो गये ।
 हृष्टः, हृषितो मैत्रः ,, मैत्र विस्मित हुआ या मारा गया ।
 अपचितः, अपचायितः ७-२-३०—भयभीत हुआ ।
 पीनम् ६-१-२८—मोटा ।
 पीनः, प्यानः ,, बड़ा हुआ या अत्यधिक ।
 प्रप्यानः ,, बड़ा हुआ ।
 आपीनोऽन्धुः ,, बड़ा कुर्मा ।
 आपीनमूधः ,, बड़ा धन, भारीयन ।
 प्रह्लन्नः ६-४-९५—प्रसन्न ।
 दितः ७-४-४०—कटा हुआ ।
 सितः ,, नष्ट, अन्त किया हुआ ।
 मितः ,, नपा हुआ ।
 स्थितः ,, ठहरा हुआ ।
 शितः ७-४-४१—छिला हुआ ।
 शातः ,, छिला हुआ ।
 छितः, छातः ,, कटा हुआ ।
 संशितं व्रतम् ,, पूर्ण किया गया व्रत ।
 संशितो ब्राह्मणः ,, जिस ब्राह्मण ने व्रत पूरा कर लिया है ।
 अमिहितम् ७-४-४२—कहा ।
 निहितम् ,, रक्खा हुआ ।
 दत्तः, दातः, प्रत्तः, अवत्तः,
 नीत्तम्, सूत्तम् ७-४-४६, ४७—दिया गया ।
 धीत्तम् ६-३-१२४—पिया गया ।
 गीत्तम् ,, गाया गया ।
 पीत्तम् ,, पी लिया ।
 जात्तम् ,, पैदा हुआ ।
 सात्तम् ,, अलग कर दिया ।
 खात्तम् ,, खोदा ।
 जग्धः २-४-३६—खाया ।
 प्रकृतं कटं सः ,, उसने चटाई को बनाया ।
 प्रकृतः कटस्तेन २-४-३६—उससे चटाई बनायी गयी ।
 प्रवीणः सः ,, वह दुर्बल हो गया ।
 क्षीणायुर्चितायुर्वामव ६-४-६१—तुम मर जाओ ।
 क्षीणोऽयं तपस्वी क्षितो वा ,, यह तपस्वी दुर्बल हो गया है ।

निष्णातः शास्त्रेषु ८-३-२९—शास्त्रों में निपुण ।
 नदीपणः ॥ नदी स्नान में निपुण ।
 प्रतिष्णातम् ८-३-२०—शुद्ध सूत ।
 प्रतिस्नानम् ॥ स्नान कर लिया ।
 कपिष्ठलः ८-३-११—कपिष्ठल नाम का गोत्र ।
 कपित्थलम् ॥ बन्दरों का स्थान ।
 विष्टलम् ८-३-१६—दूरवर्ती स्थान ।
 कुष्टलम् ॥ दुरा स्थान ।
 शनिष्टलम् ॥ कान करने का स्थान, शमी वृक्ष का
 स्थान ।
 परिष्टलम् ॥ निकटवर्ती स्थान ।
 गङ्गांगतः प्राप्तः ३-४-३२—गङ्गा गया हुआ या पहुँचा
 हुआ ।
 स्नानः सः ॥ वह उदात्त हो गया ।
 लक्ष्मीनास्तिष्ठो हरिः ॥ विष्णु ने लक्ष्मी का आलिंगन
 किया ।
 शेषमधिपयितः ॥ शेषभाग पर छोड़े ।
 वैकुण्ठमधिष्ठितः ॥ वैकुण्ठ में रहे ।
 शिवनुपासितः ॥ शिव को उपासना की ।
 हरिदिनमुपोषितः ॥ एकादशी का व्रत किया ।
 रामननुजातः ॥ राम के पीछे चले ।
 गरुडमारुहः ॥ गरुड पर चढ़े ।
 विद्वन्मनुजीर्णः ॥ संसार को नष्ट किया ।
 इदं सुकुन्दस्यासितम् ३-४-३१—यह ननुकुन्द का आसन
 है ।
 इदं रमापतेयातम् ॥ यह रमापति का जाना है ।
 एतदन्नन्तस्य भुक्तम् ॥ यह अन्नन्त का भोजन है ।
 आसितो सुकुन्दः ॥ सुकुन्द बैठ गये ।
 आसितं तेन ॥ वह बैठा ।
 रमापतिरिदं यातः ॥ यह रमापति गये ।
 तेनेदं यातम् ॥ वह यह गया ।
 अनन्तेनेदं भुक्तम् ॥ अनन्त ने यह भोजन
 किया ।
 द्विषणः ३-२-१८३—अस्पष्ट शब्द किया ।
 इदः ॥ प्रदीप्त ।

राज्ञां मत इष्टः ३-२-१८८—राजा चाहता है, आदर
 करता है ।
 बुद्धः ॥ जाना गया ।
 विदितः ॥ ज्ञात ।
 पूजितः, अर्चितः ॥ पूजा गया ।
 शीलितः ॥ आदर किया गया ।
 रक्षितः ॥ बचाया गया ।
 चान्तः ॥ चमा किया गया ।
 आक्रुष्टः ॥ निन्दा किया गया ।
 जुष्टः ॥ सेवित ।
 जल्पितम् ३-३-११४—कथन, कहना ।
 शयितम् ॥ सोना, शयन करना ।
 हसितम् ३-३-११४—हँसना ।
 सुत्वा ३-२-१०४—जिसने सोमरस निचोड़ लिया हो ।
 यज्वा ॥ जिसने यज्ञ कर लिया हो ।
 जरन्, जीर्णो, जीर्णवान् ३-२-१०५ - जो पुराना या बूढ़ा
 हो गया हो ।
 तस्थिवांसम् ३-२-१०७ ठहरे हुए को ।
 अधिजगमुषः ॥ प्राप्त किये हुए का ।
 आदिवान् ७-२-६७—खाये हुए ।
 आरिवान् ॥ गये हुए ।
 ददिवान् ॥ दिए हुए ।
 जञ्जिवान् ॥ खाये हुए ।
 बभूवान् ॥ उत्पन्न हुए ।
 निषेदुषीम् ३-२-१०८—बैठी हुई को ।
 अध्यूषुषः ॥ ठहरे हुए का ।
 शुश्रुवान् ॥ सुने हुए ।
 उपेयिवान् ३-२-१०९—गये हुए ।
 उपेयुषी ॥ गयी हुई ।
 ईयिवान्, समेयिवान् ॥ गये हुए ।
 अनूचानः ॥ जिसने वेद का अध्ययन किया है
 जग्मिवान्, जगन्वान् ७-२-६८—जो गया हुआ है ।
 जग्मिवान्, जघन्वान् ॥ जिसने मारा है ।
 विविदिवान्, विविद्वान् ॥ जिसने जाना है ।
 विविशिवान्, विविश्वान् ॥ जिसने प्रवेश किया है
 विविद्वान् ॥ जिसने जाना है ।

ददृशिवान् , ददृश्वान् ,, जिसने देखा है ।
 पचन्तं चैत्रं पश्य, पचमानं वा ३-२-१२४, ७-२-८२—
 पकाते हुए चैत्र को देखो ।
 सन् ब्राह्मणः ,, ब्राह्मण है ।
 मा जीवन् यः परावज्जादुःख-
 दग्धोऽपि जीवति ,, जो दूसरों के अनादर के दुःख से जल-
 कर भी जीता है उसे न जीना चाहिए ।
 हेपचन्, हेपचमान ३-२-१२६—हे पकानेवाले ।
 शयाना भुञ्जते यचनाः ३-२-१३६—यवन लोग सोते हुए
 भोजन करते हैं ।
 अर्जयन्वसति ,, पैदा करता हुआ अर्थात्
 पैदा करने के लिए
 रहता है ।
 हरिं पश्यन् मुच्यते ,, भगवान् का दर्शन करके
 मुक्त होता है ।
 प्रपीयमाणः सोमः ८-४-२९—पिया जाता हुआ सोम ।
 आसीनः ७-२-८३—बैठा हुआ ।
 विदन् विद्वान् ७-१-३६—ज्ञाता-जानकार ।
 विदुषी ,, जाननेवाली, पण्डिता ।
 करिष्यन्तं करिष्यमाणं वा पश्य ३-४-१४—करनेवाले को
 देखो ।
 अर्जयिष्यन्वसति ,, पैदा करने की
 इच्छा से रहता है ।
 करिष्यन् ,, करने की इच्छा
 वाला ।
 पचमानः ३-२-१२८—पवित्र करनेवाली आग या हवा ।
 यज्ञमानः ,, यज्ञ करनेवाला ।
 भोगं भुञ्जानः ३-२-१२९—जिसको सुख भोगने का अभ्यास
 है ।
 कवचं विभ्रानः ,, कवच धारण किया हुआ ।
 शत्रुं निधनानः ,, शत्रु वध करता हुआ ।
 अधीयन् ३-२-१३०—बिना कष्ट के अध्ययन करता हुआ ।
 धारयन् ,, अधिकार करता हुआ ।
 कृच्छ्रेणाधीते ,, कठिनीता से या कष्ट से पढ़ता है ।
 धारयति ,, याद करता है, स्मरण करता है ।
 द्विषन् ३-३-१३१—शत्रु ।

सर्वे सुन्वन्तः सर्वे यजमानाः सत्रिणः ३-२-१३२—
 यज्ञ करनेवाले सब यजमान सोमरस निचोड़ते हैं ।
 अहन् ३-२-१३३—पूजनीय, आदरणीय ।
 कर्ता कटम् ३-२-१३४, १३५—चटाई बनानेवाला ।
 अलङ्कारिष्णुः ३-२-१३६—अलंकृत करने में निपुण ।
 निराकरिष्णुः ,, अस्वीकार करने में निपुण ।
 प्रजनिष्णुः ,, उत्पन्न करने में निपुण ।
 उत्पचिष्णुः ,, पकाने की आदत वाला ।
 उत्पतिष्णुः ,, उड़ने की आदतवाला ।
 उन्मदिष्णुः ,, उन्मत्त होनेवाला ।
 रोचिष्णुः ,, चमकनेवाला ।
 अपत्रपिष्णुः ,, लज्जाशील ।
 वर्तिष्णुः ,, रहनेवाला ।
 वर्धिष्णुः ,, बढ़नेवाला ।
 सहिष्णुः ,, सहनशील ।
 चरिष्णुः ,, चलनेवाला ।
 वीरुवः पारयिष्णवः ३-२-१३७—सफलता देनेवाली लताएँ ।
 भविष्णुः ३-२-१३८—होनेवाला ।
 अलिष्णुः ,, सदा चमकनेवाला ।
 क्षयिष्णुः ,, सदा नष्ट होनेवाला ।
 ग्लास्तुः ३-२-१३९—उदास रहनेवाला ।
 जिष्णुः ,, जीतनेवाला ।
 स्थास्तुः ,, ठहरनेवाला, स्थिर ।
 भूष्णुः ,, होनेवाला ।
 दक्ष्णवः पशवः ,, काटनेवाले जानवर ।
 त्रस्तुः ३-२-१४०—भय से कांपनेवाला ।
 गृष्णुः ,, लालच करनेवाला ।
 धृष्णुः ,, साहस करनेवाला, डीठ ।
 क्षिप्नुः ,, फेंकनेवाला ।
 शमिनितिरा, शमिनीतरा ३-२-१४१—अधिक शान्तिवाली ।
 शमी ,, शान्तिवाला ।
 तमी ,, चाहनेवाला ।
 दमी ,, दमन करनेवाला ।
 श्रमी ,, श्रम करनेवाला ।
 अमी ,, भ्रमण करने-धूमने
 वाला ।

क्षमी ३-२-१४१—	क्षमा करनेवाला ।
क्लामी ॥	यकनेवाला ।
प्रमादी ॥	असावधान रहनेवाला ।
उन्मादी ॥	उन्मत्त रहनेवाला ।
सम्पर्की ३-२-१४२—	मिलावट ।
अनुरोधी ॥	संकोच करनेवाला ।
आयामी ॥	विस्तार करनेवाला ।
आयासी ॥	परिभ्रम करनेवाला ।
परिसारी ॥	चारों ओर बहनेवाला ।
संसर्गी ॥	सम्बन्ध रखनेवाला ।
परिवेधी ॥	विलाप करनेवाला ।
संज्वारी ॥	बहुत गर्म करनेवाला ।
परिक्षेपी ॥	चारों ओर धूमनेवाला ।
परिराटी ॥	जोर से चिल्लाने वाला ।
संज्वारी ॥	अधिक गर्म करने वाला ।
परिक्षेपी ॥	चारों ओर धूमने वाला ।
परिराटी ॥	अधिक चिल्लाने वाला ।
परिवादी ॥	बुरा भला कहने वाला, गाली देने वाला ।
परिवाही ॥	जलाने वाला ।
परिमोही ॥	मोहित करने वाला ।
दोषी ॥	दोष वाला ।
द्वेषी ॥	द्वेष या शत्रुता करने वाला ।
द्रोही ॥	द्रोह करने वाला ।
दोही ॥	दुहने वाला ।
योगी ॥	योग करने वाला, समाधि लगाने वाला ।
आक्रीडी ॥	खेलने वाला ।
विवेकी ॥	विचार करने वाला ।
त्यागी ॥	त्याग करने वाला ।
रागी ॥	प्रेम करने वाला ।
भागी ॥	भाग लेने वाला ।
अतिचारी ॥	उल्लंघन करने वाला ।
अपचारी ॥	अप्रसन्न करने वाला, दुःखी करने वाला ।
आमोषी ॥	चुराने वाला ।

अभ्याघाती ३-२-१४२—	आक्रमण करने वाला ।
विकाषी ३-२ १४३—	कष्ट देने वाला, प्रहार करने वाला ।
विलासी ॥	विलास करने वाला, खेलने वाला, चमकने वाला ।
विकल्पी ॥	झींग मारने वाला ।
विस्त्रम्भी ॥	विश्वास करने वाला ।
अपलाषी ३-२-१४४—	प्यासा ।
विलाषी ॥	अधिक चाहने वाला ।
प्रलापी ३-२-१४५—	बकवाद करने वाला ।
प्रसारी ॥	फैलने या बहने वाला ।
प्रद्रावी ॥	भागने वाला ।
प्रमाथी ॥	कष्ट देने वाला ।
प्रवादी ॥	॥
प्रवासी ॥	विदेश में रहने वाला ।
निन्दकः ३-२-१४६—	निन्दा करने वाला ।
हिंसकः ॥	हिंसा करने वाला ।
क्लेशकः ॥	कष्ट देने वाला ।
खादकः ॥	खाने वाला ।
विनाशकः ॥	नाश करने वाला ।
परिक्षेपकः ॥	चारों ओर बहने वाला ।
परिराटकः ॥	चिल्लाने वाला ।
परिवादकः ॥	गाली देने वाला, वादी ।
व्यामाषकः ॥	निन्दा करने वाला ।
असूयकः ॥	डाह करने वाला ।
आदेवकः ३-२-१४७—	खेलने या विलाप करने वाला ।
आक्रोशकः ॥	कोलाहल करने वाला ।
देवयिता ॥	खेलने वाला ।
क्रोष्टा ॥	चिल्लाने वाला, गीदड़ ।
चलनः ३-२-१४८—	चलने वाला ।
चोपनः ॥	रेंगने वाला ।
कम्पनः ॥	काँपने वाला ।
शब्दनः ॥	शब्द करने वाला ।
रवणः ॥	शब्द करने वाला ।
पठिता विद्याम् ॥	विद्या पढ़ने वाला ।
वर्तनः ३-२-१४९—	होने या रहने वाला ।
वर्धनः ॥	बढ़ने वाला ।

मविता ३-२-१४८—होने वाला ।
 एधिता ,, बढ़ने वाला ।
 वसिता वस्त्रम् ३-२-१४९—वस्त्र धारण करने वाला ।
 जवनः ३-२-१५०—वेगवान्, तेज ।
 चङ्क्रमणः ,, चारों ओर घूमने वाला ।
 दन्द्रमणः ,, घूमने वाला ।
 सरणः ,, बहने वाला ।
 क्रोधनः ३-२-१५१—क्रोध करने वाला ।
 रोषणः ,, क्रोध करने वाला ।
 मयदनः ,, सजाने वाला ।
 भूषणः ,, सजाने वाला ।
 ऋयिता ३-२-१५२—चरमर शब्द करने वाला ।
 क्षमायिता ,, काँपने वाला ।
 सूदिता ३-२-१५३—मारने वाला ।
 दीपिता ,, चमकाने वाला ।
 दीक्षिता ,, दीक्षा या उपदेश देने वाला ।
 कम्मा-कम्पना युवतिः ,, काम की इच्छा करने वाली युवती ।
 कम्मा-कम्पना शास्त्राः ३-२-१५३—हिलने वाली डाली ।
 लाघुकः ३-२-१५४—चमकने वाला ।
 पातुकः ,, गिरने वाला ।
 जल्पाकः ३-२-१५५—बातूनी ।
 मिचाकः ,, भीख माँगने वाला ।
 कुट्टाकः ,, काटने वाला ।
 लुण्टाकः ,, लूटने या चुराने वाला ।
 वराकः ,, बेचारा ।
 वराकी ,, बेचारी ।
 प्रजवी ३-२-१५६—वेगवामी दूत, हरकारा ।
 जयी ३-२-१५७—जीतने वाला ।
 दरी ,, आदर करने वाला ।
 क्षयी ,, नष्ट करने या होने वाला ।
 विभ्रयी ,,
 अत्ययी ,, बढ़ जाने वाला, या नाश करने वाला ।
 वसी ,, वसन करने वाला ।
 अग्ययी ,, दुःखी न होने वाला ।
 अभ्ययी ,, कष्ट न देने वाला ।
 परिभवी ,, अपमानित करने वाला, गर्व तोड़ने वाला ।

प्रसवी ३-२-१५७—पैदा करने वाला ।
 स्पृहयालुः ३-२-१५८—चाहने की प्रवृत्ति वाला ।
 गृहयालुः ,, पकड़ने या ग्रहण करने की प्रवृत्ति वाला ।
 पतयालुः ,, गिरने की प्रवृत्ति वाला ।
 दयालुः ,, दया करने की प्रवृत्ति वाला ।
 निद्रालुः ,, सोने की प्रवृत्ति वाला ।
 तन्द्रालुः ,, आलस्य की प्रवृत्ति वाला ।
 शयालुः ,, लेटने की प्रवृत्ति वाला ।
 दाहः ३-२-१५९—दान देने वाला, उदार, दानी ।
 धाहः ,, स्तनपान करने वाला ।
 सेहः ,, बाँधने वाला ।
 शद्रुः ,, गिरने वाला ।
 सद्रुः ,, बैठने या विश्राम करने वाला ।
 स्मरः ३-२-१६०—जाने वाला, मृगविशेष ।
 धस्मरः, अधरः ,, मुक्खड़, पेटू, अतिलोभी ।
 भङ्गरः ३-२-१६१—नाश होने वाला, टूटने वाला ।
 मासुरः ,, चमकीला ।
 मेदुरः ,, चिकना, मोटा, घना, पूर्य, भरा हुआ ।
 विदुरः ३-२-१६२—जानने वाला, ज्ञाता ।
 भिदुरम् ,, टूटने वाला ।
 छिदुरम् ,, कटने या टूटने वाला ।
 इत्वरः ३-२-१६३—घूमने वाला, घुमक्कड़ ।
 इत्वरी ,, घूमने वाली ।
 नद्वरः ,, नष्ट होने वाला, अनित्य ।
 जित्वरः ,, जीतने वाला, विजयी ।
 सुत्वरः ,, जाने या बहने वाला ।
 गत्वरः ३-२-१६४—चलनशील ।
 जागरूकः ३-२-१६५—सजग रहने वाला ।
 मायजूकः ३-२-१६६—बारबार या अत्यधिक यज्ञ करने वाला ।
 जअपूकः ,, नित्य जप करने वाला ।
 दन्दशूकः ,, सदा काटने वाला ।
 नम्रः ३-२-१६७—कोमल, विनीत ।
 कम्प्रः ,, काँपने या हिलने वाला ।
 स्मेरः ,, मुस्कराने वाला ।

भजलम् ३-२-१६७—लगातार, निरन्तर ।
 कम्पः " मनोहर, सुन्दर ।
 हिंसः " मारने वाला, हिंसा करने वाला ।
 दीप्तः " चमकने वाला, चमकीला ।
 चिकीर्षुः ३-२-१६८—करने की इच्छा वाला ।
 आशंसुः " चाहने वाला ।
 मिच्छुः " भिक्षा माँगने वाला ।
 विन्दुः ३-२-१६९—जानने वाला, बुद्धिमान् ।
 इच्छुः " चाहने वाला ।
 देवास्त्रिगाति सुमन्थुः ३-२-१७०—सुख चाहने वाला
 देवों की स्तुति करता
 है (ऋ० १-३-४)
 पपिःसोमम् ३-२-१७१—सोमरस पीने वाला ।
 ददिर्गाः " गाय देने वाला ।
 बन्निर्वज्रम् " वज्र धारण करने वाला ।
 जग्मिर्युवा " जाने वाला युवक (ऋ० २-२३-११)
 जग्मिर्बृजमन्त्रियम् " वृज नामक शत्रु को मारने वाला
 (ऋ० २-६२-२)
 जज्ञिः " उत्पन्न करने वाला ।
 दधिः " धारण करने वाला ।
 चक्रिः " करने वाला ।
 सस्त्रिः " चलने या बहने वाला ।
 जग्मिः " जाने वाला ।
 नेमिः " झुकने वाला, पहिये का घेरा ।
 स्वप्नक् ३-२-१७२—सोने वाला ।
 तृष्णक् " प्यास वाला, लोभी ।
 धृष्णक् " ढीठ, अविनीत ।
 शराहः ३-२-१७३—हानिकारक, अनिष्ट कारक, दुष्ट ।
 वन्दारः " प्रशंसा करनेवाला, भाट ।
 भीरुः, भीलुकः, भीरुकः ३-२-१७४—डरपोक, भालू,
 " बाघ, गीदड़ ।
 स्थावरः ३-२-१७५—अचल, एक स्थान पर रहनेवाला ।
 ईश्वरः " शासन करनेवाला, भगवान् ।
 मास्वरः " चमकनेवाला ।
 पेस्वरः " चलनेवाला, नाशकारक ।
 कस्वरः " झुलनेवाला, विकसित होनेवाला ।

बायावरः ३-२-१७६—घूमनेवाला, परिव्राजक ।
 विभ्राट् ३-२-१७७—चमकनेवाला ।
 माः " चमक, प्रकाश ।
 धूः " हानि पहुँचानेवाला, भार, जुआ, बुरा
 विद्युत् " चमकनेवाली, विजली ।
 ऊक् " ताकत, शक्ति ।
 पूः " भरनेवाला ।
 जूः " शीघ्र चलनेवाला ।
 प्रावस्तुत् " सोम पीसनेवाली सील की स्तुति
 करनेवाला ऋत्विग्विशेष ।
 छित् ३-२-१७८—काटने या चुभानेवाला ।
 मित् " अलग करने या तोड़नेवाला ।
 वाक् " बोलनेवाली, वाणी ।
 प्राट् " पूछनेवाला ।
 आयतरत् " प्रशंसा करनेवाला ।
 कटप्रूः " चटाई लेकर घूमनेवाला, घूम-घूमकर
 काम करनेवाला ।
 श्रीः " विष्णु की सेवा करनेवाली, लक्ष्मी; धन
 विद्युत् " चमकनेवाली, विजली ।
 जगत् " चलनेवाला, परिवर्तनशील, संसार ।
 शुहः " हवन करने के लिए अग्नि में घी डालने
 वाला एक स्तुवा ।
 दष्ट " डरनेवाला ।
 धीः " ध्यान करनेवाली, बुद्धि ।
 मित्रभूः ३-२-१७९—व्यक्ति विशेष का नाम ।
 प्रतिभूः " मध्यस्थ, जमानतदार ।
 विभुः ३-२-१८०—सर्व व्यापक, परमात्मा ।
 प्रभुः " स्वामी, मालिक, समर्थ ।
 संभुः " उत्पन्न करनेवाला ।
 मितदुः " परिमित दूरी तक रहने या जानेवाला,
 समुद्र ।
 शवदुः " सैकड़ों भागों से बहनेवाली नदी ।
 शम्भुः " कल्याण उत्पन्न करनेवाले, शंकर ।
 धात्री ३-३-१८१—पोषण करनेवाली, माता, घाय, आँवला
 पृथ्वी ।
 दात्रम् ३-३-१८३—हँसुआ, दाँती, काटनेवाला ।

नेत्रम् ३-२-१८२—ले जानेवाला, आँख ।
 शस्त्रम् ७-२-९—आघात करनेवाला, हथियार ।
 योत्रम्, योक्त्रम् ,, जोता, रस्ती-जिससे बैल गाड़ी या हल
 में बाँधे जाते हैं ।
 स्तोत्रम् ,, प्रशंसा करनेवाला ।
 तोत्रम् ,, अंकुश, घोड़ा ।
 सेत्रम् ,, हड्डियों को बाँधने का घागा ।
 सेक्त्रम् ,, जल सींचने या छिड़कनेवाला पात्र,
 हजारा ।
 मेढ्रम् ,, मूत्रेन्द्रिय ।
 पत्रम् ,, सवारी, वाहन ।
 दंष्ट्रा ,, बड़ा दाँत ।
 नद्ध्री ,, बाँधनेवाली, नाधा ।

पोत्रम् ३-२-१८३—सूअर का यूयन (नयना), हलका फार ।
 अस्त्रिम् ३-२-१८४—डाँड़ा ।
 जवित्रम् ,, हँसुआ ।
 ध्रुवित्रम् ,, मृग चर्म का बना हुआ यज्ञानि
 प्रज्वलित करनेवाला पंखा ।
 सवित्रम् ,, उत्पन्न करनेवाला ।
 खनित्रम् ,, फावड़ा, रम्भा ।
 सहित्रम् ,, सहनेवाला, शान्ति, धैर्य ।
 चरित्रम् ,, रहनसहन ।
 पवित्रम् ३-२-१८५—अनामिका में पहनीजानेवाली ताँबे या
 कुश की अँगूठी ।
 पवित्रम् ,, पवित्र करनेवाला वेदमंत्र, पवित्र
 करनेवाली आग ।

इति पूर्वकृदन्तम् ।

अथ उच्चारकृदन्तप्रकरणम्

दाशः ३-४-७३—जिसको दिया जाय, सेवक, मछुआ ।
 गोघ्नः ,, जिसके लिए गाय या बैल दिया जाय,
 अतिथि, पुरोहित, जामाता ।
 भीमः ३-४-७४—जिससे लोग डरें, भयानक ।
 भीष्मः ,, ,,
 प्रस्कन्दनः ,, कूदने या आक्रमण करने वाला, शिव
 का एक नाम ।
 प्ररक्षः ,, रक्षा करने वाला ।
 मूर्खः ,, बेवकूफ ।
 खलतिः ,, गंजा, खल्वाट ।
 तन्तुः ३-४-७५—सूत, ताँत, डोरा ।
 चर्म ,, मार्ग ।
 चर्म ,, चमड़ा ।
 कृष्णं द्रष्टुं याति, कृष्णदर्शको
 याति ३-३-१०—कृष्ण को देखने के लिए जाता है ।
 इच्छति भोक्तुं वशिः-

वाञ्छति वा ३-३-१५८—भोजन करना चाहता है ।
 भक्नोति भोक्तुम् ३-४-६५—भोजन कर सकता है ।
 अस्ति भवति विद्यते वा भोक्तुम् ,, वह भोजन करने के
 लिए है ।
 अलं भुक्त्वा ३-४-६६—भोजन मत करो ।
 पर्याप्तं भुक्ते ,, पर्याप्त भोजन करता है ।
 कालः समयो वेला अनेहा
 वा भोक्तुम् ३-३-१६७—भोजन करने का समय है ।
 यागाय याति ३-३-११—वह यज्ञ करने के लिए जाता
 है ।
 काण्डलावो व्रजति ३-३-१२—लकड़ी काटने के लिए
 जाता है ।
 कम्बलदायो व्रजति ,, वह कम्बल देने के लिए
 जाता है ।
 पादः ३-३-१६—पैर, चरण ।
 रोगः ,, बीमारी ।

वेशः ३-३-१६—द्वार, मकान ।
 स्पर्शः ,, छूना ।
 सारः ३-३-१७—तत्त्व, बल ।
 अतिसारः ,, दस्त की बीमारी ।
 विसारः ,, एक प्रकार की मछली ।
 पाकः ३-३-१८—पकाना ।
 स्फारः, स्फालः ६-१-४७—फड़कन, धड़कन ।
 परीहारः ,, बचाव, छुटकारा ।
 नीकाशः ६-३-१२३—सादृश्य, प्राकट्य ।
 अनूकाशः ,, प्रतिबिम्ब ।
 प्रकाशः ,, रोशनी ।
 शमः ,, शान्ति ।
 आचामः ,, आचमन ।
 कामः ,, इच्छा ।
 वामः ,, बायाँ, प्रतिकूल, सुन्दर ।
 रागः ६-४-२७—रंग, प्रेम, रंगाई ।
 रङ्गः ,, जहाँ अभिनय हो ।
 प्रासः ,, अस्त्रविशेष ।
 को भवता लामो लब्धः ६-४-२७—तुमको क्या लाभ हुआ ।
 त्यदः ६-४-२८—वेग, तेजी ।
 त्यन्दः ,, बहाव ।
 अवोदः ६-४-२९—छिड़काव, मिगाना ।
 एधः ,, ईधन ।
 ओघः ,, बहाव, छिड़काव ।
 प्रश्रयः ,, शिथिलता ।
 हिमश्रयः ,, वर्ष का शिथिल होना या पिघलना ।
 निचायः ३-३-२०—राशि ।
 निष्पावः ,, ओसाई, अन्न को भूसे से अलग करने की क्रिया ।
 फारः ,, फर, टैक्स ।
 दाराः ,, पत्नी ।
 जाराः ,, उपपत्ति ।
 उपाध्यायः ३-३-२१—अध्यापक ।
 शारः ,, हवा, हरा रंग ।
 नीशारः ,, छाया, आवरण, वस्त्र ।

संरावः ३-३-२२—शब्द ।
 रवः ,, शब्द, ध्वनि ।
 अमिनिष्ठानो वर्णः ८-३-८६—विसर्जनीयवर्ण ।
 अमिनिस्तनति मृदङ्गः ,, मृदङ्ग बजता है ।
 संयावः ३-३-२३—पूआ, ठोकवा, एक प्रकार की मीठी रोटी ।
 संद्रावः ,, भागना, पीछे हटना ।
 संदावः ,, ,, ,,
 श्रायः ३-३-२४—शरण का स्थान ।
 नायः ,, साधन ।
 भावः ,, स्थिति, दशा, पदार्थ ।
 प्रश्रयः ,, सम्मान, आदर, विनय ।
 प्रणयः ,, प्रेम ।
 प्रभवः ,, उद्गम स्थान ।
 विष्ठावः ३-३-२५—कफ ।
 विश्रावः ,, बहाव, प्रसिद्ध ।
 क्षवः ,, कफ ।
 श्रवः ,, कान ।
 अवनायः ३-३-२६—नीचे फेंकना ।
 उन्नायः ,, ऊँचाई ।
 उन्नय उत्प्रेक्षेति ,, उत्प्रेक्षा, कल्पना करना ।
 प्रद्रावः ३-३-२७—भागना, पीछे हटना ।
 प्रस्तावः ,, प्रारम्भ, अवसर ।
 प्रस्तावः ,, बहना, टपकाना ।
 द्रवः ,, भागना, टपकाना ।
 स्तवः ,, स्तुति, प्रशंसा ।
 स्रवः ,, बहना, टपकाना ।
 निष्पावः ३-३-२८—ओसाया गया, भूसे से अलग किया अन्न ।
 अमिलावः ,, लवाई ।
 पवः ,, पछोरना, साफ करना ।
 जवः ,, लवाई ।
 उद्गारः ३-३-२९—चिल्लाना, कहना ।
 निगारः ,, निगलना ।
 गरः ,, निगलना ।

उत्कारः, निकारः ३-३-३०—अन्न का ओसाना, भूसे से
अलग करना ।
मिक्षोत्करः ,, मिक्षा की राशि ।
पुष्पनिकरः ,, फूलों का ढेर ।
संस्तावः ३-३-३१—यज्ञ का वह स्थान जहाँ छन्दोग बैठ
कर मन्त्र पढ़ते हैं ।
संस्तवः ,, परिचय, स्तुति ।
प्रस्तावः ३-३-३२—फैलाव, समतल भूमि ।
प्रस्तरः ,, बन्दल ।
विस्तारः ३-३-३३—लम्बाई चौड़ाई ।
तृणविस्तरः ,, घास का ढेर ।
ग्रन्थविस्तरः ,, पुस्तक का विशद वर्णन ।
विष्टारपंक्तिश्छन्दः ३-३-३४—विष्टारपंक्ति नाम का
एक छन्द ।
उद्ग्राहः ३-३-३५—उठाना, ऊपर उठाना ।
मल्लस्य संग्राहः ३-३-३६—पहलवान की पकड़ ।
द्रव्यस्य संग्रहः ,, द्रव्य का इकट्ठा करना, धन-
संचय ।
परिणामेन शारान् हन्ति ३-३-३७—शतरंज की विशेष चाल
से खेलने वाले को मारता
(जीतता) है ।
एषोऽन्न न्यायः ,, यहाँ यह उचित, फैसला,
निर्णय या तर्क है ।
परिणयः ,, विवाह ।
न्ययः ,, नाश (न्ययङ्गतः पापः)
तव पर्यायः ३-३-३८—तुम्हारी बारी ।
कालस्य पर्यायः ,, समय का अतिक्रमण, बिताना ।
तव विशयः ३-३-३९—तुम्हारी सोने की बारी ।
विशयः ,, सन्देह ।
संशयः ,, ,,
उपशयः ,, पास या बगल में सोना ।
पुष्पप्रचायः ३-३-४०—फूलों का चुनना ।
प्रचयः ,, एकत्र करना, चुनना ।
पुष्पप्रचयश्चौर्येण ,, चोर द्वारा फूलों का एकत्र करना ।
काशी निकायः ३-३-४१—काशी में निवास ।
आकायमग्निं चिन्वीत ,, वह आकाय नामक अग्नि का
चयन-स्थापना करता है ।

कायः ३-३-४१—शरीर ।
गोमयनिकायः ,, गोबर का ढेर ।
चयः ,, राशि, इकट्ठा करना ।
गोमयानां निकेचायः ,, गोबर का अनेक या बार बार
ढेर ।
मिचुनिकायः ३-३-४२—मिखमर्गों का समाज ।
सूकरनिचयः ,, सूअरों का झुंड ।
ज्ञानकर्मसमुच्चयः ,, एक साथ ज्ञान तथा कर्म के मार्ग
पर चलना या समुन्नति ।
व्यावक्रोशी ३-३-४३, ७-३-६—आपस में या परस्पर
गाली गलौज ।
व्यावहासी ,, ,, परिहास ।
साराविणं वर्तते ३-३-४४—चारों ओर घबड़ हो रहा है ।
अवग्राहस्ते भूयात्,
निग्राहस्ते भूयात् ३-३-४५—तुम्हारी हार हो जाय,
तुम्हारा बन्धन हो जाय ।
अवग्रहः पदस्य ,, पैर का पकड़ना ।
निग्रहश्चोरस्य ,, चोर का बन्धन ।
पात्रप्रग्राहेण मिक्षुश्चरति ३-३-४६—हाथ में पात्र ले कर
मिखु घूमता है ।
उत्तरः परिग्राहः ३-३-४७—यज्ञ की वेदी का उत्तरी घेरा ।
नीवाराः ३-३-४८—जंगली धान, तिथी, स्वयं उगने
वाला धान ।
निवरा कन्या ,, कुमारी (न्वारी) लड़की ।
प्रवरा ,, श्रेष्ठ पतिवाली स्त्री ।
उच्छ्रायः ३-३-४९—ऊँचाई, उन्नति ।
उद्यावः ,, मिलावट ।
उत्पावः ,, पवित्र करने वाला (धी) ।
उद्रावः ,, भागना, पीछे हटना ।
पतनान्ताः—
समुच्छ्रायाः ,, उन्नति के अन्त में पतन होता है ।
आरावः, आरवः ३-३-५०—शब्द-शोर गुल ।
आप्लावः, आप्लवः ,, बाढ़, स्नान ।
अवग्रहः अवग्राहः ३-३-५१—अवर्षण, सूखा ।
अवग्रहः पदस्य ,, पैर या चरण का पकड़ना ।

तुलाप्रग्राहेण चरति तुलाप्रग्राहेण वा ३-३-५२—तराजू की
रस्सी पकड़कर घूमता है ।
प्रग्रहः, प्रग्राहः ३-३-५३—रास, वह रस्सी जिससे घोड़े
वगैरह गाड़ी में जोते जाते हैं ।
प्रवरः, प्रवारः ३-३-५४—वस्त्र, चादर ।
परिभवः ३-३-५५—अपमान, अनादर ।
जयः ३-३-५६—जीत, विजय ।
चयः ३-३-५७—राशि, ढेर ।
मयम् ३-३-५८—डर ।
वर्षम् ३-३-५९—वर्षा ।
करः ३-३-६०—विलेखना ।
गरः ३-३-६१—विष ।
शरः ३-३-६२—बाण ।
यवः ३-३-६३—जौ ।
लवः ३-३-६४—लवाई ।
स्तवः ३-३-६५—स्तुति, प्रशंसा ।
पवः ३-३-६६—ओसाना, अन्न को साफ करना ।
विष्टरः ८-३-६७—वृक्ष, आसन ।
वाक्यस्य विस्तरः ३-३-६८—वाक्य का विस्तार ।
ग्रहः ३-३-६९—सूर्य के चारों ओर घूमने वाले तारे ।
वरः ३-३-७०—वरदान, आशीस ।
दरः ३-३-७१—गड्ढा, गुफा, फटन ।
निश्चयः ३-३-७२—निश्चय ।
गमः ३-३-७३—प्रस्थान, जाना ।
वशः ३-३-७४—अधीन, आज्ञाकारी ।
रणः ३-३-७५—युद्ध ।
प्रस्थः ३-३-७६—समतल भूमि, अन्न का एक प्राचीन
तोल ।
विज्जः ३-३-७७—भाषा, रूकावट ।
चक्रम् ३-३-७८—पहिया, एक अस्त्र ।
चिक्किदम् ३-३-७९—आर्द्रता, नमी ।
चक्कनसः ३-३-८०—बैदमानी, दुष्टता ।
प्रघसः ३-३-८१, ३-४-३८—पेट, अधिक खाने वाला ।
विघसः ३-३-८२—आधा चबाया हुआ शास ।
घासः ३-३-८३—घास ।

न्यादः, निघसः ३-३-८४—भोजन करना, भोजन ।
व्यधः ३-३-८५—घाव, चोट ।
जपः ३-३-८६—मन्त्र का बार बार उच्चारण ।
आन्याधः ३-३-८७—वेधना ।
उपजापः ३-३-८८—रहस्य प्रकट कर देना, चुगलखोरी ।
स्वनः, स्वानः ३-३-८९—ध्वनि, शब्द ।
हसः, हासः ३-३-९०—हँसी ।
प्रस्वानः ३-३-९१—ध्वनि ।
प्रहासः ३-३-९२—हँसी ।
संयमः, संयामः ३-३-९३—अनुशासन, रूकावट ।
उपयमः, उपयामः ३-३-९४—विवाह ।
नियमः, नियामः ३-३-९५—रोकने वाला विधान,
कानून ।
वियमः, वियामः ३-३-९६—रोक, विपत्ति ।
यमः, यामः ३-३-९७—अनुशासन ।
निगदः, निगादः ३-३-९८—पढ़ना, पाठ ।
निनदः, निनादः ३-३-९९—ध्वनि, शब्द ।
निपठः, निपाठः ३-३-१००—पढ़ना ।
निस्वनः, निस्वानः ३-३-१०१—शोर गुल, ध्वनि, कोला-
हल ।
निक्वणः, निक्वाणः ३-३-१०२—बीणा का स्वर ।
क्वणः, क्वाणः ३-३-१०३—ध्वनि, शब्द ।
प्रक्वणः, प्रक्वाणः ३-३-१०४—ध्वनि, शब्द ।
मूलकपणः ३-३-१०५—मूलो की अंटिया ।
शाकपणः ३-३-१०६—साग की अंटिया ।
पाणः ३-३-१०७—व्यापार ।
घनमदः ३-३-१०८—घन का घर्मंड ।
उन्मादः ३-३-१०९—पागलपन ।
संमादः ३-३-११०—असावधानी ।
प्रमादः ३-३-१११—भूल, गलती, असावधानी ।
समजः ३-३-११२—पशुओं का झुंड ।
उदजः ३-३-११३—पशुओं का हाँकना ।
समाजो—
ब्राह्मणानाम् ३-३-११४—ब्राह्मणों का समूह ।

उदाजः क्षत्रियाणाम् ३-३-६६—क्षत्रियों का ले जाना ।

अक्षस्य ग्लहः ३-३-७०—पासा फेंकना ।

पादस्य ग्रहः ,, पैर का पकड़ना ।

गवामुपसरः ३-३-७१—गायों का गर्माधान ।

निहवः ३-३-७२—स्तुति, प्रार्थना ।

अभिहवः ,, स्तुति, प्रार्थना ।

उपहवः ,, निमंत्रण ।

विहवः ,, बुलाना ।

प्रह्वायः ,, बुलाना, सम्मन ।

आहवः ३-३-७३—युद्ध ।

आह्वायः ,, पुकारना, बुलावा ।

आहावः ३-३-७४—कुएँ के पास पशुओं के पानी पीने के लिए नाँद ।

हवः ३-३-७५—पुकारना ।

वधेन दस्युम् ३-३-७६—डाकुओं का वध से ।

घातः ,, प्रहार ।

सैन्धवघनम्—सैधानमक ।

अभ्रघनः ३-३-७७—बादलों का समूह ।

अन्तर्घनः, अन्तर्घणः ३-३-७८—बाहीक देश का एक नाम ।

प्रघणः, प्रघाणः ३-३-७९—मकान के प्रधानद्वार के सामने की दालान, पोर्टिको ।

उद्धनः ३-३-८०—ठीहा, वह लकड़ी जिस पर दूसरी लकड़ी रखकर बड़ई छीलता है ।

अपघनः ३-३-८१—शरीर का अंग, हाथ पैर आदि ।

अपघातः ,, मारना, काटना, रोकना ।

अयोघनः ३-३-८२—घन, हथौड़ा ।

विघनः ,, मुंगरी, लकड़ी का हथौड़ा ।

दुघनः, दुघणः ,, कुल्हाड़ी, वृक्ष काटने वाली ।

स्तम्बघ्नः, स्तम्बघनः

स्तम्बघातः ३-३-८३—हँसुआ ।

परिघः, पलिघः ३-३-८४, १-२-२२—ज्योंड़ा, लोहे की गदा ।

पल्यङ्कः, पर्यङ्कः ,, पलंग ।

पर्वतोपघ्नः ३-३-८५—पहाड़ की ढाल ।

सङ्घः ३-३-८६—समूह ।

उद्घः ,, अच्छी तरह जानने वाला, सत्पुरुष, आदर्शपुरुष ।

निघाः ३-३-८७—वृक्ष ।

निमित्तम् ,, चारों ओर से नापा गया ।

पक्त्रिमम् ३-३-८८—पका हुआ ।

उन्त्रिमम् ,, बोया गया ।

कृत्रिमम् ,, बनाबटी ।

वेपथुः ३-३-८९—कँपकँपी ।

श्वयथुः ,, शोथ, फूलना ।

यज्ञः ३-३-९०—यज्ञ ।

याच्ञा ,, प्रार्थना, माँगना ।

विज्ञः ,, चमक, प्रकाश ।

प्रज्ञः ,, सवाल ।

रक्षणः ,, रक्षा, बचाव ।

स्वप्नः ३-३-९१—स्वप्न, सपना ।

प्रधिः ३-३-९२—पहिए की परिधि, घेरा ।

अन्तर्धिः ,, गायब होना, लोप होना ।

उपाधिः ,, कपट, छल, धोखा, उपद्रव ।

जलधिः ३-३-९३—समुद्र ।

कृतिः ३-३-९४—कार्य, रचना ।

चित्तिः ,, एकत्र करना ।

स्तुतिः ,, प्रशंसा ।

स्फातिः ,, शोथ ।

श्रुतिः ,, कान ।

इष्टिः ,, यज्ञ, इच्छा ।

स्तुतिः ,, प्रशंसा ।

कीर्णिः ,, विखेरना ।

गीर्णिः ,, प्रशंसा ।

लूनिः ,, काटना, लवाई ।

धूनिः ,, क्षोभ ।

पूनिः ,, नाश ।

प्रहृन्निः ,, आनन्द, हर्ष ।

चूर्तिः ,, जाना ।

फुस्तिः ,, विकास, फूलना ।

अपचितिः ३-३-९४—हानि, नाश, आदर प्रकट करना ।

सम्पद् ,, सम्पत्ति, सुख ।

विपत् ,, विपत्ति, दुःख ।

संपत्तिः ,, सम्पत्ति, सुख ।

विपत्तिः ,, विपत्ति, दुःख ।

प्रस्थितिः ३-३-९५—प्रस्थान, यात्रा ।

उपस्थितिः ,, विद्यमान होना ।

सङ्गीतिः ,, कई व्यक्तियों का एक साथ गाना
बजाना ।

सम्पीतिः ,, एक साथ पीना ।

पक्तिः ,, पकाना ।

अवस्था ,, दशा

संस्था ,, सभा

ऊतिः ३-३-९७—रक्षण, रक्षा, खेलकूद ।

यूतिः ,, सम्मिलित होना ।

जूतिः ,, वेग, तीव्रता ।

सातिः ,, नाश ।

हेतिः ,, अस्त्र ।

कीर्तिः ,, यश ।

व्रज्या ३-३-९८—इधर उधर घूमना, भ्रमण करना ।

इज्या ,, यज्ञ, पूजा ।

समज्या ३-३-९९—सभा ।

निपद्या ,, गद्दी, बैठने का स्थान, गद्देदार
मचिया, कुर्सी ।

निपत्या ,, फिसलने वाली भूमि ।

मन्या ,, गर्दन का पिछला भाग ।

विद्या ,, विद्या ।

सुत्या ,, सोमरस का निचोड़ना, सोमयाग ।

शय्या ,, विछौना, विस्तर ।

भुत्या ,, मजदूरी ।

इत्या ,, पालकी ।

कृत्या, क्रिया, कृतिः ३-३-१००—काम, रचना ।

इच्छा ३-३-१०१—चाह, अभिलाषा, मनोरथ ।

परिचर्या ,, सेवा ।

परिसर्या ,, पर्यटन, परिभ्रमण ।

सृगया ३-३-१००—शिकार, आखेट ।

अटाट्या ,, धार्मिक विचार से इधर उधर
भ्रमण करना ।

जागरा, जागर्या ,, जागरण ।

चिकीर्षा ३-३-१०२—करने की इच्छा ।

पुत्रकांक्षा ,, पुत्र की कामना ।

ईहा ३-३-१०३—इच्छा ।

ऊहा ,, अनुमान, तर्क ।

भक्तिः ,, बड़ों के प्रति प्रेम ।

नीतिः ,, न्याय ।

आसिः ,, पाना, प्राप्ति ।

दीप्तिः ,, चमक, प्रकाश ।

निगृहीतिः ,, पकड़, रूकावट ।

निपठितिः ,, अध्ययन ।

जरा ३-३-१०४—बुढ़ापा ।

त्रपा ,, लज्जा ।

मिदा ,, फर्क, भेद ।

भित्तिः ,, दीवाल ।

छिदा ,, काटना ।

छित्तिः ,, सूरख ।

गुहा ,, गुफा ।

गूढिः ,, छिपाना ।

आरा ,, मोची का सूजा ।

हारा ,, एक प्रकार का अंगूर लाल, भूरा ।

कारा ,, जेल ।

तारा ,, नक्षत्र, पुतली ।

धारा ,, नदी का प्रवाह, वर्षा ।

आर्त्तिः ,, दुःख, कष्ट ।

रेखा ,, लकीर ।

लेखा ,, लिखना, हिसाब ।

चूडा ,, चोटी ।

धृतिः ,, धैर्य ।

सृजा ,, शुद्धि, सफाई ।

कृपा ,, दया ।

चिन्ता ३-३-१०५—विचार, सोच ।

पूजा ,, आदर, पूजा ।

कथा ३-३-१०५—कहानी ।

कुम्वा ,, मोटा पेटी कोट, यज्ञमंडप का घेरा ।

चर्चा ,, पाठ, पढ़ना, उच्चारण, बातचीत ।

प्रदा ३-३-१०६—भेंट, उपहार ।

उपदा ,, भेंट, नजराना ।

श्रद्धा ,, भक्ति ।

अन्तर्धा, अन्तर्धिः ,, छिपना, गायब होना, लोप होना ।

कारणा ३-३-१०७—कराना ।

हारणा ,, लिवा जाना ।

आसना ,, बैठाना ।

अन्धना ,, ढीला करना ।

घट्टना ,, हिलाना, घिसना ।

वन्दना ,, प्रार्थना, स्तुति ।

वेदना ,, ज्ञान, अनुभव, पीड़ा ।

अन्वेषणा ,, तलाशी, ढूँढना ।

पर्येषणा, परीष्टिः ,, तहकीकात, छानबीन ।

प्रच्छदिका ३-३-१०८—कप, वसन ।

प्रवाहिका ,, दस्त होना ।

चिचिर्चिका ,, खुजली ।

शिरोर्तिः ,, सिरदर्द ।

आसिका ,, बैठना ।

शायिका ,, लेटना, सोना ।

पचिः, पचसिः ,, पच्चातु ।

अकारः ,, 'अ' वर्ण ।

ककारः ,, 'क' वर्ण ।

रेफः ,, 'र' वर्ण ।

मत्प्रथीयः ,, जिस प्रत्यय का अर्थ 'मतुप्' के समान हो ।

आजिः ,, युद्ध ।

आत्तिः ,, एक पक्षी ।

वापिः ,, बावली ।

वासिः ,, घर, मकान ।

कृषिः ,, खेती ।

गिरिः ,, पर्वत ।

उदालपुष्पमल्लिका ३-३-१०९—पूर्वी भारत का एक खेल, जिसमें लिसोड़े के फूल तोड़े या कुचले जाते थे ।

वरणा ,, एक प्रकार का वृक्ष ।

पूरिका ,, पूरी ।

कां त्वं कारिं कारिकां क्रियां, कृत्यां,

कृतिं वा कार्पाः ३-३-११०—तुमने कौन सा काम किया ।

गणिं गणिकां गणनां वा कार्पाः ,, तुमने क्या गिना ।

पाचिं, पाचिकां पचां पक्तिम् ,, तुमने क्या पकाया ।

आसिका ३-३-१११—बैठना ।

शायिका ,, सोना, लेटना ।

अग्रगामिका ,, आगे जाना ।

मवान् इक्षुमल्लिकामहतिं ,, तुम ईख चूसने के अधिकारी हो ।

मवान् मे इक्षुमल्लिकां-

धारयति ,, आपको मुझे ईख चुसाना बाकी है ।

इक्षुमल्लिका उदपादि ,, आपने ईख चूसने का अवसर दिया ।

अजीवनिस्ते शठ भूयात् ३-३-११२—दुष्ट तुम्हारी मृत्यु हो जाय ।

अप्रयाणिः ,, तुम्हारा न जाना हो ।

राजमोजनाः शालयः ३-३-११३—राजा के मोजन योग्य धान ।

हसितम्, हसनम् ३-३-११४, ११५—हँसना ।

पयःपानं सुखम् ३-३-११६—दूध का पीना सुखद होता है ।

गुरोःस्नानं सुखम् ,, गुरु को स्नान कराने में सुख होता है ।

प्रवयणम् २-४-५७—आगे बढ़ाने या ले जानेवाला, भंडुग, कोड़ा, छड़ी ।

प्राजनम् ,,

इधमप्रग्रश्चनः ३-३-११—कुल्हाड़ी ।

गोदोहनी ,, दुधहँण, दूध दुहने का पात्र ।

अन्तर्हणनम् ८-४-२४—बीच में, मध्य में मारना ।
 अन्तर्हणनः ,, बाहीक देश का एक नाम ।
 अन्तर्हणन्ति ,, मध्य में मारता है ।
 अन्तरधानि ,, मध्य में मारा ।
 अन्तरयणम् ८-४-२५—अयनों के समीप सूर्य की स्थिति का समय ।
 अन्तरयनः ,, अयनांशों के बीच का देश ।
 दन्तच्छदः ३-३-११८, ६-४ ९६—ओठ ।
 प्रच्छदः ,, चादर ।
 समुपच्छादः ,, अच्छी तरह ढकनेवाली चादर ।
 आकरः ,, कान (खान) ।
 गोचरः ३-४-११९—चरागाह ।
 संचरः ,, रास्ता मार्ग ।
 वहः ,, कन्या ।
 व्रजः ,, गोशाला ।
 व्यजः ,, ताड़ का पंखा ।
 आपणः ,, बाजार ।
 निगमः ,, वेद, बाजार ।
 निकषः ,, कसौटी ।
 अवतारः ३-३-१२०—घाट, बावली या तालाब में उतरने का मार्ग, ईश्वर का शरीर धारण करना ।
 अवस्तारः ,, पर्दा ।
 रामः ३-३-१२१—परमेश्वर ।
 अपामार्गः ,, चिचिडी ।
 विमार्गः ,, झाड़ू ।
 अध्यायः ३-३-१२२—किसी पुस्तक का भाग ।
 न्यायः ,, फैसला, निर्णय ।
 उद्यावः ,, मिलावट ।
 संहारः ,, नाश ।
 अवहारः ,, युद्धवन्दी, सन्धि ।
 आधारः ,, आश्रय, सहारा ।
 आवायः ,, कपड़ा बुनने का स्थान ।
 ध्रुवोदक्कम् ३-३-१२३—चमड़े का कुप्पा, जिसमें धी रखा जाता है ।

उदकोदञ्चनः ३-३-१२२—पानी खींचने की वाल्टी ।
 आनाथः ३-३-१२४—जाल, जिसमें मछलियाँ पकड़ी जाती हैं ।
 आनयः ,, लाना ।
 आखनः ३-३-१२५—फावड़ा ।
 आखानः-आखः-आखरः
 आखनिकः-आखनिकवकः ३-३-१२५—फावड़ा ।
 दुष्करः कटो भवता ३-३-१२६—आपने कठिनता से चटाई बनाई ।
 ईषत्करः ,, आपने सरलता से चटाई बनाई ।
 सुकरः ,, आपने सुख से चटाई बनाई ।
 ईषन्निमयः ,, थोड़े में बदला जाने वाला ।
 दुष्पमयः ,, कठिनता से बदला जाने वाला ।
 सुविलयः ,, आसानी से पिघलने वाला ।
 निमयः ,, लेन देन ।
 मयः ,, घोड़ा, ऊँट ।
 लभः ,, नाश ।
 ईषत्प्रलम्भः ७-१-६७—थोड़े में पाया गया ।
 दुष्प्रलम्भः ,, कठिनता से पाया गया ।
 सुप्रलम्भः ,, आसानी से पाया गया ।
 उपालम्भः ,, उलाहना ।
 ईषत्लभः ,, थोड़ा लाभ ।
 लाभः ,, फायदा, प्राप्ति ।
 सुलभम् ७-१-६८—सरलता से पाना ।
 दुर्लभम् ,, कठिनता पाना ।
 सुप्रलम्भः ,, सरलता से पाना ।
 अतिदुर्लभम् ,, बड़ी कठिनता से पाना ।
 दुराध्यम्भवम् ३-३-१२७—कठिनता से धनी होना ।
 स्वाध्यम्भवम् ,, सरलता से धनी होना ।
 ईषदाक्यङ्करः ,, थोड़े में धनी बना देना ।
 दुराक्यङ्करः ,, कठिनता से धनी बना देना ।

स्वास्थ्यङ्करः ३-३-१२७—सरलता से धनी बनादेना ।
 आढ्येन सुभूयते ,, सरलता से धनी होता है ।
 ईषत्पानः सोमो भवता ३-३-१२८—आप सोम रस थोड़ा
 सा पी सकते हैं ।
 दुष्पानः ,, कठिनता से पी सकते हैं ।
 सुपानः ,, सरलता से पी सकते हैं ।
 दुःशासनः ,, जिसपर कठिनता से
 शासन किया जा सके,
 एक कौरव ।
 दुर्योधनः ,, जिससे कठिनता से
 युद्ध किया जा सके,
 कौरवों का राजा ।
 निष्पानम् ८-४-३५—पूर्णतया पी जाना ।
 सर्पिष्पानम् ,, घी का पीना ।
 निर्णयः ,, फैसला, व्यवस्था ।
 पुष्पाति ,, पुष्ट करता है, पालन करता है ।
 सुसर्पिष्केण ,, उत्तम घी वाले के द्वारा ।
 अवश्यङ्कारी ३-३-१७०—अवश्य किया जाने वाला ।
 शतन्दायी ,, सौ रुपये दिया जाने वाला ।
 अवश्यं हरिःसेव्यः ३-३-१७१—हरि की सेवा अवश्य
 करनी चाहिए ।
 शतं देयम् ,, सौ रुपये देने हैं ।
 भवतात् भूतिः ३-३-१७४—ऐश्वर्य हो ।
 यन्तिः ६-४-३९—रुकावट, बाधा, शासन ।
 वन्तिः ,, याचना, प्रार्थना ।
 रन्तिः ,, हर्ष ।
 सन्तिः ,, रस्सी, विस्तार ।
 सातिः, सतिः, सन्तिः ६-४-४५—अन्त, नाश, तीव्र
 वेदना ।
 देवा एनं देवासुदेवदत्तः ,,
 अलं दत्त्वा ३-४-१८—मत दो ।
 पीत्वा खलु ,, मत पीओ ।
 साकार्पात् ,, मत करो, मत बनाओ ।
 भक्ष्णारः ,, आभूषण ।

अपमित्य अपमाय याचते ३-४-१९, ६-४-७०—
 याचित्वा अपमयते ,, वह बदले में कोई वस्तु
 देकर माँगता है ।
 अप्राप्य नदीं पर्वतः ३-४-२०—नदी पहुँचने के पहिले
 पहाड़ है ।
 अतिक्रम्य पर्वतं स्थिता नदी ,, पहाड़ लाँघकर नदी
 स्थित है ।
 मुक्त्वा व्रजति ३-४-२१—खाकर जाता है ।
 स्नात्वा मुक्त्वा पीत्वा व्रजति ,, नहाकर खाकर पीकर
 जाता है ।
 विष्णुं नत्वा स्तौति ,, विष्णुको नमस्कार कर
 स्तुति करता है ।
 स्तृत्वा ,, दुःखी होकर, प्रशंसाकर ।
 सूत्वा ,, उत्पन्न करके ।
 धूत्वा ,, हिलाकर, कँपाकर ।
 स्कन्त्वा ६-४-३१—जाकर सूखकर ।
 स्यन्त्वा, स्यन्दित्वा ,,—टपकर, वहकर, कूदकर ।
 शयित्वा १-२-१८—सोकर ।
 कृत्वा ,, करके, बनाकर ।
 मृडित्वा १-२-७—प्रसन्न होकर, अनुकूल होकर ।
 क्लिशित्वा, } ,, दुःखी होकर ।
 क्लिष्ट्वा }
 उदित्वा ,, कहकर ।
 उशित्वा ,, चाहकर, चमक कर ।
 रुदित्वा ,, रोकर ।
 विदित्वा ,, जानकर ।
 मुषित्वा ,, चुराकर ।
 गृहीत्वा ,, लेकर, ग्रहण कर ।
 श्रथित्वा, श्रन्थित्वा १-२-२३—ढोलाकर ।
 गुफित्वा, गुम्फित्वा ,, चारों ओर बाँधकर ।
 कोषित्वा ,, दुर्गन्धित होकर, कष्ट देकर ।
 रेफित्वा ,, गाली देकर, निन्दा कर ।
 वृक्षित्वा, वृञ्जित्वा १-२-२४—घोखा देकर, ठगकर,
 वचकर ।
 लुपित्वा, लुञ्जित्वा ,, तोड़कर ।
 क्षतित्वा, अर्तित्वा ,, साहस कर ।

तृप्तिवा, तर्प्तिवा १-२-२५—प्यासा होकर, तृषार्त्त	होकर ।	ह्रित्वा ७-४-४३—छोड़कर, त्यागकर ।	
मृप्तिवा, मर्प्तिवा ,,	छिड़ककर, सहकर ।	हात्वा ,,	जाकर ।
कृशित्वा, कर्षित्वा ,,	पतला कोकर, कृश होकर ।	जग्ध्वा ,,	खाकर ।
लिखित्वा, लेखित्वा ,,	लिखकर ।	प्रकृत्य ७-१-३७—अच्छी तरह करके ।	
सेवित्वा ,,	सेवाकर ।	अकृत्वा ,,	न करके ।
वर्तित्वा ,,	रह कर ।	परमकृत्वा ,,	अच्छी तरह करके ।
पृप्तिवा ,,	चाहकर, इच्छाकर ।	कोऽसिचत् ६-१ ८६—किसने सींचा ।	
भुक्त्वा ,,	खाकर ।	अधीत्य ,,	पढ़कर ।
उपित्वा ,,	रहकर ।	प्रेत्य ,,	सदा के लिए जाकर, मरकर ।
चुधित्वा, क्षोधित्वा ,,	भूखा होकर, चुधित होकर ।	आगत्य, आगम्य ६-४-३८—आकर ।	
अक्षित्वा ,,	पूजाकर ।	प्रणत्य, प्रणम्य ,,	प्रणामकर ।
अक्त्वा ,,	जाकर ।	प्रहृत्य ,,	मारकर ।
लुप्तिवा, क्षोभित्वा ,,	लोभित होकर, लालच कर ।	प्रमत्य ,,	मानकर, समझ कर ।
लुब्ध्वा ,,	लालच कर ।	वितत्य ,,	फँसाकर ।
जरित्वा, जरीत्वा ७-२-५५—वृद्ध होकर, पुराना होकर		विधाय ,,	करके ।
ग्रक्षित्वा ,,	काट कर ।	प्रदाय ,,	देकर ।
शमित्वा, शान्त्वा ७-२-५६—शान्तकर, अन्तकर, समाप्त कर ।		प्रत्यन्य ,,	खोदकर ।
द्युत्वा, देवित्वा ,,	जुआ खेलकर ।	प्रस्थाय ,,	प्रस्थानकर ।
क्रान्त्वा, क्रन्त्वा, क्रमित्वा ६-४-१८—जाकर, चलकर ।		प्रक्रस्य ,,	चलकर ।
पवित्वा, पूत्वा ,,	शुद्धकर ।	आपृच्छ्य ,,	पूछकर ।
भक्त्वा, भङ्क्वा ६-४-३२—तोड़कर ।		प्रदीव्य ,,	जुआ खेलकर ।
रक्त्वा, रङ्क्वा ,,	रंगकर, प्रसन्न होकर ।	प्रधाय ६-४-६९—पीकर ।	
नष्टा, नष्टा, नशित्वा ,,	नष्ट होकर ।	प्रगाय ,,	गाकर ।
स्मृजित्वा, अक्त्वा, अङ्क्वा ,,	पूजाकर, जाकर ।	प्रपाय ,,	पीकर ।
खात्वा, खनित्वा ,,	खोदकर ।	प्रहाय ,,	छोड़कर ।
दित्वा ,,	तोड़कर ।	प्रसाय ,,	समाप्तकर, अन्तकर ।
सित्वा ,,	नष्टकर, समाप्त कर ।	प्रमाय ,,	नापकर ।
मिस्वा ,,	नापकर ।	निमाय ,,	बदलकर ।
स्थित्वा ,,	ठहर कर ।	उपदाय ,,	भेंट देकर ।
ह्रित्वा ६-४-३२—धारणकर ।		विलाय, विलीय ,,	छिपकर ।
		उत्तार्य ,,	उतारकर ।
		विचार्य ,,	विचारकर ।
		विगणय्य ६-४-५६—गिनकर ।	
		प्रणमय्य ,,	प्रणामकर ।
		प्रयेमिदय्य ,,	बार बार तोड़कर ।
		संप्रधार्य ,,	निश्चय कर, जानकर ।

प्रापय्य, प्राप्य ६-४-५७—पहुँचाकर ।
 प्रक्षीय ६-४-५९—क्षीणहोकर, नष्ट होकर ।
 प्रवाय ६-१-४१—वूनकर ।
 प्रज्याय ६-१-४२—बूढ़ होकर ।
 उपव्याय ६-१-३—ढककर ।
 परिवीय, परिव्याय ६-१-४४—चारों ओर से ढककर ।
 व्यादाय ,, खोलकर, फैलाकर ।
 निमील्य ,, आँख बन्दकर ।
 स्मारं स्मारं नमति शिष्य ३-४-२९—निरन्तर स्मरणकर शिव को नमस्कार करता है ।
 पायं पायम् ,, पी पीकर ।
 भोजं भोजम् ,, खा खाकर ।
 श्रावं श्रावम् ,, सुन सुनकर ।
 गामं गामम्, गमं गमम् ,, जा जाकर ।
 प्रलम्भं प्रलम्भम् ,, पा पाकर ।
 जागरं जागरम् ,, जाग जागकर ।
 यदयं भुङ्क्ते ततः पठति ३-४-२३—यह खाकर पढ़ता है ।
 यदयं भुक्त्वा व्रजति ततोऽधीते ,, जब यह खाकर जाता है तब पढ़ता है ।
 अग्रे भोजं व्रजति, अग्रे भुक्त्वा ३-४-२४—पहिले भोजन कर जाता है ।
 पूर्वभोगम्, पूर्वभुक्त्वा ,, पहिले भोजनकर ।
 अग्रे भोजं भोजं, व्रजति भुक्त्वा भुक्त्वा ,, पहिले खाकर जाता है ।
 चौरङ्कारम् आक्रोशति ३-४-२५—चोर कह कर गाली देता है अर्थात् तुम चोर हो यह कहकर गाली देता है ।
 स्वादुङ्कारं भुङ्क्ते ,, स्वादिष्ट बनाकर भोजन करता है ।
 सम्पन्नङ्कारम् ,, मसाला डालकर ।
 क्षवणङ्कारम् ,, नमक डालकर ।
 अन्यथाकारम् ३-४-२७—दूसरे प्रकार से ।
 एवङ्कारम् ,, इस प्रकार से खाता है ।
 कथङ्कारम् ,, किस प्रकार से ।
 इत्यङ्कारं भुङ्क्ते ,, इस प्रकार से ।

शिरोऽन्यथाकृत्वा भुङ्क्ते ३-४-२७—वह सिर को दूसरी ओर करके खाता है ।
 यथाकारमहं भोक्ष्ये तथाकारं भोक्ष्ये किं तवानेन ३-४-२८—मैं जिस प्रकार से भोजन करूँगा उस प्रकार से करूँगा, इसमें तुम्हारा क्या ?
 कन्यादर्शं वरयति ३-४-२९—कन्या देख कर चुनता है ।
 ब्राह्मणवेदं भोजयति ,, ब्राह्मण जानकर भोजन कराता है ।
 यावद्वेदं भुङ्क्ते ३-४-३०—वह जितना पाता है खाता है ।
 यावज्जीवमधीते ,, वह जब तक जीता है पढ़ता है ।
 चर्मपूरं स्तृणाति ३-४-३१—चमड़े को ढाकने भर फैलाता है ।
 उदरपूरं भुङ्क्ते ,, पेट भर भोजन करता है ।
 गोप्पदं प्रवृष्टो देवः ३-४-३२—गाय के खुर से बने गड्डे भर पानी बरसा ।
 मूषिकाविलप्रम् ,, चूहे की विल भरने भर पानी बरसा ।
 चेलक्नोपं वृष्टो देवः, वस्त्रक्नोपम्, वसनक्नोपम्, ३-४-३३—कपड़ा भिगाने भर पानी बरसा ।
 निमूलकाषं कषति ३-४-३४—जड़ छोड़कर घिसता है ।
 समूलकाषम् ,, जड़ समेत घिसता है ।
 शुष्कपेषं पिनष्टि ३-४-३५—सूखा पीसता है ।
 चूर्णपेषम् ,, पीसकर चूर्ण कर देता है ।
 रूक्षपेषम् ,, पीसकर रूखा कर देता है ।
 समूलघातं हन्ति ३-४-३६—जड़ समेत मारता (नष्ट करता) है ।
 अकृतकारं करोति ,, पहिले न किये गये काम को करता है ।
 जीवग्राहं गृह्णाति ,, जीवित पकड़ता है ।
 पादघातं हन्ति ३-३-३७—पैर से मारता है ।
 उदपेषं पिनष्टि ,, जल डालकर पीसता है ।

हस्तवर्तं वर्तयति ३-४-३९—हाथ से गोली बनाता है ।
 करवर्तम् ,, हाथ से गोली बनाता है ।
 हस्तग्राहं गृह्णाति,
 करग्राहम्, पाणिग्राम् ,, हाथ पकड़ता है ।
 स्वपोषं पुष्पाति, धनपोषम् ३-३-४०—धन से पालन-
 पोषण करता है ।
 गोपोषम् ,, गाय से पालन
 पोषण करता है ।
 चक्रबन्धं बध्नाति ३-४-४१—पहिये में बाँधता है ।
 क्रौञ्चबन्धं बद्धः ३-४-४२—क्रौञ्च गाँठ से बँधा है ।
 मयूरिकाबन्धम् ,, मयूर गाँठ से बँधा है ।
 अट्टालिकाबन्धम् ,, अट्टालिका गाँठ से बँधा है ।
 जीवनानां नश्यति ३-४-४३—जीवन नष्ट होता है । मर
 जाता है ।
 पुरुषवाहं वहति ,, पुरुष बोता है अर्थात् भृत्य
 स्वामी को अपने ऊपर बोता
 है ।
 ऊर्ध्वशोषं शुष्यति ३-४-४४—ऊपर ही ऊपर सूखता है ।
 ऊर्ध्वपूरं पूर्यते ,, ऊपर ही ऊपर भरता है ।
 घृत्निधायं निहितं जलम् ३-४-४५—घी की तरह जल
 रखा है ।
 अजकनानां नष्टः ,, बकरे की तरह नष्ट
 हो गया ।
 मूलकोपदंशं मुञ्चते ३-४-४७—मूली काट कर भोजन करता
 है अर्थात् मूली के साथ
 भोजन करता है ।
 दण्डोपघातं गाः कालयति ३-४-४८—लाठी से मार कर
 गायों को एकत्र
 करता है ।
 दण्डेन चोरमाहत्य
 कालयति ,, लाठी से चोर को मार
 कर गायों को एकत्र
 करता है ।
 पाश्वर्षोपपीडं क्षेते ३-४-४९—करवट बदल कर सोता है ।

मजोपरोधं गाः स्थापयति, व्रजेन व्रजे
 उपरोधं वा ३-४-४९—गोशाले में घेर कर गायों को
 रखता है ।
 पाण्युपकर्षं धानाः संगृह्णाति,
 पाणानुपकर्षं पाणिनोपकर्षं वा ,, हाथ से खींचकर धान्य
 संग्रह करता है ।
 केशग्राहं केशेषु गृहीत्वा
 वा युध्यन्ते ३-४-५०—बाल पकड़ कर लड़ते हैं ।
 हस्तग्राहं
 हस्तेन गृहीत्वा वा ,, हाथ पकड़ कर ।
 द्व्यंगुलोत्कर्षं खण्डिकां छिनत्ति ३-४-५१—दो अंगुल का
 टुकड़ा काटता है ।
 द्व्यंगुलेन द्व्यंगुलेवोत्कर्षम् ,, ,, ,,
 शय्योत्थायं धावति ३-४-५२—विस्तर से उठकर दौड़ता है ।
 यष्टिग्राहं युध्यन्ते ३-४-५३—लाठी लेकर लड़ते हैं ।
 लोष्टग्राहम् ,, ढेला लेकर ।
 अस्यपगारम्, अस्यपगोरं युध्यन्ते ३-१-५३—तलवार उठा
 कर लड़ते हैं ।
 भ्रूविक्षेपं भ्रुवविक्षेपं कथयति ६-४-५४—बह चारों ओर
 दृष्टि डालकर बात करता है ।
 शिर उत्क्षिप्य ,, एक ओर सिर करके ।
 उरःप्रतिपेषं युध्यन्ते ३-४-५५—छाती से छाती मिलाकर
 लड़ते हैं ।
 उरोविदारं प्रतिचस्करे नखैः ,, पंजे से हृदय विदीर्ण कर
 दिया ।
 गेहानुप्रवेशमास्ते ३-४-५६—घर में घुस घुसकर बैठता
 है ।
 गेहङ्गेहमनुप्रवेशम् ,, ,,
 गेहमनुप्रवेशमनुप्रवेशम् ,, ,,
 गेहानुप्रपातम् ,, ,,
 गेहानुस्कन्दम् ,, ,,
 द्व्यहात्यासं गाः पाययति ३-४-५७—दो दिन बाद गायों
 को पानी पिलाता है ।
 द्व्यहमस्यासम् ,, ,,
 द्व्यहतर्षम् ,, ,,
 द्व्यहन्तर्षं ,, ,,

नामादेशमाचष्टे ३-४-५८—नाम बताकर कहता है ।
 नामग्राहमाह्वयति ,, नाम लेकर बुलाता है ।
 उच्चैःकृत्वा उच्चैःकारमाचष्टे ३-४-५९—जोर जोर से
 बुरा भला कहता है ।
 नीचैःकृत्वा नीचैःकृत्य नीचैःकारं प्रियं ब्रूते ,, धीरे से प्रिय
 वचन कहता है ।
 तिर्यक्कृत्य तिर्यक्कृत्वा तिर्यक्कारंगतः ३-४-६०—
 पूरा करके (समाप्त करके) चला गया ।
 तिर्यक्कृत्वा काष्टंगतः ,, लकड़ी को टेढ़ी करके चला गया ।
 मुखतःकृत्य मुखतःकृत्वा गतः ३-४-६१—सामने करके
 गया ।
 मुखतःकारम् मुखतोभूय मुखतोभूत्वा मुखतोभावम् ,, ,,

नानाकृत्य नानाकारम् ३-४-६२—अनेक करके ।
 विनाकृत्य विनाकृत्वा विनाकारम् ,, नष्ट करके ।
 नानाभूय नानाभूत्वा नानाभावम् ,, अनेक होकर ।
 एकधाभूय एकधाभूत्वा एकधाभावम् ,, एक होकर ।
 एकधाकृत्य एकधाकृत्वा एकधाकारम् ,, एक करके ।
 हिरक्कृत्वा ,, नष्ट करके ।
 पृथक्भूत्वा ,, अलग होकर ।
 तूष्णींभूय, तूष्णींभावम् ३-४-६२—चुप होकर ।
 अन्वग्भूय अन्वग्भूत्वा अन्वग्भावं वा
 आस्ते ३-४-६४—आगे, बगल, में पीछे या अनुकूल हो
 कर ठहरता है ।
 अन्वग्भूत्वातिष्ठति ,, वह पीछे ठहरा है, वह प्रतिकूल है ।

इति उत्तरकृदन्तप्रकरणम्

अथ वैदिकप्रकरणम्

प्रथमोऽध्यायः

पुनर्वसुर्नक्षत्रं पुनर्वसू वा १-२-६१—पुनर्वसु नक्षत्र के दो
 तारे ।
 विशाखानक्षत्रं विशाखेवा १-२-६२—विशाखा नक्षत्र के
 दो तारे ।
 क्षेत्रस्य पतिना वयम् ऋ. ४-५७-१/१-४-९—हम यज-
 मान क्षेत्र के स्वामी देवता के साथ ।
 नभस्वत् १-४-९—आकाश की तरह ।
 अङ्गिरस्वत् ,, अङ्गिरा की तरह ।
 मनुष्वत् ,, मनुष्य की तरह ।
 वृषयवसुः ,, इन्द्र का कोष जिसका धन दान दिया
 जाय ।
 कृषणश्वः ,, मेना के पिता का नाम ।
 स सुष्टुभा स ऋक्वता गयेनऋ. ४-५०-५१ः—४-२०—
 वह (वृहस्पति) सुन्दर स्तुति वाले तथा दीप्तिमान्
 अंगिराओं द्वारा (बलामुर का नाश किया) ।

नेन हिन्वन्त्यपि वाजिनेषु ऋ. १०-७१-५-५, अर्थ जानने वाले
 व्यक्ति को निरूपणीय
 अर्थ के विषय में अलग
 नहीं करते ।
 हरिश्चो याह्योक आ = घोड़ों पर चढ़कर घर आओ ।
 आमन्द्रैरिन्द्र हरिमिर्याहि ऋ ३-४१-१ ,, —इन्द्र, मतवाले
 घोड़ों पर चढ़कर
 घर आओ ।
 समीधेदस्युहन्तमम् ऋ ६-१६-१५-१-२-६—दस्युओं को
 मारने वाले तुमको
 प्रज्वलित किया ।
 पुत्रईधेअथर्वणः ऋ ६-१६-१४,, —अथर्वा के पुत्र ने तुमको
 प्रज्वलित किया ।
 बभूव=हुआ ।

इति प्रथमोऽध्यायः

अथ द्वितीयोऽध्यायः

धवाग्वाग्निहोत्रं जुहोति २-३-३—यवागू नामक हविष् से हवन करता है ।

गामस्य तदहः समायादीव्येयुः मै० सं० १-६-११—

पुरुषमृगश्चन्द्रमसे = चन्द्रमा के लिए नर मृग ।

गोधाकालकादार्वाघाटस्ते वनस्पतीनाम्—वन देवता के लिए गोह, काल का पक्षी और दार्वाघाट ।

या खर्वेण पिबति तस्यै खर्वो जायते=जो विकलाङ्ग के साथ पीती है उसके विकलाङ्ग उत्पन्न होता है ।

घृतस्य घृतेन वा यजते = घी से हवन करता है ।

घस्तां नूनम्=मैंने अवश्य खाया ।

सग्धिश्चमे=मेरे साथ खानेवाले हो ।

हेमन्तशिशिरौ=हेमन्त और शिशिर ।

अहोरात्रे=दिन और रात ।

घृत्रहा घृत्रं हनति=घृत्र को मारने वाले (इन्द्र) घृत्र को मारते हैं ।

अहिः शयत उपस्पृक् ऋ १-३२-५—साँप नीचे सोता है ।

त्राध्वं नो देवाः ऋ ११-२९-६—देवगण, हमें बचाइये ।

दातिप्रियाणिचिद्वसु ऋ. ४-८-३—वे यज्ञाभिलाषी जयमान को अभोष्ट धन देते हैं ।

पूर्णां विवष्टि ऋ. ७-१६-११—हवि पूर्ण लुवा को चाहता है ।

अक्षन्नमीमदन्त हि ऋ. १-८२-२—उन लोगों ने अच्छी तरह भोजन किया और प्रसन्न हुए ।

माह्नमित्रस्थ = मित्रों के प्रति कुटिलता न हो ।

धूर्तिःप्रणङ्मर्त्यस्य = हम पर मनुष्यों का आक्रमण न हो ।

सुरुचो वेन आवः यजुः० १३-३—कात्तिमान् (सूर्य ने) अपने सुन्दर प्रकाश से (संसार को) प्रकाशित किया ।

मा न आधक् ऋ. ६-६१-१४—हमको दुःखी मत करो ।

आ प्रा घावापृथिवी ऋ १-११५-१—अकाश तथा पृथ्वी को अपनी किरणों से पूर्ण किया ।

परावर्गमारभ्यद्यथा ऋ. ८-१२-६४—बोझ ढोनेवाले की तरह फेंको ।

अक्रन्नुषसः ऋ. १-५२-२—प्रातः काल प्राणियों को ज्ञान दिया ।

त्वे रयिजागृवांसो अनुग्मन् ऋ. ६-१-३—धनाभिलाषी यजमान तुम्हारा अनुसरण कहते हैं ।

अज्ञत तदा अस्य दन्ताः= तब इसके दांत अज्ञात थे, अर्थात् निकले नहीं थे ।

नताभगृम्भन्नजनिष्ट हि षः ऋ. ५-२-४—वह उत्पन्न हो गया था, परन्तु उन्होंने उसे नहीं पकड़ा ।

इतिद्वितीयोऽध्यायः

अथ तृतीयोऽध्यायः

अभ्युत्सादयामकः=ऊपर बैठाया ।

प्रजनयामकः=उत्पन्न किया ।

चिकयामकः=चुनवाया, एकत्र कराया ।

रमयामकः=खेलाया ।

पावयां क्रियात्=पवित्र या शुद्ध किया ।

विदामकम्=जाना ।

गृहानजुगुपत् युधम्=तुम दोनों ने हमारे घरों की रक्षा की ।

मा त्वायतो जरिषुः-

काममूनयी ऋ. १-५३-३—तुम अपने यजमान की अभिलाषा भंग मत करो ।

मा त्वाग्निध्वनयीत् ऋ. १-१६-१५—अग्नि तुमसे शब्द न कराये ।

इदं तेभ्योऽअकरं नमः ऋ. १०-८५-१७—उनको यह नमस्कार किया ।

अमरत् = मर गया ।

अदरत् = विदीर्ण किया ।

यत्सानोः सानुमारुहत् ऋ १-१०-२—जब एक चोटी से दूसरी चोटी पर चढ़ा ।

निष्टव्यं चिन्वीत पशुकामः ॥ पशु कामना से विष्टव्य नामक ईंटो का चयन करना चाहिये ।

स्पर्धन्ते वा उ देवहूये ऋ ७-८५-२—देव स्तुति के समय शत्रु हमारी स्पर्धा करते हैं ।

प्रणीयः = ले जाने योग्य ।

उन्नीयः = ऊपर ले जाने योग्य ।

उच्छिष्यः = त्यागने योग्य ।

मर्यः = मरने योग्य ।

स्तर्या = फैलाने या ढकने योग्य ।

ध्वर्यः = झुकने योग्य ।

खन्यः, खान्यः = खोदने योग्य ।

शुन्धध्वं दैव्याय कर्मणे-

देवयज्यायै-यजुः १-१३—देवकार्य अथवा देवयाग के लिए (इस जल से) शुद्ध हो गये ।

आपृच्छ्य धरुणं-

वाज्यर्षन्ति ऋ. ९-१०७-५—कर्म पूछने वाले तथा कर्म करने वाले यजमान को सोम अन्न देता है ।

प्रतिषीव्यः = सीने योग्य ।

ब्रह्मवाद्यम् = ब्रह्म का निरूपण या ब्रह्मकी व्याख्या ।

मान्यः = होने योग्य ।

स्ताव्यः = स्तुति करने योग्य ।

उपचाय्यपृढम् = संग्रह करने योग्य सोना ।

उपचेयपृढम् = संग्रह करने योग्य अन्य वस्तु ।

ब्रह्मवर्णि त्वा चत्रवनिम्-

वाज सं १-१७-५, १२-६ ३—ब्राह्मण और चत्री को रक्षा करने वाले तुमको ।

उत नो गोवर्णिधियम् ऋ ६-५३-१०—

येपथां पथि रक्षयः ऋ १०-१४-११—जो मार्गों की रक्षा कराने वाले हैं ।

चतुरक्षौपथिरक्षी = सुन्दर अथवा चार आँख वाले मार्ग रक्षक ।
हविर्मधोनाममि ऋ ७-१०४-२१—हविमयने वालों के सामने ।

पूतनाषाद् = इन्द्र ।

दित्यवाद् = दो वर्ष का बछड़ा ।

कव्यवाहनः = भ्रातृद्वान्न ले जाने वाला ।

पुरीषवाहनः = मल ले जाने वाला ।

पुरीष्यवाहनः = जल ले जाने वाला ।

अग्निश्च हव्यवाहनः = हवि ले जाने वाले अग्नि ।

हव्यवान्नग्निरजरः पिता नः ऋ ३-२-२—अजर तथा हवि ले जाने वाले अग्निदेव हमारे पिता हैं ।

अब्जाः ऋ ७-३४-१६—जल में उत्पन्न होने वाले ।

गोजाः ऋ ४-४०-५—स्वर्ग में उत्पन्न होने वाले देवता ।

गोषा इन्द्रो नृषा असि ऋ ९-३-१०—गोदान करने वाले इन्द्र, आप मानव जाति के प्रेमी हैं ।

इयं शुष्मेमिर्विसखा-

इचारुजत् ऋ. ६-६१-२—यह (सरस्वती नदी) सुखाने वाले आत्मवल से कमल की जड़ खोदने वाले की तरह (पर्वत की चोटियों को) तोड़ती है ।

आदधिक्राः शवसा-

पञ्चकृष्टीः ऋ ४-३८-१०—दधिक्रा (अश्वाकार अग्नि-देव) अथवा दूध पाने वाले, आप अपने प्रभाव से पाँचों (देव, असुर, राक्षस मनुष्य तथा पितर) की सृष्टि करते हैं ।

अग्नेगाः=अगुआ, प्रधान ।

श्वेतवाः ऋ ८-२-६७—जिसको सफेद धोड़े ले जाते हैं ।

उक्थशाथजमानः ऋ २-३९-१—सामवेद के मन्त्रों का पढ़ने वाला, यजमान ।

पुरोडाः ऋ ३-२८-२—एक प्रकार की बलि, चावलों से बनाई गई पूरी ।

अवयाः ऋ १-१७३-१२—पुरोहित, पुजारी ।

उपयद् = यजुर्वेद के ग्यारह छोटे मन्त्र भाग ।

सुदामा ऋ. ६-२०-७—उदारता से दान करने वाला ।

सुधीवा = सुन्दर बुद्धि वाला ।

सुपीवा = सुन्दर पान करने वाला ।

भूरिदावा ऋ. ११-२७-१७—उदार, दानी ।

घृतपावा यजु. ६-१९—घी पीने वाला ।

कीलालपाः ऋ. १०-९१-१४—अमृत पीने वाले ।

यो मातृहा पितृहा = जो माता या पिता का वध करने वाला है ।

अहं द्यावापृथिवी आततानः ३-२-१०५—मैंने आकाश और पृथिवी को विस्तृत किया ।

चक्राणानृष्णिम् ऋ० ८-७-२३—शक्तिमान् वताते हुए (मरुद्गण) ।

योनो अग्ने अररिवाँ

अघायुः ऋ. १-१४७-४—हे अग्निदेव, जो हमारे साथ पाप करने वाला हो अथवा शत्रु हो ।

वीरुधः पारथिष्णवः = साफल्य प्रदान करने वाली लताएँ ।
मविदुः = होने वाला ।

अघायुः = पाप करने वाला ।

जवेयामिथूनः ऋ. १-११२-२१—जिस पालन से तरुण (पुष्कुत्स) के वेगवान् ।

ऊर्वोस्तु मेजवः ऋ. ५-८२-६—मेरी जाँघों में बल हो ।

देवस्य सविदुः सवे ,, सूर्यदेव की आज्ञा से ।

वृष्टिदिवः ऋ. ११-६-५—स्वर्ग से वर्षा की ।

सुम्नमिदुःये ऋ. ६-७०-४—यज्ञ के लिए सुख की प्रार्थना करते हैं ।

पचात्पक्तीरुत ऋ. ४-२४-७—अथवा जो पुरोडाश तैयार करते हैं ।

इयं ते नव्यसीमतिः ८-७४-७—हे अग्नि, यह तुम्हारी नवीन स्तुति ।

विक्रिः = ज्ञान ।

भूतिः = होना, ऐश्वर्य ।

अग्न आयाहि वीतये ऋ. ६-१६-१०—हे अग्निदेव, हव्य-भक्षण के लिए आइये ।

रातौ स्यामोयासः म-ऋ. ७-१-२०—हम दोनों (स्तोता और यजमान) तुम्हारे दान में रत रहें ।

सूपसदनः तैत्ति. सं. ७-५-२०—अग्नि ।

सुवेदनाम कृणोदगाम्-

ग्रहणे ऋ. १०-११२-८—स्तोता के लिए गोप्राप्ति सुलभ कर दी थी ।

देवो देवेमिरागमत् ऋ. १-१-५—हे अग्निदेव, देवों के साथ आइये ।

इदं तेभ्योऽकरं नमः ऋ. १०-८५-७—यह उनको नमस्कार है ।

अग्निमद्य होतारमवृणोतायं यजमानः = अब यह यजमान अग्नि को होता चुनता है ।

अद्य ममार = आज मरता है ।

प्रण आयूषि तारिषत् ऋ. ४-३९-६—हमारी आयु को बढ़ाएँ ।

सुपेशसस्करतिजोविषद्भि आशा—

विषदर्शसानाय ऋ. १०-९९-७—(इन्द्र ने) शत्रु नाश के लिए हमको आयुष दिया अर्थात् प्रोत्साहित किया ।

पताति विद्युत् = बिजली गिरती है ।

प्रियः सूर्ये प्रियो अग्ना-

मवाति ऋ. ५-३७-५—वह सूर्य और अग्नि का प्रेमपात्र होता है ।

करवाव, करवावः = हम दोनों करते हैं ।

सुतेभिः सुप्रयसामादयैते ऋ. ४-४१-३—निचोड़े हुए सोम रस से सोमपान करने वाले प्रसन्न हों ।

योयजातिथजातइत् ऋ. ८-३१-१—जो बराबर यज्ञ करता है ।

पशूनामीशै = पशुओं का स्वामी हूँ ।

ग्रहा, गृह्यान्तै = सोमपात्र ग्रहण करना चाहिए ।

सुप्रयसामादयैते ऋ. ४-४१-३—सोमपान करने वाले प्रसन्न हों ।

अहमेव पशूनामीशै = मैं ही पशुओं का (सांसारिक जीवों का) स्वामी हूँ ।

नेज्जिह्वायन्तो नरकंपतामः = कपटाचरण करने से नरक में न पड़े ।

गृमाय जिह्वया मधु = जिह्वा से मधुपान करो ।

वधान्देव सवितः = हे सूर्य देव, बाँधो ।

गृम्णामि ते ऋ. १०-८५-३६ = तुम्हारे (हाथ को) पकड़ता हूँ ।

मध्वाजभार = मधु को लिया ।

आयडा शुष्मस्य मेदति ऋ. ८-४०-११-शुष्म के अण्डों को (बच्चों को) तोड़ता (मारता) है ।

जरसा मरते पतिः ऋ. १०-८६-११-वृद्धावस्था से पति मरता है ।

इन्द्रो वस्तीन नेषतु = इन्द्र इस स्थान से ले जाएँ ।

इन्द्रेण युजातेरुषम-

वृत्रम् ऋ. ७-४८-१३-इन्द्र की सहायता से हम शत्रु वृत्र का बध करें ।

शुरि दक्षिणायाः ऋ. १-१६४-९-अभिलाषापूर्ति अथवा पृथ्वी का भार वहन करने में समर्थ ।

चषालं ये अश्वयू-

पाय तक्षति ऋ. १-१२-६-जो यज्ञीय स्तम्भ के अग्रभाग को अश्व-स्तम्भ के लिए तैयार करते हैं ।

ब्रह्मचारिणमिच्छते-ब्रह्मचारी को चाहता है ।

प्रतीपमन्य ऊर्मियुध्यति = दूसरा जाँघों से विपक्ष से युद्ध करता है ।

मधोस्तृप्ता इवासते = मधु से सन्तुष्ट हुए बैठे हैं ।

नरः पुरुषः = व्यक्ति ।

ऊधा स वीरैर्दशमिर्वियूयाः = वह दसवीरों से मिल सकता है, युद्ध कर सकता है ।

इषोऽग्नीनाधास्यमानेन = कल अग्नि स्थापित करने वाले के द्वारा ।

तमसो गा अदुक्षत् ऋ. १-३३-१०-(तब इन्द्र ने चमकते हुए वज्र से) मेघ द्वारा जल बरसाया अर्थात् अन्धकार स्वरूप काले मेघ से जल बरसाया ।

मित्र वयंच सूरथः = हम और विद्वान् दोनों मित्र हैं ।

अन्नादाय = अन्न भोजी के लिए ।

मन्त्रं वोचेमाग्नये = अग्नि के लिए मन्त्र का उच्चारण करें ।

पितरं च दृशेयं मातरंच ऋ. १-२४-१-मैं पिता और माता को देखूँ ।

वधन्तु स्वा सुष्टुतयः = उत्तम स्तुतियाँ तुम्हारी वृद्धि करें ।

विश्रृण्वरे = उन्होंने सुना ।

वञ्जिर्वज्रम् ऋ. ६-२३-४-वज्र धारण किया ।

पपिः सोमम् = सोमपान किया ।

ददिर्गाः = गोदान किया ।

जग्मियुं वा ऋ. ७-२०-२१ = युवक गया ।

जज्जिर्वृत्रममित्रियम् ऋ. ९-६१-२०-अपने शत्रु वृत्र को मारा ।

जज्ञिः = जमाया, उत्पन्न किया ।

ततुरिः ऋ. ४-३९-२०-उछला अथवा तेरा ।

जगुरिः ऋ. १०-१०८-१-निगला ।

वक्षे रायः-घन कहने के लिए ।

तावामेधे ऋ. ५-६६-३-प्रसिद्ध तुम दोनों के जाने के लिए ।

शरद्वो जीवसेधाः ऋ. ३-३६-१०-जीने के लिए सौ वर्ष दो, अर्थात् हम सौ वर्ष जीवित रहें ।

द्रेपे = भोजने के लिये ।

गवामिव श्रियसे ऋ. ५-५९-३-शोभा के लिए गायों की (सोंग की) तरह ।

जठरं वृणध्यै = उदर को (सोमरस से) भरने के लिए ।

आहुवध्यै ऋ. ६-६०-१३-अनुकूल करने के लिए ।

राधंसः सह मादयध्यै ,, हव्य द्वारा प्रसन्न करने के लिए ।

वायये पिवध्यै ऋ. ६-२४-५-वायु को पीने के लिए ।

दातवाड ऋ. १-४६-७-देने के लिए ।

सूतवे ऋ. १०-१८४-३-प्रसव के लिए ।

कर्तवे ऋ. १-८५-९-करने के लिए ।

प्रयातुम्, प्रयै ऋ. १-१४२-६-जाने के लिए ।

रोहुम्, रोहिध्यै = जमाने या उगाने के लिए ।

अन्यथितुम्, अन्यथिष्यै = दुःखी न होने के लिए ।

द्रष्टुम्, दृशे ऋ. १-२०-१—देखने के लिए ।

विख्यातुम्, विख्या = प्रसिद्ध होने के लिए ।

विभाजं नाशक्त = विभाग न कर सके ।

अपलुपं नाशक्त = लोप करने में समर्थ न हो सके ।

ईश्वरो विचरितो = ईश्वर विचरण करने के लिए ।

ईश्वरो विलिखः = ईश्वर चित्र बनाने के लिए ।

न म्लेच्छितवै = म्लेच्छ भाषा (अप शब्द) न बोलने के लिए ।

अवगाहे = अवगाहन करने के लिए ।

दिदक्षेण्यः ऋ. १-१०६-५ = देखने की इच्छा न करने के लिए ।

भूर्यस्पष्टकृत्वं ऋ. १-१०-२ = अनेक सोमयान करने के लिए ।

रिपुणा नावचक्षे ऋ. ४-५८-५ = शत्रु से न देखे जाने के लिए ।

आसंस्थातोः सीदन्ति

गो. प. ब्रा. ११-२-१०—समाप्ति तक दुःखी होते हैं ।

उदेतोः " " उदय होने तक ।

अपकर्तोः " " अपकार करने तक ।

प्रवदितोः " " बोलने तक ।

प्रचरितोः " " चलने तक ।

होतोः तै. ब्रा. १-४ ४-२—हवन करने तक ।

आतमितोः तै. ब्रा. १-४-४-२—नष्ट होने तक ।

काममाविजनितोः तै. सं. ११-५-१-५—उत्पन्न होने तक पूर्णतया ।

संभवामः = उत्पन्न होने तक, उत्पन्न होते हैं ।

पुरा क्रूरस्य विसृपो विरप्शिन यजु. १-२८—अनेक योद्धा वाले संग्राम होने के पहिले, हे विष्णु ।

पुरा जत्रुम्य आतृदः ऋ. ८-१-१२—पहिले गर्दन से रक्त-स्राव पर्यन्त ।

इति तृतीयोऽध्यायः

अथ चतुर्थोऽध्यायः

रात्री व्यस्यदापती ऋ. १०-१२७-१—आती हुई रात्रि ।
वह्नीपु हित्वा १-३२-१—वह्नी नाम की ओषधियों में छोड़कर ।

विम्बी ऋ. ५-३८-१—अनेक प्रकार से होने वाली ।

प्रम्बी ऋ. १-१८८-५—अच्छी तरह होने वाली ।

रथीरमुन्मुद्गलानी ऋ. १०-१२०-२—मुद्गलानी रथ पर सवार हुई ।

आसुरी वै दीर्घजिह्वी देवानां यज्ञवाट्
कद्रुश्च वै कमण्डलूः = भूरे रंग का कमण्डलु ।

गुग्गुलुः—गूगल ।

मधूः—शहद ।

जतूः—लाख ।

पतयालुः—गिरने या उड़ने वाली ।

आविष्टयोवर्धते=दृश्यमान बढ़ता है ।

वार्षिकम् = वर्षा ऋतु में होने वाला ।

वासन्तिकम् = वसन्त ऋतु में होने वाला ।

हेमन्तिकम् = हेमन्त में होने वाला ।

शौनकिनः = शौनक से कहे गये वेदमन्त्र को पढ़ने वाले ।

वाजसनेयिनः = वाजसनेय से कहे गये वेदमन्त्र को पढ़ने वाले ।

शौनकीया शिक्षा = शौनक से कही गयी शिक्षा ।

शरमयं वर्हिः = सरई का कुश ।

यस्य पर्णमथी जुहुः = जिसका जुहू पत्तों का बना हुआ है ।

मौञ्जशिक्ष्यम् = मौञ्ज का बना हुआ सिकहर ।

वाध्रौर ज्जुः—ताँत की बनी हुई रस्सी ।

वैल्वो यूपः—बेल की लकड़ी का खम्भा ।

समेयो युवा सभा में बैठने योग्य (सम्य) युवक ।

मेध्याय च विद्युत्याय च यजु. १६-३८—मेघ में तथा विजली में होने वाले (शिव को नमस्कार है)

मौञ्जवतः = मुञ्जवान् पर्वत पर होने वाला ।

सोमस्येव मौञ्जवतस्य मधुः = मुञ्जवान् पर्वत पर होने वाली सोमलता का खाने वाला ।

तमुत्वा पाथ्यो वृषा ऋ. ६-१६-१५—आप सन्मार्गवर्ती
अथवा हृदाकाशवर्ती सेचन
कर्ता है ।

चनोदधीत नाद्यो गिरो में ऋ. ११-३५-१—
पाथ्यः=आकाश मण्डलअथवा जल में होने वाला ।

नाद्यः=नदी में होने वाला ।

वैशन्तीभ्यः स्वाहा = सोमपात्र की अधिष्ठात्री देवियों के लिए
यह आहुति ।

हैमवतीभ्यः स्वाहा=हिमालय पर रहने वाली देवियों के लिए
यह आहुति ।

स्रोत्यः स्रोतस्यः ऋ. १०-१०४-८—प्रवाह या नदी में
होने वाला ।

सगर्भ्यः=सगा या सहोदर भाई । छोटा भाई ।

सयूय्यः=अपने से अवस्था में छोटा मित्र ।

यो नः सनुत्य उतवा जिघत्सु ऋ. ११ ३१-९—जो हमारा
चोर, डाकू या घातक है ।

आवः शमं वृषभं तुत्र यासु , तुग्रियासु ऋ १-३३-१५—
आप ने शान्त, गुणवान् तथा जल में मग्न व्यक्ति को
बचाया है ।

अग्र्यः, अग्रियः, अग्रीयः—आगे या पहले होने वाला ।

समुद्रिया अप्सरसो मनीषिणम्

ऋ. ९-७८-३—अन्तरीक्ष की अप्सराएँ मेधावान् सोम की
रक्षा करती हैं ।

घानदतो अन्नियस्येऽथोषाः =

ऋ. १०-६८-१ = बार बार गरजते हुए बादलों के गर्जन
की तरह ।

वर्हिष्येषु निधिष प्रियेषु ऋ. १०-१५-५—कुश पर रखे गये
प्रिय द्रव्यों पर ।

दूत्यम्=दूत का भाग या कर्म ।

याते अग्ने रक्षस्यतनूः—हे अग्निदेव, तुम्हारा शरीर राक्षसों
को मारने वाला है ।

रेवत्यम्=रेवती की प्रशंसा ।

जगत्यम्=जगती की प्रशंसा ।

हविष्यम्=धी की प्रशंसा ।

असुर्यं देवेभिर्घापि विश्वम् म. स. १-८-३—

आसुरीमाया=असुरों की माया ।

वर्चस्याः=वर्चस्वान् नामक मन्त्रों को पढ़कर रखी गई इंटें ।

ऋ. तन्याः=ऋतुमान् ,, ,, ,, ,, ,,

आश्विनीरुपदधाति तै. सं. ५-३-१—अश्विमान् मन्त्रों को
पढ़कर इंटों को रखता है ।

मूर्धन्वतीरुपदधाति—मूर्धन्वती मन्त्रों को पढ़कर इंटों को
रखता है ।

नमस्यो मासः=बादलों का महीना, श्रावण ।

ओजस्या तनूः=शक्ति सम्पन्न शरीर ।

माधवः, मधव्यः = मधु, शहद वाला ।

ओजस्यमोजसीनं वा अहः=गर्भ दिन ।

वेशोमन्यः वेशोभगीनः—दृढ़ ऐश्वर्यशाली जन ।

यशोमन्यः, यशोभगीनः—प्रख्यात जन ।

गम्भीरेभिः पथिभिः पूर्वाणेभिः = गम्भीर पूर्वजों द्वारा बनाये
गये मार्गों से—(गम्भीर-
उदार)

ये ते पन्थाः सवितः

पूर्वांसः ऋ. १ ३५-२—हे सूर्य देव, जो यह तुम्हारा मार्ग
पूर्वजों द्वारा बना गया है ।

यस्वेदमप्यं हविः ऋ. १०-८६-१२—जिसका यह साकल्य
जल से शुद्ध किया
गया है ।

सहस्रियासो अपांनोर्मयः ऋ. १-१६८-२—जल की लहरों
की तरह हजारों ।

सहस्रियः=हजारो रूपयों वाला ।

सोम्यो ब्राह्मणः—सोमपान का अधिकारी ब्राह्मण ।

सोम्यं मधु=सोम युक्त मधु ।

मधवः=मधु (शहद) से बनाया गया ।

वसव्यः—संग्रह, संचय ।

छन्दस्यः=अक्षर-समूह ।

नक्षत्रियेभ्यः स्वाहाः=नक्षत्रों के लिए यह आहुति ।

सवितानः सुवतु सर्वतातिम्

ऋ १०-३६-१४—सूर्यदेव, सर्वत्र हमारी श्रिवृद्धि करें ।

प्रदक्षिणि देवतातिमुषाणः

ऋ. ४-६-३—यज्ञ को पूर्ण करने वाले देवों की प्रदक्षिणा
करता है ।

शिवतातिः—कल्याण करने वाला ।

शान्तिः शान्ताती मवथो ददाशुपे

ऋ. १-११२-२०—जिनसे हविष् देने वाले यजमान को सुख देते हो ।

अथो अरिष्टतातये ऋ. १०-१९-८—और कल्याण करने वाले के लिए ।

शिवतातिः=अच्छी हालत, उत्तम दशा ।

शान्तातिः=शान्ति की दशा ।

अरिष्टतातिः=कल्याण की दशा ।

इति चतुर्थोऽध्यायः

अथ पञ्चमोऽध्यायः

सप्तसाप्तानि असृजत्—उन्होंने उनचास राज्य बनाया ।

पञ्चदशिनोऽर्धमासाः=आधे महीने में पन्द्रह दिन होते हैं ।

त्रिंशिनो मासाः=महीनों में तीस दिन होते हैं ।

विंशिनोऽङ्गिरसः=आङ्गिरस गोत्र वाले बीस हैं ।

त्वावतः पुरुवसो ऋ. ६-२१-१०—तुम्हारी तरह पुरुवस ।

नत्वावाँ अन्यः " " " तुम्हारी तरह दूसरा नहीं है ।

यज्ञं विप्रस्य भावतः ऋ. १-१४२ २—मुझ-सरीखे मेधावी के यज्ञ में जाकर ।

सादन्यं विदध्यम् ऋ. १-६१-२०—गृहकार्य में निपुण तथा दर्शपूर्ण मासादि यज्ञ करने वाले ।

इद्वत्सरीयः=पाँच वर्ष या दो वर्ष में होने वाला ।

संवत्सरीयः, संवत्सरीयः=संवत्सर में होने वाला ।

परिवत्सरीयः, परिवत्सरीयः=वर्ष भर में होने या रहने वाला ।

भागऋत्विज्यः ऋ. १-१३५-३—यह तुम्हारा अवसर प्राप्त भाग है ।

यदुद्धतो निवतः ऋ. १०-१४२-४—जब ऊपर-नीचे जाते हो ।

पञ्चथम्, पञ्चमम्=पाँचवाँ ।

अपत्यं परिपन्थिनम् ऋ. १-४२-३—उस तरह के शत्रु को दूर करो ।

मात्वा परि परिणो विदन् यजु ४-३४-शत्रु तुमको न जानें ।

मंहिष्ठमुमथाविनम्=दानी तथा लौकिक तथा पारलौकिक धन से युक्त आप को ।

शुनमद्राव्यचरत् ऋ. १०-१०२-८—कोड़ा लेकर सुख से चलते हैं ।

रथीरभूत् ऋ. १०-१०२-२—रथवाली हुई अर्थात् रथ पर चढ़ी ।

सुमङ्गलीरियंवधूः ऋ. १०-८५-३३—यह वधू शोभन कल्याण वाली है ।

मधवानमीमहे ऋ. १०-१६७-२—इन्द्र को बुलाते हैं ।

इदाहिव उपस्तुतिम् ऋ. ८-२७-११—इस समय आपकी स्तुति करता हूँ ।

तर्हि=तब ।

कथाग्रामं न पृच्छसि ऋ. १०-१४६-१—किस कारण गाँव नहीं पूछते हो ।

कथादाशेम ऋ. १-७७-१—किस तरह की हविष् आप को दूँ ।

पश्च हि सः=वह पीछे है ।

नोत पश्चा ऋ. २-२७-११—पीछे नहीं ।

आसुतिं करिष्ठः ऋ. ७-६७-७—अन्न या धन देने वाले हैं ।

दोहीयसी धेनुः=अधिक दूध देने वाली गाय ।

तं प्रत्नथा पूर्वथा

विश्वये मथा ऋ. ५-४४-१—प्राचीन काल के लोगों ने, पूर्वजों ने, सभी ने उनकी (इन्द्र की) पूजा की ।

प्रतं नय प्रतरम् ऋ. १०-४५-९—उस श्रेष्ठ व्यक्ति को ले जाओ ।

यो न दुरेवो वृकतिः ४ ४१-४—जो हमारा दुर्दमनीहंसक है ।

ज्येष्ठतार्ति बर्हिषदम् ऋ. ५-४४-१—देवों में सर्वश्रेष्ठ

तथा कुशासन पर बैठे हुए।

ब्रह्मसामं भवति = ब्राह्मणाच्छंसी द्वारा पढ़ा जाने वाला
सामवेद होता है।

देवच्छन्दसानि = एक वैदिक छन्द।

बहुप्रजा निऋतिमा-

विवेश ऋ. १-१६४-३२—अनेक बार जन्म लेकर अथवा
अनेक सन्तान उत्पन्न कर दुःख-
मय पृथ्वी को पाया।

उभयोदतः प्रतिगृह्णाति = दोनों ओर दाँत वालों को स्वी-
कार करता है।

हतमाता = जिसकी माँ मारी गयी है।

इति पञ्चमोऽध्यायः

अथ षष्ठोऽध्यायः

यो जागार ऋ. १०-४४-१४—जो जागा।

दाति प्रियाणि ऋ. ६-८-३—प्रिय वस्तुओं को देता है।

प्रमरा तूजानः ऋ. १-६१-१२—शीघ्रता से इसको मारो।

सूर्ये मामहानम् ऋ. ३-३२-८—सूर्य का बार-बार पूजन
करने वाले हमको।

दाधार यः पृथिवीम् ऋ. ३-३२-८—जिसने पृथ्वी को
धारण किया।

स त्वाव ऋ. १-२४-२—वह (यजमान) बढ़ता है।
इन्द्रमाहुव उतये ऋ. १-३-४—रक्षा करने के लिए इन्द्र
को बुलाता हूँ।

तृचं साम = तीन ऋचा वाला साम।

अृचानि = तीन ऋचाएँ।

रेवान् = धनवान्।

रयिमान् पुष्टिर्वर्धनः = धनवान् तथा पुष्ट करने वाला।

न्य न्यं चिक्युर्न निचिक्यु-

रन्यम् ऋ. १-१६४-३८—मनुष्य एक को (देहको)
विशेषतया जानते हैं और दूसरे को (आत्मा
को) नहीं जानते।

अग्निं ज्योतिर्निचाय्य = अग्नि की ज्योति को देखकर।

इन्द्रश्च विष्णो यदपस्प-

धेयाम् ऋ. ६-६९-८—इन्द्र और विष्णु, तुमने जिस वस्तु
को बाँधा।

अकंमानृनुः ऋ. १-१९-४—जल की पूजा की अर्थात्
वर्षा की।

वसून्मानृनुः ” धन की पूजा की अर्थात्
धन दिया।

चिच्युषे—गये।

यस्तित्याज ऋ. १०-४१-६—जिसने त्याग दिया।

आतास्त इन्द्रसोमाः—इन्द्र के लिए सोम पकाया गया।

अिता नो ग्रहाः—हमारेसोमपात्र तपा लिए (पका लिए), गये।

(न) आशिर्दुहे ऋ. ३-५३-१४—सोम में मिलाने
योग्य दूध नहीं देती।

मध्यत आशीर्तः ऋ. ८-२-९—बीच में मिलाया गया—

चिखाद = दुःख दिया।

शीर्ष्णः शीर्ष्णो जगतः ऋ. ७-६६-५—संसार के मस्तक
के भी मस्तक अर्थात् संसार में
सर्व श्रेष्ठ।

वाराही = सूअर का विकार या अवयव।

मानुषीरीकृतेविशः ऋ. ५-८-३—मानवगण तुम्हारी
स्तुति करता है।

शमीं च शम्यं च ऋ. ८-६९-१२—शमी की लकड़ी को।

सूर्मिं सूर्यं सुषिरानिव ऋ. ८-६९-१२—जिस प्रकार
छिद्रवाली तथा जल पूर्ण लोहे की प्रतिमा
ढपकती है अथवा जिस प्रकार सूर्य की किरणें
सूर्य की ओर जाती हैं उसी तरह।

इज्यमानः, यज्यमानः = यज्ञ करता हुआ ।

या ते गात्राणाम् ऋ. १-१६२-१९—तुम्हारे शरीर के जितने अवयव हैं ।

ताता पिण्डानाम् ऋ. १-१६२-१९—पिण्ड के उन भागों को (अग्नि में हवन करता हूँ) ।

अपां त्वेमन् वा. सं. १-३५३—(अपत्यनामक इंट) में तुमको वायु में रखता हूँ ।

अपां त्वोशन् ॥ ॥ ओपवि में ॥ ॥

मय्यः = भयावह ।

प्रवय्या = गर्भ धारण करने योग्य (M.W.) ।

प्रवेयम् = ॥ ॥

भेयम् = भयावह ।

हृदय्या = जल ।

उपप्रयन्तो अध्वरम् ऋ. १-७४-१—सदा यज्ञ करने वाले ।

सुजाते अश्वसूनुते ऋ. ५-७९-१—सुन्दर जन्म वाली, तुम अश्व प्राप्ति के लिए ।

पुतास एतेर्चन्ति ऋ. १-१६५-१—ये लोग आकर पूजा करते हैं ।

तेऽवदन् ऋ. १०-१०९-१—उन्होंने कहा ।

वसुभिर्नो अन्वात् ऋ. ४-४-१५—घन से हमारी रक्षा करें अर्थात् घन दें ।

मित्रमहो अवद्यात् = मित्रों के पूजनीय हे अग्नि देव हमारी रक्षा कीजिये ।

मा शिवासो अवक्रमुः ऋ. ७-३२-२७ अशुभ शत्रु (हमपर) आक्रमण न करें ।

ते नो अव्रत—उन्होंने हमको चुना ।

शतधारो अयं मणिः—सौ धार वाली यह मणि ।

ते नो अवन्तु—वे हमारी रक्षा करें ।

कुशिकासो अवस्यवः ऋ. ३-४२-९—कुशिकवंश में उत्पन्न तथा तुमसे रक्षित—

तेनोऽवन्तु रथतः ऋ. १०-७७-८—वे वेगगामी रथ से आकर हमारी रक्षा करें—

सोऽयमागात् ऋ. १-८८-२—वह यह आ गया ।

तेरुण्येमिः ॥ ॥ वे लाल रंग वाले (घोड़ों से) ।

उरी अन्तरिक्षम्

यजु. वाज. ४-७—हे विस्तीर्ण अन्तरिक्ष—

आपो अस्मान् मातरः यजु. ४-२—जगत् का निर्माता जल हमको (शुद्ध करे) ।

जुषाणो अग्निराज्यस्य यजु. ५-३५—प्रसन्न होकर सोम घृत पान करें—

वृष्णो अंशुभ्याम् यजु. ७-१—हे सोम, परसने वाली (टपकने वाली) तुम्हारी किरणों से ।

वर्षिष्ठे अधिनाके

यजु. वा. सं. १-१२—(सूर्य) श्रेष्ठ स्वर्ग में ऊपर (स्थित हैं) ।

अम्बे, अम्बाले,

अम्बिके वा. सं. २३-१८—व्यक्ति विशेष के सम्बोधन ।

प्राणो अङ्गे अङ्गे

अदीव्यत् यजु. ६-२८—(पशु के) प्रत्येक अंग में प्राण का सञ्चार किया ।

अयं सो अग्निः यजु. १३-४७—यह वह अग्नि है ।

अयं सो अध्वरः ॥ ॥ यह वह यज्ञ है ।

अथोग्रे रुद्रे =

सोऽयमग्निमतः =

श्री रुद्रेभ्यो अवपथाः = रुद्रों के लिये तीन बार आहुति देनी चाहिए ।

यदुद्रेभ्योऽवपथाः = रुद्रों के लिए जो आहुति देनी चाहिए ।

अन्न औ अपः ऋ. ५-४८-१—मेघ के ऊपर जल को—

गमीर औ उपपुत्रे ऋ. ८-६७-११—हे अदिति, अच्छी तरह उत्तेजित पुत्रवाले जल में—

ईषा अतो हिरण्ययः ऋ. ८-५-२९—हे अश्विनी कुमार !

आपके रथ का बम तथा घुरा

दोनों सुवर्ण मय हैं ।

ज्या इयम् ऋ. ६-७२-३—यह धनुष की रस्सी ।

पूषाभविष्ठु ऋ. १०-२६-१—सूर्य भगवान् रक्षा करें ।

एषस्य मानुः ऋ. १०-८७-४—यह वही सूर्य—

हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः ऋ. ९-६६-२६—हरित धारावाले

तथा मरुद्गण की सहायतावाले—

सुश्चन्द्रस्य—सुन्दर चन्द्रमावाले का ।

आमागन्तां पितरा मातरा च = माता और पिता आयें ।

मातरा पितरा नूचिदिष्टौ—माता और पिता अभीष्ट हैं ।

सगर्भ्यः—सगा छोटा भाई ।

विश्वाची च घृताची च अप्सराओं का नाम ।

देवद्रीचीं नयत देवयन्तः ऋ. ३-६-१—देवपूजा की सामग्री
सुवा लाओ ।

कद्रीची ऋ. १-१६४-१७—जिसका जाना अश्विचत है ।
इन्द्रत्वास्मिन्सधमादे ऋ. ८-२-३—हे इन्द्र ! इस यज्ञ में
मैं तुमको बुलाता हूँ ।

सोमः सधस्थम्—साथ में रहनेवाले को सोम—

कवपथः, कापथः, कुपथः=बुरा मार्ग ।

मरुद्भिरुग्रः पृतनासुसाहस्रला ऋ. ७-५६-२३—युद्ध में
मरुतों की सहायता से ओजस्वी
व्यक्ति विजयी होता है ।

अष्टापदी=आठ पैरवाली ।

अश्वावतीं सोमावतोम् ऋ. १०-९७-७—अश्वावती तथा
सोमावती नामवाली औपधियों को ।

इन्द्रियावान्मदन्तमः यजु. ६-२७—इन्द्रियों वाला तथा
हर्षोत्पादक—

विश्वकर्षणाविश्वदेव्यावता ऋ. १०-१७०-४—समस्त
व्यापार के कारणभूत, समस्त
देवों को लाभ पहुँचानेवाले ।
तथा यज्ञों के प्रवर्तक हे सूर्य !

यदोषधीभ्य अदधात्योषधीसु—जो ओपधियों से निकालकर
ओपधियों में रखता है ।

आ तू न इन्द्र ऋ. ४-३२-१—हे इन्द्र ! तुम हमारे पास
आओ ।

नू मर्तः—क्या मूर्तधारी ।

उत वा घा इयालात्—अथवा साले से ।

मच्चूगोमन्तमीमहे=मैं शीघ्र ही गायवाले को बुलाता हूँ ।

मरता जातवेदसम् ऋ. १०-१७६-२—अग्निदेवको सन्तुष्ट
करो ।

शृणोत ग्रावाणः—पत्थर सुनें ।

कूमनाः—बुरे हृदय वाला ।

अत्रा ते मद्रा=यहाँ तुम्हारा कल्याण है ।

यत्रा नश्चक्रा=जहाँ हमारे पहिये हैं ।

उरुल्याणः—हमारी रक्षा करो ।

अभीषु णः सखीनाम् ऋ. ४-३१ ३—मित्रों को देनेवाले
हो ।

विद्या हि । चक्रा जरसम् ऋ. ३-१२-६—तुमको जानते
हैं । बुझा कर दिया ।

एवा हि ते ऋ. १-२-२—तुम्हारा ही ।

धातृणाम्, धातृणाम् ऋ. १०-१२८-७—सृष्टि कर्ताओं के
भी सृष्टिकर्ता—

ऋभुचाणम्, ऋभुक्षणम्—इन्द्र को ।

तक्षा—बटई ।

यो नः पिता जनिता ऋ. १०-८२-३—जो हमारे पालक
और उत्पादक हैं ।

शमिता—शान्त करनेवाला ।

द्वियूथ—मिलाकर अथवा अलग कर ।

विप्लूथ—तितर बितर कर ।

आवः—बुना ।

जनिष्ठा उग्रः सहसे तुराय ऋ. १०-७३-१—(हे इन्द्र)
शत्रु संहार के लिए
प्रचण्ड बल वाले तुम
उत्पन्न हुए ।

मा चः क्षेत्रे परबीजान्यवाप्सु=तुम्हारे खेत (भार्या) में दूसरों
के बीज (वीर्य) न बोये जायें
(पड़ें) ।

प्रथमं दध्र आपः ऋ. १०-८२-५—जल ने पहले धारण
किया ।

वनेषु चित्रं बिम्बं-विभुवं वा ऋ. ४-६-१—जंगलों में
(दावाग्नि रूप से) दर्शनीय एवं
समस्त जंगत के ईश्वर—

सुध्यो हव्यमग्ने सुधियो वा—सुधी अग्नि का हव्य ।

तन्वं पुपेम तनुवं वा ऋ. १०-१२८-१—शरीर को पुष्ट
करें ।

त्र्यम्बकं त्रियम्बकं वा—तीन नेत्र वाले (शंकर) की—
वितस्तिरे कवयः—कवियों ने फैलाया ।

शकुना इव पप्तिम ऋ. ९-१०७-२०—चिड़ियों की तरह
तुम्हारे पास जाते हैं ।

सन्धिश्च मे—मुझको सहभोज प्राप्त हो ।

बन्धां ते हरी घाना नि. ५-१२—तुम्हारे ये दोनों घोड़े मुने
हुए घान खाएँ ।

२०४

अधी हवम् ऋ. १-२-१—आवाहन (बुलाने को) को सुनो ।

शृणुधोगिरः ऋ. ८-८४-३—वाक्यों को सुनो ।

रायस्पर्धि ऋ. १-३६-१२—घन को पूर्ण करो या दो ।

उरुणस्कृधि ऋ. ८-७५-११—हमको महान् बनाओ ।

अपावृधि—हमको चुनो ।

रारन्धि = अधिक रमण करते हो ।

अस्मै प्रयन्धि । युयोधि

जातवेदः—हे अग्निदेव, शत्रुओं को अलग करो ।

त्मना देवेषु ऋ. ७-७-१—स्वयं देवों में ।

त्वं रजिष्ठमनुनेधि-

ऋजिष्ठं वा ऋ. १-९१-१—तुम विलकुल सीधे मार्ग पर ले जाते हो ।

ऋत्त्यम्—ऋतु में होने वाला—

वास्त्यम्, वास्त्वं च—घर होने वाला, बचा हुआ ।

माध्वीर्नः सन्त्वोषधोः ऋ. १-६०-६—हमारे लिए ओष-
धियाँ माधुर्य पूर्ण (मीठी) हों ।

हिरण्ययेन सविता-

रयेन ऋ. १-३५-२—सर्व देव सुवर्णमय रथ से—

इति षष्ठोऽध्यायः

अथ सप्तमोऽध्यायः

धेनवो दुहे—गाय दूध देती हैं ।

धृतं दुहते—धी निकालती है ।

अदध्रमस्य—इसका देखा—

अग्निर्देवेभिः ऋ. १-१-४—देवों के साथ अग्नि—

वाग्रध्नमितरम्—इन्द्र सम्बन्धी अन्य पदार्थ—

इतरत्काष्ठम्—दूसरी लकड़ी ।

यजमानं परिधापयित्वा—यजमान को पहिनाकर ।

ऋजवः सन्तु पन्थाः

ऋ. १०-८५-२३—हमारे लिए मार्ग सीधे या सरल हों ।

परमे न्योमन्—श्रेष्ठ आकाश में—

धीती—पीने से या प्यास से—

मती—बुद्धि से विचार से—

सुष्टुती—सुन्दर स्तुति से—

या सुरथा रथीतमा दिविस्पृशा

अश्विना ऋ. १-२२-२—जो दोनों सुन्दर रथ वाले रथियों
में श्रेष्ठ तथा स्वर्ग में रहने वाले अश्विनी
कुमार हैं ।

नताद् ब्राह्मणम्—नभ्र या नमनशील ब्राह्मण को ।

या देव विद्य ता स्वा—जिसको जानते हैं उसी को ।

न युष्मे वाजबन्धवः ८-६७-१२—तुम लोगों के युद्ध सहा-
यक नहीं हैं ।

अस्मे इन्द्रा बृहस्पती ऋ. ४-४९-४—हे इन्द्र और बृह-
स्पति, तुम दोनों
हम लोगों को—

उरुया—जाँघ से ।

घृष्णुया—निपुण अथवा राशि से—

नामा पृथिव्याः ऋ. १-१४३-४—वेदी की नामों में अर्थात्
उत्तर वेदी में—

ता अनुष्ठयोच्यावतात् ऐ. ब्रा. ११-६-१५—

साधुया—साधु से—

वसन्ता यजेत—वसन्त ऋतु में यज्ञ करना चाहिये—

उर्विया—जाँघ से ।

दार्विया—लकड़ी से ।

सुक्षेत्रिया—सुन्दर खेत वाले (किसान) से—

इति न शुष्कं सरसी शयानम्

ऋ. ७-१०३-२—मशक की तरह सूखे तालाब में रहने
वाले को—

प्र बाहवा सिस्तम् ऋ. ७-६१-५—अपनी बाहों फैलाओ ।

स्वप्नया—सोने से—

स नः सिन्धुमिव नावया ऋ. १-९७-८—नाव से नदी की तरह तुम हमको—

वर्धो वृत्रम् ऋ. १-१६५-८—मैंने वृत्र को मारा—

देवा अहदु—देवों ने दूध निकाला—

दक्षिणतः शये=दक्षिण की ओर सोता है।

उत्सं दुहन्ति=नदी या मेघ को दुहता है अर्थात् जल निकालता है।

अन्तरेवोष्माणं वारयध्वात् ऐ. ब्रा. ११-६-१४—मुंह बन्द

किये हुए पशु के श्वास को नष्ट कर देना चाहिए।

यजध्वैनं प्रियमेधाः ऋ. ८-२-३—प्रियमेधा ऋषि, इन्द्र के लिए यज्ञ करो।

गात्रमस्यानूनं कृणुतात् ऐ. ब्रा. ११-६-१५, १६—इसके अवयवों को पूर्णतया काटो।

सूर्यं चक्षुर्गमयतात्=सूर्य को आँख से देखो।

शृणोत आवाणः=पत्थर, (सोमरस कुचलनेवाले पत्थर) सुनें।

सुनोतन पचत ब्रह्मवाहसे ऋ. ५-३४-१—जिसकी स्तुति की जाती है उसके लिए सोमरस निकालो और पाक तैयार करो।

वधातन व्रविणं चित्रमस्मै ऋ. १०-३६-१३—हमको विविध प्रकार का धन दो।

मरुतस्तज्जुष्टुष्टन ऋ. ७-५९-९—हे मरुद्गण, रक्षा द्वारा हमारी सहायता करो।

विश्वेदेवासो मरुतो यतिष्ठन=जितनी संख्यावाले विश्वदेव और मरुत हैं।

नमो मरन्त एमसि ऋ. १-१-७—नमस्कार करते हुए तुम्हारे पास आते हैं।

त्वमस्माकं तव स्मसि ऋ. ८-९२-३२—तुम हमारे हो तथा हम तुम्हारे हैं।

दिवं सुपर्णो गत्वाय ऋ. ८-१००-८—गरुड़ स्वर्ग जाकर।

इष्टीनं देवान्=देवों के लिए यज्ञ करके।

स्विन्नः स्नात्वा मलादिव=पसीने से भीगा मनुष्य स्नान करके जिस प्रकार मल रहित हो जाता है।

पीत्वा सोमस्य वावृधे=सोम पान करके बढ़ गया।

देवासः=देवगण।

ब्राह्मणासः=ब्राह्मणगण।

भीणामुदारो धरुणो रयीणाम् ऋ. १०-४५-५—

अग्निदेव शोभा तथा सम्पत्ति के उदार आधार हैं।

सूत ग्रामणीनाम्=सूत तथा गाँव के मुखियों का—

विशाहि त्वा गोपतिं शूर गोनाम् ऋ. १०-४६-१—हे शूर इन्द्र, हम तुम्हें अनेक गायों का स्वामी जानते हैं।

गवां शता पृथ्यामेषु ऋ. १-१२२-७—अन्न का नियमन करनेवाले यज्ञ में सैकड़ों गायें—

विराजं गोपतिं गवाम्=अनेक गायों का स्वामी और विशिष्ट राजा—

इन्द्रो दधीचो अस्थमिः ऋ. १-८४-१३—इन्द्र ने दधीच की हड्डियों से—

अक्षीभ्याम् ऋ. १०-१६३-१—आँखों से—

ते नासिकाभ्याम्=तुम्हारी नाक से—

कीदृङ्किन्द्रः ऋ. १०-१०-३—इन्द्र कैसे हैं—

स्ववान् ऋ. १-३५-१०—घनवान्।

स्वतवान् ऋ. ४-२-६—घन (अधिक घन) वाला।

ततुरिः ऋ. १-१४५-३—पार करनेवाला।

जगुरिः पराचैः=

अद्भुतमसि हविर्धानम् वाज. सं. १-९—(हे अग्नि) तुम हविष के पूर्ण भण्डार हो।

अपरिहृता सनुयाम वाजम् ऋ. १-१००-१९—सरल गति से अन्न ग्रहण करो—

मा नः सोमो क्लृपितः=सोम हमारे लिए कुटिलता न करे।

युवं शचीभिर्प्रसिताममुच्चतम् ऋ. १०-३९-१३—

तुम दोनों ने दया करके निकाली गयी का उद्धार किया।

विष्कभिते अजरे ऋ. ६-७०-:—घारण की गयी तथा नित्य—

येन स्वः स्तमितम् ऋ. १०-१२१-५—जिन्होंने स्वर्ग को रोक रखा है।

सत्येनोत्तमिता भूमिः = सत्य से रोकी गई पृथ्वी।

चत्ता इतश्चत्तामुतः ऋ. १०-१५५-२—इस लोक तथा परलोक से दूर करने की प्रार्थना करता है।

त्रिधा ह श्यावमश्विना विकस्तम् ऋ. १-११७-२४—

(हे अश्विनी कुमार तुमने तीन
भागों में विभक्त श्याव ऋषि
को जीवित किया।

उत्तानाया हृदयं यद्विकस्तम्—उत्तान सोती हुई को गति
दी थी।

एकस्वष्टुरश्वस्याविश्वस्ता ऋ. १-१६२-१९—तेज पुंज
घोड़े को नष्ट करनेवाला केवल
काल ही है।

ग्रावग्राभ उत शंस्ता ऋ. १-१६२-२—पत्थर से सोमरस
निकालनेवाला तथा नियमानुसार
यज्ञ करानेवाला।

प्रशास्ता पोता ऋ. १-९४-६—उत्तम शिक्षक तथा यज्ञ
शुद्ध करानेवाला।

तरुतारं तरुतारं रथानाम् ऋ. १०-१७८-१—रथों को
जीतनेवाला।

वरुतारं वरुतारम् “ वरण करनेवाला, अलग
या दूर करनेवाला।

वरुन्नीमिः सुशरणो नो अस्तु ऋ. ७-३४-२२—देवों की
स्त्रियों के साथ हमको शरण दो।

विद्मा तमुत्सं यत् आवभूय ऋ. ३-२१-२—जिससे नदी
या मेघ हुए उसको जानता हूँ।

येनान्तरिक्षमुर्वाततन्ध—जिसके द्वारा तुमने अन्तरिक्ष को
व्याप्त किया।

जगृभ्मा ते दक्षिणमिन्द्र हस्तम् ऋ. १०-४७-१—हे इन्द्र,
हम तुम्हारे दाहिने हाथ
को पकड़ते हैं।

त्वं ज्योतिषा वितमो ववर्थ—तुमने प्रकाश से अन्धकार को
दूर किया।

हिरण्यवर्णाः शुचयः पावकाः—सोने के रंग की शुद्ध आग—

दधद्रत्नानि दाशुपे ऋ. १-३५-८—हविष देने वाले यज्ञमान
को रत्न देने वाले—

सोमो ददद् गन्धर्वाय ऋ. १०-८५-४१—गन्धर्व को सोम
देने वाले—

यदग्निरग्नये ददात्—जिसने अग्नि के लिए अग्नि दिया—

(न) प्रमिणन्ति व्रतानि ऋ. १०-१०-५—कर्मों को सुप्त
(नहीं) करता।

सर्वमा इदम्—यह सब कुछ था।

अथा शतक्रत्वोशतक्रत्वो—

वा यूयम् ऋ. १०-९७-२—तुम लोग सौ यज्ञ करने
वाले हो।

पशवे नृग्यो यथा गवे,

पशवे वा ऋ. १-४३-२—पशुओं, मनुष्यों और गायों
के लिए—

अनुषग्जुजोषत् ऋ. १-१३-२—हे मनीषी ऋत्विक्, पर-
स्पर मिले हुए कुशों को वेदी के ऊपर
क्रम से फैलाओ।

अवीवृधत् ऋ. ८-८-८—बढ़ाया।

मित्रयुः मित्र चाहने वाला।

पुत्रीयन्तः सुदानवः ऋ. ७-९६-४—पुत्र की कामना से
उत्तम दान करने वाले।

जनीयन्तोन्वग्रवः = जन चाहने वाले—

दुष्टीयति—दुष्ट चाहता है।

द्रविणीयति—घन चाहता है।

वृषीयति—बैल चाहता है।

रिष्टीयति—कल्याण चाहता है।

अश्वायन्तो मधवन् ऋ. ७-३२-२३—हे इन्द्र, हम घोड़ा
चाहने वाले—

मात्वा वृका अघायवः ऋ. १-१२०-७—तुम्हारे लिए
मेड़िया तथा पापी
(हिंसक) न हों।

देवायन्तो यजमानाः = देवों को चाहने वाले यममान
लोग—

सुम्नायन्तो हवामहे—भक्ति चाहने वाले हम आवाहन
करते हैं—

देवाङ्गिराति सुमन्युः ऋ. ३-२७-१—भक्त देवों की
स्तुति करता है—

सपूर्वया निविदा

कव्यतायोः ऋ. १-९६-२—अग्नि ने मनुष्यों की प्रथम
स्तुति मन्त्र से—

अध्वर्युवा मधुपाणिम् ऋ. १०-४१-३—हाथ में मधु लिए हुए अध्वर्यु के पास—

मदयन्तं पृतन्युम् ऋ. १०-७४-५—शत्रुओं का दमन करने वाले—

हित्वा शरीरं हीत्वा वा—शरीर को त्याग कर।

गर्भमाता सुधितं—

वक्षणासु ऋ. १०-२७-१६—माता ने जल में (अग्नि में) गर्भाधान किया—

वसुधितमरनौ—घन देने वाले अग्नि में—

नेमधिता न पौंस्या ऋ. १०-९३-१२—संग्राम में सेना (सामर्थ्य हीन होने पर) रहठ की तरह व्यर्थ है—

उत श्वेतं वसुधितिं

निरेके ऋ. ७-९०-३—और भी श्वेत रंग वाले तथा दरिद्रावस्था में घन देने वाले (वायुको)।

धिष्व वज्रं दक्षिण इन्द्र

हस्ते ऋ. ६-१८-९—हे इन्द्र, दाहिने हाथ में वज्रधारण करो—

सुरेता रेतो धिषीय = प्रचुर जल वाले में जल प्राप्त करे।

माद्मिः शरद्मिः—महीनों या वर्षों में—

स्ववद्मिः ऋ. १-३५-१०—घनवानों द्वारा—

स्वतवद्मिः ,, अधिक घनवानों द्वारा—

समुषद्मिरजायथाः ऋ. १-६-३—जलाने वाली किरणों के साथ उदय हो रहे हैं।

करीकृष्यते यज्ञकुणपः—यज्ञ का मृत शरीर खींचा जाता है।

अलर्षि युध्म खजकृत्पुनन्दरः

ऋ. ८-१-७—युद्ध कुशल तथा युद्ध करनेवाले इन्द्र आओ—

अलर्ति दक्ष उत ऋ. ८-४८-८—शत्रु जाता है।

अन्वा पनीफणत्—पीछे-पीछे आया।

कनिक्रदज्जनुषम् ऋ. २-४-४—जन्म के लिए बहुत चिल्लाया—

दविध्वतो रश्मयः सूर्यस्य

ऋ. ४-१३-४—अत्यधिक काँपती हुई सूर्य की किरणें—

दवियुतहीधच्छोशुचानः—अत्यन्त चमकती हुई—

सहोर्जातरिन्त्रितः ऋ. ४-४०-३—दूसरों का उद्धार करने वाले के पास अन्न के लिए एकत्र होकर जाते हैं।

वक्ष्यन्ती वेदागनी गन्ति

कर्णम् ऋ. १-७५-३—प्रिय वचन बोलती हुई कान के पास जाती है।

गृष्टिः ससूव स्यविरम् ऋ. ३-१८-१०—सद्यः प्रसूता गाय की तरह वृद्ध को पैदा किया।

पूर्णां विवेष्टि = पूर्णाको कान्तिमान् करता है।

इति सप्तमोऽध्यायः

अथाष्टमोऽध्यायः

प्रप्रायमग्निः ऋ. ७-८-४—जब यह अग्नि—

संसमिद्युवसे

(वृषन्) ऋ. १०-१९१-१—कामनाओं के देने वाले तथा प्रभु हो—

उपोपमे परामृश ऋ. १-१२६-७—मेरे समीप आकर स्पर्श करो अर्थात् मुझको भोग के योग्य समझो—

क्रिनोदुदु हर्षसे ऋ. ४-२१-९—हमको (घन देने के लिए) प्रसन्न क्यों नहीं होते—

हरिवते हर्षश्वाय ऋ. ३-५२-७—हरि नामक घोड़े वाले तथा हरे रंग के घोड़े बाने के लिए—

गीर्वाण - विद्वान्—

अचण्वन्तः कर्णवन्तः ऋ. १० ७१-७—आँख वाले तथा कान वाले—

अस्थन्वन्तं यदनस्था ऋ. १-१६४-४—अस्थि (शरीर)

रहित प्रकृति या माया शरीर धारो को—

सुपथिन्तरः = उत्तम मार्ग ।

भूरिदावचरो जनः ऋ. ८-५-३९—अधिकतर दान परायण जन—

रथीतरः ऋ. १-१११-१—उत्तम रथ वाला ।

रथीतमं रथीनाम् ऋ. १-१११-१—रथियों में श्रेष्ठ—

नसत्तमञ्जसा = शत से समीप गये हुए—

निपत्तमस्यचरतः ऋ. १-१४६-१—हविष् भक्षण करते हुए इस अग्नि के मध्य में बैठे हुए—

अनुषाम् = गीला न किया गया ।

प्रतूर्तम् = अधिक शीघ्रता किया गया ।

सूर्तम्—गया हुआ—

गूर्तम्—स्वीकार किया गया ।

अम्न एव, अम्नरेव—थोड़ा ही ।

ऊधएव, ऊधरेव—मेघ ही अथवा धन ही ।

अवएव, अवरेव—रक्षा ही ।

भुव इति, भुवरिति—अन्तरिक्ष ।

ओ३म् अग्नि-

मीलेपुरोहितम् ऋ. १-१-१—यज्ञ सम्पन्न करने वाले अग्नि की स्तुति करता है ।

ओमित्येकाक्षरम् छान्दो. उप. १-१-१—ॐ

ये ३यजामहे = जो यज्ञ या हवन करते हैं ।

ये जामहे = यह पञ्चाक्षर है ।

अपारेतांसि जिन्वतोम् ऋ. ८-४४-१६—जल के वीर्य स्वरूप प्राणियों को प्रसन्न करते हैं— जिह्वामग्ने चक्रे हव्य-

वाहा३म् ऋ. १०-८-६—हे अग्निदेव, तुम जीम को हव्य-वाहिका बनाते हो—

अग्नयेनुमू३हि मै. सं. १-४-२—

अग्नये गोमयानि प्रे३य्य—अग्नि के लिए कण्डा भेजकर, देकर ।

अस्तुभी३षद्—ईश्वर सुन—

सोमश्वाग्ने भीही३षोपद् = हे अग्निदेव सोम के लिए भाप ।

अग्निमा३वह = अग्नि लाओ ।

ओ३आ३वय = मन्त्र सुनाने के लिए अनुज्ञा दीजिये ।

अकार्षीः कटम्—क्या तुमने चटाई बनायी ?

अकार्षं हि३—हाँ, बनाई ।

कटं करिष्यति हि—चटाई बनायेगा ।

कटं करोति ननु—क्या चटाई बनाता है ?

अयामावास्येत्यात्थ३—आज अमावास्या है ऐसा कहते हो—

दस्यो३दस्यो३घातयिष्यामि त्वाम्—चोर, चोर, तुमको मरवा डालूँगा ।

चौर३चौर३—चोर, चोर ।

अङ्गकूज३इदानीं ज्ञास्यसि जाह्नवम्—दुष्ट बको, बको, अब मालूम हो जायगा ।

सङ्ग देवदश मिथ्यावदसि—देवदत्त, झूठ बोलते हो ।

अङ्ग पच—पकाओ ।

अङ्गाधीष्व मक्तं तव दास्यामि—भाई, पढ़ो, तुम्हें भात दूँगा ।

होतव्यं दीक्षितस्य गृहा३इ—यज्ञ की दीक्षा लिये हुए व्यक्ति के घर में यज्ञ करना चाहिये ।

न होतव्य३मिति—नहीं करना चाहिये ।

अहिनुं३रज्जुनुं—क्या यह साँप है या रस्सी ।

गां मे देहि भोः—मुझको गाय दो ।

हन्त ते ददामि३—हाँ, तुम्हें दूँगा ।

नित्यः शब्दो भविष्यमर्हति३=शब्द को नित्य होना चाहिये ।

दत्त किमात्थ३=देवदत्त ! क्या कहते हो ।

अग्निभूत३इ=हे अग्निभूति ।

पट३उ=हे पटु ।

शोभनः खल्वसि माणवक३=हे माणवक ! तुम सुन्दर हो ।

अग्निचिद्माया३त्=वह अग्नि की तरह चमके ।

अग्निचिदिव माया३त्=वह अग्नि की तरह चमके ।

कथंचिदाहुः=कठिनाता से कहा ।

अग्निर्माणवको माया३त्=माणवक अग्नि की तरह चमके ।

उपरिस्विदासी३त् ऋ. १०-१२९-४—ऊपर फैला, विस्तृत हुआ ।

अधः स्विदासी३त् ,, ,, — नीचे फैला, विस्तृत हुआ ।

अभिरूपक३अभिरूपक रितं तेषामभिरूप्यम्=अभिरूपक, तुम्हारी सुन्दरता नष्ट हो गयी ।

अभिरूपक३ अभिरूपक शोभनोसि=हे अभिरूपक ! तुम
मनोहर हो ।

अविनीतक३ अविनीतक इदानीं ज्ञास्यसि जाल्म=हे उद्दण्ड,
नीच ! अब तुमको जान पड़ेगा ।

शक्तीक३ शक्तीक रिक्ता ते शक्तिः=हे शक्तिशाली, तुम्हारी
शक्ति नष्ट हो गयी ।

स्वयं ह रथेन याति३ उपाध्यायं पदातिं गमयति=स्वयं रथ
से जाता है और अध्यापक को पैदल ले जाता है ।

पुत्रांश्च लप्सीष्ट३ धनं च तात=बेटा, तुमको धन तथा पुत्र
दोनों मिलें ।

कटं कुरु३ ग्रामं गच्छ=चटाई बनाओ तब गाँव जाओ ।

दीर्घायुरसि=दीर्घायु हो ।

अग्नीदग्नीन्विहर=

अगमः३ पूर्वा३न् ग्रामा३न्=पूर्व के गाँवों में गये थे ?

अगमः३ पूर्वा३न् ग्रामा३न्=हाँ, पूर्व के गाँवों में गया था ।

ऐ३तिकायन=हे ऐतिकायन (इतिक वंशज) ।

औ३पगव=हे औपगव (उपगुवंशज) ।

अगमः३ पूर्वा३न् ग्रामा३न्=पूर्व के गाँवों में गये थे ।

अग्निभूत३=हे अग्निभूत ।

(मद्रं) करोषि पटा३इ=हे पट्ट, अच्छा करते हो ।

होतव्यं दीक्षितस्य गृहा३इ=दीक्षित के घर यज्ञ करना
चाहिये या नहीं ।

न होतव्य३मिति=यज्ञ नहीं करना चाहिए ।

आयुष्मानेधि अग्निभूता३इ=हे अग्निभूति, आयुष्मान् होओ ।

स्तोमैर्विधेमाग्नया३इ तै. सं. १-३-१४-७

विष्णुभूते घातयिष्यामि त्वाम्=हे विष्णुभूति तुमको मरवा
डालूँगा ।

मद्रं करोषि गौरिति='गौ' यह ठीक कहते हो ।

शोभने माले=दो सुन्दर मालाएँ ।

अग्ना३पत्नीवः=हे पत्नीवाले अग्निदेव ।

अग्ना३इयाशा

पटा३इयाशा

अग्ना३विन्द्रम्

पटा३उदकम्

अग्ना३इ वरुणौ

अग्ना३इ इन्द्रः

इन्द्र भरुव इह पाहि सोमम् ऋ. ३-५१-७—हे मरुद्गण
सहित इन्द्र ! यहाँ सोमपान करो ।

हरिवो मेदिनं त्वा ऋ. १-३-६—हे सुन्दर अश्ववाले !
रुद्र शक्तिशाली तुमको....

मीड्वस्तोकाय तनयाय ऋ. २-३३-१ —हे सेचन समर्थ
हमारे पुत्र तथा पौत्र को....

यस्त्वायन्तं वसुना प्रातरित्वः ऋ. १-१२५-२—जो (राजा)
प्रातःकाल गुक्कुल से आये
हुए को घनादि से....

पशूँस्तांश्चक्रे ऋ. १०-९०-८—उन पशुओं को उत्पन्न
किया ।

देवाँ अच्छा सुमती ऋ० ४-१-२—सद्बुद्धि द्वारा स्तोताओं
को अपनी ओर....

महाँ इन्द्रो य ओजसा ऋ. ८-६-१—जिस महान् इन्द्र ने
अपनी शक्ति से....

महाँ इन्द्रः=महान् इन्द्र ने...

भुवस्तस्य स्वतवाँ पायुरग्ने ऋ. ४-३-६—हे अग्नि ! उस
प्रकार मनुष्य के घन की वृद्धि करनेवाले
तथा रक्षा करनेवाले होते हो ।

अग्ने त्रातर्ऋतस्कविः ऋ. ८-६०-५—हे अग्नि ! तुम रक्षक
सच्चे तथा प्रज्ञावान् हो ।

गिरिर्न विश्वतस्पृथुः ऋ. ८-९८-४—पर्वत की तरह खूब
बड़े—

वसुनः पूर्व्यः पति ऋ. १०-४८-१—धन का मुख्य स्वामी ।

अग्निः प्रविद्वान्-अथर्व ५-२६-१—श्रेष्ठ विद्वान् अग्नि ।

पुरुषः पुरुषः=प्रत्येक मनुष्य ।

प्रदिवो अपस्कः=उत्तम स्वर्ग तथा जल का निर्माण किया ।

यथा नो वस्य सस्करत् ऋ. ८-९१-४—जिससे (इन्द्र)
हमको प्रचुर धन वाला करें ।

सुपेशसस्करति ऋ. २-३५-१—सुन्दर रूपवाला अथवा
आभूषण वाला कीजिये ।

उरुणस्कृधि=हमको स्थानवाला या महान् बनाओ ।

सोमं न चाव मघवस्सुनस्कृतम् ऋ. १०-३९-२—

(हे अश्विनी कुमार आप दोनों) हमको कल्याण-
कारी सोम के समान सम्पन्न बनावें ।

यथानो अदितिः करत् ऋ. १-६-४२—जैसा पृथ्वी ने हमको
किया या बनाया ।

दिवस्पति प्रथमं जज्ञे ऋ. १०-४७-१—सर्व प्रथम आकाश में जन्म ग्रहण किया ।

दिवस्पृथिव्याः पर्योजः ऋ. ६-४-७-२७—स्वर्ग तथा पृथ्वी के सार से ।

सूर्यो नो दिवस्पातु ऋ. १०-१५८-१—सूर्य स्वर्गीय या आकाशीय उपद्रव से हमारी रक्षा करें ।

वाचस्पतिं विश्वकर्माणम्-१०-८१-७—विद्वान् विश्वकर्मा को ।

दिवस्पुत्राय सूर्याय ऋ. १०-३७-१—स्वर्ग के पुत्र सूर्य के लिये—

दिवस्पृष्ठं भन्दमानः ऋ. ३-२-१२—स्तुति किये जाने पर अन्तरिक्ष के ऊपर के प्रदेश को—

तमसस्पातमस्य ऋ. १-९२-६—इस रात्रि के अन्धकार के अन्त को—

परिवीत इक्षस्पदे ऋ. १-१२-२—पृथ्वी तल पर घिरे हुए

दिवस्पयो दिधिपाणाः ऋ. १०-११४-१—आकाश में जल की सृष्टि चाहनेवाले—

रायस्पोषं यजमानेषु ऋ. १०-१७-९—यज्ञकर्ता के लिए प्रचुर अन्न धन—

इक्ष्वायास्पुत्रः, इक्ष्वायाः पुत्रः=पृथ्वी का पुत्र ।

इक्ष्वायास्पदे, इक्ष्वायाः पदे=पृथ्वी के पैर में ।

निष्टक्षरक्षो निष्टसा अरातयः=राक्षसों को कष्ट दिया और शत्रुओं को नष्ट किया ।

निस्तपति=बार बार तपाता या लाल करता है ।

त्रिमिष्टं देव सवितः=हे सूर्य देव ! तुम तीनों से ।

तेमिष्ट्वा आमिष्टे अप्सवग्ने सधिष्टव ऋ. ८-४३-९—हे अग्नि-देव ! जल में तुम्हारे प्रवेश का स्थान है ।

अग्निष्टद्विष्टवम् ऋ. १०-२-४—अग्नि समस्त कर्मों को—

धावापृथिवी निष्टवक्षुः=(विश्वकर्मा ने उस वनवृक्ष से) स्वर्ग तथा पृथ्वी का निर्माण किया ।

तदग्निस्तदर्यमा=अग्निदेव तथा अर्यमा उस अन्न को हमें दें ।

यन्म आत्मनो निन्द्रामूदग्निस्तःपुनराहार्जितवेदा

विचर्षणिः-सै. सं० ३-२-५-४—यज्ञ की त्रुटियों के ज्ञाता तथा उन्हें दूर करने में निपुण अग्नि मुख ऋत्विज से यज्ञ में हुई त्रुटि को दूर करें ।

अर्चिमिष्टम् ऋ. ६-४८-८—तुम अपने तेज से—

अग्निष्टे अग्रम् ऋ. १-११२-८१—तुम्हारे सामने आग—
अर्चिमिष्टतत्तुः=

नृमिष्टुतस्य, नृमिः स्तुतस्य=मनुष्यों द्वारा स्तुति किये गये—
गोष्टोमम्, गोस्तोमम्=एक दिन में सम्पन्न किया जानेवाला यज्ञ विशेष ।

यदिन्द्राग्नी दिविष्टः ऋ. १ १०८-२—हे इन्द्र और अग्नि यदि तुम दोनों स्वर्ग में रहते हो—

युवं हि स्थः स्वर्पती ऋ. ९-१९-२—तुम दोनों स्वर्ग के स्वामी हो ।

ऊर्ध्व ऊषु णः ऋ. १-३६-१३—हमारी रक्षा के लिए उन्नत रहो ।

अभीषुणः ऋ. ४-३१-३—अच्छी तरह हमारे सम्मुख रहो ।

गोषा इन्द्रो नृषा असि ऋ. ६-२-१०—गाय तथा पुत्र देनेवाले हो ।

गोसनिः-अथर्व ३ (१११) २०-१०—सब प्रकार के धन को देनेवाली वाणी ।

पृतनाषाहम्=युद्ध विजयी को ।

ऋताषाहम्, ऋतीषाहम्=आक्रमण का सामना करनेवाले को । शत्रु को जीतनेवाले को ।

न्यषीदत्, न्यसीदत्=वैठ गया ।

न्यषीदत्, न्यसीदत्=दुःखी हुआ ।

अभ्यष्टौत्, अभ्यस्तौत्=स्तुति की ।

पितृयाणम्=श० प० १४-९१-३=पितृलोक के मार्ग के साधन—

नृमणाः-सु० य० १२-१८-२०—यजमानों को शुद्ध हृदय देनेवाले (प्रजापति)—

अग्ने रक्षाणः ऋ. ७-१५-१३—हे अग्नि ! हमारी रक्षा कीजिये ।

शिक्षा णो अस्मिन् ऋ. ७-३२-२६—हमको यह सिखाओ ।

उरुणस्कृधि ऋ. ८-७५-११—हमको स्थान वाला या महान् बनाओ ।

अभीषु णः ऋ. ४-३१-३—हमारे रक्षक ।

मोषु णः ऋ. ३-५५-२—(देवगण) हमको अधिक कष्ट न दें ।

इत्यष्टमोऽध्यायः

इति वैदिकप्रकरणम्

अथ स्वरप्रकरणम्

अथ साधारणस्वराः

गोपायतं नः ऋ. ६-७४-४—हमारी रक्षा कीजिये ।
यज्ञं यज्ञमभिवृधे गृणीतः ऋ. ६-१०—प्रत्येक यज्ञ में समृद्धि
के लिये (अग्निकी) ।
देवीं वाचम् ऋ. ८-१००-११—देवीं की स्तुति को—
देवद्वीचीं नयत देवयन्तः ऋ. ३-६-१—देव पूजा की
सामग्री सुवा लाओ ।
दाधीचः पा० ३-१-३—दधीचि सम्बन्धी अथवा दधीचिका ।
माधूचः ,, मधूचि सम्बन्धी अथवा मधूचिका ।
अग्न इन्द्र वरुण मित्रदेवाः ऋ. ५-४६-२—हे अग्नि, इन्द्र,
वरुण, मित्र तथा देव गण—
इमं मे गङ्गे यमुने
सरस्वति ऋ. १०-७५-५—हे गङ्गा, यमुना तथा सरस्वती
(तुम लोग मेरे इस—)
शुतुद्रिस्तोमम् ऋ. १०-७५-५—हे शुतुद्रि (सतलज) इस ।
अग्ने तेजस्विन्=हे तेजस्वी अग्निदेव ।
अग्ने त्रातः=हे अग्निदेव, रक्षा कीजिये ।
अध्वे देवि सरस्वति=हे अध्वि तथा देवी सरस्वती—
देवीः षलुर्वीर्य नः—
कृणोत ऋ. १०-१२८-५—ये छःदेवियाँ (द्यौः, पृथिवी,
दिन, रात्रि, जल तथा ओषधि)
हमारी रक्षा करें ।
देवाः शरण्याः=देवता शरण देने वाले हैं ।
द्रवत्पाणी शुभस्पती ऋ. १-३-१—फँलाये हुए हाथ वाले
तथा शुभ कर्मों के रचक—
यत्ते दिवो दुहितर्मतं-
भोजनम् ऋ. ७-८१-५—हे द्युलोक की पुत्री (उषा)
तुम्हारे पास मनुष्यों के लिए जो
भोज्य अन्न है—
परशुना वृक्षन्=कुल्हाड़ी से काटते हुए—
अयमग्ने जरिता ऋ. १०-१४२-१—हे अग्नि। यह जरिता
(पचिविशेष) ।

एतेनाग्ने ब्रह्मणा ऋ. १-३१-१८—हे अग्नि ! इस मन्त्र
से—
आते पितर्मरुताम् ऋ. २-३३-१—हे मरुतों के जनक रुद्र,
प्रति त्वा दुहितर्दिवः ऋ. ७-८१-३—हे द्युलोक की पुत्री
(उषा) तुमको—
उच्चैरधीयान् = उच्च स्वर से पढ़ता हुआ—
उपाग्न्यधीयान् = अग्नि के समीप पढ़ता हुआ ।
अभ्यमिहि = विलकुल सामने—
खलप्याशा = खलिहान साफ करने वाले (महतर, फराश)
की आशा ।
चोइवाः ६१-२ = तुम्हारे घोड़े—
क्वावरं मरुतः ऋ. १-१६८-८—हे मरुद्गण ! (उस जल
का आदि तथा अन्त कहाँ हैं ।
वीदं ज्योतिर्द्वादये = विशेषकर हृदय में यह ज्योति—
अस्य श्लोको दिवीयते = इनका यज्ञ स्वर्ग तथा पृथ्वी पर
व्याप्त है ।
तेजवदन् = उन्होंने कहा ।
सोयमागात् = वह यह गया ।
अग्निमीळे ऋ. १-१-१—अग्नि की स्तुति करता हूँ ।
तमीशानास ऋ. १-१२९-२—अच्छी तरह उसकी स्तुति
करने में समर्थ—
प्र य आरुः ऋ. ३-७-१—जो (अग्नि की किरणें) वेग से
ऊपर उठती हैं—
वोऽश्वाः क्वाऽमीषवः ऋ. ५-६१-२—हे मरुद्ग ! आपके
घोड़े कहाँ के हैं और उनके बाँधने
की रस्सी कहाँ की बनी है ।
आगच्छ भो माणवक = हे बालक, आओ ।
अग्निमूर्धा दिवः—
ककुत् ऋ. ८-१४-१६—यह अग्नि (सूर्य) आकाश में
सर्वोपरि विराजमान होने से सस्तक
तथा ककुद के समान है ।

ममाग्नेवर्चा विहवेस्तु ऋ. १०-१२८-१—हे अग्नि ! युद्ध में मेरे बल की वृद्धि हो ।

सुब्रह्मण्योऽम् = हे इन्द्र (सुब्रह्मण्यः इन्द्रः ओम् सम्बोधनार्थ इति सायणः)

गार्ग्यो यजते = गार्ग्य का पुत्र यज्ञ करता है ।

दाक्षेः पिता यजते = दाक्षिका पिता यज्ञ करता है ।

गार्ग्यस्य पिता यजते = गार्ग्य का पिता यज्ञ करता है ।

देवदत्तस्य पिता यजते = देवदत्त का पिता यज्ञ करता है ।

देवा ब्रह्माण आगच्छत = हे देवता तथा ब्राह्मण लोग ! आइये ।

इमंमे गङ्गे यमुने-

सरस्वति ऋ. १०-७५-५—हे गंगा, यमुना तथा सरस्वती इस मेरे—

सरस्वति शुतुद्रि = हे सरस्वती तथा शुतुद्रि—

व्यचक्ष्यत् स्वः = स्वर्ग कहा ।

दिवे दिवे ऋ १-१-३—प्रति दिन ।

इति साधारणस्वराः

अथधातुस्वराः

गोपायतं नः = हमारी रक्षा कीजिये ।

असि सत्यः ऋ. १-८७-४—सत्कर्मों के योग्य हो ।

स्वपन्ति = सोते हैं ।

श्वासन्ति = सांस लेते हैं ।

हिंसन्ति = मारते हैं ।

स्वपानि = मैं सोऊँ ।

हिनसानि = मैं मारूँ ।

ये ददति प्रिया वसु ऋ. ७-३२-१५—जो प्रिय अथवा अभीष्ट धन देते हैं ।

दधाना इन्द्र ऋ. १-४-५—इन्द्र की सेवा करते हुए—

दधासि रत्नं द्रविणं-

च दाशुपे ऋ. १-९३-१४—हवि देने वाले यजमान को सुन्दर कर्मफल तथा धन देते हो ।

योऽग्निहोत्रं जुहोति = जो अग्निहोत्र करता है ।

ममत्तु नः परिज्मा ऋ. १-१२२-३—चारों ओर भ्रमण करने वाले (सूर्य) हमको प्रसन्न करें ।

माता यद्वीरं जजनत् -

दधनत् ऋ. १०-७३-१—माता ने तुझ वीर को उत्पन्न किया ।

जागर्षि त्वम् = तुम जागते हो ।

चिकीर्षकः = करने की इच्छा वाला ।

लोलूयं लोलूयम् = काट काट कर ।

लूयते केदारः स्वयमेव = खेत स्वयं काटा जाता है ।

मा हि चीकरताम् = नहीं किया ।

इतिधातुस्वराः

अथ प्रातिपदिकस्वराः

कर्षः = खेती, खींचना ।

कर्षः = " "

पाकः = पकाना ।

चैश्वानरः कुशिकेभि-

युंगेयुगे ऋ. ३-२६-३—अग्नि होताओं द्वारा प्रति दिन ।

गावः सोमस्य प्रथमस्य-

मघः ऋ. ६-२८-५—गायें श्रेष्ठ सोमरस का भक्षण प्रदान करें ।

उदुत्तमं वरुणं ऋ. १-२४-१५—हे वरुण उत्तम (सिर पर
बैठे हुए.....)

शश्वत्तममीकते ऋ. १०-७०-३—सनातन (अग्नि की)
स्तुति करता है ।

चतुरः कल्पयन्तः ऋ. १०-११४-६—चार प्रकार के
स्थापित करते हैं ।

चतस्रः पश्य = चारों ओर देखो ।

अध्वर्युभिः = पाँचों अध्वर्युओं के साथ ।

पञ्चभिः ऋ. ३-४-७—पाँचों ।

नवमिर्वाजिनैवती च ऋ. १०-३९-१०—निन्यानवे घोड़ों
के साथ ।

सप्तभ्यो जायमानः ऋ. ८-९६-१६—(हे इन्द्र) उत्पन्न
होते ही तुम सातों के लिए (कृष्ण,
वृत्र, नमुचि, शम्बरादि) अथवा
अङ्गिरायायणियों के लिए (शत्रु
हो गये) ।

आदशमिर्विव-

स्वतः ऋ. ८-७२-८—परिचय करने वाले यजमान के
दसों उँगलियों से प्रार्थनाः किये
जाने पर—

आषड्भिर्हूयमानः ऋ. २-१८-४—बुलाये जाने पर लहों
के साथ—

विश्वेदेवैस्त्रिभिः ऋ. ८-३५-३—तुम तीन विश्वेदेवों के
साथ ।

नवानां नवतीनाम् ऋ. १-१९१-१३—निन्यानवे (नदियों)
का ।

सर्वे नन्दन्ति यशसा ऋ. १०-७१-१०—जो सब स्तुति
(नहीं) करते हैं ।

यस्मिन्नेविश्वानि-

पौस्या ऋ. १-५-९—जिस (सोम) में सब बल
रहता है—

सुते दधिष्वनक्ष नः ऋ. १-३-६—सोमयाग में हमारे अन्न
(हवि) को स्वीकार करो ।

अयं पन्थाः ऋ. ४-१८-१—यह मार्ग (जन्म लेने
का द्वार) ।

ज्योतिष्मतः पथो रक्ष ऋ. १०-५३-६—ज्योतिर्मय मार्गों
की रक्षा करो ।

हर्षसे दातवाड ऋ. ५-२१-९—देने के लिए प्रसन्न
होते हो ।

स्वेच्ये शुचिघ्नत ऋ. १०-११८-१—अपने स्थान में
प्रदीप्त होओ ।

जयोऽश्वः = जिसके द्वारा जीता जाय, वह घोड़ा ।

वाजेमिर्वाजिनीवती १. १-३-१०—हविरूप अन्न के
कारण अन्नवाली
(सरस्वती) ।

इन्द्रं वाणीः ऋ. १-७-१—यजुर्वेद के मन्त्रों से इन्द्र (की
स्तुति करते हैं) ।

चञ्चा पा० अ० ५-३-९६—

अग्निर्मणिवकः = अग्नि के समान तेजस्वी दालक ।

चैत्रः पा० अ० ६-२-१४८—

दत्तः = किसी व्यक्ति का नाम ।

चिन्तितः = किसी का नाम ।

त्रातः = रक्षा किया गया ।

कृतम् = किया गया ।

हृतम् = हरा गया ।

अतसं न शुष्कम् ऋ. ४-४-४—जैसे सूखी लकड़ी को
(जलाते हो) उसी तरह ।

कृषञित्फालभाशितम् ऋ. १०-११७-७—इल जोत कर
अन्न उत्पन्न करता है ।

रिक्तः = रीता, खाली, शून्य ।

जुष्टो दम्नाः ऋ. ५-४-५—पर्याप्त दान देने वाला ।

अर्पितषष्टिर्नचला-

चलास ऋ. १-१६४-४८—(इसमें तीन सौ) साठ
चलने वाली आरें (दिन) लगी हैं ।

महिषस्तव नो मम = भैंसा तुम्हारा है मेरा नहीं ।

तुभ्यं हिन्वानः ऋ. २-३६-१—तुम्हारे लिए लाया गया
(यह सोम.....)

मक्षं वातः-

पवताम् ऋ. १०-१२८-२—वायु मुझको शुद्ध करे ।

युञ्जन्त्यस्य काम्या ऋ. १-६-२३—इसके (इन्द्र के)
(रथ में) अभीष्ट (घोड़ों)
को जोतते हैं ।

ईक्ष्यो नूतनैस्त ऋ १-१-२—हमसे स्तुति किये जाते हैं ।
आजुह्यात ईक्ष्यो-

चन्धश्च ऋ. १०-११०-३ - देवों को बुलाने वाले, स्तुत्य
तथा वन्दनीय हो ।

श्रेष्ठं नो धेहि-

वार्थम् ऋ. १०-२४-२—हमको उत्तम धन दो ।

उक्थमिन्द्राय-

शंस्यम् ऋ. १-१०-५—इन्द्र के लिए हमको शस्त्र (ऋग्वेद
के मन्त्र) ढूँढ़ना चाहिए ।

इन्धानो अग्निम् ऋ. २-२५-१—अग्नि को प्रज्वलित
करता हुआ ।

उदुम्बरावती=उदुम्बर देश में बहने वाली नदी ।

शरावती = घग्घर नदी ।

वेन्नवती = बेतवा नदी ।

अहीवती = साँपों वाली किसी नदी का नाम ।

मुनीवती = मुनियों वाली किसी नदी का नाम ।

इतिप्रातिपदिकस्वराः

अथ फिट्स्त्राणि

उच्चेः = उच्चस्वर से ।

पाटला = पाटल ।

फलेहाः = पाटल, ताड़ का वृक्ष ।

सुरूपा = शालपर्णी ।

पाकला = कृष्ण, कूट ।

अपालक, व्याधिघात, आरग्वध = अमलतास ।

अम्बा = माता ।

सागरः = समुद्र ।

गेहम् = घर ।

शाला = घर ।

गुदम् = मल द्वार ।

अन्तर्धा = छिपना ।

छाया = छाया ।

माया = माया ।

जाया = पत्नी ।

वाक्षम् = बाहरी ।

इम्बा = हथिनी, रता विशेष ।

चत्रिया = क्षत्राणी ।

नखम् = नाखून ।

उखा = बर्तन, पत्तीली ।

सुखम् = सुख ।

दुःखम् = दुख ।

शिखा = चोटी ।

मुखम् = मुँह ।

वंहिष्ठैरश्वैः सुवृता रथेन ऋ. ५-६२-९—बहुत से घोड़े
वाले रथ से ।

परिवत्सरः = एक पूरावर्ष ।

सप्ततिः = सत्तर ।

अशीतिः = अस्सी ।

चत्वारिंशत् = चालीस ।

अभ्यूयर्वाणा-

प्रमृत्स्यायोः ऋ. ५-४१-१९—तेज अथवा जल के दान
से यजमान को आच्छा-
दित करती हुई ।

दक्षिणो बाहुः—दाहिना हाथ ।

प्रत्यङ्मुखस्यासीनस्य-

वामपाणिर्दक्षिणो भवति = पश्चिम मुँह बैठे हुए व्यक्ति का
बायाँ हाथ दक्षिण की ओर हो
जाता है ।

दक्षिणः ऋ. १०-७-७—अनुकूल ।

कृष्णानां ग्रीहीणाम् = काले धानों का ।

कृष्णो नोनाव वृषभः ऋ. १-४९-२—काले रंग के मेघ ने प्रचण्ड गर्जन किया ।

कृष्णोरात्र्यै = रात्रि के लिए काला मृग—

अयं वां कृष्णो-

अश्विना ऋ. ८-४५-२४—जिस प्रकार गौर मृग सरोवर में जल पीता है—

पृष्ठम्—पीठ, पत्र या पीछे ।

इन्द्र आशाम्यस्परि ऋ. २-३१-१२—इन्द्र चारों ओर से ।

कृत्तिका नक्षत्रम्—कृत्तिका नक्षत्र ।

घृतं मिमिक्षे ऋ. २-३ ११ धी छिड़कता है ।

ज्येष्ठ आह चमसा ऋ. ४-३३-५—ज्येष्ठ ऋतु ने कहा चमस (सोमरस का घात्र, चावल की पूड़ी) को ।

कनिष्ठ आह चतुरः ,, छोटे ने कहा-चार. करेंगे ।

ज्येष्ठः श्रेष्ठः = बड़ा ।

कनिष्ठोऽल्पकः = छोटा ।

बलिः = नैवेद्य ।

तनुः = शरीर ।

वने न वायः ऋ. १०-२९-१—वन में जिस प्रकार पक्षी ।

कुशाः = कुश ।

काशाः = काश ।

साषाः = उड़द ।

तिलाः = तिल ।

गोधूमाः = गेहूँ ।

पञ्च = पाँच ।

चत्वारः = चार ।

कर्णभ्यां चिबुकादधि ऋ. १०-१६३-१—दोनों कानों तथा ठुड्डी से नीचे ।

ओष्ठाविव मधु ऋ. २-२९-६—दोनों ओठों को मधु की तरह—

विश्वो विहायाः ऋ. १-२८-६—यह महान् विश्व (परमेश्वर) सबका गन्तव्य स्थान है ।

काकः = कौआ ।

वृकः = भेड़िया ।

शुकेषु मे ऋ. १-५०-१२—मेरे (रंगको) तोतों में—

क्षीरंसर्पिर्मधुदकम् ऋ. ९-६३ ३२—दूध, घी तथा मादक सोमरस को ।

कन्दुकः = गेंद ।

वरुणं वो रिशादसम् ऋ. ५-६४-१—तुम दोनों में शत्रु नाशक ।

स्वसारं त्वा कृण्वै ऋ. १०-१०८-९—तुमको मैं बहिन समझता हूँ ।

पीवानं मेपम् ऋ. १०-२७-१७—मोटे भेंड़े को ।

पुतः = चित्र विचित्र रंग ।

हरिणः = हलका पीला रंग ।

शितिः = सफेद या नीला रंग ।

पृश्निः = चितकवरा रंग ।

हरित् = हलका पीला रंग ।

मुनिः = मुनि ।

तस्य ज्ञानः ऋ. १-१६४-१३—उसका धुरा नहीं थकता ।

अक्षैर्मा दीव्यः ऋ. १०-३४-१३—पासों से मत खेलो अर्थात् जुआ मत खेलो ।

अर्धो ग्रामस्य = करीब करीब आधा गाँव ।

अर्धं पिप्पल्याः = पीपर का आधा अर्थात् आधा पीपर ।

पीतद्रुः सरलः = देवदारु ।

ग्रामः = गाँव ।

सोमः = सोम लता ।

यामः = पहर ।

चञ्चा=पुआल से बने हुए मनुष्य की तरह का मनुष्य ।

तालः=ताड़ की तरह ।

मेरुः=मेरु की तरह ।

व्याघ्रः=बाघ की तरह ।

सिंहः=सिंह की तरह ।

महिषः=भैंसे की तरह ।

आङ्गः=अङ्ग देश के राजा की तरह ।

अङ्गाः=अङ्ग जनपद की तरह ।

कल्याणः=भलाई ।

कोलाहलः=शोरगुल ।

मल्लिका=बेला ।
 श्येनी=माँदा वाज ।
 हणिीर=मृगी ।
 तरक्षुः=लकड़बग्घा ।
 कुक्कुटः=मुर्गा ।
 तित्तिरिः=तीतर ।
 खञ्जरीटः=खिड़रिच ।
 वसन्तः=वसन्त ऋतु ।
 कृकलासः=गिरगिट ।
 श्यामाकाः=साँवा ।
 भाषाः=उड़द ।
 केकयः=केकय जनपद ।
 पल्लम्=मांस ।
 शकलम्=साही का काँटा ।
 एकलः=अकेला ।
 मल्लः=पहलवान ।
 कृषिः=खेती ।
 ललाटम्=माथा ।
 कपोलः=गाल ।
 रसना=जीभ ।
 वदनम्=मुख ।
 मलयः=मलय पर्वत ।
 मकरः=मगर ।
 शीतन्या=शतपुष्पा=सोया, सौंफ ।
 पादपः=वृक्ष ।
 आतपः=धूप ।
 अनूपम्=दलदलवाला प्रदेश, जलमय प्रदेश ।
 नीपम्=निम्न स्थल में स्थित प्रदेश, पर्वत की तराई, कदम्ब ।
 अयुतम्=दस हजार ।
 धमनिः=वातापि तथा इल्ल की माता का नाम ।
 विपणिः=बाजार ।
 मकरः=मगर ।
 वरुडः=अन्त्यज, शूद्र ।

सुगन्धितेजनाः=हरिद्वारी कुश ।
 राजादनफलम्=पियार, चिरउँजी का फल, खिरनी !
 कुलायः=घोंसला ।
 सनाथा समा=जिस समा में राजा या अध्यक्ष उपस्थित हों ।
 हलीषा, लाङ्गलीषा=हरिस ।
 महिषी=पट्टरानी, महारानी ।
 आषाढा उपदधाति=आषाढा नामक ईंटों को रखता है ।
 शकटिः, शकटी=वैलगाड़ी ।
 गोष्ठजो ब्राह्मणः=गोशाला में उत्पन्न हुआ ब्राह्मण ।
 गोष्ठजः पशुः=गोशाला में उत्पन्न पशु !
 पारावतः=कवूतर ।
 धूज्जानुः=भूरे रङ्ग के घुटनों वाला ।
 मुञ्जकेशः=मूज की तरह कड़े बालवाला ।
 कालवालः=एक प्रकार की काली मिट्टी ।
 स्थालीपाकः=पतीली में पकाना ।
 कपिकेशः=भूरे बाल वाला ।
 हरिकेशः=भूरे बाल वाला ।
 न्यङ्कुशानः=नीचे की ओर मुँह करके लेटा हुआ ।
 व्यचक्षयस्वः=सूर्य को दिखाया ।
 तिल्यम्=तिल पैदा होनेवाला खेत ।
 सतोविल्वउदतिष्ठत्=उससे वेल निकाला ।
 स्तरीयस्वत् ऋ ७ १०१-३—
 उत्तत्त्वः पश्यन् ऋ. १०-७१-४—कोई कोई देखता या समझता हुआ भी ।
 नमन्तामन्यके समे ऋ. ८-३९-१—सभी शत्रुओं को मारें ।
 सिमस्मै ऋ. १-११५-४—समस्त संसार में ।
 वासस्त जुते सिमस्मै ,, समस्त संसार में वस्त्र (अंधकार) फैलाता है ।
 स्वाहा=यह देवता के लिए ।
 एव=निश्चय वाचक अव्यय ।
 एवम्=इस प्रकार, हाँ ।
 नूनम्=अवश्य ।
 ते मित्र सूरिभिः सह ऋ. ७-६६-९—हे मित्रदेव वरुण स्तोता ऋत्विजों के साथ (हम समूह हों) ।

तन्नेमिष्टमवोयथा ऋ. ७-७५-५—जिस प्रकार ऋमु
लोग (देवों के रथकार) उस रथ
के पास—

यथानो अदितिः करत् ऋ. १-४३-२—जिस प्रकार पृथिवी

देवी ने हमारे लिए किया ।

पटुपटुः=अत्यन्त निपुण ।

प्रप्रायम् ऋ. ७-८-४—जिस समय यह (अग्नि) ।

दिवेदिवे ऋ. १-१-३—प्रतिदिन ।

इति फिट् सूत्राणि

अथ प्रत्ययस्वराः

अग्निः=आग ।

कर्तव्यम् = करने योग्य ।

यज्ञस्य = यज्ञ का ।

न यो युच्छति ऋ. ५-५४-१३—जो कभी नष्ट या क्षीण
नहीं होता ।

नभन्तामन्यके समे ऋ. ८-३९-१—सभी क्षत्रियों को मारें ।
यकेसरस्वतीमनु ऋ. ८-१-१८—सरस्वती नदी के तट पर ।
तकरसु ते ऋ. १-१३३-४—इस तुम्हारे थोड़े से काम को
(बहुत समझते हैं) ।

कौआयनाः = कुञ्ज की सन्तान ।

यदाग्नेयः=अग्नि की जो सन्तान ।

तिन्नो द्यावः सवितुः ऋ. १-३५-६—तीन स्वर्ग हैं उनमें
सूर्य के...

वाचा विरूपः=वाणी से भद्दा ।

राज्ञो नु ते ऋ. १-९१-३—ब्राह्मणों के राजा आपके...

विधत्ते राजनि त्वे ऋ. ६-१-१३—तुझ राजा के पास बहुत
घन है—

न ददर्श वाचम् ऋ. १०-७१-४—वाणी को (शब्द ब्रह्म
को) नहीं देखा, ज्ञान नहीं
प्राप्त किया ।

परमवाचा=उत्तम वाणी से ।

इन्द्रो दधीचः ऋ. १-८४-१३—इन्द्र ने दधीच की ।

प्रतीचो बाहून् ऋ. १०-८७-४—युद्ध के लिए आप की
ओर गये हुए राक्षसों की भुजाओं
को तोड़ दो ।

प्रष्ठौहः=गाड़ी अथवा हल में निकाला जानेवाला बैल ।

प्रष्ठौहाः=गाड़ी अथवा हल में निकाला जाने वाला बैल ।

अक्षयुवा = जुआरी से ।

अक्षयुवे=जुआरी के लिए ।

पुमिर्नृमिर्नृतमः ऋ. ४-१७-११—पशुओं के श्रेष्ठ पालक
इन स्तोत्राओं द्वारा....।

प्र से बभू ऋ. ४-३२-२२—तुम्हारे ये दोनों लाल घोड़े....।
माभ्यां गा अनु ऋ. ४-३१-२२—(हे इन्द्र अपने) इन
दोनों घोड़ों के लिए (हमारी)
गायों को नष्ट न करो ।

पद्भ्यां भूमिः ऋ. १०-६८-६—पैरों से पृथ्वी....।

ददमिर्नृ जिह्वा = जिस प्रकार जीम दाँतों द्वारा....।

अहरहर्जायते मासि मासि ऋ. १०-५२-३—प्रतिदिन तथा
प्रतिमास होता है ।

मनश्चिन्मे हृद आ ऋ. १-२४-१२—मेरे मन तथा हृदय
से सब तरह से....।

अपां फेनेन ऋ. ८-१४-१३—जल के फेन से....।

अआतेव पुंसः ऋ. १०-१२४-७—बिना भाई की स्त्री जिस
प्रकार अपने पिता आदि के पास....।

राथा वयम् ऋ. ४-४२-१०—हम लोग वन से....।

राथो धर्ता विवस्वतः ऋ. ५-१५-१—सूर्य के घन (प्रकाश)
को धारण करने वाले ।

उप स्वाग्ने दिवेदिवे ऋ. १-१-३—हे अग्नि प्रतिदिन तुम्हारे
समीप....।

अष्टामिर्दशभिः ऋ. २-१८-४—आठ तथा दस (घोड़ों से) ।

अच्छारवं प्रथमा जानती ऋ. ३-३१-६—उनके शब्द को (रमाने को) पहिले से जानती हुई उनके शब्द के अनुसार....।
 कृण्वते ऋ. ३-२-८०—करनेवाले ।
 दधती = धारण करती हुई ।
 तुदन्ती = कष्ट देती हुई ।
 चोदयित्री सुनुतानाम् ऋ. १-३-११—प्रिय तथा सत्य वाक्यों को प्रेरित करती हुई....।
 एषा नेत्री ऋ. ७-७६-७—यह (उषा) नेत्री....।
 ऋतं देवाय कृण्वते सवित्रे ऋ. २-५७-१—जल बरसाने वाले तथा सबको काम में लगाने वाले....।
 ब्रह्मवन्धवा = नीच या पतित ब्राह्मण द्वारा ।
 सेरपृक्षिःसुम्भे ऋ. ६-६६-३—वह पृक्षि (मरुतों की माता) मनुष्यों की उत्पत्ति के लिए....।
 यो अग्निमाँ उदनिमाँ इयसि ऋ. ५-४२-१४—जल देने वाला तथा जल वाला जो (मेघ) जाता है ।
 अक्षयवन्तः कर्णवन्तः सखायः ऋ. १०-७१-७—आँख तथा कान वाले सखा (समान ज्ञानी)....।
 मा त्वा विददिषुमान् ऋ. २-४२-२—बाण वाला खीरा तुमको न पाये ।
 मरुत्वानिन्द्रनियुत्त्वान्वायवागहि ऋ. ३-४७-१—हे इन्द्र मरुतों वाला । हे वायु सवारियों के साथ आओ ।
 रेवाँ इद्रेवतः ऋ. ८-२-१३—तुम्हारा स्तोता धनवान् हो ।
 चेतन्ती सुमतीनाम् ऋ. १०-१०३-८—उत्तम बुद्धिवाले तथा अनुष्ठान करनेवालों को प्रेरणा देनेवाली ।
 देवसेनानामभिमञ्जतीनाम् ऋ. १०-१०३-८—शत्रुओं को भयभीत करनेवाली देव सेनाओं के....।
 जयम्दीनां मरुतो यन्तु ऋ. १०-१०३-८—मरुद्गण विजयिनी देव सेनाओं के आगे जायें ।
 आषड्भिर्हूयमानः ऋ. २-१८-४—बुलाये जाने पर छः (घोड़ों के साथ)....।

त्रिमिष्ट्वं देव ऋ. १-६७-२६—हे देव ! तुम तीनों (सूर्य, अग्नि, जल) के साथ ।
 गवांशता ऋ. १-१२२-७—सौ गाय ।
 गोभ्यो गातुम् ऋ. ८-४५-३—जल को जाने के लिए....।
 शुनश्चिच्छेपम् ऋ. ५-२-७—शुनः शेष नामक ऋषि को ।
 तेभ्यो शुम्नम् ऋ. ५-७९-७—उनको धन ।
 तेषां पाहि श्रुधी हवम् ऋ. १-२-१—उस सोमरस का पान करो और हमारे बुलाने को सुनों ।
 शुमिरकुभिः ऋ. १-३४-८—दिन तथा रात से (युक्त) ।
 उप त्वाग्ने दिवेदिवे ऋ. १-१ ७—हे अग्निदेव ! तुम्हारे पास प्रतिदिन....।
 नृमिर्येमानः ऋ. १-७५-३—कर्म करनेवाले ऋत्विजों द्वारा पात्र में रखा गया (सोम)....।
 क्व नूनम् ऋ. १-३८-२—इस समय तुम लोग कहाँ थे ।
 कर्ता = करनेवाला ।
 य आस्ते=जो रहता या बैठा ।
 अमिचष्टे अनृतेभिः ऋ. ७-२०४-८—भूठी (बातोंवाला) कहता या बनाता है ।
 पुरुभुजाचनस्यतम् ऋ. १-३-१—लम्बी भुजावाले अथवा अधिक खानेवाले तुम दोनों यथेष्ट भोजन करो ।
 वर्धमानं स्वे दमे ऋ. १ १ ८—अपने घर (यज्ञशाला) में बढ़ते हुए को....।
 अमिवृधे गृणीतः ऋ. ३-६-१०—समृद्धि के लिए स्तुति करता है ।
 हतो वृत्राययार्या ऋ. ६-६०-६—कर्म करनेवालों से किये गये उपद्रवों को (इन्द्राग्नी ऋषि) करते हैं ,
 कतीह निधनानाः = यहाँ कितनों को मारते हुए ।
 शिश्ये = सो गया ।
 ह्रुते=छिपाता है ।
 यदधीते=जो पढ़ता है ।
 इन्धे राजा ऋ. ७-८-१—राजा (अग्निदेव) प्रदीप्त होते हैं ।

यासिष्टं वर्तिरश्विनौ ऋ. ७-४:-५—हे अश्विनी कुमार !
हमारे घर आओ ।

यदाहवनीये=आहवनीय (यज्ञमण्डप में स्थापित पूर्वीय अग्नि)
अग्नि में जो....

लुलविथ=घाटा ।

इति प्रत्ययस्वराः

अथ समासस्वराः

यज्ञश्रियम् ऋ. १-४-७—यज्ञ की सम्पत्ति (सोमरस) को....
सत्यशिक्षत्रश्रवस्तमः=सच्चा तथा सर्वश्रेष्ठ विलक्षण कीर्ति-
वाला....

समपादः=बराबर पैर वाला ।

तुल्यश्वेतः पा० २-१-६८=बराबर सफेद ।

किरिकाणः=सूखा अथवा छेनी से काना किया गया ।

पतयन्मन्दयत्सखम् ऋ. १-४-७—यजमान के कर्म को
पूरा करनेवाले तथा हर्षदायक इन्द्र
के मित्र इस सोमरस को....

शस्त्रीश्यामा=शस्त्र धारण करनेवाली स्त्री ।

अयज्ञो वा एषः ऋ. ६-६७-९—जो यज्ञ नहीं करता ।

स्नात्वा कालकः=समय पर स्नान करनेवाला ।

सुहृत्सुखम्=क्षण भर सुख ।

भोज्योष्णम्=गर्म भोजन ।

कृष्णसारङ्गः=काला तथा चितकबरा मृग ।

लोहितकल्माषः=लाल तथा रङ्गविरङ्ग ।

परमकृष्णः=बिलकुल काला ।

कृष्णतिला=काले तिल ।

कृष्णैतः=काला तथा चितकबरा ।

अरिन्नागधमुदकम्=डॉङ्गेर गहरा जल ।

गोलवणम्=जितना नमक गाय को दिया जाता है उतना
नमक ।

परमगाधम्=बहुत गहरा ।

धनदायाद्यः=धन का भाग ।

परमदायादः=उत्तम दायाद ।

गमनचिरम्=देर से जाना ।

व्याहरणकृच्छ्रम्=बोलने में कष्ट ।

मूत्रकृच्छ्रम्=पेशाब करने में कष्ट ।

मूत्रपदेन प्रस्थितः=पेशाब करने के बहाने चला गया ।

उच्चारपदेन=शौच करने के बहाने....

विष्णुपदम्=विष्णु का स्थान ।

कुटीनिवातम्=कुटी की आड़ या शरण ।

कुड्यनिवातम्=दीवाल की आड़ ।

राजनिधाते वसति=राजा की शरण में रहता है ।

रज्जुशारदमुदकम्=तत्क्षण निकाला गया जल ।

उत्तमशारदम्=उत्तम शरद ऋतु की घास ।

कठाध्वर्युः=कठ शाखा का अध्वर्यु ।

दौवारिककषायः=निम्न श्रेणी की मदिरा ।

परमाध्वर्युः=उत्तम वैदिक ।

पितृसदृशः=पिता के समान ।

परमसदृशः=पूर्ण तथा माननीय ।

प्राच्यसप्तसमः=पूर्व भारत का सात वर्ष का व्यक्ति ।

वीहिप्रस्थः=प्रस्थ भर (दस छटाँक) घान ।

परमसप्तसमम्=उत्तम या पूरे सात वर्ष ।

मद्रवाणिजः=मद्र जनपद का व्यापारी ।

गोवाणिजः=गाय का व्यापारी ।

परमवाणिजः=उत्तम व्यापारी ।

भिक्षामात्रम्=भिक्षा के बराबर ।

पाणिन्युपज्ञम्=पाणिनि द्वारा बनाया गया व्याकरण ।

नन्दोपक्रमम्=नन्द के शासन काल में प्रचलित ।

इषुच्छायम्=वाणों की छाया ।

कुड्यच्छायम्=दीवाल की छाया ।

गमनप्रियम्=जाने का आनन्द ।

गमनसुखम्=जाने का सुख ।

परमसुखम्=अति आनन्द ।

ब्राह्मणसुखं पायसम्=खीर ब्राह्मणों को प्रिय होती है ।

छात्रप्रियोऽनघ्यायः=छात्रों को छुट्टी प्रिय होती है ।

राजसुखम्=राजा का सुख ।

गोस्वामी=गायों अथवा इन्द्रियों का स्वामी ।

परमस्वामी=उत्तम स्वामी ।

दम्बुनागृहपति-

दर्भे श्रु. १ ६०-४—दमन करने की इच्छा से गृह रक्षक हो कर यज्ञशाला में ।

भूपतिः=पृथ्वी का स्वामी, राजा ।

वाक्पतिः=वाणी का स्वामी ।

चित्पतिः=ज्ञान का स्वामी ।

दिधिषूपतिः=पुनर्विवाहिता स्त्री का पति ।

भुवनपतिः=लोकों का स्वामी, ईश्वर ।

गमनाशङ्कमस्ति=जाने में डर है ।

गमनावधम्=जाने में रुकावट ।

गमननेदीयः=जाना आवश्यक या अनिवार्य है ।

परमनेदीयः=विलकुल आवश्यक ।

आव्यपूर्वः=पहिले का सम्पन्न ।

परमपूर्वः=विलकुल पहिला ।

मद्रसविधम्=मद्र जनपद के समीप ।

गान्धारसनीडम्=गान्धार (कन्दहार) के समीप ।

काश्मीरसमर्पादम्=काश्मीर के समीप ।

मद्रसवेशम्=मद्र के समीप ।

मद्रसवेशम्=मद्र के समीप ।

समर्पादं क्षेत्रम्=सीमा या हृदबन्दी वाला खेत ।

चैत्रसमर्पादम्=चैत्र का घिरा हुआ या सीमा वाला ।

विस्पष्टकटुकम्=विलकुल कटुआ ।

परमलवणम्=विलकुल नमकीन ।

विस्पष्टब्राह्मणः=शुद्ध ब्राह्मण ।

गमनश्रेष्ठम्=उत्तम सवारी, गाड़ी ।

गमनज्यायः=उत्तम सवारी, गाड़ी ।

गमनावमम्=खराब सवारी ।

गमनकनिष्ठम्=खराब सवारी ।

गमनप्रपापिष्ठम्=खराब सवारी ।

गमनशोभनम्=सुन्दर सवारी ।

गमनश्रेयः=सुन्दर सवारी ।

कुमारश्रमणा=क्वारी संन्यासिनी ।

कुमारप्रत्येनाः=पाप रहित क्वारी ।

कुमारचातकाः=बच्चा या छोटा पपीहा ।

कुमारजीमूताः=छोटा या हलका बादल ।

पञ्चारत्निः=पाँच अरत्नि (१ अरत्नि = १२ फुट) लम्बा ।

दशमास्यः=दस महीने का ।

पञ्चमास्यः=पाँच महीने का ।

पञ्चकपालः=पाँच कटोरों में तैयार किया गया ।

पञ्चभगालः=पाँच खप्परो में तैयार किया गया ।

पञ्चशरावः=पाँच सकोरों में तैयार किया गया ।

पञ्चाश्वः=पाँच घोड़ों से खरीदा गया ।

परमारत्निः=विलकुल ११ फुट ।

बहुमास्यः=बहुत महीनों का ।

बहुकपालः=अनेक कटोरों में तैयार किया गया ।

पञ्चदिष्टिः=पाँच दिष्टि लम्बा (दिष्टि = ११ फुट)

पञ्चवितस्तिः=पाँच वितस्ति लम्बा (वितस्ति = १२ अंगुल) ।

सङ्काश्यसिद्धः=सांकाश्य (संकसिया) में तैयार किया गया ।

आतपशुष्कः=घूप में सूखा हुआ ।

आहूपकवः=भाड़ में पका हुआ ।

चक्रबन्धः=पहिये में बाँधा हुआ ।

पूर्वाह्नसिद्धः=दोपहर के पहिले तैयार किया गया ।

परित्रिगर्तं बृष्टो देवः=त्रिगर्त (काँगड़ा) को छोड़कर चारों ओर वर्षा हुई ।

प्रतिपूर्वाह्नम्=हर दोपहर के पहिले ।

प्रत्यपररात्रम्=हर रात के पिछले पहर ।

उपपूर्वरात्रम्=रात के पहिले पहर के लगभग ।

उपत्रिगर्तम्=त्रिगर्त (काँगड़ा) को छोड़ कर ।

प्रत्यग्निः=प्रत्येक अग्नि में ।

श्वाफलकचैत्रकाः=श्वफलक तथा चैत्रक की सन्तान ।

शिनीवासुदेवाः=शिनि तथा वसुदेव की सन्तान ।

द्वैप्यहैमायनाः=द्वीप में होने वाले तथा हैमि की सन्तान ।

संकर्षणवासुदेवौ=बलराम और कृष्ण ।

वृष्णिकुमाराः=यदुवंशियों के लड़के ।

कुपपञ्चालाः=कूप तथा पञ्चाल ।

द्वादश = बारह ।

त्रयोदश = तेरह ।

पाणिनीयरौढीयाः = आचार्य पाणिनि तथा रौढि के छात्र ।

पाणिनिदेवदत्तौ = पाणिनि का छात्र तथा देवदत्त ।

छान्दसवैयाकरणः = छन्द तथा व्याकरण के जानने वाले ।

आपिशलिपाणिनीये = आपिशलि तथा पाणिनि द्वारा बनाये गये शास्त्र ।

कार्तिकौजपौ = कृत तथा कुजप की सन्तान ।

सावर्णिमायङ्केरौ = सवर्ण तथा मण्डूक की सन्तान ।

महाव्रीहिः = उत्तम घान ।

महापराङ्गः महागृष्टिः = अपराङ्ग का अन्तिम भाग m, w ।

महागृष्टिः = एक बार व्याई हुई गाय ।

महेष्वासः = बहुत बड़ा घनुर्धर ।

मयाहैलिहिलः = बहुत चञ्चल, खेलाड़ी या विलासी ।

महद्व्रीहिः = बड़े आदमी का घान ।

क्षुल्लकवैश्वदेवम् = क्षुल्लक तथा वैश्वदेव नामक ग्रह या पत्र ।

महावैश्वदेवम् = महा वैश्वदेव नामक ग्रह या पत्र ।

उष्ट्रादी = ऊँटों का वध कराने वाला ।

उष्ट्रवामी = ऊँटों को वध कराने वाला ।

गोसादः = गायों का वध कराने वाला ।

गोसादिः = गायों का वध करानेवाला ।

गोसारथिः = गाय अथवा बैल हँकने वाला ।

कुरुगार्हपतम् = कुरु जनपद के गृहपतियों की संस्था ।

वृजिगार्हपतम् = वृजि जनपद (उत्तरी विहार) के गृहपतियों की संस्था ।

रिक्तगुरुः = खाली रहने पर भी भारी ।

असूतजरत्नी = बच्चा न देने पर भी बुढ़ी ।

अश्लीलदृढरूपा = भद्दी होने पर भी दृढ़रूप वाली ।

पारेबद्धा = उसपार में घोड़ी की तरह ।

तैतिलकद्रु = तितिल की संतानों या छात्रों की तरह ।

पयस्कम्बलः = बिकाऊ कम्बल, जिसकी लम्बाई चौड़ाई तथा मूल्य निश्चित होते थे ।

दासीभारः = दासी का बोझ ।

देवहूतिः = देवों की प्रार्थना या आवाहन ।

सराये सपुरन्ध्र्याम् ऋ. १-५-३ = वही धन के लिए तथा स्त्री के लिए (उपयुक्त हो) ।

यूपदारुः = यज्ञ के खम्भे के लिए लकड़ी ।

देवार्थम् = देवता के लिए ।

गोहितम् = गाय के लिए लाभदायक ।

श्रेणिकृतः = पंक्ति बद्ध, पंक्ति बना दी गई ।

पूगकृताः = राशि बनाई गई, एकत्र की गई ।

श्रेणिकृतम् = पंक्ति द्वारा बनाया गया ।

कृताकृतम् = किया गया और न किया गया ।

कष्टभितः = कष्ट पाया हुआ ।

ग्रामगतः = गाँव गया हुआ ।

कान्तारासीतः = जंगल के पार या बाहर गया हुआ ।

सुखप्राप्तः = जिसको सुख मिला हो ।

त्वोत्तासः = तुमसे रसा किया गया ।

रुद्रहतः = रुद्र से मारा गया ।

महाराजहतः = महाराज से मारा गया ।

रथयातः = रथ से गया हुआ ।

पुरोहितम् = सामने रखी हुई ।

अभ्युद्धतः = निकाला गया, उद्धार किया गया ।

दूरादागतः = दूर से आया हुआ ।

अग्ने रायो नृत्तमस्य प्रभूतौ ऋ. ३-१९-३ = हे अग्नि देव ! अधिक धन देनेवाले आप के प्रभाव में (हम लोग रहें) ।

सङ्गति गोः = गाय का साथ ।

प्रजल्पाकः = अधिक बोलनेवाला ।

प्रकर्ता = उत्तम करने वाला ।

आगन्तुः = आने वाला ।

अन्वेतवा उ य० ३-८-२३ = प्रतिदिन आने के लिए—

ये पराञ्चस्तान् ऋ. १-१६४-१९ = जो पराङ्मुख हैं उनको ।

प्रत्यञ्चो यन्तु ऋ. १०-१२८-६ = (ये शत्रु) भय से चिल्लाते हुए अपने स्थान को लौट जायं—

जहि वृष्यानि कृणुही पराचः ऋ. ६-२५-३ = उनकी शक्ति नष्ट करो तथा उन्हें पराजित करो ।

उदञ्चनम् = ऊपर फेंकना, उलीचना, बालटी ।

न्यङ्कुत्तानः = नीचे मुँह करके लेटा हुआ ।

अध्यङ् = अष्ट, उत्तम ।

ईषत्कडारः = कुछ भूरा ।

ईषद्भेदः = कुछ या थोड़ा सा अन्तर ।

द्विसुवर्णधनम् = दो सुवर्ण (३२ माशा) धन ।
 प्रस्थधनम् = प्रस्थ (१० छटाँक) धन ।
 काञ्चनधनम् = सुवर्ण धन ।
 निष्कमाला = सुवर्ण मुद्रा की माला ।
 प्रथमवैयाकरणः = जिसने पहले पहल व्याकरण पढ़ना प्रारम्भ किया हो ।
 प्रथमो वैयाकरणः = प्रख्यात व्याकरण जाननेवाला ।
 कतरकठः = कौन सा कठशास्त्र का अध्यापक ।
 आर्यकुमारः = आर्य (श्रेष्ठ) कुमार ।
 आर्यब्राह्मणः = श्रेष्ठ ब्राह्मण ।
 परब्राह्मणः = अन्य ब्राह्मण ।
 आर्यक्षत्रियः = उत्तम क्षत्रिय ।
 राजाब्राह्मणः = राजा ब्राह्मण ।
 राजकुमारः = राजा कुमार ।
 राजप्रत्येनाः = राजा निष्पाप, पाप रहित राजा ।
 नित्यप्रहसितः = सदा हँसता हुआ ।
 सुहृत्प्रहसितः = क्षण भर हँसने वाला ।
 ग्रामनापितः = गाँव का नाई ।
 परमनापितः = उत्तम नाई ।
 ग्रामरथ्या = गाँव की सड़क ।
 राजनापितः = राजा नाई, निपुण नाई ।
 राजकुशलः = राजा कुम्हार, कुशल कुहार ।
 राजनापितः = राजा का नाई ।
 राजहस्ती = राजा का हाथी ।
 मुकुटे कार्षापणम् = प्राच्य भारत में प्रति व्यक्ति लगनेवाला एक विशेष कर ।
 हलेद्विपदिका = प्रति हल पर लगने वाला एक कर ।
 यासिकादवः = यज्ञ करानेवाले को दक्षिणा में दिया जाने वाला धोड़ा ।
 वैयाकरणहस्ती = वैयाकरण को उपहार में दिया जानेवाला हाथी ।
 स्तम्भेरमः = हाथी ।
 कर्मकरवर्द्धितकः = मजदूर को दिया जानेवाला भात का पिण्ड जो नीचे स्थूल तथा ऊपर नोकीला होता था ।
 बाडवाहरणम् = गर्भवती घोड़ी को खाने के लिए दी जानेवाली वस्तु ।

गोवल्लवः = गाय की देखभाल करनेवाला, चरवाहा ।
 गवाध्वक्षः = गाय का निरीक्षक ।
 पापनापितः = दुष्टनाई ।
 भार्यासौश्रुतः = भार्या के वंश में रहनेवाला सुश्रुत का वंशज ।
 कुमारीदात्राः = कन्या प्राप्ति के लोभ से दक्ष का छात्र ।
 ओदनपाणिनीयाः = भात पाने की आशा से पाणिनि व्याकरण पढ़नेवाला ।
 भिक्षाभाणवः = भिक्षा प्राप्ति की आशा से ब्रह्मचर्य से रहने वाला ।
 भयब्राह्मणः = दण्ड के भय से ब्राह्मण की तरह आचरण करनेवाला ।
 दासीश्रोत्रियः = दासी प्राप्ति की आशा से श्रोत्रिय ।
 परमब्राह्मणः = उत्तम ब्राह्मण ।
 मधुमैरेयः = शहद की शराब ।
 परममैरेयः = उत्तम शराब ।
 पुष्पासवः = फूलों का आसव ।
 भक्तमन्नम् = अन्न ।
 भिक्षाकंसः = भिक्षा का पात्र ।
 भाजीकंसः = माण का पात्र ।
 समाशक्षालयः = खाने का घान ।
 भिक्षाप्रियः = जिसे भीख प्रिय हो ।
 धान्यगवः = गाय की तरह अन्न की राशि ।
 गोविडालः = गाय की तरह विडाल ।
 तृणसिंहः = सिंह की तरह घास की ढेर ।
 सक्तुसैन्धवः = नमक की तरह सत्तू ।
 परमसिंहः = उत्तम सिंह ।
 दन्तलेखकः = दाँत साफ करनेवाला ।
 रमणीयकर्ता = उत्तम कार्य करनेवाला, सुन्दर कार्य करनेवाला ।
 इक्षुभक्षिकां मे धारयसि = तुमको मुझे ईख चुसाना है ।
 उद्दालकपुष्पभक्षिका = प्राच्य भारत का एक खेल जिसमें लिसोड़े के फूल तोड़े या कुचले जाते थे ।
 जीवपुत्रप्रचारिका = उदीच्य भारत का एक खेल जिसमें जिया पूता के फूल एकत्र किये जाते थे ।
 तवपुष्पप्रचारिका = फूल तोड़ने की तुम्हारी वारी ।
 छत्रधारः = छाता लेने या लगानेवाला ।

काण्डलावः = डण्डल काटनेवाला ।
 तन्तुवायः = जुलाहा ।
 काण्डलावः = काटने वाला ।
 कुम्भकारः = कुम्हार ।
 तन्तुवायो नाम कृमिः = तन्तुवाय नाम का कीड़ा, मकड़ा ।
 रथकारो नाम ब्राह्मणः = रथकार नाम की ब्राह्मण जाति ।
 गोपालः = गवाला ।
 तन्तिपालः = राज्य की गायों के बड़े भुंड की देखभाल करने वाला ।
 यवपाः = यव, जौ की रखवाली करने वाला ।
 वत्सपालः = बछड़ों की रखवाली करने वाला ।
 गोरक्षः = गायों की रक्षा करने वाला ।
 पुष्पहारी = फूल लाने वाला ।
 उष्ट्रकोशी = ऊँट की तरह बलवाने वाला ।
 ध्वक्षरावी = कौए की तरह काबे काबे करने वाला ।
 वृकवच्चो = भेड़िये की तरह धोला देने वाला ।
 गदंभोच्चारी = गधे की तरह रेंकने वाला ।
 युक्तारोही = घोड़ों का निरीक्षक ।
 आगतयोधी = आये हुए से युद्ध करने वाला ।
 क्षीरहोता = दूध का हवन करने वाला ।
 कुटीजः = झोपड़ी में उत्पन्न होने वाला ।
 काराजः = कारा में उत्पन्न होने वाला ।
 तुषजः = कराई (अलका छिलका) भुसी में उत्पन्न होने वाला ।
 भ्राष्ट्रजः = भाड़ में उत्पन्न होने वाला ।
 वटजः = वरगद में उत्पन्न होने वाला ।
 उपसरजः = गर्भाधान के लिए पुरुष का स्त्री के पास जाने से उत्पन्न होने वाला ।
 आमलकीजः = आंवले से उत्पन्न होने वाला ।
 दग्धजानि तृणानि = जलने से उत्पन्न होने वाली घास ।
 मल्लग्रामः = पहलवानों का समूह ।
 देवग्रामः = देवों का समूह ।
 देवस्वामिकः = देवों का समूह ।
 दाक्षिग्रामः = जिस गाँव में दक्ष के गोत्रज रहते हों ।
 दाक्षिनिवासः = दक्ष के गोत्रजों का निवास ।
 दाक्षिबोधः = दक्ष के गोत्रजों का निवास स्थान ।

दाक्षिहृदः = दक्ष के गोत्रजों का ताल ।
 छात्रिशाला = छात्रियों का मकान ।
 व्याडिशाला = व्याडियों का घर ।
 छात्रिशालम् = छात्रियों का मकान ।
 इन्द्रप्रस्थः = पाण्डवों की राजधानी ।
 दाक्षिप्रस्थः = दाक्षियों का गाँव ।
 कर्कप्रस्थः = एक नगर का नाम ।
 मकरीप्रस्थः = " "
 मालाप्रस्थः = मालपत ।
 शोणाप्रस्थः = सोनपत ।
 ब्रह्मनगरम् = एक नगर का नाम ।
 महानगरम् = एक नगर का नाम ।
 नवनगरम् = नया नगर ।
 कार्तिकनगरम् = एक नगर का नाम ।
 गुप्तामर्मम् = एक नगर का नाम ।
 कुक्कुटामर्मम् = " "
 बृहदमर्मम् = " "
 कपिल्लामर्मम् = " "
 महामर्मम् = " "
 नवामर्मम् = " "
 भूतामर्मम् = " "
 अधिकामर्मम् = एक नगर का नाम ।
 सञ्जीवामर्मम् = " "
 मद्रामर्मम् = " "
 अश्मामर्मम् = " "
 मद्राश्मामर्मम् = " "
 कञ्जलामर्मम् = " "
 दिवोदासाय दाशुपे ऋ. ४-३०-२०—हव्य देने वाले यज-
 मान दिवोदास को—
 सर्वश्वेतः = बिलकुल सफेद ।
 सर्वमहान् = सर्व श्रेष्ठ ।
 परमश्वेतः = बिलकुल सफेद ।
 सर्वसौवर्णः = शुद्ध सोने का ।
 सर्वश्वेतः = बिलकुल सफेद ।
 अञ्जना गिरिः = एक पर्वत का नाम ।

मौण्डिनिकायः = पर्वत विशेष का नाम ।
 परमगिरिः = उत्तम पहाड़ ।
 ब्राह्मणनिकायः = ब्राह्मण का घर ।
 परमगिरिः = उत्तम पहाड़ ।
 ब्राह्मणनिकायः = ब्राह्मण का घर ।
 वृद्धकुमारी = वृद्धा स्त्री ।
 परमकुमारी = विलकुल क्वारी ।
 गुडोदकम् = गुड़ मिला हुआ जल ।
 शीतोदकम् = ठंडा जल ।
 गर्गत्रिरात्रः = गर्गों का त्रिरात्र नामक यज्ञ ।
 अतिरात्रः = रात को बिताये हुए ।
 बिह्वससरात्रः = बेल के हवन की सात रातें ।
 गोपालसमम् = ग्वालों की सभा ।
 ब्राह्मणसेनम् = ब्राह्मणों की सेना ।
 राजसभा = राजा की सभा ।
 रमणीयसमम् ब्राह्मणकुलम् = सुन्दर सभा वाला ब्राह्मणों का कुल ।
 देवदत्तपुरम् = प्राच्य भारत का एक गाँव ।
 नान्दीपुरम् = प्राच्य भारत का एक गाँव, नन्दिग्राम ।
 शिवपुरम् = उदीच्य भारत का एक गाँव ।
 अरिष्टपुरम् = एक नगर का नाम ।
 गौडपुरम् = एक नगर का नाम ।
 अरिष्टाशितपुरम् = एक नगर का नाम ।
 गौडभृत्यपुरम् = एक नगर का नाम ।
 हास्तिनपुरम् = हस्तिनापुर ।
 फलकपुरम् = सम्भवतः जालन्धर जिले का किल्लौर ।
 मादैनपुरम् = जि० बिजनौर का मंडावर ।
 कुसुलबिलम् = कोठिले का मुँह ।
 कूपबिलम् = कुएँ का मुँह ।
 कुम्भबिलम् = घड़े का मुँह ।
 क्षालबिलम् = मकान का मुँका ।
 सर्पबिलम् = साँप का बिल ।
 कुसुलस्वामी = कठिले का मालिक ।
 पूर्वेषुकामशमी = एक गाँव का नाम ।
 अपर कृष्णसृत्तिका = एक गाँव का नाम ।
 पूर्वपञ्चालाः = पूर्वी पञ्चाल जनपद ।

पूर्वयायातम् = पूर्व में प्रचलित ययाति की कथा । ययाति की प्राचीन कथा ।

पूर्वचानराटम् = चानराट की प्राचीन कथा ।

पूर्वपाणिनीयाः = पाणिनि व्याकरण के प्राचीन आचार्य ।

पूर्वान्तेवासी = प्राचीन छात्र ।

पूर्वपाणिनीयं शास्त्रम् = पाणिनि का प्राचीन व्याकरण शास्त्र ।

सर्वपाञ्चालकः = जिस जनपद में सभी पञ्चाल हों ।

अपर पाञ्चालकः = जिस जनपद में पश्चिमी पञ्चाल हों ।

सर्वभासः = सबको चमकाने वाला ।

सर्वकारकः = सब कुछ करनेवाला ।

विश्वकर्मा विश्वदेवः ऋ. ८-१८-२—विश्वकर्मा तथा विश्वदेव ।

आविश्वदेवम् सप्तविम् = सत्तर विश्व देवों तक ।

विश्वदेवाः = विश्व देव ।

विश्वदेवः = संसार के देवता ।

घृकोदरः = भेड़िये के समान पेटवाला भीम ।

हर्षश्च = जिसका धोड़ा हरा हो, व्यक्ति विशेष का नाम ।

महेषुः = व्यक्ति विशेष का नाम ।

घटोदरः = घड़े के समान बड़ा पेट वाला, निन्दार्थक ।

कन्दुकाश्वः = गेंद के समान छोटा घोड़ा ।

चलाचलेषुः = जिसका निशाना ठीक न हो ।

गार्गीबन्धुः = गर्ग गोत्र की स्त्री जिसकी बन्धु हो ।

ब्रह्मबन्धुः = जिसका बन्धु ब्राह्मण हो ।

गार्गीप्रियः = गर्ग गोत्र की स्त्री जिसकी प्रिय हो ।

प्रधौतपादः पा ६-२ १३०—जिसके पैर धुले हुए हों ।

प्रसेवकमुखः पा० ६-२-१३९—जिसका मुँह बोरे की तरह लम्बा हो ।

शुष्कमुखः = सूखे मुँह वाला ।

शुक्लकर्णः = सफेद कान वाला ।

शङ्कुकर्णः = जिसके कान पर बाण या कील का चिह्न हो ।

श्वेतपादः = सफेद पैर वाला ।

शोभनकर्णः = सुन्दर कान वाला ।

मणिकर्णः = जिसके कान पर मणि का चिह्न हो, एक यक्ष का नाम ।

गोकर्णः = गाय के समान कान वाला ।

शितिकण्ठः=नीले कण्ठवाला, महादेव जी ।

काण्डपृष्ठः=जिसकी पीठ पर बाण हों, बाण बेचनेवाला
ब्राह्मण या सिपाही ।

सुग्रीवः=सुन्दर ग्रीवा वाला, बानर-राज का नाम ।

नाडीजङ्घः=पतली जाँघ वाला, व्यक्ति विशेष का नाम ।

खरकण्ठः=गधे के समान कण्ठवाला ।

गोपृष्ठः=गाय के समान पीठवाला ।

अश्वग्रीवः=घोड़े के समान ग्रीवावाला ।

गोजङ्घः=गाय के समान जाँघवाला ।

उद्गतशृङ्गः=जिसके सींग निकल चुके हों, कम अवस्था का
बछड़ा ।

द्व्यङ्गुलशृङ्गः=दो अंगुल सींग वाला बछड़ा ।

ऋष्यशृङ्गः=एक ऋषि का नाम ।

मेघशृङ्गः=भेंड़े के समान सींगवाला ।

स्थूलशृङ्गः=मोटे सींग वाला ।

अजरम्=वृद्ध न होनेवाला ।

अमरम्=न मरने वाला ।

अमित्रं मर्दय=शत्रु का नाश करो ।

अवोदेवेवमृतम्=देवों को अमरत्व दो ।

ब्राह्मणमित्रम्=ब्राह्मण का मित्र ।

अशत्रुः=जो शत्रु न हो ।

सुकर्माणः सुयुजः ऋ. ४-२ १७—सुन्दर कर्म वाले तथा
सुन्दर कान्ति वाले ।

स नो वक्षदतिमानः सुब्रह्मा ऋ. ६-२२-७—

शिवा पशुभ्यः सुमन्ताः सुवर्चाः ऋ. १०-८५-४४—पशुओं
का कल्याण करो, मन प्रसन्न करो
तेज बढ़ाओ ।

सुपेशस्करति ऋ. १-३५१ = सुन्दर रूप या अलंकार वाला
बनाओ ।

कृतकर्मा = जिसने काम कर लिया हो ।

सुराजा = उत्तम राजा ।

सुलोमा = अच्छे रोएँ वाला ।

सूषाः पा० ६-२-१२७—जिसके लिए प्रातःकाल सुन्दर हो ।

सुकर्मकः = अच्छे काम वाला ।

सुस्रोतस्कः = उत्तम धारा या प्रवाह वाला ।

साम्राज्याय सुक्रतुः ऋ. १-२५-१०—साम्राज्य पाने के
लिए सुन्दर काम करने वाला ।

सुप्रतीकः=सुन्दर आकार वाला ।

सुहृन्वः=जिसके लिये हृन्व सुन्दर हो ।

सुप्रवृत्तिमनेहसम् ऋ. १-४०-४—खूब मारनेवाली तथा
किसी से न मारे जानेवाली ।

अधास्वद्वाः-

सुरथौ आतिथिग्वे ऋ. ८-६८-१६—अतिथिग्व नामक राजा
के पुत्र को सुन्दर रथ के साथ
घोड़ों को दिया ।

या सुबाहुः—जो सुन्दर बाहु वाली ।

सुगुरसस्सुहिरण्यः ऋ. १-१२५-२—सुन्दर गाय वाला
तथा सुन्दर धन वाला ।

सुवीरेण रथिणा ऋ. १०-१२२-३ = सुन्दर वीरवाले तथा
उत्तम धन वाले के द्वारा ।

सुवीर्यस्य गोमतः ऋ. ८-९५-४ = सुन्दर शक्ति वाले तथा
गाय वाले का ।

उपकूलम् = तट के समीप ।

उपतीरम् = तट के समीप ।

उपतूलम् = रुई के पास ।

उपशालम् = मकान के पास ।

उपाक्षम् = पासा या घुरे के पास ।

सुषमम् = विलकुल समान, बिलकुल सुन्दर ।

निःषमम् = शान्ति रहित ।

उपकुम्भम् = घड़े के पास ।

परमकूलम् = उत्तम किनारा ।

द्विकंसः = दो कंस से खरीदा गया (कंस = ५ सेर अथवा
६ ३/४ सेर) ।

द्विमन्यः = दो मन्य से खरीदा गया (मन्य = १० सेर) ।

द्विशूर्पः = दो शूर्प से खरीदा गया (शूर्प = १ मन ११ सेर
१६ तोला) ।

द्विपाय्यम् = दो पाय्य से खरीदा गया (पाय्य = ५, ७ या
१० सेर) ।

द्विकाण्डम् = दो काण्ड से खरीदा गया (काण्ड = १६ हाथ या
२७ फुट) ।

परमकंसः = उत्तम कंस (५ या ६ ३/४ सेर) ।

ब्राह्मणशालम् = ब्राह्मण का घर ।

दृढशालम् = मजबूत घर वाला ।
 ब्राह्मणकुलम् = ब्राह्मणों का कुल ।
 ब्राह्मणसेनम् = ब्राह्मणों की सेना ।
 ब्राह्मणशाला = ब्राह्मण का घर ।
 सौशमिकन्थम् = उशीनर जनपद के एक नगर का नाम ।
 आह्वरकन्थम् = उशीनर जनपद के एक नगर का नाम ।
 दाक्षिकन्था = दाक्षी की सुजनी, कथरी ।
 चिह्नकन्थम् = उशीनर देश के एक नगर का नाम ।
 मदुरकन्थम् = उशीनर देश के एक नगर का नाम ।
 पुत्रचेलम् = कुपुत्र ।
 नगरखेटम् = छोटा नगर ।
 दधिकटुकम् = बिना स्वाद का दही ।
 प्रजाकाण्डम् = कष्ट दायक प्रजा ।
 परमचेलम् = उत्तम वस्त्र ।
 वस्त्रचीरम् = टुकड़ा सा वस्त्र ।
 कम्बलचीरम् = टुकड़ा सा कम्बल ।
 परमचीरम् = उत्तम टुकड़ा ।
 घृतपल्लम् = घी मिला हुआ मांस ।
 घृतसूपः = घी मिली हुई दाल ।
 घृतशाकम् = घी मिला हुआ शाक ।
 परमपल्लम् = उत्तम मांस ।
 दाक्षिकूलम् = एक गाँव का नाम ।
 शायिडसूदम् = एक गाँव का नाम ।
 दायटायनस्थलम् = " "
 दाक्षिकर्षः = " "
 परमकूलम् = उत्तम तट ।
 ब्राह्मणराज्यम् = ब्राह्मण का राज्य ।
 परमराज्यम् = उत्तम राज्य ।
 कुचेलम् = बुरा वस्त्र ।
 कुराज्यम् = बुरा राज्य ।
 अर्जुनवर्गः = अर्जुन के वर्ग का ।
 वासुदेवपक्षः = वासुदेव के पक्ष का ।
 दामवर्गः = उत्तम वर्ग का ।
 रपशकिपुत्रः = दाशकि का पुत्र ।
 माहिपुत्रः = माहिप का पुत्र ।
 कौण्टिमातुलः = कौण्टि का मामा ।
 दाक्षीपुत्रः = दाक्षी का पुत्र, पाणिनि ।

आचार्यपुत्रः = आचार्य का पुत्र ।
 उपाध्यायपुत्रः = उपाध्याय का पुत्र ।
 शाकटायनपुत्रः = शाकटायन का पुत्र ।
 राजपुत्रः = राजा का पुत्र ।
 ईश्वरपुत्रः = स्वामी का पुत्र ।
 नन्दपुत्रः = नन्द का पुत्र ।
 ऋत्विक्पुत्रः = ऋत्विक् का पुत्र ।
 याजकपुत्रः = याजक का पुत्र ।
 होतुः पुत्रः = होता का पुत्र ।
 श्याकपुत्रः = साले का पुत्र ।
 ज्ञातिपुत्रः = सम्बन्धी का पुत्र ।
 आतुः पुत्रः = भाई का पुत्र, भतीजा ।
 सुदगचूर्णम् = मूँग का आटा ।
 मत्स्यचूर्णम् = मछली का आटा ।
 दर्भकाण्डम् = कुश का पर्व (पोर) ।
 दर्भचीरम् = कुश का टुकड़ा ।
 तिलपल्लम् = तिल और मांस ।
 सुदगसूपः = मूँग की दाल ।
 मूलकशाकम् = मूली का शाक ।
 नदीकूलम् = नदी का किनारा ।
 राजसूदः = राजा का रसोइया ।
 दत्तकाण्डम् = देवदत्त का काण्ड एक परिमाण)
 दर्भकुण्डम् = कुश की तरह लकड़ी ।
 मृत्कुण्डम् = मिट्टी का कुण्डा ।
 कुम्भीभगालम् = घड़े का आधा टुकड़ा ।
 कुम्भीनदालम् = " "
 कुम्भीकपालम् = " "
 शितिपादः = सफेद या नीले पैर वाला ।
 शित्यंसः = सफेद या नीले कंधे वाला ।
 शितिककुत् = सफेद या नीले डीलवाला ।
 दर्शनीयपादः = सुन्दर पैर वाला ।
 शितिमसत् = सफेद या काले रंग का पक्षी ।
 प्रकारकः = उत्तमता से कार्य करने वाला ।
 प्रहरणम् = शस्त्र ।
 शोणा घृणू नृवाहसा ऋ. १-६-२—लाल रंग के, ढीठ तथा
 मनुष्यों को डोने वाले ।
 इध्मप्रवक्षनः = कुल्हाड़ी ।

उच्चैः कारम् = उच्च स्वर से ।

ईषत्करः = थोड़ा लाभ पहुँचाने वाला ।

देवस्यकारकः = देव या राजा का कार्य करने वाला ।

वनस्पतिं वन आ ऋ १०-१०१-११—लकड़ी की गाड़ी को लकड़ी पर ।

वृहस्पतिं यः ऋ. ४-५०-७—जो व्यक्ति बड़े लोगों का पालन करने वाले को या वृहस्पति को....

हर्षया ऋ. ८-१५-१३—हर्ष या सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए (इन्द्र की स्तुति करो) ।

शचीपतिम् ” ”

तनूनपात् ऋ. ३-२९-११—अग्नि ।

नराशंसं वाजिनम् = मनुष्यों द्वारा प्रशंसनीय घोड़े को....

शुनः शेषम् = शुनश्शेष नाम के ऋषिको ।

आ य इन्द्रावरुणौ ऋ. ६-६-१०.. हे इन्द्र तथा वरुण जो यह...

इन्द्रावृहस्पती वयम् ऋ. ४-४-९५—हम लोग इन्द्र तथा वृहस्पति को —

प्लुचन्यग्रोघौ = गूलर तथा वरगद ।

अगिष्टोमाः = यज्ञ विशेष ।

इन्द्राग्निभ्यां कं

वृषणः ऋ. १-१०९-३—सपत्नीकय जमान, इन्द्र तथा अग्नि से जिस प्रकार सुख हो ।

द्यावापृथिवीजनयन्

ऋ. १०-६६-९—आकाश तथा पृथ्वी को उत्पन्न करते हुए—

सोमारुद्रौ = सोम तथा रुद्र ।

इन्द्रापूर्वणौ ऋ. ७-३५-१—इन्द्र तथा सूर्य ।

शुक्रामन्थिनौ = शुक्र तथा मंथिन ।

प्रभृथस्यायोः ऋ. २-४१-१९—यजमान के यज्ञ की ।

आवसथः = निवास स्थान ।

प्रभेदः = अधिक भेद ।

धर्ता वज्री पुरुषदुतः-

ऋ. १-११-४—पालन करने वाले, वज्रधारण करने वाले तथा लोगों से स्तुति किये गये ।

प्रचयः = उत्तम स्थान ।

प्रत्नवः = काटना ।

प्रलवित्रम् = हँसिया ।

गोवृषः = साँड़ ।

ऋतस्य योनौ सुकृतस्य ऋ. १० ८५-२४—

संस्तुतं भवता = आपने खूब स्तुति की ।

शशप्लुतम् = खरगोश का उछलना ।

उपहृतः शाकल्यः = शाकल्य बुलाया गया ।

परिजग्धः = खाया गया ।

आचितम् = एकत्र किया गया ।

आस्थापितम् = रखा गया ।

प्रवृद्धः = बढ़ा हुआ ।

प्रयुक्तः = मिलाया गया या प्रयोग में लाया गया ।

देवदत्तः = प्रार्थना करने पर देवों से दिया गया, उत्पन्न किया गया व्यक्ति विशेष ।

विष्णुश्रुतः = विष्णु से सुना गया, प्रार्थना सुनने पर विष्णु से उत्पन्न किया गया व्यक्ति विशेष ।

संभूतं रामायणम् = संभूत नामक रामायण ।

देवपालितः = देवों से पालन किया गया ।

संश्रुतः = प्रतिज्ञात ।

देवखाता = देवों से खोदी गयी ।

अनाहतो नदति देवदत्तः = बिना वजाये अर्जुन का देवदत्त नामक शंख बजता है ।

सुसप्रलपितम् = सोये हुए व्यक्ति का बकना ।

प्रमत्तगीतम् = मत वाले या पागल का गाना ।

पयःपानं सुखम् = दूध पीना सुखद होता है ।

राजभोजनाः शालयः = राजा के भोजन के योग्य धान ।

हस्तादायः = हाथ से लेना ।

वन्तधावनम् = दातृन ।

निदर्शनम् = उदाहरण ।

रथवःसं = रथ का मार्ग, सड़क ।

पाणिनिऋतिः = पाणिनि की रचना ।

छन्दोव्याख्यानम् = छन्द की व्याख्या ।

राजशयनम् = राजा का शयन ।

राजासनम् = राजा का आसन ।

अश्वस्थानम् = घोड़े का स्थान ।

ब्राह्मणयाजकः = ब्राह्मण का यज्ञ कराने वाला ।

गोक्रांतः = गाय से खरीदा गया ।

प्रभूतौ सङ्गतिम् = बहुत से लोगों का समूह ।

अध्ययनपुण्यम् = अध्ययन में पुण्य ।

वेदपुण्यम् = वेद से पुण्य ।

माषोनम् = एक माषा कम ।
 माषविकलम् = एक माषा कम ।
 वाक्कलहः = जबान से लड़ाई, वाक्विवाद ।
 धान्यार्थः = अन्न से प्रयोजन ।
 तिलमिश्राः = तिल मिला हुआ ।
 सर्पिमिश्राः = घी मिला हुआ ।
 गुडधानाः = गुड मिला हुआ भूना जो ।
 तिलसंमिश्रा = तिल मिला हुआ ।
 ब्राह्मणमिश्रो राजा = ब्राह्मणों से मिला हुआ राजा, ब्राह्मणों से सहमत राजा ।
 अकारणवेष्टकिकम् = जो कर्णभरण के उपयुक्त न हो ।
 अञ्जैदिकः = जो काटने योग्य न हो ।
 अवत्सीयः = जो बछड़े के लिए लाभदायक न हो ।
 असान्तापिकः = जो कष्ट देने में समर्थ न हो ।
 गार्दभरथिकः जो गधे के रथ पर चढ़ने के योग्य हो ।
 विगार्दभरथिकः = जो गधे के रथ पर चढ़ने के योग्य न हो ।
 भगार्दभरथिकः = जो गधे के रथ पर चढ़ने के योग्य न हो ।
 कर्णवेष्टकाभ्यां नसंपादिमुखम् = जो मुँह कर्णभरण के उपयुक्त न हो ।
 अपाणिनीयः = जो पाणिनि का व्याकरण न पढ़ता हो ।
 अबोढा = जो विवाह करने योग्य न हो ।
 अपाश्या = जो जालों का समूह न हो ।
 अदन्त्यम् = जो दाँतों में न हो ।
 अपाथम् = जो जल पैर धोने योग्य न हो ।
 अदेयम् = जो देने योग्य न हो ।
 अदन्त्यम् = दन्त्य से भिन्न ।
 अपचः = जो पका न सके ।
 अपचो जाल्मः = पका न सकने का बहाना करने वाला दुष्ट ।
 अविच्छिपः = जो फेंक न सके ।
 अदेवदत्तः = जो देवदत्त नाम के योग्य न हो ।
 अकर्तव्यः = जो करने योग्य न हो ।
 अनागासुकः = जो आने वाला न हो ।
 अनलङ्करिण्युः = जो अलङ्कृत करने वाला न हो ।
 अनालम्ब्यविण्युः = जो धनी होनेवाला न हो ।
 अचारुः = जो सुन्दर न हो, कुरूप ।
 असाधुः = जो सज्जन न हो, दुर्जन ।
 भराजः = जो राजा न हो ।
 अनहः = जो दिन न हो ।

अकर्ता = जो करने वाला न हो ।
 अनन्तम् = जो अन्त न हो ।
 अतीक्ष्णम् = जो तेज (तीखा) न हो, कुन्द ।
 अशुचि = अपवित्र ।
 इदं प्रथमः = यही पहिला, जिसका यही पहिला हो ।
 एतद् द्वितीयः = यही दूसरा, जिसका यही दूसरा हो ।
 तत्पञ्चमः = वही पाँचवाँ, जिसका वही पाँचवाँ हो ।
 इदं प्रथमः = इससे पहिला ।
 यः प्रथमः = जो पहिला, इनका जो पहिला ।
 तद्वहुः = इसका वही बहुत ।
 इदं प्रथमाः = जिनका यही पहिला है अर्थात् जिनका यह प्रधान है ।
 इदं प्रथमाः = जिनका यह प्रधान है ।
 इदं प्रथमकः = जिसका यह पहिला है ।
 द्विस्तना = दो स्तन वाली ।
 चतुःस्तना = चार स्तन वाली ।
 दर्शनीयस्तना = सुन्दर स्तन वाली ।
 द्विशिराः = दो सिर वाला ।
 द्विस्तनीं करोति वामदेवः = वामदेव, दो स्तन वाली बनाता है ।
 चतुःस्तनां करोति द्यावापृथिव्योर्दोहनाय = आकाश तथा पृथ्वी को दूहने के लिए चार स्तनवाली करता है ।
 देवमित्रः = व्यक्ति विशेष का नाम ।
 कृष्णाजिनम् = काला मृगचर्म ।
 प्रियमित्रः = जिसको मित्र प्रिय हो ।
 विश्वामित्र ऋषिः = विश्वामित्र ऋषि ।
 वस्त्रान्तरः = जिसका व्यवधान वस्त्र हो ।
 आत्मान्तरः = जिसका स्वभाव दूसरा हो ।
 गोरमुखः = गोरे मुँह वाला ।
 दीघमुखः = बड़े दरवाजे वाला मकान ।
 उच्चैर्मुखः = ऊँचा मुँह वाला ।
 प्राङ्मुखः = पूर्व की ओर मुँह वाला ।
 गोमुखः = गाय के समान मुँह वाला ।
 महामुखः = बड़े मुँह वाला ।
 स्थूलमुखः = मोटे मुँह वाला ।
 मुष्टिमुखः = मुट्ठी की तरह मुँह वाला ।

पृथुमुखः=चौड़े मुँह वाला ।
 प्रक्षालितमुखः=मुँह धोये हुए ।
 सिंहमुखः=सिंह के समान मुँह वाला ।
 वत्समुखः=बछड़े के समान मुँह वाला ।
 सारङ्गजग्धः=जिसने सारङ्ग (पक्षी अथवा मृग) खाया हो ।
 मासजातः=महीने भर का, जिसको उत्पन्न हुए एक महीना हुआ हो ।

सुखजातः=सुख से उत्पन्न ।
 दुःखजातः=दुःख से उत्पन्न ।
 पुत्रजातः=जिसके पुत्र उत्पन्न हुआ हो ।
 वस्त्रच्छन्नः=कपड़े से ढका हुआ ।
 कुण्डकृतः=कुण्ड में बना हुआ ।
 कुण्डमितः=कुण्ड से नापा गया ।
 कुण्डप्रतिपन्नः=कुण्ड में पहुँचा हुआ ।
 दन्तजातः=जिसके दाँत निकल आये हों ।
 मासजातः=महीने भर का ।
 अग्नीहिः=जिसके पास धान न हो ।
 सुमाषः=जिसके पास उत्तम उड़द हो ।
 अग्रहबन्धुकः=जिसका बन्धु ब्राह्मण न हो ।
 सुकुमारीकः=जिसकी पत्नी सुकुमारी हो ।
 अग्नीहिकः=जिसके पास धान न हो ।
 सुमाषकः=जिसके पास उत्तम उड़द हो ।
 अक्षकः=मूर्ख ।
 बहुग्नीहिकः=जिसके पास बहुत धान हो ।
 बहुमित्रकः=जिसके बहुत मित्र हों ।
 बहुमानः=बहुतों में जिसका सम्मान हो ।
 बहुगुणा रज्जुः=बहुत लड़ वाली रस्सी ।
 बहुचरं पदम्=बहुत अक्षर वाला पद ।
 बहुध्यायः=बहुत अध्याय वाला ग्रन्थ ।
 बहुगुणो द्विजः=बहुत गुण वाला ब्राह्मण ।
 प्रपृष्ठः=विशेष प्रकार की या ऊँची पीठ वाला ।
 प्रललाटः=उन्नत ललाट वाला ।
 दर्शनीयपृष्ठः=सुन्दर पीठ वाला ।
 प्रशाखो वृक्षः=ऊँची शाखा वाला वृक्ष ।
 उद्वाहुः=ऊपर की ओर बाहु करके ।
 विपश्यः=जिसके पास उत्तम हँसिया हो ।
 तस्येदिमे प्रवणे=उसके इस उत्तम वन में ।

अन्तर्वणो देशः=जिस देश के मध्य में वन हो ।
 पर्यन्तः=सीमा, किनारा ।
 समन्तः=मिला हुआ, समीपवर्ती ।
 न्यन्तः=सामीप्य, निकटता ।
 व्यन्तः=अलग, दूरवर्ती ।
 परिष्कलम्=तटवर्ती भूमि ।
 परिमण्डलम्=गोलाकार ।
 प्रगृहम्=उत्तम घर ।
 प्रपदम्=पैर का चिह्न ।
 निरुदकम्=निर्जल ।
 निरुपलम्=बिना पत्थर का ।
 अभिमुखम्=सामने ।
 अभिमुखा शाला=सामने वाला मकान ।
 अपमुखम्=जिसका मुँह फिरा हुआ हो, विकृत मुँह वाला ।
 अपस्फिगम्=जिसका चूतड़ खराब हो ।
 अपपूतम्=" "
 अपवीणम्=जिसके पास वीणा न हो या खराब वीणा वाला ।
 अपाञ्जः=जिसके पास मलहम न हो, जो ईमानदार न हो ।
 अपाध्वम्=खराब मार्ग ।
 अपकुक्षिः=विकृत पेट वाला ।
 अपसीरम्=जिसके पास बुरा हल हो ।
 अपहलम्=" "
 अपनामः=बुरे नाम वाला ।
 अधिदन्तः=दाँत के ऊपर निकला हुआ दाँत ।
 अधिकरणम्=न्यायालय, विषय ।
 अनुज्येष्ठः=जेठे की पीछे चलने वाला ।
 अनुकनीयान्=पीछे चलने वाला छोटा भाई ।
 अनुज्येष्ठः=पीछे चलने वाला बड़ा भाई ।
 अनुपुरुषः=बाद में कहा गया पुरुष ।
 अनुपुरुषः=पीछे चलने वाला पुरुष ।
 अत्यकुशो नागः=अंकुश के बंध में न रहने वाला हाथी ।
 अतिपदा गायत्री=अनेक पदवाली गायत्री ।
 अतिकारकः=उत्तमता से कार्य करने वाला ।
 अतिगार्ग्यः=गर्ग गोत्र में उत्पन्न उत्तम पुरुष ।
 अतिकारकः=कारीगर से बढ़ कर ।
 निमूलम्=जिसकी जड़ निकल गई हो अथवा निकली हुई जड़ ।

न्यक्षम्=निम्न श्रेणी का, नीच ।

निदग्धः=जिसने लाठी रख दी हो, अर्थात् जो शक्ति का प्रयोग नहीं करता m w. ।

प्रत्यंशुः=निकली हुई किरण ।

प्रतिजनः=शत्रु, प्रतिपक्षी ।

प्रतिराजा=शत्रु राजा ।

उपदेवः=छोटा देव ।

उपेन्द्रः=इन्द्र का छोटा भाई, विष्णु ।

उपाजिनम्=चमड़े पर ।

उपगौरः=गया हुआ गौर ।

उपतैषः=गया हुआ तैष ।

उपसोमः=जिसके पास सोम हो, सोमयाग करने वाला ।

सुप्रत्यवसितः=रुशल पूर्वक अपने देश लौटा हुआ, विपत्ति के डर से भाग कर घर आया हुआ ।

कुब्राह्मणः=बुरा ब्राह्मण ।

कुवृषणम्=उत्तम वृष्टि ।

उत्पुच्छः=पूँछ के ऊपर ।

उत्पुच्छः=पूँछ ऊपर करके ।

द्विपाच्चतुष्पाच्च रथाय ऋ. ४-२१-५—रथ के लिए दो पैर तथा चार पैर वाला ।

त्रिपादूर्ध्वः द्विदन्

ऋ. १०-१०-४—ऊपर की ओर तीन पैर तथा दो दाँत वाला ।

त्रिमूर्धानं सप्तरश्मिम्

ऋ. १-१४६-१—सवन रूप तीन सिर वाले तथा छन्द रूप सात किरणों वाले को ।

द्विमूर्धः=दो सिर वाला ।

त्रिमूर्धः=तीन सिर वाला ।

कल्याणमूर्धा=शुभ उत्तम सिर वाला ।

द्विमूर्धा=दो व्यक्तियों का सिर ।

गौरसक्थः=गौर वर्ण की जाँघ वाला ।

इक्ष्णसक्थः=चिकनी जाँघ वाला ।

चक्रसक्थः=ऐंठी हुई या चौड़ी जाँघ वाला ।

अजिसक्थमालभेत=वकरे की जाँघ को काटना चाहिए ।

सुविजाता उरुक्षया ऋ. १-२-९—बहुतों के उपकार करने के लिए उत्पन्न ।

नियेन सुष्टिहृत्यया ऋ. १-८-२—जिस धन से घूसों या मुक्कों की मार से ।

यस्त्रिचक्र ऋ. १-१८३-१—जो तीन पहिये वाला है ।

विश्वायुर्ध्वेहि=सबको आयु दो ।

इति समासस्वराः

अथ तिङन्तस्वराः

पचतिगोत्रम्=अपने कुल को कष्ट देता है ।

पचति पचतिगोत्रम्=विवाह आदि में अपने कुल को बारबार सुखी करता है ।

पचति पापम्=बुरी तरह पकाता है ।

खनति गोत्रं समेत्य कूपम्=अपने कुल को एकत्र कर कुआँ खोदता है ।

अग्निमीळे ऋ. १-१-१—अग्नि की स्तुति करता हूँ ।

इवः कर्ता=कल करेगा ।

यदग्नेत्यामहं त्वम् ऋ. ८-४४-२३—हे अग्नि, यदि मैं धनवान् हो जाऊँ ।

युवायदाकृत्यः ऋ. ५-७४-५—जब तुम दोनों करते हो ।

कुविदङ्ग आसन् ऋ. ७-९१-१—अच्छी तरह प्रशंसनीय थे ।

अचित्तिभिश्चकृमा कच्चित् ऋ. ४-१२-४—हे अग्नि ! यदि हमने अज्ञान से कोई पाप या अपराध किया हो ।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति ऋ. १-८९-९—जहाँ पुत्र हमारे रक्षक होते हैं ।

न ह मोक्षयसे=नहीं, तुमको खाना पड़ेगा ।

न ह वै तस्मिन्लोके दक्षिणमिच्छन्ति=वास्तव में उस लोक में वे दक्षिणा नहीं चाहते ।

सख्यं भोक्षयसे=क्या तुम वास्तव में खाओगे ।

सत्यमिदम् उतं वयमिन्द्रं स्तवामा=वास्तव में हमको उस
इन्द्र की स्तुति करनी चाहिए ।

अङ्ग कुरु=हाँ तुम करो या बनाओ ।

अङ्ग कृजसि वृषल इदानीं ज्ञास्यसि जालम्=अच्छा दुष्ट तुम
बको, शीघ्र ही तुमको मालूम हो
जायगा ।

आ हि ष्मा याति ऋ. ४-२९-२—आवे ।

आ हि रुहन्तम् ऋ. ८-२२-९-अश्विद्वय (रथपर) चढ़ो ।

अनुतं हि मत्तो वदति पाप्मा चैनं पुनाति=चूँकि मतवाला
असत्य बोलता है इसलिए उसे
पाप लगता है ।

यथा चित्कण्वमावतम्=जिस किसी तरह कण्व की रक्षा करो ।

यावत्पचति शोमनम्=जब तक अच्छी तरह पकाता है ।

यथापचति शोमनम्=जैसे अच्छी तरह पकाता है ।

यावद्भुङ्क्ते=जब तक भोजन करता है ।

यावद्देवदत्तः प्रपचति शोमनम्=जब तक देवदत्त अच्छी तरह
पकाता है ।

आदह स्वधामनु पुनर्गर्भत्वमेतिरे ऋ. १-६-४—(मरुद्गण
ने) वर्षा के बाद पुनः अन्न उत्पन्न
करने के लिये मेघ को प्रेरित
किया ।

अहो देवदत्तः पचति शोमनम्=हर्ष की बात है देवदत्त अच्छी
तरह पकाता है ।

अहो कटं करिष्यति=हर्ष की बात है वह चटाई बनायेगा ।

अधीष्व माणवक पुरा विद्योतते विद्युत्=माणवक शीघ्रता से
पढ़ो, सामने बिजली चमकती है ।

न तेनस्म पुराधीयते=वे बहुत पहले पढ़ते थे ।

ननु गच्छामि भोः=महाशय, मैं जा सकता हूँ ?

अकार्षीः कटं त्वम्=क्या तुमने चटाई बनाई ?

ननु करोति=हाँ, बनाता हूँ ।

किं द्विजः पचति आहोस्विद् गच्छति=क्या ब्राह्मण पकाता
है या जाता है ।

किं भक्तं पचति अपूपान् वा=क्या भात पकाता है अथवा
पूआ ?

किं पठति=क्या पढ़ता है अर्थात् कुछ नहीं पढ़ता ।

किं प्रपचति उत प्रकरोति=क्या वह पकाता है या बनाता है ।

किं द्विजो न पचति=क्या ब्राह्मण नहीं पकाता ।

देवदत्तः पचति आहोस्वित्पठति=देवदत्त पकाता है या पढ़ता
है ।

एहि मन्ये भक्तं मोक्ष्यसे भुक्तं तदतिथिमिः=आओ, मैं सम-
झता हूँ कि भात खाओगे; परन्तु
उसे तो अतिथियों ने खा लिया ।

एहि मन्यसे ओदनं मोक्ष्ये इति सुष्ठु मन्यसे=आओ, तुम
समझते हो भात खाऊँगा, ठीक ही समझते हो ।

जातु मोक्ष्यसे=कभी भोजन करोगे ।

कटं जातु करिष्यसि=कभी चटाई बनाओगे ।

अश्विद् भुङ्क्ते=कोई भोजन करता है ।

कतरश्चित्=दोनों में से एक ।

कतमश्चिद्=उन सब में से एक ।

को भुङ्क्ते=कौन भोजन करता है ।

रामः किञ्चित्पठति=राम कुछ पढ़ता है ।

आहो उताहो वा भुङ्क्ते=क्या वह भोजन करता है ?

देव आहो भुङ्क्ते=क्या महाराज भोजन करते हैं ?

आहो देवः पचति=क्या महाराज पकाते हैं ?

आगच्छ देव ग्रामं द्रक्ष्यसे तम्=हे देव, आइये आप उस
गाँव को देखेंगे ।

उह्यन्तां देवदत्तेन शालयो रामेण मोक्ष्यन्ते=देवदत्त धान को
ढोवे, राम उसको खायगा ।

पच देव ओदनं मोक्ष्यसेऽन्नम्=हे देव भात पकाइये, आप
उसको खायेंगे ।

आगच्छ देव ग्रामं द्रक्ष्यस्येनम्=हे देव आपको गाँव से जाना
चाहिए, उनको देखियेगा ।

आगच्छ देव ग्रामं

पिता से ओदनं मोक्ष्यते=हे देव, गाँव में आइये, आप के
पिता भात खायेंगे ।

आगच्छ देव ग्रामं त्वं

चाहं च द्रक्ष्याव एनम्=हे देव, गाँव में आइये, हम दोनों
उसको देखेंगे ।

आगच्छ देव ग्रामं पश्य=हे देव, आइये, गाँव को देखिये ।

पच देवौदनं भुङ्क्ष्वैनम्=हे देव, भात पकाइये और
उसको खाइये ।

आगच्छ देव ग्रामं पश्यसि=हे देव, आइये, गाँव को देखते हैं ।

आगच्छ देव ग्रामं पश्यत्वेनं रामः=हे देव, गाँव आइये, राम
उसको देखें ।

आगच्छ देव ग्रामं त्वं

चाहं च पश्यावः=हे देव, गाँव आइये, हम और तुम
उसको देखें ।

आगच्छ देव ग्रामं प्रविश=आइये देव, गाँव में चलिये ।
आगच्छ देव ग्रामं पश्य=आइये देव, गाँव को देखिये ।
आगच्छानि देव

ग्रामं प्रविशानि=हे देव, मैं आज्ञे और गाँव में प्रवेश करूँ ।

हन्त प्रविश=हाँ, प्रवेश करो ।

हन्त कुरु=हाँ, करो, बनाओ ।

हन्त प्रभुजावहै=हाँ हम दोनों भोजन करें ।

आम् पचसि देवदत्त=देवदत्त ! पकाते हो ।

आम् प्रपचसि देवदत्त=देवदत्त पकाते हो ।

आम् पचति देवदत्त=हाँ देवदत्त पकाता है ।

आम् पचसि देवदत्त=हे देवदत्त, पकाते हो ?

उदस्यो यदग्निः=हे अंगिरा, तुमने जो त्यागा ।

उशन्ति हि ऋ. १-२-४—क्योंकि (सोम) तुम दोनों को
चाहते हैं ।

आख्यास्यामि नु ते=तुमसे कहूँगा ।

जाये स्वरोहावेति=श्रोमती जो, आइयें, हम दोनों स्वर्ग चलें ।

देवः पचतिचन=देवदत्त, क्या पकाता है अर्थात् कुछ नहीं
पकाता है (घृणा) ।

देवः पचतिचिद=देवदत्त क्या पकाता है अर्थात् कुछ नहीं
पकाता है (घृणा) ।

देवः पचतीव=देवदत्त पकाता सा है ।

देवः पचतिगोत्रम्=देवदत्त, कुटुम्ब को कष्ट देता है ।

देवः पचतिक्वम्=देवदत्त पकाता सा है ।

देवः पचति पचति=देवदत्त, बारबार पकाता है ।

देवः प्रपचतिचन=देवदत्त क्या पकाता है ।

देवः पचतिच खादतिच=देवदत्त पकाता और खाता है ।

देवः प्रपचति च प्रखादति च=देवदत्त पकाता और खाता है ।

गाश्च चारयति वीणां वादयति=गाय चराता है और वीणा
बजाता है ।

इतो वा सातिमीमहे=अथवा इस जगत् से हम घन दान की
याचना करते हैं ।

स्वयं रथेन याति=स्वयं तो रथ से जाता है ।

उपाध्यायं पदार्तिं गमयति=आचार्य को पैदल चलाता है ।

त्वमहं ग्रामंगच्छ=तुम गाँव जाओ ।

स्वयं ह रथेन याति उपाध्यायं पदार्तिं गमयति=स्वयं रथ से
जाता है और आचार्य को पैदल चलाता है ।

देव एव ग्रामं गच्छतु=देव ही गाँव जायें ।

राम एवारण्यं गच्छतु=राम ही वन जायें ।

देव एव ग्रामं गच्छतु=देव ही गाँव जाय ।

देव एवारण्यं गच्छतु=देव ही वन में जाय ।

देव क्वेवमोष्यसे=देव कहीं भोजन करेगा ।

इन्द्र वाजेषु नोऽव=हे इन्द्र युद्ध में हमारी रक्षा करो ।

शुक्ला ब्रीहयो भवन्ति=धान सफेद होता है ।

श्वेता गा आज्याय दुहन्ति=धी के लिए सफेद गाय दुहता है ।

ब्रीहिर्मियजेत=वान से यज्ञ करना चाहिये ।

यवैर्यजेत=जौ से यज्ञ करना चाहिये ।

अहं देवानामासीत्=देवों का साफ साफ दिन था ।

अयं वाव हस्त आसीत्=यह प्रसिद्ध हाथ था ।

अजामेकां जिन्वति ऋ. १-१६४-२०—दूसरी बकरी को
पसन्द करता है ।

प्रजामेकां रक्षति=दूसरी प्रजा की रक्षा करता है ।

तथोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्ति=उनमें से एक (जीवात्मा) स्वादिष्ट
पीपल का फल खाता है ।

एको देवानुपातिष्ठत्=एक देवों के समीप गया ।

योभुङ्क्ते ऋ. १० १२१-१०—जो भोजन करता है ।

यदद्रचङ् वायुर्वाति तै० सं० व० ५-१ १—

काष्ठाध्यापकः=काष्ठ शाखा का अध्यापक ।

दारुणाध्यापकः=कठोर अध्यापक ।

अज्ञाताध्यापकः=अपरिचित अध्यापक ।

यत्काष्ठं प्रपचति=जिस लकड़ी को पकाता है ।

यत्काष्ठं शुक्लीकरोति=जिस लकड़ी को सफेद करता है ।

पचतिपूति=बुरी तरह पकाता है ।

पचति मिथ्या=व्यर्थ पकाता है ।

प्रपचति पूति=बुरी तरह पकाता है ।

प्रपचति शोभनम्=अच्छी तरह पकाता है ।

पचति विजिह्वाति=पकाता और दुःखी होता है ।

पचति गोत्रम्=कुटुम्बी को कष्ट देता है ।

पचतिपूतिदेवदत्तः=देवदत्त बुरी तरह पकाता है ।

पचन्तिपूति=बुरी तरह पकाते हैं ।

दत्तः पचति-दत्त पकाता है ।

आमन्त्रैन्निहरिमिर्वाहि मयूररोमभिः=हे देव, मतवाले तथा
मोर के रंग की तरह के घोड़ों से आओ ।

यत्प्रपचति=जो पकाता है ।

प्रपचति=पकाता है ।

अग्निनीळे पुरोहितम् यज्ञस्य होतारम्

रत्नधातमम् ऋ. १-१-१—मैं यज्ञ के पुरोहित, होता तथा
रत्न धारण करने वाले (दीप्तिमान्)
अग्निदेव की स्तुति करता हूँ ।

इति तिङन्तस्वराः

इति स्वरप्रकरणम्

शब्दानुक्रमणी

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
अ	१७	अचन्	३१	अग्निचित्या	१६५
अंगुल	६२	अक्षपरि	३१	अग्निदेवत्यम्	११२
अंशक	१०१	अक्षशौण्डः	३४	अग्निभूत	२०८, २०९
अंशभाक्	१७१	अक्षस्य	१८५	अग्निमत्	१३
अंशहरः	१६८	अक्षिभ्रुवम्	५०	अग्निमास्तम्	४८
अंस्	१४०	अक्षीम्याम्	२०५	अग्निमिन्धः	५५
अंसकः	१०३	अक्षू	१२३	अग्निमीले	१
अकः	१७४	अर्चः	२५, २१५	अग्निम्	१६६, २०१, २०८, २३०
अकर्तव्यः	२२८	अर्चैः	८१	अग्निवायू	४७
अकारः	१८७	अर्चैः	२	अग्निवारुणम्	४८
अकारि	१५७	अर्चोहिणी	२५, ३२	अग्निवारुणीम्—	६६
अकार्ष्वेष्टिकिकम्	२२८	अर्चना—	१६	अग्निश्च	१६१
अकार्षम्	२०८	अर्चना—	३७	अग्निष्टुत्	४८
अकार्षीः	१५८, २०८, २३१	अगः	१५८	अग्निष्टे	२१०
अकिंचनः	३६	अगच्छत्	५४	अग्निष्टोमः	४८
अकि	११८	अगदङ्कारः	२०७	अग्निष्टोमयाजी	१७२
अकृतोभयः	३६	अगमः	७५	अग्निष्टोमाः	२२७
अकृतकारम्	१६१	अगस्तयः	३७	अग्निसात्	११४
अकृत्वा	१६०	अगाः	३७	अग्निसाद्भवति	११४
अकेशभार्यः	४२	अगार्दभरथिकः	२२८	अग्निस्तोकः	३५
अकेशा	२२	अगि	११८	अग्नी	३
अकौशलम्	८१	अगीहयत्	१४१	अग्नीत्	८२, २०९
अक्	१२४	अगोष्पदानि	५८	अग्नीघ्रम्	११२
अक्का	१४	अग्	१२४	अग्नीघ्री	११२
अक्त्वा	१५०	अग्न	२११	अग्नीभवति	११४
अक्रन्नुषसः	१६४	अग्नये	२६, २८, २०८	अग्नीवरुणी	४८
अक्षन्वन्तः	२०८, २१८	अग्नये	२०६	अग्नीषोमी	४८
अक्षधुवे	२१७	अग्ना—	२०	अग्ने	१३, १६६, २०६, २१०, २११
अक्षधूः	१७१	अग्नया	२०४, २०८, २०९		२२१
अक्षधूः	४६	अग्निः	२१०, २११, २१३, २१७, २३२	अग्न्याहितः	४६
		अग्निचित्	१७२, २०८		

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
अप्रगामिका	१८७	अचीकणत्	१४१	अजिघ्रिपत्	१४२
अग्रणीः	१७१	अचीकृतत्	१४२	अजिसक्थम्	२३०
अग्रतःसरः	१६८	अचीचकासत्	१४१	अजीववत्	१४१
अग्रिमम्	७७	अच्छगत्य	३७	अजीवनिः—	१८७
अग्रे	१६१	अच्छारवम्	२१८	अजूहवत्	१४२
अग्रेगाः	१६५	अच्छावाकीयम्	६८, १०१	अज्	११६
अग्रेगूः	१७१	अच्छैदिकः	२२८	अजकः	२२६
अग्रेमुक्त्वा	३८	अच्छोद्य	३७	अजत	१६४
अग्रेभूः	१७१	अजः	१७२	अज्ञाताध्यापकः	२३२
अग्रेभोजम्	३८	अजकनाशम्	१६२	अज्ञितः	४, १७४
अग्रेवणम्	५७	अजकः	१६	अज्ञित्वा	१६०
अग्रेसरः	१६८	अजक्षीरम्	५४	अञ्चु	११६, १२५
अग्नूः	८६, ११०, १६६	अजगवम्	१०४	अञ्च्	१३६
अघायुः	१६६	अजतुन्दम्	५६	अञ्जनागिरिः	१५, २२३
अघि	११८	अजत्वम्	५४	अञ्जलिः	६१
अघो	६	अजथ्या	६०	अञ्जसाकृतम्	५१
अङ्क	१४०	अजननिः	२१	अञ्जिजिषति	१४४
अङ्कितः	४	अजनाभवर्ष	१	अञ्जित्वा	१६०
अङ्ग	१७, ४४, २०८, २३१	अजपदः	४३	अञ्जू	१३४
अङ्गगत	१७१	अजमीढ	५६	अटाट्या	१८६
अङ्ग	१४०	अजरम्	११, २२५	अट्	१२०
अङ्गना	१०१	अजरिता	१६३	अट्ट	११६, १३६
अङ्गाः	७२, २१५	अजर्घाः	७	अट्टालिकाबन्धम्	१६२
अङ्गारीयाणि	६०	अजर्यम्	१६३	अठि	११६
अङ्गिरसः	७३	अजस्तुन्दम्	५६	अडुढीकत्	१४१
अङ्गिरस्वत्	१६३	अजलम्	४६, १८०	अड्	१२०
अङ्गलिपङ्गः	५५	अजा	१७, १५७	अड्ड	१२०
अङ्गलिपङ्गा	५५	अजाकृपाणीयः	११०	अणककुलालः	३५
अङ्गुलीयम्	८०	अजागारि	१५७	अणव्यम्	६८
अङ्गुष्ठा	१६०	अजातककुत्	४५	अणुकः	१११
अचचेष्टत्	१४१	अजाद	३७	अण्	१२१, १३६
अचतुरः	५०	अजाम्—	२३२	अण्डसू	१७१
अचारः	२२८	अजार्यम्	१६३	अतः	१०६
अचित्तिभिः	२३०	अजि	१३६	अतसम्	११३
अचिरवती	८	अजिके	१६	अति	११७

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
अतिकतरम्	१०८	अतीक्ष्णम्	२२८	अद्	१२८
अतिकारकः	२२९	अतीसारकी	१०५	अद्वकि	१०९
अतिकारीषगन्ध्यापुत्रः	५४	अत्	११७	अद्वा	१५
अतिकाशकः	२२९	अत्ति	१५५	अघरः,	१७९
अतिकेशा	२१	अत्यङ्कुषः	२२९	अघ ३०, ६७, १०६, १९६, २०८	
अतिकेशी	२१	अत्यन्तीनः	९९	अघश्वीनम्	९९
अतिक्रम्य	१८९	अत्ययी	१७९	अघश्वीना	९९
अतिखट्वः	१०	अत्यहम्	१२	अद्युतत्	१५६
अतिगतः	५१	अत्यहन्तः	३८	अद्वके	१९
अतिगार्ग्यः	२२९	अत्यायः	१६७	अघः	१०७, २०८
अतिचमूः	९	अत्युच्चैसी	१७	अघःपदम्	६
अतिचारी	१७८	अत्यूषाः	२०	अवमार्घ्यम्	७७
अतितत्	८	अत्यूष्णी	२०	अघरात्	१०७
अतित्यद्	१२	अत्रयः	६३	अघरेण	१०७
अतित्वम्	१२	अत्रा	२०३	अघरोत्तरम्	४७
अतिदुर्लभः	१८८	अथ	१६, १७	अघरोत्तरे	४७
अतिधीवरी	१२	अथर्वणः	८३	अघस्तात्	१०७
अतिनिद्रम्	३१	अथो	१९, २००	अघस्पदम्	६
अतिपदा	२२९	अथोत	२०	अघा—	२०६
अतिपन्थाः	४०	अदः	१५	अघामिकः	८७
अतिमालः	३७, ४९	अदः कृतम्	३७	अघास्वश्वाः	२२५
अतिराजा	५१	अदः कृत्य	३७	अघि—	३०
अतिराजी	३८	अदः कृत्वा	३७	अधिकचत्वारिणाः	४२
अतिरात्रः	३८, २२४	अद्वयङ्	१३	अधिकरणम्	२२९
अतिदेवान्	२५	अदन्त्यम्	२२८	अधिकार्यम्	२२३
अतिलक्ष्मीः	९	अदरत्	१४१, १९४	अधिगच्छति	१५७
अतिश्वः	३८	अदस्	८	अधिगमयति	१४२
अतिश्वी	३८	अदि	११७	अधिगोपम्	३१
अतिश्रेयसिः	४५	अदिद्रपत्	१४१	अधिजग्मुपः	१७६
अतिसखा	९	अद्विरात्रिणाः	४२	अधिजिगमिपति	१४३
अतिसर्वाय—	८	अदृशम्	२०४	अधिजिगांसते	१४३
अतिसारः	१८२	अदृष्टजः	१७२	अधिजिगांस्यति	१४३
अतिसुत्वरी	१८	अदेयम्	२२८	अधिजिगापयिषति	१४४
अतिस्त्रिः, -स्त्रि	१०	अदेवदत्तः	२२८	अधितिष्ठति	२४
अतिहिमम्	३१	अदोहि	१५७	अधित्यका	१८, १००

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृ. म्	शब्दः	पृष्ठम्
अधिदन्तः	२२६	अध्यापयति	१४२, १५६	अनुद्यम्	१६२
अधिरामे	३०	अध्यायः	१८८	अनुपदी	१०२
अधिवसति	२४	अध्यास्ते	२४	अनुपदीनः	६८
अधिशेते	२४	अध्वन्यः	६६	अनुपलब्धिः	३६
अधिहरि	१७, ३१	अध्वनीनः	६६	अनुपुरुषः	२२६
अधीती	२६, १०२	अध्वर्युः	६२	अनुप्रवचनीयम्	६६
अधीत्य	१६०	अध्वर्युभिः	२१३	अनुग्राहणी	७१
अधीष्वम्	१६१	अध्वर्युवा—	२०७	अनुभूयते	१५६
अधीयन्	१७७	अध्यूपुपः	१७६	अनुयागः	१६४
अधीषिषति	१४४	अनङ्गुही	२०	अनुरहसम्	५०
अधीष्व	१६१, २३१	अनङ्गवान्	११	अनुरुष्व	१३०
अधुना	१०६	अनङ्गवाही	२०	अनुरूपम्	३१
अधुरम्	५१	अनन्तम्	२२८	अनुरोधी	१७८
अधोग्रे—	२०२	अनन्तेन	१७६	अनुलोमम्	५०
अधोघः	२४, ११५	अनभ्याशमित्यः	५५	अनुवदति	१५४
अघ्न्ये	२११	अनर्थकम्	४५	अनुवदते	१५३
अध्यङ्	२२१	अनलङ्क रिष्णुः	२२८	अनुवनम्	३१
अध्यधि	२४, ११५	अनश्वः	३६	अनुवसति	३४
अध्ययनपुण्यम्	२२७	अनहः	२२८	अनुवाह्यम्	१६३
अध्ययनात्	२६	अनागामुकः	२२८	अनुविष्णु	३१
अध्ययनाय	१५३	अनाढ्यम्भविष्णुः	२२८	अनुव्यचलत्	३१
अध्ययनेन	२५	अनासिका	२१	अनुषक्	२०६
अध्यर्धकंसम्	६१	अनाहतः	२२७	अनुसामम्	५०
अध्यर्धकार्पापणम्	६१	अनुकः	१०३	अनुहरिम्—	२४
अध्यर्धलारीकम्	६२	अनुकनीयान्	२२६	अनूकाशः	१८२
अध्यर्धपण्यम्	६२	अनुकरोति	१५५	अनूचानः	१७६
अध्यर्धपाद्यम्	६२	अनुकामीनः	६६	अनूपः	४६
अध्यर्धप्रतिकम्	६१	अनुगङ्गम्	३१	अनूपम्	२१६
अध्यर्धविंशतिकम्	६१	अनुगवम्	५०	अनृक्	४६
अध्यर्धविंशतिकीनम्	६२	अनुगवीनः	६६	अनृचः	४६
अध्यर्धशाणम्	६२	अनुगादिकः	११२	अनृतम्—	२३१
अध्यर्धशाण्यम्	६१	अनुच्छित्तिधर्मा	४४	अनृभुक्षी	१२
अध्यर्धसहस्रम्	६२	अनुज्येष्ठः	२२६	अनेहा	१४
अध्यर्धसहस्रम्	६२	अनुज्येष्ठम्	३१	अनैपुणम्	८१
अध्यात्मम्	३२	अनुत्तम्	२०८	अनैपकः	१६

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
अन्	१३८	अन्नादाय	१६७	अन्वाजेकृत्य	३७
अन्तगः	१७०	अन्यः	८	अन्वाजेकृत्वा	३७
अन्ततः	१२३	अन्यत्	११, १६	अन्वेतवाच	२२१
अन्तरधानि	१८८	अन्यतमः	८	अन्वेषणा	१८७
अन्तरयनः	१८८	अन्यतमत्	११	अपकरः	१६, ५८
अन्तरस्यै	१०	अन्यतरः	८	अपकरकः	७८
अन्तरा	१५, २४	अन्यतरत्	११	अपकर्तोः	१६८
अन्तरायाम्	८	अन्यत्कारकः	५६	अपकुक्षि	२२६
अन्तरायै	१०	अन्यथाकारम्	१६१	अपघनः	१८५
अन्तरीपम्	४६	अन्यदर्थः	५६	अपघातः	१८५
अन्तरे अन्तरा वा	८	अन्यदा	१०६	अपचः	२२८
अन्तरेण	१५, २४, २०५	अन्यदाशा	५६	अपचसि—	३६
अन्तर्	१५	अन्यदाशीः	५६	अपचारो	१७८
अन्तर्गिरि	४	अन्यदास्था	५६	अपचितिः	१७५
अन्तर्घणः, नः	१८५	अन्यदास्थितः	५६	अपचितः	१८६
अन्तर्घ्नन्ति	१८८	अन्यदीया	५६	अपदुत्त्वम्	६६
अन्तर्धा	१८७, २१४	अन्यदुत्सुकः	५६	अपतित्वम्	६६
अन्तर्धिः	१८५, १८७	अन्यद्वृत्तिः	५६	अपत्पम्	२००
अन्तर्लोमः	४३	अन्यद्रागः	५६	अपत्रपिष्णुः	१७७
अन्तर्वत्नी	२०	अन्यादृक्	१७१	अपथः	४०
अन्तर्वर्णः	२२६	अन्यार्थः	५६	अपथम्	४०, ५१
अन्तर्वेदो	३	अन्याशीः	५६	अपदिशम्	३१
अन्तर्हणनम्	१८८	अन्येद्युः	१०६	अपनाम	२२६
अन्तर्हृत्य	३७	अन्यो—	२७	अपन्याः	४०
अन्तर्हननः	१८८	अन्योन्यम्	११५, ११६, १५७	अपपूतम्	२२६
अन्तर्हत्वा	३७	अन्योन्यस्मै	११५	अपमित्य	१८६
अन्तिकादागतः	३३	अन्योन्यान्	११५	अपमुखम्	२२६
अन्तिमम्	७७	अन्योन्याम्	११६	अपमृषितम्	१७४
अन्तेगुरुः	५२	अन्योन्येन	११५	अपाम्—	२०२
अन्ध्	१४०	अन्योन्येषाम्	११५	अपरकायः	३४
अन्नम्	१६१	अन्योन्यौ	११५	अपरकृष्णमृत्तिका	२२४
अन्नं बुभुक्षुः	३२	अन्वच्चम्	३२	अपरपराः	५८
अन्नमयम्	११२	अन्वग्	१६३	अपरपाञ्चालकः	२२४
अन्नस्य	२७	अन्वतप्त—	१५६	अपरमद्रः	७४
अन्नादः	१७१	अन्वापनीफणत्	२०७	अपररात्रकृतम्	३४

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
अपरस्पराः—	५८	अपिगिरिम्—	१६०	अभिजानासि	१५८
अपरहमनः	७८	अपिगृह्यम्	१६३	अभितः	२४, १०६
अपराध्यापकः	३५	अपिग्राह्यम्	१६४	अभिनिविशते	२४
अपराह्णकः	७८	अपिधानम्	१७	अभिन्नकम्	१११
अपराह्णतनम्	७७	अपिधास्यति	१६०	अभिमुखम्	२२६
अपराह्णेतनम्	७७	अपिसिञ्च—	२५	अभिमुखा	२२६
अपरिह्वृता—	२०२	अपिस्तुयात्	२५	अभिरूपकः	२०८, २०६
अपरी	२०	अपिस्तुहि	२५	अभिलावः	१८२
अपलापी	१७८	अपीपवत्	१४१	अभिवादयते	२४
अपलुपम्	१६८	अपीप्यत्	१४२	अभिवादये—	३
अपवदति	१५५	अपुत्रः	४१	अभिवृधे	२१८
अपवाद्यम्	१६३	अपूपमयम्	११२	अभिश्यानम्	१७३
अपविष्णु	३१	अपूपानिव—	१७२	अभिसार	२७
अपवीणम्	२२६	अपूपीयम्	८६	अभिसुपूषति	१४४
अपसीरम्	२२६	अपूप्यम्	८६	अभिहवः	१८५
अपस्करः	५८	अपोनपात्	६८	अभिहितम्	१७५
अपस्फिगम्	२२६	अपोनपुत्रियम्	६८	अभीकः	१०२
अपहरेः	२७	अप्रजाः	४४	अभीक्षणम्	१६
अपहलम्	२२६	अप्रयाणिः	१८७	अभीरुक्	५७
अपाञ्जः	२२६	अप्राप्य	१८६	अभीषु	२०३, २१०
अपाणिनीयः	२२८	अप्सव्यः	५२	अभीषुणः	२१०
अपाञ्चम्	२२६	अप्सुयोनिः	५२	अभ्यग्नि	३१
अपांनपात्	६८	अवि	१२१	अभ्यधि	२११
अपान्नपाते—	६८	अवीभवत्	१४१	अभ्यमित्रीणः	६६
अपान्नपित्रियम्	६८	अवजाः	१६५	अभ्यमित्रीयः	६६
अपान्नप्रीयम्	६८	अब्रह्मबन्धुकः	२२६	अभ्यमित्र्यः	६६
अपाम्—	३३, २०८	अब्राह्मणः	३६	अभ्यमी	१७६
अपाम्	२१७	अब्रीहिः	२२६	अभ्यर्णम्	१७५
अपामार्गः	१८८	अभयंकरः	१७०	अभ्यदितम्	१७५
अपार्थम्	४५	अभाजि	१५७	अभ्यहितपशुः	५२
अपार्थकम्	४५	अभि—	१२१, १८२	अभ्यष्टौत्	२१०
अपालङ्कः	२१४	अभिकः	१०२	अभ्याघाती	१७८
अपावृधि	२०४	अभिक्षिपति	१५५	अभ्याशात्—	३३
अपाश्या	२२८	अभिचष्टे	६१८	अभ्युत्सादयामकः	१६४
अपि	१५६				

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
अभ्युद्धतः	२२१	अम्भसाकृतम्	५१	अहङ्करः	१६८
अभ्यु —	२१४	अम्भयम्	८३	अहङ्करोति	११४
अभ्रं कषः	१६६	अयम्	११, २०२, २११, २१३, २१५, २३२	अरोकदन्	४५
अभ्रं लिहः	१६६			अरोकदन्तः	४५
अभ्र	१२२, २०२	अयज्ञः —	२१६	अर्कः	१
अभ्रघनः	१८५	अयस्कंसः	६	अर्कम्	२०१
अभ्रातेव	२१७	अयस्कणी	६	अर्काश्वमेघम्	४६
अमरत्	१६४	अयस्कामः	६	अर्क	१४, १३७
अमरम्	२२५	अयस्कारः	६	अर्घः	२१५
अमरावती	७५	अयस्कुम्भः	६	अर्घ्याम्	११२
अमात्यः	७५	अयस्कृशा	६	अर्चि	२१०
अमावास्यः	७८	अयस्पात्रम्	६	अर्च	११६, १३६
अमावास्यकः	७८	अयाथापुर्यम्	६७	अर्च्यम्	१६४
अमावास्या	१६४	अयीयवत्	१४१	अर्जयन्	१७७
अमित्रम्	२२५	अयुतम्	२१६	अर्जयिष्यन्	१७७
अमीईशा	३	अये	१७	अर्जुनकः	८१
अमीमवत्	१४१	अयोधनः	१८५	अर्जुनवर्यः	२२६
अमीमजत्	१४२	अयोदन्ती	४४	अर्ज	११६, १३८
अमुकेअत्र	३	अयोमुखीयः	६६	अर्तित्वा	१८६
अमुतः	१०६	अय्	१२१, १२६	अर्थगौरवम्	३३
अमुमुयङ्	१३	अरण्यानी	३१	अर्थवर्षौ	४६
अमुदृक्	५५	अरण्येतिलकाः	३४, ५१	अर्थवान्	१०५
अमुदृत्तः	५५	अरत्ति	६२	अर्थ	१४०
अमुदृशः	५५	अररम्भत्	१४१	अर्थ्यम्	८८
अमूला	१८	अरविन्दम्	१६६	अदितः	१७५
अमृताश्मः	१८	अराजा	५१, २२८	अर्द्ध	११७, १३६
अमेघाः	४४	अरित्रम्	१८१	अर्धकाषापण	६१
अम्	१६, १२१, १३८	अरित्रगाधम्	२१६	अर्धकौडविकः	६१
अम्नएव	२०८	अरिष्विति	१४४	अर्द्धकृतम्	१११
अम्बष्ठ	२२	अरिन्दमः	१७०	अर्द्धक्षारम्	३६
अम्बा	१०, २१४	अरिष्टतातिः	२००	अर्द्धक्षारी	३६, ६१
अम्बाडे	१०	अरिष्टपुरम्	२२४	अर्द्धक्षारीभार्यः	६१
अम्बाले	१०	अरिष्टाभितपुरम्	२२४	अर्धद्रौणिकम्	६१
अम्बिके	१०	अरीरवत्	१४१	अर्धनावम्	३६
अम्बे	२०२	अरुन्तुदः	१६६	अर्धपाञ्चालकः	७८

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
अर्धपिप्पली	३४, ३६	अलम्पुरुषीणा	११२	अवदत्तम्	१७
अर्धप्रास्थिकम्	६१	अलति	३०७	अवदाता	२०
अर्धमासतमः	१०१	अलषि	२०७	अवद्यम्	१६३
अर्धमासिकः	६५	अललम्भत्	१४१	अवनाटम्	१००
अर्धर्चः	४०, ४६	अलावूकटम्	६६	अवनायः	१८२
अर्धशतमान	६१	अलाव्वा	२२	अवन्ति	५५
अधिकः	६३	अलाभि	१५७	अवन्ती	६६
अर्घ्यः	७७	अलीलवत्	१४१	अवभ्रटम्	१००
अर्पयति	४२	अल्पम्	११३	अवमूर्धशयः	१६८
अर्पित पट्टिः	२१३	अल्पशः	४१, ११३	अवयाः	१६५
अर्थः	१६२	अल्पान्मुक्तः	३३	अवरतः	१०७
अर्थते	१५६	अल्पिष्ठः	१०८	अवरस्तात्	१०७
अर्थमा	१२	अल्ला	१०	अवरहसम्	५०
अर्थमिकः	१०६	अव ग्रहः	१८३	अवराध्यम्	७७
अर्या	२१	अवः	१०७	अवरोधि	१५८
अर्याणी	२१	अवएव	३०८	अवल्लोमम्	५०
अर्व	१२२, १३१	अवकटः	१००	अववेष्टत्	१४१
अर्वा	१२	अवकरः	५८	अवश्यम्—	१८६
अर्वाङ्	१	अवकिरते	१५७	अवश्यङ्कारी	१८६
अर्वाचीनम्	११२	अवकुठारः	१००	अवश्यपाच्यम्	१६४
अर्वुद	५६	अवकोकिलः	१७	अवश्यलाव्यम्	२
अर्शसः	१०५	अवगाहः	१७	अवश्यस्तुत्यः	१६३
अर्ह	१२४, १३८, १३६	अहगाहे	१६८	अवश्यान्तः	१७३
अर्हन्	१७७	अवगिरते	१५४	अवश्यायः	१६७
अलम्	१८१	अवगृह्यम्	१६४	अवसायः	१६७
अलन्दत्वा	१८६	अवग्रह—	१८३	अवस्	१५
अलङ्कुरिष्णुः	१७७	अवग्राहः	१८३	अवस्करः	५८
अलङ्कर्मिणः	११२	अवटीटम्, ट ।	१००	अवस्करकः	७८
अलङ्कारः	१७६	अवत्तः	१७५	अवस्तात्	१०७
अलङ्कृमारिः	३६	अवतप्ते—	३४	अवस्तारः	१८८
अलङ्कृते	१५७	अवतमसम्	५०	अवस्था	१८६
अलङ्कृत्य	३७	अवतात्	१८६	अवहारः	१६७, १८८
अलङ्कृत्वा	३७, ३८	अवतानः	१६७	अवाच्यम्	७४
अलं—	१६०	अवतारः	१८८	अवातस्तम्भत्	१४१
अलम्	१६, ३५	अवत्सीयः	२२८	अवारपारीणः	७३, ७७, ६६

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
अवारोणः	७३, ६६	अशौचम्	८१	अष्टकर्णः	५६
अवारुद्ध गौः	१५८	अशू	१३६	अष्टकपालः	६७
अवावा	१८, १७१	अशनीतपिबता	३६	अष्टका	१८
अविकः	११३	अश्मक	३७, ५०	अष्टगवम्	३६
अविकटः	६६	अश्ममयम्	८३	अष्टचत्वारिंशत्	३६
अविकटोरणः	५२	अश्मरः	७२	अष्टपुत्रः	५७
अविच्छिपः	२२८	अश्मार्मम्	२२२	अष्टमः	१०७
अविघ्नम्	३६	अश्लीलदुर्लभा	२२१	अष्टाकपालः	३६
अविध्या	६०	अश्वकः	१०८, १०९, ११०	अष्टागवम्	३६
अविदूषम्	६६	अश्वक्रीती	३८	अष्टाचत्वारिंशत्	३६
अविनीतकः	२०६	अश्वघोवः	२२५	अष्टादश	३६
अविनीतम्—	२३	अश्वत्थः	६७	अष्टापदम्, दः	५७
अविपटः	१००	अश्वत्थकः	७६	अष्टापदी	३०३
अविभरीसम्	६६	अश्वत्थामः	६०	अष्टाभिः	२१७
अविभ्रजत्	१४१	अश्वत्थामा	६०	अष्टाविंशति	३६
अविवादः	३६	अश्वबडवम्	४७	अष्टिका	१८
अविसोढम्	६६	अश्वबडवान्	३६	अष्टौ	१२
अवोवृत्तत्	१४२	अश्वबडवैः	३६	अष्टीवान्	१०३
अवीवृषत्	२०६	अश्वबडवो	३६, ४७	असकौ	१४
अवोढा	२२८	अश्वयति	१४०	असक्थः	४३
अवोदः	१८२	अश्वयते	१४१	असक्थिः	४३
अव्	१२२	अश्वयुक्	१७१	असस्ता	५१
अव्यथितुम्	१६७	अश्वरथेन्द्राः	४६	असत्कृत्य	३०
अव्यथिष्यै	१६७	अश्वषड्गवम्	१००	असत्सु	२६
अव्यथी	१७६	अश्वस्थानम्	२२७	असयति	४०
अव्यय्यः	१६३	अश्वा	१७, ४६	असश्शिवः	७
अशत्रुः	२२५	अश्वायन्तः	२०६	असस्मरत्	१४१
अशशासत्	१४१	अश्वायतीम्	२०३	असाधुः	२२८
अशिशिषते	१४४	अश्विकः	८५	असि	२१२
अशिश्वी	२२	अश्विका	१६	असिका	१८७
अशीतिः	६४, २१४	अश्वोरसम्	३८	असिकनी	२०
अशू	१३२	अश्वडलीणः	१११	असिता	२०
अशूषवत्	१४१	अष्टकः	७१	असिपत्रवनम्	५७
अशोकम्	८४	अष्टकम्	६३	असिसवत्	१४१

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
असु	१४१	अहरहः	६, २१७	आकिम्	१६
असुर्यम्	१६६	अहर्गणः	६	आकौशलम्	८१
असुस्रवत्	१४१	अहर्दिवम्	५०	आक्रन्त्यते	४
असूतजरती	२२१	अहर्पतिः	६	आक्रन्दिकः	६७
असूत्रकः	१७८	अहर्वे	२३२	आक्रन्द	१३८
असूर्यम्पश्याः	१६६	अहलः	४३	आक्रमते	१५३
असूषुपत्	१३३	अहलिः	४३	आक्रामति	१५३
असृक्	१४	अहस्करः	१६८	आक्रीडी	१७८
असेना	४०	अहि	१२३, १३६	आक्रुष्टः	१७६
असौ	१४	अहिम्—	१५५	आक्रोशकः	१७८
अस्	१२६, १२८	अहिः	१६४	आचद्यूतिकम्	८६
अस्तंगत्य	३७	अहिनकुलम्	४७	आचिकः	८५
अस्ति	१६, १६०, १८१	अहिर्नु	२०८	आचिकम्	८५
अस्तिचीरा	१७, ४१	अहीवती	१०३, २१४	आचिकी	१६
अस्तु—	२०८	अहो	३, २३१	आक्षेत्रज्ञम्	८१
अस्तुङ्कारः	५४	अहोम्याम्	६	आखनः	१८८
अस्थान्वन्तम्	२०८	अहोरथन्तरम्	६	आखानः	१८८
अस्थि	११	अहोरात्रः	३८, ३६	आखुः	२१
अस्थिमान्	१०३	अहोरूपम्	६	आखुधातः	१७०
अस्मकामिः	१०६	अह्	१३२	आखूत्यः	१६७
अस्मकासु	१०६	अह्ना—	२५	आख्यास्यामि	२३२
अस्मद्	८	अहिदृष्टम्	३४	आगच्छ	२११, २३१, २३२
अस्मदीयः	७६	अह्नुतम्	२०५	आगच्छानि	२३२
अस्मे—	३, २०४	आ	३, १७, २०३, २२७, २३१	आगतयोधी	२२३
अस्मै—	२०४	आकन्यम्	६७	आगत्य	१६०
अस्य	२११	आकरः	१२८	आगन्तुः	२२१
अस्यपगारम्	१६२	आकरिकः	८७	आगम्य	१६०
अस्यपगोरम्	१६२	आकर्षः	१०१	आगवीनः	६६
अस्युद्यतः	४६	आकर्षकः	१०१	आग्नावैष्णवम्	४८
अहंयुः	१७, १०५	आकर्षवः	३८	आग्निष्टोमिकः	७०, ८०
अहः	१४	आकर्षिकः	८५	आग्निष्टोमिकी	६५
अहःपतिः	६	आकायम्	१८३	आग्नीध्रः	८२
अह	१६	आकालिकः	६६	आग्नीध्रम्	८२
अहम्	१२, ४०, १४८, १६६	आकालिका	६६	आग्नीमासतम्	६८

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
आग्नेन्द्रः	४८	आहुडत्	१४१	आदधिका—	१६५
आग्नेयः	४१	आढक	६१	आदयति	२४
आग्नेयम्	६०, ६८	आढकजम्बुकः	७२	आदयते	१५६
आग्नेभोजनिकः	८७	आढकिकी	६३	आदर्शकः	७५
आग्रहायणकम्	७६	आढकीनः	६३	आदश—	२१३
आग्रहायणिकम्	७६	आढचङ्करणम्	१७०	आदह—	१७, २३१
आग्रहायणिकः	६८	आढचङ्करणी	१६	आदायचरः	१६८
आङ्गःशसि	१२३	आढचकुलीनः	६४	आदितः	११३
आङ्गशाम्	१३८	आढचचरः	१०८	आदित्यम्	१
आङ्गः	६१, ६५, २१५	आढचतमः	१०८	आदित्यः	६०
आङ्गकः	७५, ८२	आढचपूर्वः	२३०	आदित्याः—	१०३
आङ्गविद्यः	७०	आढचम्भविष्णुः	१७१	आदिमम्	७७
आङ्गी	६६	आढचम्भावुकः	१७१	आदिवान्	१७६
आङ्गुलिकः	११०	आढचन	१८६	आदेवकः	१७८
आचतुर्यम्	६७	आणवीनम्	६८	आद्रियते	१५७
आचर्यः	१६२	आण्डा	१६७	आधारः	१८८
आचर्यम्	५८	आण्डीरः	१०४	आधिदैविकम्	७६
आचामः	१८२	आतः	१७	आधिभौतिकम्	७६
आचारनिपुणा	३२	आतपः	२१६	आधिराज्यम्	६७
आचारश्लक्ष्णः	३२	आतपशुक्लः	३४, २२०	आधेनवो	२२
आचार्यपुत्रः	२२६	आतमितोः	१६८	आध्यात्मिकम्	७६
आचार्यभोगोनः	६०	आतिः	१८७	आध्वर्यवम्	८२
आचार्या	२१	आतिथेयम्	८६	आनन्त्यम्	११२
आचार्यानी	२१	आतिथ्यम्	११२	आनयः	१८८
आचितम्	२२७	आते—	२११	आनर्त	५४
आचितिकी	६३	आत्मकृतम्	५१	आनायः	१८८
आचितीना	६३	आत्मचतुर्थः	५१	आनाय्यः	१६४
आच्छादयति	५	आत्मनापञ्चमः	५१	आनिष्टः	६२
आच्छि	११६	आत्मनीनम्	६०	आनुकूलिकः	८६
आजकरीणः	७२	आत्मनेपदम्	५१	आनुग्रामिकः	८०
आजमीढकः	७५	आत्मनेभाषा	५१	आनुपदिका	८७
आजाद्यः	६५	आत्मम्भरिः	१६६	आनुलोमिकः	८६
आजिः	१२७	आत्मानम्	२६	आनेयः	१६४
आज्यम्	१६३	आत्मान्तरः	२२८	आनेपुणम्	८१
आटिटत्	१०१	आथर्वणिकः	७१		

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
आनैश्वर्यम्	८१	आमलकम्	८४	आयुष्मती—	३
आन्तः	१७५	आमलकीजः	२२३	आयुष्मान्	३, १०६, २०६
आन्तर्गणिकम्	७६	आमलकीतरा	५३	आयुष्यम्	३६
आन्तर्वैश्विकम्	७६	आमागन्ताम्	२०२	आये	१
आन्दोल्	१४१	आमात्	१७१	आरण्यकः	७५
आन्ध्र	४८	आमावास्यः	७८	आरण्याः	७४, ७५
आन्तः	८८	आमिचीयम्	८६	आरवः	१८३
आन्वीपिकः	८६	आमिच्यम्	८९	आरस्यम्	६७
आपः—	१४, २०२	आमुक्ति	३१	आरा	१८६
आपकरः	७८	आमुक्तेः	३७	आरातीयः	७४
आपटवम्	६६	आमुष्यकुलिका	३२	आरात्—	१५, ३७
आपणः	१८८	आमुष्यपुत्रिका	५२	आरावः	१८३
आपणिकः	८७	आमुष्यायणः	५२	आरिरात्सति	१४४
आपणिकम्	८७	आमोषी	१७८	आरिवान्	१७६
आपत्कालिका	७५	आम्	१६, २३२	आरोहणकम्	७२
आपन्नजीविकः, का	३४	आम्बष्ठ्यः	६५	आरोहति	१५४, १५७
आपमित्यकम्	८६	आम्भसिकः	८६	आरोहयति	१५४
आपराह्णिकम्	७७	आम्नगुप्तिः	६५	आरोहयते	१५४
आपिशलिपाणिनीयी	२२१	आम्नमयम्	८३	आर्चोदाः	८१
आपीनः, नम्	१७५	आम्निकः	८५	आर्गयनः	८०
आपूपिकः	८१, ८७	आयःशूलिकः	१०२	आर्चः	१०३
आप्रपदीनः	६८	आयतस्तूः	१८०	आर्चिकः	८०
आपृच्छ्य, म्	१६०, १६५	आयतीगवम्	३१	आर्चिन्वत्	१४०
आप्तिः	१८६	आयथातथ्यम्	६७	आर्च्छत्	३
आप्यम्	८४	आयथापुर्यम्	६७	आर्तवम्	६६
आप्रा—	१६४	आयानयीनः	६६	आर्तिः	१८६
आप्लवः	१८३	आयामयते	१५६	आस्त्रिजीनः	६४
आप्लावः	१८३	आयामी	१७८	आर्थिकः	८७
आप्लु	१३२, १३६	आयासमये	१५६	आर्द्रकः	७८
आबालम्	३१	आयासी	१७८	आर्घप्रास्थिकम्	६१
आभिजित्यः	१११	आयुक्तः	२६, ३०	आर्यः	१६२
आभिधानीयकम्	६८	आयुधिकः	८६	आर्यका	१८
आमन्द्रः—	१६८, २३२	आयुधीयः	८६	आर्यकुमारः	३२२
आमयावी	१०४	आयुध्यम्	६७	आर्यकुती	२०
		आयुष्टोमः	५५		

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
आर्यच त्रियः	२२२	आशिरम्	२०१	आसना	१८७
आर्यगृहः	१६४	आशिषात्	१४१	आसनात्—	२६
आर्यब्राह्मणः	२२२	आश्विकः	६८	आसन्दीवत्	३६
आर्यहलम्	१६	आशीः	१४, १७१	आसन्दीवान्	१०३
आर्यवित्तं	३	आशुचि	२२८	आसन्त्यः	८
आर्यिका	१८	आशीचम्	८१	आसयत्—	२४
आर्षम्पः	६०	आश्चर्यम्, यः २८, ३३, ५८, १६०		आसानि	११
आर्हन्ती	६७	आशमः	८३	आसान्तापिकः	२२८
आर्हन्त्यम्	६७	आशमकिः	६५	आसामहिमालय	४
आलम्बिनः	८२	आशमनम्	८३	आसाव्यम्	१६४
आलवण्यम्	६३	आशमरथः	८२	आसिकः	८७
आलस्यम्	६७	आशिमकम्	६२	आसिका	१८७
आवः—	१६६, २०३	आश्वम्	८२, ६७	आसितः, म्	१७६
आवकयोः	१०६	आश्वत्थिकः	६८	आसीनः	१७७
आवटचम्	६७	आश्वत्थो	६७	आसुतिम्	२००
आवटथा	२३	आश्वपतः, म्	६०, ६१	आसुतीवलः	१०४
आवन्त्यः	६५	आश्वयुजकाः—	७६	आसुरायणी	१६
आवरसमकम्	७९	आश्वरथम्	८२	आसुरी—	१६८, १६६
आवसति	२४	आश्वलक्षणिः	७०	आस्	१२८
आवसथः	२२७	आश्वानः	६२	आस्ते	१५५
आवसथिकः	८८	आश्विकम्	६२	आस्तेयम्	७६
आवसथिकी	८८	आश्विनीः	१६६	आस्थापितम्	२३७
आवसथ्यम्	११२	आश्वीनः	६६	आस्माकः	७६
आवाम्—	४०	आश्वीनः	७३	आस्माकीनः	७६
आवायः	१८८	आश्वोरथः		आस्मावः	१६७
आविश्वदेवम्	२२४	आषड्भिः—	२१३, २१८	आस्वान्तः	१७५
आविष्कृतम्	५	आषद्	१२६	आहत्यः	१६३
आविष्टयः	१६८	आषाढः	६६	आहवः	१८५
आग्नाधः	१८४	आषाढा	७८, २१६	आहावः	१८५
आशंसुः	१८०	आषाढीयः	७८	आहिच्छन्नः	७४, १४४
आशंसे	१५६	आष्टमः	१०७	आहिच्छन्नी	६६
आशयत्	२४	आसंस्थातोः—	१६८	आहिच्छन्नीयः	१४४
आशयति	१५६	आसकलात्—	२७	आहिताग्निः	४६
आशितङ्गवीनम्	११२	आसङ्गत्यम्	६७	आहिमतम्	७१
आशितम्भवः	१७०	आसनवान्	१०३		

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
आहुवध्यै	१६७	इति	१५८	इन्द्राणी	२१
आहेयम्	७६	इतिहरि	३१	इन्द्रापूर्वणी	२२७
आहो	२३१	इतो—	२३२	इन्द्रावृहस्पती—	२२७
आह्वः	६६	इत्यङ्कारम्—	१६१	इन्द्रास्वरथाः	४६
आह्विकम्	६५	इत्यम्	१०६, १५५	इन्द्रियम्	१०२
आह्वः	१६७	इत्यः	१६३	इन्द्रियावान्	२०३
आह्वरकन्यम्	२२६	इत्या	१८५	इन्द्रेण—	१६७
आह्ववरयते	१४१	इत्वरः	१७६	इन्द्रो—	२१७
आह्वायः	१८५	इत्वरी	१६, १७६	इन्धानो—	२१४
इ	१७	इदम्—	८, १४, २८, ३३, १७६, १६४	इन्धे	२१८
इ इति	३		१६६	इमपोटा	३५
इक्	१२८	इदंप्रथमः	२२८	इमयुवतिः	३५
इक्षुञ्छायम्	४०	इदंप्रथमकः	२२८	इम्या	२१४
इक्षुदा	१०	इदंप्रथमा	२२८	इमम्—	२११, २१२
इक्षुभक्तिकाम्—	२२२	इदानीम्	१०६	इमे—	११६
इक्षुमती	८, ७१, ७२	इदाहि	२००	इयम्—	१४, १६५, १६६
इक्षुषाकटम्	१००	इदि	११७	इयान्	१००
इक्षुषाकिनम्	१००	इदः	१७६	इयिवान्	१७६
इक्ष्वाकवः	६६	इदा	१५	इरम्मदः	१६६
इक्ष्	११८	इदत्सरीयः	२००	इरावती	६
इक्षि	११८	इधम्—	१८७	इरिकावनम्	५८
इगि	११८	इधमप्रव्रश्चनः	२२६	इलाव्याःपदे	२१०
इञ्छति	१६०, १८१	इधमप्रश्चनः	३३	इलायास्पदे	२१०
इञ्छन्	१६०	इध्मावहिषी	४७	इलायाःपुत्रः	२१०
इञ्छा	१८१	इनसभम्	४०	इल्	१३३, १३७
इञ्छामि—	१६०	इन्द्रः—	१, १६७, २०३, २०५	इवि	१२२
इञ्छुः	१८०		२०६, २१५, २३२	इषीकतूलम्	५४
इज्या	१८६	इन्द्रम्—	२०६, २१३	इषुञ्छायम्	२१६
इट्	१२०	इन्द्रजननीयम्	८१	इषुवज्जौ	४७
इष्	१२८	इन्द्रप्रस्थः	३४, २२३	इषेत्वकः	१०१
इतरत्	२०४	इन्द्रवाहनम्	५८	इष्	१३०, १३१
इतरेतरम्	११५, ११६	इन्द्रश्च	२०१	इष्टकचित्तम्	५४
इतरेतराम्	११६	इन्द्राग्निभ्याम्	२२७	इष्टिः	१८५
इतरेतरेण	११६	इन्द्राग्नी	४६	इष्टी	१०२
				इष्ट्वीनम्	२०४

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
इह	१०६, १६०	ईषत्पानः	१८६	उज्ज्वैस्	१५
इहृत्यः	७४	ईषत्प्रलम्भः	१८८	उज्ज्वैस्तमः	१०८
इहृत्यिका	१८	ईषत्प्रलम्भः	१८८	उज्ज्वैस्तमाम्	१०८
इहृदेशे	१०६	ईषा	२००	उच्छिष्यः	१६५
इहृत्यः	१६०	ईष्	२, १२३	उच्छी	११६
ई	१७	ईष्यः	२	उच्छूनः	१७३
ईच्	१२३	ईहा	१८६	उच्छृदिर्	१३४
ईखि	११८	ईहि	४	उच्छ्रयते—	१५८
ईङ्	११०	ईह्	१२३	उच्छ्रायिष्यते	१५८
ईज्	११८	उ	१७	उच्छ्रायः	१८३
ईङ्	१२८, १३८	उ उमेषः	३	उच्छि	११६, १२२
ईठ्यः	२१४	उक्तम्	१५४	उच्छी	१३२
ईदृक्	५५	उक्त्य	२१४	उज्जिता	१६३
ईदृक्षः	५५	उक्त्यशा	१६५	उज्ज्	१३२
ईदृशः	५५	उक्ततरः	११०	उज्ज्वलः	१९७
ईप्सति	१४३	उच्	१२३	उद्	१२०
ईर्	१२८, १३६	उखा	२१४	उडुलोमाः	६०
ईच्य्	१२२	उखाम्	१८, १७१	उडुलोमान्	६०
ईत्सति	१४३	उखि	११८	उडुयान	२०
ईच्य्	१२२	उख्	११८	उडूनः	१७३
ईष्यिषति	१४३	उग्रपश्यः	१६६	उत—	१६०, १६५, १०३, २०७
ईश्	१३८	उड्	१२७	उतत्वः	२१६
ईश्वरः	१८०, १६८	उडिच्छिषति	१४४	उतदण्डः	१६०
ईश्वरपुत्रः	२२६	उच्	१३१	उतूदिर्	१३४
ईश्वरसभम्	४०	उज्ज्वैः	१०८	उत्कः	१०२
ईश्वराधीनः	३४, ११२	उज्ज्वैः	११४	उत्ककुत्	४५
ईषः	२	उज्ज्वैः	२१६	उत्कटम्	६६
ईषत्	१५	उज्ज्वैः	३६	उत्कठि	१३६
ईषत्कठारः	२२१	उज्ज्वैः	११४	उत्कण्ठितः	१०२
ईषत्करः	२६, १८८, २२७	उज्ज्वैः	२१६	उत्करीयः	७२
ईषत्पिङ्गलः	३६	उज्ज्वैः	३८	उत्कारः	१८३
ईषदाढ्यङ्करः	१८८	उज्ज्वैः	३८	उत्कुस्ते	१५३
ईषद्भेदः	२२१	उज्ज्वैः	३८	उत्कुण्डो गौः	३५
ईषदभक्तम्	२६	उज्ज्वैः	३८	उत्तपाति	१५८
ईषन्मियः	१८८	उज्ज्वैः	२२८	उत्तमशारदम्	२१६

शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्	शब्दः	पृष्ठम्
उत्तमाव्यम्	७७	उदकपर्वतः	५४	उदेतोः	१७, १६८
उत्तम्भनम्	४	उदकस्थाली	५४	उदीदनः	५४
उत्तरः—	१८३	उदकुम्भः	५४	उदगतशृङ्गः	२२५
उत्तरकुर्व	५६	उदकोदज्वनः	१८८	उदगन्धिः	४४
उत्तरकोसल	३६	उदकोदनः	५४	उदगारः	१८२
उत्तरतः	१०७	उदक्	१०७	उदग्राहः	१८३
उत्तरतारम्	५६	उदक्तम्	१७३	उद्धनः	१८५
उत्तरतीरम्	५६	उदगात्कठ	४६	उद्दालकपुष्पमञ्जिका	३३, २२२
उत्तरपदिकः	७१	उदग्भूमः	५०	उद्धः	१८५
उत्तरपूर्वस्यै	१०	उदङ्	१३	उद्धमविधमा	३६
उत्तरपूर्वा	४५	उदजः	१८४	उद्धय	२६
उत्तरपूर्वायै	१०	उदञ्जनम्	२२१	उद्धयः	१६३
उत्तरसकथम्	३८	उदधिः	५४	उद्धयरोवति	४७
उत्तरा	१०७	उदन्वान्	१०३	उद्धृतोदना	४१
उत्तरात्	१०७	उदपेपम्	५४, १६१	उद्य—	१५५
उत्तराहि	१०७	उदभाण्ड —	१७	उद्यावः	१८३, १८८
उत्तराः कुरवः	८	उदमन्यः	५४	उद्युङ्क्ते	१५४
उत्तरेण	१०७	उदमेघः	५४	उद्वावः	१८३
उत्तानशयः	१६८	उदरकः	१०१	उद्वाहः	२२७
उत्तानाया—	२०६	उदरपूरं	१६१	उद्घस्	१३६
उत्तार्य	१६०	उदरशयः	१६८	उन्दी	१३४
उत्थानम्	४	उदवासः	५४	उन्मः	१७३
उत्पचिष्णुः	१७७	उदवाहनः	५४	उन्मय—	१८३
उत्पतिष्णुः	१७७	उदशिवत्कतिपयम्	३५	उन्नसः	४३
उत्पथेन	२६	उदसृजो—	२३२	उन्नायः	१८२
उत्पलमालभारी	५४	उदाजः—	१८५	उन्मीः	६
उत्पावः	१८३	उदानि	११	उन्नीयः	१६५
उत्पच्छः	२३०	उदित्वा	१८६, १८६	उन्मत्तगङ्गम्	३२, ४६
उत्पुच्छयते—	१५८	उदीची	११२	उन्मदिष्णुः	१७७
उत्सम्—	२०५	उदीच्यम्	७४	उन्मनीस्यात्	११४
उत्साहवान्	१०५	उदुत्तमं—	२१३	उन्मादः	१८४
उत्साही	१०५	उदुम्बर	५७, १५७	उन्मादी	१७८
उदककुम्भः	५४	उदुम्बरावती	२१४	उपकलमकाः	६४
उदकपर्वत	१५	उदेजयः	१६६	उपकाः	६५

उपकुम्भम्	२२५	उपप्रयन्तो—	२०२	उपाजेकृत्य	३७
उपकूलम्	२२५	उपवहवः	४३, ४५	उपाजेकृत्वा	३७
उपकृष्णम्	३१	उपमदम्	३२	उपाधिः	१०५
उपक्रमते	१५३	उपयद्	१६५	उपाध्यायः	१८२
उपक्रमति	१५३	उपयमः	१८४	उपाध्यायपुत्रः	२२६
उपगणाः	४३	उपयामः	१८४	उपाध्यायं—	२३२
उपगिरम्	३२	उपरमति	१५५, १५५	उपाध्याया	२१
उपगिरि	३	उपराजम्	३२	उपाध्यायात्—	२६
उपगौरः	२३०	उपरि—	२४, २७, १०७	उपाध्यायानी	२१
उपचतुराः	५०	उपरिष्ठात्	२०७	उपाध्यायी	२१
उपचर्मम्	३१	उपरिस्वित्	२०८	उपानत्	१४, ५७
उपचाय्य	१६५	उपर्युपरि—	११५	उपानसम्	३८
उपचाय्यपृष्ठम्	१६५	उपलम्भयः—	१६२	उपाध्वंति	२
उपचेयपृष्ठम्	१६५	उपल्कारीयति	२	उपालम्भः	१८८
उपचेयम्	१६५	उपवदते	१५३	उपाल्कारीयति	२
उपजरसम्	३२	उपवसति—	२४	उपेडकीयति	२
उपजायः	१८४	उपव्याय	१६१	उपेतः	२
उपडः	१०६	उपशयः	१८३	उपेन्द्रः	१, २३०
उपतीरम्	२२५	उपशरदम्	३२	उपेन्द्रदत्तकः	१०६
उपतूलम्	२२५	उपशालम्	२२५	उपेयिवान्	१७६
उपतैपः	२३०	उपशुनम्	५०	उपेयुषी	१७६
उपत्यका	१८, १००	उपसमिधम्	३२	उपेडकीयति	२
उपत्रिगर्तम्	२२०	उपसरजः	३२	उपैति	२
उपत्वाग्ने—	२१७, २१८	उपसर्ग्य—	१६२	उपैषते	२
उपदक्षम्—	४७	उपसर्ग्य—	१६२	उपोपमे—	२०७
उपदशाः	४२, ४३, ४७	उपस्येमः	२३०	उप्त्रिमम्	१८५
उपदा	१८७	उपस्थितिः	१८६	उविन्दिर्	१२६
उपदाय	१६०	उपहरिम्—	२४	उव्ज्	१३२
उपदेवः	२३०	उपहवः	१८५	उभयः	८
उपघा	१५	उपहृतः	२२७	उभयतः	२४
उपनदि	३२	उपहृतपशुः	४१	उभयद्युः	१०६
उपनिषत्	१७१	उपांशु	१६	उभयम्	१००
उपनिषत्कृत्य	३७	उपाक्षम्	२२५	उभयाहस्ति	४४
उपपराधे	३०	उपाक्षम्	२११	उभयेद्युः	१०६
उपपूर्वरायम्	२२०	उपाग्नि—	३२	उभयोदतः	२०१
उपपीर्यमासम्	३२	उपाग्रहायणम्	२३०	उभाहस्ति	४४
		उपाजिनम्			

उभौ	८	उर्वी	१२२	ऊयी	१२१
उभ्	१३२	उलडि	१३६	ऊवली	१०५
उभ्यम्	६८	उलूकपक्षी	२२	ऊक्	१२, १८०
उभ्	१३२	उल्लाघः	१७३	ऊर्जस्वती	१०४
उरः—	१६२, २०८	उल्लापयते	१४२	ऊर्जस्वलः	१०४
उरगः	१७०	उल्लूः	६	ऊर्जस्वी	१०४
उरव्यम्	६७	उशाना	१४	ऊर्ज्	१३६
उरसा	२७	उशान्ति—	२३२	ऊर्णयुः	१०४
उरसिकृत्य	३७	उषस्यम्	६८	ऊर्णनूषति	१४३
उरसिकृत्वा	३७	उषासासूर्यम्	४८	ऊर्ध्वः	६४
उरसिलः	१०३	उपितः	१७४	ऊर्ध्व—	२१०
उरसिलोमा	५२	उपित्वा	१६०	ऊर्ध्वजुः	४४
उरस्तः	८२	उप्	१२३	ऊर्ध्वम्—	१६१
उरस्यः	८२, ८८	उप्ः शोषति	१७२	ऊर्ध्वशोषम्—	१६२
उरस्वान्	१०३	उष्ट्रकः	११०	ऊर्ध्वस्तु—	१६६
उरीकृत्य	३७	उष्ट्रशोषी	१७२, २२३	ऊपरः	१०२
उरणः—	२०४, २१०	उष्ट्रगोयुगम्	१००	ऊपुर्वा	१५८
उरणस्कृधि	२०६	उष्ट्रवामो	२२१	ऊप्	१२३
उरुदध्नम्	१००	उष्ट्रसादी	२२१	ऊहा	१८६
उरुदध्नी	१६	उष्णक्लृणम्	५५	ऊह्	१२३
उरुद्वयसम्	१००	उष्णकः	१०२	ऊह	१२६, १२६, १३५
उरुद्वयसी	१६	उष्णभोजी	१७१	ऊक्ष	४७, १५०
उरुभिन्नी	२१	उष्णालुः	१०४	ऊक्ष	१२
उरुमाश्री	१६	उष्णिका	१०२	ऊगयनम्	४३
उरुया	२०४	उष्णिक्	१४	ऊग्यजुषम्	५०
उरुप्याणः	२०३	उष्णिहा	१८	ऊचि—	१५३
उरो—	१६२	उहिर्	१२४	ऊच्	१३२
उर्जयन्त	१४	उह्यन्तां—	२३१	ऊच्छ्	१३२
उर्णुम्	१२८	ऊ	१७	ऊजवः—	२०४
उर्णुतः	१७३	ऊ इति	३	ऊजि	११८
उर्द्	११७	ऊढत्यः	४६	ऊज्	११३
उर्ध्वजानुः	४४	ऊतिः	१८६	ऊणम्	१७४
उर्ध्वपूरं—	१६२	ऊध—	२०८	ऊणार्णम्	२
उर्ध्वष्ठीवम्	५०	ऊधन्यः	८६	ऊणु	१३५
उर्वाः	६२	ऊधा—	१६७	ऊतम्—	२१८
उर्विया	२०४	ऊन्	१४०		

ऋतव्यम्	६८	एकधुरः	८८	एतास—	२०२
ऋतव्याः	१६६	एकधुरीणः	८८	एतिका	१६
ऋतस्य	२२७	एकनाथः	३४	एतिके	१६
ऋतापाहम्	२१०	एकपत्नी	२०	एते	२११
ऋतिकरः	१७०	एकपदा	१८	एती—	४६
ऋतित्वा	१८६	एकपदे	१७	एदिधिपते	१५४
ऋतीषट्	५७	एकपरि	३१	एधः—	५७, २८, १८२
ऋते	१५, २७	एकरूप्यम्	५४	एधञ्चक्रे	१५४
ऋत्विक्	१२	एकलः	२१६	एधि—	१६१
ऋषिकपुत्रः	२२६	एकविंशः	६३, १०१	एधिता	१७६
ऋत्विजो—	१५५	एकविंशति—	३१	एधोदकस्य—	१५३
ऋत्व्यम्	२०४	एकविंशतितमः	१०१	एध्	११७
ऋषक्	१५	एकशततमः	१०१	एनी	२०
ऋधु	१३१, १३२	एकशालिकः	१११	एभिः—	२१७
ऋफ्	१३२	एकषष्टितमः	१०१	एव	१६, २१६
ऋभुचाः	१२	एकषष्ठः	१०१	एवङ्कारम्	१८१
ऋभुषाणम्	२०३	एकाकी	१०८	एवम्—	१६, २७, १५८
ऋम्फ्	१३२	एकादश—	३६, १०१	एवा—	२०३
ऋषभतरः	१००	एकादशम्	१०१	एषः	१२, १५६
ऋषिकुल्या	६	एकाद्विंशतिः	३६	एषका	१६
ऋषी	१३२	एकाहः	२८	एषकोद्वः	७
ऋषीवहम्	५७	एकैकम्	११५	एषस्य—	२०२
ऋष्यकम्	७२	एकैकस्मै	३६	एषा	१४, २१८
ऋष्यशृङ्गः	२२५	एजृ	११८, १३६	एषिका	१६
ए	१७	एडका	१७	एषिता	१६५
एकः	८, २३, २०६, २३२	एङ्	११६	एषित्वा	१६०
एककः	१०८	एणीपचनीयः	३४	एषिपति	१४३
एककरः	१६८	एणीपदः	४३	एपोऽत्र—	७, १८३
एकक्षीरम्	५४	एतः	२१५	एष्ट	१२३
एकचित्तीकः	५७	एतत्'द्—	८, १४, १५, १७६	एहकि	१०६
एकतमः	११०	एतद्द्वितीयः	२२८	एहि—	३, ६, २३१
एकतरः	११०	एतद्भुरारिः	४	एहिपचम्	३६
एकतरम्	११	एतहि	१०६	एहीडम्	२६
एकदा	१०६	एता	२०	ऐ	१७
एकदेशेन	११४	एतायते	४२	ऐक्यम्	१०७
एकधा	१०७, १६२	एतावान्	१००	ऐकशतिकः	१०४

ऐकशालिकः	११७	ओष्ट	१२१	औत्सः	६०, ६१, ७८
ऐकसहस्रिकः	१०४	ओदनं—	१५४	औत्सङ्गिकः	८६
ऐकागारिकः	६६	ओदनम्—	१२, २३	औत्सातः	६२
ऐकान्यिकः	८७	ओदनपाकी	२२	औत्सी	१६
ऐचुकः	६३	ओदनपाणिनीयाः	२२२	औदनिकः	७८
ऐक्षुभारिकः	६३	ओदनस्य—	३३	औदपानः	८०
ऐस्वाकः	६५	ओद्यः	१८२	औदमेयी	२२
ऐणम्	८४	ओप्यायी	१२१	औदरिकः	१०१
ऐणीपचनः	७४	ओम्—	१७, २०८	औदशिवतः	६८
ऐण्यम्	८४	ओयते	१	औदशिवत्कः	६८
ऐतिकायन	२०७	ओलजी	१३२	औदुम्बरः	७१
ऐतिहासिक	७१	ओलडि	१३६	औदुम्बरिः	६५
ऐतिह्यम्	११२	ओलस्जी	१३२	औद्गात्रम्	६७
ऐन्द्रम्	६८	ओविजी	१३४, १३२	औन्नेत्रम्	६७
ऐन्द्रमहिकम्	६६	ओवै	१२६	औन्दित्	१४१
ऐन्द्रधाम्	१०७	ओव्रश्चू	१३२	औपकण्ठिकः	७८
ऐन्द्राग्नः	६६	ओपषयः—	११३	औपकायनाः—	६४
ऐन्द्रायुधम्	८४	ओष्ठा—	२१५	औपकूलः	७६
ऐन्द्रावरुणम्	६८	ओष्णम्	३	औपगव—	२०१
ऐन्द्री	१६	ओहाक्	१२६	औपगवः	६१
ऐन्द्रो—	६८	ओहाड्	१२६	औपगवकम्	८१, ८२
ऐरावतकः	७५	औ	१७	औपगविः	६५
ऐर्ष्ययत्	१४२	औक्थिकः	७०	औपगवी	६१, ६६
ऐषमः	१०६	औक्थिक्यम्	८३	औपजानुकः	७८
ऐषमस्त्यम्	७४	औक्षकम्	६६	औपधेयम्	६०
ऐषुकारिभक्तम्	३१, ७१	औक्षणः	६४	औपनह्यः	६०
ऐष्टिकः	८७	औक्षम्—	६४	औपनिषदः	८०
ऐहलौकिकम्	८६	औक्षिती	६७	औपनिषदःपुरुषः	७३
ओ	१७	औजसिकः	६८	औपनीविकः	७८
ओ—	२०८	औडुपिकः	८५	औपम्यम्	६७
ओकः	१६४	औडुलोमिकः	६, ६०, ६१	औपयिकः	११३
ओखु	११८	औत्तरपथिकः	६४	औपरिष्टः	७४
ओजसाकृतम्	५१	औत्तरपथिकम्	६४	औपाध्यायकः	८०
ओजस्यम्	१६६	औत्तरपदकीयम्	७६	औपानह्यम्	६०
ओजस्या	१६६	औत्तरपदिकः	७८	औब्जिजत्	१४१
ओड्र	४७	औत्तराहः	७४	औमम्	८४

औमकम्	८४	कस्यावान्	१०३	कडङ्ग्यः	६४
औमीनम्	६८	कखे	१२४	कडारजैमिनिः	३६
औयत्	१	कख्	११८	कडि	१२०, १३६
औरसः	८८	कगे	१२४	कड्	१२०, १३३
और्णकम्	८४	कचि	११८	कड्ड	१२०
और्णम्	८४	कच्	१०८	कणोहत्य —	३७
और्णवत्यः	१११	कच्चित्	१६	कण्	१२१, १२४, १३६
औलपीयः	११७	कच्चिज्जीवति	१६०	कण्ठकालः	४५, ५२
औलूखलो यावकः	७३	कच्छ	२७	कण्ठ्यम्	६०
औशनम्	६७	कच्छपी	३८	कतमः	११०
औशनसम्	६७	कच्छुरः	१०४	कतमकलापः	३५
औषधम्—	११३	कज्	११६	कतमत्	११
औषिकः	६८	कज्जलाम्	२२३	कतमशिवद्वा	२३१
औष्ट्रकः	८४	कटकवलयिनी	१०५	कतरः	११०
औष्ट्रम्	६७	कटघोषीयम्	७६	कतरकठः	३५, २२२
कं—	१५६	कटनगरीयम्	७६	कतरत्	११
कंतिः	१०५	कटपत्वलीयम्	७६	कतरश्चित्	२३१
कंज्वः	१०५	कटप्रूः	६, ४६	कति	६, १००
कंस	६१	कटप्रूः	१८०	कतिथः	१०१
कंसं—	१५८	कटं—	१५३, २३१, २०६	कतिपयथः	१०१
कंसिकः	६१	कटम्	२०८	कतोह—	२१८
कंसिकी	६१	कटिकः	१०६	कत्थ्	११७
कंसीयम्	८५	कटी	१२०	कत्त्रयः	५६
कस्	१२५	कटुका	१८	कत्तूणम्	५६
कः—	११, २७, १५६, १६०	कटे—	२६	कत्रि	१८
क—करोति	५	कटे	१२०	कत्र्	१४०
कः खनति	५	कठवूर्तः	३५	कथंचित्—	२०८
कः त्सरुः	५	कठप्रवक्ता	३५	कथं त्वाम्—	१२
कः पचति	५	कठभोत्रियः	७६	कथम्	१०६
कः फलति	५	कठाः	७१, ८२	कथं—	१५६, १६१
ककारः	१८७	कठाध्यापकः	३५	कथं नाम—	१५६
ककि	११८	कठाध्वयुः	२१६	कथङ्कारम्	१६१
ककुत्	२११	कठि	११६, १३६	कथा—	२००
ककुदावर्ती	१०५	कठी	२२	कथा	१८७, २००
कक्	११८	कठ्	१२०	कथ्	१३६
कक्षीवान्	१०३	कहङ्करीयः	६४	कदश्वः	५६

कदा—	१५६	कवरी	२१	कर्कशस्थः	२२३
कदा	१०६	कव	१२१	कर्ज्	११६
कदि	११८, १२४	कमण्डलुः	२२	कर्णजपः	५२
कदुष्णम्	५६	कमण्डलूः	२२	कर्णनाहम्	६६
कद्रथः	५६	कर्मदिनः	८२	कर्णवेष्टकाम्याम्	२२८
कद्रीची	२०३	कमल्	११	कर्णवान्	१०४
कद्रुः	२२	कम्	१६	कर्णाम्याम्	२१५
कद्रूः	२२	कम्ना—	१७६	कर्णिकः	१०४
कद्रूः—	१६८	कम्पनः	१७८	कर्णिका	८०
कद्रुदः	५६	कम्पयति	१५६	कर्णी	१०४
कनिष्ठः	१०८	कम्प्रः	१७६	कर्णजपः	४८, ५२
कनिष्ठ—	२१५	कम्बलचीरम्	२२६	कर्ण्	१४०
कनिष्ठा	१८	कम्बलदायः	१८१	कर्ण्यम्	७६
कनिष्ठोत्पकः	२१५	कम्बलीया	२६	कर्तवे	१६७
कनी	१२१	कम्बल्यम्	६१, ८६	कर्तव्यम्	२१७
कनीकदत्—	२०७	कम्बोज	६६	कर्ता	२६, १७७, २१८
कनीयान्	१०८	कम्बोजी	६६	कर्तृ	११
कन्दुकः	२१५	कमु	१२१	कर्त्री	१८
कन्दुकाक्षः	२२४	कम्प्रः	१८०	कर्त्रीत्वम्	४१
कन्यका	१८	कम्प्रा	१७६	कर्द्	११७
कन्या	१६	करः	१८४	कर्व्	१२१, १२२
कन्यादर्श—	१६१	करग्राहम्	१६२	कर्मकरः	१६६
कपाटघ्नः	१७०	करभूः	६	कर्मकरवर्द्धितकः	२२२
कपि	१३१	करभोरुः	२२	कर्मकरा	१५३
कपिकेशः	२१६	करम्—	१६२	कर्मकारः	१६६
कपिञ्जलार्मम्	२२३	करवर्तम्	१९२	कर्मकृत्	१७२
कपिला	२०	करवाव	१६६	कर्मठः	१००
कपिष्ठल	३३	करवीरम्	८४	कर्मण्यः	८६
कपिष्ठलः	१७६	करिष्ठः	१०८	कर्मण्यम्	६६
कपिस्थलम्	१७६	करिष्यते	१५७	कश्चित्वा	१६०
कपीवहम्	५७	करिष्यन्	१७७	कर्षः	२१२
कपोतपाकाः	१११	करिष्यन्तम्—	१७७	कर्हि	१०६
कपोतपाक्यः	१११	करीकृष्यते—	२०७	कलापकम्	७६
कपोलम्	२१६	करीपंकषा	१६६	कलापी	२२
कबरपुच्छी	२१	कर्कधुः	२	कलिङ्ग	४८
कवरा	२१	कर्कधवा	२२	कलिङ्गाः	७२

कलिङ्गे	१५८	कस्कः	५	काण्डेविद्धिः	६६
कल्	१२२, १३७, १४०	कस्मात्	१०६	काण्डेविध्य	६६
कल्पनापोढः	३३	कस्वरः	१८०	काण्वाः	७४
कल्पिष्यते	१५६	कहोड	१०६	कातीयाः	६१
कल्प्ता	१५६	काँस्कान्, कां	५	कातीरम्	५६
कल्प्यम्	१६३	काँस्यम्	८५	कात्यायनी	१६
कल्पस्यति	१५६	का	१४	कात्यायनीयाः	७३
कल्माषी	२०	काकः	२१५	कात्रेयकः	७३
कल्याणः	२१५	काकम्	६६	काथिकः	८६
कल्याणक्रोडा	२२	काकतालीयः	११०	कानीनः	६३
कल्याणचारा	१६७	काकतालुकी	१०५	कान्तरातीतः	२२१
कल्याणधर्मा	४४	काकतीरम्	७४	कान्यकः	७४
कल्याणमूर्धा	२३०	काकन्दकः	७५	कान्यकुब्जः	७५
कल्याणीपञ्चमः	४१	काकपेया	३३	कापथम्	५६
कल्याणपञ्चमीकः	४१	काकशावः	४२	कापित्थम्	८३, ८४
कल्याणीप्रधानः	४१	काकस्थ—	६३	कापिषायनम्	७३
कल्याणीप्रियः	४१	काकोलूकम्	४७	कापिषायनी	७३
कल्याणीमाता	४१	काकोलूकिका	८२	कापिशी	२७
कल्	१२२	काक्षः	५६	कापुरुषः	५६
कवचम्—	१७७	काक्षतवम्	७१	कापेय	६२
कवचहरः	१६८	काक्षि	१२३	कापेयम्	६७
कवपथः	२०३	काच्छः	७६	कापोतम्	६६
कवर्गीयः	८०	काच्छकः	७६	काप्यः	६२
कवर्गीयम्	८०	काच्छकम्	७६	कावेरी	११
कवोष्णम्	५६	काजलम्	५६	कामः	१८२
कव्यवाहनः	१६५	काञ्चनधनम्	२२२	कामण्डलेयः	६३
कश्चिद्—	२३१	काठकम्	६६, ८२	कामदुधा	७१
कश्मीर	२४	काण्यः	६३	कामयेत	१६०
कश्मीरसमयादिम्	२२०	काणेरः	६३	कामुका	२१
कपायकन्थः	४२	काण्ड	६२	कामुकी	२१
कपितम्	१७५	काण्डपृष्ठः	२२५	कामो—	१६०
कप्	१२३	काण्डलावः	२२३	काम्—	१६७
कष्टः—	१७५	काण्डलावभार्यः	४२	काम्पित्य	३५
कष्टम्	१७५	काण्डलावो—	१८१	काम्पित्यकः	७५
कष्टक्षितः	२२१	काण्डाग्नकः	७५	काम्लः	५६
कसि	१२८	काण्डीरः	१०४	कायः	१८३

कायम्	६८	कार्तिकिकः	६८	काली	२०
कारः	१८२	कार्तिक्या—	२७	कालेजः	५२
कारकः	१८, १६५	कार्तियणिः	६५	कालेयम्	६०, ६७
कारकरः	५६	कार्त्त्रियायणिः	६५	काल्यम्	६६
कारणा	१८७	कार्दमः	६७	काल्याणिनेयः	६३
कारभूः	६	कार्दमिकः	६७	कावचिकम्	६६
कारयते	१५५, १५८	कार्पासम्	८३	काव्यम्	६८
कारस्करः	५६	कार्मः	८७	काशाः	२१५
कारा	१८६	कार्मणः	८७	काशिकः	७२
काराजः	२२३	कार्मणम्	११३	काशिका	७५
काराभूः	६	कार्मुकम्	६६	काशिकी	७५
कारिका	१८, १६५	कार्यम्	१६४	काशीनिकायः	१८३
कारिकाकृत्य	३७	काशस्वियम्	७२	काशीया	७४
कारिष्यते	१५८	कार्पापण	६१	काशू	१२३, ३०
कारिरम्	८३	कार्पापणिकः	६१	काश्यपिनः	८२
कारोषगन्धीवन्धुः	५४	कार्पापणिकी	६१	काषायम्	६७
कारोषगन्धीमातः	५४	कार्पावणम्	५७	काष्ठाध्यापकः	२३२
कारोषगन्धीमाता	५४	कालः	३८, १६१, १८१	काष्ठानि	१५७
कारोषगन्धीमातृकः	५४	कालकः	११३	कासूतरी	१०६
कारोषगन्ध्या	२३	कालकम्	११३	कासू	१२३
कारोषगन्ध्यामातः	५४	कालकूट	१३१	कास्तोरम्	५६
कारोषगन्ध्यामाता	५४	कालकूटिः	६५	कास्तीरिका	७५
कारोषगन्ध्यामातृकः	५४	कालञ्जर	५६	कास्तीरिकी	७५
कारुषी	६६	कालञ्जरकः	७५	किंकरा	१६८
कारूप	४२	कालयवन	२६	किंकरी	१६८
कार्कणः	८०	कालवालः	२१६	किंगवः	५१
कार्कणम्	७६	कालशेयम्	७६	किंगौः	५१
कार्कवाकम्	७२	कालस्य—	१८३	किद्विजः	२३१
कार्कीकः	११७	काला	२१	किभो—	१६१
कार्क्यन्त्रिकः	७२	कालापक	७१	किराजः	५१
कार्क्येष्टिकम्	६६	कालापाः	८२	किराजा	३५, ५१
कार्णायनिः	७२	कालायसम्	३८	किवान्	१०२
कार्तः	८०	कालिकम्	६६	किशुलुकागिरिः	१५, ५७
कार्तकौञ्जपो	२२१	कालिका—	११३	किसखः	५१
कार्तिकः	६८	कालिङ्गः	६५	किसखा	५१
कार्तिकनगरम्	२२३	कालिम्मन्या	१७२	किहते	४

कियहः	४	कुक्कुटः	२१६	कुण्डा	२०
किहः	४	कुक्कुटाण्डम्	४२	कुण्डिनाः	६४
किहल्यति	४	कुक्कुटमयूरी	३६, ४८	कुण्डी	२०
कि—	१२६	कुक्कुटागिरि	१५	कुण्डोघः	१६
किञ्चित्	१६	कुक्कुटार्मम्	२२३	कुण्डोष्णी	१६
किट्	१२०	कुक्षिम्भरिः	१६६	कुतः—	२५, १०६
कित्	१२७	कुङ्	१२७, १३३	कुतुपः	१०६
किन्तमाम्	१०८	कुचेलम्	१२५	कुतुम्बुरुणि	५८
किन्तुते	४	कुच्	११६, १३३	कुत्र	१०६
किम्—	८, १४, २७, २०७, २३१	कुजु	११६	कुत्सकुशिकिका	८२
किम्बुक्तम्	३	कुञ्च्	११६	कुत्साः	६३
कियन्तः	१००	कुञ्जरः	१०३	कुत्स्	१३८
कियान्	१००	कुटिता	१६५	कुथि	११७, १३०
किरः	१६६	कुटिलदण्डी	४८	कुत्रि	१३६
किरात	३८	कुटीजः	२२३	कुघ्नः	१६८
किरातार्जुनीयम्	८१	कुटीनिवातम्	२१६	कुन्तल	५१
किरिकाणः	२१६	कुटीरः	१०६	कुन्ति	५५
किल	१७	कुटुम्बिनी	२१७	कुन्तिमोज	५५
किलासी	१०५	कुट्	१३३	कुन्ती	६६
किल्	१३३	कुट्ट	१३६, १३८	कुन्थ्	१३५
किष्किन्धा	५३, ५६	कुट्टाकः	१७६	कुपुरुषः	३७, ५६
किष्कु	६२	कुठि	१२०, १३७	कुप्	१३१, ३६
किसरिकः	८७	कुडव	१६१	कुवि	१३१, १३७
किसरिकी	८७	कुडि	११६, १२०, १३६	कुब्रहाः	३६
कीः	६	कुड्	१३३	कुब्रहा	३६
कीट्	१३७	कुड्यन्छायम्	४०, २६	कुब्राहाणः	२३०
कीदृक्	५५	कुड्यन्छाया	४०	कुभा	६
कीदृक्षः	५५	कुड्यनिवातम्	२१६	कुमार्युहिमालय	४
कीदृङ्	२०५	कुड्मलाग्रदन्	४५	कुमारचातकाः	२२०
कीदृशः	५५	कुड्मलाग्रदन्तः	४५	कुमारघाती	१७०
कीणिः	१८५	कुण्	१३३, १४०	कुमारजीमूताः	२२०
कीर्तिः	१६३	कुण्ठितः	४	कुमारप्रत्येनाः	२२०
कीलालपाः	६, १६६	कुण्ठकृतः	२२६	कुमारश्रमणा	३६, २२०
कील्	१२२	कुण्डपाय्यः	१६५	कुमारी	६, १६
कु	१२८	कुण्डप्रतिपन्नः	२२६	कुमारीदाद्याः	२२८
कुक्	११८	कुण्डमितः	२२६	कुमारीमतल्लिका	२६

कुमारी शेते	३	कुवणम्	२३०	कूलमुद्रहः	१६०
कुमार	१४०	कुशकाशम्	४७	कूलमुद्रुजः	१६६
कुमुदिकम्	७२	कुशकाशाः	४७	कूल	१२२
कुमुद्रान्	७२	कुशा	२१, २१५	कूष्टः	५६
कुम्बा	१८७	कुशाग्रीया	११०	कृ	१३५
कुम्भ	६१	कुशावती	३६, ५६	कृकणीयम्	७६
कुम्भकारः	३८, ४६, १६७, २२३	कुशि	१३६	कृकलासः	२१६
कुम्भपदी	४४	कुशिकाशः	२०२	कृकवाकृः	२२
कुम्भपादः	४४	कुशी	२१	कृच्छ्रादागतः	३३
कुम्भविलम्	२२४	कुष	१२६	कृच्छ्रेणाधीते	१७७
कुम्भीकपालम्	२२६	कुष्ठलम्	१७६	कृष्	१२६, १३१
कुम्भीनदालम्	२२६	कुष्ठी	१०५	कृड्	१३३
कुम्भीभगालम्	२२६	कुष्णाति	१५८	कृष्वते	२१८
कुरवः	७२	कुसि	१३६	कृणोत—	२११
कुराज्यम्	२२६	कुसितायी	२०	कृतम्	२१३
कुरुकुरुचेत्रम्	४७	कुसीदिकः	८६	कृतकर्मा	२२५
कुरुक्षेत्र	३२	कुसीदिकी	८६	कृतकृत्यः	४६
कुरुगार्हपतम्	२२१	कुसुमपुर	४१	कृतपूर्वी—	२८, १०२
कुरुवरः	५२, १६८	कुसूलपादः	४४	कृताकृतम्	३५, २२१
कुरुचरी	१६, १६८	कुसूलविलम्	३२४	कृतिः	१८५, १८६
कुरुपञ्चालाः	२२०	कुसूलस्वामी	२२३	कृती	१३४
कुरुः	२२, ६६	कुस्	१३१	कृत्तिका	२१५
कुरुन्—	२३	कुस्तुम्बुरुः	५८	कृत्तिकारोहिण्यौ	४६
कुर्द	११७	कुस्म्	१३८	कृत्यः	१६३
कुर्वन्	२८	कुह	१०६	कृत्यम्	१६४
कुलटा	२	कुह्	१४०	कृत्या	१८६
कुलायः	२१६	कूचवार	२७	कृत्रिमम्	८६, १८५
कुलिज	६१	कूजि	११६	कृत्वा	१७, १८६
कुलीनः	६४	कुज्	११६	कृन्तविचक्षणाः	४६
कुलूत	३२	कूट्	१३६, १४०	कृपा	१८६
कुल्	१२५	कूण्	१३८, १४०	कृपि	१३६
कुल्यः	६४	कूपत्	१६	कृपू	१२४
कुल्	१२२	कूपपतितः	३२	कृप्	१४०
कुवलीतरा	५३	कूपविलम्	२२४	कृवि	१२२
कुवित्	१६	कूमनाः	२०३	कृशः	१६६, १७३
कुविदङ्ग—	२३०	कूलंकया	१६६	कृशाश्विनः	८२

कृशित्वा	१६०	केकय	२३, २१६	कौञ्जायनाः	१११, २१७
कृश्	१२१	केत्	१४०	कौञ्जायनी	६१
कृष=	२१३	केन—	२७	कौञ्जायन्यः	६१
कृषि	२१६	केपृ	१२१	कौञ्जिः	६१
कृषिः	१८७	केरलः	५०, ६६	कोटतक्षः	३८
कृषीवलः	५७, १०४	केलु	१२३	कोटिलिकः	८६
कृष्	१२७, १३२	केवलवैयाकरणाः	३५	कोण्डोपरधीयः	१११
कृष्णश्रितः	३२	केवली	२०	कोतस्कुतः	५
कृष्णम्	१६०, १८१	केवृ	१२२	कौनटिमातुलः	२२६
कृष्ण	३	केशग्राहम्—	१६२	कौन्त्यः	६५
कृष्णः—	२३, ५२, १०२, १५६	केशकः	१०१	कौपिञ्जलः	८३
कृष्णचरः	१०८	केशवः	१०१	कौपीनम्	६६
कृष्णतिला	२१६	केशवान्	१०४	कौमारः	६७
कृष्णपन्थाः	१६३	केशाकेशि	४२, ४४	कौमारम्	६७
कृष्णपाक्याः	१६३	केशी	१०४	कौमुदगन्धीपतिः	५४
कृष्णभूमः	५०	केषु	२६	कौमुदगन्धीपुत्रः	५४
कृष्णरुम्यः	१०८	कै	१२६	कौमुदगन्ध्या	६६
कृष्णद्विः	२	कैकेयी	६६	कौमुदिकः	७२
कृष्णसखः	३८	कैदारकम्	६६	कौम्भकारिः	६५
कृष्णसर्पः	३५	कैदार्यम्	६६	कौम्भकार्यः	६५
कृष्णसारङ्गः	३६, २१६	कैशिकम्	६६	कौरवः	७६
कृष्णस्य—	२८	कैशोरम्	६७	कौरवकः	७६
कृष्णा	११, २०	कैश्यम्	६९	कौरव्यः	६५, ७१
कृष्णाजिनम् ७	२२८	को—	१८२, २३१	कौरव्याः	६५
कृष्णानाम्—	२१५	कोकिला	१८	कौरव्यायणी	१६
कृष्णाय—	२६	कोक्कण	५०	कौरजङ्गलम्	७६
कृष्णीकरोति	११३	कोटरावणम्	५७	कौलतिनेयः	६३
कृष्णैकत्वम्	२	कोथित्वा	१८६	कोलटेयः	६३
कृष्णो—	२१५	कोलाहलः	२१५	कोलटेरः	६३
कृष्णीतः	२१६	कोसिचव	१६०	कोलुत्थम्	८५
कृष्णीत्कण्ठयम्	२	कोष्णम्	५६	कोलियकः	६४, ७३
कृष्यम्	१६४	कौक्कुटिकः	८७	कोलोन्यः	७३
कृः	६	कौक्षेयम्	७६	कोल्माषो	१०२
कृः	१३३	कौक्षेयकः	७३	कोशलम्	६७
कृम्	१३५	कौक्षोन्यः	७३	कोशल्यम्	६७
कृन्	१३७	कोचवार्यः	८१	कोशलयायनिः	६५

कौशाम्बी	३७, ७१	कुङ्	११२	क्वाणः	१८४
कौशेयम्	७८	कुघ्	१३०	क्वावम्	२११
कौषीतकेयः	६३	कुश	१२५	क्वेव—	२
कौसल्यः	६५	कुष्टम्	१७४	क्षजि	१२४
कौहडः	७१	क्रूरम्	२६	क्षणु	१३५
कौहडिः	७१	क्रैयम्	१	क्षत्रियः	६४
क्त्वः	६	क्रोधम्	१५३	क्षत्रिया	२२, २१४
क्नय्	१२५	क्रोधनः	१७४	क्षत्रियो	२१
क्नसु	१२५, १२६	क्रोशम्—	२३, २५	क्षप्	१३७, १४१
क्नूज्	१३५	क्रोशस्य—	२५	क्षपि	१२५, १३७
क्नूयिता	१७६	क्रोष्टा	६, १०, १७८	क्षमा	१६
क्नूयी	१३१	क्रोष्ट्री	१०	क्षमी	१७८
क्नोपयति	१४२	क्रौञ्चबन्धम्	१६२	क्षमू	१३१
क्मर्	१२२	क्रौञ्जायन्यः	१११	क्षमूष्	१२१
क्रय्	१२५	क्रौशशतिकः	६४	क्षयिष्णुः	१७७
क्रदि	११८, १२४	क्लय्	१२५	क्षयी	१७६
क्रत्वा	१६०	क्लदि	११८, १२४	क्षय्यम्	१
क्रप्	१२४	क्लमी	१७८	क्षरजः	५२
क्रमकः	१७१	क्लनु	१२१	क्षरेजः	५२
क्रमन्ते	१५३	क्लिदि	११७, ११८	क्षर्	१२५
क्रमिता	१६६	क्लिद्	१३१	क्षल्	१३७
क्रमित्वा	१६०	क्लिशितः	१७६	क्षवः	१८२
क्रमु	७, १२१	क्लिशित्वा	१८६	क्षान्तः	१७६
क्रयविक्रयिकः	८५	क्लिशु	१३०	क्षामः	१७३
क्रयिकः	८५	क्लिशू	१३६	क्षामीः	६
क्रय्यम्	१	क्लिष्ट्वा	१८६	क्षायिः	६४
क्रय्यात्	१७१	क्लीवृ	१२१	क्षि	११६, १३२, १३३
क्रान्त्वा	१६०	क्लेवृ	१२२	क्षिणु	१३५
क्रापयति	१४२	क्लेशकः	१७८	क्षितः	१७३
क्रामति	१५३	क्लेशापहः	१७०	क्षिपः	१६०
क्रिया	१८६	क्लेश्	१२३	क्षिपका	१८
क्रौडृ	१२०	क्व	१, १०६, २१८	क्षिप्	१२३, १३०
क्रुङ्	१३	क्वणः	१८४	क्षिप्नुः	१७७
क्रुञ्चकीयः	७३	क्वण्	१२१	क्षीज्	११६
क्रुञ्चा	१८	क्वत्यः	७४	क्षीणः—	१७५
क्रुञ्च्	११६	क्वथे	१२५	क्षीणवान्	७३

क्षीणायुः	१७५	क्षोदिमा	१०८	खरुः	२१
क्षीव्	१२१	क्षोधित्वा	१६०	खर्ज्	११६
क्षीरम्—	२१५	क्षोद्रकी	१११	खर्द्	११७
क्षीरपा	१६८	क्षोद्रकयः	१११	खर्व्	११७, १२१
क्षीरपाणम्,	५६	क्षोद्रम्	८२	खर्व्	१२२
क्षीरपाणाः	५८	क्षु	१२८	खलतिः	१८१
क्षीरपाणि	५८	क्षमापयति	१४२	खलतिकम्	७२
क्षीरपायिणः	१७२	क्षमायिता	१७६	खलपूः	६, १०
क्षीरपेण	५८	क्षमायी	१२१	खलप्लाषा	२११
क्षीरहोता	२२३	क्षमील्	१२२	खलिनी	७०
क्षीरोदः	५४	क्षिण्णः	१७६	खलु	१७
क्षीव्	१२२	क्ष्वेल	१२२	खलुकृत्वा	३८
क्षीष्	१२५	खड्डु	१६	खल्	१२२
क्षुतः	१७३	खजि	११६	खल्यम्	६०
क्षुदिर्	१३४	खज्	११६	खल्या	७०
क्षुधितः	१७४	खञ्जरीटः	२१६	खशयः	५२, १६८
क्षुधित्वा	१६०	खट्	१२०	खष्	१२३
क्षुष्	१३०	खट्ट	१३७	खाट्कृत्य	३७
क्षुब्धः	१७४	खट्वा	१७	खाट्	११७
क्षुभितम्	१७४	खट्वाकूटः	३२	खाडिति—	३७
क्षुभ्	१२४, १३१, १३६	खडि	१३०, १३६	खाण्डिकम्	६६
क्षुर्	१३३	खद्	१३४	खातम्	१७५
क्षुल्लकवैश्वदेवम्	२२१	खद्	११७	खात्वा	१६०
क्षेत्रस्य—	१६३	खनकः	१६७	खादकः	१७८
क्षेत्रियः	१०२	खनकी	१६७	खादतमोदता	३१
क्षेत्रे—	१६३	खनति—	२३०	खादिरम्	८३
क्षेपकः	१६६	खनित्रम्	१८१	खान्यः	१६५
क्षेपिमा	१०८	खनित्वा	१६०	खारिम्पचा	१६६
क्षेपिष्ठः	१०८	खनु	१२४	खारी	६१
क्षेमंकरः	१७०	खन्	१२	खारीकम्	६२, ६३
क्षेयम्	१	खन्यः	१६५	खिद्	१२०
क्षेव्	१२२	खरः	१०३	खिद्	१३०, १३४
क्षे	१२६	खरकण्ठः	२२५	खुङ्	१२७
क्षेरी	६८	खरणसः	४३	खुञ्ज	११६
क्षोद्	१४०	खरणासः	४३	खुडि	१३७
क्षोदिष्टः	१०८	खरशालः	८७	खुरणसः	४३

खुरणाः	४३	गड्	१२४	गम्यते	४
खुर्	१२३	गणरात्रम्	३६	गम्लु	१२७
खुर्द	११७	गणि—	१८७	गया	४२
खेट्	१४०	गण्	१३६	गरः	१८२, १८४
खेलु	१२२	गण्डक	८	गरिष्ठः	१०८
खेवृ	१२८	गण्यः	८८	गरुडम्—	१७६
खेययः	५२	गतगतः	११५	गर्गत्रिरात्रः	२२४
खे	१२६	गतगता	११५	गर्गभगिनी	५८
खोट्	१४०	गतम्—	६	गर्गरूप्यम्	६०
खोर्त्र	१३२	गत्वरी	१७६	गर्गाः	४८, ६२
खोलु	१२२	गदी	१४०	गर्गीयम्	६०
ख्या	१२८	गद्	११७	गर्ज्	११६, १३८
ख्यातः	१७३	गद्यम्	१६२	गर्ज्यम्	१६४
गंध्	१३८	गन्तव्यम्—	१६५	गर्दभाण्डः	१०१
गडुम्—	१५३	गन्वार	२०	गर्दभाण्डोयः	१०१
गङ्गाका	१६	गन्दिका	३६	गर्दभोच्चारी	२२३
गङ्गा	७	गभीरे—	२०२	गर्द	११७, १३८
गङ्गाका	१६	गमं—	१६१	गर्धप्	११
गङ्गापारात्	३१	गमः	१८४	गर्ध्	१३८
गङ्गामार्यः	४१	गमनकनिष्ठम्	२२०	गर्ध्	१२१
गङ्गामध्यात्	३१	गमनचिरम्	२१६	गर्भम्—	२०७
गङ्गाम्—	१७६	गमनज्यायः	२२०	गर्ध्	१२२, १४०
गङ्गायांघोषः	२५	गमननेदीयः	२२०	गर्ह्	१२३, १३६
गङ्गाघोणम्	४७	गमनपापिष्ठम्	२२०	गल्	१२२, १३८
गङ्गिके	१६	गमनप्रियम्	२१६	गल्म्	१२१
गङ्गीस्यात्	११३	गमनशोभनम्	२२०	गल्ह	१२३
गङ्गे—	३	गमनश्रेयः	२२०	गवयः	११०
गङ्गोदकम्	१	गमनश्रेष्ठम्	२२०	गवयी	२२
गङ्गोषः	२	गमनसुखम्	२१६	गवाक्	१५
गच्छताम्—	३०	गमनाकुञ्चने	४७	गवाक्षः	३, ५०
गच्छति	१५७	गमनाबाधम्	२२०	गवाम्—	२६, ३०, १६७, २०५
गजता	६६	गमनावमम्	२२०	गवां—	२१८
गजि	११६	गमनाशङ्कम्	२२०	गवांपतिः	२०
गव्	११६, १३७	गमयति—	२४, १४२	गवाप्रम्	३
गडि	११८, १२०	गमा	६	गवाध्यक्षः	२२२
गडुकण्ठः	४५	गम्भीरेभिः	१६६	गवानुपसरः	१८५

गवाश्वम्	४७	गार्गिकामवेतः	६८	गोणिः	१८५
गवि	३	गार्गी	१६	गोर्षति	६
गविष्ठिरः	५१	गार्गीपुत्रकायणिः	६५	गोर्षान्	२०७
गवेन्द्रः	३	गार्गीपुत्रिः	६५	गोष्पतिः	६
गवेष्	१४०	गार्गीप्रियः	२२४	गु	१३३
गवोद्धः	३६	गार्गीबन्धुः	२२४	गुगुलुः	१६८
गव्यः	६२	गार्गीभवति	११४	गुङ्	१२७
गव्यम्	१,६०,८४	गार्गीयाः	६०	गुजि	११६
गव्या	७०	गार्ग्यः	६१,६२	गुज्	१३३
गव्यूतिः	१	गार्ग्यो—	६१,२१२	गुडधानाः	३३, २२८
गहोयः	७६	गार्ग्यवात्स्यायनौ	४८	गुडप्रियः	४६
गा—	१२६,१५५	गार्ग्यस्य—	२१२	गुडमिश्रः	३२
गाङ्	१२७	गार्ग्यायणः	६१	गुडसंमिश्राः—	३२
गाङ्गः	६२	गार्ग्यायणी	१६	गुडापूपिका	१०२
गाङ्गायनिः	६२	गार्ग्यौ	४८	गुडि	१३७
गाङ्गेयः	६२	गार्दभरथिकः	२२८	गुडोदकम्	२२४
गाणपतम्	६०	गार्मिणम्	६६	गुड्	१३३
गाणिक्यम्	६६	गार्ष्टेयः	६३	गुण्	१४०
गाण्डीबम्	१०४	गार्हपत्यः	८८	गुण्डकाः	१०६
गात्रम्	२०५	गालोडयते	१४१	गुण्याः	१०४
गायकः	१६७	गावद्भमाः	४८	गुदम्	२१४
गाथाः—	१५३	गावः—	२१२	गुद्	११३
गाधु	११७	गांश्च—	२२३	गुधितम्	१७४
गान्धारः	६५	गाहू	१२३	गुघ्	१३०, १३५
गान्धारसनीडम्	२२०	गिरते-	१५७	गुपू	१२१
गामस्य—	१६४	गिरिः	१८७	गुप्	१३, १२७, १३१, १३६
गाम्भीर्यम्	७६	गिरिर्ल—	२०६	गुप्तार्मम्	२२३
गाम्मन्यः	१७२	गिरिणदी, नदी	५८	गुप्तिबन्धः	५२
गाम्—	२३, २०८	गिरिब्रज	२४, ४१	गुफित्वा	१८६
गायत्रीम्—	५३	गिरीशः—	१६८	गुफ्	१३२
गायनः	१६७	गिलः	१६८	गुम्फितः	४
गायनी	१६७	गिलगिलः	५५	गुम्फित्वा	१८६
गार्गः	६४, ८३	गीः	१४, १७१	गुम्फ	१३२
गार्गम्	८१, ८३	गीः काम्यति	५	गुराबुल्कः	१
गार्गिकः	६४	गीः कारः	६	गुरी	१३३
गार्गिकया—	६८	गी—पविः	६	गुरश्चे—	१५६

गुरोः—	१८७	गेयम्—	१६५	गोधा—	१६४
गुदे	११७, १३८	गेव्	१२२	गोधारः	६३
गुर्वी	१२२	गेष्ट	१२३	गोधुक्	१७१
गुह्रा	१८६	गेहज्ञे—	१६२	गोधूमा	२१५
गुह्र	१२६	गेहम्—	१६२, २१४	गोधेनुः	३५
गुह्यम्—	१६२	गेहा—	१६२	गोनदीयः	७४
गूढः	१७४	गेहानु प्रपातम्	१६२	गोपदम्	५८
गूढिः	१८६	गेहेनदी	३४	गोपाः	१०
गूढोत्मा	५६	गेहेशूरः	३४	गोपायतं—	२११
गूनः	१७३	गे	१२६	गोपायतनः	२१२
गूरी	१३०	गोअग्रम्	३	गोपालः	२२३
गूर्	१३८	गोकर्णः	२२४	गोपाल कच्च	३६
गूर्नम्	२०८	गोक्रीतः	२२७	गोपालकाः	१११
गूहयति	१४२	गोगभिणी	३६	गोपालसभम्	२२४
गृ	१२६, १३५, १३८	गोगृष्टिः	३५	गोपालिका	२१
गृजि	११६	गोगोष्ठम्	६६	गोपी	२१
गृज्	११६	गोग्रम्	३	गोपी—	२५, ३५, १५६
गृधु	१३१	गोघ्नः	१८१	गोपृष्ठः	२२५
गृध्नः	१७७	गोचरः	१८८	गोपोषम्	१६२
गृमाय —	१६७	गोजङ्घः	२२५	गोप्रकाण्डम्	३६
गृम्यानि—	१६६	गोजाः	१६५	गोबल्लवः	२२२
गृष्टिः	२०७	गोपी	२०	गोम्यो—	२१८
गृहपतिः	२०	गोणी	६१	गोमर्चिका	३६
गृहपत्नी	२०	गोखोतरी	१०६	गोमतल्लिका	३५
गृहम्	१६७	गोतमाः	६३	गोमती	७, ८
गृहयालुः	१७६	गोतल्लजः	३६	गोमयम्	६०, ८४
गृहाः	१६७	गोता	६६	गोमयनिकायः	१८३
गृहान्—	१६४	गोत्रा	७०	गोमयानां—	१८३
गृहीत्वा	१८६	गोत्रेणगार्थः	२६	गोमहिषम्	४७
गृह्ण	१२३	गोत्वम्	६६	गोमहिषाः	४७
गृह्	१४०	गोदोग्रामः	७२	गोमान्	१३, १७२
गृह्यकाः—	१६४	गोदः	१६७	गोमी	१०४
गृह्यते	१५७	गोदावरी	११	गोमुखः	२२८
गु	१३४	गोदोहनी	१८७	गोम्	१४०
गोपृ	१३१	गोदोहम्	२३	गोरक्षः	२२३
गेयः—	२६, १६५	गोदी रमणीयो	७२	गोरक्षितम्	३३

गोरट्	१३	गोस्वामी	२२०	ग्रामतः	११३
गोरूप्यम्	६०	गोहितम्	३३, २२१	ग्रामम्—	२३.
गोलवणम्	२१६	गोः	१०, १५७	ग्रामगः	१७०
गोवशा	३५	गौडपुरम्	२२४	ग्रामगमी	३२
गोवष्कयणी	३५	गौडमृत्यपुरम्	२२४	ग्राममजाम्—	२३
गोवाणिजः	२१६	गौडिकः	८६	ग्रामं ग्रामाय—	२६
गोवाली	२२	गौघेयः	६३	ग्रामणिदृष्टिः	४१
गोविडालः	२२२	गौघेरः	६३	ग्रामणिपुत्रः	२४
गोविन्दः	१६६	गौनर्दः	७४	ग्रामणीपुत्रः	५४
गोवृन्दारकः	३५	गौपवनाः	६३	ग्रामणीः	६, १७१
गोवृषः	२२७	गौपुच्छिकः	८५	ग्रामतक्षः	३८
गोवेहत्	३५	गौपुच्छिकम्	६२	ग्रामता	६६
गोव्याघ्रम्	४७	गौरमुखः	२२८	ग्रामनापितः	२२२
गोशाक्तम्	४०	गौरमुखा	२२	ग्रामरथ्या	२२२
गोशाला	४०, ७८	गौरसव्यः	२३०	ग्रामवासी	५२
गोषदकः	१०१	गौरी	१०, २०	ग्रामस्थ—	२७
गोषा—	१६५, २१०	गौरीपतिः	५४	ग्रामात्—	२७
गोपु—	२६	गौरुतल्पिकः	८५	ग्रामार्थः	३४
गोष्टृ—	११६	गौर्दुह्यते—	१५७	ग्रामीणः	७३
गोष्टोमम्	२१०	गौर्दुह्यते—	७०	ग्रामेयकः	७३
गोष्ठजो—	२१६	गौर्दुह्यते—	१०४	ग्रामेवासः	५२
गोष्ठश्वः	५०	गौष्ठिनः	६६	ग्राम्	१४०
गोष्पदः	५८	गौसहस्तिकः	१०४	ग्राम्यः	७३
गोष्पदम्—	१६१	ग्रथि	११७	ग्रामग्राम—	२०६
गोष्पदमात्रम्	५८	ग्रन्थति—	१५८	ग्रामस्तुत्	१८०
गोसंख्यः	१६८	ग्रन्थविस्तरः	१८३	ग्राहः	१६७
गोसनिः—	२१०	ग्रन्थ	१३६	ग्राहो	१६६
गोसन्दायः	१६७	ग्रसु	१२३	ग्रीष्मवसन्तो	४६
गोसंप्रदायः	१६८	ग्रस्	१३६	ग्रुचु	११६
गोसादः	२२१	ग्रहः	१६७, १८४	ग्रैवम्	७६
गोसादिः	२२१	ग्रहाः—	१६६	ग्रैवेयकोऽलङ्कारः	७३
गोसारथिः	२२१	ग्रह	१३६	ग्रैवेयम्	७६
गोसुखम्	३३	ग्रामो—	११५	ग्रैवोऽन्यः	७३
गोस्तोमम्	२१०	ग्रामः	२१५	ग्रैष्मः	८१
गोःस्थानम्	११२	ग्रामगतः	३२, २२१	ग्रैष्मम्	७७, ७६
गोस्थानः	७८	ग्रामगृहासेना	१६४	ग्रैष्मकम्	७६

गलसु	१२३	धिणि	११६	चक्रवद्धः	५२
गलह्	१२३	धुङ्	१२७	चक्रवन्धं—	१६२
गलानः	१७३	धुट्	१२४, १३३	चक्रवन्धः	३४, २२०
गलास्तुः	१७७	धुणि	१२१	चक्रमुक्तः	३३
गलुचु	११६	धुण्	१३३	चक्रवान्	१०३
गलुचुकायनिः	६०, ६५	धुर्	१३३	चक्रवाल	७६
गलुञ्चु	११६	धुषि	१२३	चक्रसक्थः	२३०
गलेप्	१२१	धुषितम्	१७५	चक्राणा—	१६६
गलेयम्	१६२	धुषिर्	१२३, १३८	चक्रिस्त्रायस्व	५
गलेवृ	१२२	धुष्टा	१७५	चक्रिः	१८०
गलेष्ट	१२३	धूरी	१३०	चक्रिञ्ज	३
गले	१२६	धूर्	१३३	चक्रीवान्	१०३
गलीः	१०	धूर्ण्	१३३	चक्रिङ्	१२८
गलीचुकायनः	६१	धृणि	१२१	चक्षुः	१५
गलीचुकायनकः	८२	धृतगन्धि	४४	चक्षु	१३२
गलीचुकायनकम्	६६	धृतनिघायं—	१६२	चक्षुक्रमणः	१७६
घष्	११८	धृतपल्लम्	२२६	चञ्चत्कः	१०१
घटम्—	११३	धृतपाना	१६६	चञ्चा	७२, ११०, २१३, २१५
घटयति	१४२	धृतं—	२०४, २१५	चञ्चु	११६
घटि	१३६	धृतविक्रयी	१७२	चटकका	१८
घटिकः	८५	धृतस्पृक्	१३, १७१	चटका	१७, १८
घटिन्धमः	१६६	धृतस्थ—	१६४	चटकिका	१८
घटिन्धयः	१६६	धृतशाकम्	२२६	चटे	१२६
घटोदरः	२२४	धृतसूपः	२२६	चट्	१३८
घट्	१२४, १३८, १३६	धृतोदङ्कम्	१८८	चडि	११६
घट्टना	१८७	घ्रा	१२६	चण्	१६, १२४
घट्ट्	११६, १३७	घ्राणः	१७३	चतस्रः	१४, १८, २१३
घनश्यामः	३५	डुङ्	१२७	चतुःस्तना	२२८
घनाघनः—	५, १६६	च	१६, २१२	चतुरः	२२३
घस्ताम्—	१६४	चकार	१५८	चतुरक्षी	१६५
घस्मरः	१७६	चकासत्	१३	चतुरङ्गयोगेन	५८
घस्तु	१२४	चकासु	१२६	चतुरस्रः	४३
घातः	१८५	चक्	११८, १२४	चतुर्यः	१०१, १०७
घातकः	१६५	चक्क्	१३४	चतुर्दन्	४४
घातयति	१४२	चक्रम्	१८४	चतुर्धा	१०७
घासः	१८४	चक्रनितम्बा	५८	चतुर्भुङ्क्ते	११२

चतुर्मुखः	४	चतुर्थम्	१६३	चायू	१२६
चतुर्गुणम्	४०	चर्व	१२१	चारकोयम्	६०
चतुर्वेदः	६७	चर्म	१८१	चारायणः	६१
चतुर्हयिना	२०	चर्मणि	२६	चारित्र्येण—	११३
चतुर्हयिणी	२०	चर्मण्वती	२४, १०२	चार्मणः	६४
चतुष्कपालः	६	चर्मतिलः	१२	चारवाघाटः	१७०
चते	१२५	चर्मपूरं—	१६१	चालः	१६७
चत्ता	२०५	चर्मवती	१०३	चि	१३६
चत्पम्	१६२	चर्म्यम्	१६२	चिकयामकः	१६४
चत्वारः	११, १६२, २१५	चर्व	१२२	चिकरिपति	१४३
चत्वारि	१४	चलनः	१७८	चिकिनम्	१००
चत्वारिंशत्	६४, २१४	चलयति	१५६	चिकीः	१३
चत्वारिंशति	६४	चलाचलः	१६६	चिकीर्षकः	२१२
चदि	११८	चलाचलेषुः	२२४	चिकीर्षते	१५८
चदे	१२६	चलि	१२५	चिकीर्षा	१८६
चनो—	१६६	चल्	१२३, १३७	चिकीर्षुः	१८०
चन्	१३६	चषालम्	१६७	चिकीयति	१४३
चन्दनलिप्ता	२१	चष्	१२६	चिकम्	१००
चन्द्रगुप्तसभा	४०	चह	१२४, १३७, १४०	चिकिलदम्	१८४
चन्द्रभागा	६	चाक्रमर्मणः	६४	चिकलुप्सति	१५६
चन्द्रमुखा	२१	चाक्रिणः	६४	चिक्षाद—	२०१
चन्द्रमुखी	२१	चाक्षुषम्	७३	चिच्युषे	२०१
चपयति	१४२	चाटकरः	६३	चिन्	१३१, १३७
चपि	१३७	चाण्डालमृतपाः	४७	चिट्	१२०
चप्	१२१	चातुरम्	७३	चितम्—	१५३
चमु	१२१	चातुराश्रम्यम्	६७	चिति	१२६
चयः	१८३, १८४	चातुर्दशम्	७३	चितिः	१८५
चय्	१२१	चातुर्दशिकः	८८	चिती	११७
चर	१२२	चातुर्मासी	६५	चित्	१३८
चरकाः	८२	चातुर्मास्यानि	६५	चित्पतिः	२२०
चराचरः	१६६	चातुर्वर्ण्यम्	६७	चित्यः	१६५
चरित्रम्	१८१	चातुर्वेद्यः	६७	चित्रकललाटिकावती	१०५
चरिष्णुः	१७७	चातुर्होतुकः	८०	चित्रगुः	४१, ४५
चर्	१३९	चात्वारिंशत्कः	६१	चित्रजरतीगुः	४१
चर्चा	१८७	चान्द्रायणिकः	६४	चित्रा	७८
चर्च	१२४, १३२, १३८	चान्द्रायम्	१६४		

चित्रा जरदगवीकः	४१	चुल्	१२२	चोलः	६६
चित्राजरदगुः	४१	चूडा	१८६	चौडम्	६६
चित्र्	१००	चूडालः	१०३	चौर—	२०८
चिद्रूपम्	४	चूडावान्	१०३	चौरङ्कारम्	१६१
चिनुहि	३	चूरी	१३०	चौरस्थ	२८, ५२
चिन्ता	१८६	चूणपेषम्	१६१	चौरात्	२६
चिन्तितः	२१३	चूणिनः	८६	चोरी	१६
चिन्मणम्	८३	चूण्	१३७	च्यु	१३६
चिन्मात्रम्	३६	चूर्तिः	१८५	च्युङ्	१२७
चिपिटम्	१००	चूष्	१२३	च्युतिर्	११७
चिरण्टी	१६	चृती	१३२	च्युस्	१३६
चिरत्नम्	७७	चेक्रियः	१६६	छजि	१३०
चिरन्तनम्	७७	चेच्छित्	१५	छत्रधारः	२२२
चिरम्	१५	चेच्छित्यते	५	छत्रोपानहम्	४८
चिरि	१३२	चेतन्ती—	२१८	छदि	१७२
चिल्	१३३	चेतयः	१६६	छदिर्	१२५
चिल्लः	१००	चेतव्यः	१६१	छद्	१३६, १४१
चिल्लन्	१२२	चेतसा—	१३	छन्दस्यः	८०
चिहणकन्यम्	२२६	चेत्	१६	छन्दोव्याख्यानम्	२२७
चीक्	१३६	चेयम्	१६२	छन्नः	१७५
चीम्	१२१	चेलु	१२२	छमु	१२१
चीवृ	१२६	चेष्ट	११६	छद्	१३७
चीव्	१३६	चैत्रः	६८, २१३	छष्	१२६
चुक्	१३७	चैत्रवत्	६६	छागलः	६३
चुक्षावयिषति	१४४	चैत्रसमर्पादम्	२२०	छागलिः	६३
चुट्	१३३	चैत्रात्	२७	छागलेयिनः	८२
चुट्ट	१३६	चैत्रिकः	६८	छाग्यायनिः	६५
चुडि	१२०	चैन्तितः	६२	छात्रः	८७
चुङ्	१३३	चोदयित्री	२१८	छात्रप्रियः	२२०
चुङ्	१२०	चोपनः	१७८	छात्रा—	१५३
चुद्	१३७	चोर—	११५	छात्राणाम्—	३०
चुप्	१२१	चोरघातः	१७०	छात्रिषालम्	२२३
चुवि	१२१	चोरभयम्	३३	छादिषेयाणि	६०
चुर्	१३६	चोरयति	१४१	छान्दसः	८०, १०२
चुल्	१३७	चोरी	१६६	छान्दसवैयाकरणाः	२२१
चुलनः	१००	चोल	४६	छान्दोग्यम्	६६, ८३

छाययति	१४२	जज्ञिः	११६, १६७	जरन्वित्रागुः	४१
छाया	२१४	जञ्जपूकः	१७६	जरतीचित्रागुः	४१
छित्तः	१७५	जटाभिः—	२५	जरत्—	१७६
छिन्	१८०	जट्	१२०	जरनैयायिकाः	३५
छित्तिः	१८६	जठरम्—	१६७	जरयति	१४२
छिदिर	१३४	जतुः	१६८	जरसा—	१६७
छिदुरम्	१७६	जनकः	१६५	जरा	१०, १८६
छिद्	२००	जनकीयम्	७६	जरित्वा	१६०
छिन्नः	१७३	जनता	६६	जर्ज	१२४, १३२
छिन्नकम्	११७	जनमेजयः	१६६	जलजादी	४३
छिन्नकर्णः	५७	जनयति—	१५२, १५६	जलधिः	१८५
छुट्	१३३	जनार्दनः	१६६	जलम्—	३७
छुप्	१३४	जनिष्ठा	२०३	जलसात्	११७
छुर्	१३३	जनी	१२०, १२५	जल्	१२५, १३६
छुदी	१३६	जनीयन्तः—	२०६	जल्प	१२१
छेद्	१४०	जनुषान्वः	५१	जल्पतकि	१०६
छेदिकः	६४	जनीः	१७१	जल्पयति—	२४
छो	१२०	जन्	१२६	जल्पाकः	१७६
जक्षत्	१३	जन्यः	८६	जल्पितम्	१७६
जक्षिवान्	१७३	जन्यम्	१६२	जवनः	१७६
जक्ष्	१२८	जन्या	८८	जवे—	१६६
जगतः—	२८	जपः	१८४	जषु	१३१
जगत्	२८, १८०	जप्	१२१	जष्	१२३
जगत्यम्	१६६	जभि	१३८	जसि	१३८
जगुरिः	१६७, २०५	जभी	१२१	जसु	१३८
जगृम्भा—	२०६	जमु	१२१	जहिजोडः	२६
जग्धः	१७५	जम्पती	४६	जहिस्तम्बः	२६
जग्ध्वा	१६०	जम्बु	८४	जहि—	२२१
जग्मिः—	१८०, १६७	जम्बूः	८४	जागरम्—	१६१
जग्मिवान्	१७६	जम्भकः	१६५	जागरः	१८६
जग्ले	१५७	जयः	१८४	जागरुकः	१७६
जघन्यः	११०	जयन्तीनाम्—	२१८	जागर्या	१८६
जघ्नः—	१८०, १६७	जयो—	२१३	जागषि	२१२
जघ्निवान्	१७६	जयी	१७६	जागु	१२८
जजि	११६	जय्	१२१	जाप्रत्	१३
जज्	११६	जव्यम्	१		

जाडारः	६३	जिरि	१३२	जु	१३५
जाडयात्—	२७	जिवि	१२२, १३६	जुमि	१२१
जातम्	१७५	जिषु	१२३	जुष्	१२५
जातायनः	६२	जिष्णुः	१७७	जु	१३६
जाती	८४	जिह्वामूलीयम्	८०	जुष्	१३०
जातु—	१५६, १६०	जिह्वाम्	२०८	जेयम्	१६२, १६३
जातु—	२३१	जीनः	१७३	जेष्	१२३
जातेयम्	६७	जीमूतस्येव	३१	जेह	१२३
जातेयः	६२	जीवकः	१६७	जै	१२६
जातोच्चः	५०	जीवग्राहम्—	१६१	जैमिनिकडारः	३६
जात्यन्वः	५१	जीवनाशम्—	१६२	जैवन्तायनः	६२
जानपदी	२०	जीवपुत्रप्रचायिका	२२२	जैवन्तिः	६२
जापयति	१४२	जीवका	१८	जोषम्	१५
जाम्बवम्	८४	जीवसे	१७	ज्ञः	१६६
जाम्बवशालूकिन्या	४७	जीविकां कृत्य	३७	ज्ञका	१६
जाया	२१४	जीविकां कृत्वा	३७	ज्ञप्	१३७
जायते	१५१	जीविकापन्नः	३४	ज्ञप्तः	१७५
जायाज्जः	१७०	जीव्	२२२	ज्ञा	१२५, १२८
जायापत्नी	४६	जु	१२६	ज्ञातिपुत्रः	२२६
जाये—	२३२	जुगि	११८	ज्ञातु	११
जारभरा	१६०	जुगुप्सिषते	१४४	ज्ञानकर्म—	१८३
जाराः	१८२	जुघुक्षति	१४३	ज्ञानम्	११, २३
जि	१३२, १२६, १३६	जुचि	१३६	ज्ञानवान्	१०२
जिगंस्यते	१४३	जुद	१३३	ज्ञानाय—	२७
जिगमिषति	१४३	जुद	१३२, १३७	ज्ञानेन—	२७
जिगरिषति	१४३	जुषाणो—	२०२	ज्ञापितः	१७५
जिगांस्यते	१४३	जुषी	१३२	ज्ञिके	१६
जिगीषति	१४३	जुष्	१३६	ज्ञीप्सति	१४३
जिघत्सति	१४३	जुष्टः	१७६, २१३	ज्या	१३५, २०२
जिघांसति	१४३	जुष्यः	१६३	ज्यायान्	१०८
जिघृक्षति	१४३	जुहावयिषति	१४४	ज्याष्टोमः	५५
जिघ्रः	१६६	जुहः	१८०	ज्युङ्	१२७
जिजावयिषति	१४४	जूः	१७१, १८०	ज्येष्ठः	१०८, २१५
जित्यः	१६३	जूतिः	१८६	ज्येष्ठतातिम्	२०१
जिस्वरः	१७६	जूरी	१३०	ज्येष्ठा	१८
जिमु	१२१	जूष्	१२३	ज्योतिष्मतः	२१३

ज्योक्	१५	द्वप्	१२७	यु	१२८
ज्योत्स्ना	१०४	द्वम्	१२५	णुद्	१३२, १३४
ज्योत्स्नः	१०३	द्वेषु	१२१	यू	१३३
जि	१२६, १३६	द्वल्	१२५	खेद्	१२६
ज्वर्	१२४	डण्	१३८	खेषु	१२३
ज्वल्	१२५	डिण्	१३८	तंभवन्तम्	१०६
ज्वालः	१६७	डिप्	१३१, १३३	तक्त्युते	१२७
झट्	१२०	डीङ्	१३७, १३०	तकि	११८
झमु	१२१	डुकुञ्	१३५	तक्यम्	१६२
झर्म	१२२, १२४	डुकीञ्	१३५	तक्तकस्य	३३
झष्	१२३, १२६	डुदान्	१२६	तक्तकीयः	७३
झार्मरः	८७	डुधान्	१२६	तक्तशिलः	८१
झार्मरिकः	८७	डुपचष्	१२७	तक्षा	२०३
भृ	१३५	डुभूञ्	१२६	तक्षायस्कारम्	४७
भृष्	१३०	डुमिञ्	१२६	तक्षू	१२३
भिङ्न्धी	१३४	डुलमष्	१२७	तक्ष्	१२३
भित्तिदा	१३१	दुल्	१३७	तगि	११८
भितृष्	१३१	ढीकृ	११८	तङ्गण	३८
भित्वरा	१२४	णक्	१२३	तच्छिवः	४
भिषृषा	१३२	णद्	१३६	तच्छ्लोकेन	४
भिफला	१२२	णम् १२४, १२७, १३१,	१३६	तच्छिवः	४
भिमिदा	१३१	णल्	१२५	तञ्जु	११६
भिभी	१२६	णस्	१२३	तटः	२३
भिमिदा	१२४	णास्	१२३	तटम्	२३
भिष्वप्	१२८	णिब्	१२३	तटी	२२, २३
भिष्विदा	१२४, १२७	णिजि	१२८	तट्	१३, १२०
टल्	१२५	णिजिर्	१२६	तट्टीका	४
टिक्	११८	णिदि	११८	तडि	११६
टीकृ	११८	णिद्	१२६	तड्	१३६
टुमोश्चि	१२७	णिवि	१२२	तण्डुलान्	१०६
टुमोस्फूर्जा	११६	णिशि	१२४	ततः	१०६, १७४, १५५
टुम्	१२८	णिष्	१२४	ततः	२१६
डुदु	१३२	णिषु	१२३	ततमः	११०
डुनदि	११८	णिसि	१२८	ततरः	११०
डुमस्त्रो	१३४	णीञ्	१२६	ततस्त्यः	७४
दयाचृ	१२५	णीव्	१२२	ततुरिः	१६७, २०५

तत्	१४, २१७	तप्यते	१५८	तस्य—	२१५, २२६
तत्करा	१६८	तमसः	२१०	ता—	२०४
तत्पञ्चमः	२२८	तमसा	५०	ताक्षण्यः	६४, ६५
तत्र	१०६	तमसाकृतम्	५१	ताक्ष्णः	६४, ६५
तत्रत्यः	७४	तमिस्रम्	१०४	ताडघः	१७०
तत्रभवन्तम्	१०६	तमिस्रा	१०४	ताडघातः	१७०
तत्रभवान्	१०६	तमी	१७७	तातः—	२०२
तत्रभुक्तम्	३४	तमीशानास—	२११	तादात्म्यम्	१
तत्रशालायाम्	१७	तमु	१८१	तादृक्	१३, ५५
तन्नि	१३८	तमुत्वा—	१६६	तादृक्षः	५५, १७१
तत्त्वं—	१५३	तमोपहः	१७०	तादृशः	५५
तथा	१०६	तम्—	२००	तानि	४८
तथाहि	१७	तयोरन्यः—	२३२	तान्नुवायिः	६५
तद्	८	तय्	१२१	तान्नुवाय्यः	६५
तदग्निः—	२१०	तरक्षुः	२१६	तापसः	१०३
तदा	१०६	तरङ्गापत्रस्तः	३३	तापसपर्वतो	४६
तदानीम्	१०६	तरी	१०	तामिस्रः	१०३
तदीयः	७४	तरुणी	१६	ताम्रपर्णी	१०
तनुः	२१५	तरुतारम्	२०६	ताम्रमुखी	२२
तनु	१३५, १३६	तर्क	१३६	तायते—	१५६
तनुच्छत्	१७१	तर्ज	११६, १३८	तायू	१२१
तनूनपात्	२२७	तद्	११७	तारका	१८
तन्तिः	१८६	तर्षित्वा	१६०	तारकितम्	१००
तन्तिपालः	२२३	तर्हि	१०६, २००	तारा	१८६
तन्तुः	१८१	तलुनी	१६	तारिका	१८
तन्तुवायः	१६७, २२३	तल्	१३७	तार्कवम्	८३
तन्त्रकः	२०१	तल्लयः	१०४	तार्तीयिकः	१०७
तन्त्रयुतम्	६	तव—	१८३, २२२	तालः	२१५
तन्त्री	१०	तवल्कारः	२	बालम्	८४
तन्द्रालुः	१७६	तवैव	२	बालमयम्	८४
तन्मात्रम्	४	तवीष्ठः	२	तावकः	७७
तन्वम्—	२०३	तसि	१२३, १३८	तावकीनः	७७
तन्वीदीर्घजिह्वः	४१	तसु	१३१	तावतिकः	६१
तपस्वी	१०३	तस्करः	५६	तावत्	१७
तप्	१२७, १३०, १३६	तस्थिवांसम्	१७६	तावत्कः	६१
तप्तरहसम्	५०	तस्मै—	१२, २६	तावद्द्वयसम्	१००

तावद्भायः	४२	तिल्यम्	६०, ६८ २१६,	तुद्	१३२
तावन्मात्रम्	१००	तिस्त्रो—	२१७	तुन्दपरिमार्जः	१६८
तावान्	५५, १००	तिलन्तुदः	१६६	तुन्दपरिमृगः	१६८
तावामेषे	१६७	तिलपिञ्जः	६६	तुन्दवान्	१०४
तिककितवाः	६४	तिलपेजः	६६	तुन्दिकः	१०४
तिकृ	११८	तिलिङ्ग	५२	तुन्दिभः	१०५
तिक्	१३२	तिलेम्पः—	२७	तुन्दिलः	१०४
तिग्मरुक्	५७	तिल्	१३३, १३७	तुन्दो	१०४
तिग्	१३२	तिल्पिञ्जः	६६	तुप्	१२१, १३२
तिज	१२७	तिष्ठतु—	६	तुफ्	१२१, १३२
तिज्	१३७	तिष्ठतुसर्पिः	६	तुवि	१२१, १३७
तितरिषति—	१४४	तिष्ठद्गु	३१	तुम्यं—	२१३
तितांसति—	१४३	तिष्ठासति	१४४	तुम्	१२४, १३१, १३६
तितुञ्जति—	१४३	तिष्ठ्यपुनर्वसवीयमहः	६७	तुम्	१७
तित्तिरिः	२२, २१६	तिष्ठ्यपुनर्वसवो—	४०	तुम्प्	१२१, १३२
तिष्ट्	१२०	तिष्ठ्यपुनर्वसू	४०	तुम्फ्	१२१, १३२
तिमिङ्गिलः	५५	तिष्ठः	१०	तुराषाट्	११
तिमिङ्गिलगिलः	५५	तीकृ	११८	तुरोयः	१०१
तिम्	१३०	तीरभुक्ति	४३	तुर	१२६
तिरस्	१५	तीर	१४०	तुर्यः	१०१
तिरस्कर्ता	५	तीर्थष्वाङ्गः	३४	तुर्वी	१२२
तिरःकर्ता	५	तीव्	१२२	तुला—	२६, १८४
तिरस्कृत्य	३७	तु	१२८	तुल्	१३७
तिरःकृत्वा	३७	तुङ्गनासिका	२१	तुल्यः—	२६
तिरोभूय	३७	तुङ्गनासिकी	२१	तुल्यम्	८८
तिर्यक्	३५	तुङ्गभद्रा	११	तुल्यश्वेतः	२१६
तिर्यङ्	१३	तुजि	११६, १३६, १३६	तुविजाता—	२३०
तिर्यङ्—	१६३	तुज्	११६, १३६	तुषजः	२२३
तिलखल	५८	तुद्	१३३	तुष्	१२३
तिलतेलम्	१००	तुडि	११६, १३७	तुष्णीम्—	१६३
तिलपललम्	२२६	तुड्	१२०	तुल्यश्वेतः	३६
तिलमयम्	८४	तुद्	१३३, १३६	तुष्	१३०
तिलमिश्राः	२२८	तुण्	१३३	तुस्	१२४
तिलसंमिश्राः	२२८	तुत्थ्	१४१	तुहिनात्यस्तः	३२
तिलाः	२१५	तुवत्	१५	तुहिर्	१२४
तिन्	१२२	तुदन्ती	२१८	तूः	१७१

तृड्	१२०	तेम्यो —	२०८	त्रपटत्रपटा—	११४
तृण्	१३८	ते मित्र—	२१६	त्रपा	१८६
तृयते—	१५६	तेऽवदन्	२११	त्रपि	१२५
तृरी	१३०	तेवृ	१२२	त्रपुष्	१५२
तृयः	१७५	तेषां—	२१८	त्रपूष्	१२१
तृन्	१२२	तैकायनिः	६४, ६५	त्रपिष्ठः	१०८
तृष्णीकः	१०६	तैकायानिः	७१	त्रयः	६
तृष्णीकाम्	१५	तैडः	८०	त्रयम्	१००
तृष्णीम्	१५	तैतिलकद्रः	२२१	त्रयश्चत्वारिंशत्	३६
तृह्र	१३३	तैन्तिडिकम्	८५	त्रयोदश	३६, २२१
तृ	१२७	तैन्तिडिकम्	८३	त्रयोऽनुयाजाः	१६४
तृम्	१२३	तैत्तिरीयाः	८२	त्रयोविंशति	३६
तृचम्—	२०१	तैर्थः	८०	त्रस्—	१३६
तृडः	६	तैर्थकः	७५	त्रसी	१२६
तृणजम्भा	४४	तैलकम्	१०६	त्रस्तुः	१७७
तृणविस्तारः	१८३	तैलम्	८४	त्राणः	१७३
तृणसम्	७२	तैलम्पाता—	७०	त्राव्वम्—	१६४
तृणसिंहः	२२२	तैलीनम्	६८	त्रापुषम्	८३
तृणु	१३५	तैषम्	७७	त्राप्यम्	१६४
तृण्या	६६	तोत्रम्	१८१	त्रिशशतम्	१०१
तृतीयः	१०१, १०७	तोयम्	६	त्रिशकः	६१
तृतीया	१०, १०७	तो	४८	त्रिशतिकः	६१
तृतीयाकरोति	११४	तोदेयः	८१	त्रिशात्	६४
तृतीयिकः	६३	तोरायणिकः	६४	त्रिशात्क	६१
तृभ्राजुः	१०४	तोषायण	३१	त्रिशिनः—	२००
तृप्	१३१, १३२, १३६	त्मना—	२०४	त्रिककुत्	४५
तृम्फ्	१३२	त्यज्	१२७	त्रिककुदः	४५
तृषित्वा	१६०	त्यत्	१४	त्रिगर्गः	३०
तृषणक्	१८०	त्यद्	८, १२	त्रिचतुराः	५०
तृह्र	१३३, १३४	त्यागिमम्	८६	त्रिचत्वारिंशत्	३६
ते	४८	त्याज्यम्	१६४	त्रितयम्	१००
ते—	२०२, २०५	त्यागी	१७८	त्रिदशाः	३६
तेज्	११६	त्यादः	६५	त्रिधा—	१०७, २०६
तेन—	१७६	त्यादायनिः	६५	त्रिनावम्	३६
तेपु	१२०, १२१	त्रकि	११८	त्रिनिष्कम्	६२
तेभिष्ट्वा—	२१०	त्रदि	११८	त्रिनैष्किकम्	६२

त्रिपथम्	४०	त्रेहायनम्	६७	त्वं	१७
त्रिपात्री	६३	त्रौक	११८	त्वोतासः	२२१
त्रिपाद्—	२३०	त्र्यक्ष	२२	त्सर	१२२
त्रिपुर	४६	त्र्यनीका	१६	त्रुड्	१३३
त्रिभागा	६	त्र्यम्बकम्—	२०३	दंश्	१२७
त्रिभिष्टवं—	२१०, २१८	त्रुचानि	२०१	दंष्ट्रा	२०, १८१
त्रिभुवनम्	४०	त्र्यशीतिः	३६	दक्षिणः	२१४
त्रिमुनि	३१	त्र्यहः	३८	दक्षिणतः	१०७, २०५
त्रिमूर्धः	४३, २३०	त्र्यायुषम्	५०	दक्षिणतारम्	५६
त्रिमूर्धनिम्—	२३०	त्वं—	१६१	दक्षिणतीरम्	५६
त्रिरात्रम्	३६	त्वम्	२०४, २०५, २०६	दक्षिणपूर्वा	४२
त्रिर्भुङ्क्ते	११२	त्वमह—	२३२	दक्षिणाः—	८, २७, १०७
त्रिशतम्	३६	त्वंकरोषि	४	दक्षिणात्	१०७
त्रिष्टः	१६८	त्वङ्करोषि	४	दक्षिणाहि—	२७
त्रिसहस्रम्	३६	त्वंछन्दोऽधीष्व	१५६	दक्षिणीयः	६४
त्रिसि	१३६	त्वं	८	दक्षिणेन—	२७, १०७
त्रिस्तावती	५१	त्वक्ष्	१२३	दक्षिणेर्मा	४४
त्रिस्तावा	५१	त्वक्स्त्रजम्	४८	दक्षिण्यः	६३
त्रिहायणा	२०	त्वगि	११८	दक्ष्	१२३, १२४
त्रिहायणी	२०	त्वङ्मयम्	८४	दग्धः—	१७७
त्री—	२०२	त्वचिष्ठः	१०८	दग्धजानि	२२३
त्रुट्	१३७, १३८	त्वचिसारः	५१	दङ्क्त्वः—	१७७
त्रुटि	१३७	त्वचीयान्	१०८	दण्ड	६२
त्रुप्	१२१	त्वच्	१३२, १३६	दण्डम्—	१५३
त्रुफ्	१२१	त्वञ्चु	११६	दण्डपाणिः	४६
त्रुम्प्	१२१	त्वत्कः	१०२	दण्डपाता —	३०
त्रुम्फ्	१२१	त्वत्पितृकः	८	दण्डादण्डि	४३
त्रेधा	१०७	त्वत्पुत्रः	७७	दण्डि	१४
त्रैगर्तकः	७५	त्वदीयः	७७	दण्डिकः	१०४
त्रैघम्	१०७	त्वम्	१२	दण्डिनी	१८
त्रैविधः	७०	त्वयका	१०६	दण्डिमती	१४४
त्रैलोक्यम्	६७	त्वया—	१५६	दण्डो	१०४
त्रैशङ्कवम्	७२	त्वायतः—	२००	दण्डेन—	१६२
त्रैशानि	६४	त्विट्	१४	दण्डोपघातम्—	१६२
त्रैष्टुभम्	७०	त्विष्	१२७	दण्ड्	१४०
त्रैस्वर्यम्	६७	त्वे—	१६४	दण्डयः	६४

दतः	८	दध्योदनः	३३	दर्शनीयतरा	४१
दत्तः	१०६, १७५, २३२	दन्तच्छदः	१८८	दर्शनीयदेशीया	४१
दत्त	२००, २१३	दन्तजातः	२२६	दर्शनीयपादः	२२६
दत्तकः	१०६	दन्तजाता	२१	दर्शनीयपाशा	४१
दत्तकाण्डम्	२२६	दन्तवावनम्	२२७	दर्शनीयपृष्ठः	२२६
दत्तभार्या	३२	दन्तयोः—	२६	दर्शनीयमानिनी	४२
दत्तातरा	५३	दन्तलेखकः	३४, २२२	दर्शनीयमानी	४२, १७२
दत्ताभार्यः	४२	दन्तावलः	१०४	दर्शनीयरूपा	४१
दत्तामानिनी	४२	दन्तुरः	१०३	दर्शनीयस्तना	२२८
दत्तिकः	१०६	दन्तोष्ठम्	४०, ४६	दर्शयति—	४२, १५४
दत्तियः	१०६	दन्त्यम्	७६, ६०	दर्शयते	१५४
दत्तिलः	१०६	दन्दशूकः	१७६	दर्शयन्ति	१५४
ददः	१६७	दन्द्रमणः	१७६	दल्	१२२, १२४, १३६
ददन्	१३, १५	दमकः	१६५	दविद्युत्तत्	२०७
ददिः—	१८०, १६७	दमयन्ति—	१५६	दविध्वतः	२०७
ददिवान्	१७६	दमितः	१७५	दविष्ठः	१०८
ददृत्	१८०	दमु	१३१	दशत्	६४
ददृशिवान्	१७७	दमूना—	२२०	दशदन्तोष्ठाः	४७
ददृश्वान्	१७७	दम्पती	४६	दशपुर	५६
दद्	११७	दम्भु	१३२	दशमास्थः	१२२०
ददभिर्न—	२१७	दम्यते	१५७	दशार्णः	२
दधः	१६७	दयालुः	१७६	दशार्ण	५६
दधत्	२०६	दय्	१२१, १२६	दशार्णा	२
दधती	२१८	दरः	१८४	दशि	१३८
दधनत्	२१२	दरद	२६	दशैकादशिकः	८६
दधातन्—	२०५	दरिद्रत्	१३	दशैकादशिकी	८६
दधाना—	२१२	दरिद्रा	१२६	दत्ति	१३८, १३६
दधासि—	२१२	दरिद्रितः	१७४	दसु	१२१
दधि, दधि	३, ११, ११८, १८०	दरिद्रिता	१६५	दस्तः	१७५
दधिकटुकम्	२२६	दरी	१७६	दस्यो—	२०८
दधिधृतम्	४७	दर्मकाण्डम्	२२६	दह—	१२७
दधिधृते	४७	दर्मकुण्डम्	२२६	दाक्षः	८३
दधिपयसी	४७	दर्मचीरम्	२२६	दाक्षम्	८३
दधिसिञ्चति	११४	दर्ममूली	२२	दाक्षाः	७४, ८२
दधुक्	१३	दर्शनीयकल्पा	४१	दाक्षायणः	६१, ६५
दध्	११७, १६२	दर्शनीयतमा	४१	दाक्षिः	६१, ६५

दाक्षिकन्या	२२६	दाधीचः	२२१	दासीपुत्रः	५२
दाक्षिकस्थीयम्	७६	दानीयः	२५, १६२	दासीभारः	२२१
दाक्षिकर्षः	२२६	दान्	१२७	दासीश्रोत्रियः	२२६
दाक्षिकर्षुकः	७५	दान्तः	७५	दासेयः	६३
दाक्षिकूलम्	२२६	दाम्	१२८	दासेरः	६३
दाक्षिग्रामः	२३४	दामनीयः	१११	दास्या	२५, १५४
दाक्षिग्रामीयम्	७६	दामलिट्	११	दास्याःपुत्रः	५३
दाक्षिघोषः	२२३	दामवर्ग्यः	२२६	दिक्	१४
दाक्षिणात्यः	७३	दामा	१८	दितः	१७५
दाक्षिणात्यिका	१८	दामिनी	१०५	दित्यत्राट्—	२२, १६५
दाक्षिनगरीयम्	७६	दाम्म	१६४	दित्वा	१६०
दाक्षिनिवासः	२२३	दायः	१६७	दित्सति	१४४
दाक्षिपलदीयम्	७६	दायकः	१६५	दित्सते	१४४
दाक्षिप्रस्थः	२२३	दारगवम्	५०	दिदरिद्विपति—	१४३
दाक्षिह्रदः	२२३	दाराः	१८२	दिदृक्षेभ्यः	१६८
दाक्षिह्रदीयम्	७६	दारुः	१७६	दिदृक्षते	१५४
दाक्षी	२४, ४८	दारुकच्छकः	७५	दिदेविपति	१४३
दाक्षीपुत्रः	२२६	दारुणाध्यापकः	२३२	दिद्युतिपते—	१४३
दाक्षे	२१२	दारुवहम्	५७	दिषक्	१३
दाक्ष्	१२६	दार्त्तयम्	७६	दिषिषूपतिः	२२०
दाण्डकीया	१११	दार्दुरिकः	८६	दिषरिपते	१४३
दाण्डमाधिकः	८७	दार्भाषणः	६१	दिषम्	२०५
दाण्डा	७०	दार्भिः	६१	दिवस्पयो—	२१०
दाण्डाजिनिकः	३०२	दार्वकः	७५	दिवस्पारि—	२१०
दाण्डायनस्थलम्	२२६	दार्वाषाटः	१७०	दिवस्पुत्राय—	२१०
दातः	७१, ७५	दार्विया	२०४	दिवस्पृथिव्योः—	४८
दातवाड	१६७	दार्पदाः	७३	दिवस्पृथिव्यौ	४८
दाति—	१६४, २०१	दावः	१६७	दिवस्पृथिव्याः—	२१०
दात्तामित्रो	१६, ७२	दाविकम्	८०	दिवस्पृष्टम्—	२१०
दात्तेयः	६३	दाविकाकूलाः	८०	दिवा	१५
दात्थीहम्	८०	दाशः	१८१	दिवाकरः	१६०
दात्रम्	१, १८०	दाशकिपुत्रः	२२६	दिवातनम्	७७
दाधार	२०१	दाशु	१२६	दिवाभूता	११३
दाधिकः	८५	दाशु	१३२	दिवामन्या	१७२
दाधिकम्—	६७, ८५, ८६, १६१	दासितः	१७५	दिवि	१२२
दाधित्यम्	८३, ८४	दासीदासम्	४७	दिविजः	५२

दिविस्पृक्	५१	दुःखापन्नः	३२	दृत्यम्	६७, १६६
दिवु	१३८, १३९	दुःखी	१०५	दूनः	१७३
दिवे	२१२, २१७	दुःशासनः	१५६	दूरः—	२७
दिवोदासः	५३	दुःख्	१४०	दूरम्—	२७
दिवोदासाय	२२३	दुग्धम्	११	दूरात्	३३, २२१
दिव्यम्	७४	दुद्युषति	१४३	दूरेत्यः	७४
दिशोदण्डः	५२	दुध्वषति	१४४	दूर्वावणम्	५७
दिश्	१३२	दुरादयङ्करः	१८८	दूषयति	१४२
दिश्यम्	७६	दुरादयम्भवम्	१८८	दृ	१२५, १३२, १३५
दिष्टिः	६२, १००	दुर्गः	१७०	दृक्	१४
दिह्	१२८	दुर्मेघाः	४४	दृग्भूः	६
दीक्षिता	१७६	दुर्यवनम्	३१	दृङ्	१३४
दीक्ष्	१२३	दुर्यानिम्	१६२	दृढः	१७५
दीङ्	१३०	दुर्योधनः	१८६	दृढघूः	४६
दीघीङ्	१२६	दुर्विनीत—	११५	दृढपतिः	२०
दीघ्यत्	१३	दुर्लभम्	१८८	दृढपत्नी	२०
दीपिता	१७६	दुर्वी	१२२	दृढभक्तिः	४१
दीपी	१३०	दुर्हत	४५	दृढशालम्	२२६
दीप्तः	१७४	दुर्हृदयः	४५	दृढसेनः—	४०
दीप्तिः	१८६	दुष्	१३०	दृतिम्—	२०४
दीप्रः	१८०	दुष्करः	१८८	दृतिहरः	१६६
दीयते	१५६	दुष्कुलीनः	६४	दृतिहरिः	१६६
दीर्घमुखा	२२८	दुष्कृतः	५	दृन्मूः	६
दीर्घसक्थः	१४२	दुष्टीयति	२०६	दृप्	१३१, १३२
दीर्घसक्थि—	४३	दुष्पानः	१८६	दृभी	१३२, १३६
दीर्घसत्रम्	८०	दुष्प्रजाः	४४	दृभ्	१३६
दीर्घातन्वीजङ्घः	४१	दुष्प्रमयः	१८८	दृम्फ्	१३२
दीर्घायुरिस—	२०६	दुष्प्रलम्भः	१८८	दृम्भूः	६
दीर्घाहा	१४	दुहिर्	१२४	दृषिर्	१२७
दीर्घाही	३८	दुह्	१२८	दृषे	१६८
दीग्यत्	१५	दुह्यम्	१६३	दृष्यते	१५७
दीग्यन्ती	१८	दृह्	१३०	दृषत्करोति	११४
दु	१२६	दृढभः	५६	दृषदिमाधकः	५२
दुःखजातः	२२६	दृढाशः	५६	दृषद्वती	७
दुःखम्	२१४	दृढ्यः	५६	दृहि	१२४
दुःखातीतः	३२	दृणासः	६५	दृह्	१२४

देहः	१२७	देवस्य—	१६६, २२७	दैवासुरम्	८२
देयम्	१६२	देवस्वामिकः	२२३	दैव्यम्	६०
देवः—	१०६, १६६, २३२	देवहूतिः	२२१	दैव्या	१६
देव—	२११, २१२, २१५, २३१, २३२	देवद्रीचीम्—	२०३	दैर्घवरत्रः	७१
देवकः	१०६	देवां—	२०६	दैष्टिकः	८७
देवका	१८, ११४	देवाः—	६, १२, ११३, १८०, १८६, २०५,	दोः	१३
देवकीयम्	७६		२११	दो	१३०
देवखाता	२२७	देवागारिकः	८७	दोषा	१६
देवग्रामः	२२३	देवानां प्रियः	५२, १०६	दोषात्तनम्	७७
देवच्छन्दसानि	२०१	देवान्—	२०६	दोषभूतम्	१७८
देवता	११३	देवायन्तः	२०६	दोही	१७८
देवदत्तः	१०६, १५७, २२७, २३१	देवाः—	६	दोहीयसी	१०८, २००
देवदत्त	३	देवायिह	६	दोलियः	६३
देवदत्तकः	१०२, १०६	देवार्यम्	२२१	दोवारिककपायः	२१६
देवदत्तपुरम्	२२४	देवासः	२०५	दोष्कः	६८
देवदत्तम्	२३, ८१, १५४	देवास्मान्	१३	दोष्कुलेयः	६४
देवदत्तमयम्	८१	देविकः	१०६	दोष्ठवम्	६७
देवदत्तरूप्यम्	८१	देविका	२५	दोहित्रम्	६२
देवदत्ता	२२	देवित्वा	१६०	दोहित्राः	६२
देवदत्तात्	२६	देवियः	१०६	द्य	१७
देवदत्ताय शतम्—	२५	देविलः	१०६	द्यावा—	२१०
देवदत्ति का	१६	देवीः—	१६६, २११	द्यावाक्षामा	४८
देवदत्तीयः	२५	देव	१२२	द्यावाचित्—	४८
देवदत्तेन—	२४, ११३	देवेट्	१२	द्यावापृथिवीजनयन्	३२७
देवदाखनम्	५८	देवैश्वर्यम्	२	द्यावापृथिवीयम्	६८
देवपयः	११०	दैत्यः	६०, ६१	द्यावापृथिव्यम्	६८
देवपालितः	२२७	दैत्यान्—	२८, २६	द्यावापृथिव्यौ	४८
देवपूजकः	३३	दैत्यारिः	२	द्यावाभूमि	४८
देवप्रियः	५२	दैत्येभ्यः—	२६	द्यु	१२८
देवब्राह्मणः	२५	दैप्	१२६	द्युतितम्	१७४
देवमित्रः	२२८	दैवम्	६०	द्युत्	१२४
देवम्—	२४	दैवतः	११३	द्युमिः—	२१८
देवयिता	१७८	दैवदत्तः	७५, ८१	द्युमः	१०४
देवविद्या	१८	दैवदारवम्	८३	द्युसत्	११७
देवश्चेत्—	१५६	दैवयज्ञा	६६	द्युतम्	१३७
देवसेना—	२१८	दैवयज्ञी	६६	द्युत्वा	१६०

द्यूनः	१७३	द्रौणिः	६१	द्विजः	१७२
द्यौ	१२६	द्रौणिकी	६२	द्विजस्य—	३३
द्यौः	१०, १४	द्रौणी	६३	द्विजार्थः	३३
द्रढिमा	६७	द्रके	१६	द्विजार्थम्	३३
द्रवः	१८२	द्रन्दम्—	११६, १५४	द्विजार्था	३३
द्रवत्पाणी—	२११	द्रयम्	१००	द्वितन्त्रः	७१
द्रविड	४८	द्रयोः—	११३	द्वितयम्	१०७
द्रविणीयति	२०६	द्राचत्वारिंशत्	३६	द्वितयाः	८
द्रव्य—	१८३	द्रादश	३६, ४६, २२१	द्वितये	८
द्रव्यकः	६३	द्रादशान्यिकः	८७	द्वितीयः	१०१, १०७
द्रव्यम्—	८४, ११०	द्रादशाहिकी	३६	द्वितीयकः	१०२
द्रष्टुम्	१६८	द्राविंशतिः	३६	द्वितीयकम्	१०२
द्रा	१२८	द्विः—	६, ८, ९	द्वितीयम्—	३४
द्राक्षि	१२३	द्विकंसः	२२४	द्वितीयस्मै	८
द्राक्षु	११८	द्विकंसम्	६६	द्वितीया	१०७
द्राक्षिष्टः	१०८	द्विकम्	१०२	द्वितीयाकरोति	११४
द्राष्टृ	११८	द्विकम्बलया	१६	द्वितोयाय	८
द्राडु	१२०	द्विकरः	१६८	द्वितीयिकः	६३
द्राणः	१७३	द्विकाण्डम्	२२५	द्विनाः	३६, ४२, ४६, ४६
द्रावयति	१५६	द्विकाण्डा	१६	द्विदण्डि—	४४
द्राह	१२६	द्विकाण्डी	६	द्विदन्	४४
द्रु	१२३	द्विकापिपणम्	६१	द्विदन्तः	४४
द्रुघणः	१८५	द्विकापिपणिकम्	६१	द्विदशाः	४२
द्रुणसः	४३	द्विकुलिजिकी	६३	द्विदाम्नी	२०
द्रुष्	१३३	द्विकुलिजी	६३	द्विद्रोणेन—	२५
द्रुतयम्	८४	द्विकुलिजोना	६३	द्विधा	१०७
द्रुयः	१०४	द्विके	१६	द्विनावम्	३६
द्रुमती	२५	द्विकोडविकः	६५	द्विनावरूप्यः	३६
द्रुह्	१३१	द्विखारम्	३६	द्विनिष्कम्	६२
द्रुब्	१३५	द्विखारि	३६	द्विनैडिष्ककम्	६२
द्रेकु	११८	द्विखारीकम्	६२	द्विपः	१६७
द्रं	१२६	द्विगुणम्	१०६	द्विपण्यम्	६२
द्रोणः—	२३	द्विगुणाकरोति	११४	द्विपदा	१८
द्रोण	६१	द्विगुणाकर्णः	५६	द्विपदिकाम्	१११
द्रोणिकम्	६३	द्विचत्वारिंशत्	३६	द्विपदी	१८
द्रोणायनः	६२	द्विचितीकः	५७	द्विपात्	४४

द्विपात्रिको	६४	द्विशाणम्	६२	द्वैप्यम्	७७
द्विपात्रोणा	६३	द्विशाण्यम्	६१	द्वैप्यहैमायनाः	२२०
द्विपाद्	२३०	द्विशिराः	२२८	द्वैप्या	१६,६२,७७
द्विपायम्	६२	द्विशुक्लः	४५	द्वैमातुरः	६२
द्विपाय्यम्	२२५	द्विश्चूर्पः	२२५	द्वैमित्रिः	६०
द्विपुंस्कः	४५	द्विचूर्पम्	६१	द्वैयह्निकः	६५
द्विपुमान्	४५	द्विशौषिकम्	६१	द्वैरात्रिकः	६५
द्विपुरुषी	१६	द्विषतीतापः	१६६	द्वैवषिकः	६५
द्विभूमा	५०	द्विषन्	१११	द्विशाणम्	६२,६५
द्विमन्यः	२२५	द्विषन्तपः	१६६	द्वैसमिषः	६५
द्विमयम्—	१०१	द्विषाधिकः	६५	द्वैहायनम्	६७
द्विमास्यः	६५	द्विष्	१२८	द्वौ	६,१०१,११३
द्विमुनि	३१	द्विष्करोति	५६	द्वपच्च	२२
द्विमुसलि	४४	द्विष्ठः	१६७	द्वपञ्जलम्	३५
द्विमूर्धः	४३,२३०	द्विसंवत्सरीयः	६५	द्वपङ्गुलवृक्षः	२२५
द्विमूर्धा	२३०	द्विसमीनः	६५	द्वपञ्जुला—	४३
द्विमीदिकिकाम्	१११	द्विसहस्रम्	३६,६२	द्वपञ्जुलेन	१६२
द्वियमुनम्	३१	द्विसांवत्सरिकः	६५	द्वपञ्जुलोत्कर्षम्	१६२
द्विरहनि—	२०	द्विसाहस्रम्	६२	द्वपञ्जलम्	३६
द्विरहः—	२८	द्विसुवर्णघनम्	२२२	द्वपञ्जलिः	३६
द्विरात्रम्	३८,३६	द्विसौवर्णिकम्	६५	द्वपः	४६
द्विरात्रीणः	६५	द्विस्तना	२८	द्वपशीतिः	३६
द्विभुङ्क्ते	११२	द्विस्तावती	५१	द्वपहः	३८
द्विवर्षः	६५	द्विस्तावा	५१	द्वपहजातः	१६२
द्विवर्षीणः	६५	द्विहायना, नी	२०	द्वपहतर्षम्	१६२
द्विवाषिकः	६५	द्वीपम्	४६	द्वपहमत्यासम्	१६२
द्विविंशतिकीनम्	६२	द्वे	१०	द्वपहीनः	३८,६५
द्विविस्तम्	६२	द्वेषा	१०७	द्वपह्नः	८
द्विविस्ता	१६	द्वेषी	१७८	द्वपह्नजातः	३४
द्विवैस्तिकम्	६२	द्वे	१७	द्वपह्नप्रियः	३८
द्विषाः	११३	द्वैकुलिजिकः	६५	द्वपह्ना	३८
द्विषातम्	३६	द्वैकुलिजिकी	६३	द्वपचिता	१६,६३
द्विषातकम्	६०	द्वैतीयीकः	१०७	द्वपचितिकी	६३
द्विषातिकम्	६२	द्वेषम्	१०७	द्वपचितिनी	६३
द्विषातिकाम्	१११	द्वैपा	६७	द्वपाढकिकी	६३
द्विषामम्	१००	द्वैपारायणिकः	६१	द्वपाढकी	१६

द्वयाढकीना	६३	धातु	११	धीतम्	१७४
द्वयायुषम्	५०	धातुणाम्	२०३	धीती	२०४
द्वयूष्नी	१६	धात्रंशः	१	धीमान्	१३
धकित्	१०६	धात्री	१८०	धीयते	१५७
धक्क्	१३७	धानः	१६१	धुक्	११
धण्	१२१	धानापेयणम्	२८	धुब्	१२३
धनकः	१०१	धानाशङ्कुलि	४७	धुन्	१३१
धनक्रीती	२१	धानुष्कः	८५, ८७	धुरि	१६७
धनदायाद्यः	२१६	धानुष्क—	११५	धुर्यः	८८
धनपोषम्	१६२	धान्यगवः	२२२	धुर्वी	१२२
धनमदः	१८४	धान्यमायः	१६७	धुवित्रम्	१८१
धनम्	११	धान्यार्थः	३२, २२८	धूः	१३३, १७१, १८०
धनुः	१५	धान्यार्थी	१०५	धून्	१३५, १३६
धनुष्कपालम्	५	धापयेते	१५६	धूत्वा	१८६
धनुष्करः	१६८	धायः	१६७	धूनिः	१८५
धनेन—	२७	धाय्या	१६५	धूप	१३१, १३६
धन्	१२६	धारयः	१६६	धूमात्—	२७
धन्यः	८८, ६२	धारयति	१७७	धूम्या	७०
धमः	१६६	धारयन्	१७७	धूम्रजानुः	२१६
धमनिः	२१६	धारा	१८६	धूरी	१३०
धयः	१६६	धारुः	१७६	धूर्ति	१६४
धया	१६६	धार्तराजः	६४	धूर्पतिः	६
धरट धरटा करोति	११४	धार्मविद्यः	७०	धूष्पतिः	६
धरण	६१	धार्मिकः	८७	धूस्	१३७
धर्ता—	२२७	धावतः—	२६	धृ	१६, २६, ३५, १३७
धर्मम्—	१५४	धावु	१२३	धृङ्	१२७, १३४
धर्मसभा	४०	धि	१३३	धृजि	११६
धर्मात्—	२६	धिक्—	१६, २४, २५, १२७	धृज्	११६
धर्मार्थी	४६	धिक्	१२३	धृज्	१२६
धर्म्यम्	८८	धित्सति	१४४	धृतिः	१८६
धर्षितः	१७४	धिप्सति	१४३	धृषु	१२४
धर्षितम्	१७४	धिवि	१२२	धृष्	१३६
धवखदिरो	४६	धिष्	१२६	धृष्टः	१७४
धवि	१२२	धिज्—	२०७	धृष्टम्	१७४
धातः	६	धीः	१८०	धृष्णक्	१८०
धाता—	६, १२	धीङ्	१३०	धृष्णुः	१७७

LIBRARY

Jangamawadi Math, Varanasi

Acc. No. 5145

(५१)

धृष्ण्या	२०४	ध्वन्	१२५, १४०	नगरम्	१०३
धेक्	१४०	ध्वस्तम्	११	नगाः	३७
धेट्	१२६	ध्वाच्चि	१२३	नब्	१५, १६
धेनवः	२०४	ध्वाङ्क्षरावी	१७२, २२३	नटस्य —	२६
धेनुः	१०	ध्वान्तम्	१७४	नट्	१२०, १२४, १३६, १३८
धेनुम्भन्या	५५	ध्व	१२६	नटकीयम्	७३
धेनुष्या	८८	नंष्टा—	१६५	नड्वल	३१
धेन्वनडुहो	५०	नंष्ट्वा	१६०	नड्वलः	७२
धेपु	१२१	नत्वाम्—	२६	नड्वान्	७२
धेनुकम्	६६	नत्वां नावम्—	२६	नदी	१०, १६, १६६
धोऋ	१२२	नत्वांशुनम्	२६	नदीकूलम्	२२६
धोड्या	६६	नकरोमि—	१५८	नदीदोहः	५२
धोमकः	७५	न—	१६०, २०४, २०८	नदीम्—	२४
धोरेयः	८८	न ता	१६४	नदीष्णः	१७६
ध्मा	१२६	न ददर्श—	२१७	नदधो	१८१
ध्यातः	१७३	न यो—	२१७	ननान्दा	१०
ध्यै	१२६	नह—	२३०	ननु—	१५८, २३१
ध्रजि	११६	न—	२३१	नन्दकः	१६७
ध्रज्	११६	नतात्—	२०४	नन्दकपाञ्चजन्यो	४७
ध्रण्	१२१	नत्वावा—	२००	नन्दनः	१६६
ध्राच्चि	१२३	नकिः	१६	नन्दना	१८
ध्राख्	११८	नकिम्	१६	नन्दपुत्रः	२२६
ध्राङ्	१२०	नकुलम्	३६	नन्दोपक्रमम्—	४०, २१६
ध्रु	१२६, १३३	नक्	१३	नपात्	३६
ध्रुक्	११	नक्क्	१३७	नपुंसकम्	३६
ध्रुट्	११	नक्तम्	१५	नभन्ताम् —	२१६
ध्रुवका	१८	नक्तन्दिवम्	५०	नभन्तामन्यके—	२१७
ध्रोकु	११८	नक्रम	३७	नभस्यः	१६६
ध्रै	१२६	नक्षत्रम्	३६	नभस्वत्	१६३
ध्वंसु	१२४	नक्षत्रियेभ्यः—	१६६	नभ्यः	८६
ध्वजः	४०	नखम्	३६, २१४	नभ्यम्	८६
ध्वजम्	४०	नखनिभिल्लः	३३	नभ्राट्	३६
ध्वजि	११६	नखमिन्नः	३३	नभते—	१५८
ध्वज्	११६	नखम्पचा	१६६	नमः करोति	५
ध्वण्	१२१	नगरखेटम्	२२६	नमस्करोति—	२६
ध्वनितम्	१७४	नगरघातः	१७०	नमस्कुर्यः—	२६

नमस्	१६	नाकः	३७	नारो	२३, ८७
नमुचिः	३६	नाकुलः	६२	नार्मदः	६२
नमो—	२०५	नाकुलकः	८२	नालन्दा	४२
नम्	१२५	नागरकः—	७५	नावयज्ञिकः—	६६
नम्रः	१७६	नागराः	७५	नावयाज्ञिकः	८०
नम्लेच्छितवै	१६८	नागरेयकः	७३	नाविकः	८५
नरः—	१६७	नागा	२०	नाव्यम्	१, ८८
नरकस्थ—	२६	नागी	२०	नाशयति—	१५६
नरम्मन्यः	१७२	नाट्यम्	८३	नासत्याः	३६
नराशंसं—	२२७	नाडायनः	६१	नासिकन्धयः	१६६
नर्तकः	१६७	नाडिः	६१	नासिका	१०
नर्तकी	२०, १६७	नाडिन्धमः	१६६	नासिक्य	५१
नर्तयते	१५६	नाडिन्धयः	१६६	नास्ति—	२७
नर्द	११७	नाडीजङ्घः	२२५	नास्तिकः	८७
नर्मदा	१४	नाद्यः	१६६	नाहम् —	१५८
नल्	१३६	नायहरः	१६६	निस्स्व	१३
नव—	२१३	नायहरिः	१६६	निस्से	१३
नवतिः	६४	नादेयम्	७३	निःश्रेयसम्	५०
नव नगरम्	२२३	नायु	११७	निःश्रेयान्	५०
नव पाठका	३५	नायु	११७	निःषमम्	२२५
नवानां—	२१३	नानदतः	१६६	निःस्वका	१६
नवार्मम्	२२३	नाना	१६, ६६	निःस्विके	१६
नवीनम्	११२	नाना—	१६३	निकषः	१८८
नवेदाः	३६	नान्दीपुरकः	७५	निकषा	१५
नव्यम्	६०	नान्दीपुरम्	२२४	निकषा—	२४
नशित्वा	१६०	नापित्यः	६५	निकाय्यः	१६५
नखरः	१७६	नापित्वायनिः	६५	निकारः	१८३
नखट्ट—	१६०	नामा—	२०४	निक्वणः	१८४
नष्ट्वा	१६०	नाम्यम्	६०	निक्वाणः	१८४
नसः	१०	नामग्राहम्—	१६३	निगदः	१८४
नसत्तम्—	२०८	नामधेयम्	११२	निगमः	१८८
नस्यम्	६०	नामादेशम्—	१६३	निगादः	१८४
नह	१६	नायः	१८२	निगारः	१८२
नह्यस्ति	१	नायकः	१	निगारयति	१५६
नहोतव्यम्—	२०७	नाययति—	२४	निगृहीतिः	१८६
ना	६	नारिका	१८	निग्रह—	१८३

निष्ठा -	१८३	निर्जरः	८	निष्पानम्	१८६
निघसः	१८४	निर्वाणः	१७३	निष्पावः	६१, १८२
निघाः	१८५	निर्मच्चिकम्	३१	निष्प्रवाणिः	४५
निचायः	१८२	निर्मस्त्रिका	१६	निष्प्रत्यूहम्	५
नित्यः	७४	निर्णयः	१८६	निस्तपति	२१०
नित्यः—	२०८	निर्वातः	१७३	निस्तोकः	५१
नित्यप्रहसितः	२२२	निर्विणः	१६२	निस्त्रिंशः	४३
निदण्डः	२३०	निलिम्पा	१६६	निस्त्रिंशानि	४३
निदर्शनम्	६२७	निवचने कृत्य	३७	निस्वनः	१८४
निद्रालुः	१७६	निवचने कृत्वा	३७	निस्वानः	१८४
निनदः	१८४	निवरा—	१८३	निहवः	१८५
निनतिषति—	१४४	निवास	१४०	निहितम्	१७५
निनादः	१८४	निवित्	१७१	नीः	६
निन्दकः	१७८	निविरीसम्	१००	नीकाशः	५७, १८२
निपठः	१८४	निविविद्धते	१५४	नीचकैः	१०८
निपठितिः	१८३	निवृत्तिधर्मा	४४	नीचैस्	१५
निपत्या	१८६	निशा	१०	नीचैः	२३, १६३
निपाठः	१८४	निशाकरः	१६८	नीतिः	१८६
निपुणः—	३०	निश्चयः	१८४	नीतम्	१७५
निविडम्	१००	निश्चितप्रचितम्	१३६	नीपम्	२१६
निमयः	१८८	निषत्तम्	२०८	नीरक्	५७
निमाय	१६०	निषद्या	१८६	नीलम्	६७
निमित्तम्	१८५	निषादः	५७	नीला	२१
निमील्य—	१६१	निषादकर्षुकः	७५	नीली	२१
निमूलम्	२२६	निषेदुषीम्	१७६	नीलोत्पलम्	३५
निमूलकायम्—	१६१	निष्क	६१	नील्	१२२
नियमः	१८४	निष्कमाला	२२३	नीबाराः	१८३
नियामः	१८४	निष्कुषितः	१७४	नीष्टत्	५७
नियामकः	१६५	निष्कुलाकरोति	११४	नीशारः	१८२
नियुङ्क्ते	१५४	निष्कौशाम्बिः	१०, ३८	नुतः	१७३
नियेन—	२३०	निष्क्	१३८	नुनावयिषति	११४
नियोज्यः	१६४	निष्टप्तम्—	२१०	नुन्नः	१७३
निरंगुलम्	३८	निष्टक्यम्—	१६५	नू	२०३
निराकरिष्णुः	१७७	निष्ठयः	७४	नूतनम्	११२
निरुदकम्	२२६	निष्णातः	१७६	नूतम्	११२
निरुपलम्	२२६	निष्पत्राकरोति	११४	नूनम्	१६, २१६

नृ	१२५, १३५	नैष्कसहस्रिकाः	१०५	पचतभृजता	३६
नृणाम्—	३०, ३३	नैष्किकः	८४	पचतिः	१८७
नृती	१२६	नैष्किकम्	८४, ६१, ६२	पचति—	११५, २३०, २३२
नृभिः—	२१०, २१८	नोत—	२००	पचतिकल्पम्	१०८
नृमणाः—	२१०	नौः	१०	पचतितमाम्	१०८
नृसोमः	३५	नौका	१८	पचतिपूति	२३२
नृनृपाहि	५	न्यक्षम्	२३०	पचतिरूपम्	१०८
नेज्जिह्मायन्तः	१६७	न्यङ्कुः	१६३	पचन्तम्—	१७७
नेतव्याः—	२६	न्यङ्—	२१६, २२१	पचन्तिपूति	२३२
नेता—	२८	न्यन्तः	२२६	पचन्ती	१८
नेत्	१६	न्यन्यम्—	२०१	पचमानम्	१७७
नेमधिता	२०७	न्ययः	१८३	पचात्	१६६
नेयम्	१८१	न्यर्णः	१७५	पचिः	१८७
नेदिष्ठः	१०८	न्यषीदत्	२१०	पचि	११८, १३७
नेदीयान्	१०८	न्यसीषहत्	१४१	पचेते	३
नेन्यः	१६६	न्यादः	१८४	पचेलिमा	१६१
नेपाल	४०	न्यायः	१८८	पच्छब्दः	५४
नेपालहिमालय	४	न्यायम्	१५५	पच्यते—	१५७
नेमः	८	न्याय्यम्	८८	पञ्च	१२, १८, २१५
नेमाः	८	न्युञ्जः	१६४	पञ्चकः	६०, ६३, ६४, १०२
नेभिः	१८०	न्वै	१७	पञ्चकपालः	३६, ६०, २२०
नेमे	८	पंक्तिः	६४	पञ्चकम्	६२, ६३
नैकटिकः	८८	पंक्तिः	१८६	पञ्चकर्णः	५७
नैकधा	३६	पक्विमम्	८६, १८५	पञ्चकाः	६३
नैवेयः	६३	पक्वः	१७३	पञ्चकृत्वः	२८, ११२
नैनम्—	१६३	पक्वेष्टकचितम्	५४	पञ्चखट्व	४०
नैमिषारण्य	३६	पक्षतिः	६६	पञ्चखट्वी	४०
नैयप्रोघम्	८४	पक्ष्	१२३, १३६	पञ्चगर्गण्यम्	६०
नैयायिकः	७०	पक्ष्यः	१६४	पञ्चगावघनः	३५
नैलीनकः	७४	पक्षि	११८	पञ्चगावम्	३४, ४०
नैशः	७६	पक्ष्	११८	पञ्चगोणिः	६०
नैशम्	७७	पञ्जः	२२	पञ्चतक्षम्	४०
नैशिकः	७६	पचः	१६६	पञ्चतक्षी	४०
नैशिकम्	७७	पच—	२३१	पञ्चतयम्	१००
नैषध्यः	६५	पचत्	१५	पञ्चतयी	१६
नैषादकर्षुकः	७५	पचतकि	१०६	पञ्चषम्	२००

पञ्चदशः	६३	पटस्पटदिति	२	पताति—	१६६
पञ्चदशिनः	२००	पटस्पटेति	२	पतापतः	१६६
पञ्चदिष्टिः	२२०	पटपटाकरोति	११४	पतिवरा	१७०
पञ्चद्वर्गः	६४	पटयति	१४०	पतिः	६
पञ्चधा	१०७	पटा—	२०६	पतिष्णी	१७०
पञ्चनदम्	५०	पटिति—	२,११४	पतितः	१७४
पञ्चनावप्रियः	३६	पटीयांसः	१०८	पतितजम्भः	४४
पञ्चपात्रम्	४०	पटुकल्पः	१०८	पतिमती	२०
पञ्चप्रयाजाः	१६४	पटुचरी	४१	पतिवत्नी	२०
पञ्चभगालः	२२०	पटुजातीयः	१०८	पत्	१४०
पञ्चभिः	२१३	पटुजातीया	४१	पत्नू	१३५
पञ्चमः	१०७	पटुजातीयाय	८	पत्काषी	५३
पञ्चमभार्या	३५	पटुतराः	१०८	पत्थेघोत्रे	२४
पञ्चमवान्	१०५	पटुपटुः	११५, २१७	पत्त्रम्	८२
पञ्चमात्रम्	१००	पटुपट्वी	११५	पत्रम्	१८१
पञ्चमास्यः	२२०	पटुभार्यः	४२	पथकः	१०७
पञ्चमी	१०५	पटुर्क्	५७	पथि	१३६
पञ्चमीपाषा	४२	पटुरूपः	१०८	पथिकः	६४
पञ्चमीभार्यः	४२	पटुस्थात्	११४	पथिकी	६४
पञ्चमूलो	४०	पट	१२०, १३६	पथिद्वैधानि	१०७
पञ्चराजम्	३२	पट्	१३०	पथिप्रज्ञः	१६८
पञ्चवितस्तिः	२५०	पट्वितभा	४१	पथे	१२३
पञ्चशरावः	२२०	पट्वितरा	४१	पथ्यम्	८८
पञ्चांगुलम्—	४२	पट्वी	६	पदकः	७१
पञ्चांगुलिः—	४३	पठिता	१७८	पदकक्रमकम्	४७
पञ्चाजिः	१७	पट्	१२०	पदशः	५३
पञ्चारत्तिः	२२०	पठि	१२०, १३७	पदम्—	१५५
पञ्चारमणीयाः	७२	पण्	१२१	पदसङ्घाटः	५३
पञ्चालाः—	६६, ७२	पण्डितम्भन्यः	१७२	पदसङ्घातः	५३
पञ्चाशत्	६४	पण्यकम्बलः	२२१	पदाजिः	५३
पञ्चाश्वः	२२०	पण्या—	१६२	पदातिः	५३
पञ्चाश्वा	१६	पतञ्जलिः	२	पदिकः	५३
पञ्चाबहिमालय	४	पतनान्ताः	१८३	पदेकृत्य	३७
पटउ	२०८	पतयन्—	२१६	पदेकृत्वा	३७
पटञ्चर	३६	पतयालुः	१७६	पदोपहतः	५३
		पतयालुः	१६०	पद्वि	११७, १३०, १४०

पद्घोषः	५४	परमकृत्वा	१६०	परमस्यः	१२
पद्धतिः	२१, ५३	परमकृष्णः	२१६	परमस्वधर्मा	४४
पद्धती	२१	परमगाधम्	२१६	परमस्वामी	२२०
पद्धिमम्	५३	परमगिरिः	२२४	परमस्विका	१६
पद्म्याम्—	२१७	परमचत्वारः	११	परमाः—	३४
पद्मगन्धि	४४	परमचीरम्	२२६	परमाध्वर्युः	२१६
पधनामः	५०	परमचेतम्	२२६	परमारलिः	२२०
पधावत	५१	परमत्वम्	१२	परमाहम्	१२
पद्यः	८८	परमदायादः	२१६	परमे—	१२, २०४
पद्याः	५३, ८८	परमद्वके	१६	परमैषका	१६
पन्यकः	७८	परमधीः	६	परम्परीणः	६६
पन्याः	१२	परमनापितः	२२२	परशव्यम्	८५
पन्यानम्—	२६	परमनेदीयः	२०६	परस्तात्	१०७
पन्नागः	१७०	परमनैष्किकः	६१	परस्परम्	११५, ११६
पन्नागार	५६	परमपल्लम्	२२६	परस्पराम्	११६
पन्नागाराः	६३	परमपूर्वः	२२०	परस्मैपदम्	५१
पन्निष्कः	५४	परमब्राह्मणः	२२२	परस्मैभाषा	५१
पन्	१२१	परममैरेयः	२२२	पराकरोति	१५६
पन्मिश्रः	५४	परमयशःकारः	६	पराक्रमते	१५३
पपिः—	१८०, १६७	परमराजः	३८, ५१	परापम्	४६
पपीः	६	परमराज्यम्	२२६	परारि	१०६
पयः	१८७, २२७	परमर्तः	२	परारित्तिम्	७७
पयसा—	८३	परमलक्षणम्	२२०	पराध्वम्	७७
पयस्याशम्	५	परमलूः	६	परावर्ग	१६४
पयस्यम्	८४	परमवाचा	२१७	पराहूणः	३८
पयोमुक्	१३	परमवाणिजः	२१६	परिकूलम्	२२६
परः क्षतानि	५६	परमशिरःपदम्	६	परिक्षेपकः	१७८
परकीयम्	७६	परमश्वेतः	२२३	परिक्षेपी	१७८
परतः	१०७	परशुना—	२११	परिक्षा	१७३
परवारान्—	१५३	परमषट्	१३	परिचः	१८५
परन्तपः	१६६	परमसर्पिःकुण्डिका	६	परिचर्या	१८६
पर ब्राह्मणः	२२२	परमसखा	६	परिचाय्य	१६५
परमकंसः	२२५	परमसदृशः	२१६	परिचैयम्	१६५
परमकारीषगन्धीपुत्रः	५४	परमसिंहः	२२२	परिजम्बः	२२७
परमकुमारी	२२४	परमसुखम्	२२०	परिणयः	१८३
परमकूलम्	२२५, २२६	परमसेना	४०	परिणयेन—	१८३

परितः—	२४, १०६	परिषिञ्चति—	२४	पशुं	१६
परिनिर्गतम्—	२२०	परिषिष्यति	१४४	पर्यद्वलम्	१०४
परिदाही	१७८	परिष्ठलम्	१७६	पल	६१
परिदेवी	१७८	परिसर्पा	१८६	पललम्	२१६
परिनहनम्	५७	परिस्परी	१७८	पलिकनी	२०
परिपक्वानि	५८	परिस्कन्दः	१७३	पलिघः	१८५
परिपन्थी	१०२	परीत्	३३	पलिता	२०
परिपरि	११५	परीतत्	५७, १७१	पल्	१२५
परिपरो	१०२	परोपाकः	५७	पल्यङ्कः	१८२
परिपाकः	५७	परोष्टिः	१८७	पल्यवर्चसम्	५०
परिवृंहितः	१७५	परोहारः	१८२	पल्यूल	१४०
परिभवः	१८४	पस्त	१०६	पवः	१८२, १८४
परिभवो	१७६	पस्तम्	७७	पवमानः	१७७
परिभावी	१६६	परेद्यवि	१०६	पवितः	१७४
परिमण्डलम्	२२६	परेपम्	४६	पवित्रम्	१८१
परिमुख्यम्	७६	परोक्षम्	३२	पवित्वा	१६०
परिमृद्	१२	परोवरीणः	६६	पशु	१७
परिमृष्यति	१५५	पर्जन्यः	२४	पशुना—	२५
परिमोही	१७८	पर्णध्वत्	१८, १७१	पशून्—	२०६
परिमोहयते	१५६	पर्णीयम्	७६	पशूनाम्—	१६६
परिरमति	१५५	पर्ण	१४१	पशू	१३८, १३६
परिराटकः	१७८	पर्द्	११७	पश्च—	२००
परिराटी	१७८	पर्प्	१२१	पश्चार्धः	३५
परिवृज्जेभ्यः	११५	पर्ब	१२१	पश्चिमम्	७७
परिवत्सरः	२१४	पर्यङ्कः	१८५	पश्यः	१६६
परिवत्सरीणः	२००	पर्यध्ययनः	३७	पश्यतोहरः	५२
परिवादकः	१७८	पर्यन्तः	२२६	पश्यन्ति—	१५४
परिवादी	१७८	पर्यमूषत्	३१, ४६	पश्वे—	२०६
परिविष्णु	३१	पर्यसीषिवत्	१४१	पप्	१४०
परिवीत —	२१०	पर्याप्तम्—	१८१	पहूलव	२६
परिवीय	१६१	पर्येषणा	१८७	पांसुरः	१०४
परिवृढः	१७५	पर्वतः	१०४	पा	१२६, १२८
परिव्याय	१६१	पर्वतात्—	११३	पाकः	१८२, २१२
परिग्राट्	१२	पर्वतीयः	७६	पाकला	२१४
परिग्राजः	१९४	पर्वतोपघ्नः	१८५	पाकभार्यः	४२
परिषद्वलः	१०४	पर्व	१२२	पाकयज्ञिकः	६६, ८०

पाकिमम्	८६	पाणिनीयरोढीयाः	२२७	पादशतमान	६१
पाक्यम्	१६६	पाणिनीया	७१	पादशब्दः	५४
पाक्षायणः	७२	पाणिन्धमः	१६६	पादस्य—	१८५
पाक्षिणः	८६	पाणिन्युपज्ञम्	४०, २१६	पादहारकः	१६५
पाङ्क्तः	७०	पाणिपादम्	४६	पाद्यम्	५३, ११२
पाचकजातीया	३५	पाणिपादवती	१०५	पान्थः	६४
पाचकतमः	१०८	पाणिसर्ग्या	१६४	पान्था	६४
पाचकतरः	१०८	पाणौ—	१६२	पान्थायनः	७२
पाचकदेशीया	३५	पाणौकृत्य	३७	पान्नागारिः	६१
पाचकस्त्री	१५	पाण्डारः	६३	पापकृत्	१७२
पाचयति	२४	पाण्डुकम्बली	६७	पापचकः—	१६६
पाचि—	१८७	पाण्डुरः	१०४	पापनापितः	३५, २३२
पाचिकाभार्यः	४२	पाण्ड्यः	६५	पापात्—	२६
पाञ्चकपालम्	६०	पाण्ड्य	४६	पापी	२०
पाञ्चकपालिकम्	६१, ६५	पाण्युपघातम्—	१६२	पापे—	२४
पाञ्चजन्यम्	७६	पातुकः	१७६	पामनः	१०३
पाञ्चालः	६५	पात्र—	६१, १८३	पामानः	१२
पाञ्चाल	३४	पात्रम्	१	पायम्—	१६१
पाञ्चालाः	६६	पात्राणि	१५४	पाययते	१५६
पाटला	२१४	पात्रिकम्	६३	पायसिकः	८१
पाटलानि	८४	पात्रिकी	६३	पाय्य	६१
पाटलिपुत्रकः	७५	पात्रीणा	६३	पाय्यम्	१६५
पाटूपटः	१६६	पात्रेसंमिताः	३४	पारदारिकः	८५
पाट्	१७	पाथेयम्	८६	पारदुश्वा	१७२
पाणः	१८४	पाथ्यः	१६६	पारम्पर्यम्	६६
पाणिगृहीता	२१	पादः	८, १८१	पारयः	१६६
पाणिगृहीती	२१	पादकार्षापण	६१	पारलौकिकम्	७६
पाणिग्राहम्	१६२	पादघातम्—	१६१	पारशवः	८५
पाणिघः	१७०	पादघोषः	५४	पारस्वधिकः	८७
पाणिघातः	१७०	पादनिष्कः	५४	पारस्करः	५६
पाणिनः	७१	पादपः	२१६	पारस्कर	१६
पाणिनिः	७१	पादपम्	८२	पारायणिकः	६१, ६४
पाणिनिकृतिः	२२७	पादमिश्रः	५४	पारावतः	२१६
पाणिनिदेवदत्ती	२२१	पादयते	१४१	पारावारीणः	६६
पाणिनीयः	७१, ८२	पादविकः	८७	पाराशरकल्पिकः	७०
पाणिनीयम्	७१, ७४, ८२	पादशः	५३	पाराशरिणः	८२

पारिखेयी	६०	पाल्वलतीरम्	७१	पितृव्यघाती	१७२
पारिग्रामिकः	८०	पावकः	१	पितृष्वसा	२३
पारिपन्थिकः	८६	पावयांक्रियात्	१६४	पितृसदृशः	२१६
पारिपार्श्विकः	८६	पाव्यम्	१६४	पितृसमः	३२
पारिमुखिकः	८६	पाशुकः	८०	पितृस्थानः	११२
पारियात्र	१४	पाशुपतम्	६८	पितृस्थानीयः	११२
पारिषदः	८६	पाश्चात्यः	७३	पितृहा	१७२
पारिषदम्	८२	पाश्या	६६	पितृघ्नः	१७०
पारिषद्यः	८७, ८६	पि	१३३	पित्रा—	२५
पारीणः	७३, ६६	पिच्छवान्	१०३	पित्र्यम्	६८, ८१
पारेणङ्गात्	३१	पिच्छलः	१०३	पित्सति	१४३, १४४
पारेषडवा	२२१	पिच्छ्	१३६	पिधानम्	१७
पार्	१४०	पिजि	१२८, १३६, १३६	पिपक्	१३
पार्णम्	७६	पिट्	१३०	पिपठिषति	१४३
पार्थः	६३	पिट्	१२०	पिपठीः	१३, १५
पार्थवम्	६७	पिडि	११६, १३८	पिपतिषति	१४३
पार्थिवः	६०, ६३	पिण्डग्रः	१४	पिपविषते	१४४
पार्थिवा	६१	पिण्डग्लः	१४	पिपावयिषति	१४४
पार्थिवी	६०	पिण्डवहम्	५७	पिपृच्छिषति	१४३
पार्याप्तिकः	८५	पिण्डाश्मः	३८	पिवः	१६६
पार्वताग्नि	७६	पितरम्—	१६७	पिवत—	१६१
पार्वतायनः	६२	पितरौ	४८	पिल्	१३३
पार्वतिः	६३	पिता	६	पिल्लः	१००
पार्वतीयानि	७६	पितापुत्रौ	४७	पिवतखादता	४६
पार्श्वः	१११	पितामहः	६६	पिवत्वमुदकम्	६
पार्श्वकः	१०२	पितामही	६६	पिवव्यै	१७
पार्श्वतः	११३	पितुःपुत्रः	५३	पित्रि	१२२
पार्श्वतीयम्	७६	पितुरन्तेवासी	५३	पिशङ्गा	२७
पार्श्वम्	३, ६६	पितुःष्वसा	५३	पिशङ्गी	२०
पार्श्वशयः	१६८	पितुःस्वसा	५३	पिशाचकी	१०५
पार्श्वोपपीडम्	१६२	पितुकः	१०६	पिशाचसमम्	४०
पार्ष्णित्रम्	१६७	पितृदेवत्यम्	११२	पिष्	१३४
पालदः	७४	पितृभोगीणः	६०	पिष्टकः	८४
पालयति	१४२	पितृम्यःस्वधा	२६	पिष्टमयम्	८४
पालाशम्	८३	पितृयाणम्	२१०	पिष्णु	१३४
पाल्	१३७	पितृव्यः	६६	पिसि	१३६

पिसु	१२४	पुद्	१३६	पुमान्	१४
पिस्	१३६	पुडि	१२०	पुरः—	५, २७, १०७
पी	१२८	पुड्	१२०, १३३	पुरगावणम्	४२, ५७
पीड्	१३०	पुण्	१३३, १३७	पुरन्दरः	१६६
पीड्	१३६	पुण्ड्र	४५	पुरस्करोति	४
पीतकम्	६७	पुण्यकृत्	१७२	पुरस्कृत्य	३७
पीतद्रुः	२१५	पुण्यरात्रः	३८	पुरस्तात्	१०७
पीतम्	१७५	पुण्याहम्	३८, ४०	पुरस्सरः	१६८
पीताम्बरः	४१	पुण्येन—	२५	पुरा—	१६, १५६, १६८
पीतोदकः	४६	पुत्रईधे	१६२	पुराणमीमांसकाः	३५
पीत्वा—	१८६	पुत्रकः	१०६	पुराभुङ्क्ते	१५८
पीत्वी	२०५	पुत्रकाम्या	१८६	पुरि	११
पीनः	१७५	पुत्रचेलम्	२२६	पुरी	१३६
पीनम्	१७५	पुत्रजग्धी	१	पुरोम्—	१६१
पीलु	११	पुत्रजातः	२२६	पुरीषवाहनः	१६५
पीलुकुणः	६६	पुत्रपुत्रादिनी	१६	पुरुमुजा—	२१८
पीलुमूलतः	८२	पुत्रम्—	१५३, १५४	पुरुषः	६२, २०६
पीलुवहम्	५७	पुत्रवलः	१०४	पुरुषद्वयसम्	१००
पील्	१२२	पुत्रहती	१	पुरुषमृगः	१६४
पीषानम्	२१५	पुत्रान्	२०६	पुरुषवाहम्	१६२
पीष्	१२२	पुत्रादिनी —	१	पुरुषव्याघ्रः	३५
पुंक्षीरम्	४	पुत्रासो—	२३०	पुरुषायुधम्	५०
पुंख्यानम्	५	पुत्रिका	१८	पुरोडाः	१६५
पुंभवः	५	पुत्रीयः	६२	पुरोडास्याः	८६
पुंवत्	६०	पुत्रीयन्तः—	२०६	पुरोहितम्	२२१
पुंदासः	५	पुत्रेण—	२५, ६६	पुर्	१३३
पुंक्ष्वली	५	पुत्री	४८	पुर्व	१२२, १३८
पुंस्कामा	५	पुत्र्यः	६२	पुलिन्द	३८
पुंस्कोकिलः	४	पुथि	११७	पुल्	१२५, १३७
पुंस्ता	६६	पुथ्	१३०	पुष्	१२४, १३०, १३१,
पुंस्त्वम्	६६	पुनःपुनर्जागति	१६५		१३६
पुंस्पुत्रः	४	पुनर्भुः	६, १०	पुष्कर	५६
पुंसानुजः	५१	पुनर्बसुः—	१६३	पुष्करवान्	१०५
पुंस्	१३७	पुनर्	१५	पुष्करिणी	१०५
पुटि	१३६	पुनारमते	६	पुष्कल	२२
पुट्	१३३, १३६, १४०	पुमनुजा	१७२	पुष्णाति	१८६

पुष्पनिकरः	१८३	पूर्णम् —	१६४	पूर्वाह्णेतमे	५२
पुष्पप्रचयः	१८३	पूर्ण	१३७	पूर्वाह्णेतरे	५२
पुष्पप्रचायः	१८३	पूर्तः	१७३	पूर्वाह्णे —	३४
पुष्पफलवान्	१०५	पूर्वकायः	३४	पूर्वाह्णेकाले	५२
पुष्पहारी	२२३	पूर्वचानराटम्	२३४	पूर्वाह्णेतने	५२
पुष्पाणि	२६	पूर्वनाभेः —	३४	पूर्वाह्णेतनम्	७७
पुष्पासवः	२२२	पूर्वपदिकः	७१	पूर्वी	१०२
पुष्पाहरः	१३८	पूर्वपाञ्चालकः	७८	पूर्वेण —	१०७
पुष्पेभ्यः —	२१, ४६	पूर्वपाटलिपुत्रकः	७८	पूर्वेद्युः	१०६
पुष्ण्	१३०	पूर्वपाणिनीयम्	२२४	पूर्वप्रोष्ठपदे	४०
पुष्यः	१६३	पूर्वपाणिनीयाः	२२४	पूर्वफल्गुन्यौ	४०
पुष्यनेत्राः	४३	पूर्वम् —	२७, १०७, १६१	पूर्वपुकामशमी	३५, २२४
पुष्ये —	३०	पूर्वयायातम्	२२४	पूर्वपुकामशमः	७४, ७८
पुस्	१३७	पूर्वरात्रः	३२, ३६	पूर्वाग्रामात्	२७
पुस्कारयिषति	१४४	पूर्ववार्षिकः	७८	पूर्व	१३८
पुस्त	१३७	पूर्ववैयाकरणः	१६	पूषा	१२, २०२
पुः	१४, १७१, १८०	पूर्वशालाग्रियः	३५	पूष्	१२३
पूगकृताः	२२१	पूर्वश्छात्राणाम्	३४	पृ	१३२, १३६
पूङ्	१२७	पूर्वसक्यम्	३८	पृङ्	१३३
पूजा	१८६	पूर्वसरः	१६८	पृची	१२८, १३४
पूजार्हा	१६८	पूर्वसारः	१६८	पृच्	१३६
पूज्	१३५, १३७	पूर्वस्मिन् —	१०७	पृङ्	१३२
पूतम्	१७३	पूर्वाः फाल्गुन्यः	४०	पृण्	१३३
पूतक्रतायी	२०	पूर्वान्तेवासी	२२४	पृतना	१०
पूतिगन्धिः	४४	पूर्वापरम्	४७	पृतनाषाट्	१६५
पूत्वा	१६०	पूर्वापरे	४७	पृतनाषाहम्	२१०
पूनः	१७३	पूर्वाप्रोष्ठपदा	४०	पृथक् —	१५, २७, १६३
पूनिः	१८५	पूर्वाभ्यम्	४८	पृथिवी	१५४
पूयी	१२१	पूर्वाह्णः	३८, ३६	पृथुमुख	२२६
पूरिका	१८७	पूर्वाह्णकः	७८	पृथुसेनः	५६
पूरितः	१७५	पूर्वाह्णकाले	५२	पृथुदक	३२
पूरी	१३०	पूर्वाह्णकृतम्	३४	पृथ्	१३६
पूर्यः	८, १७५	पूर्वाह्णेतनम्	७७	पृदिन	२१५
पूर्यककृत्	४५	पूर्वाह्णेतने	५२	पृषु	१२४
पूर्यकाकृत्	४५	पूर्वाह्णेतने	५२	पृषोदरम्	१५६
पूर्यकाकृदः	४५	पूर्वाह्णेतने	३२०	पृष्ठतः	११३

पृष्ठम्	२१५	पौर	२३	प्रक्रन्ता	१६५
पृष्ठशायः	१६८	पौरवः	६५	प्रक्रमते	१५३
पृष्ठधम्	६६	पौरवीयः	८२	प्रक्रमितव्यम्	१६५
पृ	१२६, १३५	पौरस्त्यः	७३	प्रक्रम्य	१६०
पेलु	१२२	पौराणिकः	७१	प्रक्रामति	१५३
पेशु	१२४	पौरुषम्	१००	प्रक्वणः	१८४
पेषु	१२३	पौरुषेयः	६०	प्रक्वाणः	१८४
पेष्टा	४	पौरोडाशिकः	८०	प्रक्षयः	२२७
पेसु	१२४	पौरोहित्यम्	६७	प्रक्षालितमुखः	२२६
पेस्वरः	१८०	पौर्णमासी	६६	प्रक्षीणः	१७५
पै	१२६	पौर्वनागरः	७६	प्रक्षीय	१६१
पैङ्गाक्षिपुत्रीयम्	६८	पौर्वपदिकः	८६	प्रक्षीवितः	१७३
पैङ्गी	८२	पौर्वपाञ्चालः	७८	प्रक्ष्वेदितः	१७४
पैणु	१२१	पौर्वभद्रः	७४, ७८	प्रक्षन्य	१६०
पैतामहकः	८०	पौर्ववार्षिकः	७८	प्रस्थानीयम्	१६२
पैतुकम्	८१	पौर्वशालः	३५, ७४	प्रगाय	१६०
पैतृष्वसेयः	६३	पौर्वर्धाः	७७	प्रगृहम्	२२६
पैतृष्वस्त्रीयः	६३	पौर्वर्धिकम्	७७	प्रगृह्यम्	१६४
पैत्तिकम्	६२	पौर्वर्धिका	७७	प्रगेतनम्	७७
पैप्पलम्	८३	पौर्वर्हणिकम्	७७	प्रग्रहः	१८४
पैलः	६१, ६३	पौषम्	६७	प्रग्राहः	१८४
पैलुपुरकः	७५	पौषः	६८	प्रघणः	१८५
पैलुवहकः	७५	पौषी	६७	प्रघसः	१८४
पैलेयः	६३	पौष्कलम्	७२	प्रघाणः	१८५
पैष्टी	८४	प्याद्	१७	प्रचयः	१८३
पोत्रम्	१८१	प्येङ्	१२७	प्रचरितोः	१६८
पोदन्य	३६	प्रकटम्	६६	प्रच्छदः	१८८
पोपुवः	१६६	प्रकण्वः	५८	प्रच्छ्	१३४
पोस्तः	६१	प्रकण्व	३६	प्रच्छदिका	१८४
पोस्तम्	६६	प्रकर्ता	२२१	प्रजनयामकः	१६४
पोस्ती	१६	प्रकारकः	२२६	प्रजनिष्ठाः	१७७
पोणिक्या	६६	प्रकाशः	५७, १८२	प्रजल्पाकः	२२१
पोतिमास्या	२३	प्रकृतः, तम्	१७५	प्रजवी	१७६
पोत्रः	६२	प्रकृत्या—	२५	प्रजा	१७२
पोत्राः	६२	प्रकृषितः	१७३	प्रजाकाण्डम्	२२६
पोनःपुनिकः	७७	प्रकोपणीयम्—	१६२	प्रजाम्—	२३२

प्रज्ञः	१६६	प्रतिष्ठात	३७	प्रदिवो—	२०२
प्रज्ञुः	४४	प्रतिसामम्	५०	प्रदीव्य	१६०
प्रज्ञाय	१६१	प्रतिष्ठातम्	१७६	प्रदोषकः	७८
प्रज्ञः—	१६६	प्रतिस्नातम्	१७६	प्रद्यु	११
प्रणत्य	१६०	प्रतीची	१८	प्रद्युदितः	१७४
प्रणम्य	१६०	प्रतीचीनम्	११२	प्रद्युम्नः—	२७, ११३
प्रणम्	११२	प्रतीचो—	२१७	प्रद्रावः	१८२
प्रणम्य	१६०	प्रतीच्यम्	७४	प्रद्रावी	१७८
प्रणयः	१६७, १८२	प्रतीपम्—	४६, १६७	प्रद्विट्	१७१
प्रणसः	४३	प्रतीषिषति	१४३, १४४	प्रघः	१४७
प्रणाय्यः	१६४	प्रतुर्तम्	२०८	प्रघषितः	१७४
प्रणीयः	१६५	प्रते—	२१७	प्रघाय	१६०
प्रतनम्	११२	प्रतः	१७५	प्रधिः	१८५
प्रतम्	२००	प्रत्यंशुः	२३०	प्रधि	११
प्रतात्	१६, १७१	प्रत्यकूपुष्पा	१७	प्रधीः	६
प्रताम्	१६	प्रत्यचम्	३२	प्रधी	१०
प्रति—	२४, २११	प्रत्यग्नि	३१, २२०	प्रधुक्	१७१
प्रतिकः	६१	प्रत्यङ्—	४, १३, २१४	प्रधृष्टः	१७५
प्रतिकशः	५८	प्रत्यञ्चः	२२१	प्रधीतपादः	२२४
प्रतिकी	६१	प्रत्यपररात्रम्	२२०	प्रधुक्	१७१
प्रतिक्षिपति	१५५	प्रत्यर्थम्	३१	प्रपचति—	२३२
प्रतिगृह्यम्	१६३	प्रत्यष्ठात्—	४६	प्रपदम्	२२६
प्रतिग्राह्यम्	१६४	प्रत्याययति	१४२	प्रपथः	४१
प्रतिजनः	२३०	प्रत्युरसम्	५०	प्रपवणीयः	१६२
प्रतिदिवा	१२	प्रथमः	८, २२२	प्रपाय	१६०
प्रतिपथिकः	८७	प्रथमम्	२०३	प्रपीयमाणः—	१७७
प्रतिपूर्वाद्दिणम्	२२०	प्रथमवैयाकरणः	२२२	प्रपृष्ठः	२२६
प्रतिभू	१८०	प्रथिमा	६७	प्रपेयः	१६६
प्रतिराजा	२३०	प्रथिमिनी	१०५	प्रप्यानः	१७५
प्रतिशोभम्	५०	प्रथिष्ठः	१०८	प्रप्रायम्	२०७, २१७
प्रतिविपाशम्	३२	प्रथीयान्	१०८	प्रफुल्लः	१७३
प्रतिशब्द	१३८	प्रथ्	१२४, १३६	प्रवेमिदय्य	१६०
प्रतिशीनः	१७३	प्रदः	१६७	प्रभरा—	२०१
प्रतिशुश्रूषति	१५४	प्रदवः	१६७	प्रभवः	१८२
प्रतिषीव्यः	१६५	प्रदा	१८७	प्रभवनीयम्	१६२
प्रतिष्कशः	५८	प्रदाय	१६०	प्रभव्यम्	१६३

प्रभाक्	१७१	प्रलवित्रम्	२२७	प्रघोहा	२१७
प्रभानीयम्	१६२	प्रलापी	१७८	प्रसवी	१७६
प्रभापनीयम्	१६२	प्रलिपः	१६६	प्रसाय	१६०
प्रभास	५५	प्रवकः	१६७	प्रसारो	१७८
प्रभुः	१८०	प्रवणम्	५७	प्रसितः	३०
प्रभूतो	२२७	प्रवदितोः	१६६	प्रसूः	१७१
प्रभूतस्यायोः	२२७	प्रवपणीयम्	१६२	प्रसेवक मुखः	२२४
प्रभेदः	२२७	प्रवय्या	२०२	प्रस्	१२४
प्रभ्वी	१६८	प्रवयणम्	१८७	प्रस्वन्दनः	१८१
प्रभग्नः	१६२	प्रवरः	१८४	प्रस्तरः	१८३
प्रभङ्गनीयम्	१६२	प्रवरा	१८३	प्रस्तारः	१८३
प्रभत्तगीतम्	२२७	प्रवहति	१५५	प्रस्तावः	१८२
प्रभत्य	१६०	प्रवाच्यम्	१६४	प्रस्तीमः	१७३
प्रभाधी	१७८	प्रवादी	१७८	प्रस्तीमीः	६
प्रमादः	१८६	प्रवाय	१६१	प्रस्थ	६१, १६७, १८४
प्रमादी	१७८	प्रवारः	१८४	प्रस्थघनम्	२२२
प्रमाय	१६०	प्रवाहण्यः	६३	प्रस्थमात्रम्	१००
प्रमिणन्ति—	२०६	प्रवाहवा—	२०४	प्रस्थम्पचा	११६
प्रमुदितः	१७४	प्रवाहिका	१६, १८७	प्रस्थल	३१
प्रम्	१२१	प्रवाहिकातः	११३	प्रस्थशः	११३
प्रय—	२११	प्रवाहिकायाः	११३	प्रस्थाय	१६०
प्रयागः	१६४	प्रवाहुकम्	१६	प्रस्थितिः	१८६
प्रयाणीयम्	१६२	प्रवृत्य	१६०	प्रस्तुते	१५८
प्रयातुम्	१६७	प्रवृद्धः	२२७	प्रस्नावः	१८२
प्रयापणीयम्—	१६२	प्रवेयम्	२०२	प्रस्वानः	१८४
प्रयाम्यम्	१६२	प्रशस्तभ्राता	४५	प्रस्विन्नः	१७४
प्रयुक्	१७१	प्रशाखः—	२२२	प्रस्वेदितः	१७४
प्रयुक्तः	२२७	प्रशान्—	५, ११, १७१	प्रस्वेदितम्	१७४
प्रयुङ्क्ते	१५४	प्रशाम्	१६	प्रहत्य	१६०
प्रयै	१६७	प्रशास्ता	२०६	प्रहरणम्	२२६
प्रयोज्यः	१६४	प्रश्नः	४, १८५	प्रहाय	१६०
प्ररक्षः	१८१	प्रथयः	१८२	प्रहासः	१८६
प्रर्षभीयति	२	प्रथयः	१८२	प्रहीणः	१७३
प्रलम्भम्—	१६१	प्रष्कण्वः	५८	प्रह्वः	१६७
प्रललाटः	२२६	प्रष्ठः	१६७	प्रह्वन्नः	१७५
प्रलवः	२२७	प्रघोहः	२, २१७	प्रह्वन्तिः	१८५

प्रह्वयः	१८५	प्रातीपिकः	८६	प्रास्थिकः	६३
प्रा	१२८	प्रात्यग्रथिः	६५	प्रास्थिकम्	६२, ६३
प्राक्	२०, १०७	प्राध्वंकृत्य	३७	प्रास्थिकी—	६३
प्राकारीया	६०	प्राध्वं कृत्वा	३७	प्राह्णेतनम्	७७
प्राक्पुष्पा	७०	प्राध्वः	५१	प्राह्णेतमम	१०८
प्रागद्यः	७२	प्रादोषम्	७७	प्रियंकरः	१७०
प्राग्योतिष	४१	प्रादोषिकः	७७	प्रियः	१६०, १६६
प्राग्वनम्	३१	प्रापम्	४६	प्रियकारः	१७०
प्राङ्	१३, २२८	प्रापय्य	१६१	प्रियक्रोष्टु	११
प्राङ्च्छः	४	प्राप्तजीविकः	३४	प्रियगार्ग्याः	६२
प्राङ्मुखी	२२	प्राप्तजीविका	३४	प्रियगुडः	४५
प्राङ्घटः	४	प्राप्तानन्दः	२३	प्रियचत्वाः	११
प्राचार्यः	३७	प्राप्तोदकः	४१	प्रियतिसा	१०
प्राची	१८, ११२	प्राप्य	१६१	प्रियतिसु	१०
प्राचीनम्	११२, ११३	प्राभूतिकः	८५	प्रियत्रिः	१०
प्राचीना	११२	प्रायश्चित्तम्	५६	प्रियपञ्चा	१३
प्राच्यम्	७४	प्रायश्चित्तिः	५६	प्रियपथः	४५
प्राजनम्	१८७	प्रायस्	१६	प्रियप्रियेण—	११६
प्राजापत्यः	६०	प्रायेण—	२५	प्रियप्रियः	२२८
प्राज्ञः	१०३, ११३	प्राचर्क्षति	२	प्रियस्वदः	१६६
प्राज्ञी	११३	प्राख्यम्	२	प्रियसर्पिष्कः	४५
प्राट्	१८०	प्राशर्भोयति	२	प्रियषषः	१३
प्राणः—	२०२	प्रावयति	१५६	प्रियाष्टाः	१२
प्राणिणत्	१४२	प्रावाहणेयः	६३	प्रीड्	१३०
प्राणिणिषति	१४४	प्रावाहणेयिः	६३	प्रीन्	१३५, १३६
प्राणिम्—	१६२	प्रावृद्	५७	प्रीणम्	११२
प्रातःकल्पम्	५	प्रावृद्धरदौ	४८	प्रीङ्	१३७
प्रातःकमनीयम्	४०	प्रावृषिकः	७८	प्रीषु	१२४
प्रातरत्र	६	प्रावृषिजः	५२	प्रीष्	१३६
प्रातरित्वा	१७१	प्रावृषेण्यः	६८, ७७, ७८, ६३	प्रीसी	७२
प्रातर्	१५	प्राष्टीयः	७४	प्रीक्षणीयम्	१६२
प्रातिकण्ठिकः	८७	प्रासः	१८२	प्रीजते	२
प्रातिकूलिकः	८६	प्रासङ्ग्यः	८८	प्रीत्य	१६०
प्रातिजनीनः	८६	प्रासादात्—	२६, ३३	प्रीन्वनम्	५८, १६२
प्रातिपथिकः	८७	प्रासादीयम्	६०	प्रीपम्	४६
प्रातिलोमिकः	८६	प्रास्वारिकः	८८	प्रीमा	१०८

प्रेयान्	१०८	फलकपुरम्	१८, २२४	बभूवान्	१७६
प्रेषः	२	फलकसक्थम्	३८	बभ्रिर्वज्रम्	१८०, १६७
प्रेष्ट	१२३	फलानाम्—	२७, ३३	बभ्र	१२२
प्रेषे	१६७	फलिनः	१०४	बब्र्	१२१
प्रेष्ठः	१०८	फलेग्रहिः	१६६	बहिणः	१०४
प्रेष्यः	२	फलेम्यः—	२६	बहिष्येषु—	१६६
प्रेषः	२	फलेफहाः	२१४	बहर्	१२३, १३६
प्रेष्यः	२	फल्	१२३	बलवान्	१०५
प्रोक्षीयति	२	फल्गुनः	७६	बलाका	२२
प्रोढवान्	२	फल्गुनी	१८	बलाहकः	४६
प्रोथु	१२६	फल्गुन्यौ	४०	बलिः	२१५
प्रोम्भणम्	१६२	फाण्टम्	१७४	बलिम्—	२३
प्रोत्लाचितः	१७३	फाण्टाहतः	६४	बली	१०५
प्रोष्ठपदः	४३	फाण्टाहृतायिनः	६५	बलूलः	१०४
प्रोष्ठपादः—	७८	फालदती	४४	बल्	१३७
प्रोहणीयम्—	१६२	फाल्गुनः	६८	बल्यम्	७२
प्रोक्षीयति	२	फाल्गुनिकः	६८	बल्ह	१२३
प्रोढ़ः	२	फुल्लितः	१८५	बल्ह्	१३६
प्रोढ़िः	२	फुल्लः	१७३	बस्त्	१३८
प्रोष्ठपदः	७८	फेनलः	१०३	बहवः	२३
प्रोष्ठपदिकम्	६८	फेनवान्	१०३	बहि	१२३
प्रोहः	२	फेल्	१२२	बहिगिरि	३
प्लक्षन्यप्रोधम्	४७	बंहि—	२१४	बहिल्लोमः	४३
प्लक्षन्यप्रोधाः	४७	बंहिष्ठः—	१०८	बहिल्लनम्	३१
प्लक्षन्यप्रोधी	४७, २२७	बदरामलकम्	४७	बहिल्	१५
प्लाक्षम्	८४	बदरामलकानि	४७	बहुः	२१
फ्लिह	१२३	बदरामलके	४७	बहुकः	६१
प्ली	१३५	बद्	११७	बहुकपालः	२२०
प्लुङ्	१२७	बधान—	१६७	बहुकरः	१६८
प्लुषु	१२४	बघूटी	१६	बहुक्षमा	१६७
प्लुष्	१३१, १३६	बघूः	१०	बहुजगद—	१५८
प्ला	१२८	बघ्	१३६	बहुकर्तुकः	४१
फनक्	११८	बन्धुता	६६	बहुकुरुचरा	१६
फणितम्	१७४	बन्ध्	१६५	बहुकुलीनः	६४
फण्	१२५	बन्धाम्—	२०३	बहुकुल्यः	६४
फलम्	११	बभूव	१६३	बहुकृता	२१

बहुकृत्वः	११२	बहुशः—	४१	बाहुवली	१०५
बहुगुणो—	२२६	बहुशः	११३	बाहुवर्तकः	७५
बहुतन्त्रोः	४५	बहुश्रेयसिः	४५	बाहुवाहवि	४२
बहुतरकम्	१११	बहुश्रेयसि	६	बाहु	१२३
बहुतः	४१, १०६	बहुश्रेयान्	४५	बाह्यः	६०
बहुतियः	१०१	बहूनि—	११३	बाह्यम्	२१४
बहुत्र	४१, १०६	बहूजि	१४	बासन्तिकम्	१६८
बहुत्रा—	११४	बह्वक्षरम्	२२६	बाह्वृच्यम्	८३
बहुथा	४१	बह्वीषु	१६८	बाह्वलीक	२८
बहुदण्डिकः	४५	बह्वक्षसूतम्	४६	बिद्	१२०
बहुदण्डिका	४५	बह्वृचः	४६	विदाः	६२
बहुदण्डी	४५	बह्वृची	२२	विदि	११७
बहुधाकृत्वः	११२	बह्वर्गमाणि	१५	विना—	१६३
बहुधीवरी	१८	बह्वी	२१	विभावयिषति	१४४
बहुधीवा	१८	बाकम्	६६, ८४	विमिस्सति	१४३
बहुनाडिः	४५	बाङ्गः	६५	विभ्रसति—	१४३
बहुनाडीकः	४५	बाङ्गी	६६	विभ्रजिषति—	१४३
बहुनिष्कम्	६२	बाडवाहरणम्	२२२	बिल्	१३३, १३७
बहुनैष्किकम्	६२	बाडव्यम्	६६	बिल्वक	३८
बहुपटुः	१०८	बाट्ट	१२०	बिल्वकोयाः	७३
बहुपरिब्राजिका	१८	बाढम्	१७४	विस्त	६१
बहुपूषाणि	१४	बादरिकः	८६	बीज्	११८
बहुप्रजाः	२०१	बाघ्	११७	बीजाकरोति	११४
बहुवृत्रहाणि	१४	बान्धकिनेयः	६३	बुक्क	११८, १३८
बहुव्रीहिकः	२२६	बान्धवः	११३	बुगि	११८
बहुमानः	२२६	बाभ्रवः	६२	बुद्धिमान्नाम्	३३
बहुमालः	४५	बाभ्रव्यः	६२	बुद्ध्या—	२७
बहुमालकः	४५	बाभ्रव्यायणी	६२	बुधः	१६६
बहुमालाकः	४५	बाला	१७	बुधिर्	१२६
बहुमास्यः	२२०	बालेयाः	६०	बुध्	१२५, १२७
बहुमित्रकः	२२६	बाहवि	६१	बुध्यते—	१५८
बहुयज्वा	१८	बाहीक	१७	बुध्यस्व—	११५
बहुयुवा	२३	बाहीकः	६०	बुमुजे—	१५४
बहुराजा	१८	बाहुका	८५	बुमूर्षति—	१४३
बहुराज्ञी	१८	बाहुकुलेयकः	६४	बुमूर्षति	१४३, १४४, १५४
बहुवाग्मिका	४५	बाहुरूप्यम्	७४	बुमुष्यते	१५६

बुस्त	१३७	ब्रह्मबन्धुः	२२४	ब्राह्मणमित्रम्	२२५
बृदिष्ठः	१०८	ब्रह्मबन्ध—	३	ब्राह्मणमि—	२२८
बृत्रहा—	१२, १६४	ब्रह्मबन्धुतरा	५३	ब्राह्मणयाजकः	३३, २२७
बृहदिका	१११	ब्रह्मबन्धवा	२१८	ब्राह्मणराज्यम्	२२६
बृहतो	१११	ब्रह्मभूयम्	१६३	ब्राह्मणवत्—	६६
बृहत्कः	१११	ब्रह्मर्षिः	३	ब्राह्मणवर्णी	१०५
बृहि	१२४, १३६	ब्रह्मवनिम्—	१६५	ब्राह्मणवेदम्—	१६१
बृह	१३३	ब्रह्मवर्चसम्	५०	ब्राह्मणशालम्	२२५
बृह्	१२४	ब्रह्मवर्चस्यम्	६२	ब्राह्मणशाला	२२६
वेभित्	१५	ब्रह्मवादी	१७२	ब्राह्मणशौली	१०५
वेह	१२३	ब्रह्मवाद्यम्	१६५	ब्राह्मणसुखम्—	२२०
वेदः	६२	ब्रह्मसामम्	२०१	ब्राह्मणसेनम्	४०, २२४, २२६
वेदिः	६२	ब्रह्महत्या	१६३	ब्राह्मणसेना	४०
वैत्वः—	१६८	ब्रह्महा	१७२	ब्राह्मणस्य—	२६, ३३
वैत्वकाः	७३	ब्रह्मा	१, १२	ब्राह्मणाः—	४०, ५६
वैत्वमयम्	८४	ब्रह्माणो	२१	ब्राह्मणान्	११०
वैत्वम्	८३	ब्रह्मवर्त	३	ब्राह्मणाय	२६
बोधयति—	१५५	ब्रह्मो भवति	११२	ब्राह्मणासः	२०५
बोध्यते	१५७	ब्रह्मोद्यम्—	१६३	ब्राह्मणिकः	८०
बोभूयते	१४५, १५६	ब्राह्मनायनाः	१११	ब्राह्मणिकल्पा	५३
बौध्यः	६२	ब्राह्मनायन्यः	६१, १११	ब्राह्मणिगोत्रा	५३
ब्रजेन—	१६२	ब्राह्मणः	६४	ब्राह्मणिचेली	५३
ब्रजो—	१६२	ब्राह्मणक	१७	ब्राह्मणितमा	५३
ब्रष्	१२१, १४१	ब्राह्मणकः	१०२	ब्राह्मणितटा	५३
ब्रह्म	१४	ब्राह्मणकीयः	७६	ब्राह्मणिब्रुवा	५३
ब्रह्मकृषिः	३	ब्राह्मणकुलम्	५२, २२६	ब्राह्मणिपुत्रः	५३
ब्रह्मचारिणम्	१६७	ब्राह्मण—	४६	ब्राह्मणिरूपा	५३
ब्रह्मज्यः	१६७	ब्राह्मणच्छंसी	५१	ब्राह्मणीभार्यः	४२
ब्रह्मणः—	२६	ब्राह्मण्यजः	१७२	ब्राह्मण्यम्	६६, ६७
ब्रह्मण्यम्	६०	ब्राह्मणजातिः	११२	ब्राह्मो	६४
ब्रह्मता	६८	ब्राह्मणजातीयः	११२	ब्रोड्	१३०
ब्रह्मत्वम्	६८	ब्राह्मणधर्मी	१०५	ब्रुड्	१३३
ब्रह्मदेश	४६	ब्राह्मणनिकायः	२२३	ब्रुब्	१२८
ब्रह्मनिष्ठः	१२	ब्राह्मणपणनम्	२८	ब्रूते	१५८
ब्रह्मपुत्र	८	ब्राह्मणः पूज्यः	४०	ब्रूो	१३५
ब्रह्मप्रजापती	४७	ब्राह्मणभार्या	३५	भंडु	१६

भक्त—	१३, २४	भवता—	१६१	मानवः	६१
भक्तम्—	२२२	भवत्	८	मानुदत्तः	१०६
भक्ताय—	२५	भवदीयः	७५	मानुलः	१०६
भक्तिः—	२६, १८६	भवदीयाः	४२	भापयते	१४२
भक्षः—	२१२	भवन्	१३	भामा	१०६
भक्षयति—	२४	भवन्ती	१८	भाम्	१२१, १४०
भक्ष्	१३६	भवात्—	२७	भाययति	१४२
भगन्दरः	१६६	भवान्—	६, १३, १६१, १८७	भार	६१
भगोनमस्ते	६	भविता	१७६	भारतः	७०
भङ्क्ता	१६५	भविष्युः	१७७, १६६	भारद्वाज	३२
भङ्गुरः	१७६	भव्यः	१६५	भारद्वाजीयाः	१५८
भङ्ग्यम्	६८	भव्यम्—	१६३	भारम्—	१५५, १६१
भजि	१३६	भष्	१२३	भारहारः	१६८
भजे—	२७	भस्	१२६	भारजिकः	११०
भज्	१२७	भस्त्राफला	१७	भार्गयणः	६२
भञ्जनागिरि	१५	भाः	१८०	भार्गिः	६२
भञ्जो	१३४	भाक्तः	८७	भार्गी	६६
भट्	१२०, १२४	भाक्ताः	८६	भार्याः	१६३
भट्टि	११६, १३७	भाक्तिकः	८७	भार्याम्—	२६, १५४
भण्	१२१	भागः—	२००	भार्यायै—	२५
भदि	११७	भागधेयम्	११२	भार्यासौश्रुतः	२२२
भद्रङ्करणम्	५५	भागधेयी	२०	भाल्लाविनः	८२
भद्रबाहुः	२२	भागवित्तायनः	६४	भावः	१६७, १८२
भद्रम्—	२०६	भागवित्तिकः	६४	भावतः	७५
भयंकरः	१७०	भागवित्ति भागवित्तिकौ	४८	भावत्कः	७५
भयन्नाह्वाणः	२२२	भागी	१७८	भावत्काः	४२
भयम्	१८४	भाष्यं भागिकम्	६३	भावयति	१४१
भय्यः	२०२	भाग्या भाग्यिका	६३	भावयते	१४१
भरता	२०३	भाङ्गीनम्	६८	भावितः	१७४
भर्त्स	१३८	भाज्	१४०	भाव्यः	१६५
भर्व	१२२	भाजा	२०	भाव्यते	१५६
भत्	१२१, १३८	भाजी	२०	भाष्	१२३
भल्ल	१२१	भाजीकंसः	२२२	भाष्यकृत्	१७२
भवः	१६७	भाति	१२८	भासुरः	१७६
भवका	१८	भात्	११५	भास्करः	६, १६८
भवतः—	३३	भाद्रमातुरः	६४	भास्त्रिकः	८६

भास्त्रिकी	८६	भीलुकः	१८०	भूर्यस्पष्टकर्तृम्	१६८
भास्मनः	८३	भीङ्	१३०	भूलिंग	५८
भास्वरः	१८०	भीमरथा	११	भूषणः	१७६
भास्वान्	१०२	भीरुष्ठानम्	५५	भूष्	१२३, १३८
भिक्षाकंसः	२२२	भीषयते	१४२	भूष्णुः	१७७
भिक्षाकः	१७६	भीष्मः	१८१	भू	१३५
भिक्षाचरी	१६८	भुक्त्वा—	११५, १८६, १६०	भृगवः	६३
भिक्षाद्वितीयम्	३४	भुक्तः	१७३	भृगुकच्छ	५४
भिक्षाप्रियः	२२२	भुङ्क्वा	१६१	भृक्	१२६, १३८
भिक्षामाणवः	२२२	भुजः	१६५	भृद्	१२
भिक्षामात्रम्	२१६	भुजङ्गः	१६६	भृङ्	१३३
भिक्षाम्—	१५६	भुजङ्गमः	१६६	भृत्याः	१६३, १८६
भिक्षुः	१८०	भुजो	१३४	भृत्यान्	१५३
भिक्षुनिकायः	१८३	भुज्	१३४	भृशम्—	१४५
भिक्षोत्करः	१८३	भुञ्जीय—	१६०	भृशि	१३६
भिच्	१२३	भुत्	१२	भृशु	१३१
भिच्छ्	१३२	भुव इति	२०८	भेङ्	१२७
भित्	१८०	भुव्	१३६	भेतव्यम्—	१५७
भित्तम्	१७४	भुवम्मन्यः	१७२, २०८	भेत्ता—	१६३
भित्तिः	१८६	भुवस्तस्य—	२०६	भेयम्	२०२
भिदा	१८६	भू	११७, १३६	भेषजी	२०
भिदि	११७	भूतः	१७३	भेष्	१२६
भिदिर्	१३४	भूतपूर्वः	३०	भैक्षम्	६६
भिदुरम्	१७६	भूतबलिः	३३	भैषज्यम्	११२
भिदेलिमाः	१६१	भूतार्मम्	२२३	भोः	१७
भिद्य	२६	भूतिः	१६६	भो—	६
भिद्यः	१६३	भूपतिः	६, २२०	भोक्ता	१५६
भिद्यते—	१५७	भूमर्ता	३३	भोगः	१६४
भिल्लः	१७३	भूमा	१०८	भोगम्—	१७७
भिल्लम्	१७४	भूमिमान्	१०३	भोग्यम्	१६४
भिल्लकम्	१११	भूमिनायः	५२	भोजम्	१६१
भिल्लकर्णः	५७	भूयस्	१६	भोजकटीयः	७४
भिल्लकपाशः	१०७	भूयान्	१०८	भोजनम्—	२११
भीमः	१८१	भूयिष्ठः	१०८	भोजयतः	११६
भीरुः	१८०	भूरिदावत्तरः	२०८	भोजयति	१५६
भीरुकः	१८०	भूरिदावा	१६६	भोजयितासि	१५६
		भूरिवारान्	११२		

भोज्यः	३६	आष्टजः	२२३	मङ्क्त्वा	१६०
भोज्यते	१५७	आष्टपक्वः	६२०	मधि	११८
भोज्यम्	१६४	आष्ट्राः—	६७	मच्	११८
भोज्या	६६	आतुकम्	८१	मञ्जुला	११
भोज्योष्णम्	३६, २१६	आतुवलः	१०४	मठि	११६
भो देवा	६	आष्टमिन्धः	५४	मठ्	१२०
भो भोजनम्—	१६१	अकुटिः	५४	मडि	११६, १२०, १३७
भोयच्युत	६	अकुंसः	५४	मणिकः	११३
भोलक्ष्मीः	६	अविक्षेपम्—	१६२	मणिकर्णः	५७, २२४
भोविद्वद्वन्द	६	अः	१०	मणिवः	१०४
भोजकटः	७४	अकुंसः	५४	मणीव—	३
भौणिक्या	६३	अकुटिः	५४	मण्	१२१
भौरिकिविध	४७	अणूहा	१७१	मण्डनः	१७६
भौलिकिविधम्	७०	अणू	१३८	मण्डूकसरसम्	३८
भ्यस्	१२३	अभृङ्गः	५४	मतिः	१०
भंशु	१३१	अजे	११८	मती	२०४
भंसु	१२४	अेषु	१२६	मत्कः	१०२
अकुंसः	५४	अौणजः	६४	मत्तः	१७४
अकुटिः	५४	अौवेवः	६३	मत्पितृकः	८
अच्	१२४	अलच्	१२४	मत्पुत्रः	७७
अदिति	२	अलाश्	१२५	मत्यम्	८६
अमी	१७७	अलेषु	१२६	मत्रि	१३८
अमु	१३१	अहिष्ठम्	२००	मत्वर्थायः	१८७
अम्	१२५	अकरः	५८, २१६	मत्सी	२०, २२
अस्ज्	१३२	अकरी	५६	मत्स्य	४८
आ	१२५, १२८	अकरीप्रत्यः	२२३	मत्स्यचूर्णम्	२२६
आजिष्णुः	१७७	अकि	११८	मथि	११७
आजू	११८	अक्त्वा	१६०	मथुरा	३४
आज्	१२५	अक्षू	२०३	मथुरावत्—	६६
आतरी	४८	अखि	११८	मथे	१३५
आतुः पुत्रः	२१६	अख्	११८	मदयन्तम्	२०७
आतुव्यः	६४	अगि	११८	मदि	११७
आत्रीयः	६४	अघवती	१२	मदी	१२५, १३१
आमरम्	८२	अघवान्	१२	मदीयः	७७
आष्	१२५	अघवानम्	२००	मदुरकन्थम्	२२६
आष्ट्रिकापिष्टलयः	६४	अधि	११८	मदोदग्राः—	४

मद्	१३८	मध्यैकृत्य	३७	ममत्तु—	२१२
मद्यम्	१६२	मध्यैकृत्वा	३७	मयः	१८८
मद्र	१६	मध्यैगङ्गात्	३१	मयका	१०६
मद्रम्—	२६	मध्यैगुरुः	५२	मया—	२६
मद्रकः	७६	मध्वरिः	१	मयूरव्यंसकः	३६
मद्रंकरः	१७०	मध्वा —	१६७	मयूरिकावन्धम्	१६२
मद्रकारः	५८, १७०	मनश्चित्—	२१७	मयूरीकुक्कुटौ	३६, ४८
मद्रकेकयाः	४७	मनसा	२८	मयू	१२१
मद्रराज्ञी	३८	मनसागुप्ता	५१	मरीमृजः	१६६
मद्रवाणिजः	२१६	मनसाज्ञायी	५१	मस्तः—	१०४, २०५
मद्रसदेशम्	२२०	मनसिकृत्य	३०	मस्तवा	२१८
मद्रसविषम्	२२०	मनसिकृत्वा	२०	मस्तुमिः	२०३
मद्रसवेशम्	२२०	मनाक्	१५	मस्तुन्वः	५६
मद्रार्मम्	२२३	मनायी	२०	मच्	१३७
मद्रात्मार्मम्	२२३	मनावी	२०	मब्	१२१
मद्रिकामानिनी	४२	मनीषा	२	मर्मावित्	५७
मद्रर्गीणः	८०	मनुः	२०	मर्यः	१६५
मद्रर्गीयः	८०	मनु	१३५	मब्	१२२
मद्रर्ग्यः	८०	मनुषी	२२	मषितः	१७४
मधन्यः	१६६	मनुष्यः	६५	मषित्वा	१६०
मधु	११	मनुष्वत्	१६३	मलयः	२१६
मधुपाः	६	मनोरथः	७	मलय	१०
मधुमान्	७२	मनोहृत्य	४०	मलिनः	१०४
मधुमैरेयः	२२२	मन्	१३०	मलीमसः	१०४
मधुरः	१०३	मन्त्रकृत्	१७३	मल्	१२६
मधुसूदनः	१६६	मन्त्रम्—	१६७	मल्लः	४२, २१६
मधूः	१६८	मन्त्रस्पृक्	१७१	मल्लग्रामः	२२३
मधोः—	१६७	मन्य	६१	मल्लस्थ—	१८३
मध्यः—	७७	मन्याः	१२	मल्लाः	१११
मध्यतः—	११३, २०१	मन्य	११७, १३५	मल्लिका	८४, २१६
मध्यभारत	३	मन्दा	७१	मल्ल	१२१
मध्यमः	७७	मन्दुरजः	१७२	मव्	१२२
मध्यमभार्यः	४२	मन्यते	४	मव्य	१२२
मध्यम्—	७७	मन्या	१८६	मशकावती	२२
मध्यरात्रः	३४	मभू	१२२	मश	१२४
मध्याह्नः	३४	मम—	२१२	मष्	१२३

मघी	१३१	महिष्मान् —	७२	माणवीनम्	६०
मस्करः	५८	महीघ्नः	१६८	माणव्यम्	६६
मस्करी	५८	महीम् —	१५४	माण्डूकः	६३
मस्क	११८	महेन्द्र	६	माण्डूकायनी	१६
मस्तकशिखः	५२	महेन्द्रीयम् —	६८	माण्डूकिकः	६३
महत्सेवा	१६	महेपुः	२२४	माण्डूकेयः	६३
महद्ब्रीहिः	२२१	महेष्वासः	२२१	मातरम् —	१५३
महर् —	२०६	महोच्चः	५०	मातरा —	२०२
महाकरः	३६	महोत्सवपुर	५७	मातरि —	३०
महाकुलीनः	६४	मह्	१२४, १४०	माता —	१०, ११६, २१२
महागृष्टिः	२२१	मह्यम् —	२१३	मातापितरौ	४७, ४८
महाघासः	३६	मांसकामा	१६७	मातामहः	६६
महाजातीय	३६	मांसभक्षा	१६७	मातामहो	६६
महादेवः	३६	मांसि	११	मातुः —	२६, २७
महानगरम्	२२३	मांसिकः	६७	मातुः कृता	५
महानवमी	३५	मांसोदनिकः	८७	मातुःष्वसा	५३
महानसम्	३८	मा —	१६, १२८, २०२, २०३, २०५, २१२	मातुःस्मरणम्	५३
महान्	१३	माकन्दी	७२	मातुःस्वसा	५३
महापराङ्मूः	२२१	माकार्पीः	१६१	मातुलः	६६
महाप्रियः	३५	माकार्पीत्	१८६	मातुलानी	२१
महाब्रह्मः	३६	माकिः	१६	मातुलो	२१
महाब्रह्मा	३६	माकिम्	१६	मातृभोगीणः	६२
महाब्रीहिः	२३१	माक्षि	१२३	मातृष्वसा	५३
महामुखः	२२८	माक्षिकम्	८२	मातृष्वसेयः	६३
महायशस्कः	४५	मागधः	६५	मातृष्वन्नोयः	६३
महायशाः	४५	मागधी	६६	मातृसदृशः	३२
महाराजहतः	२२१	माघवनम्	१२	मात्रोक्तरोति	११४
महार्मम्	२२३	माङ्	१६, १२६, १३०	मात्वा	२००, २०६
महाविशिष्टः	३६	माजोवनम् —	१७७	मात्वाग्निः —	१६४
महावैयाकरणः	३५	माञ्जिष्ठम्	६७	मात्वायतः —	१६४
महावैश्वदेवम्	२२१	माङ्गुलिकः	८७	मात्स्यिकः	८६
महाशूद्रो	१८	माङ्गुलिकः	८७	माथुराः —	३०
महाहैलिहिलः	२२१	माणव —	१५३	मायुरोयते	४२
महि	१२३, १३६	माणवकम् —	२३, १५५	माद्विभिः —	२६
महिष —	२१३, २१५	माणवकस्य —	२३, २८	मादनगरः	७६
महिषी	२१६			माद्रो	६६

माघवः	६२, १६६	मासः	८	मिट्ट	१२६
माघव्यः	६२	मासजातः	३४, २२६	मितः	१७५
माघूचः	२११	मासजाता	४६	मितङ्गमः	१६६
माघ्वोः—	२०४	मासतमः	१०१	मितद्गुः	१८०
माना—	१६६	मासपूर्वः	३२	मितम्पचः	१६६
मानुषः	६५	मासपूर्वाय	८	मित्र—	१६७
मानुषी	२०६	मासप्रमितः—	३२	मित्रद्विद्	१७१
मानुष्यकम्	६६	मासमधीतः—	२५	मित्रघ्नक्	१८०
मानोज्ञकम्	१६८	मासमासयति—	२४	मित्रमहो—	२०२
मान्	१२७, १३८, १३९	मासमास्ते—	२३	मित्रयवः	६३
मा भगवान्—	२, १४१	मासम्—	२५	मित्रयुः	२०६
माभ्याम्—	२१७	मासस्थ—	३५	मित्रशीः	१७१
मामकः	७७	मासावरः	३२	मित्रावरुणी	४७
मामकी	३, २०	मासिकः	६५	मित्वा	१६०
मामकीनः	७७	मासिकम्	६८, ७७, ७९	मित्सति	१४३
मामिका	२०	मासीनः	६५	मिदि	१३६
माया	२१४	मासे—	३४	मिथस्	१६
मायावो	१०४	मास्	१२३	मिथो	१६
मायिकः	१०४	मास्वः	६५	मिथ्या	१६
मायी	१०४	माहाकुलः	६४	मिरिकावनम्	५८
मायूरः	८३	माहाकुलीनः	६४	मिल्	१३३, १३४
मायूरम्	६६	माहाजनिकः	६०	मिवि	१२२
मायूरिकः	८६	माहात्म्यम्	१	मिश्	१२४
माष	६१	माहानाभिनिकः	६५	मिश्रकावणम्	५७
माषकुम्भवापेन	५८	माहारजनम्	६७	मिश्र	१४०
माषवापिण्ठ	५८	माहाराजिकः	८१	मिषु	१२३
माषवापेण	५८	माहाराजिकम्	६८	मिष्	१३३
माषविकलम्	२२८	माहिकप्रस्थः	७४	मिह्	१२७
माषशः	१३	माहिषपुत्रः	८७	मी	१३६
माषाः	२१५, २१६	माहिषिकः	७६	मीन्	१३५
माषीणम्	६८	माहिष्मती	५३	मीढवस्तोकाय—	२०६
माषेषु—	२३	माह	१२६	मीमांसकः	७१
माषोनम्	३२, २२८	माहेद्रम्	६८	मीमांसकदुर्दुष्ट	३५
माष्यम्	६०, ६८	माहेयम्	७३	मीमांसिषते	१४४
मासी—	१५७	माहवः	१६४	मीम्	१२१
मासम्—	१५७	मिजि	१३६	मील्	१२२

भीष्	१२२	मार्दङ्गिकपाणविकम्	४६	मुहुःकामा	५
मुकयो	२२	मार्दयपुरम्	१८, २२४	मुहुस्	१६
मुकुटेकार्पापणम्	५१, २२२	मालभारो	५४	मुहूर्तप्रहसितः	२२२
मुक्	११	मालव	५५	मुहूर्तमुखम्	३२, २१६
मुक्तये —	२६	मालव्यः	१११	मुहूर्ता—	१५६, १६१
मुखकामः	५२	मालाप्रस्थः	२२३	मुहू	१३१
मुखतः	१६३	मालाप्रस्थकः	७५	मूः	१७१
मुखतीयम्	७६	माली	१०५	मूङ्	१२७
मुखम्	२१४	मालीयः	७४	मूत्रकृच्छ्रम्	२६
मुखरः	१०२	मात्तवास्तवः	७५	मूत्रपदेन—	२१६
मुख्यः	११०	माशब्दिकः	८५	मूत्र	१४०
मुचकर्ण	१७	मुद्	११७, १३६	मूर्खः	१८१
मुचि	११८	मुद्गचूर्णम्	२२६	मूर्खभ्रातृकः	४५
मुच्लु	१३४	मुद्गसूपः	२२६	मूर्तः	१७४
मुच्	१३६	मुद्गाः	८४	मूर्धशिलः	५२
मुजि	११६	मुघा	१६	मूलकः	७८
मुज्	११६	मुनिः	२१५	मूलकपणः	१८४
मुञ्जकेशः	२१६	मुनिवती	११७, ११४	मूलकशाकम्	२२६
मुञ्जेषीकतूलम्	१३३	मुमुक्षति	१४४	मूलकोपदंशम्	३८, १६२
मुट्	११, १२०, १३७	मुमुषिषति	१४३	मूलविभुजः	१६८
मुठि	११६	मुमूर्षति	१४३, १५४	मूले—	११५
मुडि	११६, १२०	मुरला	५०	मूलेन—	३०
मुङ्	१२०	मुरस्थ—	२६	मूल	१२२, १३७
मुण्	१३३	मूर्	११३	मूल्यः	८८
मुण्डा	२२	मुर्छा	११६	मूल्यम्	८८
मुदाकृष्टे	१५३	मुर्वी	१२२	मूल्याः	८८
मुदितम्	१७४	मुषित्वा	१८६	मूषिका	१७
मुद्	११७	मुष्	१३६	मूषिकाविलम्	१६१
मारीचिकम्	८५	मुष्करः	१०३	मूष्	१२३
मार्गिकः	८६	मुष्टिन्धमः	१६६	मू	१२५
मार्ग	१३६	मुष्टिन्धयः	१६६	मूल्	१२३
मार्ज्	१३७	मुष्टिमुखः	२२८	मृगक्षीरम्	४२
मार्तण्ड	२	मुष्टीमुष्टि	४३	मृगनेत्राः—	४३
मात्तिकः	८३	मुसलामुसलि	४४	मृगपदम्	४२
मार्दङ्गिकः	८७	मुस्	१३१	मृगया	१८६
मार्दवम्	६७	मुस्त्व	१२७	मृगसक्थम्	३८

मृग	१३१, १४०	मेव	१२२	म्लेष्ट	१२२
मृङ्	१३३	मेषशुङ्गाः	२२५	म्लै	१२६
मृजा	१८६	मैत्रावरुणीयम्	१६८	यंलोकम्	४
मृजी	११८	मैत्रेयः	६३	यँल्लोकम्	४
मृज्	१२८, १३६	मैत्रेयौ	६३	यः—	२१८
मृज्यः	१६३	मैत्रिकः	८६	यः—१२, २४, ११०, १६६, २०१,	२०३, २०६
मृडि	१२७	मैमतः	६५	यका	१८
मृडित्वा	१८६	मोक्षते—	१४४	यकृत	१५
मृद्	१३१, १३५	मोक्षे—	२६	यके—	२१७
मृण्	१३३	मोक्ष्	१३८	यक्ष्	१३८
मृकुण्डम्	२२६	मोदकमयम्	११२	यच्च—	१६०
मृत्तिका	११३	मोदागिरि	४४	यजतिस्म	१५८
मृत्ता	११३	मोषुणः	२१०	यजते	१५५
मृत्ना	११३	मोञ्जम्	१६८	यजध्वैनम्—	२०५
मृदुपचति	४०	मोञ्जवतः	१६८	यजमानः	१७७
मृद्	१२५	मौण्डनिकायः	२२४	यजमानम्	२०४
मृद्री	२१	मोदकिकम्	११२	यजुष्यकल्पम्	१०८
मृधु	१२६	मोद्गः	८३, ८६	यजेत	१६०
मृश्	१३४	मोद्गीनम्	६८	यज्	१२७
मृषा	१६	मोटघम्	६७	यज्ञः	१८५
मृषित्वा	१६०	मोनम्	६८	यज्ञ—	१५५
मृषु	१२४	मोर्वम्	८३	यज्ञम्—	२००, २११
मृषोद्यम्	१६३	मोष्टा	७०	यज्ञश्रियम्	२१६
मृष्	१२६, १३०	म्ना	१२६	यज्ञस्य—	२१७
मेषंकरः	१७०	मुक्ष्	१२३, १३७	यज्ञियः	६४
मेङ्	१२७	मुदिमा	६७	यज्वा	१२, १७६
मेट्	१२०, १२६	मुद्	१२४	यतः	१०६
मेड	१२०	मुचु	११६	यतमः	११०
मेडूम्	१८१	मुञ्चु	११६	यतरः	११०
मेदितः	१७४	म्लानः	१७३, १७६	यती	११७
मेदुरः	१७६	म्लिष्टम्	१७४	यत् १४, १३८, १६८, १६५, २०२	२०३, २०६, २११, २३२
मेघावान्	१०३	म्लुचु	११६	यत्यम्	२६२
मेघु	१२६	म्लुञ्चु	११६	यत्र	१०६
मेघ्याय	१६८	म्लेच्छितम्	१७४	यत्रा—	२०३
मेष्ट	१२१	म्लेच्छ्	११६		
मेष्टः	२१५	म्लेष्ट	१२०		

यत्रि	१३६	यवसुरम्	४०	याज्ञिकाश्वः	२२२
यथा	१०६, १६१, २०६, २३१	यवसुरा	४०	याज्ञिक्यम्	८३
यथाकथाच	१७	यवागूमयम्	८४	यातः	२१५
यथानो—	२०६, २१७	यवागूमयी	११२	यातयात	१६१
यथायथंज्ञाता	११६	यवाग्वा	१६४	याता	१०
यथाशक्ति	३१	यवानो	५१	याते	१६६
यदत्र—	२४, ३०	यवापूप्यम्	६१	यात्रम्	८७
यदयम्—	१६१	यविष्ठः	१०८	याथाकथम्	६६
यदधीते	२१८	यवेभ्यः—	२६	याथाकामी	८७
यदग्ने—	२३०	यवैः—	२१२	यादुशी	१६
यदद्वयङ्—	२३२	यव्यम्	६०, ६८	यामिः	२००
यदा	१०६	यशःकरोति	६	यामः	१८४, २१५
यदानेयः	२१७	यशःकल्पम्	१०८	यामुनः	६२
यदाहवनीये	२१६	यशस्कम्	५	यामुन्दायनिः	६४
यदिन्द्रा—	२१०	यशस्करी	१६८	यामुन्दायनीयः	६४
यदुद्धत—	२००	यशस्कल्पम्	५	याम्यः	६२
यद्	८	यशस्काम्यति	५	यायजूकः	१७६
यन्तिः	१८६	यशस्यः	६२	यायावरः	१८०
यन्म—	२१०	यशस्वान्	१०२, १०४	यावकः—	८४, ११३
यम्	१२७	यशस्वी	१२, १०४	यावक्रीतिकः	७१
यमः	१८४	यशांसि	४	यावजीवम्	१५६
यमयते	१५६	यशोभग्यः	१६६	यावच्छूलोकम्	३१
यमसभीयः	८१	यष्टि—	१६२	यावत्—	१७, २३१
यमी	१७७	यसु	१३१	यावतियः	१०१
यमुना	८	यस्त्रिचक्र—	२३०	यावद्वास्पते	१५६
यम्	१२५, १२७, १३७	यस्त्वा	२०६	यावद्देवदत्तः—	२३१
ययीः	६	यस्य—	१६८, १६६	यावद्—	१५८, २३१
यहि	१०६	या—	१४, १६४, २०२	यावद्देवं—	१६१
यदः	१८४		२०४, २२५	यावान्	१००
यवक्यम्	६८	यागाय	२६, १८१	याव्यम्	१६४
यवक्रीः	६	याचितकम्	८६	याष्टीकम्	८७
यवनः	६६	याचित्वा—	१८६	यासिष्ठम्	२१६
यवनानी	२१	याच्ना	१८५	यास्कः	६१
यवपालः	२२३	याच्यम्	१६६	यास्कायनिः	६१
यवबुसम्	७६	याजकपुत्रः	२२६	यास्कायनीयः	६१
यवमान्	१०२	याज्ञवल्क्यानि	८२	यास्कीयाः	६१

यास्मि—	२१३	युष्मकाभिः	१०६	यौष्माकीणः	७६
याहि—	१६१	युष्मकासु	१०६	रक्	१३८
यियक्षते	१४३	युष्मदीयः	७६	रक्त्वा	१६०
यियावयिषति	१४४	युष्मद्	८	रक्षःसभम्	४०
यु	१२८, १३८	युष्मान्—	१३	रक्षितः	१७६
युक्तारोही	२२३	यूकालिक्षम्	४७	रक्ष्	१२३
युगन्धरः	१७०	यूतिः	१८६	रक्षः	१८५
युगन्धर	५८	यूथपशुः	५२	रख	११८
युगपत्	१५, ६	यूपदारः	३३, २२१	रखि	११८
युगि	११८	यूयम्—	१३	रगि	११८
युगेयुगे	२१२	यूष्	१२३	रग्	१३८
युग्यः	८८, १६४	यूष्णः	८	रङ्क्त्वा	१६०
युङ्	१२	ये—	१६५, १६६	रङ्गः	१८२
युङ्क्ष्	११६	”	२०८, २१२, २२१	रच्	१४०
युजिर्	१२४	येन —	२०५, २०६	रजकः	१६७
युज्	१३०, १३६	येयम्—	१५६	रजकी—	१६७
युज्यते—	१५७	यः—	१५६, १६६, १६६, २००	रजयति	१४२
युज्	१३५		२१२, २१८, २३२	रजस्वला	१०४
युञ्ज—	२१४	योक्त्रम्	१८१	रज्जुः	२२
युत्	११७	योगी	१७८	रज्जुशारटम्—	२१६
युत्	१०	योग्यः	६६	रज्यति—	१५८
युधिष्ठिरः	५१	योजन	६२	रज्जयति	१४२
युधिष्ठिराः	६३	योत्रम्	१८१	रज्ज्	१२७, १२
युधिष्ठिरार्जुनी	४६	योधयति—	१५६	रट्	१२०, १४०
युप्	१३१	यो	४८	रट्	१२०
युयूषति	१४३	यौगन्धरः	७६	रडि	१३६
युयोधि	२०४	यौगन्धरकः	७६	रणः	१८४
युवकयोः	१०६	योगिकः	६६	रण्	१२१, १२४
युवखलतिः	३६	योजनिकः	६४	रत्नमुट्	१३
युवखलती	३६	योजनशक्तिः	६४	रथकटपा	७०
युवजरती	३६	योट्	१२०	रथकारः	२२३
युवज्जानिः	४४	योधेयः	१११	रथन्तरम्	१७०
युवतिः	२३	योधेयी	६६	रथयातः	२२१
युवती	२३	यौवतम्	६६	रथवर्त्म	२२७
युवम्—	२०४, २१०	यौवनम्	६६	रथस्था	३६
युवा	१२, २३०	यौष्माकः	७६	रथानां—	१

रथिकः	८५	रवि	१२२	राजयुष्वां	१८, १७२
रथिकाश्वारोहम्	४६	रसना	२१६	राजवर्चसम्	— ५०
रथिकाश्वारोहं	४७	रसवान्	१०२	राजवान्	१०३
रथीः—	१६८, २०२	रसिकाभार्यः	४२	राजशयनम्	२२७
रथीतमम्—	२०८	रस्	१२४, १४०	राजसभा	४०, २२४
रथीतरः	२०८	रह्	१२४, १३७, १३६	राजसात्—	११४
रथेन	१५४	रहि	१३६	राजसुखम्	२२०
रथ्यः	८२	राः	१०	राजसूदः	२२६
रथ्यम्	८२	रा	१२८	राजसूयः	१६३
रथ्या	७०, ६०	राका	१८	राजसूयवाजपेये	४७
रद्	११७	राखु	११८	राजसूयिकः	८०
रधि	११८, १४६	रागः	१८२	राजहस्ती	२२२
रधिता—	१६५	रागी	१७८	राजा	११
रध्	१३०	राघु	१०८	राजा—	२१६
रन्तिः	१८६	राङ्कवः	७३	राजानम्—	६६
रन्धकः	१६५	राङ्कवायणः	७३	राजान्तर	३६
रप्	१२१	राजकीयम्	७६	राज्	१२५
रफ्	१२१	राजकुमारः	२२२	राज्ञः—	२७
रफि	१२१	राजकुलालः	२२२	राज्ञो—	२१७
रबि	१२१	राजकृत्वा	१७२	राज्ञाम्—	२८, ३३१, ७६
रभि	१२१	राजघः	१७०	राज्यम्	६४, ६७
रभ्	१२७	राजतम्	८४	राट्	१२
रमणीयकर्ता	२२२	राजदन्तः	४६	रातो—	१६६
रमणीयसभम्—	२२४	राजधुरा	४६	रात्रिः	२१
रमयामकः	१६४	राजनः	६४	रात्रिचरः	५५
रमा	१०	राजनापितः	२२२	रात्रिचरः—	५५, १६६
रमापतिः—	५४, १७६	राजनिवाते—	२१६	रात्रिन्दिवम्	५०
रमेशः	१	राजन्यः	६४	रात्रिमटः	५५
रम्	१२५	राजन्यकः	७०	रात्रिम्मन्यः	५५
रम्यकः—	१६५	राजन्यकम्	६६	रात्री—	२१, १६८
रम्यपथः	५०	राजन्वती	१०३	रात्री	१५
रम्ययूना	५८	राजपुत्रः	२२६	रात्रमटः	५५
रम्यविणा	५८	राजपुरुषः	३३, ४६	राषकः	१०६
रयिमान्	२०१	राजप्रत्येनाः	२२२	राषसः—	१६७
रवः	१८२	राजभोगीनः	६०	राघ्	१३०, १३२
रवणः	१७८	राजभोजनाः—	१८७, २२७	राधानुराधीया—	६७

राप्यम्	१६४	रिष्	१३४	रूपधेयम्	११२
रामः—	८, १५४, १८८	रिष्	१२३, १३१	रूपनारायण	४७
	२३१	रिष्टीयति	२०६	रूपवद्भार्यः	४१
रामहे	३	री	१३५	रूपरसी	४७
राम—	२३२	रीङ्	१३०	रूपवान्	१०२
रामकृष्णावामू—	३	र	१२८	रूपवान्	१०४
रामगङ्गा	८	रङ्	१२७	रूप	१४०
रामम्—	१७६	रचितम्	१७४	रूप्यः	१०४
रामश्चिनोति	४	रच्	१२४	रूपवत्	५३
रामष्टीकते	४	रच्यः	१६३	रूप	१२३
रामष्वष्ठः	४	रजो	१३४	रेक	११८
रामःस्थाता	५	रज्	१३६	रेखा	१८६
रामाः	४८	रटि	१२०	रेज्	१८६
रामी	४८	रट्	१२४, १३८, १३६	रेट्	१२५
रामेण—	२५	रठि	१२०	रेट्	१७१
रायस्फूर्धि	२०४	रठ्	१२०	रेपयति	१४२
रायस्पोषम्—	२१०	रठि	१२०	रेपु	१२१
राया—	२१७	रदति—	२६	रेफः	१८७
रायो—	२१७	रदित्वा	१८६	रेफित्वा	१८६
रारन्वि	२०४	रदिर्	१२८	रेमु	१२१
राष्ट्रम्	१	रद्रहतः	२२१	रेवतिपुत्रः	५४
राष्ट्रियः	७३, ७८, ७६	रधिरः	१३४	रेवती	७८
रासभकः	१०६	रप्	१३१	रेवत्यम्	१६६
रासु	१२३	रमप्वान्	१०३	रेवान्	२०१
रि	१३२, १३३	ररव इमे	४६	रेवो—	२१८
रिक्तः	२१३	ररचिषते—	१४३	रेषु	१२३
रिक्तगुरुः	२२१	ररदिषति	१४३	रे	१७, १२६
रिगि	११८	ररपृषतम्	४७	रैवतिकः	६४
रिचिर्	१३४	ररपृषताः	४७	रैवतिकीयः	८३
रिच्	१३६	रशि	१३६	रोगः	१८१
रिपुणा—	१६८	रश	१३४	रोगस्य—	२८
रिप्सति	१४४	रषितः	१७५	रोचयते	१५६
रिप्सते	१४४	रष्	१२३, १३१, १३८	रोचिष्णुः	१७७
रिफ	१३२	रसि	१३६	रोच्यम्	१६४
रिरावयिषति	१४४	रस्	१४०	रोट्	१७१
रिवि	१२२	रस्तेषम्	१६१	रोट्ट	१२०

रोहुम्	१९७	लग	१३८	लप्	१२६
रोणी	३१	लग्नम्	१७४	लस्	१२४, १३८
रोपयति	१४२	लघि	११८, १३६	ला	१२८
रोमवान्	१०३	लघिष्ठः	१०८	लाकृतिः	१
रोमशः	१०३	लघीयान्	१०८	लासणिः	६५
रोरुच्यते	१४५	लघुतमः	१०८	लाक्ष्यः	६५
रोषणः	१७६	लघुतरः	१०८	लाचिकः	६७
रोहर्यात्	१४२	लजि	१३६, १३६	लाक्ष्	११८
रोहिणः	७८	लजी	११६	लाघृ	११८
रोहिणित्वम्	५४	लज्	११६, १४०	लाङ्गलप्रहः	१६४
रोहिणी	८, २०, ७८	लट्	१२०	लाङ्गलीषा	२, २१६
रोहिणीषेणः	५६	लड	१३६	लाङ्गुलिया	६
रोहिणीसेनः	५६	लडि	१२५	लाङ्गुलिनी	६
रोहिता	२०	लड्	१२०	लाछि	११६
रोह्यै	१९७	लप्	१२१	लाजि	११६
रोचनिकः	६७	लवि	१२१	लाज्	११६
रोड्	१२०	लम्यम्	१६२	लाट	५४
रोणः	७२	लमकाः	६४	लापयते	१४२
रोहिणः	७८	लम्भकः	१६५	लाप्यम्	१६४
रोहिणेयः	४१	लयः	१८८	लामः	१८८
लक्षणोरुः	२२	लव्	१२१	लाम्	१४१
लच्	१३६, १३८	लत्	१२०, १३८	लामकायनाः	६४
लक्ष्मणः	१०२	ललाटन्तपः	१६६	लालाटिकः	८७
लक्ष्मीः	१०	ललाटम्	२१६	लालामिकः	८७
लक्ष्मीच्छाया	५	ललाटाक्ष	२२	लावणिकः	८७
लक्ष्मीतरा	५३	ललाटिका	८०	लावणिकी	१६
लक्ष्मीम्—	१७६	लवः	१८२, १८४	लाव्यम्	१६४
लक्ष्मीवान्	१०२	लवकः	१६७	लापुकः	१७६
लक्ष्मीहरिम्—	२४	लवणकुत्प	३७	लिख	१६०
लक्ष्म्याः—	२	लवणकुत्वा	३७	लिखित्वा	१६०
लक्ष्म्या	२३	लवणः	८६, १६६	लिख्	१३३
लखि	११८	लवणक्कारम्	१६१	लिगि	११८, १३६
लख्	११८	लवणम्	८६	लिट्	११०
लगि	११८	लवणवान्	१०३	लिप्	१२४
लगितम्	१७४	लवित्रम्	१८१	लिप्सते	१४४
लगे	१२४	लम्यम्	१	लिम्पः	१६६

लिलावयिषति	१४४	लृप्	१२३, १३७	वक्ष्यन्ती—	२०७
लिलिखिषति	१४३	लेखा	१८६	वख्	११८
लिष्	१३०, १३४	लेखित्वा	१६०	वगाहः	१७
लिह्	१२८	लेपु	१२१	वगि	१२८
ली	१३५, १३६	लेहः	१६७	वधि	११८
लीङ्	१३०	लोकपृणः	५५	वह्वयम्	१६४
लीढः	७	लोकायतिकः	२०	वङ्ग	४६
लुचित्वा	१८६	लोकृ	११८, १३६	वङ्गाः	७२
लुजि	१३६	लोके—	३०	वचित्वा	१८६
लुञ्चित्वा	१८६	लोचु	११८, १३६	वच्	१२०
लुञ्च्	११४	लोडु	१२०	वज्	११६, १३७
लुटि	१२०	लोभित्वा	१६०	वज्रस्य—	३३
लुट्	१२०, १२१, १२४	लोमवान्	१०३	वञ्चयते	१५५
लुट्	१३३, १३६	लोमशः	१०३	वञ्चित्वा	१८६
लुट्	१२०, १२४	लोलुवः	१६६	वञ्चु	११६, १३५
लुठि	१२०	लोलुपम्—	११२	वञ्च्यम्	१६४
लुठि	१२०	लोष्टग्राहम्—	१६२	वञ्जुला	११
लुप्	१३६	लोहितकः	११३	वटकिनी	१०३
लुष्टाकः	१७६	लोहितकल्पावः	२१६	वटजः	६२३
लुधि	११७	लोहितगङ्गम्	३२	वटि	१३०, १३७, १४०
लुनोहि—	११५	लोहितध्वजाः	१११	वटिभः	१०५
लुप्	१२१	लोहितागिरि	१५	वट्	१२०, १२४, १३६, १४०
लुप्	१३४	लोहितायति	१५६	वठि	११६
लुवि	१२१, १३७	लोहितायसम्	३८	वट्	१२०
लुब्धः	१४४	लोहितिका	११३	वठि	११६, १३७
लुब्धाः	१६०	लोहिनिका	११३	वण्	१२१
लुभितः	१७४	लोष्टृ	११६	वतः	१७४
लुभित्वा	१६०	लौकिकः	६३	वत्स	४१
लुभ्	१३१, १३२	लौल्वलिः	६१	वत्सतरः	११०
लुलविथ	२१६	लौहितीकः	१११	वत्सतरार्णम्	२
लूः	६	लौहित्यायनी	१६	वत्सपालः	२२३
लून्	१३५	वंशकः	१०६	वत्समुखः	२२६
लूनः	१७३	वकि	११८	वत्सलः	१०२
लूनिः	१८५	वक्रदण्डौ	४८	वत्सशालः	७८
लूनीः	६	वक्षे—	१६७	वत्साः	४६, ६२
लूयते	२१२	वक्ष्	१२३	वत्सा	१७

वत्सान्—	१५६	वरुणिकः	१०६	वर्ष	१२३
वत्सीयः	२६	वस्तारम्	२०६	वर्ष्यम्	१६४
वदनम्	२१६	वरुडः	२१६	वर्ह	१२३, १२७
वदावदः—	१६६	वरुत्रीमः	२०६	वरुभी	५४
वदि	११७	वरेजः	५२	वरुयवती	५७
वद्	१२७, १२६	वर	१३६	वरुलिनः	१०५
वधकः	१६५	वर्यम्	७६	वरुलिमः	१०५
वधोम्	२०५	वर्यस्याः	१६६	वरु	१२१, १२५
वधेन—	१८५	वर्च्	११८	वरुक्	१२६
वध्यः	६४, १६२	वर्यका	१८	वरुल्	११८
वनम्	११	वर्यतः	१७३	वरुभू	१२१
वनवासी	५१	वर्यसङ्घाटः	१७०	वरुल्	१२१
वनस्पतिः	५६	वर्णाभ्रमेतरे	८	वरुह	१२३
वनस्पतिम्—	२२७	वर्णिका	१८	वर्शवदः	१६६
वनस्थ—	२६	वर्णी	१०५	वशः	१८४
वनात्—	२७	वर्यु	१७	वशू	१२६
वनु	१३५	वर्य	१३६, १४१	वश्यः	८८
वने—	२४, २१५	वतका	१८	वषट्—	१६, २६
वनेकसेरुकाः	३४	वर्तनः	१७८	वष्	१२३
वनेषु—	२०३	वर्तिका	१८	वष्क्	१४०
वन्	१२१, १२५	वर्तिता	१७५	वसनक्नोपम्	१६१
वन्तिः	१८६	वर्तित्वा	१६०	वसन्—	१६१
वन्दना	१८७	वर्तिष्णः	१७७	वसन्तः	२१६
वन्दारः	१८०	वर्त्म	१८१	वसन्ता—	२०४
वन्धा	७०	वत्स्यति	१५६	वसन्तीह—	१५८
वमी	१७६	वर्धनः	१७१	वसव्यः	१६६
वयङ्गमः	४०	वर्धन्तु—	१६७	वसि	१३७
वयस्यः	८८	वर्धमानम्—	२१८	वसिता—	१७६
वय्	१२१	वर्धिष्णुः	१७७	वसिष्ठः	८०
वरः	१८४	वर्ध	१३७	वसिष्ठम्	६७
वरजः	५२	वर्मती	३६	वसिष्ठस्य—	२०
वरणा	७२, १८७	वर्मम्	१८४	वसिष्ठाः	६३
वरणावती	२२	वर्षाभिः	६, १०	वसु	१३१
वराकः	१७६	वर्षिष्ठः	१०८	वसुधितम्—	२०७
वरिष्ठः	१०८	वर्षिष्ठे—	२०२	वसुनः	२०६
वरुणम्—	२१५	वर्षेजः	५२	वसुभिः—	२०२

वसुनि—	२०१	वाग्मि	१४	वात्	१४०
वस्	१२७, १२८, १३६, १४१	वाग्मी	१०५	वात्या	७०
वस्क्	११८	वाग्यामः	१६६	वात्सशालः	७८
वस्त्रक्रीती	२१	वाग्हरिः	४	वात्स्यः	६२
वस्त्रचीरम्	२२६	वाङ्मनसे	४७, ५०	वादयते	१५६
वस्त्रच्छन्नः	२०६	वाङ्मयम्	८४	वानरश्वा	३८
वस्त्रच्छन्ना	२१	वाचंयमः	१६६	वापः	१६७
वस्त्रम्	१५५	वाचस्पतिम्—	२१०	वापयति	१४२
वस्त्रान्तरः	२२८	वाचा—	२१७	वापिः	१८७
वस्त्रिकः	६३	वाचाटः	१०५	वाप्यम्	१६४
वहंलिहः	१६६	वाचालः	१०५	वाप्यश्वः	३
वहः	१८८	वाचिकः	१०६	वामः	१८२
वह	६१	वाचिकम्	११३	वामदेव्यम्	६७
वहेगडुः	४६	वाचोयुक्तिः	५२	वामरथ्याः	७१
वह्	१२७	वाच्यम्	१६४	वामोरुः	२२
वह्यम्	१६२	वाञ्छि	११६	वामोरुभार्यः	४१
वांशकठिनिकः	८८	वाजपेयिकः	७०, ८०	वायवे—	१६७
वांशभारिकः	६३	वाजपेयिकी	६७	वायव्यम्	६८
वाधिकः	६२	वाज्यति	१४२	वायसविद्यकः	७०
वाः	१४	वाजसनेयिनः	१६८	वायुःकरोति	५
वां	१६, १२८, १८१	वाज—	२१३	वायुकः	१०१
वाकिनकायनिः	६५	वादरम्	८२	वायुदेवदत्तकः	१०६
वाकिनिः	६५	वाणिज्यम्	६७	वाय्वग्नि	४७
वाक्	१४, १८०	वाणो	१०	वारणावत	२७
वाक्कलहः	३२, २२८	वातकी	१०५	वारत्रम्	६०
वाक्त्वचम्	४८	वातच्छेद्यम्	३३	वारश्चः	८२
वाक्त्वेषम्	४८	वातण्डः	६२	वारवन्तोयम्	१०१
वाक्पतिः	२२०	वातण्डी	६२	वाराणसी	४०
वाक्यम्	१६४	वातण्ड्यः	६२	वाराणसेयम्	७३
वाक्यस्य—	१८४	वातण्ड्यायनी	६२	वाराहकः	७२
वाक्श्च्योतति	४	वातप्रमी	६	वाराही	२०१
वाञ्छि	१२३	वातमजाः	१६६	वाराह्या	६६
वाञ्छि	११८	वातवती	१०५	वारि	११
वागाशीर्दत्तः	१०६	वाताय—	२६	वारिपथिकम्	५५
वागीशः	४	वातिकम्	६२	वारुडकम्	८२
वाग्धरिः	४	वातूलः	१०३, १०४	वारुडकिः	६१

वार्कण्यः	१११	वास्तव्यः	१६१	विचतुरः	५०
वार्णवम्	७२	वास्त्यम्	७६, ११०	विचचिका	१८४
वार्णा	१६३	वास्त्यी	११०	विचर्षणिः	२१०
वार्तः	१०३	वास्त्रः	६७	विचार्य	१६०
वार्तनः	७५	वास्त्यम्	२०४	विचित्रा—	२८
वार्तिकः	७०	वास्त्रिकः	८५	विचिर्	१३४
वार्त्रघ्नम्	१०४	वाहघट्	१७१	विच्छ्	१३४, १३६
वार्द्धकम्	६६	वाहयति	२४	विजावा	१७६
वार्धुषिकः	८६	वाहितम्	१७४	विजिता	१६५
वार्धम्	६०	वाह्यम्	१६२	विजिर्	१२६
वार्मतेयः	८१	विशः	१०१	विद्	१३, १२०
वार्षिकम्	७७	विशकः	६१	विद्शूद्राः	४७
वार्ष्यायिणिः	१५	विशतिः	६४	विहम्	१४१
वार्हस्पत्यम्	६८, ६६	विशतिकः	६१, ६१	वितलिरे—	१०३
वावदूक्या	६५	विशतितमः	१०१	वितत्य	१६०
वाशु	१३०	विशम्	१०१	वितस्ता	६
वाष्पम्—	१२४	विशिनः	२००	वितस्तिः	६२, १००
वासःचौमम्	५	विकटम्	६६	विति	३
वासतेयी	२६	विकत्यी	१७८	वित्तः	१७४
वासनम्	६१	विकाकुत्	४५	वित्तम्	१७४
वासन्तम्	७६	विकाषी	१७८	विष्	११७
वासन्तकम्	७६	विकिरः	५८	विदन्—	१७७
वासन्तिकः	७१	विक्रयते—	१५८	विदर्भ	५१
वासन्त्यः	७८	विक्रितः	१६६	विदामकन्	१६४
वासयते	१५६	विक्रयिकः	८५	विदारी	८४
वासवदत्तिकः	७१	विक्रामति—	१५३	विदितः	१७३
वासवदत्तेयः	६२	विश्रावः	१८२	विदितम्	१७४
वासस्तनुते—	२१६	विश्वः	४३	विदित्वा	१८६
वासुदेवपञ्चः	२२६	विश्यातुम्	१६८	विदुरः	१७६
वासिः	१८७	विश्वे	१६८	विदुषितरा	५३
वासिष्ठः	६२, ७१	विगण्य	१६०	विदुषी	१७७
वासिष्ठिकः	८०	विगार्दभरथिकः	२२८	विदुष्यान्	१०२
वासिष्ठी	६६, ८०	विनः	४३	विदेह	४३
वासुदेवः	६२, ११०	विघनः	१८५	विद्	१२८, १३०, १३४, १३८
वासुदेवकः	८१	विघसः	१८४	विद्लु	१३४
वास्	१४०	विघ्नः	१८४	विदमा—	२०३, २०६

विद्माहि—	२०५	विप्रकृष्टादागतः	३३	वित्वसप्तरात्रः	२२४
विद्यमाननासिका	२२	विप्रत्राकरोति	११४	विवक्	१३
विद्या	१८६	विप्रवदन्ते	१५४	विवधिकः	८४
विद्यावर्णः	६६	विप्रसात्—	११४	विवरिषति	१४४
विद्याचुम्बुः	६६	विप्राय—	२५, २६	विवर्तिषते	१४३
विद्यावान्	१०२	विप्रुषः	१२	विवर्धिते	१४३
विद्युत्	१८०	विभाकरः	१६८	विविद्	१३
विद्युत्वान्	१०३	विभाषम्	१६८	विविदिषति	१४२
विद्वत्कल्पः	१०८	विभीषणः	१६६	विविदिवान्	१७६
विद्वत्तरा	५३	विभुः	१८०	विविद्धान्	१७६
विद्वद्देशीयः	१०८	विश्वयी	१७६	विद्वृतासिः	४६
विद्वद्देश्यः	१०८	विभ्राक्	१२	विद्वृत्सति	१४४, १५६
विद्वद्विल्लसति	१	विभ्राटः	१८०	विद्वृत्सिता	१६६
विद्वान्	११, १३	विभ्राट्	१२	विवेको	१७८
विषत्ते—	२१७	विम्बी	१६८	विशङ्कदम्	६६
विषाय	१६०	विमलद्यु	१४	विशयः	१८३
विधिवत्	६६	विमलापम्	४६	विशयी	१६६
विधुन्तुदः	१६६	विमार्गः	१८८	विशसितः	१७४
विष्	१३२	विम्बोष्ठः	२	विशस्तः	१७४
विना	१६, ६६	वियमः	१८४	विशाखा—	१६३
विनाशकः	१७८	वियामः	१८४	विशाखानुराधाः	४०
विनीयः	१६३	वियूय	२०३	विशालम्	६६
विनेयम्	१६३	विरजीकरोति	११४	विशालिकः	१०६
विन्दः	१६६	विरमति	१५५	विश्रृण्विरे	१६७
विन्दुः	१८०	विरहीकरोति	११४	विष्	१३४
विन्ध्य	१२	विराजम्	२०५	विस्तः	४, १८५
विन्नः	१७३, १७४	विरिन्धः	१७४	विश्रावः	१८२
विपणिः	२१६	विरुद्धभोजनीयम्	८१	विश्वः	८, २१५
विपत्	१८६	विरेमितम्	१७४	विश्वकर्मणा	२०३
विपत्तिः	१८६	विलाता	१७	विश्वकर्मा	२२४
विपद्यम्	४०	विलापयति	१४२	विश्वके	१०६
विपशुः	२२६	विलाय	१६०	विश्वजनीनम्	६०
विप्लव	२०३	विलापी	१७८	विश्वजनीयम्	६०
विपण्यम्	१६३	विलासी	१७८	विश्वदेवः	४५, २२४
विपाशा	६	विलिनयति	१४२	विश्वपाः	६
विपुयः—	१६३	विलीय	१६०	विश्वमित्रः	५७

विश्वम्	१७६	विष्णुना—	२८	वीर	१४०
विश्वम्भरः	१७०	विष्णुपदम्	२१६	वीवधिकः	८६
विश्वम्भरा	१७०	विष्णुपुरम्	४६	वुस्	१३१
विश्ववाट्	११	निष्णुभूते—	२१६	वृ	१३५
विश्वसुट्	१२	विष्णुम्—	१८६	वृकः	२१५
विश्वाची—	२०३	विष्णुश्रुतः	२२७	वृकगर्तीयम्	७६
विश्वानरः	५७	विष्णुस्त्राता	५	वृकतिः	४१
विश्वामित्रः—	५७, २२८	विष्णुइमौ	३	वृकभीः	३३
विश्वायु	२३०	विष्णुदयः	३	वृकभीतः	३३
विश्वाराट्	१२	विष्णो इति	३	वृकभीतिः	३३
विश्ववसुः	१२	विष्णोऽव	३	वृकवञ्ची	२२३
विश्वोदेवाः	२२४	विष्यः	८८	वृकोदरः	२२४
विश्वेदेवासो	२०५	विष्णु	१२६	वृक्	११८
विश्वैः—	२१३	विष्वक्सेनः	५६	वृक्णः	१७३
विषपुष्पःकः	१०२	विसारः	१८२	वृक्षकः	१०६
विषमयम्	८१	विसारो	११२	वृक्षम्—	२३, २४, ३८, ११५
विषमरूप्यम्	८१	विसृ	१२४	वृक्षस्य—	११३
विषमस्थः	१६७	विसृपः	१७	वृक्ष	१२३
विषमोयम्	८१	विस्	१३१	वृह्	१२५
विषमेणैति	२५	विस्तारः	१८३	वृजि	४३, १२८
विषयो	१६६	विस्तृतम्	६६	वृजिकः	७६
विषवृक्षः—	२३	विस्पष्टकटुकम्	२२०	वृजिगार्हपतम्	२२१
विषु	१७, १२३	विस्पष्टग्राहणः	२२०	वृजी	१३४, १३६
विषुणः	१०३	विस्माययति	१४२	वृज्	१३१, १३६
विष्—	१३६	विस्माययते	१४२	वृढः	७
विष्कभिते—	२०५	विस्त्रम्भी	१७८	वृण	१३३
विष्किरः	५८	विहगः	१७०	वृतः	१७३
विष्क्	१३८, १४१	विहङ्गः	१६६	वृत्	१२४, १३०, १३६
विष्टरः	१८४	विहङ्गमः	१६६	वृत्तबाहूः	२२
विष्टकर्णः	५६	विहवः	१८५	वृत्तम्—	१७५
विष्टारपक्षितः	१८३	विहायसा	१६	वृत्तेन—	११३
विष्टलम्	१७६	वीकाशः	५७	वृत्यम्	१६३
विष्ण इति	३	वीदम्—	२११	वृत्या	१६२
विष्ण इह	१	वीरपत्नी	२०	वृषा	१५
विष्णवे	१	वीरपुरुषकः	४१	वृढः	१५४
विष्णुः	१७२	वीरुषः—	१७७, १६६	वृढकुमारी	२२४

वृद्धोक्तः	५०	वेदम्—	२४, २६	वैधूमाग्नी	७२
वृधु	१२४, १३६	वेदयः	१६६	वैनतेयः	६२, ६३
वृध्यम्	१६३	वेदवित्	१७१	वैनयिकः	११३
वृन्दारकः	१०४	वेदार्थम्—	२४	वैमात्रेयः	६२
वृण्	१३१	वेष्टाः	१४	वैमुक्तः	१०१
वृषगोयुगम्	१००	वेपथुः	१८५	वैयाकरणः	७०, ८०
वृषणश्चः	१६३	वेलृ	१२२	वैयाकरणाखसूचिः	३५
वृषलपतिः		वेल्	१४०	वैयाकरणभार्यः	४२
वृषलपतिः	२०	वेल्ल्	१२२	वैयाकरणहस्ती	२२२
वृषलपत्नी	२०	वेवीङ्	१२६	वैयाघ्रः	६७
वृषलस्य—	२८	वेव्यत्	१३	वैयासकिः	६१
वृषली	२२	वेशः	१८२	वैयुष्टम्	६६
वृषाकपायी	२०	वेशोभग्यः	१६६	वैरङ्गिकः	६४
वृषीयति	२०६	वेष्टृ	११६	वैरागिकः	६४
वृषु	१२४	वेष्ट्यः	६६	वैवधिकः	८६
वृष्	१३८	वेसु	१२४	वैशान्तीम्यः—	१६६
वृष्टिः	१५६	वैशतिकम्	६१	वैशस्त्रम्	८७
वृष्टिम्—	१६६	वैकर्ण्य—	६२	वैशालः	६६
वृष्टेः	४१	वैकर्णिः	६३	वैशाली	४३
वृष्णि	५५	वैकर्ण्येयः	६३	वैश्वजनीनः	८६
वृष्णिकुमाराः	२२०	वैकुण्ठम्—	१७६	वैश्वघेनवम्	७६
वृष्णो—	२०२	वैजविकः	६२	वैश्वा	२१२
वृष्यम्	६०	वैजवापीयः	८३	वैश्वामित्रा	६२
वृसीः	५६	वैष्णुकीयम्	७६	वैश्वामित्री	६६
वृहदमम्	२२३	वैतनिकः	८५	वैसारिणः	११२
वृहस्पतिः	५६, २२७	वैत्रकः	७३	वोढव्यः—	१६५, १६२
वृहस्पतिकः	१०६	वैत्रकीयम्	७६	वोढा	१६५
वृम्	१३५	वैत्रकीयाः	७३	वोरवा	२११
वेम्	१२७	वैदः	८३	वोधिः	६२
वेणुकः	१०६	वेदम्	८१, ८३	वोषट्	१६, १७
वेणु	१२६	वेदभृत्यकः	१११	व्यच	२१६
वेतनेन	२६	वेदमी	६६	व्यचक्षयत्—	२१२
वेत्रवती	११७	वेदिकी	७५	व्यच्	१३२
वेथु	११७	वेदिषम्	७१	व्यजः	१८८
वेदना	१८७	वेदी	२२	व्यथ्	१२४
वेदपुण्यम्	२२७	वेदूर्यः	८१	व्यधः	१८४

व्यध्	१३०	व्रचित्त्वा	१६०	शक्नु	१३२
व्यन्तः	२२६	व्रतीनः	६६	शक्तिग्रहः	१६८
व्यप्	१३७	व्री	१३५	शक्नोति—	१८१
व्यय्	१२६, १३७, १४०	व्रीहयः	८४	शक्यम्	१६२
व्यर्णः	१७५	व्रीहिकः	१०४	शङ्क्यम्	८६, ६०
व्यषीदत्	२१०	व्रीहिभिः—	२३२	शङ्कुकर्णः	२२४
व्यसु	१२६	व्रीहिमती	६७	शङ्कुकर्णी	२२
व्यहन्	१०८	व्रीहिमयः	८४	शङ्कुष्माः	६
व्याकरणकः	११०	व्रीहियवम्	४७	शङ्कुनूपुरिणी	१०५
व्याकरणसमापनीयम्	६६	व्रीहियवाः	४७	शङ्कुपुष्पी	२२
व्याघ्रः	२१५	व्रीहिवापाणि	५८	शचीपतिम्	२२७
व्याघ्रकः	१०६	व्रीहीन्—	१५५	शच्	११८
व्याघ्रपात्	४४, ४५	व्रीहम्	८४	शट्	१२०
व्याघ्री	३८	व्रीहेयम्	६८	शठ्	१२०, १३६, १३८, १३९
व्याङ्गिः	८५	व्रीह्यस्	१३७	शडि	११६
व्याङ्गिशाला	२२३	व्रीह्ययति	१४२	शण्	१२४
व्याङ्ग्या	६६	शंकरा	१६८	शतकम्	६०
व्यादाय	१६१	शंकुलाखण्डः	३२	शतचक्रं—	१
व्याधः	१६७	शंतिः—	१०५	शतद्रुः	१८०
व्याधिषातः	२१४	शंब्दः—	१०५	शतधनुः	४४
व्याभाषकः	१७८	शंबदः	१६८	शतधन्वा	४४
व्याययति	१४२	शंभम्यते	१५७	शतन्दायी	१८६
व्यावक्रोशी	१८३	शंसु	१२४	शतपथिकः	७१
व्यावहारकः	८५	शंस्थः	१७१	शतपथिकी	७१
व्यावहासी	१८३	शक	२६	शतपुष्पा	२१६
व्याहरणकृच्छ्रम्	२१६	शकः	६६	शतमिषक्सेनः	५६
व्युष्	१२६, १३१, १३७	शकटिः	२१, २१६	शतमान	६१
व्यूढोरस्कः	४५	शकटी	२१, २१६	शतमानम्	६१
व्येम्	१२७	शकन्धुः	२	शतमूर्त्ति	२०
व्रजः	१८८	शका	१०, १८	शतम्—	२३, २६, ६३, १५३, १८६
व्रज	३४	शकि	११८	शतसद्रियम्	६८
व्रजति	१६१	शकुना—	२०३	शतरुद्रीयम्	६८
व्रजम्—	२३, २६	शकुत्	१५	शतस्य—	२८
व्रजि	११६	शकुत्करिः	१६६	शतात्—	२७
व्रज्	११६, १३७	शकुत्कारः	१६६	शतानि	१२
व्रज्या	१८१	शक्	१३०	शतिकः	८४, ६२, ६३

शतेन—	२५, २६, २७, १६२	शमीदृषदम्	४८	शललम्	२१६
शत्यः	२३, ८४, ६२, ६३	शमीम्—	२०१	शलाकापरि	३१
शत्यम्	६०	शमीरः	१०६	शलाकाव्यवहारः	२८
शत्रुघातः	१७०	शमु	१३१	शलालुकः	८७
शत्रुञ्जयः	१७०	शम्	१६, १२५, १३८	शलालुकी	८७
शत्रुनिघ्नानः	१७७	शम्बाकरोति	११४	शल	१२१, १२५
शत्रुन्तपः	१७०	शम्ब	१३६	शलम्	१२१
शत्रुसहः	१७०	शम्भवः	१६८	शल्व	१२४
शत्रुहाताः	१०४	शम्भुः	६, १८०	शलप्लुतम्	२२७
शत्रुमाधि—	१५३	शम्भू राजते	६	शल	१२४
शत्रुहः	१७०	शम्यते—	१५७	शलव—	२१३
शत्रून्—	२३, २६	शयाना—	१७७	शलवत्	१६
शद्लु	१२५, १३४	शयालुः	१७६	शलवदकरो—	१५८
शद्रुः	१७६	शयितः	१७४	शलप्	१२३
शधु	१२६	शयितम्	१७६	शलकुलीमयम्	११२
शनैस्	१५	शयित्वा—	१८६	शलसु	१२४
शप्	१२७, १३०	शय्यो—	१६२	शलस्त्रम्	१८१
शप्यम्	१६२	शय्यते	१५६	शलस्यम्—	१६२, १६३
शफोरुः	२२	शय्या	१८६	शांशपश्चमसः	८०
शबराः	१११	शरः	१८४	शाकजाम्बुकः	७५
शब्दकारः	१६६	शरजः	५२	शाकटः	८८
शब्दनः	१७८	शरदः—	१६७	शाकटायनपुत्रः	२२६
शब्दम्—	१५४	शरदण्ड	५८	शाकटिकः	८५
शब्दानाम्—	२८	शरदिजः	५२	शाकपणः	१८४
शब्द	१३८	शरमकः	१०६	शाकपार्थिवः	३५
शाम	६२	शरण्यः	८६, १२०	शाकपुति	३१
शामः	१००, १८२	शरमयम्—	८४, १६८	शाकम्मरी	५६
शामकः	१६५	शराहः	१८०	शाकलः	६७, ८३
शाममात्रम्	१००	शरावती	५७, २१४	शाकलिकः	६७
शमितः	१७५	शरेजः	५२	शाकुनिकः	८६
शमिता	२०३	शर्करा	१६, ७२	शाकुलिकः	८६
शमित्वा	१६०	शर्द्धञ्जहाः	१६६	शाक्तिको	१६
शमिनितिरा	१७७	शर्वरी	१८	शाक्तिकः	८७, २०६
शमिनीतरा	१७७	शब्	१२१	शाखु	११८
शमिष्ठलम्	१७६	शब्	१२२	शाख्यः	११०
शमो	१७७	शर्यणावता	३३	शाटघायनीनः	८२

शाङ्	१२०	शार्कराधा	२३	शिवि	११८
शाण	६१	शार्करिकम्	७२	शिवि	१२८
शाण्डिक्यः	८१	शार्ङ्गधन्वा	४४	शिव्	१३१
शाण्डिसूदम्	२२६	शार्ङ्गरव	२२	शिट्	१२०
शातयति	१४२	शार्ङ्गञ्जयः	४	शितः	१७५
शातः	१७५	शार्ङ्गिन् —	५	शितिः	२०, २१५
शातभिषजः	७८	शार्ङ्गि —	५	शितिककृत्	२२६
शादयति	१४२	शार्ङ्गी	१२	शितिकण्डः	२२५
शाद्वलः	७२	शालङ्कायनाः	१११	शितिपादः	२२६
शान्	१२७	शालपर्णी	२२	शितिमसत्	२२६
शान्तः	४	शालविलम्	२२४	शित्यसः	२२६
शान्तः	१७५	शाला	२१४	शिनीवासुदेवाः	२३०
शान्तातिः	२००	शालालु कः	८७	शिरभ्पदम्	६
शान्त्वाः	१६०	शालालुकी	८७	शिरः—	१६१, १६२
शान्दिकः	८६	शालावत्यः	१११	शिरस्थति	६०
शामीलम्	८३, ८४	शालीनः	६६	शिरस्था	६०
शामीली	८३	शालीनान्ते	१२	शिरीषवणम्	२७
शामीवत्यः	११७	शालीयः	७४	शिरोतिः	१८७
शाययति	१४१	शालेयम्	६८	शिलेयम्	११०
शायिका	१८७	शाल्मलीकीयः	७६	शिल्	१३३
शारः	१८२	शाश्वतीयः	७४	शिवः	११०
शारदम्	६५	शाङ्कुलिकम्	११२	शिवएहि	२
शारदं दधि	७७	शासत्	१३	शिवकेशवौ	४६
शारदका—	७८	शासु	१२६	शिवच्छाया	५
शारदाः शालयः	७८	शास्त्रकृत्	१७२	शिवतातिः	१६६, २००
शारदिकः—	७७	शास्त्रे—	१५३	शिवपुरम्	२२४
शारदिकम्—	७७	शास्त्रो—	१५३	शिवम्—	१७६
शारद्वतः	६१	शिक्ष कः	७१	शिवा—	२२५
शारद्वतायनः	६१	शिक्षति	१४४	शिवायोनमः	२
शाराव—	६७	शिक्षा	२१०	शिवेहि	२
शारिकावणम्	५७	शिक्षा	१२३	शिवोऽर्घ्यः	६
शारिकृद्भः	४३	शिक्षा	२१, २१४	शिवोबन्धः	६
शारीरकीयः	८१	शिक्षावलः	१०४	शिक्षत्सति	१५४
शार्करः	१०३	शिक्षावल	४३	शिक्षायिषते	१५४
शार्करम्	७८, ११०	शिक्षावलम्	७२	शिशुः	१६
शार्करकम्	७२	शिक्षावान्	१०३	शिशु क्रन्दोयः	८१

शिशये	२१८	शुक्लः	१०२	शुम्	१२१, १२४, १३२
शिश्रीषति—	१४३	शुक्लकर्णः	२२४	शुभ्राल्पः	१०८
शिश्वाययिषति—	१४४	शुक्लता	४१	शुभ्रिका	१६
शिष्	१२३, १३६	शुक्लत्वम्	४१	शुम्भ	१२१, १३२
शिष्णु	१३४	शुक्लशुक्लः	११५	शुल्क्	१३७
शिष्यः	१६३	शुक्लशुक्लम्	११५	शुल्व	१३७
शीकृ	११८	शुक्ला	२२, २३२	शुभ्रवान्	१७६
शीक्	१३६	शुक्लिमा	६७	शुश्रूषते	१४४, १५४
शीङ्	१२८	शुक्लीकृत्य	३७	शुष्	१३०
शीतकः	१०२	शुक्लीभावः	५४	शुष्कः	१७३
शीतन्या	२१६	शुचिः	२१	शुष्कगोमयेण	५८
शीतभोजी	१७१	शुचिर्	१३०	शुष्कमुखः	२२४
शीतम्	१७३	शुचीभवति	११४	शुष्कपेषम्—	१६१
शीतालुः	१०४	शुच्	११८	शुष्की	६
शीतोदकम्	२२४	शुच्यो	१२२	शूद्रकः	१०६
शीतोष्णम्	४७	शुठि	१२०, १३७	शूद्रा —	१७
शीतोष्णे	४७	शुठ्	१२०, १३६	शूद्राभार्यः	४२
शीघ्रपी	१६८	शुण्डारः	१०६	शूद्री	१८
शीनम्	१७३	शुतुद्रु—	६, २११	शूनः	१७४
शीभृ	१२१	शुद्धधीः	६	शून्यम्	८६
शीर्णः	१७३	शुध्	१३०	शूरसेनी	६६
शीर्षकः	६०	शुनः—	२२७	शूरी	१३०
शीर्षघाती	१७०	शुनःपुच्छः	५३	शूर	१४०
शीर्षच्छेद्यः	६४	शुनःशेषः	५३	शूर्प	६१
शीर्ष्यः	२०१	शुनम्—	२००	शूर्पणखा	२२
शीर्षण्याः	६०	शुनश्चिच्छेपम्	२१८	शूर्परिक	५१
शीलितः	१७६	शुनासीरीयम्	६८	शूर्प	१३७
शील्	१२२, १४०	शुनासीर्यम्	६८	शूल्	१२२
शुकम्	१७	शुनिन्धयः	१६६	शूल्यम्—	६७
शुकवकम्	४७	शुनोलाङ्गलः	५३	शूष्	१२३
शुकवकाः	४७	शुन्	१३३	शृङ्खलकः	१०२
शुकेषु—	२१५	शुन्वच्चम्	१६५	शृङ्गारकः	१०४
शुक्	११८	शुन्ध्	११८, १३६	शृङ्गिणः	१०४
शुक्तिमान्	११	शुन्यम्	८६	शृणुधी—	२०४
शुक्रामन्थिनौ	२२७	शुभंगिका	१६	शृणोत—	२०३, २०५
शुक्रियम्	६८	शुभंयुः	१०५	शृतम्	१७५

शुभु	१२४, १३८	शौचम्	६८	अत्करोति	११४
शु	१३५	शौचिवृत्तौ	६६	अधि	११७
शेलु	१२२	शौष्ट	१२०	आयत्वा	१८६
शेवलिकः	१०६	शौण्डिकः	८०	अय् १२५, १२६, १३६, १४०	
शेवृ	१२२	शौद्रायण	१७	अद्धा	१८७
शेश्यितः	१७४	शौनकः	६१	अन्यति	१५८
शेषम्—	१७६	शौनकायनः	६१	अन्यना	१८७
शै	१२६	शौनकिनः	८२, १६८	अन्यत्वा	१८६
शैखावत्यः	१११	शौनकीया	१६८	अन्य्	१३५, १३६
शैग्रवाः	६३	शौभनेयः	६२	अमी	१७७
शैवः	७०, ७१	शौभ्रेयः	६३	अम्मु	१२६
शैखालिनः	८२	शौरिः	६२	अवः	१८२, २२५
शैलेयम्	११०	शौर्यम्	६१	अवणा—	६७
शैलोदा	२८	शौर्यिकम्	६१	अवणोन—	३०
शैवः	६२	शौल्कशालिकः	८०	अविष्टः	७८
शैवपुरम्	७४	शौवस्तिकम्	७४, ७७	आणम्	१७५
शैवरूप्यम्	७४	शौवापदम्	८५	आणिकः	८७
शैर्षच्छेदिकः	६३	श्वी	१३५	आणिकी	८७
शैष्योपाध्यापिका	६८	श्च्युतिर्	११७	आताः—	२०१
शो	१३०	शनः	६	आदवः	१०२
शोकापनुदः	१६८	शनय्	१२५	आदकरः	१६८
शोकापनोदः	१६८	शमाशानिकः	८८	आदम्	६६
शोण	१४	शमील्	१२२	आदिकः	१०२
शोणा—	२१, २२६	श्यामाकाः	२१६	आद्री	१०२
शोणाप्रस्थः	२२३	श्यालपुत्रः	२२६	आयः	१८२
शोणी	२१	श्यावदन्	७५	आयम्	६८
शोण्ट	१२१	श्यावदन्तः	४५	आयसम्	८०
शोभनः	२०८	श्येनः	१५३	आवणः	६८, ७३
शोभनकर्णः	५६, २२४	श्येनचिक्	१७२	आवणिकः	६८
शोभने	२०६	श्येनी	२१६	आवणी	६७
शोशुभ्यते	१४५	श्येनायते	४२	आवम्—	१६१
शोकम्	८४	श्येङ्	१२७	आविष्टीयः	७८
शोत्रेयी	६६	श्येनम्पाता	७०	अिक्	१२६
शौक्ल्यम्	६७	अकि	११८	अितः	१७३
शौङ्गः	६३	अगि	११८	अिता	२०१
शौङ्गिः	६३	अण्	१२१, १२४, १३१	अिमन्यम्	१७२

श्रियाउद्यतः	१	श्वः—	२३०	श्वेतयते	१४१
श्रिषु	१२४	श्वकि	११८	श्वेता—	२०, २३२
श्रीः	१०, २३	श्वठ्	१३६, १३६	श्वेतच्छत्रिकः	६४
श्रीन्	१२५	श्वपचा	१६६	श्वोवसीयम्	५०
श्रीणाम्—	२०५	श्वपाकः	१६६	षगे	१२४
श्रीपम्	११	श्वभ्र	१३७	षच्	११८, १२७
श्रीमदः	५४	श्वयथुः	१८५	षञ्ज्	१२७
श्रीशः	३	श्वर्त्	१३७	षट्	१३, १२०
श्रीशंल	४८	श्वल्	१२२	षटकः	१०२
श्र]	१२६	श्वल्क्	१३६	षट्	१३३
श्रुतिः	१८५	श्वल्ल्	१२२	षट्ते	४
श्रुषी—	२०४	श्वशुरात्—	२७	षट्सन्तः	४
श्रेणिकृतः	२२१	श्वशुरी	४८	षडङ्गुलिदत्तः	१०६
श्रेणिकृताः	३५	श्वश्रुः	२२	षडिकः	१०६
श्रेयान्	१०८	श्वश्रूश्वशुरी	४८	षडधा	३६
श्रेष्ठः	१०८	श्वःश्रेयसम्	५०	षणु	१३५
श्रेष्ठम्	२१४	श्वनिशम्	४०	षण्	१२१
श्रै	१२६	श्वनिशा	४०	षण्णाम्	४
श्रोणु	१२१	श्वसन्ति	२१२	षण्मास्यः	६५
श्रोत्रियः	१०२	श्वसुर्यः	६४	षण्णगर्भः	४
श्रोत्रम्	६७	श्वस्	१५, १२८	षण्णवतिः	४
श्रीमत्यः	१११	श्वस्तनम्	७४	षद्लु	१२५, १३४
श्रीषट्	१६, १७	श्वस्त्यम्	७४	षघ्	१३२
श्लकि	११८	शवा	१२	षप्	१२१
श्लक्ष्णसकयः	२३०	शवागणिकः	८५	षम्	१२५
श्लगि	११८	शवादष्टिः	८५	षम्भू—	१३६
श्लग्	१२५	शवादन्तः	५७	षस्	११६
श्लाखू	११८	शवानम्—	१५५	षर्व	१२२
श्लाघृ	१२४	शवापदम्	८५	षर्म	११६
श्लिषु	१२४	शवाफलकः	६२, ७१, ८५	षल्	१२१
श्लिष्	१३०, १३६	शवाफलकचैत्रकाः	२२०	षष्टः	१०१, १०७
श्लेषः	१६७	शवामस्त्रिः	८५	षष्टकः	१०७
श्लैष्मिकम्	६२	शवासः	१६७	षष्टिः	६४
श्लोक	११८	श्विता	१२४	षष्टिक्यम्	६८
श्लोणु	१२१	श्विदि	११७	षष्टितमः	१०१
श्वः—	६, १५६, १६७	श्वेतपादः	२२४	षष्टिपथिकः	७१

षष्ठिपथिकी	७१	ष्कमि
षस्ज्	११६	ष्टक्
षह्	१२०, १२५, १३६	ष्टो
षाङ्गुण्यम्	६७	ष्टन्
षाण्मातुरः	३५, ६२	ष्टमि
षाण्मासिका	६५	ष्टम्
षाण्मास्यः	६५	ष्टिष्
षात्षपत्त्विकः	८०	ष्टिष्ट
षान्तच्	१३६	ष्टिम्
षाष्टः	१०७	ष्टोम्
षाष्टिकः	६५	ष्टुच्
षिच्	११४	ष्टुब्
षिब्	१३१, १३६	ष्टुप्
षिट्	१२०	ष्टुम्
षिधु	११७, १३०	ष्टेप्
षिधू	११७	ष्टे
षिवु	१२६	ष्टर्ष
षिल्	१३२	ष्टा
षु	१२६	ष्टल्
षुब्	१३१	ष्टिबु
षुट्ट	१३६	ष्ट्या
षुय	१३६	ष्टिह्
षुर्	१३३	ष्ट्यु
षुह्	१२०	ष्ट्युसु
षू	१३३	ष्ट्युह्
षूङ्	१२०, १२८	ष्ट्यै
षूद्	११७, १३८	ष्टन्
षूमु	१२१	ष्टूप
षूम्मु	१२१	ष्टिम्
षेव्	१२२	ष्ट्वञ्ज्
षे	१२६	ष्ट्वद्
षो	१३०	ष्ट्वक्
षोढन्	१६, ४४	ष्ट्विदा
षोढश	१६	संकर्षणवासुदेवौ
षोढा	३६	संकल
ष्	१२२	संक्रमिता

१२१	संक्रामति	१५३
१२४	संक्षुते	१५४
१२४	संख्यातरात्रः	३८
१२१	संख्याताहः	३८
१२१	संख्याताह्नः	३८
१२५	संगिरति	१५४
१३२	संघुष्टः	१७५
१२०	संचरः	१२८
१२०	संचाव्यः	१६५
१२०	संजिगंसते	१४३
११८	संजिगमिषिता	१६६
१२८	संज्ञापरिभाषम्	४६
१३८	संज्ञः	४४
१२१	संज्वारी	१७८
१२०	संदावः	१८२
१३६	संद्रावः	१८२
१२६	संपत्तिः	१८६
१२६	संप्रधार्य	१६०
१२५	संफला	१७
१२२, १२६	संभवामः	१६८
१२८	संभुः	१८०
१३१	संभूतम्—	२२७
१२८	संभूत्याः—	१६३
१२६	संभावः	१८४
१३१	संमुखीनः	६८
१२६	संयत्	१७१
१३५	संयन्ता	४
१३१	संयमः	१८४
१२७	संयामः	१८४
१२७	संयावः	१८२
११६	संरावः	१८२
१८	संबत्सरः	४
१३०	संबत्सरतमः	१०१
२२०	संबत्सरीणः	२००
१८	संवाह्यम्	१६५
१६६	संशयः	१८३

संशितः	१७५	संज्ञीतिः	१८६	सद्गुः	१७६
संशितम्	१७५	सङ्ग्रहण	१४०	सद्रोणा	५५
संशयानः	१७३	सङ्घः	१८५	सद्वैद्यः	३५
संश्रुतः	२२७	सचक्रम्	३१	सध्र्ययङ्	१३
संसमित्—	२०७	सञ्चित्	४	सनत्	१५
संसर्गि	१८८	सजनपदः	५५	सना	१५
संस्कर्ता	४	सजातीयम्	५५	सनात्	१५
संस्कारजः	१७२	सजूः	१४	सनाथा—	२१६
संस्क्रियते	१५६	सज्योतिः	५५	सनुतर्	१५
संस्तवः	१८३	सञ्छम्भुः	४	सनुत्यः	१५
संस्तावः	१८३	सञ्जीवार्मम्	२२४	सन्ब्राह्मणः	१७७
संस्तुतम् -	२२७	सतः—	२६	सन्तिः	१८६
संस्था	१८६	सतांषष्ठः	३३	सन्तसः	४
संज्ञावः	१६७	सताम्—	२७	सन्षष्ठः	४
संहारः	१८८	सतिः	८६	सन्तसरः	५
संहितोरुः	२२	सतीर्थः	५५, ८६	सन्तच्युतः	४
संय्यन्ता	४	सतृणम्	३१	सन्तः	४
संवत्सरः	४	सत्कृत्यः	३७	सपक्षः	५५
सः—	१२, २६, ११०, २०१, २०२,	सत्पुष्पा	१७	सपत्नी	२०
”	२०५, २२१, २२५	सत्यङ्कारः	५४	सपत्रम्—	११४
सकर्मकः	४३	सत्यभामा	१०६	सपत्राकरोति -	११४
सका	१८	सत्यम्—	२३०, २३१	सपलाशम्	५५
सकृत्	११२, १५५	सत्यः—	२१६	सपुत्रः—	४३, ४५
सक्तुसन्धवः	२२२	सत्या	१०६	सपूर्वया—	२०६
सक्तुन्—	३, १६१	सत्येन—	२०५	सप्त	२००, २१३
सखा	६	सत्येव	७	सप्तश्रृषीणाम्	३
सखिपथः	५०	सत्र	१४०	सप्तकम्	६२
सखी	६, १०, २२	सत्त्वन्तः	१६६	सप्तगङ्गम्	३१
सख्यम्	६७	सत्सु—	२६	सप्तगोदावरम्	५०
सगम्यः	५५, १६६	सदा	१०६	सप्ततिः	६४, २१४
”	२०२	सदीर्घायुः	१०६	सप्तदशः	६३
सगवे	४३	सदृक्	५५, १७१	सप्तर्षयः	३५
सग्विः—	१६४, २०३	सदृक्षः	५५	सप्तर्षीणाम्	३
सङ्कटम्	६६	सदृशः	५५	सप्तरिन्धव	२
सङ्केत	१४०	सदृशश्चेतः	३६	सब्रह्मचारी	५५
सङ्कृतिम्—	२२१	सद्यः	१०६	समवान्	१०६, १४०

सभेयः	१६२	समुपच्छादः	१८८	सर्वकषः	१६६
सम्यः	८६	समुहूर्तम्	५५	सर्वसहः	१६६
समः	८	समुषद्भिः	२०७	सर्वः	८
समवनः	१७३	समूलकापम्	१६१	सर्वकप्रियः	४२
समन्तम्	३२	समूलघातम्	१६१	सर्वकभार्यः	४२
समजः	१८४	समेनेति	२५	सर्वकमीणः	६८
समज्या	१८६	सम्पत्	१८५	सर्वकाम्यति	४२
समदन्ती	४४	सम्पन्नङ्कारम्	१६१	सर्वकारकः	२२४
समन्तः	२२६	सम्पर्क	१७८	सर्वके	१०८
समपायः	२१८	सम्प्रीतिः	१८६	सर्वचमीणः	६८
सममयम्	८१	सम्प्रवदन्ति	१५३	सर्वतः—	२४
समयंकरोति	११४	सम्प्रवदन्ते	१५३	सर्वतन्त्रः	७१
समया	१५, २४	सम्पङ्	१३	सर्वत्रगः	१७०
समयाकरोति	११४	सम्प्राद्	४, १११	सर्वत्रदेशे	१०६
समरूप्यम्	८१	सयूयः	५५, १६६	सर्वदा—	१३, १०६
समर्णः	१७५	सरकः	१६७	सर्वधनी	१०५
समर्यादिम्	१२०	सरजसम्	५०	सर्वधुरीणः	८८
समवश्यानः	१७३	सरणः	१७६	सर्वपधीनः	६८
समवसर्ग्या	१६४	सरयू	८	सर्वपात्रीणः	६८
समस्थः	५२, १६७	सरसिजम्	१७२	सर्वपाञ्चालकः	७८, २२४
समांसमां—	६६	सरस्वती	७, २११, २१२	सर्वप्रदः	१६८
समांसमीन	६६	सराक्षसीका	५५	सर्वबीजी	१०५
समाजः	१६४, १८४	सरालक	३१	सर्वभासः	२२४
समानप्रभृतयः	५५	सर्पसर्प	११५	सर्वमयः	४२
समानमूर्धा	५५	सर्पविलम्	२२३	सर्वमहान्	३३, २२३
समानी	५०	सर्पिकरोति	६	सर्वमा—	२०६
समानोदकीः	५५	सर्पिमिथ्याः	२२८	सर्वयान्त्रिकः	३४
समानोदर्यः	५५, ८६	सर्पिषः	२५, २७, २८, ३३, १५३, १५४	सर्वरात्रः	३८
समापः	४६	सर्पिष्कम्	५	सर्ववेदः	७१, ६७
समाशशालयः	२२२	सर्पिष्करोति	६	सर्वश्वेतः	३३, ४५, २२३
समीधे	१६३	सर्पिष्काम्यति	५	सर्वसेनः	५६
समीनः	६५	सर्पिष्कुण्डिका	५	सर्वसीवर्धः	२२३
समीपम्	४६	सर्पिष्ठमम्	४	सर्वस्मिन्	२६
समीयम्	८१	सर्पिष्ठानम्	१८६	सर्वा	१०, ४२
समुद्गः	१६४	सर्पिष्ठाशम्	५	सर्वाङ्गीणः	६८
समुद्रिया	१६६			सर्वान्नीनः	६८

सर्वाय—	८	सहिता—	१६५	सात्	१६६
सर्वाह्णः	३८	सहितोरुः	२२	सात्यमुश्रो	६६
सर्विकाः	१८, ४२	सहित्रम्	१८१	सात्यमुग्रचा	६६
सर्वीयम्	६०	सहिष्णुः	१७७	सादन्यम्	२००
सर्वे—	१७७, २१३	सहोर्जा—	२०७	साधयति	१४२
सर्पपतैलम्	१००	सहोरुः	२२	साधर्म्यम्	५५
सविता—	१६६	सहू	१२५	साधारणम्	११२
सवित्रम्	१८१	सह्य	१०	साधारणी	११२
सलातुर	२६	सह्यम्	१६२	साधिष्ठः	१०८
सलोमकः	४३	सागरः	२१४	साधीयान्	१०८
सवत्साय	४३	सांग्रहसूत्रिकः	७०	साधुः—	२६, ३०, १५३
सवार्तिकः	७१	सांग्रामिकः	९६	साधुदायी	१७२
सवित्रियः	१०६	सांयुगीनः	८६	साधुया	२०४
सवित्रिलः	१०६	सांराधिनम्	१८३	साध्	१३२
सधम्भुः	७	सांशयिकः	६४	साध्वसि—	१५७
ससखि	५५	सांस्थानिकः	८८	सानु	११
ससुष्ठुभा—	१६३	सांवत्सरम्—	७७	सान्तापिकः	६६
सस्ति	१२६	सांवत्सरिकम्—	७७, ७६	सान्धिबेलम्	७७
सस्तिः	१८०	सांवहितम्	८२	सान्नाय्यम्	१६५
सस्वर्गम्—	१५६	सा	१४	सान्निध्यम्	६७
सस्यकः	१०१	साकम्	१६	सान्निपातिकम्	६२
सत्यात्	१७१	साक्तुकम्	६६	सापत्नः	४१, ६३
सहकृत्वा	१७२	साक्तुकाः	८६	सापत्यः	४२
सहनासिका	२११	साक्तुसैन्धवः	६३	साप्ततिकः	६१
सहपुत्राय—	४३	साक्षात्कृत्वा	३७	साप्ततिकम्	६२
सहपूर्वाह्णम्	३१	साक्षी	१०२	साप्तपदीनम्	६६
सहयुष्वा—	५५, १७२	साख्यम्	७२	सामग्री	१६८
सहरि	३१	साग्नि	३१	सामनः	६४
सहलाय	४३	साङ्कलम्	७२	सामन्यः	८६
सहसा	१६	साङ्काश्य	३६	सामयिकः	११३
सहसाकृतम्	५१	साङ्काश्यम्	७२	सामयिकम्	६६
सहस्राणि	१२	साङ्काश्यकः	७५	सामवायिकः	८७
सहस्रियः	१६६	साङ्काश्यसिद्धः	३४, ५२	सामसंगायः	१६८
सहस्रियासो—	१६६	साङ्काशिका	१६	सामाजिकः	८६
सहस्री	१०३	सातम्	१७५	सामि	१५
सहायता	६६	सातिः	१८६, १८६	सामिकृतम्	३२, १११

सामिधेनी	८२	साल्वावयव	५७	सीमन्तः	२
सामिधेन्यः	८२	साल्विका	७६	सीमा	१८
सामीप्यम्	६७	साल्वेय	५७, ६५	सीमान्तः	२
सामूहिकः	८७	सादणिमाण्डूकेयी	२२१	सीम्नि—	२६
साम्	१४०	साहदेवः	६२	सीवः	१७३
साम्ब	१३६	साहयः	१६६	सुकरः	१८८
साम्यातुरः	६२	साहसिकः	८६	सुकर्मकः	२२५
साम्राज्यः	६५	साहस्रः	६२, १०३	सुकर्मणः	२२५
साम्राज्याय	२२५	साहस्रम्	६१	सुकुमारीकः	२२६
सायम्	१५	सिंहः	२१५	सुकृत्	१७२
सायन्तनम्	७७	सिंहकः	१०६	सुकेशमानिनी	४२
सायम्प्रातिकः	७७	सिंहमुखः	२२६	सुकेशभार्यः	३५
साययति	१४२	सिकताः	१०२	सुकेशा	२१, २२
सायाह्नः	८, ३४	सिकतावान्	१०३	सुकेशी	२१
सारः	१८२	सिकतिलः	१०३	सुकेशीभार्यः	४२
सारङ्गः	२	सितः	१७३, १७५	सुक्षेत्रिया	२०४
सारङ्गजम्	२२६	सिता	१७३	सुखजातः	२२६
सारङ्गजम्बी	४६	सित्वा	१६०	सुखजाता	४६
सारङ्गिकः	८६	सिष्मलः	१०३	सुखप्रतीक्षा	१६७
सारङ्गी	२०	सिष्मवान्	१०२	सुखप्राप्तः	३२, २२१
सारसायन भक्तम्	७०	सिष्यः	१६३	सुखम्—	२८, २१४
साराङ्गः	२	सिप्रकावणम्	५७	सुखसुखेन—	११६
सार	१४०	सिनः	१७३	सुखापेतः	३३
सार्धम्	१६	सिन्धु	५, १५	सुखार्तः	२
सार्वम्	६०	सिन्धुकः	७८	सुखीः	६, १०५
सार्वर्भोणः	६८	सिमः	८	सुखेन—	२४
सार्वजनिकः	६०	सिमस्मै	२१६	सुख	१४०
सार्वजनीनः	८६, ६०	सिरीश	३४	सुगः	१७०
सार्वभौमः	६३, ६८	सिसापति	१४३	सुगण	११, १७१
सार्वलौकिकः	६३	सिसाहयिपति	१४४	सुगणठपण्डः	४
सार्ववेद्यः	६७	सिसिपति	१४४	सुगणपट्टः	४
सालातुरीयः	८१	सिस्मयिपते	१४४	सुगण्णीशः	४४
साल्व	५७, ७६	सिस्मयिपति	१४४	सुगन्धः	४५
साल्वकः	७६	सिस्वेदयिपति	१४४	सुगन्धिः	२१६
साल्वम्	७६	सिषाघयिपति	१४४	सुगन्धि	११
साल्वानि	८४	सीत्यम्	८८	सुगाण्	

सुगुः	२२५	सुपथी	१२	सुरधा—	२२५
सुगुल्फा	२१	सुपन्थाः	४०	सुरभिगन्धिः	४४
सुग्रीवः	२२५	सुपरिकः	१०६	सुराजा	५१, २२४
सुग्लः	१६६	सुपाकिका	१६	सुराज्ञी	२०
सुचतुरः	५०	सुपाञ्चालकः	७८	सुरापा	१६८
सुजघना	२२	सुपात्	१३, ४४	सुरापीता	२१
सुजम्भा	४४	सुपानः	१०६	सुरापीती	२१
सुजाते	२०२	सुपीः	१३	सुराष्ट्र	५४
सुज्ञाना	३१	सुपीवा	१६५	सुराष्ट्रब्रह्मः	३६
सुतङ्गमः	१७०	सुपुच्छा	२१	सुखः—	१६४
सुतीः	६	सुपुच्छी	२१	सुरूपा	२१४
सुतः	१३	सुपुम्	१५	सुरेता—	२०७
सुते—	२१३	सुपेशसस्—	१६६, २०६, २२५	सुलभम्	१८८
सुतेभिः—	१६२	सुप्तः—	१५८	सुलु	११
सुत्या	१८६	सुप्तप्रलोपतम्	२२७	सुलोमा	२२५
सुत्वा	१७६	सुप्रजाः	४४	सुवः	१४
सुदन्तः	४४	सुप्रतीकः	२२५	सुवर्ण	६१
सुदामा	१६५	सुप्रतूतिम्—	२२५	सुवास्तु	२२
सुदास	२३	सुप्रत्यवसितः	२३०	सुवारेण—	२८५
सुदिनाहम्	३८, ४०	सुप्रयसा—	१६६	सुवीर्यस्य—	२२५
सुदिवः	४३	सुप्रयोगा	११	सुवृट्	१३
सुद्वयुपास्यः	१	सुप्रलम्पः	१८८	सुवृष्टिः—	१५६
सुद्यौः	१०, ११	सुप्रातः	४३	सुवेदनाम्	१६६
सुधाम्—	२३	सुब्रह्मण्योम्	२१२	सुलेमान	६
सुधि	११	सुमङ्गलो	२०, २००	सुविलयः	१८८
सुधोः	६, १०	सुमथी	१२	सुशर्मा	१७१
सुधीवा	१६५	सुमद्रम्	३१	सुशोफा	२१
सुध्यो—	२०३	सुमाषः	२२६	सुश्चन्द्रस्य	२०२
सुनत्	१७१	सुमापक—	२२६	सुश्रीः	६
सुनयिका	१६	सुमुखा	२१	सुश्लोकइति	३
सुनु	११	सुमूः	१७१	सुश्वः	४३
सुनुते	१५५	सुमेधाः	४४	सुषन्धिः	५६
सुनोतन	२०५	सुम्नम्	१६६	सुषमम्	२२५
सुन्दर—	११५	सुम्नायन्तः	२०६	सुषाम	५६
सुन्वन्ति	१५५	सुयुक्	१२	सुषिक्तम्	२५
सुपधित्तरः	२०८	सुरकः	१११	सुषिरः	१०३

सुषुप्सति	१४३	सूपसदनः	१६६	सैन्याः	८७
सुष्टुती	२०४	सूरमस	४६	सैरन्ध्र	३२
सुष्ठु	१७	सूरी	२१	सैरिकः	८८
सुष्वापयिषति	१४४	सूर्क्ष्	१२३	सैरिकम्	८२
सुसकथः	५१	सूर्क्ष्य्	१२२	सैषः	७
सुसखा	६	सूर्तम्	२०८	सोदर्यः	५५, ८६
सुसपिष्केण	१८६	सूर्भिम्	२०१	सोमः	२०३, २०६, २१५
सुसिक्तम्	२५	सूर्यः	१६३, २१०	सोमजम्भा	४४
सुस्तना	२१	सूर्यम्	२०५	सोमपाः	६
सुस्तुतम्	२५	सूर्या	२१	सोमम्	२६, २०६
सुस्मूर्यते	१५४	सूर्ये	२०१	सोमयाजी	१७२
सुस्यूयति—	१४३	सूपाः	२२५	सोमवान्	१०५
सुस्रोतस्कः	२२५	सू	१२६, १२६	सोमविक्रयी	१७२
सुस्वूर्षति	१४३	सूज्	१३०, १३४	सोमसुत्	१७२
सुहव्यः	२२५	सूज्यते	१५७	सोमस्य	१६८, २०८
सुहित्	१४	सूत्वरः	१७६	सोमाच्छ्रौ	२२७
सुहित्सु	१३	सूप्नु	१२७	सोमिनी	१०५
सुहृदयः	४५	सुमरः	१८६	सोमेनायष्ट	१५६
सुहृन्मित्रम्	४५	सेकृ	११८	सोमोगोरी	३
सुह्य	४५	सेकृत्रम्	१८१	सोम्यः	१६६
सूकर—	१८३	सेत्पृश्निः	२१८	सोम्यम्	१६६
सूच्	१४०	सेत्रम्	१८१	सोयमागात्	२११
सूत—	२०५	सेदिवान्	१३	सोसूच्यते	१४५
सूतका	१८	सेथयति	१४२	सोहृप्	७
सूतवे	१६७	सेनाचरः	१६८	सौखशायनिका	८५
सूतिका	१८	सेमाम्	७	सौतङ्गमिः	७२
सूत्तम्	१७५	सेरुः	१७६	सौतङ्गमीयम्	७४
सूल्या	६६	सेवित्वा	१६०	सौत्यतिः	६१
सूत्रग्रहः	१६८	सैकतः	१०३	सौत्वनः	६४
सूत्रग्राहः	१६८	सैघ्रकावनम्	७१	सौदर्शनिका	७५
सूत्र्	१४०	सैनापत्यम्	६७	सौदर्शनीया	७५
सूत्वा	१८६	सैनिकाः	८७	सौदामनी	८२
सूदिता	१७६	सैन्धवः	७६, ७८, ८१	सौघातकिः	६१
सूनः	१७३	सैन्धवघनम्	१८५	सोपम्	८०
सूपगन्धि	४४	सैन्धुवक्त्रकः	७५	सोपख्येयी	१६
सूपप्रति	४६	सैन्यम्	६७	सोपोग्रन्थः	८०

सौभद्रम्	७०	स्तन्	१२५, १४०	स्त्रीतरा	५३
सौभागिनेयः	६३	स्तन्मु	१३५	स्त्रीता	६६
सौभूत	२४	स्तम्बकरिः	१६६	स्त्रीत्वम्	६६
सौमात्रः	६२	स्तम्बकारः	१६६	स्त्रीपुंसौ	५०
सौमित्रिः	६३	स्तम्बघनः	१८५	स्त्रीप्रमाणः	४१
सौमौञ्जक	६८	स्तम्बघातः	१८५	स्त्रीव्रत	६०
सौमेन्द्रः	६६	स्तम्बरमः	५२	स्त्रीसभम्	४०
सौम्यम्	६८	स्तम्बरमः	५२, १६८, २२२	स्त्रेकु	११८
सौरमसः	६५	स्तर्या	१६५	स्त्रेणः	६०, ६१, ६६
सौवर्णवलजम्	७६	स्तवः	१८२, १८४	स्त्रेणी	१६
सौवर्णवालजम्	७६	स्ताव्यः	१६५	स्थण्डिलशायी	५२, १७२
सौवर्णभार्यः	४२	स्तोरी—	२१६	स्थला	२०
सौवास्तवम्	७२	स्तुतः—	१७२	स्थली	२०
सौवास्तवी	७२	स्तुतिः	१८५	स्थल्	१२५
सौवीर	१६	स्तुत्यः	१६३, २६५	स्थविष्ठः	१०८
सौवीर्यः	६५	स्तुन्मु	१३५	स्थाण्डिलो भिक्षुः	६७
सौशमिकन्धम्	४०, २२६	स्तुब्	१२३	स्थाण्वीश्वर	३३
सौष्टवम्	६७	स्तुब्	१३१	स्थापयति	१४२
सौस्नातिकः	८५	स्तुब्	१३५	स्थायी	१६६
सौहार्दः	६३	स्तुह	१३३	स्थाली	१५७
सौहार्द्यम्	५३	स्तेयम्	६७	स्थालीपक्वः	३४
सौहृदय्यम्	५३	स्तोकान्मुक्तः	३३, ५१	स्थालीपाकः	२१६
सौह्यः	६५	स्तोकेन—	२७	स्थालीविलीयाः	६४
सौह्यनागरः	७६	स्तोता	१६५	स्थालीविल्याः	६३
स्कब्	१३५	स्तोत्रम्	१८१	स्थाल्याम्—	२६
स्कन्त्वा	१८६	स्तोम्	१४०	स्थावरः	१८०
स्कन्दः	११०	स्तोमै—	२०७	स्थाविरम्	६७
स्कन्दिर	१२७	स्त्यानः	१७३	स्थासुः	१७७
स्कन्मु	१३५	स्तैन्यम्	६७	स्थितः	१७५
स्कृदि	११७	स्त्ये	१२६	स्थित्वा	१६०
स्कृन्मु	१३५	स्त्रकि	११८	स्थुड्	१३३
स्वद्	१२४	स्त्रस्यते	१५६	स्थूलकः	१११
स्वदिर	१३५	स्त्रावपति	१५६	स्थूलनासिकः	४३
स्वल्	१२२, १२५	स्त्रितरा	५३	स्थूलशङ्खः	२२५
स्तनन्धयः	१६६	स्त्रियम्मन्य	१७२	स्थूलाक्षा	४३
स्तनन्धयी	१६६	स्त्री	१०	स्थूलोलुः	२

स्थूलोतुः	२	स्फुट्	११६, १३३, १३८	सजीयान्	१०८
स्थूल	१४०	स्फुडि	११६, १३६	सङ्	१४
स्थेष्ठः	१०८	स्फुह्	१३३	सम्मु	१२४
स्थीलशीर्षम्	६	स्फुर्	१३३	सस्तम्	११
स्नातमया	१७२	स्फुल्	१३३	सिबु	१२६
स्नातानुलिप्तः	३४	स्फेष्ठः	१०८	सु	१२६
स्नात्वा—	१८६, २१६	स्म	१७	सुघ्न	३३
स्नानीयं—	१६२	स्मरति	१५५	सुवकर्णः	५७
स्निक्	११	स्मरयति	१५५	सूः	१७१
स्निट्	११	स्मरसि	१५८	स्रोत्यः	१६६
स्नुक्	११	स्मर्यते	१५६	स्रोघ्नः	७७, ७८, ७९, ८०, ८१
स्नुट्	११	स्मारं	१६१	स्रोघ्नम्	८१
स्पदि	११७	स्मारम् स्मारम्	१७	स्रोन्वभार्या	३५
स्पर्ध	११७	स्मारयति	२४	स्रोन्नीभार्यः	४२
स्पर्धन्ते—	१६५	स्मिङ्	१३६	स्वंकटम्—	१५५
स्पर्शः	१८२	स्मिट्	१३६	स्वयंसम्—	१३५
स्पश्	१२६, १३८	स्मील्	१२२	स्वव्रीहिम्	१५५
स्पष्टः	१७५	स्मृ	१२५, १२६	स्वःकामः	६
स्पाशितः	१७५	स्मृतेः	१०	स्वकर्तव्यम्	३३
स्पृर्छा	११६	स्मृतीः	१०	स्वकीयम्	७६
स्पृ	१३२	स्मेरः	१७६	स्वच्चः	५१
स्पृक्	१३	स्यः	१२	स्वङ्गा	२१
स्पृश्	१३४	स्यदः	१८२	स्वङ्गी	२१
स्पृहयानुः	१७६	स्यन्त्वा	१८६	स्वच्छाया	५
स्पृह्	१४०	स्यन्दः	१८२	स्वतवद्भिः	२०७
स्फातिः	१८५	स्यन्दित्वा	१८६	स्वतवान्	२०५
स्फायी	१२१	स्यन्दु	१२४	स्वधा	१६
स्फारः	१८२	स्यमु	१२५	स्वनः	१८४
स्फारयति	१४२	स्यम्	१३८	स्वनडुत्	१४
स्फालः	१८२	स्यवः	१८२	स्वनितम्	१७४
स्फावयति	१४२	स्या	१४	स्वन्	१२५
स्फिट्	१३६	संसु	१२४	स्वपनः	१८५
स्फिट्ट्	१३७	सक्	१४	स्वपन्ति	२१२
स्फीतः	१७४	सन्वि	१४	स्वपानि	२१२
स्फुटि	१३६	सजी	१०४	स्वपोषं पुष्पाति	१६२
स्फुटिर	१२०	सजिष्ठः	१०८	स्वप्	१५, ४६

स्वप्नक्	१८०	स्वामी	१०५	हरिकामिणी	५८
स्वप्नया	२७५	स्वायंकृतिः	३२	हरिकामेण	५८
स्वभूः	६	स्वाहा	१७, २१६	हरिकेशः	२१६
स्व—	१५५	स्विका	१६	हरिगुह्वराः	४६
स्वयंभुवे—	२६	स्विदितः	१७४	हरिचन्द्रः—	५८
स्वयम्	१५	स्विभः—	२०५	हरिणः	२१५
स्वयं—	२०१, २३२	स्व	१२६	हरिणी	२१६
स्वयम्भुः	१०	स्वृत्वा	१८६	हरितजम्भा	४४
स्वरा—	१५३	स्वे	८	हरित्	२१५
स्वर	१५, १४०	स्वेक्षणे—	२१३	हरित्रातः	३२
स्वर्ग—	१५५	स्वेन्	१४०	हरिदिनम्	१७६
स्वर्गपतितः	३३	स्वैरिणी	२	हरिद्वार	३७
स्वर्गह्वायः	१६७	स्वैरी	२	हरिम्—	४, २३, २४, २७, २८, १५३, १७७
स्वर्ग्यः	६२	सिनः	१७३	हरिवते—	२०७
स्वर्गात्—	११३	ह	१६	हरिवो—	२०६
स्ववद्भिः	२०७	हंसः	५६	हरिचन्द्रः	५८, २०२
स्ववान्	१०२, २०५	हंसपथः	११०	हरिश्चोते	४, ५
स्वसा	१०	हंसी	४८	हरिषेणः	५६
स्वसारं—	२१५	हट्	१२०	हरिस्त्वाम्—	१२
स्वस्ति	१६	हठ्	१२०	हरिस्स्फुरति	५
स्वस्ति—	२६, ५७	हतः—	२१८	हरिहरगुरवः	४६
स्वस्तीस्यात्	११३	हतमाता	२०१	हरिहरी	४६
स्वस्त्रीयः	६५	हद्	१२७	हरीणतो	३
स्वां—	१५५	हनुः	२२	हरीतक्यः	७२, ८४
स्वाः	८	हन्	१२८	हरीरम्यः	६
स्वागतिकः	८५	हन्त	१६, १०६, २०८, २३२	हरः	१८४
स्वाङ्गिः	८५	हन्तोति—	१६०	हरे—	१३
स्वाढथङ्करः	१८६	हन्यते	१५७	हरेज्ज	३
स्वाढथम्भवम्	१८८	हम्म	१२१	हरो—	१३
स्वाद	११७	हयी	२२	हर्यश्वः	२२४
स्वादु—	१६१	हय्	१२२	हर्यनुभवः	१
स्वादुद्वारम्	३८	हरणहि	१	हर्यनुभवः	१
स्वाध्वरिकः	८५	हरये—	१, २५, २६	हर्य	१२२
स्वानः	१८४	हरयेहि	१	हर्षया	२२७
स्वान्तम्	१७४	हरिः	५, ६, २३	हर्षसे—	२१३
स्वापतेयम्	८५, ८६	हरिकामाणि	५८	हलीषा	२, २१६

हलेद्विपदिका	२२२	हारयति	२४	हिरण्यवः	१०४
हलेनमुसलेन	४३	हारहूर	३०	हिरण्यवर्णाः	२०६
हल्	१२५	हारा	१८६	हिरण्यार्थी	१०५
हल्यः	८६	हारिणिकः	८६	हिष्क्—	१६, १६३
हवः	१८५	हारितायनः	६१	हिल्	१३३
हविः	१५, १६५	हारिद्रम्	६७	हिवि	१२२
हविष्यम्	६०, १६६	हारिद्रविणः	८२	हिष्क्	१३८
हव्यवान्	१६५	हारिवेणिः	६५	हिसि	१३४, १३६
हसनम्	१२७	हारिवेण्यः	६५	हु	१२६
हसितम्	१७६, १८७	हार्दम्	५३	हुडि	११६
हसे	१२४	हार्लिकः	८८	हुट्	१२०
हस्तग्राहम्	१६२	हार्लिकम्	८२	हुड्	१३३
हस्तबन्धः	५२	हासः	१८४	हुर्छा	११६
हस्तयति	१४०	हास्तिकः	८५	हुन्	१२५
हस्तयते	१४१	हास्तिकम्	४१, ६६	हुट्	१२०
हस्तवर्तम्	१६२	हास्तिनपुरम्	२२४	हुण	२६
हस्तवान्	१०३, १०५	हास्तिपदः	८२	हुहः	६
हस्तादायः	२२७	हाहाः	६	हु	१२६
हस्ति	६२	हिसकः	१७८	हुच्छोकः	५३
हस्तिकान्	११०	हिसन्ति	२१२	हुक्	१२६
हस्तिघ्नः	१००	हिस्त्रः	१८७	हुतम्	२१३
हस्तिद्वयसम्	१००	हि	१३२	हुदयरोगः	५३
हस्तिनम्	१००, १५४	हिष्क्	१२२	हुदयलेखः	५३
हस्तिपादः	४४	हिडि	११६	हुदयशोकः	५३
हस्तिवर्चसम्	५०	हिट्	१२६	हुदयालुः	१०४
हस्ती	१०५	हित्वा	१६०, २०७	हुदयिकः	१०४
हस्तेकृत्य	३७	हिनसानि	२१२	हुदयो	१०४
हस्तेबन्धः	५२	हिमवतः	२६	हुदयवान्	५१
हस्त्यम्	६६	हिमवतः	१८२	हुदिस्पृक्	८१
हा—	२४	हिमवतः	२१	हुद्गोलीयाः	८८
हाटकः	८४	हिमानी	३	हुद्यः	५३
हाटक	२८	हिमालय	१०४	हुद्यम्	५३
हाटकमयी	८४	हिमेलुः	१०४	हुद्रोगः	११
हात्वा	१६०	हिम्याः	१०६	हुन्दि	५३
हायनः	१६७	हिरण्यकुत्	१०१	हुल्लासः	५३
हारणा	१८७	हिरण्यकः	२०४	हुल्लेसः	५३
		हिरण्ययेन			

हपु	१२४	हैमन्ताः	७६	ह्यस्	१५
हप्	१३१	हैममुद्रिका	४२	ह्यस्तनम्	७४
हष्टः	१७५	हैमवती	८१	ह्यस्त्यम्	७४
हष्टम्	१७५	हैमवतीभ्यः	१६६	ह्यगे	१२४
हे	१७	हैयङ्गवीनम्	६६	ह्यदग्ना	२०२
हेट्	११६, १२०	होड	१७	ह्यसिमा	१०८
हेड्	१२४	होड्	१२०	ह्यसिष्ठः	१०८
हेट्‌ड	१२०	होतव्यम्—	१०८, २०६	ह्यस्	१२४
हेतिः	१८६	होतापोतारी	४७	ह्यद्	११७
हेती	१५	होतुःपुत्रः	५३, २२६	ह्यी	१८६
हेपचन्	१७७	होतुरन्तेवासी	५३	ह्यीच्छ	११६
हेपचमान	१७७	होतृधनम्	५३	ह्यीनः	१७३
हेप्राण्	१७७	होतृपोतृनेष्टोद्गातारः	४६	ह्येपयति	१४२
हैमन्तशिशिरवसन्ताः	४६	होतोः	१६८	ह्येष	१२३
हैमन्तशिशिरी	१६४	होतृकारः	३	ह्यल्प्	१३७
हेराम	३, २३	होत्सृकारः	३	ह्यल्गे	१२४
हेष्ट	१२३	होत्रे	२६	ह्यल्स	१२४
है	१७	होमिनी	१०५	ह्य्लादो	११७
हैतनाभः	६४	होतृकम्	८१	ह्य्वल्	१२५
हैमनः	७७	ह्यङ्	१२६	ह्य्वाययति	१४२
हैमन्तः	७८	ह्यत्वे	२१८	ह्य्व	१२६
हैमन्तम्	७७	ह्यल्	१२५	ह्य्वेम्	१२७



शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	मुद्रित	पढ़िये
२	१	३६	आयेतस्तु	आयतस्तु
५	२	५	चाइकन्द	यारकन्द
६	२	२६	ऊँच	ऊँछ
७	१	१६	सिरस	सिरसा
८	१	३४	सौवीराजन	सौवीराञ्जन
९	२	१३	कलिङ्गाभिमुखे	कलिङ्गाभिमुखो
११	१	२४	कह्लपेमंगा	कह्लणपेमगा
१२	२	३५	मान	नाम
१३	२	२२	नर्मना	नर्मदा
१६	२	३५	दात्राभित्री	दात्तामित्री
२५	२	१४	बूलूर	बूलर
२६	१	१६	हुंगा	हुंजा
२९	२	२२	अमुत्रासन	अमुत्रासन्
३०	१	१	कन	कन
३२	२	१६	द्वार	द्वारा
३३	२	१८	पश्चिमी	पश्चिम
३३	२	२०	दृषद्वती	दृषद्वती
३६	१	१५	रयस्था	रयस्था
४०	१	३३	मानता	माना
४१	१	३०	आषार	आषार पर
५७	२	४	बसाये	बसाये गये
५७	२	२०	तत्सम	तद्भव
५८	१	१६	गोवंश	जो वंश
१	१	१७	ताम्रा	ताँवा
१	२	१	रथां	रथों
२	१	२०	दृढ	दृढ
४	२	३५	पुरुष का दूध	जिस दूध का स्वामी पुरुष हो
६	२	२०	अधो	अधो
८	२	२६	करमः	करभूः
१३	१	२४	पाला	वाला
१३	२	१४	घृतस्पृक्	घृतस्पृक्
१६	१	११	श्रोषद्	श्रोषद्

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	मुद्रित	पढ़िये
१६	२	२५	कञ्चित्	कच्चित्
१७	२	२८	भस्त्रफला	भस्त्राफला
१९	१	२७	सेर सेर	५ सेर
१९	२	३३	कुट	फुट
२२	२	३०	तागों	नागों
२४	२	४	जरते	करते
२६	२	२७	हिलते	छिपते
२७	१	१२	पूर्व या भाग	पूर्व भाग
२७	१	२०	के	को
२७	१	२७	शतने	शतेन
२९	२	२३	बैठ	बैठे
३०	१	४	यथेष्ट	यथेष्
३१	१	१२	निर्गुण	निर्जन
३१	१	१७	वाते	वर्तते
३१	२	९	मलिन	मुक्ति
३२	१	२५	ग्रामगमी	ग्रामंगमी
३२	२	९	समिधि	समिधा
३२	२	३०	पा गया	पगाया
३३	१	२०	चोरभयम्	चोरभयम्
३३	१	२३	वृकमीः	वृकभीः
३९	२	२३	भोली और मोरन	मुरगा और मोरनी
४१	२	४	हो	हों
४२	२	२२	है	समस्ततो है
४३	१	३०	द्वयाङ्गुला	द्वयङ्गुला
४५	२	१२	से	सी
४६	१	१७	उदारता	उद्गाता
४८	२	३	दिवस्पृधि- व्योरातिम्	दिवस्पृधि- व्योररतिम्
४८	२	२९	मरनी	मोरनी
४९	२	६	कटप्रः	कटप्रः
५०	१	१९	गोदारी	गोदावरी
५१	१	५	प्राची	प्राची

पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	मुद्रित	पढ़िये	पृष्ठ	स्तम्भ	पंक्ति	मुद्रित	पढ़िये
५२	१	१२	मध्य	मध्य	८७	२	६	मुचंग	मृदंग
५३	१	२२	ब्राह्मणी	ब्राह्मणी	८१	२	१२	सीपम्	शौर्यम्
५४	१	७	पलिष्कः	पन्निष्कः	८१	२	२३	पाँचकलापिकम्	पाँचकलायिकम्
५४	१	१६	उदकपर्वः	उदकपर्वतः	८१	२	२३	कलाप	कलाय
५४	२	३१	कलल	कमल	८५	१	६	नियुक्ति	नियुक्त
५५	१	२१	समज्ञाने	समभूने	८७	१	१	जो चतुर	मूर्खता
५५	१	३०	भंड	भुण्ड	८७	१	२	जो संगत	असंधीय
५५	२	३३	ज्याष्टोमः	ज्योतिष्टोमः	८७	१	५	जो नमकीन	कुरूपता
५६	१	३१	कदन्तम्	कदन्तम्	८७	१	४	आलसीका	स्वभाव फीकापन
५६	१	३२	का	वाला	८७	१	१०	मौड्यम्	मौड्यम्
५८	२	१६	आश्चर्य	आश्चर्य	८७	१	२०	समीप्यम्	सामीप्यम्
५८	२	२५	विकरः	विकिरः	८८	१	२५	उभ्यम्	उभ्यम्
६२	२	२६	साहादेवः	साहदेवः	८६	१	२७	वडवा	वडवा
६३	१	५	न हो	हो	१००	१	२	उष्ट्रगोयुगम्	उष्ट्रगोयुगम्
६५	१	१३	नपित्यः	नापित्यः	१०३	२	२६	रसिकतावान्	सिकतावान्
६५	१	२३	कार्त्तार्यायणिः	कार्त्तार्यायणिः	१०४	१	२७	तमिस्र	तमिस्रा
६५	१	२६	कार्त्तार्यायणिः	कार्त्तार्यायणिः	१०४	२	२७	शीतालु	शीतालुः
६६	२	११	घोडयायनिः	घोडयायनिः	१०५	१	८	विगापठ	विजायठ
६६	२	१२	व्याडयायनिः	व्याडयायनिः	११०	२	१७	काकातालीयः	काकतालीयः
६७	२	१	वासिष्ठं	वासिष्ठं	११२	१	२५	भूरिवारात्	भूरिवारान्
७१	२	१४	वामरथ्यः	वामरथाः	१४१	२	२६	अवभाजत्	अवभाजत्
७१	२	१४	वामरथ्य	वामरथ्य	१४४	२	१७	सुष्वापायिषति	सुष्वापायिषति
७२	१	२२	वनवाया	वनवाया	१७०	१	१	मेघकरः	मेघंकरः
७२	२	६	जपपदः	जनपदः	१७०	२	२६	कपटघ्नः	कपाटघ्नः
७३	२	२३	घोरवन्द	पोरवन्द	१६५	१	१७	आपृच्छय	आपृच्छयं
८०	२	६	छन्दा	छन्दः	१६५	१	३४	मघोनाम्	मयीनाम्
८१	१	४	वदम्	वैदम्	१६६	१	३३	मोयासः	मोभयासः
८१	२	२४	तारि	तारिम	१६७	१	१४	तेरुषम	तरुषेम
८२	२	१०	वृटरों	मधुमक्खियों	१६६	१	२४	घानदतो	नानदतो
८३	२	१७	कैथे	कैथे	१६६	१	२७	निधिष	निधिषु
८३	२	२६	का	की	१६६	२	१८	यस्वे	यस्ये
८४	१	१६	चावकः	यावकः	२२२	१	२८	यासिकाश्वः	याज्ञिकाश्वः
८५	१	८	स्वागतिक	स्वागतिकः	२२२	१	३५	वाडवा	वाडव
८५	२	२०	श्वामास्त्रिः	श्वामस्त्रिः	२२४	१	२६	किल्लोर	फिल्लोर
८७	१	११	ने	से	२२६	१	३४	रपशकि	दाशकि



